७८६

इन्ना बक़ुरान करीम फ़ो कुतबे मकनून
यह बड़े मर्तबे का कुरान है जो किताब (लोह) में मेहफ़ूज़ है

तर्जुमा

कुरान मजीद

(हिन्दी)

प्रकाशक

रतन एण्ड कम्पनी

दरीबा कलां, देहली ६ लिये

मूल्य ८ रु०

प्रकाशक

रतन एण्ड कम्पनी

दरीबा कलां, दिल्ली-६

मुद्रक

कुमार फाईन आर्ट प्रेस,

११४३, चाह रहट, दिल्ली-६

क़ुरान मजीद के पढ़ने वालों के लिये हिदायत-

(१) बेहतर यह है कि क़िबला रु हो कर बा तहारत निहायत अदबसे किसी पाकीजा मक़ाम में बैठकर कुराने मजीद पढ़ा जाये, सब से बेहतर इस काम के लिए मसजिद है। जो लोग हर वक्त या अक्सर ओक़ात इस की तलावत में मशगूल रहना चाहें उनके लिये हर हाल में कुराने मजीद पढ़ना बेहतर है, लेटे हों या बैठे, बावुज़ू हों या बेवुज़ू अलबत्ता जनाबत की हालत में तलावत जायज़ नहीं।

(२) क़ुरान मजीद की तलावत के लिये एक खास वक्त मुकर्रर कर लेना भी दुरुस्त है। अक्सर साहब फ़जर की नमाज़ के बाद कुरान मजीद पढ़ा करते थे, वक्त मुक़र्रर कर लेने में नाग़ा भी नहीं होती, मसऊन है कि पढ़ने वाला "अऊज़ू बिल्लाह मिन्नुल शैतान हिर रहीम और बिस्मिल्लाह हिर रहमान हिर रहीम" पढ़ ले और अगर पढ़ने के दर्मियान में कोई दुनियावी काम करे तो उसके बाद फिर उसका एआदा कर ले-

(३) क़ुरान मजीद की तलावत मुसहफ़ में देखकर ज्यादा सवाब रखती है ब निस्बत जबानी पढ़ने के, इस लिये कि वहाँ दो इबादतें होती हैं एक तलावत दूसरे मुसहफ़े शरीफ़ की ज़यारत-

(४) क़ुरान पढ़ने की हालत में कोई कलाम करना और किसी ऐसे काम में मसरुफ़ होना जो दिल को दूसरी तरफ़ मुतवज्जोह करे मकरुह है. कुरान पढ़ते वक्त हमा तन उसी तरफ़

तवज्जोह रहे, न यह कि ज़बान से अलफ़ाज़ जारी हों और दिल में इधर-उधर के ख़्यालात हों—

(५) क़ुरान शरीफ़ की हर सूरत के शुरू बिस्मिल्लाह कह लेना मुस्तहब है।

(६) बेहतर यह है कि क़ुरान मजीद की सूरतों को उसी तर्तीब से पढ़े जिस तर्तीब से मुसहफ़े शरीफ़ में लिखी हैं।

(७) जो शख़्स क़ुरान मजीद के मानी समझ सकता हो, उसको क़ुरान मजीद पढ़ते वक्त उस के मानी पर ग़ौर करना और हर मज़मून के मवाफ़िक़ अपने में उसका असर ज़ाहिर करना मसनून है, मसलन जब कोई ऐसी आयत पढ़ी जिस में अल्लाह पाक की रेहमत का जिक्र हो तो तलबे रहमत करे और अज़ाब का ज़िक्र हो तो पनाह माँगे, कोई जवाब तलब मज़मून हो तो जवाब दे मसलन हज़रत नबी करीम सल्हे अल्लाह अलैहा व सलम—

(८) क़ुरान मजीद पढ़ने की हालत में रोना मुस्तहब है, अगर रोना न आये तो अपनी संगदिली पर रन्जो अफ़सोस करे—

(९) हर सूरत के ख़त्म होने के बाद अल्लाह अकबर कहना मुस्तहब है, कुरान मजीद ख़त्म होने के बाद दुआ माँगना मुस्तहब है, इस वजहे से कि आँहज़रत से मरवी है हर खत्म के बाद दुआक़बूल होती है।

(१०) क़ुरान मजीद ख़त्म करते वक्त सूर-हे-इख़्लास को तीन मर्तबा मुकर्रर करना मुताख़िरीन के नज़दीक बेहतर है, बशर्ते कि कुरान [illegible] में पढ़ा जाये

(११) जब क़ुरान मजीद एक मर्तबा ख़त्म कर चुके तो मसनून है कि फ़ौरन दूसरा शुरु कर दे।

(१२) जहाँ क़ुरान मजीद वग़ैरा पढ़ा जाता हो वहाँ सब लोगों को चाहिए कि हमातन उसी तरफ़ मुतवज्जोह रहें। किसी दूसरे काम में, जो सुनने में हारिज हो, मशगूल न हों, इसलिए कि कुरान मजीद का सुनना ज़रुरी है, हाँ अगर हाजिरीन को कोई ज़रुरी काम हो जिसकी वजह से उसकी तरफ मुतवज्जोह न हो सकें तो पढ़ने वाले को चाहिये कि आहिस्ता आवाज़ से पढ़े और अगर ऐसी हालत में बुलन्द आवाज़ से पढ़ेगा तो गुनाह उस पर होगा—

(१३) अगर कोई लड़का कुरान मजीद बुलन्द आवाज़ से पढ़ रहा हो और लोग अपने ज़रुरी कामों में मशग़ूल हों तो कुछ मुज़ायक़ा नहीं, इसलिये कि हरज शरीयत से उठा दिया गया है और लड़का आहिस्ता आवाज़ से पढ़े तो आदतन याद नहीं रहता।

(१४) सुनने वाले को तमाम अमर की रियायत करनी चाहिये जो ऊपर मज़कूर हुई सिवाये अऊज़ू बिल्लाह और बिस्मिल्लाह के और हालते जनाबत में भी कुरान का सुनना जायज़ है—

(१५) क़ुरान मजीद की सूरतों या आयतों का मसजिद या मकान की दीवार पर लिखना मकरुह है।

(१६) क़ुराने मजीद का तर्जुमा अगर किसी और जबान में हो तो सही यह है कि उस का भी वही हुक्म है जो कुरान मजीद का है—

(१७) किसी दस्तरख़्वान या चादर वग़ैरा पर कुरान की

आयत या ख़ुदा का नाम लिखकर उसका इस्तैमाल मकरुह है अलबत्ता किसी पर्दे पर लिखकर ज़ीनत के लिये लटकाना जायज़ है—

(१८) ऐसे रुपये का जिस पर खुदा का नाम लिखा हो पिघलाना मकरुह है अलबत्ता अगर टूट जाये तो जायज़ है, क्योंकि उस सूरत में हर्फ़ मुतफ़ीर्रक़ हो जायेंगे—

(१९) किसी ऐसे काग़ज़ में जिसमें क़ुरान की आयत या ख़ुदा का नाम लिखा हो, चीज़ का लपेटना जायज़ नहीं—

(२०) ख़ुदा के नाम का थूक से मिटाना मकरुह है, अलबत्ता चाटना बज़ाहिर जायज़ मालूम होता है।

(२१) किसी कागज़ का जिस में कुरान की आयत हो या तावीज़ का जिसमें आयते क़ुरानी या ख़ुदा का नाम हो और लपेट कर किसी कपड़े में बाँधा हुआ हो, पाखाने में ले जाना मक्रुह नहीं—

(२२) क़ुरान का सर के नीचे रखना मकरुह है अलबत्ता अगर किसी जगह चोरी की हिफ़ाज़त के लिये करे तो मकरुह नहीं।

(के० सी० माथुर)—

+ सूरहे फ़ातेहा

सूर-ऐ फ़ातेहा मक्की है

(इसमें ७ आयतें और १ रुकू है)

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम करने वाला है। सब तारीफ़ खुदा ही को सज़ावार है जो तमाम मखलूक़ात का परवरदिगार है (१) बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है। (२) इन्साफ़ के दिन का हाकिम (३) ए पर्वर-दिगार हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं (४) हम को सीधे रास्ते चला (५) उन लोगों के रस्ते जिन पर तू अपना फ़ज़ल व करम करता रहा है (६) न उनके जिन पर गुस्से होता रहा और न गुमराहों के (७)—रुकू (१)

+ सूरहे फ़ातेहा के फ़ज़ाईल:—क़ुरान में सबसे ज्यादा बड़ाई इसी सूरत की है क्योंकि यह कुल क़ुरान का लुब्बे लुबाब है यानी जो एहकाम कुल क़ुरान में मौजूद हैं उन सबका ज़िक्र इसमें आता है खुदा ने इसमें बताया है कि तुम ऐसी दुआ मांगो, नमाज़ की हर रकअत में इसका पढ़ना वाजिब है अगर कोई तन्हा नमाज़ पढ़ता हो तो उसको इसका पढ़ना मय किसी दूसरी सूरत या चन्द आयतों के खुद लाजिम है अगर इमाम मौजूद हो तो उसका पढ़ना सारे मकतदियों की तरफ़ से क़ाफ़ी है

सूर-ऐ बकरा मदनी है—पहला पारा

(इसमें २८६ आयतें और ४० रुकू हैं)

शुरु खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है अलिफ़, लाम, मीम (१) यह किताब (कुरान मजीद) इसमें कुछ शक नहीं (कि कलामे खुदा है) (खुदा से) डरने वालों की रेहनुमा है (२) जो ग़ैब पर ईमान लाते और आदाब के साथ नमाज़ पढ़ते हैं और जो कुछ हमने उनको अता फ़रमाया है उसमें से ख़र्च करते हैं (३) और जो किताब (ऐ

× सूरहे बक़र:—अल्लाह तआला ने किताब के शक़ को दूर करने के लिये मोमिनों की तारीफ और काफ़िरों की बुराई में यह आयतें भेजी हैं—सूरहे बक़र और आल उमरान दोनों ही सूरतें अपने पढ़ने वाले पर क़यामत क दिन साया करेंगी और उसकी तरफ़से खुदा तआला से झगड़ेंगी जनाबे रसूल फ़रमाया करते थे कि सूरहे बक़र पढ़ा करो क्योंकि इसका सीखना मूजिबे बरकत है और छोड़ना बाइसे हसरत—जिस क़दर एहक़ाम इस सूरत में दर्ज हैं इतने और किसी सूरत में नहीं हैं

— अलिफ़-लाम-मीम—

यह हरुफ़ मक़तआत हैं और असरारे वही में से हैं किसी मसलहत से खुदा ने इनके मानी बन्दों पर ज़ाहिर नहीं फ़रमाये सल्ले अल्लाह अलेहा व आलेहा व सलम ने इतना फ़रमाया कि मैं नहीं कहता कि अलम एक हर्फ़ है बलि‍क यह तीन हर्फ़ हैं हर हर्फ़ पर दस नेकी हैं—

* आयत (३) ग़ैब.—वह चीज जो आँखों से पोशीदा हो यहाँ मुराद उन चीज़ों से है जिनकी ख़बर रसूले खुदा ने दी थी जैसे पुले सुरात तराजुए आमाल, बहिश्त, दोज़ख़ आदि

मोहम्मद) तुम पर नाज़िल हुई और जो किताबें तुम से पहले (पैग़म्बरों पर) नाज़िल हुईं सब पर ईमान लाते और आखिरत का यक़ीन रखते हैं (४) यही लोग अपने परवरदिगार (की तरफ़) से हिदायत पर हैं और यह नजात पाने वाले हैं (५) जो लोग काफ़िर हैं उन्हें तुम नसीहत करो या न करो, उनके लिये बराबर है वह ईमान नहीं लाने के (६) ख़ुदा ने उनके दिलों और कानों पर मोहर लगा रक्खी है और उनकी आँखों पर पर्दा (पड़ा हुआ) है और उनके लिये बड़ा अज़ाब (तैयार) है (७) और बाज़ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि हम ख़ुदा पर और रोज़े आख़िरत पर ईमान रखते हैं हालाँकि वह ईमान नहीं रखते (८) यह (अपने पिन्दार में) ख़ुदा को और मोमिनों को चकमा देते हैं मगर (हक़ीक़त में) अपने सिवा किसी को चकमा नहीं देते और इससे) बे ख़बर हैं (९) उनके दिलों में कुफ्र का मरज़ था ख़ुदा ने उनका मरज़ और ज़्यादा कर दिया और उनके झूठ बोलने के सबब उनको दुख देने वाला अज़ाब होगा (१०) और जब उनसे कहा जाता है कि ज़मीन में फ़िसाद न डालो तो कहते हैं कि हम तो इस्लाह करने वाले हैं (११) देखो यह बिला शुबा मुफ़सिद हैं लेकिन ख़बर नहीं रखते (१२) और जब उनसे कहा जाता है कि जिस तरह और लोग ईमान लायें तुम भी ईमान ले आओ तो कहते हैं, भला, जिस तरह बेवक़ूफ़ ईमान ले आये हैं उसी तरह हम भी ईमान ले आयें ? सुन लो कि यही बेवक़ूफ़ हैं लेकिन नहीं जानते (१३) और यह लोग जब मोमिनों से मिलते

हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आये हैं और जब अपने शैतानों में जाते हैं तो (उनसे। कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं और हम (पैरवाने मोहम्मद से) तो हंसी किया करते हैं (१४) उन (मुनाफ़िकों) से खुदा हसी करता है और उन्हें मोहलत दिए जाता है कि शरारत और सरकशी में पड़े बहक रहे हैं (१५) यह वह लोग हैं जिन्होंने हिदायत छोड़कर गुमराही ख़रीदी तो न तो उनकी तिजारत ही ने कुछ नफ़ा दिया और न हिदायतयाब ही हुए (१६) उनकी मिसाल उस शख़्सको सी है जिसने (शबे तारीक में) आग जलाई जब आग ने उसके इर्द गिर्द की चीजें रोशन कीं तो खुदा ने उन लोगों की रोशनी ज़ाइल कर दी और उनको अन्धेरों में छोड दिया कि कुछ नहीं देखते (१७) यह बहरे हैं गूंगे हैं अन्धे हैं कि (किसी तरह रास्ते की तरफ़) लौट ही नहीं सकते (१८) या उनकी मिसाल मेंह की सी है कि आसमान से बरस रहा हो और उसमें अन्धेरे पर अन्धेरा (छा रहा) हो और (बादल) गरज (रहा) हो और बिजली (कून्द रही) हो तो यह कड़क से (डर कर) मौत के खौफ़ से कानों में उंगलियाँ दे लें और खुदा काफ़िरों को (हर तरफ़ से) घेरे हुए है (१९) क़रीब

आयत १९:—अल्लाह तआला ने इस सूरतमें तीन क़िस्म के लोगों का अहवाल फ़रमाया पहले मोमिन, दूसरे काफ़िर, तीसरे मुनाफ़िक जो देखने में मुसल्मान हैं मगर दिल उनका एक तरफ़ नहीं--जिस तरह बिजली की चमक से एक तरह की रोशनी पैदा होकर अन्धेरे में रास्ता नज़र आ जाता है और बादलों की कड़क से दिल दहल जाता है उसी तरह काफ़िर और मुनाफ़िक़ जब जन्नत और फतेह और ग़नीमत का हाल सुनते हैं तो इस दीन की तरफ़ ढल जाते हैं और अज़ाबे दोज़ख और सख़्ती जहाद का हाल सुनकर फिर बिदक जाते हैं—

है कि बिजली (की चमक) उसकी आँखों (की बसीरत को) उचक ले जाये जब बिजली (चमकती और) उन पर रोशनी डालती है तो उसमें चल पड़ते हैं और जब अन्धेरा हो जाता है तो खड़े के खड़े रह जाते हैं और अगर ख़ुदा चाहता तो उनके कानों की (सुनवाई) और आँखों की (बीनाई दोनों) को ज़ाईल कर देता बिला शुबा ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है। (२०) रुकू (२)

लोगो ! अपने परवरदिगार की इबादत करो जिसने तुमको और तुमसे पहले लोगों को पैदा किया ताकि तुम (उसके अज़ाब से) बचो (२१) जिसने तुम्हारे लिये ज़मीन को बिछौना और आस्मान को छत बनाया और आस्मान से मेंह बरसा कर तुम्हारे खाने के लिये अन्वा व अक़साम के मेवे पैदा किये पस किसी को ख़ुदा का हमसर न बनाओ और तुम जानते तो हो (२२) और अगर तुमको इस (किताब) में जो हमने अपने बन्दे (मोहंम्मदे अरबी) पर नाज़िल फ़रमाई है कुछ शक हो तो इसी तरह की एक सूरत तुम भी बना लाओ और ख़ुदा के सिवा जो तुम्हारे मददगार हों उनको भी बुला लो अगर तुम सच्चे हो (२३) लेकिन अगर तुम (ऐसा) न कर सको और हरगिज़ नहीं कर सकोगे तो उस आग से डरो जिसका ईन्धन और पत्थर होंगे (और जो) क़ाफ़िरों के लिये तैयार की गई है (२४) और जो लोग ईमान लायें और नेक अमल करते रहें उनको खुशखबरी सुनाओ कि उनके लिये (नैमत के) बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें

बह रही हैं जब उन्हें उनमें से किसी क़िसम का मेवा खाने को दिया जायगा तो कहेंगे यह तो वही है जो हम को पहले दिया गया था और उनको एक दूसरे के हमशक्ल मेवे दिये जायेंगे और वहाँ उनके लिये पाक बीवियाँ होंगी और वह इन (बहिश्तों) में हमेशा रहेंगी (२५) खुदा इस बातसे आर नहीं करता कि मच्छर या उससे बढ़कर किसी चीज़ मसलन मक्खी मकड़ी (वग़ैरा) की मिसाल बयान फ़ुरमाये जो मोमिन हैं वह यक़ीन करते हैं कि वह उनके परवरदिगार की तरफ से सच है और जो काफ़िर हैं वह कहते हैं कि इस मिसाल से खुदा की मुराद ही क्या है ? इससे (खुदा) बहुतों को गुमराह करता है और बहुतों को हिदायत बख्शता है और गुमराह भी करता है तो ना फ़रमानों ही को (२६) जो खुदा के इक़रार को मज़बूत करने के बाद तोड़ देते हैं और जिस चीज़ (यानी रिश्तऐ क़राबत) के जोड़े रखने का खुदा ने हुक्म दिया है उसको फ़ना किये डालते हैं और ज़मीन में खराबी करते हैं यही लोग नुक़सान उठाने वाले हैं (२७) काफ़िरो तुम खुदा से क्यों कर मुन्किर हो सकते हो जिस हाल में कि तुम बेजान थे तो उसने तुमको जान बख्शी फिर वही तुमको मारता है फिर वही तुमको ज़िन्दा करेगा फिर उसीकी तरफ़ लौट कर जाओगे (२८) वही तो है जिसने सब चीज़ें जो ज़मीन में हैं तुम्हारे लिये पैदा कीं फिर आस्मानों की तरफ़ मुत्तवज्जोह हुआ

आयत २५:—बहिश्त-बहिश्तें सात हैं जिनके नाम यह हैं

(१) जन्नतुल फ़िर्दोस (२) नईम (३) अदन (४) दारुस्सलाम (५) बलरउल खुल्द (६) जन्नतुल मावा (७) अल्यून—

तो उनको ठीक सात आस्मान बना दिया और वह हर चीज़ से ख़बरदार है (२९) रुकू (३)

और (वक्त याद करने के क़ाबिल है) जब तुम्हारे पर्वरदिगार ने फ़रिशतों से फ़रमाया कि मैं जमीन में (अपना) नायब बनाने वाला हूँ उन्होंने कहा, क्या तू उसमें ऐसे शख्स को नायब बनाने वाला है जो ख़राबियाँ करे और कुश्तो खून करता फिरे और हम तेरी तारीफ़ के साथ तस्बीह व तक़दीस करते रहते हैं (ख़ुदा ने) फ़रमाया मैं वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते (३०) और उसने आदम को सब (चीजों) के नाम सिखाये फिर उनको फ़रिशतों के सामने किया कि अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इनके नाम बताओ (३१) उन्होंने कहा तू पाक है जितना इल्म तूने हमें बख़्शा है उसके सिवा हमें कुछ मालूम नहीं बेशक तू दाना (और) हिकमत वाला है (३२) (तब) ख़ुदा ने (आदम को) हुक्म दिया कि आदम तुम इनको इन (चीजों) के नाम बताओ जब उन्होंने उनको उनके नाम बताये तो (फ़रिश्तों से) फ़रमाया-क्यों-मैंने तुम से नहीं कहा था कि मैं आस्मानों और ज़मीन की (सब) पोशीदा बातें जानता हूँ जो और कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और

आयत ३०—आदम के पैदा होने से दो हज़ार बरस पहले जमीन पर जिन्नात रहते थे उन्होंने तरह २ के फ़िसाद किये अल्लाह् तआला ने फ़रिश्तो के एक गिरोह को ज़मीन पर भेजा इन फ़रिश्तों ने जिन्नात को मार कर जज़ीरा में निकाल दिया अब बनी आदम की पैदाईश का हाल सुनकर फ़रिश्तां ने इसी क़यास पर यह बात कही थी कि जिन्नात की तरह बनी आदम भी ज़मीन में फ़िसाद फैलायेंगे—

पोशीदा करते हो (सब) मुझको मालूम हैं (३३) और जब हमने फ़रिशतों को हुक्म दिया कि आदम के सामने सजदा करो तो वह सब सजदे में गिर पड़े मगर शैतान ने इन्कार किया और ग़रूर में आकर काफ़िर बन गया (३४) और हमने कहा कि ऐ आदम तुम और तुम्हारी बीबी बहिशत में रहो और जहाँ से चाहो बे रोक टोक खाओ (पिओ) लेकिन इस दरख़्त के पास न जाना नहीं तो जालिमों में दाखिल हो जाओगे (३५) फिर शैतान ने दोनों को वहाँ से फुस्ला दिया और जिस (ऐशवे निशात) में थे उससे उनको निकलवा दिया तब हम ने हुक्म दिया कि (बहिश्ते बरीं से) चले जाओ तुम एक दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे लिये ज़मीन में एक वक्त तक ठिकाना और मुआश है (मुकर्रर कर दिया गया) है (३६) फिर आदम ने अपने पर्वरदिगार से कुछ कलमात सीखें और मुआफ़ी माँगी तो उसने उनका क़सूर मुआफ़ कर दिया, बेशक वह मुआफ़ करने वाला (और) साहिबे रहम है (३७) हम ने फ़रमाया कि तुम सब यहाँ से उतर जाओ जब तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से हिदायत पहुंचे तो (उसकी) पैरवी करना कि जिन्होंने मेरी हिदायत की पैरवी की उनको न कुछ खौफ़ होगा और न वह ग़मनाक होंगे (३८) और जिन्होंने (इसको क़बूल न किया और

आयत ३३:—यह आयते शरीफ़ दलील है इस बात पर कि दावा ग़ैब दानी का जिस तरह अहले नजूम व अहले कहानत, व अहले रमल आदि करते हैं झूठ है अल्लाह आलमुल ग़ैब है के उसके सिवा कोई ग़ैब नहीं जानता, न फ़रिश्ते न नबी और न वली—

हमारी आयतों को झुटलाया वह दोज़ख में जाने वाले हैं (और) वह हमेशा उसमें रहेंगे (३६) रुकू (४)

ऐ आले याकूब, मेरे वह एहसान याद करो जो मैंने तुम पर किये थे और उस इक़रार को पूरा करो जो तुमने मुझसे किया था मैं उस इक़रार को पूरा करूंगा जो मैंने तुमसे किया था और मुझी से डरते रहो (४०) और जो किताब मैंने (अपने रसूल मोहम्मद पर) नाज़िल की है जो तुम्हारी किताब (तौरात) को सच्चा कहती है उस पर ईमान लाओ और उससे मुन्किरे अव्वल न बनो और मेरी आयतों में (तहरीफ़ करके) उनके बदले थोड़ी सी क़ीमत (यानी दुनियावी मनफ़ैयत) न हासिल करो और मुझी से खौफ़ रक्खो (४१) और हक़ को बातिल के साथ न मिलाओ और सच्ची बात को जान बूझकर न छुपाओ (४२) और नमाज पढ़ा करो और ज़कात दिया करो और (खुदा के आगे) झुकने वालों के साथ झुका करो (४३) (यह) क्या (अक्ल की बात है कि) तुम लोगों को नेकी करने को कहते हो और अपने तईं फ़रामोश किये देते हो हालांकि तुम किताब (खुदा) भी पढ़ते हो क्या तुम समझते

आयत ४०:—बनी इसराईल कहते हैं औलाद हज़रत याक़ूब को, इन्हीं में हज़रत मूसा पैदा हुए और तौरात उतरी और फ़िरऔन से खलास करके मुल्क शाम में बसाया उन से अल्लाह तआला ने इक़रार किया था कि हुक्म तौरात पर क़ायम रहोगे और जो नबी मैं भेजूंगा उस के मददगार रहोगे तो मुल्क शाम तुम्हारा है फिर वह गुमराह हुये और उन्होंने पैग़म्बर की सिफ़त जो तौरात में लिखी थी बदल डाली अल्लाह तआला याद दिलाता है अपने एहसान और उनकी ना फ़रमानी —

नहीं (४४) और (रन्ज और तकलीफ़ में) सब्र और नमाज से मदद लिया करो बेशक नमाज गराँ है मगर उन लोगों पर (गराँ नहीं) जो इज्जत करने वाले हैं (४५) जो यक़ीन किये हुये हैं कि वह अपने पर्वरदिगार से मिलने वाले हैं और उसकी तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं (४६) रुकू (५)

ऐ याक़ूब की औलाद ! मेरे वह एहसान याद करो जो मैंने तुम पर किये थे और यह कि मैंने तुझको जहान के लोगों पर फ़ज़ीयत बख्शी थी (४७) और उस दिन से डरो जब कोई किसी के कुछ भी काम न आये और न किसी की सिफ़ारिश मन्ज़ूर की जाथे और न किसी से किसी तरह का बदला क़बूल किया जाये और न लोग किसी और तरह मदद हासिल कर सकें (४८) और (हमारे उन एहसानात को याद करो) जब हमने तुमको कौमे फ़िरऔन से मुख़्लिसी बख़्शी वह (लोग) तुमको बड़ा दुख देते थे तुम्हारे बेटे तो क़त्ल कर डालते थे और बेटियों को ज़िन्दा रहने देते थे और उसमें तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से बड़ी (सख़्त) आज़माईश थी (४९) और जब हमने तुम्हारे लिये दरिया को फाड़ दिया तो तुम को नजात दी और फ़िरऔन की क़ौम को ग़र्क़ कर दिया और तुम देख ही तो रहे थे (५०) और जब हमने मूसा से चालीस रात का वायदा किया तो तुमने उनके पीछे बछड़े को(मआबूद) मुकर्रर कर लिया और तूम जुल्म कर रहे थे (५१) फिर उसके बाद हमने तुमको मुआफ़ कर दिया ता कि तुम शुक्र करो (५२) और जब हमने मूसा को किताब और मौजज़े

इनायत किये ताकि तुम हिदायत हासिल करो (५३) और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि भाईयो तुमने बछड़े को (माबूद) ठैहराने में (बड़ा) ज़ुल्म किया है तो अपने पैदा करने वाले के आगे तौबा करो और अपने तईं हलाक कर डालो, तुम्हारे ख़ालिक़ के नज़दीक तुम्हारे हक़ में यही बेहतर है फिर उसने तुम्हारा क़सूर मुआफ़ कर दिया वह बेशक मुआफ़ करने वाला और साहिबे रहम है (५४) और जो तुमने (मूसा से) कहा कि मूसा ! जब तक हम ख़ुदा को सामने न देख लेंगे तुम पर ईमान नहीं लायेंगे तो तुम को बिजली ने आ घेर। और तुम देख रहे थे (५५) फिर मौत आ जाने के बाद हमने तुमको अज़-सरे नौ ज़िन्दा कर दिया ता कि एहसान मानो (५६) और हमने बादल का तुम पर साया किये रक्खा और (तुम्हारे लिये) मन्नो सलवा उतारते रहे कि जो पाकीज़ा चीजें हमने तुमको अता फ़र-माई हैं उनको खाओ (पियो) मगर तुम्हारे बुज़ूर्गों ने इन नेयमतों की कुछ क़दर न जानी (और) वह हमारा कुछ नहीं बिगाड़ते थे बल्कि अपना ही नुक़सान करते थे (५७) पर जब हमने (उनसे) कहा कि उस गाँव में दाख़िल हो जाओ और उसमें जहाँ चाहो से खूब खाओ (पिओ) और (देखना) दरवाज़े में दाख़िल होना तो सजदा

आयत ५७:—मन्नो सलवा:—मन एक चीज थी मीठी, धनिये के से दाने रात को ओस में बरसते थे और लशकर के गिर्द उसके ढेर लग जाते थे और सलवा एक जानवर का नाम है, शाम को लशकर के गिर्द हजारों जानवर जमा हो जाते अन्धेरा पड़े पकड़ लाते और कबाब कर के खाते—

करना और हत्‌ता कहना हम तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर देंगे और नेकी करने वालों को और ज़्यादा देंगे (५८) तो जो ज़ालिम थे उन्होंने इस लफ़्ज़ को जिसका उनको हुक्म दिया था बदल कर उसकी जगह और लफ़्ज़ कहना शुरू किया पस (हमने उन) ज़ालिमों पर आसमान से अज़ाब नाज़िल किया क्योंकि नाफ़रमा-नियाँ किये जाते थे (५६) रुकू (६)

और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिये (खुदा से) पानी माँगा तो हमने कहा कि अपनी लाठी पत्थर पर मारो उन्होंने लाठी मारी तो फिर उसमें से बारह चश्मे फूट निकले और तमाम लोगों ने अपना २ घाट मालूम कराके पानी पी लिया (हमने हुक्म दिया) ख़ुदा की (अता फ़रमाई हुई) रोज़ी में से खाओ और पियो मगर ज़मीन में फिसाद न करते फिरना (६०) जब तुमने कहा कि मूसा हम में से एक (ही) खाने पर सब्र नहीं हो सकता तू अपने पर्वरदिगार से दुआ कीजिये कि तरकारी और ककड़ी और गेहूँ और मसूर और प्याज़ (वग़ैरा) जो नबातात ज़मीन से उगती हैं हमारे लिये पैदा कर दे उन्होंने कहा कि उमदा चीजें छोड़ कर उनके ऐवज़ नाक़िस चीज़ें क्यों चाहते हो (अगर यही चीज़ें मतलूब हैं) तो किसी शहर में जा उतरो (वहाँ) जो माँगते हो मिल जायेगा और (आख़िरकार) ज़िल्लत (व रुसवाई) और मोहताजी (व बेनवाई) उनसे चिमटा दी गई और वह ख़ुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हो गये यह इस लिये कि वह ख़ुदा की आयतों से इंकार

करते थे और (उसके) नबियों को ना हक़ क़त्ल कर देते थे (यानी)

यह इस लिये कि नाफ़रमानी किये जाते थे और हद से बढ़े जाते थे (६१) रुकू (७)

जो लोग मुस्लमान हैं या यहूदी या ईसाई या सितारा परस्त (यानी कोई शख़्स किसी क़ौमो मज़हब का हो) जो ख़ुदा और रोजे क़यामत पर ईमान लायेगा और अमल नेक करेगा तो ऐसे लोगों को उन (के आमाल) का सिला ख़ुदा के यहाँ मिलेगा और (क़यामत के दिन) उनको न किसी तरह का ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मनाक होंगे (६२) और जब हम ने तुम से एहद (कर) लिया और कोहेतूर को तुम पर उठा खड़ा किया (और हुक्म दिया) कि जो किताब हमने तुम को दी है उस को ज़ोर से पकड़े रहो और जो उस में (लिक्खा) है उसे याद रक्खो ताकि (अज़ाब से) महफ़ूज़ रहो (६३) तो तुम इसके बाद (अहद से) फिर गये और अगर तुम पर खुदा का फ़ज़ल और उसकी मेहर-बानी न होता तो तुम खसारे में पड़ गये होते (६४) और तुम उन लोगों को खूब जानते हो जो तुम में से हफ़्ते के दिन (मछली का शिकार करने में) हद से तजावुज़ कर गये थे तो हम ने उन से कहा कि ज़लीलो ख्वार बन्दे हो जाओ (६५) (और) उस (किस्से) को उस वक्त के लोगों के लिये और जो उनके बाद आने वाले थे इबरत और परहेज़गारों के लिये नसीहत बना दिया (६६) और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि ख़ुदा तुमको हुक्म देता है कि एक बैल ज़ब्हा करो वह बोले क्या तुम हम से हंसी करते हो ? (मूसा ने) कहा कि मैं खुदा को पनाह

माँगता हूँ कि नादान बनूँ (६७) उन्होंने कहा अपने पर्वरदिगार से इल्तिजा कीजिए कि वह हमें बताये वह बैल किस तरह का हो (मूसा ने) कहा पर्वरदिगार फ़रमाता है कि वह बैल न तो बूढ़ा हो और न बछड़ा बल्कि उनके दर्मियान (यानी) जवान हो सो जैसा तुमको हुक्म दिया गया है वैसा करो (६८) उन्होंने कहा अपने पर्वरदिगार से दरख़्वास्त कीजिये कि हम को यह भी बता दे कि उस का रंग कैसा हो मूसा ने कहा पर्वरदिगार फ़रमाता है कि उसका रंग गहरा ज़र्द हो कि देखने वालों (के दिल) को खुश कर देता हो (६९) उन्होंने कहा (अब के) पर्वरदिगार से फिर दरख़्वास्त कीजिये कि हम को यह भी बता दे कि वह और किस २ तरह का हो क्यों कि बहुत से बैल हमें एक दूसरे से मशाबा मालूम होते हैं (फिर) ख़ुदा ने चाहा तो हमें ठीक बात मालूम हो जायेगी (७०) (मूसा ने) कहा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि वह बैल काम में लगा हुआ न हो न तो ज़मीन जोतता हो और न खेती को पानी देता हो, उस में किसी तरह का दाग़ न हो कहने लगे अब तुमने सब बातें दुरुस्त बता दीं गरज़ (बड़ी मुश्किल से) उन्होंने उस बैल को ज़ब्हा किया और ऐसा करनें वाले थे नहीं (७१) रुकू (८)।

और जब तुमने एक शख़्स को क़त्ल किया तो उसमें बाहम झगड़ने लगे लेकिन जो बात तुम छुपा रहे थे ख़ुदा उसको ज़ाहिर करने वाला था (७२) तो हमने कहा कि इस (बैल) का कोई

आयत ७२:—बनी इसराईल मे एक बड़ा मालदार शख़्स था मगर ला औलाद उसका वारिस उसका एक भतीजा था उसने माल के लालच में उसे क़त्ल कर डाला इस तरह कि कातिल का कोई पता नहीं

सा टुकड़ा मक्तूल को मारो, इस तरह खुदा मुर्दों को जिन्दा करता है और तुम को अपनी (कुदरत) की निशानियां दिखाता है ताकि तुम समझो (७३) फिर इसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गये गोया वह पत्थर हैं या उन से भी ज़्यादा सख़्त, और पत्थर तो बाज़े ऐसे होते हैं कि उनमें से चशमें फूट निकलते हैं और बाज़े ऐसे होते हैं कि फट जाते हैं और उन में से पानी निकलने लगता है और बाज़े ऐसे होते हैं कि खुदा के ख़ौफ़ से गिर पड़ते हैं, और खुदा तुम्हारे अमलों से बे ख़बर नहीं (७४) (मोमिनो) क्या तुम उम्मीद रखते हो कि यह लोग तुम्हारे (दीन के) क़ाईल हो जायेंगे (हालाँकि) उन में से कुछ लोग क़लामे खुदा (यानी तौरात) को सुनने फिर समझ लेने के बाद उसको जान बूझकर बदल रहे हैं (७५) और यह लोग मोमिनों से मिलते हैं तो कहते हैं हम ईमान ले आये हैं और जिस वक्त

चलता था लोग इस बारे में लड़ने झगड़ने लगे फिर उन्होंने मूसा से कैफ़ियत बयान की आपने बैल ज़ब्हा करने का हुक्म दिया और बताया कि उन्हें खुदा ने ऐसा करने का इशारा किया है आख़िर बैल ज़ब्हा किया गया तो हुक्म हुआ कि इसका कोई सा टुकड़ा मक़तूल को मारो उसके मारने से मक़तूल जिन्दा हो गया उससे पूछा गया कि तुझ को किस ने मारा था तो उसने क़ातिल का नाम ले दिया इस किस्से के ज़ाहिर करने का मक़सद यह है कि जिस तरह खुदा ने उस मक़तूल को तुम्हारी आँखों के सामने ज़िन्दा कर दिया उसी तरह क़यामत के दिन सारे मुर्दों को उठा खड़ा करेगा और यह उसको कुछ मुशकिल नहीं।

आयत ७५:—यह लोग कुछ बहुत ही निडर थे खुदा के कलाम को बदल देने से भी नहीं डरते थे, कोई कहता है कि वह लफ़्ज़ बदल देते थे कोई कहता है कि मआनी, कोई कहता है कि दोनों तरह बदलते थे मुसलमान लोग यहूदियों और ईसाईयों की किताबों को बदला हुआ

आपस में एक दूसरे से मिलते हैं तो क्या कहते हैं जो बात खुदा ने तुम पर जाहिर फ़रमाई हैं वह तुम इनको इस लिये बताये देते हो कि (कयामत के दिन) इसी के हवाले से तुम्हारे पर्वरदिगार के सामने तुम को इल्ज़ाम दें, क्या तुम समझे नहीं ? (७६) क्या यह लोग यह नहीं जानते कि जो यह कुछ छुपाते और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं खुदा को (सब) मालूम है (७७) और बाज़ उनमें अनपढ़ हैं कि अपने ख़यालाते बातिल के सिवा (खुदा की) किताब से वाकिफ़ ही नहीं और वह सिर्फ़ ज़िन्न से काम लेते हैं (७८)तो उन लोगों पर अफ़सोस है कि जो अपने हाथ से किताब लिखते हैं और फिर कहते यह हैं कि यह खुदा के पास से(आई)है ताकि उसके बदले में थोड़ा सा मूल्य (अर्थात् साँसारिक आनन्द) प्राप्त करें उन पर अफ़सोस है इस लिये कि (वे असल बातें) अपने हाथ से लिखते हैं और (फिर) उन पर अफ़सोस है इसलिए कि ऐसे काम करते हैं (७९) और कहते हैं कि (जहन्नुम की) आग हमें चन्द रोज़ के सिवा छू ही नहीं सकेगी उन से पूछो कि क्या तुमने खुदा से इक़रार ले रक्खा है खुदा अपने इक़रार के खिलाफ़ नहीं करेगा (नहीं) बल्कि तुम खुदा के बारे में ऐसी बातें कहते हो जिनका तुम्हें मुतलक़ इल्म नहीं (८०) हाँ जो बुरे काम करे और उसके गुनाह (हर तरफ़) उसको घेर लें तो ऐसे लोग

मानते थे और उन पर भरोसा नहीं करते थे उन्हें फ़ख्र था कि उनकी आस्मानी किताब में कोई कुछ नहीं बदल सकता है क्योंकि खुदा ने उस की सुरक्षा अपने ज़िम्मे ली थी।

दोज़ख़ (में जाने) वाले हैं (और) वह हमेशा उसमें (जलते) रहेंगे (८१) और जो ईमान लायें और नेक काम करें वह जन्नत के मालिक होंगे (और) हमेशा उस में (आनन्द भोगते) रहेंगे (८२) रुकू (६)।

और जब हमने बनी इसराईल से अहद लिया कि खुदा के सिवा किसी की इबादत न करना और मां बाप और रिश्तेदारों और यतीमों और मोहताजों के साथ भलाई करते रहना और लोगों से अच्छी बातें कहना और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहना तो चन्द शख़्सों के सिवा तुम सब (इस अहद से) मुँह फेर कर फिर बैठे (८३) और जब हमने तुम से अहद कर लिया कि इसमें कुश्तो खून न करना और अपने आप को उनके वतन से निकालना तो तुमने इक़रार कर लिया और तुम इस बात के गवाह हो (८४) फिर तुम वही हो कि अपनों को कत्ल भी कर देते हो और अपने में से बाज़ लोगों पर गुनाह और जुल्म से चढ़ाई करके उन्हें वतन से निकाल भी देते हो और अगर वह तुम्हारे पास क़ैद होकर आयें तो बदला देकर उन्हें छुड़ा भी लेते हो हालाँकि उनका निकाल देना तुम को हराम था (यह) क्या (बात है कि) तुम किताब (खुदा) के बाज़ एहकाम को तो मानते

आयत ८५ :—यहूदी कहते थे हमारे दिल पर्दे में हैं यानी हम अपने दीन के सिवा किसी की बात समझ ही नहीं सकते खुदा ने फ़रमाया कि दिल पर्दे में नहीं हैं बल्कि खुदा ने उनके कुफ्र के सबब उन पर लानत कर रक्खी है यानि उनके दिलों पर मोहर लगा रखी है यह खुदा के ग़ज़ब की निशानी है।

हो और बाज़ से इन्कार किये देते हो जो तुम में ऐसी हरकत करे उनकी सज़ा इसके सिवा और (क्या) हो सकती है कि दुनियाँ की ज़िन्दगी में तो रुसवाई हो और क़यामत के दिन सख़्त से सख़्त अज़ाब में डाल दिये जायें और जो काम तुम करते हो खुदा उन से ग़ाफ़िल नहीं (८५) यह वह लोग हैं जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी ख़रीदी सो न तो उससे अज़ाब ही हल्का किया जायेगा न उनको (और तरह की) मदद मिलेगी (८६) रुकू (१०)।

और हम ने मूसा को किताब इनायत की और उन के पीछे यके बाद दीगरे पैगम्बर भेजते रहे और ईसा बिन मरियम को खुले निशानात बख़्शे और रुह उलक़ुदस (अर्थात् जिब्राईल) से उनको मदद दी तो जब कोई पैगम्बर तुम्हारे पास ऐसी बातें लेकर आये जिन को तुम्हारा जी नहीं चाहता था तो सरकश हो जाते रहे और एक गिरोह (अन्बिया) को तो झुटलाते रहे और एक गिरोह को क़त्ल करते रहे (८७) और कहते हैं हमारे दिल पर्दे में हैं (नहीं) बल्कि खुदा ने उनके कुफ्र के सबब उन पर लानत कर रक्खी है बस यह थोड़े ही पर ईमान लाते हैं (८८) और जब खुदा के हाँ से उन के पास किताब आई जो उनकी (आस्मानी) किताब की भी तसदीक करती है और वह पहले (हमेशा) काफ़िरों पर फ़तह माँगा करते थे तो जिस चीज को वह खूब पहचानते थे जब उन के पास आ पहुँची तो उससे काफ़िर हो गये बस काफ़िरों पर खुदा की लानत (८९)

जिस चीज़ के बदले उन्होंने अपने तईं बेच डाला वह बहुत बुरी है यानी इस जलन से कि खुदा अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपनी मेहरबानी से नाज़िल फरमाता है खुदा की तावील की हुई किताब से कुफ्र करने लगे तो वह (उसके) गज़ब वाला गज़ब में मुब्तिल हो गये और काफ़िरों के लिये ज़लील करने वाला अज़ाब है (९०) और जब उन से कहा जाता है कि जो किताब खुदा ने (अब) नाज़िल फ़रमाई है उसको मानो तो कहते हैं कि जो किताब पहले हम पर (पहले) नाज़िल हो चुकी है हम तो उसी को मानते हैं (अर्थात्) यह इसके सिवा और (किताब) को नहीं मानते हालांकि वह (सरासर) सच्ची है और जो उनकी (आस्मानी) किताब है इसकी भी तसदीक करती है (उन से) कह दो कि अगर तुम साहिबे ईमान होते तो खुदा के पैगम्बरों को पहले ही क्यों कत्ल किया करते (९१) और मूसा तुम्हारे पास खुले हुए मौजज़ात लेकर आये तो तुम उनके (कोहेतूर जाने के बाद) बछड़े को माबूद बना बठे और तुम (अपने ही हक़ में) ज़ुल्म करते थे (९२) और तब हमने तुम (लोगों) से अहदे वासिक़ लिया और कोहेतूर को तुम पर उठा खड़ा किया (और हुक्म दिया कि) जो (किताब) हमने तुम को दी है उसको ज़ोर से पकड़ो और जो तुम्हें हुक्म होता है उसको सुनो वह (जो तुम्हारे बड़े थे) कहने लगे कि हमने सुन तो लिया लेकिन मानते नहीं और उनके कुफ्रके सबब बछड़ा (गोया) उन के दिलों में रच गया था (ऐ पैगम्बर उन से कह दो) कि

अगर तुम मोमिन हो तो तुम्हारा ईमान तुम को बुरी बात बताता है (६३) कह दो कि अगर आखरत का घर और लोगों (अर्थात् मुस्लमानों) के लिये नहीं और खुदा के नज़दीक तुम्हारे ही लिये मखसूस है तो अगर सच्चे हो तो मौत की आरज़ू तो करो (६४) लेकिन उन आमाल की वजह से जो उन के हाथ आगे भेज चुके हैं कभी उसकी आरज़ू नहीं करेंगे और खुदा ज़ालिमों से खूब वाक़िफ़ है(६५)बल्कि उनको तुम और लोगों से ज़िन्दगी के कहीं हरीस देखोगे यहाँ तक कि मुशरिकों से भी, उनमें से हर एक यही ख़्वाहिश करता है कि काश वह दो हज़ार बरस जीता रहे मगर इतनी लम्बी उम्र उस को मिल भी जाये तो उसे अज़ाब से तो नहीं छुड़ा सकती और जो काम यह करते है खुदा उन को देख रहा है (६६) रुकू (११)

कह दो कि जो शख़्स जिब्राईल का दुश्मन हो (उस को ग़ुस्से में मर जाना चाहिए) उस ने तो (यह किताब) खुदा के हुक्म से तुम्हारे दिल पर नाज़िल की है जो पहली किताबों की तसदीक़ करती है और ईमान वालों के लिये हिदायत और बशारत है (६७) जो शख़्स खुदा का और उसके फ़रिश्तों का और उसके पैग़म्बरों का और जब्राईल और मैकाईल का दुशमन हो तो ऐसे काफ़िर का खुदा दुशमन है (६८) और हम ने तुम्हारे

अयात ६४:—कहते थे कि जन्नत में हमारे सिवा कोई न जायेगा और हम को अज़ाब न होगा और अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अगर तुम यक़ीनन बहिश्ती हो तो फिर मरने से क्यों डरते हो।

पास सुलझी हुई आयतें इरसाल फ़रमाई हैं और उन से इन्कार वही करते हैं जो बदकिर्दार हैं (९९) उन लोगों ने जब जब (खुदा से) अहद वासिक़ किया तो उन में से एक फ़रीक़ ने उस को (किसी चीज़ की तरह) फेंक दिया हक़ीक़त यह है कि उनमें से अक्सर बेईमान हैं (१००) और जब उनके पास खुदा की तरफ़ से पैग़म्बर (आख़िर उज़्ज़माँ आये और) वह उनकी (आस्मानी) किताब की भी तसदीक़ करते हैं तो जिन लोगों को किताब दी गई थी उनमें से एक जमाअत ने खुदा की किताब को पीठ पीछे फेंक दिया गोया वह जानते ही नहीं (१०१) और

आयत १०१:—जब आँ हज़रत नबी हुए तो यहूद ने आप से तीन सवाल किये पहला सवाल यह कि वह कौन सी चीज थी जो तौरात से पहले हज़रत याकूब ने अपने ऊपर हराम कर ली थी, दूसरा यह कि औरत व मर्द का नुत्फ़ा मिलकर कभी लड़का और कभी लड़की क्यों होती है, तीसरा यह कि नबी आख़िरुज़्ज़माँ की ख़ास अलामत तौरात में क्या लिखी है और उसका रफ़ीक़ कौन सा फ़रिश्ता होगा।

पहली बात का आपने जवाब यह दिया कि जब एक बार हज़रत याकूब बीमार हुए तो उन्होंने मिन्नत मानी कि अगर मैं जल्दी ठीक हो जाऊँगा तो उस चीज को छोड़ दूँगा जो मुझे बहुत भाती है अच्छे हो जाने पर उन्होंने अपनी नज़्र पूरी करने के लिये ऊँट का गोश्त अपने ऊपर हराम कर लिया—दूसरे के जवाब में आपने फ़रमाया मर्द की मनी गाढ़ी और सफ़ेद होती है और औरत की ज़र्द और पतली इन दोनों मनियों में से जिसकी ताकत ज्यादा होती है उसी के अनुसार औलाद पैदा होती है, तीसरे के जवाब में नबी की अलामत यह बताई कि उसकी आंखें सोते वक्त ग़नूदगी में होती हैं पर दिल होशियार रहता है और रफ़ीक़ ज़िब्रील हैं यहूद ने जवाब तो मान लिये मगर यह कहा कि ज़िब्रील हमारा पहले ही दुश्मन है इस लिये हम इस्लाम क़बूल नहीं कर सकते।

उन (हज़्लियात) के पीछे लग गये जो सुलैमान के अहदे सल्तनत में शयातीन पढ़ा करते थे और सुलैमान ने मुतलक़ कुफ्र की बात नहीं की बल्कि शैतान ही कुफ्र करते थे कि लोगों को जादू सिखाते थे और उन बातों के भी (पीछे लग गये) जो शहर बाबुल में दो फ़रिश्तों (यानी, हारुत और मारुत पर उतरी थीं और वह दोनों किसी को कुछ नहीं सिखाते थे जब तक यह न कह देते कि हम तो (जरिएये) अज़माईश हैं तुम कुफ्र में न पड़ो ग़रज़ लोग उनसे ऐसा (जादू) सीखते जिससे मियाँ बीवी में जुदाई डाल दें और खुदा के हुक्म के सिवा वह उस (जादू) से किसी का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते थे और कुछ ऐसे (मन्त्र) सीखते जो उनको नुक़सान ही पहुँचाते और फ़ायदा कुछ न देते और वह जानते थे कि जो शख़्स ऐसी चीज़ों (यानी जादू और मन्त्र इत्यादि) का ख़रीदार होगा उसका आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं और जिस चीज़ के एवज़ उन्होंने अपनी जानों को बेच डाला वह बुरी थीं काश वह (इस बात को) जानते (१०२) और अगर वह ईमान

आयत १०२:—हज़रत सुलैमान की सल्तनमें देवों ने वहुत तरह के जादू के अमल और तमाशे जमा करके एक किताब बनाई थी और जाहिल और बेवकूफ़ लोगों में उसे मशहूर किया था जब हज़रत सुलैमान को यह खबर पहुंची तो उन्होंने वह किताब मंगाकर सन्दूक में बन्द करके ज़मीन में दफ़न कर दी हज़रत सुलैमान की मौतके बाद उनके देवोंने उस सन्दूक को निकाल कर लोगों से कहा कि हज़रत सुलैमान इसी किताब के अमल से बादशाहत करते थे इस सबब से यहूदी हज़रत सुलैमान को कहते थे कि जादू उन से है सो खुदा ने फ़रमाया कि सुलैमान जादू न करते थे।

लाते और परहेज़गारी करते तो ख़ुदा के हाँ से बहुत अच्छा सिला मिलता, ऐ काश! वह इससे वाकिफ़ होते (१०३) रुकू (१२)।

ऐ अहले ईमान! गुफ़्तगू के वक्त पैग़म्बरे ख़ुदा से राअना न कहा करो उन्ज़ुनी कहा करो और खूब सुन रक्खो और क़ाफ़िरों के लिये दुख देने वाला अज़ाब है (१०४) जो लोग काफ़िर हैं अहले कित ब या मुश्रिक वह इस बात को पसन्द नहीं करते कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से ख़ैरो बरक़त नाजिल हो और ख़ुदा तो जिसको चाहता है अपनी रहमत के साथ ख़ास कर लेता है और ख़ुदा बड़े फ़ज़ल का मालिक है (१०५) हम जिस आयतको मन्सूख कर देते या उसे फ़रामोश करा देते हैं तो उससे बेहतर या वैसी ही और आयत भेज देते हैं क्या तुम नहीं जानते कि ख़ुदा हर बात पर क़ादिर है (१०६) तुम्हें मालूम नहीं कि अस्मानों और ज़मीन की बादशाहत ख़ुदा ही की है और ख़ुदा के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त और मददगार नहीं (१०७) क्या तुम यह चाहते हो कि अपने पैग़म्बर से इस तरह के सवाल करो जिस तरह के सवाल पहले मूसा से किये गये थे और जिस शख़्स ने ईमान (छोड़कर उस) के बदले कुफ़्र लिया वह सीधे रस्ते से भटक गया (१०८) बहुत से अहले किताब अपने दिल की जलन से यह चाहते हैं कि ईमान ला चुकने के बाद तुमको फिर क़ाफ़िर बना दें हालाँकि उन पर हक़ ज़ाहिर हो चुका है तो तुम मुआफ़ कर दो औरदर गुज़र करो यहाँ तक कि ख़ुदा अपना (दूसरा) हुक्म भेजे बेशक़ ख़ुदा हर बात पर क़ादिर है (१०९) और नमाज़ अदा करते रहो और ज़कात देते रहो (और) जो भलाई अपने लिये

आगे भेज रखोगे उसको ख़ुदा के हाँ पा लोगे कुछ शक़ नहीं कि ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को देख रहा है (११०) और (यहूदी और ईसाई) कहते हैं कि यहूदियों और ईसाईयों के सिवा कोई बहिश्त में नहीं जाने का यह उन लोगों के ख़्यालात बातिल हैं (ऐ पैग़म्बर) उनसे कह दो कि अगर सच्चे हो तो दलील पेश करो (१११) हाँ जो शख़्स ख़ुदा के आगे गर्दन झुकाये (यानी ईमान ले आये) और वह नेकूकार भी हो उसका सिला उसके पर्वरदिगार के पास है और ऐसे लोगों को (क़यामत के दिन) न किसी तरह का ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मनाक होंगे (११२) रुकू (१३)।

और यहूदी कहते हैं कि ईसाई रस्ते पर नहीं हालाँकि वह किताब (इलाही) पढ़ते हैं इसी तरह बिल्कुल उन्हीं की सी बात वह लोग कहते हैं जो (कुछ) नहीं जानते (यानी मुशरिक) तो जिस बात में यह लोग इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं ख़ुदा क़यामत के दिन उसका उनमें फ़ैसला कर देगा (११३) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो ख़ुदा की मस्जिदों में ख़ुदा के नाम का ज़िक्र किये जाने को मना करे और उनकी वीरानी का साई हो? उन लोगों को कुछ हक़ नहीं कि उनमें दाख़िल हो मगर डरते हुए उनके लिये दुनियाँ में रुसवाई है और आख़िरत में बड़ा अज़ाब (११४) और मशरिक़ और मग़रिब सब ख़ुदा ही का तो है, तो जिधर तुम रुख़ करो उधर ख़ुदा की ज़ात है बेशक ख़ुदा साहिबे वुसअत और बाख़बर है (११५) और यह लोग इस बात के

क़ाईल हैं कि खुदा औलाद रखता है नहीं) वह पाक है बल्कि जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है सब उसी का है और सब उसके फ़रमाँ बरदार हैं (११६) (वही) आस्मानों और ज़मीनका पैदा करने वाला है जब कोई काम करना चाहता है तो उसको इर्शाद फ़रमा देता है कि होजा तो वह हो जाता है (११७) और जो लोग (कुछ) नहीं जानते (यानी मुशरिक) वह कहते है कि ख़ुदा हमसे क़लाम क्यों नहीं करता ? या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती ? इसी तरह जो लोग उनसे पहले थे वह भी उन्हीं की सी बातें किया करते थे उन लोगों के दिल आपस में मिलते जुलते हैं जो लोग साहिबे यकीन हैं उनके (समझाने के) लिये हमने निशानियाँ बयान कर दी हैं (११८) (ऐ मोहम्मद) हमने तुमको सच्चाई के साथ खुश ख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है और अहले दोज़ख के बारे में तुम से कुछ पुरसिश नहीं होगी (११६) और तुमसे न तो यहूदी कभी खुश होंगे और न ईसाई यहाँ तक कि उनके मज़हबी की पैंरवी अख़्तियार कर लो (उन से) कह दो कि ख़ुदा की हिदायत (यानी दीने इस्लाम) ही हिदायत है और (ऐ पैग़म्बर) अगर तुम अपने पास इल्म (यानी वही ख़ुदा) के आ जाने पर भी उनकी ख्वाहिशों पर चलोगे तो तुम को (अज़ाब) ख़ुदा से (बचाने वाला) न कोई दोस्त होगा न कोई मददगार (१२०) जिन लोगों को हमने किताब इनायत की है वह उसको (ऐसा) पढ़ते हैं जैसा उसके पढ़ने का हक़ है यही लोग उस पर ईमान

रखने वाले हैं और जो लोग इसको नहीं मानते वह खसारा पाने वाले हैं (१२१) रुकू (१४)।

ऐ बनी इसराईल ! मेरे वह एहसान याद करो जो मैंने तुम पर किये और यह कि मैंने तुमको अहले आलम पर फ़ज़ीलत बख्शी (१२२) और उस दिन से डरो जब कोई शख़्स किसी शख़्स के कुछ काम न आये और न उस से बदला कबूल किया जाये और न उसको किसी की सिफ़ारिश कुछ फ़ायदा दे और न लोगों को(किसी और तरह की)मदद मिल सके (१२३) और जब पर्वरदिगार ने चन्द बातों में इब्राहीम की आज़माईश की तो वह उनपर पूरे उतरे,ख़ुदाने कहा किमैं तुमको लोगोंका पेशवा बनाऊँगा उन्होंने कहा कि (पर्वरदिगार) मेरी औलाद में से भी पेशवा बनाईयो (खुदा ने) फ़रमाया कि हमारा इक़रार ज़ालिमों के लिये नहीं हुआ करता (१२४) और जब हमने खान-ऐ-काबा को लोगों के लिये जमा होने और अमन पाने की जगह मुकर्रर किया और (हुक्म दिया) जिस मक़ान पर इब्राहीम खड़े हुए थे उसको नमाज़ की जगह बना लो और इब्राहीम और इस्माईल को कहा कि तवाफ़ करने वालों और रको करने वालों और सजदा करने वालों के लिये मेरे घर को पाक साफ़ रखा करो (१२५) और जब इब्राहीम ने दुआ की ऐ मेरे पर्वरदिगार ! इस जगह को अमन का शहर बना और उसके रहने वालोंमें से जो खुदा पर और रोजे आख़िरत पर ईमान लायें उनके खाने को मेवे अता कर

तो (खुदा ने) फ़रमाया कि जो क़ाफ़िर होगा मैं उसको भी किसी

क़दर मुत्तमत्ता करूँगा (मगर) फिर उसको (अज़ाब) दोज़ख के (भुगतने के) लिये नाचार कर दूंगा और वह बुरी जगह है (१२६) और जब इब्राहीम और इस्माईल बेतुल्लाह की बुनिया ऊँची कर रहे थे (तो दुआ किये जाते थे कि) ऐ हमारे पर्वरदिगार ! हम से यह खिदमत क़बूल फ़रमा बेशक तू सुनने वाला (और) जानने वाला है (१२७) ऐ हमारे पर्वरदिगार ! हमको अपना फ़रमाँ बरदार बनाये रखियो और हमारी औलाद में से एक गिरोह को अपना मुतीह बनाये रहियो और (पर्वरदिगार) हमें हमारे तरीक़े इबादत बता और हमारे हाल पर (रहम के साथ) तवज्जोह फ़रमा, बेशक तू तवज्जोह फ़रमाने वाला मेहरबान है (१२८) ऐ हमारे पर्वरदिगार उन (लोगों में उन्हीं में से एक पैग़म्बर मब्ऊस कीजो जो उन को तेरी आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाया करे और किताब और दानाई सिखाया करे और उन (के दिलों) को पाक साफ़ किया करे बेशक तू ग़ालिब और साहिबे हिकमत है (१२९) रुकू (१५)।

और इब्राहीम के दीन से कौन रुगर्दानी कर सकता है बजुज़ उसके जो निहायत नादान हो, हमने उनको दुनियाँ में भी मुन्तख़िब किया था और आख़िरत में भी वह (ज़ुमर-ऐ) सुलहा में होंगे (१३०) जब उन से उनके पर्वरदिगार ने फ़रमाया कि इस्लाम ले आओ तो उन्होंने अर्ज़ की कि मैं रब्बुल आलमीन के आगे सरे इताअत ख़म करता हूँ (१३१) और इब्राहीम ने अपने बेटों को इसी बात की वसीयत की और याक़ूब ने भी (अपने फ़र्जन्दों से यही कहा) कि ऐ मेरे बेटो ख़ुदा ने तुम्हारे लिये यही दीन पसंद

फ़रमाया है तो मरना तो मुस्लमान ही मरना (१३२) भला जिस वक्त याक़ूब वफ़ात पाने लगे तो तुम उस वक्त मौजूद थे ? जब उन्हीं ने अपने बेटों से पूछा कि मेरे बाद तुम किस की इबादत करोगे तो उन्होंने कहा कि आपके माबूद और आपके बाप दादा इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ के माबूद की इबादत करेंगे जो माबूदे यकता है और हम उसी के अलम बर्दार हैं (१३३) यह जमायत गुज़र चुकी उन के उन आमाल का बदला [मिलेगा] और तुम को तुम्हारे आमाल का और जो अमल वह करते थे उनकी पुरसिश तुमसे नहीं होगी (१३४) और (यहूदी और ईसाई) कहते हैं कि यहूदी या ईसाई हो जाओ तो सीधे रस्ते पर लग जाओ (ऐ पैग़म्बर उनसे) कह दो (नहीं) बल्कि हम दीने इब्राहीम अख़्तियार किये हुए है जो एक खुदा के हो रहे थे शिरकोंमें से न थे (१३५) (मुस्लमानों) कहो कि हम खुदा पर ईमान लाये और जो (किताब) हम पर उतरी उस पर और जो (सहीफ़े) इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब और उनकी औलाद पर नाज़िल हुऐ उन पर और जो (किताबें) मूसा और ईसा को अता हुई उन पर, और जो और पैगम्बरों को उनके पर्वरदिगार की तरफ़ से मिली उन (सब पर ईमान लाये) हम उन (पैगम्बरों) में से किसी में कुछ

आयत १३४: — यहूदियों को यक़ीन यूं था कि माँ बाप के गुनाहों में औलाद गिरफ्तार होगी और उनके सवाब में भी औलाद शरीक होगी सो यह ग़लत है अपना ही किया अपने आगे आयेगा, भला या बुरा।

फ़र्क नहीं करते और हम उसी खुदाये वाहिद के फ़रमां बरदार हैं (१३६) तो अगर यह लोग भी इसी तरह ईमान ले आयें जिस तरह तुम ईमान ले आये हो तो हिदायत याब हो जायें और अगर मूंह फेर लें (और जानें) तो वह (तुम्हारे) मुख़ालिफ़ हैं और उनके मुक़ाबले में तुम्हें खुदा क़ाफी है और वह सुनने वाला और जानने वाला है (१३७) कह दो कि (हमने) खुदा का रंग (अख़्तियार कर लिया है) और खुदा से बेहतर रंग किसका हो सकता है? और हम उसी की इबादत करने वाले हैं (१३८) (उनसे) कहो क्या तुम खुदा के बारे में हमसे झगड़ते हो हालाँकि वही हमारा और तुम्हारा पर्वरदिगार है और हमको हमारे आमाल का बदला मिलेगा और तुमको तुम्हारे आमाल का और हम ख़ास उसी की इबादत करने वाले हैं (१३९) (ऐ यहूदो नसारा) क्या तुम इस बात के क़ाईल हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याकूब और उनकी औलाद यहूदी या ईसाई थे, ऐ मोहम्मद (उनसे) कहो कि भला तुम ज़्यादा जानते हो या खुदा! और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन जो खुदा की शहादत को जो उसके पास (किताब में मौजूद) है छुपाये और जो कुछ तुम लोग कर रहे हो खुदा उससे ग़ाफिल नहीं (१४०) यह जमायत गुज़र चुकी उनको वह (मिलेगा) जो

आयत १४०:—शहादत से मुराद इस बात का इल्म है कि मोहम्मद रसूले खुदा हैं जिन का हाल उनकी किताबों मे लिखा हुआ था लेकिन वह दीदा व दानिस्ता उसको छुपाते थे और खुदा ने शह[illegible]त के छुपाने वाले को निहायत ज़ालिम क़रार दिया है।

उन्होंने किया और तुमको वह जो तुमने किया और जो अमल वह करते थे उनकी पुरसिश तुम से नहीं होगी (१४१) रुकू (१६)

दूसरा पारा—सूरहे बकर

एहमक़ लोग कहेंगे कि मुस्लमान जिस क़बीले पर (पहले से चले आते) थे (अब) उससे क्यों मुँह फेर बैठे ? तुम कह दो कि मशरिक़ और मग़रिब सब ख़ुदा ही का है वह जिस को चाहता है सीधे रस्ते पर चलाता है (१४१) और इसी तरह हम ने तुमको उम्मते मौअतदिल बनाया है ताकि तुम लोगों पर गवाह रहो और पैग़म्बर (आख़िरुजमा) तुम पर गवाह बनें और जिस क़बीले पर तुम (पहले) थे उसको हमने इस लिये मुक़र्रर किया था कि मालूम करें कि कौन (हमारे) पैग़म्बर का ताबेह रहता है और कौन उलटे पाँव फिर जाता है और यह बात (यानी तेहवीजे क़िबला लोगों को) गराँ मालूम हुई मगर जिन को ख़ुदा ने हिदायत बख़्शी है (वह इसे गराँ नहीं समझते) और ख़ुदा ऐसा नहीं कि तुम्हारे ईमान को यूँ ही खो दे, ख़ुदा तो लोगों पर बड़ा मेहरबान (और) साहिबे रहमत है (१४३) (ऐ मोहम्मद)

आयत १४३: उम्मते मौतदिल—जिसमे न अफ़रात है न तफ़रीत ईसाइयों ने अफ़रात अख़्तियार की कि हजरत ईसा को खुदा का बेटा बना दिया यहूदियों ने तफ़रीत कि उन की पैग़म्बरी को भी न माना, उम्मते मौतदिल ने न उन को हद से ज़्यादा बढ़ाया न घटाया बल्कि उनके दर्जे पर रक्खा।

हम तुम्हरा आसमान की तरफ़ मुँह फेर फेर कर देखना देख रहे हैं सो हम तुम को उस क़िबले की तरफ़ जिस को तुम पसन्द करते हो मुंह करने का हुक्म देंगे तो अपना मुंह मस्जिदे हराम (यानी ख़ान-ऐ क़ाबा) की तरफ़ फेर लो और तुम लोगों जहाँ हुआ करो (नमाज़ पढ़ते वक्त) उसी मस्जिद की तरफ़ मुंह कर लिया करो और जिन लोगों को किताब दी गई है वह ख़ूब जानते हैं कि नया क़िबला) उनके पर्वरदिगार की तरफ़ से हक़ है और जो काम यह लोग करते हैं ख़ुदा उन से बे ख़बर नहीं (१४४) और अगर तुम उन अहले किताब के पास तमाम निशा-नियाँ लेकर तो भी यह तुम्हारे क़िब्ले की पैरवी न करें और तुम भी अपने क़िब्ले की पैरवी करने वाले नहीं हो और उनमें से भी बाज़ बाज़ क़िब्ले के पैरु नहीं और तुम बावजूद इस के कि तुम्हारे पास दानिश (यानी वही ख़ुदा) आ चुकी है उनकी ख्वाहिशों के पीछे चलोगे तो ज़ालिमों में (दाखिल) हो जाओगे (१४५) जिन लोगों को हमने किताब दी है वह उन (पैग़म्बरे आखिरुज़्ज़माँ) को इस तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचाना करते हैं मगर एक फ़रीक़ इन में से सच्ची बात को जान बूझकर छुपा रहा है(१४६) (ऐ पैग़म्बरे नया क़िब्ला) तुम्हारे पर्वरदिगार

आयत १४४:—मसज़िदे हराम कहते हैं, काबे की मसज़िद को हराम का मतलब "जिस जगह बन्द रहना चाहिए" उस मकान में कई बातें मना है आदमी को मारना, जानवर को सताना, दरख़्त और घास उखाड़ना और पड़ा माल उठाना।

की तरफ़ से हक़ है तो तुम हरगिज़ शक करने वालों में न होना (१४७) रुकू (१७)।

और हर एक (फ़िरके) के लिये एक सिम्त (मुक़र्रर) है जिधर वह (इबादत के वक्त) मुंह किया करते हैं तो नेकियों में सबक़त हासिल करो तुम जहाँ होगे ख़ुदा तुम सब को जमा करेगा बेशक़ ख़ुदा हर चीज़ पर क़दिर है (१४८) और तुम जहाँ से निकलो (नमाज़ में) अपना मुं मसज़िदे मोहतरम की तरफ़ कर लिया करो, बे शुब्हा वह तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से हक़ है और तुम लोग जो कुछ करते हो ख़ुदा उस से बे ख़बर नहीं (१४९) और तुम जहाँ से निकलो मसज़िदे मोहतरम की तरफ़ मुंह (करके नमाज़ पढ़ा) करो और मुस्लमानों तुम जहाँ हुआ करो उसी (मसज़िद) की तरफ़ रुख़ किया करो (यह ताकीद) इस लिये (की गई) है कि लोग तुम को किसी तरह का इल्ज़ाम न दे सकें मगर उन में से जो ज़ालिम हैं (वह इल्ज़ाम दे तो दें) सो उन से मत डरना और मुझ ही से डरते रहना और यह भी मक़सूद है कि मैं तुम को अपनी तमाम नैयमतें बख़्शूं और यह भी कि तुम राहे रास्त पर चलो (१५०) जिस तरह (मिन जुमला और नैयमतों के हमने तुम में तुम्हीं में से एक रसूल भेजे हैं जो तुम को हमारी आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाते और तुन्हें एक बनाते और किताब (यानी कुरान) और दानाई सिखाते हैं और ऐसी बातें बताते हैं जो तुम पहले नहीं जानते थे (१५१) सो तुम मुझे याद किया करो मैं तुम्हें याद किया करूंगा और मेरा एहसान मानते रहना और ना शुक्री न करना (१५२) रुकू (१८)।

ऐ ईमान वालो सब्र और नमाज़ से मदद लिया करो बेशक़ ख़ुदा सब्र क़रने वालों के साथ है (१५३) और जो लोग ख़ुदा की राह में मारे जायें उनकी निस्बत यह न कहना कि वह मरे हुए हैं (वह मुर्दा नहीं) बल्कि ज़िन्दा हैं लेकिन तुम नहीं जानते (१५४) और हम किसी क़दर खौफ़ और भू और माल और जानें और मेवा के नुक़सान से तुम्हारी आज़माईश करेंगे तो सब्र करने वालों को (ख़ुदा की ख़ुशनूदी की) बशारत सुना दो (१५५) उन लोगों पर जब कोई मुसाबत वाकैय होती है तो कहते हैं कि हम ख़ुदा का माल हैं और उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं (१५६) यही लोग हैं जिनपर उनके पर्वरदिगार की मेहरबानी और रहमत है और यही सीधे रास्ते पर हैं (१५७) बेशक़ (कोह) सफ़ा और मर्वाह खुदा की निशानियों में से हैं तो जो शख़्स ख़ान-ऐ काबा का हज या उमरा करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि दोनों का तवाफ़ करे (बल्कि तवाफ़ एक क़िस्म का नेक काम है) और जो कोई अपनी खुशी से नेक काम करे तो ख़ुदा क़द्र शिनास और दाना है (१५८) जो लोग हमारे हुक्मों और हिदायतों को

आयत १५८:—उमरा भी एक किसम का हज है इस में और दूसरे हज में फ़र्क़ यह है कि हजे ख़ास जिल्हिज के महीने में होता होता है और उमरा और महीनों में भी हो सकता है दूसरे हज में एहराम बान्धाना फिर उर्फ़े के दिन इर्फ़ात में हाज़िर होना फिर वहाँ से चलकर मशअरे हराम में रात रहना फिर सुबह अबद को मीन्हा में पहुंचकर कंकर फैंकना और हजामत बनवा कर एहराम उतारना और मक्के में जाकर तवाफ़े काबा करना फिर सफ़ा और मर्वाह के बीच जो मक्के में हैं

जो हम ने नाज़िल की हैं (ग़रज़े फ़ासिद से) छुपाते हैं वा वजूदे कि हमने उन लोगों के (समझाने के) लिये अपनी किताब में खोल खोल कर बयान कर दिया है ऐसों पर खुदा और तमाम लानत करने वाले लानत करते हैं (१५९) हां जो तौबा करते हैं और अपनी हालत दुरुस्त कर लेते हैं और (एहकामे इलाही को) साफ़ साफ़ बयान कर देते हैं तो मैं उनके क़सूर मुआफ़ कर देता हूँ और मैं बड़ा मुआफ़ करने वाला (और) रहम वाला हूँ (१६०) जो लोग क़ाफ़िर हुए और क़ाफ़र ही मरे ऐसों पर खुदा की और फरिश्तों की और लोगों की सब लानत (१६१) वह हमेशा इसी (लानत) में (गिरफ़्तार) रहेंगे उन से न तो अज़ाब ही हल्का किया जायेगा और न उन्हें (कुछ) मोहलत मिलेगी (१६२) और (लोगो) तुम्हारा माबूद खुदाये वाहिद है उस बड़े मेहरबान और (रहम) वाले के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं (१६३) रुकू (१९)।

बेशक आस्मान और ज़मीन के पैदा करने वाले में और रात और दिन के एक दूसरे के पीछे आने जाने में और कश्तियों (और जहाज़ों में जो) दरिया में लोगों के फ़ायदे की चीज़ें लेकर रवाँ हैं और मैंह में जिसको खुदा आस्मान से बरसाता है और उससे ज़मीन को मरने के बाद ज़िन्दा (यानी ख़ुश्क हुए पीछे सर सब्ज़)

दौड़ना इत्यादि है और उमरे में बस एहराम बान्धना और ख़ान-ऐ काबा का तवाफ़ जिस दिन चाहना करना फिर हजामत करा कर एहराम उतार देना उमरे में कुर्बानी ज़रूरी नहीं।

कर देता है और ज़मीन पर हर क़िसम के जानवर फैलाने में और हवाओं के चलाने में और बादलों में जो आसमान और ज़मीन के दर्मियान घिरे रहते हैं अकलमन्दों के लिये (ख़ुदा की कुदरत की) निशानियाँ हैं (१६४) और बाज़ लोग ऐसे हैं जो ग़ैर ख़ुदा को शरीक़ (ख़ुदा बनाते) और उनसे ख़ुदा की सी मोहब्बत करते हैं लेकिन जो ईमान वाले हैं वह तो ख़ुदा ही के सबसे ज़्यादा दोस्त दार हैं और ऐ काश ज़ालिम लोग जो बात अज़ाब के वक्त देखेंगे अब देख लेते कि किस तरह की ताक़त ख़ुदा को है और यह कि ख़ुदा सख्त अज़ाब करने वाला है (१६५) उस दिन कुफ्र के पेशवा अपने पैरुवों से बेज़ारी ज़ाहिर करेंगे और (दोनों) अज़ाब (इलाही) देख लेंगे और उनके आपस के तआल्लुक़ात मुनक़ता हो जायेंगे (१६६) (यह हाल देखकर) पैरवी करने वाले (हसरत से) कहेंगे ऐ काश हमें फिर दुनियां में जाना नसीब होता कि जिस तरह यह हम से बेज़ार हो रहे हैं उसी तरह हम भीं उन से बेजार हों इस तरह ख़ुदा उनके अमाल उन्हें हसरत बनाकर दिखायेगा और यह दोजख़ से निकल नहीं सकेंगे (१६७) रुकू (२०)।

लोगो ! जो चीज़ें ज़मीन में हलाल तय्यब हैं वह खाओ और शैतान के क़दमों पर न चलो वह तुम्हारा खुला दुश्मन है (१६८) वह तो तुम को बुराई और बेहयाई ही के काम करने को कहता है और यह भी कि ख़ुदा की निस्बत ऐसी बातें कहो जिनका तुम्हें (कुछ भी) इल्म नहीं (१६९) और जब उन लोगों

से कहा जाता है कि जो (किताब) ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमाई है उसकी पैरवी करो तो कहते हैं (नहीं) बल्कि हम तो उसी चीज़ की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया भला अगरचे उन के बाप दादा न कुछ समझते हों और न सीधे रस्ते पर हों (तब भी वह उन्हीं की तक्लीद किये जायेंगे (१७०) जो लोग काफ़िर हैं उनकी मिसाल उस शख़्स की सी है जो किसी ऐसी चीज़ को आवाज़ दे जो पुकार और आवाज़ के सिवा कुछ सुन न सके (यह) बहरे हैं गूंगे हैं अन्धे हैं कि कुछ समझ ही नहीं सकते(१७१)ऐ अहले ईमान जो पाकीज़ा चीज़ें हमने तुमको अता फ़रमाई हैं उनको खाओ और अगर ख़ुदा ही के बन्दे हो तो उस (की नैयमतों) का शुक्र भी अदा करो (१७२) उसने तुम पर मरा हुआ जानवर और लहू सूर का गोश्त और जिस चीज़ पर ख़ुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाये हराम कर दिया है हाँ जो नाचार हो जाये (बशर्ते कि) ख़ुदा की ना फ़रमानी न करे और हद (ज़रूरत) से बाहर न निकल जाये उस पर कुछ गुनाह नहीं बेशक़ ख़ुदा बख़्शने वाला और रहम करने वाला है (१७३) जो लोग (ख़ुदा की) किताब से इन आयतों और(हिदायतों)केजो उसने नाज़िल फ़रमाई हैं छुपाते और उसके बदले थोड़ी सी कीमत (यानी दुनियावी अज़मत) हासिल करते हैं वह अपने पेटों में महज़ आग भरते हैं ऐसे लोगों

आयत १७३:—मरे हुये जानवरों में से मछली और टिड्डी बरुए हदीसे नबवी हलाल हैं और लहू में से जिगर और कलेजी हलाल हैं।

से ख़ुदा क़यामत के दिन न क़लाम करेगा और न उनको (उनके गुनाहों से) पाक करेगा और उन के लिये दुख देने वाला अज़ाब है (१७४) यह वह लोग है जिन्होंने हिदायत छोड़ कर गुमराही और बख़्शिश छोड़ कर अज़ाब खरीदा यह आतिशे जहन्नुम की कैसे बर्दाश्त करने वाले हैं (१७५) यह इस लिए कि ख़ुदा ने किताब सच्चाई के साथ नाज़िल फ़रमाई और जिन लोगों ने इस किताब में इख़्तिलाफ किया वह जिद्द में (आकर नेकी से) दूर (हो गये) हैं (१७६) रुकू (२१)।

नेकी यही नहीं कि तुम मशरिक या मग़रिब (को क़िब्ला) समझ कर उनकी तरफ़ मुंह कर लो बल्कि नेकी यह है कि लोग ख़ुदा पर और रोज़े आख़िरत पर और फ़रिश्तों पर और (ख़ुदा की) किताब पर और पेंग़म्बरों पर ईमान लायें और माल बावजूद अज़ीज़ रखने के रिशतेदारों और यतीमों और मोहताजों और मुसाफ़िरों और माँगने वालों को दें और गर्दनों (के छुड़ाने में खर्च करें) और नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें और जब अहद कर लें तो उसको पूरा करें और सख़्ती और तकलीफ़ में और (मारका) कारज़ार के वक्त साबित क़दम रहें यही लोग हैं जो (ईमान में) सच्चे हैं और यही हैं जो (ख़ुदा से) डरने वाले हैं (१७७) मोमिनो! तुमको मक़तूलों के बारे में क़सास (यानी ख़ून के बदले ख़ून) का हुक्म दिया जाता है (इस तरह पर कि) आज़ाद के बदले आज़ाद (मारा जाये) और गुलाम के बदले गुलाम और औरत के बदले औरत और अगर क़ातिल को

उसके (मक़तूल) भाई के (क़सास में) से कुछ मुआफ़ कर दिया जाये (तो वारिस) मक़तूल को) पसन्दीदा तरीक़ से (करार दाद की) पैरवी (यानी मुतालब-ऐ खूं बहा) करना और (क़ातिल को) ख़ुश ख़ूई के साथ अदा करना चाहिये यह पर्वरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे लिये आसानी और मेहरबानी है जो इसके बाद ज़्यादती करे उसके लिये दुख का अज़ाब है (१७८) और ऐ अहले अक़ल (हुक्मे) क़सास से (तुम्हारी) ज़िन्दगानी है ताकि तुम (कत्लोखूरेज़ी) से बचो (१७९) तुम पर फ़र्ज़ किया जाता है कि जब तुम में से किसी की मौत का वक्त आ जाये तो अगर वह कुछ माल छोड़ जाने वाला हो तो माँ बाप और रिश्तेदारों के लिये दस्तूर के मुताबिक वसीयत कर जाये (ख़ुदा से) डरने वालों पर यह एक हक है (१८०) जो शख़्स वसीयत को सुनने के बाद बदल डाले तो उस (के बदले) का गुनाह उन लोगों पर है जो उसको बदलें बेशक ख़ुदा सुनना जानता है (१८१) अगर किसी को वसीयत करने वाले की तरफ़ से (किसी वारिस की) तरफ़दारी या हकतल्फ़ी का अन्देशा हो तो अगर वह (वसीयत को बदल कर) वारिसों में सुल्ह करा दे तो उस पर कुछ गुनाह नहीं बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला और रहम वाला है (१८२) रुकू (२२)।

मोमिनो! तुम पर फ़र्ज़ किये गये हैं जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किये गये थे ताकि तुम परहेज़गार बनो (१८३) (रोज़ों के दिन) गिनती के चन्द रोज़ हैं तो जो शख़्स

तुम में से बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में रोज़ों का शुमार पूरा कर ले और जो लोग रोज़ा रखने की ताक़त रक्खें (लेकिन रक्खें नहीं) वह रोज़े के बदले मोहताज को खाना खिला दें और जो कोई शौक से नेकी करे तो उसके हक़ में ज़्यादा अच्छा है और अगर समझो तो रोज़ा रखना ही तुम्हारे हक़ में बेहतर है (१८४) (रोज़ों का महीना) रमज़ान का महीना (है) जिसमें कुरान (अव्वल अव्वल) नाज़िल हुआ जो लोगों का रेहनुमा है और (जिसमें) हिदायत की खुली निशानियाँ हैं और जो (हक़को बातिल को) अलग अलग करने वाला है तो जो कोई तुम में से इस महीने में मौजूद हो चाहिये कि पूरे महीने के रोज़े रक्खे और जो बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों में (रख कर) उनका शुमार पूरा कर ले ख़ुदा तुम्हारे हक़ में आसानी चाहता है और सख़्ती नहीं चाहता और यह (आसानी का हुक्म) इस लिए (दिया गया है) कि तुम रोज़ों का शुमार पूरा कर लो और इस एहसान के बदले कि ख़ुदा ने तुमको हिदायत बख़्शी है तुम उस को बुज़ुर्गी से याद करो और उसका शुक्र करो (१८५) और (ऐ पैग़म्बर) जब तुमसे मेरे बन्दे मेरे बारे में दरयाफ़्त करें तो (कह दो कि) मैं तो (तुम्हारे) पास हूँ जब कोई पुकारने वाला मुझे पुकारता है तो मैं उसकी दुआ क़बूल करता हूं तो उन को चाहिये कि मेरे हुक्मों को माने और मुझ पर ईमान लाये ताकि नेक रस्ता पाये (१८६) रोज़ों की रातों में तुम्हारे लिए अपनी औरतों के पास जाना जाईज़ कर दिया गया है वह तुम्हारी

पौशाक हैं और तुम उनकी पोशाक हो खुदा को मालूम है कि तुम (उनके पास जाने से) अपने हक़ में ख़यानत करते थे सो उसने तुम पर मेहरवानी की और तुम्हारी हरकात से दर गुजर फ़रमाई अब (तुमको अख़्तियार है कि) उनसे मुबाशरत करो और ख़ुदा ने जो चीज़ तुम्हारे लिये लिख रखी है (यानी औलाद) उसको (ख़ुदा से) तलब करो और खाओ और पियो यहाँ तक कि सुव्ह की सफ़ैदीं (रात की सियाह धारी से) अलग नज़र आने लगे फिर रोज़ा (रखकर) रात तक पूरा करो और जब तुम मसजिदों में ऐत्काफ़ के तौर पर बैठे हो तो उनसे मुबाशरत न करो ख़ुदा की हदें हैं उनके पास न जाना जिस तरह ख़ुदा अपनी आयात लोगों के (समझाने के) लिए खोल खोल कर व्यान फ़रमाता है कि वह परहेज़गार बनें (१८७) और एक दूसरे का माल ना हक़ न खायें और न रिशवत हाकिमों के पास पहुंचाओ ता कि लोगों के माल का कुछ हिस्सा नाजाईज तौर पर खाओ (इसे) तुम जानते भी हो (१८८) रुकू २३

(ऐ मोहम्मद) लोग तुझसे नये चान्द के बारे में दरयाफ़्त करते हैं (कि घटता बढ़ता क्यों है) कह दो कि वह लोगों के (कामों की मीयादें) और हज का वक्त मालूम होने का ज़रिया है और नेकी इस बात में नहीं कि (एहराम की हालत में) घरों में उनके पिछवाड़े की तरफ से आओ बल्कि नेकूकार वह है जो परहेज़गार हो और घरों में उनके दरवाज़ों से आया करो और

ख़ुदा से डरते रहो कि नजात पाओ (१८९) और जो लोग तुम

से लड़ते हैं तुम भी ख़ुदा की राह में उनसे लड़ो मगर ज़्यादती न करना कि ख़ुदा ज़्यादती करने वालों को दोस्त नहीं रखता (१९०) और उनको जहाँ पाओ क़त्ल कर दो और जहाँ से उन्हों-ने तुम को निकाला है (यानी मक्के से) वहाँ से तुम भी उनको निकाल दो और (दीन से गुमराह करने का) फ़िसाद क़त्लो ख़ुरेज़ी से कहीं बढ़ कर है और जब तक वह तुमसे मसजिदे मोहतरम (ख़ान-ऐ काबा) के पास न लड़ें तुम भी वहाँ उनसे न लड़ना हाँ अगर वह तुम से लड़ें तो तुम उनको क़त्ल कर डालो काफ़िरों की यही सज़ा है (१९१) और अगर वह बाज़ आ जायें तो ख़ुदा बख़्शने वाला (और) रहम करने वाला है (१९२) और उनसे उस वक्त तक लड़ते रहना कि फ़िसाद नाबूद हो जाये और (मुल्क में) ख़ुदा ही का दीन हो जाये और अगर वह (फ़िसाद से) बाज़ आ जायें तो ज़ालिमों के सिवा किसी से ज़्यादती नहीं करनी चाहिये (१९३) अदब का महीना अदब के महीने के मुक़ा-बिल है और अदब की चीज़ें एक दूसरे का बदला है पस अगर कोई तुम पर ज़्यादती करे तो जैसी ज़्यादती वह तुम पर करे वैसी ही तुम उसपर करो और ख़ुदा से ड़रते रहो और जान रखो कि ख़ुदा ड़रने वालों के साथ है (१९४) और ख़ुदा की राह में माल खर्च करो और अपने आप को हलाकत में न डालो और नेकी करो

आयत १९३:—अदब के महीने ४ थे ज़ीकाद, जिलहिज मोहरम और रजब-हुक्म हुआ कि काफ़िर अगर इन महीनों का अदब न रखते हुए लड़ने लगें तो तुम भी उन से लड़ो और बदला लेने में कमी मत करो—

बेशक ख़ुदा नेकी करने वालों को दोस्त रखता है (१९५) और ख़ुदा (की खुशनूदी) के लिए हज और उमरे को पूरा करो और अगर (रास्ते में, रोक लिये जाओ तो जैसी कुर्बानी मैयस्सर हो (कर दो) और जब तक कुर्बानी अपने मुकाम पर न पहुँच जाये सर न मुन्डाओ और अगर कोई तुम में बीमार हो या किसी के सर में किसी तरह की तकलीफ़ हो तो (अगर वह सर मुन्डवा ले तो) उसके बदले रोज़े रखे या सदका दे या कुर्बानी करे फिर जब (तकलीफ़ दूर होकर) तुम मुतमैयन हो जाओ तो जो तुम में हज के वक्त तक उमरे से फ़ायदा उठाना चाहे वह जैसी कुर्बानी मैयस्सर हो करे और जिस को (कुर्बानी) न मिले वह तीन रोज़े अय्यामे हज में रखे और सात जब वापिस हो यह पूरे दस हुए यह हुक्म उस शख्स के लिए है जिसके अहलो अयाल मक्के में न रहते हों और ख़ुदा से डरते रहो और जान रखो कि ख़ुदा सख्त अज़ाब देने वाला है (१९६) रूकू २४

आयत १९६:—एहकामे हज:—हज का तरीका यह है कि एहराम बान्धे फिर उरफ़े के दिन इर्फ़ात में हाज़िर हो फिर वहाँ से चले तो रात रहे मशअर उलहराम में, फिर ईद की सुब्ह को मिन्हा में पहूँच कर कन्कर फैंके और हजामत करा कर एहराम उतारे फिर मक्के में जा कर तवाफ़े काबा करे फिर सफ़ा और मर्वे के बीच दौड़े फिर मिन्हा में आवे तीन दिन रहे, हर रोज कन्कर फेंके, फिर मक्के जाकर तवाफ़े रुखसत करे और चला जाये और उमरे का तरीक यह है कि एहराम बान्धे कि जिन दिनों चाहे और तवाफ़े काबा करे और सफ़ा और मर्वे के बीच दौड़े फिर हजामत करा कर एहराम उतारे—

हज़ के महीने (मौईयन हैं जो) मालूम हैं तो जो शख्स इन महीनों में हज की नियत करे तो हज (के दिनों) में न औरतों से इख्तिलात करे न कोई बुरा काम करे न किसी से झगड़े और जो नेक काम तुम करोगे वह ख़ुदा को मालूम हो जायेगा और ज़ादे राह (यानी रस्ते का खर्च) साथ ले जाओ क्योंकि बेहतर (फ़ायदा) ज़ादे राह (का) परहेज़गारी है और ऐ अहले अक्ल मुझ से डरते रहो (१६७) इसका तुम्हें कुछ गुनाह नहीं कि (हज के दिनों में बज़रिये तिजारत) अपने पवर्रदिगार से रोज़ी तलब करो और जब इरफ़ात से वापिस होने लगो तो मशअरेहराम (यानी मज़ोलफ़ा) में ख़ुदा का ज़िक्र करो और इस तरह ज़िक्र करो जिस तरह उसने तुम को सिखाया और इससे पेशतर तुम लोग (इन तरीकों से) महज़ ना वाक़िफ़ थे (१६८) फिर जहाँ से और लोग वापिस हों वहीं से तुम भी वापिस हो और ख़ुदा से बख्शिस माँगो बेशक ख़ुदा बख्शने वाला (और) रहम करने वाला है (१६६) फिर जब हज के तमाम अरकान पूरे कर चुको तो (मिन्हा में) ख़ुदा को याद करो जिस तरह अपने बाप दादा को याद किया करते थे बल्कि उससे भी ज़्यादा और बाज़ लोग ऐसे हैं जो (ख़ुदा से) इल्तिजा करते हैं कि ऐ हमारे पर्वरदिगार! हम को (जो देना है) दुनिया ही में इनायत कर ऐसे लोगों का आखिरत में कुछ हिस्सा नहीं (२००) और बाज़ ऐसे हैं कि दुआ

आयत १६७:—हज के महीने हैं शव्वाल, ज़ीक़ाद और अशरा ज़िलहिज—

करते हैं कि ऐ हमारे पर्वरदिगार हमको दुनिया में भी नैयमत अता फ़रमा और आख़िरत में भी नैयमत बख़्शियो और दोज़ख़ के अज़ाब से मेहफ़ूज़ रखियो (२०१) यही लोग हैं जिन के लिए उनके कामों का हिस्सा (यानी अजरे नेक तैयार) है और ख़ुदा जल्द हिसाब लेने वाला (और जल्द अजर देने वाला) है (२०२) और (क़यामे मिन्हा के) दिनों में (जो) गिनती के (दिन हैं) ख़ुदा को याद करो अगर कोई जल्दी करे (और) दो ही दिनों में (चल दे) तो उसपर भी कुछ गुनाह नहीं और जो बाद तक ठैहरा रहे उसपर भी कुछ गुनाह नहीं यह बातें उस शख़्स के लिये हैं जो (ख़ुदा से) डरे और तुम लोग ख़ुदा से डरते रहो और जान रक्खो कि तुम सब उसके पास जमा किये जाओगे (२०३) और कोई शख़्स तो ऐसा है जिसकी गुफ़्तगू दुनिया की ज़िन्दगी में तुम को दिलकश मालूम होती है और वह अपने माफ़ी उज़्ज़-मीर पर ख़ुदा का गवाह बनता है हालाँकि वह सख़्त झगड़ालू है (२०४) और जब पीठफेर कर चला जाता है तो ज़मीन में दौड़ता फिरता है ताकि उसमें फित्ना अंगेजी करे और खेती को (बर्बाद) और (इन्सानों और हैवानों की) नस्ल को नाबूद कर दे और ख़ुदा फ़ितना अंगेज़ी को पसन्द नहीं करता (२०५) और जब

आयत २०३:—गिनती के दिन ईद के बाद के तीन दिन हैं इन्हें अय्यामे तशरीक़ कहते हैं इन तीन दिनों यानी ११, १२, १३ तारीख़ में ख़ुदा को याद करना चाहिये और अगर सिर्फ़ दो दिन रह कर चला जाय तो उसे अख़्तियार है—

उससे कहा जाता है कि ख़ुदा से ख़ौफ़ कर तो ग़रुर उसके गुनाह में फंसा देता है सो ऐसे को जहन्नुम सज़ावार है और वह बहुत बुरा ठिकाना है (२०६) और कोई शख़्स ऐसा है कि ख़ुदा की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिये अपनी जान बेच डालता है और ख़ुदा बन्दों पर बहुत मेहरबान है (२०७) मोमिनो ! इस्लाम में पूरे पूरे दाख़िल हो जाओ और शैतान के पीछे न चलो वह तो तुम्हारा सरीह दुश्मन है (२०८) फिर अगर तुम एहकाये रोशन पहुँच जाने के बाद लड़खड़ा जाओ तो जान रखो कि ख़ुदा ग़ालिब (और) हिकमत वाला है (२०९) क्या यह लोग इस बात के मुन्तज़िर हैं कि उन पर ख़ुदा का (अज़ाब) बादल के सायबान में आ नाज़िल हो और फ़रिश्ते भी (उतर आयें) और काम तमाम कर दिया जाये और सब कामों का रजू ख़ुदा ही की तरफ़ है (२१०) रुकू (२५)

(ऐ मोहम्मद) बनी इसराईल को पूछो कि हमने उनको कितनी खुली निशानियाँ दीं और जो शख़्स ख़ुदा की नैममत को अपने पास आने के बाद बदल दे तो ख़ुदा सख़्त अज़ाब करने

आयत २०५:—वह शख़्स एक मुनाफ़िक था उसका नाम आईसिस था हज़रत पैग़म्बर के पास क़सम ख़ुदा की खा कर मोहब्बत और ईमान ज़ाहिर किया और जब फिरा दीन से, तो एक खेत को जाते हुए राह में जला दिया, यह हाल है मुनाफ़िक का कि ज़ाहिर में खुशामद करे और अल्लाह को गवाह करे कि मेरे दिल में तुम्हारी मोहब्बत है और झगड़े के वक्त कुछ कमी न करे और काबू पावे तो लूट मार मचावे और मना करने से और ज़िद बढ़े और ज़्यादा गुनाह करे—

वाला है (२११) और जो काफ़िर हैं उनके लिए दुनियाँ की ज़िन्दगी खुशनुमां कर दी गई है और वह मोमिनो से तमसखुर करते हैं लेकिन जो परहेज़गार हैं वह क़यामत के दिन उन पर ग़ालिब होंगे और खुदा जिस को चाहता है बेशुमार रिज़्क देता है (२१२) (पहले तो सब) लोगों का एक ही मजहब था (लेकिन वह आपस में इख़्तिलाफ़ करने लगे) तो खुदा ने (उनको तरफ़) बशारत देने वाले और डर सुनाने वाले पैग़म्बर भेजे और उन पर सच्चाई के साथ किताबें नाज़िल कीं ताकि उमूर में लोग इख़्तिलाफ़ करते थे उन में फैसला कर दे और उसमें इख़्तिलाफ़ भी उन्हीं लोगों ने किया जिन को किताब दी गई थी बावजूदे कि उनके पास खुले हुये एहकाम आ चुके थे (और यह इख़्तिलाफ़ उन्होंने सिर्फ़) आपस की ज़िद से (किया) तो जिस अमरे हक़ में वह इख़्तिलाफ़ करते थे खुदा ने अपनी मेहरबानी से मोमिनों को उसकी राह दिखा दी और खुदा जिसको चाहता है सीधा रस्ता दिखा देता है (२१३) क्या तुम यह ख़्याल करते हो कि (यूंही) बहिश्त में दाखिल हो जाओगे और अभी तुम्हें पहले लोगों की सी मुशकिलें तो पेश आई ही नहीं उनको (बड़ी-बड़ी) सख़्तियाँ और तकलीफ़ें पहुंचीं और वह (सऊबतों में) हिला हिला दिये गये यहाँ तक कि पैग़म्बर और मोमिन लोग जो उन के साथ थे सब पुकार उठे कि कब खुदा की मदद आयेगी देखो खुदा की मदद (अब) क़रीब (आया चाहती) है (२१४)(ऐ मोहम्मद) लोग तुम से पूछते हैं कि राह में किस तरह का माल खर्च करें कह दो कि जो चाहो

खर्च करो लेकिन, जो माल खर्च करना चाहो वह (दर्जा बदर्जा अहले इस्तेहक़ाक़ यानी) माँ-बाप को और क़रीब के रिश्तेदारों को और यतीमों को और मोहताजों को और मुसाफ़िरों को (सबको) दो और जो भलाई तुम करोगे खुदा उसको जानता है (२१५) (मुसलमानो) तुम पर खुदा के (रस्ते में) लड़ना फ़र्ज़ कर दिया गया है वह तुम्हें ना गवार तो होगा मगर अजब नहीं कि एक चीज़ तुम को बुरी लगे और वह तुम्हारे हक़ में भली हो और अजब नहीं कि एक चीज़ तुमको भली लगे और वह तुम्हारे लिये मुकर्रर हो और (इन बातों को) खुदा ही बेहतर जानता है और तुम नहीं जानते (२१६) रुकू २६।

(ऐ मोहम्मद) लोग तुम से इज्जत वाले महीनों में लड़ाई करने के बारे में दरयाफ़्त करते हैं कह दो कि उन में लड़ना बड़ा (गुनाह) है और खुदा की राह से रोकना और उस से कुफ्र करना और मसजिदे हराम (यानी खान-ऐ काबा) में जाने से (बन्द करना) और अहले मसजिद को उस में से निकाल देना

आयत २१६:—हज़रत मोहम्मद ने एक फौज भेजी थी क़ाफ़िरों पर उन्होंने काफ़िरों को मारा और लूट लाये मुस्मानों ने जाना कि वह दिन ज़मादी उल आख़िर का है और वह गुर्रा रजब का था क़ाफ़िरों ने इस बात पर ताना देकर कहा कि मोहम्मद ने हराम महीने को भी हलाल किया और अपने लोगों को रुख़सत दी कि हराम के महीने में कभी लड़ाई न करें और लूटें और मुस्लमानों ने आन कर पूछा कि या रसूल अल्लाह हमने शुबे में यह काम किये इस का क्या मतलब है इस पर यह आयत उतरी।

(जो यह कफ़्फ़ार करते हैं। खुदा के नजदीक उससे भी ज़्यादा (गुनाह) है और फ़ितना अंगेज़ी खू रेज़ी से भी बढ़कर है और यह लोग हमेशा तुम से लड़ते रहेंगे यहाँ तक कि अगर मक़दूर रखें तो तुम को तुम्हारे दीन से फेर दें और जो कोई तुम में से दीन से फ़िर (कर काफ़िर हो) जायेगा और क़ाफ़िर ही मरेगा तो ऐसे लोगों के आमाल दुनिया और आख़िरत दोनों में बर्बाद हो जायेंगे और यही लोग दोज़ख (में जाने) वाले हैं जिस में हमेशा रहेंगे (२१७) जो लोग ईमान लाये और खुदा के लिए वतन छोड़ गये और (कफ़्फ़ार से) जंग करते रहे वही खुदा की रहमत के उम्मीदवार हैं, खुदा बख्शने वाला (और) रहमत करने वाला है (२१८) (ऐ पैग़म्बर) लोग तुम से शराब और जुए का हुक्म दरयाफ़्त करते हैं कह दो कि इन में नुक़सान बड़े हैं और लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं मगर उनके नुक़सान फ़ायदों से कहीं ज़्यादा हैं और तुम से यह भी पूछते हैं हैं कि (खुदा की राह में) कौन सा माल खर्च करें कह दो कि जो

आयत २१८:—आग़ाज़े इस्लाम में शराब पीना हराम न थी मुस्लमान इसको बिला ताम्मुल पीते थे जब यह आयत नाज़िल हुई तो जिन लोगों ने खयाल किया कि इस में नुकसान है उन्होंने इस को तर्क कर दिया और जिन लोगों ने समझा इस में फ़ायदा है वह पीते रहे फिर यह आयत उतरी कि जब तुम मनवाले हुआ करो नमाज़ न पढ़ा करो, वह जो शराब पीते थे उन्होंने नमाज़ के वक्त इसका पीना तर्क कर दिया फिर यह आयत उतरी कि ऐ ईमान वालो शराब और जुआ और बुतों के थान और पांसे सब नापाक काम आमाल शैतान के हैं सो इनसे बचो ताकि नजात पाओ इस से शराब साफ़ तौर से हराम हो गई।

ज़रूरत से ज़्यादा हो इस तरह खुदा तुम्हारे लिये अपने एहकाम खोल खोल कर बयान फ़रमाता है ताकि तुम सोचो (२१९) यानी दुनिया और आख़िरत (की बातों) में (गौर करो) और तुम से यतीमों के बारे में दरयाफ़्त करते हैं कह दो उनकी (हालत की) इस्लाह बहुत अच्छा काम है और अगर तुम उन से मिल जुल कर रहना (यानी खर्च इकट्ठा रखना) चाहो तो वह तुम्हारे भाई हैं और ख़ुदा खूब जानता है कि ख़राबी करने वाला कौन है और इस्लाह करने वाला कौन और अगर ख़ुदा चाहता तो तुम को तक़लीफ़ में डाल देता बेशक ख़ुदा ग़ालिब (और) हिकमत वाला है (२२०) और (मोमिनो) मुशरिक औरतों से जब तक कि ईमान न लायें निकाह न करना क्योंकि मुशरिक औरत ख्वाह तुम को कैसी ही भली लगे उस से मोमिन लौन्डी बेहतर है और (इसी तरह) मुशरिक मर्द ज़ब तक कि ईमान न लायें मोमिन औरतों को उन की ज़ौजियत में न देना क्योंकि मुशरिक (मर्द) से ख्वाह तुम को कैसा ही भला लगे मोमिन गुलाम बेहतर है यह (मुशरिक) लोगों को दोज़ख की तरफ़ बुलाते हैं और ख़ुदा अपनी मेहरबानी से बहिश्त और बख़्शिश की तरफ़ बुलाता है और अपने हुक्म लोगों से खोल खोल कर बयान करता है ताकि नसीहत हासिल करें (२२१) रुकू २७।

और तुम से हैज़ के बारे में दरयाफ़्त करते हैं कह दो कि वह तो नजासत है सो अय्यामे हैज़ में औरतों से क़नारा कश रहो और जब तक पाक न हो जायें उनसे मुक़ारबत न करो हाँ जब पाक हो जायें तो जिस तरीक़ से ख़ुदा ने तुम्हें इर्शाद फ़रमाया

है उन के पास जाओ कुछ शक नहीं कि ख़ुदा तौबा करने वालों और पाक साफ़ रहने वालों को दोस्त रखता है (२२२) तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं तो अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिए (नेक अमल) आगे भेजो और ख़ुदा से डरते रहो और जान रक्खो कि (एक दिन) तुम्हें उस के रुबरु हाज़िर होना है और (ऐ पैग़म्बर) ईमान वालों को बशारत सुनाइये (२२३) और ख़ुदा (के नाम) को इस बात का हीला न बनाना कि (उस की) कसमें खा खा कर सलूक करने और परहेज़गारी करने और लोगों में सुलह व साज़गारी करने से रुक जाओ और ख़ुदा सब कुछ सुनता (और) जानता है (२२४) ख़ुदा तुम्हारी लग़्व क़समों पर तुम से मवाख़ज़ा नहीं करेगा लेकिन जो क़समें तुम क़सदे दिली से खाओगे उन पर मवाख़ज़ा करेगा और ख़ुदा बख़्शने वाला (और) बुर्दबार है (२२५) जो लोग अपनी औरतों के पास जाने से क़सम खा लें उन को चार महीने तक इन्तज़ार करना चाहिए अगर (इस अर्से में क़सम से) रजू कर लें तो

आयत २२४:—यानी इस बात की क़सम न खाओ कि मैं फुलां शख़्स से सलूक नहीं करूँगा या फुलां नेक काम नहीं करूँगा अगर ऐसी क़सम खाली हो तो उसको तोड़ देना चाहिए और उसका कफ़्फ़ारा दे देना चाहिये।

आयत २२५—लग़्व क़सम वह है जिस की नीयत न हो और बे क़सद व इरादा खाई जाये जैसे बाज़ बतौर तकिया कलाम बात बात में "अल्लाह क़सम" कह देते हैं या ग़ुस्से की हालत में हलाल को हराम कर लिया जाये, ऐसी क़सम में कफ़्फ़ारा नहीं है—

ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (२२६) और अगर तलाक़ का इरादा कर लें तो भी ख़ुदा सुनता (और) जानता है (२२७) और तलाक़ वाली औरतें तीन हैज़ तक अपने तईं रोके रहें और अगर वह ख़ुदा और रोज़े क़यामत पर ईमान रखती हैं तो उन को जाईज़ नहीं कि ख़ुदा ने जो कुछ उन के शिकम में पैदा किया है उस को छुपायें और उनके ख़ाविन्द अगर फिर मवाफ़िक़त चाहें तो इस (मुद्दत में वह उनको अपनी ज़ौजियत में ले लेने के ज़्यादा हक़दार हैं और औरतों का हक़ (मर्दों पर) वैसा ही है जैसे दस्तूर के मुताबिक (मर्दों का हक़) औरतों पर है अलबत्ता मर्दों को औरतों पर फ़ज़ीलत है और ख़ुदा ग़ालिब (और) साहिबे हिकमत है (२२८) रुकू (२८)

तलाक़ (सिर्फ़) दो बार है (यानी जब दो दफ़ा तलाक़ दे दी जाये तो) फिर (औरतों को) या तो बतरीक़े शाईस्ता (निकाह में) रहने देना है या भलाई के साथ छोड़ देना और यह जाईज़ नहीं कि जो मेहर तुम उनको दे चुके हो उस में से कुछ वापिस ले लो हाँ अगर तुम लोगों को ख़ौफ़ हो कि वह दोनों ख़ुदा की हदों को क़ायम नहीं रख सकेंगी तो औरत अगर ख़ाविन्द के हाथ से रिहाई पाने के बदले में कुछ दे डाले तो दोनों पर कुछ गुनाह नहीं यह ख़ुदा की (मुकर्रर की हुई) हदें हैं उन से बाहर न निकलना और जो लोग ख़ुदा की हदों से बाहर निकल जायेंगे वह गुन्हेगार होंगे (२२९) फिर अगर शौहर दो तलाकों के बाद तीसरी तलाक़ औरत को दे दे तो उसके बाद जब तक औरत

किसी दूसरे शख़्स से निकाह न कर ले उस (पहले) शोहर पर हलाल नहीं होगी हाँ अगर दूसरा ख़ाविन्द भी उसे तलाक़ दे दे और औरत और पहला ख़ाविन्द फिर एक दूसरे की तरफ़ रजू कर लें तो उस पर कुछ गुनाह नहीं बशर्ते कि दोनों यकीन करें कि खुदा की हदों को क़ायम रख सकेंगे और यह खुदा की हदें हैं इन को वह उन लोगों के लिये बयान फ़रमाता है जो दानिश रखते हैं (२३०) और जब तुम औरतों को दो दफ़ा तलाक़ दे चुको और उनकी इद्दत पूरी हो जाये तो या तो उन्हें हुस्ने सलूक से निकाह में रहने दो या बतरीक़े शाईस्ता रुख़सत कर दो और इस नीयत से उन को निकाह में न रहने देना चाहिये कि उन्हें तकलीफ़ दो और उन पर ज़्यादती करो और जो ऐसा करेगा वह अपना ही नुक़सान करेगा और खुदा के एहकाम को हंसी (और खेल) न बनाओ और खुदा ने तुम को जो नैयमतें बख़्शी हैं और तुम पर जो किताब और दानाई की बातें नाज़िल कीहैं जिन से वह तुम्हें नसीहत फ़रमाता है उनको याद करो और खुदा से डरते रहो और जान रक्खो कि खुदा हर चीज़ से वाक़िफ़ है (२३१) रुकू (२६)

आयत २३०—यानी तीसरी तलाक के बाद में फिर सकती है बल्कि दोनों की ख़ुशी हो तो भी निकाह नहीं बन्ध सकता जब तक बीच में और ख़ाविन्द की सोहबत न हो चुके और वह शख्स अपनी मरज़ी से तलाक देदे, फिर इद्दत बैठ कर औरत पहले ख़ाविन्द से निकाह करे तब दुरुस्त है—

आयत २३१—यानी यह न करो कि औरत को तलाक़ दो फिर

और जब तुम औरतों को तलाक दे चुको और उनकी इद्दत पूरी हो जाये तो उन को दूसरे शौहरों के साथ जब वह आपस में जाईज़ तौर पर राज़ी हो जायें निकाह करने से मत रोको इस (हुक्म) से उस शख्स को नसीहत की जाती है जो तुम में खुदा और आखिरत पर यक़ीन रखता है यह तुम्हारे लिए निहायत खूब और बहुत पाक़ीज़गी की बात है और खुदा जानता है और तुम नहीं जानते (२३२) और मायें अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलायें यह (हुक्म) उस शख्स के लिये है जो पूरी मुद्दत तक दूध पिलवाना चाहे और दूध पिलाने वाली माओं का खाना और कपड़ा दस्तूर के मुताबिक बाप के ज़िम्मे होगा किसी शख्स को उस की ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं दी जाती (तो याद रखो कि) न तो माँ को उस के बच्चों के सबब नुक़सान पहुँचाया जाये और न बाप को उसकी औलाद की वजह से नुकसान पहुँचाया जाये और इसी तरह (नान नुत्फ़ा) बच्चों के वारिस के ज़िम्मे है और अगर दोनों (यानी) मां बाप आपस की रज़ामन्दी और सलाह से बच्चे का दूध छुड़ाना चाहें तो उन पर कुछ

जब नज़दीक़ इद्दत के पहुँचे तो फिर बुला लो अपने पास, फिर कई दिन पीछे फिर तलाक़ दो सताने को और दुख पहुँचाने को, मिले तो अच्छी तरह सलूक से रहो या छोड़ो तो ख़ुशी से अच्छी तरह छोड़ो—

आयत २३३—यानी अगर मर्द व औरत में तलाक हुई और लड़का रहा दूध पीता, तो माँ दो वर्ष बन्द रहे उसके दूध पिलाने को, और बाप उसका ख़र्च उठावें और अगर बाप मर गया तो लड़के के वारिस उस का ख़र्च उठावें, अगर बाप दूध किसी और से पिलवा ले और माँ को बन्द रक्खे तो भी रवा है लेकिन इसके बदले में माँ का कुछ हक़ न काट रखे—

गुनाह नहीं और अगर तुम अपनी औलाद को दूध पिलवाना चाहो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं बशर्ते कि तुम दूध पिलाने वालियों को दस्तूर के मुताबिक उनका हक़ जो तुमने देना किया था दे दो और खुदा से डरते रहो और जान रक्खो कि जो कुछ तुम करते हो खुदा उसको देख रहा है (२३३) और जो लोग तुम में से मर जायें और औरतें छोड़ जायें तो औरतें चार महीने दस दिन अपने आप को रोके रहें और जब यह इद्दत पूरी कर चुकें और अपने हक़ में पसन्दीदा काम (यानी निकाह) कर लें तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं और खुदा तुम्हारे सब कामों से वाक़िफ़ है (२३४) अगर तुम कनाये की बातों में औरतों को निक़ाह का पैग़ाम भेजो या (निकाह की ख्वाहिश को) अपने दिलो में मख़फ़ी रक्खो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं खुदा को मालूम है कि तुम उनसे (निकाह का) ज़िक्र करोगे मगर (अय्यामे इद्दतमे) इसके सिवा कि दस्तूर के मुताबिक़ कोई बात कह दो, पोशीदा तौर पर उनसे क़ौलो क़रार न करना और जब तक इद्दत पूरी न हो ले निकाह का पुख्ता इरादा न करना और जान रखो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है खुदा को सब मालूम है तो उससे डरते रहो कि खुदा बख़्शने वाला (और) इल्म वाला है (२३५) रुकू (३०)

अगर तुम औरतों को उनके पास जाने से या उनका मेहर

आयत २३४ - तलाक़ की इद्दत तीन हैज़ और सोग की इद्दत चार महीने दस दिन इस सूरत में है कि जब हमल मालूम न हो और अगर हमल मालूम हो तो बच्चा पैदा होने के वक़्त तक है —

मुक़र्रर करने से पहले तलाक़ दे दो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं हाँ उनको दस्तूर के मुताबिक़ कुछ खर्च ज़रुर दो (यानी) मक़दूर वाला अपने मक़दूर के मुताबिक़ दे और तंग दस्त अपनी हैसियत के मुताबिक़ नेक लोगों पर यह एक तरह का हक़ है (२३६) और अगर तुम औरतों को उन के पास जाने से पहले तलाक़ दे दो लेकिन मेहर मुक़र्रर कर चुके हो तो आधा मेहर देना होगा हाँ अगर औरतें मेहर बख्श दें या मर्द जिनके हाथ अक़्दे निकाह है (अपना) हक़ छोड़ दें (और पूरा मेहर दे दें तो उन को अख्तियार है) और अगर तुम (मर्द लोग) ही अपना हक़ छोड़ दो तो यह परहेज़गारी से नज़दीकी की बात है और आपस में भलाई करने को फ़रामोश न करना कुछ शक नहीं कि खुदा तुम्हारे सब कामों को देख रहा है (२३७) रुकू (३१)

(मुस्लमानों) सब नमाज़ें खुसूसन बीच की नमाज (यानी नमाज़े असर) पूरे इल्तिज़ाम के साथ अदा करते रहो और खुदा के आगे अदब से खड़े रहा करो (२३८) अगर तुम खौफ़ की हालत में हो तो प्यादे या सवार (जिस हाल में हो) नमाज़ पढ़ लो फिर जब अम्न (व इतमीनान) हो जाये तो जिस तरीक़ से खुदा ने तुमको सिखाया है जो तुम पहले नहीं जानते थे खुदा को याद करो (२३९) और जो लोग तुम में से मर जायें और औरतें छोड़ जायें वह अपनी औरतों के हक़ में वसीयत कर जायें कि उनको एक साल तक खर्च दिया जाये और घर से न निकाली जायें हाँ अगर वह खुद घर से निकल जायें और अपने हक़ में पसन्दीदा काम (यानी निकाह) कर लें तो तुम पर कोई गुनाह नहीं और

ख़ुदा ज़बरदस्त हिकमत वाला है (२४०) और मुत्तल्लक़ा औरतों को भी दस्तूर के मुताबिक़ नानो नुफ़्ता देना चाहिये परहेज़गारों पर (भी) हक़ है (२४१) इसी तरह ख़ुदा अपने एहकाम तुम्हारे लिये बयान फ़रमाता है ताकि तुम समझो (२४२) भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो (गिनती में) हज़ारों ही थे और मौत के डर से अपने घरों से निकल भागे थे ? तो ख़ुदा ने उनको हुक्म दिया कि मर जाओ फिर उनको ज़िन्दा भी कर दिया कुछ शक नहीं कि ख़ुदा लोगों पर मेहरबारी रखता है लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते (२४३) और (मुस्लमानो) ख़ुदा की राह में जहाद करो और जान रक्खो कि ख़ुदा (सब कुछ) सुनता (और सब कुछ) जानता है (२४४) कोई है कि ख़ुदा को करज़े हसना दे कि वह उस के बदले उस को कई हिस्से ज़्यादा देगा ? और ख़ुदा ही रोज़ी को तंग करता है और (वही उसे) कुशादा करता है और तुम उस की तरफ़ लौट कर जाओगे (२४५) भला तुम ने बनो इसराईल की जमायत को नहीं देखा जिस ने मूसा के बाद अपने पैगम्बर से कहा कि अगर तुम को जहाद का हुक्म दिया जाये तो अजब नहीं कि लड़ने से पहलू तिही करो वह कहने लगे कि इस राहे खुदा में क्यों नहीं लड़ेंगे जब कि हम वतन से (ख़ारिज) और बाल बच्चों से जुदा कर दिये गये हैं लेकिन जब उनको जहाद का हुक्म दिया गया तो चन्द अशख़ास के सिवा सब फिर गये और खुदा ज़ालिमों से खूब वाक़िफ़ है (२४६) और उनके पैगम्बरने उन से (यह भी) कहा कि खुदा ने तुम पर तालूत को बादशाह मुकर्रर फ़रमाया है वह बोले कि उसे

हम पर बादशाही का हक़ क्यों कर हो सकता है ? बादशाही के मुस्तहिक़ तो हम हैं और उसके पास तो बहुत सी दौलत भी नहीं पैग़म्बर ने कहा कि खुदा ने उसको (तुम पर फ़ज़ीलत दी है और बादशाही के लिये) मुन्तखिब फ़रमाया है उसने इसे इल्म भी बहुत सा बख्शा है और तनो तोश भी (बड़ा अता किया है) और खुदा को (अख्तियार है) जिसे चाहे बादशाही बख्शे वह बड़ा कुशाईश वाला (और) दाना है (२४७) और पैग़म्बर ने उन से कहा कि उन की बादशाही की निशानी यह है कि तुम्हारे पास एक सन्दूक आयेगा जिस को फ़रिश्ते उठाये हुए होंगे उस में तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से तसल्लीबख्श चीजें होंगी और कुछ और चीजे भी होंगी जो मूसा और हारुन छोड़ गये थे(अगर तुम ईमान रखते हो) तो यह तुम्हारे लिए एक बड़ी निशानी है (२४८) रुकू ३२।

ग़रज़ जब तालूत फ़ौजें ले कर रवाना हुआ तो उसने(उनसे) कहा कि खुदा एक नहर से तुम्हारी अज़माईश करने वाला है जो शख्स उस में से पानी पी लेगा (उसकी निस्बत तसव्वर किया जायेगा) कि वह मेरा नहीं और जो न पियेगा वह (समझा जायेगा कि) मेरा है हाँ अगर कोई हाथ से चुल्लू भर पानी ले ले तो खैर जब वह लोग नहर पर पहुँचे तो चन्द शख्सों के सिवा सब ने पानी पी लिया फिर जब तालूत और मोमिन लोग जो उसके साथ थे नहर के पार हो गए तो कहने लगे कि आज हम में जालूत और उसके लशकर से मुकाबला करने की ताक़त नहीं जो लोग यक़ीन रखते थे कि उन को खुदा के रुबरु हाज़िर

होना है वह कहने लगे कि बसा औक़ात थोड़ी सी जमायत ने खुदा के हुक्म से बड़ी जमायत पर फ़तह हासिल की है और खुदा इस्तक़लाल रखने वालों के साथ है (२४९) और जब वह लोग जालूत और उसके लशकर के मुकाबिले में आये तो (खुदा से) दुआ की कि ऐ हमारे पर्वरदिगार हम पर सब्र के दहाने खोल दे और हमें (लड़ाई में) साबित क़दम रख और (लशकरे) क़ुफ़्फ़ार पर फ़तहयाब कर (२५०) तो तालूत की फ़ौज ने खुदा के हुक्म से उन को हज़ीमत दी औ दाऊद ने जालूत को क़त्ल कर डाला और खुदा ने उसको बादशाही और दानाई बख़्शी और जो कुछ चाहा सिखाया और अगर खुदा लोगों को एक दूसरे पर (चढ़ाई और हमला करने) से हटाता न रहता तो मुल्क तबाह हो जाता लेकिन खुदा अहले आलम पर बड़ा मेहरबान है (२५१) यह खुदा की आयतें हैं जो हम तुमको सच्चाई के साथ पढ़कर सुनाते हैं (और ऐ मोहम्मद) तुम बिला शुबा पैग़म्बरों में से हो (२५२)।

—:०:—

तीसरा पारा—(तिलकर्रसूल) यह पैग़म्बर

यह पैग़म्बर ! (जो हम वक़तन फ़वक़तन भेजते रहे हैं) उन में से हमनें बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है बाज़ ऐसे हैं जिनसे खुदा ने गुफ़्तगू फ़रमाई और बाज़ के (दूसरे उमूर में) मर्तबे बलन्द किये और ईसा बिन मरियम को हम ने खुली हुई निशा-

नियाँ अता कीं और रुह उल कुदस से उनको मदद दी और

अगर खुदा चाहता तो उन से पिछले लोग अपने पास खुली निशानियाँ आने के बाद आपस में न लड़ते लेकिन उन्होंने इख्तिलाफ़ किया तो उनमें से बाज़ तो ईमान ले आये और वाज क़ाफ़िर ही रहे और अगर खुदा चाहता तो यह लोग बाहम जंगो क़त्ताल न करते लेकिन खुदा जो चाहता है करता है (२५३) रुकू ३३।

ऐ ईमान वालो ! जो (माल) हमने तुम को दिया है उस में से उस दिन के आने से पहले-पहले खर्च कर लो जिसमें न (आमाल का) सौदा होगा और न दोस्ती और सिफ़ारिश हो सके और कुफ्र करने वाले लोग जालिम हैं (२५४) खुदा (वह माबूदे बरहक़ है कि उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं जिन्दा हमेशा रहने वाला उसे न औंघ आती है न नींद जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है कौन है कि उसकी इजाज़त के बग़ैर उस से (किसी की सिफ़ारिश कर सके जो कुछ लोगों के रुबरु हो रहा है और जो कुछ उन के पीछे हो चुका है उसे सब मालूम है और वह उसकी मालूमात में से किसी चीज़ पर दस्तरस हासिल नहां कर सकते हाँ जिस क़दर वह चाहता है (उसी क़दर) मालूम करा देता है उसकी बादशाही और इल्म आस्मान और जमीन सब पर हावी है और उसे उनकी हिफ़ाज़त कुछ भी दुशवार नहीं वह बड़ा आली रुत्वा और जलील उलक़द्र है (२५५) दीन (इस्लाम) में जबरदस्ती नहीं है हिदायत (साफ़ तौर पर ज़ाहिर और) गुमराही से अलग हो चुकी है तो

जो शख्स बुतों से ऐतक़ाद न रखे और खुदा पर ईमान लाये उसने ऐसी मज़बूत रस्सी हाथ में पकड़ ली है जो कभी टूटने वाली नहीं है और खुदा (सब कुछ) सुनता और (सब कुछ) जानता है (२५६) जो लोग ईमान लाए हैं उनका दोस्त खुदा है कि उनको अन्धेरे से निकाल कर रोशनी में ले जाता है और जो काफ़िर हैं उनके दोस्त शैतान हैं कि उनको रोशनी से निकालकर अन्धेरे में ले जाते हैं यही लोग अहले दोज़ख हैं कि उस में हमेशा रहेंगे (२५७) रुकू ३४।

भला तुम ने उस शख्स को नहीं देखा जो इस (गरूर) के सबब से कि खुदा ने उस को सलतनत बख्शी थी इब्राहीम से पर्वरदिगार के बारे में झगड़ने लगा जब इब्राहीम ने कहा मेरा पर्वरदिगार तो वह है जो मारता और जिलात है वह बोला कि जिला और मार तो मैं भी सकता हूं इब्राहीम ने कहा कि ख़ुदा तो सूरज को मशरिक़ से निकलता है आप उसे मग़रिब से निकाल दीजिये (यह सुनकर) क़ाफ़िर हैरान रह गया और ख़ुदा बे इन्साफ़ों को हिदायत नहीं दिया करता (२५८) या इसी तरह उस शख्स को (नहीं देखा) जिसे एक गाँव में जो अपनी छतों पर गिरा पड़ा था इत्तिफ़ाके गुज़र हुआ तो उसने कहा कि खुदा उस (के बाशिन्दों) को मरने के बाद क्यों कर ज़िन्दा करेगा तो खुदा ने उसकी रुह कब्ज़ कर ली (और) सौ बरस तक (उसको मुर्दा रखा) फिर उसको जिला उठाया और पूछा तुम कितना अर्सा (मरे) रहे हो उसने जवाब दिया कि एक दिन या इस से भी कम खुदा ने फ़रमाया (नहीं) बल्कि सौ बरस (मरे) रहे हो

और अपने खाने पोने को चोज़ों को देखो कि (इतनो मुद्दत में मुतलक़) सड़ी बुसी नहीं और अपने गधे को भी देखो (जो मरा पड़ा है) गरज़ (इन बातों सें) यह है कि हम तुम लोगों के लिये (अपनी कुदरत को) निशानो बनायें और (हाँ गधे को) हड्डियों को देखो कि हम उनको क्यों कर जोड़े देते हैं और इन पर किस तरह) गोशत पोस्त चड़ा देते हैं जब यह वाकैयात उसके मुशाहिदे में आये तो बोल उठा कि मैं यक़ीन करता हूँ कि खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (२५९) और जब इब्राहीम ने (खुदा से) कहा कि ऐ पर्वरदिगार मुझे दिखा कि तू मुर्दों को क्योंकर ज़िन्दा करेगा खुदा ने फ़रमाया क्या तुमने (इस बात को) बावर नहीं किया उन्होंने कहा कि क्यों नहीं लेकिन (मैं देखना) इस लिए (चाहता हूँ) कि मेरा दिल इतमीनाने कामिल हासिल करे खुदा ने फ़रमाया कि चार जानवर पकड़वा कर अपने पास मंगवा लो (और टुकड़े-टुकड़े करा दो) और फिर उनका एक एक टुकड़ा हर एक पहाड़ पर रखवा दो तो वह तुम्हारे पास दौड़ते चले आयेंगे और जान रक्खो कि खुदा ग़ालिब (और) साहिबे हिकमत है (२६०) रुकू ३५।

जो लोग अपना माल खुदा की राह में खर्च करते हैं उन (के माल की) मिसाल उस दाने की सी है जिस से सात बालें उगें और हर एक बाल में सौ-सौ दाने हों और खुदा जिस (के माल) को चाहता है ज़्यादा करता है वह बड़ी कुशाईश वाला (और) सब कुछ जानने वाला है (२६१) जो लोग अपना माल खुदा के रस्ते

में सर्फ़ करते हैं फिर उसके बाद उस ख़र्च का (किसी पर) एह-सान रखते हैं और (किसी को) तकलीफ़ देते हैं उन का सिला उनके पर्वरदिगार के पास (तैयार) है और (क़यामत के रोज़) न उनको कुछ ख़ौफ़ होगा न वह ग़मग़ीन होंगे (२६२) जिस ख़ैरात देने के बाद (लेने वाले को) ईज़ा दी जाये उस से तो नरम बात कह देनी और (उसकी बे अदवी से) दर गुज़र करना बेहतर है और खुदा बे पर्वाह और बुर्दबार है (२६३) मोमिनो अपने सद-क़ात (व ख़ैरात) एहसान रखने और ईज़ा देने से उस शख़्स की तरह बर्बाद न कर देना जो लोगों के दिखावे के लिये माल ख़र्च करता है और ख़ुदा और आख़िरत पर ईमान नहीं रखता तो उसके (माल) की मिसाल उस चट्टान की सी है जिस पर थोड़ी मिट्टी पड़ी हो और उस पर ज़ोर का मेंह बरस कर उसे साफ़ कर डाले (इसी तरह) यह (रियाकार) लोग अपने आमाल का कुछ भी सिला हासिल नहीं कर सकेंगे और खुदा ऐसे ना शुक्रों को हिदायत नहीं दिया करता (२६४) और जो लोग खुदा की खुश नूदी हासिल करने के लिए और खुलूसे नीयत से अपना माल खर्च करते हैं उनकी मिसाल एक बाग़ की सी है जो ऊँची जगह पर वाक़्या है (जब) उसपर मेंह पड़े तो दुगना फल लाये और अगर मेंह न भी पड़े तो ख़ैर फुहार ही सही और खुदा तुम्हारे कामों को देख रहा है (२६५) भला तुम में कोई यह चाहता है कि उस का खजूरों और अंगूरों का बाग़ हो जिस में नहरें बह रही हों और उस में उसके लिए हर क़िस्म के मेवे मौजूद हों और उसे

बुढ़ापा आ पकड़े और उसके नन्हें नन्हें बच्चे भी हों (नागहाँ) उस बाग़ पर आग का भरा हुआ बगूला चले और वह जल कर (राख का ढेर हो जाये इस तरह खुदा तुम से अपनी आयतें खोल खोल कर बयान फ़रमाता है कि तुम सोचो और समझो (२६६)

रुकू ३६ ।

मोमिनो ! जो पाक़ीज़ा और उमदा माल कमाते हो और जो चीज़ें हम तुम्हारे लिये ज़मीन से निकालते हैं उनमें से (राहे खुदा में) खर्च करो और बुरी और नापाक़ चीज़ें देने का क़सद न करना कि अगर वह चीज़ें तुम्हें दी जातीं तो बजुज़ इसके कि (लेते वक्त) आँखें बन्द कर लो और उन को कभी न लो और जान रक्खो कि खुदा बे पर्वाह (और) क़ाबिले सताईश है (२६७) (और देखना) शैतान (का कहा न मानना, वह) तुम्हें तंग दस्ती का खौफ़ दिलाता और बे हयाई के काम करने को कहता है और खुदा तुमसे अपनी बख्शिश और रहमत का वायदा करता है और खुदा बड़ी कुशाईश वाला (और, सब कुछ जानने वाला है (२६८) वह जिस को चाहता है दानाई बख़्शाता है और जिसको दानाई मिली बेशक उसको बड़ी नैयमत मिली और नसीहत तो वही लोग कबूल करते हैं जो अक्लमन्द हैं (२६९) और तुम (खुदा की राह में) जिस तरह का खर्च करो या कोई नज्र मानो खुदा उस को जानता है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं (२७०) अगर तुम खैरात ज़ाहिर दो तो वह भी खूब है और अगर पोशीदा दो और दो भी अहले हाज़त को तो वह खूब तर है (इस

तरह का देना) तुम्हारे गुनाहों को भी दूर कर देगा और ख़ुदा को तुम्हारे सब कामों की ख़बर है (२७१) (ऐ मोहम्मद) तुम उन लोगों की हिदायत के ज़िम्मेदार नहीं हो बल्कि ख़ुदा ही जिस को चाहता है हिदायत बख़्शता है और (मोमिनो !) तुम जो माल ख़र्च करोगे तो उसका फ़ायदा तुम्हीं को है और तुम तो जो खर्च करोगे खुदा की ख़ुशनूदी के लिए करोगे वह तुम्हें पूरा पूरा दे दिया जायेगा और तुम्हारा कुछ नुक़सान नहीं किया जायेगा (२७२) और हाँ तुम जो ख़र्च करोगे (तो) उन हाजत-मन्दों के लिए जो ख़ुदा की राह में रुके बैठे हैं और मुल्क में किसी तरफ़ जाने की ताक़त नहीं रखते (और माँगने से आर रखते हैं) यहाँ तक कि न माँगने की वजह से नावाक़िफ़ शख्स उनको ग़नी ख्याल करता है और और तुम क़याफ़े से उस को साफ़ पहचान लो कि हाजतमन्द हैं और शर्म के सबब लोगों से मुंह फोड़ कर और लिपट कर नहीं माँग सकते और तुम जो माल ख़र्च करोगे कुछ शक नहीं कि खुदा उस को जानता है (२७३) रुकू ३७।

जो लोग अपना माल रात और दिन पौशीदा और ज़ाहिर (राहे खुदा में) ख़र्च करते रहते हैं उन का सिला पर्वरदिगार के पास है और उन को (क़यामत के दिन) न किसी तरह का ख़ौफ़ होगा और न ग़म (२७४) जो लोग सूद खाते हैं वह (क़बरों से) इस तरह (हवास बाख़्ता) उठेंगे जैसे किसी को जिन ने लिपट कर दीवाना बना दिया हो यह इस लिये कि वह कहते

हैं कि सौदा बेचना भी तो (नफ़े के लिहाज़ से) वैसा ही है जैसे सूद (लेना) हालाँकि सौदे को खुदा ने हलाल किया है और सूद को हराम तो जिस शख़्स के पास खुदा की नसीहत पहुंची और वह (सूद लेने से) बाज़ आ गया तो जो पहले हो चुका वह उस का और (क़यामत में) उस का मामला खुदा के सिपुर्द और जो फिर लेने लगा तो ऐसे दोज़ख़ी हैं कि हमेंशा दोज़ख़ में (जलते) रहेंगे (२७५) खुदा सूद को नाबूद (यानी बे बरकत) करता और ख़ैरात (की बरकत) को बढ़ाता है और खुदा किसी ना शुक्रे गुनेहगार को दोस्त नहीं रखता (२७६) जो लोग ईमान लाते और नेक अमल करते और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहे उनको उन के कामों का सिला खुदा के हाँ मिलेगा और (क़यामत के दिन) उन को न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मनाक होंगे (२७७) मोमिनो ! खुदा से डरो और अगर ईमान रखते हो तो जितना सूद बाक़ी रह गया है उसको छोड़ दो (२७८) अगर ऐसा न करोगे तो ख़बरदार हो जाओ कि तुम खुदा और रसूल से जंग करने के लिये (तैयार होते हो) और अगर तौबा कर लोगे (और सूद छोड़ दोगे) तो तुम को अपनी असल रक़म लेने का हक़ है जिसमें न औरों का नुक़सान और न तुम्हारा नुक़सान (२७९) और अगर कर्ज़ लेने वाला तंगदस्त हो तो (उसे) कशायश (के हासिल होने) तक मोहलत (दो) और अगर (ज़रे क़र्ज़) बख़्श ही दो तो तुम्हारे लिये ज़्यादा अच्छा है बशर्ते कि समझो (२८०) और उस दिन से डरो जब कि तुम खुदा के हज़ूर में

लौट कर जाओगे और हर शख़्स अपने अमाल का पूरा-पूरा बदला पायेगा और किसी का कुछ नुकसान न होगा (२८१) रुकू ३८।

मोमिनो जब तुम आपस में किसी मोयादे मौईन के लिये क़रज़ का मामला करने लगो तो उसको लिख लिया करो और लिखने वाला तुम में किसी का नुक़सान न करे (बल्कि) इन्साफ़ से लिखे नीज़ लिखने वाला जैसे उसे खुदा ने सिखाया है लिखने से इन्कार न भी करे और दस्तावेज़ लिख दे और जो शख़्स क़र्ज़ ले वही (दस्तावेज़) का मज़मून बोल कर लिखवाये और ख़ुदा से कि उसका मालिक है ख़ौफ़ करे और ज़रे क़र्ज़ में से कुछ कम न लिखवाये और अगर क़र्ज़ लेने वाला बेअक़्ल या जैईफ़ हो या मज़मून लिखाने की क़ाबलियत न रखता हो तो जो उसका वली हो वह इन्साफ़ के साथ मज़मून लिखवाये और अपने में से दो मर्दों को (ऐसे मामले का)गवाह कर लिया करो और अगर दोमर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें जिनको तुम गवाह पसन्द करो(काफ़ी हैं) कि अगर उनमें से एक भूल जायेगी तो दूसरी उसे याद दिला देगी और जब ग़वाह गवाहो के लिये तलब किये जायें तोइन्कार न करें और कर्ज़ थोड़ा हो या बहुत इस(को दस्तावेज़) के लिखवाने में काहिली न करना यह बात ख़ुदा के नज़दीक निहायत क़रीने इन्साफ़ है और शहादत के लिये भी यह बहुत दुरुस्त तरीक़ा है इससे तुम्हें किसी तरह का शको शुब्हा भी नहीं पड़ेगा हाँ अगर सौदा दस्तबदस्त हो जो तुम आपस में लेते-देते हो तो अगर (ऐसे) मामले की दस्तावेज़ लिखो तो तुम पर

कुछ गुनाह नहीं और जब ख़रीदो फ़रोख़्त किया करो तो भी गवाह कर लिया करो और जब कातिब दस्तावेज़ और गवाह (मामला) करने वालों का किसी तरह का नुकसान न करें अगर तुम (लोग) ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिये गुनाह की बात है और ख़ुदा से डरो और (देखो) कि वह तुमको कैसी मुफ़ीद बातें सिखाता है और ख़ुदा हर चीज़ से वाक़िफ़ है (२८२) और अगर तुम सफ़र पर हो और (दस्तावेज़) लिखने वाला न मिल सके तो (कोई चीज़) रहन कब्ज़ा रख कर (क़र्ज़ ले लो) और अगर कोई किसी को अमीन समझे (यानी रहन के बग़ैर कर्ज़ दे दे) तो अमानतदार को चाहिये कि साहिबे अमानत की अमानत को अदा कर दे और ख़ुदा से जो उस का पवर्रदिगार है डरे और (देखना) शहादत को मत छुपाना जो उसको छुपायेगा वह दिल का गुन्हेगार होगा और ख़ुदा तुम्हारे सब कामों से वाक़िफ़ है (२८३) रुकू ३९।

जो कुछ अस्मानों और जो कुछ ज़मीन में है सब ख़ुदा ही का है तुम अपने दिलों की बात को ज़ाहिर करोगे या छुपाओगे तो ख़ुदा तुमसे उसका हिसाब लेगा फिर वह जिसे चाहे मग़फ़रत करे जिसे चाहे अज़ाब दें और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (२८४) रसूल (ख़ुदा) इस किताब पर जो उनके पवर्रदिगार की तरफ से उन पर नाज़िल हुई ईमान रखते हैं और मोमिन भी सब ख़ुदा पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके पैग़म्बरों पर ईमान रखते हैं (और कहते हैं) कि हम

उसके पैग़म्बरों से किसी में कुछ फ़र्क़ नहीं करते और वह (खुदा से) अर्ज़ करते हैं कि हमने (तेराहुक्म) सुना और कबूल किया ऐ पर्वरदिगार हम तेरी बख्शिश माँगते हैं और तेरी ही तरफ़ लौट कर जाना है (२८५) खुदा किसी को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देता अच्छे काम करेगा तो उसको उनका फ़ायदा मिलेगा बुरे करेगा तो उसे उनका नुक़सान पहुँचेगा ऐ पर्वरदिगार अगर हमसे भूल या चूक हो गई हो तो हम से मवाख़ज़ा न कीजो ऐ पर्वरदिगार हम पर ऐसा बोझ न डालियो जैसा तूने हमसे पहले लोगों पर डाला था ऐ पर्वरदिगार जितना बोझ उठाने की हममें ताकत नहीं उतना हमारे सर पर न रखियो और ऐ (पर्वरदिगार) हमारे गुनाहों से दरगुज़र कर और हमें बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा तू ही हमारा मालिक है और हमको काफ़िरों पर ग़ालिब फ़रमा (२८६) रुकू ४० ।

सूरह आल उमरान

सूरह आल उमरान मदीने में उतरी और इसमें २०० आयतें और २० रुकू हैं ।

शुरु खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है अलिफ़, लाम, मीम (१) खुदा जो माबूदे बरहक़ है) उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं जिन्दा हमेशा रहने

वाला (२) उसने (ऐ मोहम्मद) तुम पर सच्ची किताब नाज़िल की जो पहली (आस्मानी) किताबों की तसदीक़ करती है और उसी ने तौरात और अन्जील नाज़िल की (३) (यानी) लोगों की हिदायत के लिये पहले (तौरात और अन्जील उतारी) और फिर (कुरान जो हक़ और बातिल को) अलग-अलग कर देने वाला (है) नाज़िल, किया जो लोग खुदा की आयतों से इन्कार करते हैं उनको सख्त अज़ाब होगा और खुदा ज़बरदस्त (और) बदला लेने वाला है (४) खुदा ऐसा ख़बीरो (बसीर है) कि कोई चीज़ उससे पोशीदा नहीं न ज़मीन में और न आस्मान में (५) वही तो है जो (माँ के पेट में) जैसी चाहता है तुम्हारी सूरतें बनाता है इस ग़ालिब हिकमत वाले के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं (६) वही तो है जिसने तुम पर किताब नाज़िल की जिसकी बाज़-बाज़ आयतें मेहकम हैं (और) वही असल किताब है और बाज़ मुतशाबा हैं तो जिन लोगों के दिलों में कजी है वह शक वाली आयतों के पीछे पड़े रहते हैं ताकि फ़ित्ना बर्पा करें और मुराद असली का पता लगायें हालाँकि मुराद असली खुदा के सिवा कोई नहीं जानता और जो लोग इल्म में दस्तगाहे कामिल रखते हैं वह यह कहते हैं कि हम उन पर ईमान लाये यह सब हमारे पवर्रदिगार की तरफ़ से हैं और नसीहत तो अक्लमन्द ही क़बूल करते हैं (७) ऐ पवर्रदिगार जब तूने हमें हिदायत बख्शी है तो उसके बाद हमारे दिलों में कजी न पैदा कर दीजियो और हमें अपने हाँ से नेयमत अता फ़रमा

तू तो बड़ा अता फ़रमाने वाला है (८) ऐ पर्वरदिगार तो उस रोज़ (जिसके आने में) कुछ भी शक नहीं सब लोगों को (अपने हज़ूर में जमा कर लेगा बेशक खुदा ख़िलाफ़ वायदा नहीं करता (९) रुकू-१-

जो लोग क़ाफ़िर हुऐ (उस दिन न तो उनका माल ही खुदा (के अज़ाब) से उनको बचा सकेगा और न ही उनकी औलाद ही (कुछ काम आयेगी) और यह लोग आतिश (जहन्नुम) का ईन्धन होंगे (१०) उनका हाल भी फ़िरऔनियों और उनसे पहले लोगों का सा होगा जिन्होंने हमारी आयतों की तकज़ीब (बुरा भला कहा था) की थी और ख़ुदा ने उनको उनके गुनाहों के सबब अज़ाब (दण्ड) में पकड़ लिया था और खुदा सख़्त अज़ाब करने वाला है (११) (ऐ पैग़म्बर) क़ाफ़िरों से कह दो कि तुम (दुनिया में भी) अनकरीब मग़लूब हो जाओगे और (आख़िरत) में जहन्नुम की तरफ़ हांके जाओगे और वह बुरी जगह है (१२) तुम्हारे लिये दो गिरोहों में जो (जंगे बदर के दिन) आपस में भिड़ गये (क़ुदरते खुदा की अज़ीमुश्शान) निशानी थी एक गिरोह (मुस्लमानों का था वह) खुदा की राह में लड़ रहा था और दूसरा गिरोह (क़ाफ़िरों का था वह) उन को अपनी आँखों से अपने से दुगना मुशाहदा कर रहा था और ख़ुदा अपनी नुसरत से जिसको चाहता है मदद देता है जो अहले बसीरत हैं उनके लिये इस वाक़ैय में बड़ी इबरत है (१३) लोगों को उनकी ख्वाहिशों की चीज़ें यानी औरतें और बेटे और पोते

और चाँदी के बड़े बड़े ढेर और निशान लगे हुए और मवेशी और खेती बड़ी ज़ीनतदार मालूम होती है (मगर) यह दुनिया ही की ज़िन्दगी के सामान हैं और ख़ुदा के पास बहुत अच्छा ठिकाना है (१४) (ऐ पैग़म्बर! उनसे) कहो कि भला मैं तुमको कोई चीज़ बताऊं जो इन चीज़ों से कहीं अच्छी हो (सुनो) जो लोग परहेज़गार हैं उनके लिये ख़ुदा के हाँ बाग़ाने (बाहिश्त) हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं उनमें वह हमेशा रहेंगे और पाकीज़ा औरतें हैं और सबसे बढ़ कर ख़ुदा की ख़ुशनूदी और ख़ुदा (अपने नेक) बन्दों को देख रहा है (१५) जो ख़ुदा से इल्तिजा करते हैं कि ऐ पर्वरदिगार हम ईमान ले आये सो हमको हमारे गुनाह मुआफ़ फ़रमा और दोज़ख़ के अज़ाब से मेहफ़ूज़ रख़ (१६) यह वह लोग है जो (मुशकिलात में) सब्र करतें और सच बोलते और इबादत में लगे रहते और (राहे ख़ुदा में) खर्च करते और औकाते सेहर में गुनाहों की मुआफ़ी मांगा करते हैं (१७) ख़ुदा तो इस बात की गवाही देता है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं और फ़रिश्ते और इल्म वाले लोग जो इन्साफ़ पर क़ायम हैं वह भी (गवाही देते हैं कि) उस गालिब हिकमत वाले के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं (१८) दीन तो ख़ुदा के नज़दीक इस्लाम है और अहले किताब ने जो (इस दीन से) इख्तिलाफ़ किया तो इल्म हासिल होने के बाद आपस की ज़िद से किया और जो शख़्स ख़ुदा की आयतों को न माने तो ख़ुदा जल्द हिसाब लेने वाला (और सज़ा देने वाला

है) (१९) ऐ पैग़म्बर अगर यह लोग तुम से झगड़ने लगें कहना कि मैं और मेरे पैरो तो ख़ुदा के फ़रमाँ बर्दार हो चुके और अहले किताब और अनपढ़ लोगों से कहो कि क्या तुम भी (ख़ुदा के फ़रमां बर्दार बनते) और इस्लाम लाते हो ? अगर यह लोग इस्लाम ले आयें तो बेशक हिदायत पा लें और अगर (तुम्हारा कहा) न मानें तो तुम्हारा क़ाम सिर्फ़ ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचा देना है और ख़ुदा (अपने) बन्दों को देख रहा है (२०) रुकू २।

जो लोग ख़ुदा की आयतों को नहीं मानते और अम्बिया को नाहक़ कत्ल करते रहे हैं और जो इंसाफ (करने) का हुक्म देते हैं उन्हें भी मार डालते हैं उनको दुख देने वाले अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दो (२१) यह ऐसे लोग हैं जिनके आमाल दुनिया और आख़िरत दोनों में बर्बाद हैं और उनका कोई मददगार नहीं (होगा) (२२) भला तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताबे (ख़ुदा या तौरात) से बेहरा दिया गया है और वह (इस) किताब की तरफ़ से बुलाये जाते हैं ताकि वह (उनके तनाज़ेआत का) उनमें फ़ैसला कर दे तो एक फ़रीक़ उनमें से कज अदाई के साथ मूँह फेर लेता है (२३) यह इस लिये कि यह इस बात के क़ाईल हैं कि (दोज़ख़ की) आग उन्हें चन्द रोज़ के सिवा छू ही नहीं सकेगी और जो कुछ यह दीन के बारे में बोहतान बान्धते रहे हैं उसने उनको धोखे में डाल रक्खा है (२४) तो उस वक्त क्या हाल होगा जब हम उनको जमा करेंगे (यानी) उस रोज़ जिस (के आने में) कुछ

भी शक नहीं और हर नफ़्स अपने आमाल का पूरा पूरा बदला पायेगा और उन पर जुल्म नहीं किया जायेगा (२५) कहो कि (ऐ) ख़ुदा (ऐ) बादशाही के मालिक तू जिसको चाहे बादशाही बख़्शे और जिससे चाहे बादशाही छीन ले और जिसको चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील करे हर तरह की भलाई तेरे ही हाथ है और बेशक तु हर चीज़ पर क़ादिर है (२६) तू ही रात को दिन में दाख़िल करता और तू ही दिन को रात में दाख़िल करता है तू ही बेजान से जानदार पैदा करता है और तू ही जानदार से बेजान पैदा करता है और तू ही जिस को चाहता है बेशुमार रिज़्क बख़्शता है (२७) मोमिनों को चाहिये कि मोमिनों के सिवा काफ़िरों को दोस्त न बनायें और जो ऐसा करेगा उससे ख़ुदा का कुछ (अहद) नहीं हाँ ! अगर इस तरीक़ से तुम उन (के शर) से बचाव की सूरत पैदा करो (तो मुज़ायक़ा नहीं) और ख़ुदा तुम को अपने (ग़ज़ब) से डराता है और ख़ुदा ही की तरफ़ (तुम को) लौट कर जाना है (२८) (ऐ पैग़म्बर) लोगों से कह दो कि कोई बात तुम अपने दिलों में मख़फ़ी (गुप्त) रक्खो या उसे ज़ाहिर करो ख़ुदा उस को जानता है और जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है उस को सब की ख़बर है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है (२९) जिस दिन हर शख़्स अपने आमाल की नेकी को मौजूद पायेगा और उन की बुराई को भी (देख लेगा) तो आरज़ू करेगा कि ऐ काश उस में और उस बुराई में दूर की मसाफ़त (अन्तर) हो जाती और ख़ुदा तुम को

अपने (ग़ज़ब) से डराता है और खुदा अपने बन्दों पर निहायत मेहरबान है (३०) रुकू (३)

(ऐ पैग़म्बर लोगों से) कह दो कि अगर तुम खुदा को दोस्त रखते हो तो मेरी पैरवी करो खुदा भी तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर देगा और खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (३१) कह दो कि खुदा और उसके रसूल का हुक्म मानो अगर न मानें तो खुदा भी काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता (३२) खुदा ने आदम और नूह और खानदाने इब्राहिम और खानदाने उमरान को तमाम जहान के लोगों में मुन्तख़िब फ़रमाया था (३३) उन में से बाज बाज की औलाद थे और खुदा सुनने वाला (और) जानने वाला है (३४) (वह वक्त याद करने के लायक़ है) जब उमरान की बीवी ने कहा कि ऐ पर्वरदिगार जो (बच्चा) मेरे पेट में है मैं उसे तेरी नज्र करती हूं उसे दुनिया के कामों से आज़ाद रक्खूंगी तू (उसे) मेरी तरफ़ से क़बूल फ़रमा तू तो सुनने वाला (और) जानने वाला है (३५) जब उन के हाँ बच्चा पैदा हुआ (और) जो कुछ उन के पैदा हुआ था खुदा को सब मालूम था तो कहने लगीं कि पर्वरदिगार मेरे तो लड़की हुई है (और) नज्र के लिये लड़का (मौज़ूं था कि वह) लड़की की तरह (नातवाँ) नहीं होता और मैंने उस का नाम मरियम रक्खा है और मैं उस को और उस की औलाद को शैतान मरदूद से तेरी पनाह में देती हूँ (३६) तो पर्वरदिगार ने उस को पसन्दीदगी के साथ क़बूल फ़रमाया और उसे अच्छी तरह परवरिश किया,

और ज़करिया को उसका मुत्तक़फ़्फ़ल बनाया ज़करिया जब कभी इबातगाह में उस के पास जाते तो उसके पास खाना पाते (यह कैफ़ियत देखकर एक दिन मरियम से) पूछने लगे कि मरियम यह खाना तुम्हारे पास कहाँ से आता है वह बोलीं कि ख़ुदा के हाँ से (आता है) बेशक ख़ुदा जिस को चाहता है बेशुमार रिज़्क देता है (३७) उस वक्त ज़करिया ने अपने पर्वरदिगार से दुआ की (और) कहा कि पर्वरदिगार मुझे अपनी जनाब से औलादे सालेह अता फ़रमा तू बेशक दुआ सुनने (और क़बूल करने वाला है (३८) वह अभी इबादगाह में खड़े नमाज़ ही पढ़ रहे थे कि फ़रिश्तों ने आवाज़ दी कि (ज़करिया) ख़ुदा तुम्हें यैहिया की बशारत देता है जो ख़ुदा के फ़ेज़ (यानी ईसा) की तसदीक़ करेंगे और सरदार होंगे और औरतों से रग़बत न रखने वाले (और ख़ुदा के) पैग़म्बर (यानी) नेकू कारों में होंगे (३९) ज़करिया ने कहा ऐ पर्वरदि-गार मेरे हाँ लड़का क्यों कर पैदा होगा मैं तो बुड्ढा हो गया हूं और मेरी बीवी बाञ्झ है ख़ुदा ने फ़रमाया उसी तरह ख़ुदा जो चाहता है करता है (४०) ज़करिया ने कहा कि पर्वरदिगार (मेरे लिये) कोई निशानी फ़रमा ख़ुदा ने फ़रमाया निशानी यह है कि तुम लोगों से तीन दिन इशारे के सिवा बात न कर सकोगे तो (इन दिनों में) अपने पर्वरदिगार को कसरत से याद और सुब्ह शाम उस की तस्बीह करना (४१) रुकू (४)

जब और फ़रिश्तों ने (मरियम) से कहा कि मरियम ख़ुदा ने तुमको बरग़ज़ीदा किया और पाक बनाया है और जहान की

औरतों में मुन्तख़िब किया है (४२) मरियम अपने पर्वरदिगार की फ़रमा बरदारी करना और सज्दा करना और रको करने वालों के साथ रको करना (४३) (ऐ मोहम्मद) यह बातें अख़बारे ग़ैब में से हैं जो हम तुम्हारे पास भेजते हैं और जब वह लोग अपने क़लम (बतौर क़ुरआ) डाल रहे थे कि मरियम का मुत्तकफ़िल कौन है तो तुम उनके पास नहीं थे और न उस वक्त ही उनके पास थे जब वह आपस में झगड़ रहे थे (४४) (वह वक्त भी याद करने के लायक है) जब फ़रिश्तों ने (मरियम से) कहा कि मरियम ख़ुदा तुम्हें अपनी तरफ़से एक फ़रज़न्दकी बशारत देता है जिस का नाम मसीह (और मशहूर) ईसा बिन मरियम होगा (और जो) दुनिया और आख़िरत में बा आबरु और (ख़ुदा के) ख़ासों में से होगा (४५) और माँ की गोद में और बड़ी उम्र का होकर (दोनों हालतों में) लोगों से (एकसां) गुफ्तगू करेगा और नेकू कारों में होगा (४६) मरियम ने कहा पर्वरदिगार मेरे हाँ बच्चा क्यों कर होगा कि किसी इन्सान ने मुझे हाथ तो लगाया नहीं फ़रमाया कि ख़ुदा इसी तरह जो चाहता है पैदा करता है जब वह कोई काम करना चाहता है तो इर्शाद फ़रमा देता है कि हो जा तो वह हो जाता है (४७) और वह उन्हें लिखना (पढ़ना) और दानई और तौरात और अन्जील सिखायेगा (४८) (और) ईसा बनी इसराईल की तरफ़ पैग़म्बर (होकर जायेंगे और कहेंगे) कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ से निशानी लेकर आया हूँ वह यह कि तुम्हारे सामने मिट्टी कीमूरत व शक्ल का परिन्द बनाता हूँ फिर उसमें फूंक मारता हूँ

तो वह ख़ुदा के हुक्म से (सचमुच) जानवर हो जाता है और अन्धे और अबिरिस को तन्दुरुस्त कर देता हूँ और ख़ुदा के हुक्म से मुर्दे में जान डाल देता हूँ और जो कुछ तुम खाकर आते हो और जो अपने घरों में जमा कर रखते हो सब तुम को बता देता हूँ अगर तुम साहिबे ईमान हो तो इन बातों में तुम्हारे लिये (क़ुदरते ख़ुदा की) निशानी है (४६) और मुझसे पहले जो तौरात (नाज़िल हुई) थी उस की तसदीक़ भी करता हूँ और (मैं) इस लिये भी (आया हूँ) कि बाज़ चीज़ें जो तुम पर हराम थीं उन को तुम्हारे लिए हलाल कर दूं और मैं तो तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ से निशानी लेकर आया हूँ तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो (५०) कुछ शक नहीं कि ख़ुदा ही मेरा और तुम्हारा पर्वरदिगार है तो उसी की इबादत करो यही सीधा रास्ता है (५१) जब ईसा ने उनकी तरफ़ से नाफ़रमानी (और) नीयते क़त्ल देखी तो कहने लगे कि कोई है जो ख़ुदा का तरफ़दार और मेरा मददगार हो हवारी बोले कि हम ख़ुदा के तरफ़दार (और) आपके मददगार हैं हम ख़ुदा पर ईमान लाये और आप गवाह रहें कि हम फ़रमाँ बरदार हैं (५२) ऐ पर्वरदिगार जो (किताब) तूने नाज़िल फ़रमाई है हम उस पर ईमान ले आये और (तेरे पैग़म्बर) के पैरो हो चुके तू हम को मानने वालों में लिख रख (५३) और वह यानी यहूद (क़त्ले ईसा के बारे में) एक चाल चले और ख़ुदा ईसा को बचाने के (लिये) चाल चला और ख़ुदा ख़ूब चाल चलने वाला है (५४) रुकू (५)

उस वक्त खुदा ने फ़रमाया कि ईसा मैं तुम्हारे दुनिया में रहने की मुद्दत पूरी कर के तुम को अपनी तरफ़ उठा लूंगा और तुम्हें काफ़िरों (की सोहबत) से पाक कर दूंगा और जो तुम्हारी पैरवी करेंगे उन को काफ़िरों पर क़यामत तक फ़ायक़ ग़ालिब) रखूंगा फिर तुम सब मेरे पास लौट कर आओगे तो जिन बातों में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे उस दिन तुम में उन का फ़ैसला कर दूंगा (५५) यानी जो क़ाफ़िर हुये उन को दुनिया और आख़िरत (दोनों) में सख़्त अज़ाब दूंगा और उन का कोई मददगार नहीं होगा (५६) और जो ईमान लाये और अमल नेक करते रहे उन को खुदा पूरा पूरा सिला देगा और खुदा ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता (५७) (ऐ मोहम्मद) यह हम तुम को (खुदा की) आयतें और हिकमत भरी नसीहतें पढ़ पढ़ कर सुनाते हैं (५८) ईसा का हाल खुदा के नज़दीक आदम का सा है कि उस ने (पहले) मिट्टी से उन का क़ालिब बनाया फिर फ़रमाया कि (इन्सान) होजा तो वह (इन्सान) हो गये (५९) (यह बात) तुम्हारे पर्वरदिगार को तरफ़ से हक़ है सो तुम हरगिज़ शक करने वालों में न होना (६०) फिर अगर यह लोग ईसा के बारे में तुम से झगड़ा करें और तुम को हक़ीकतुल हाल तो मालूम हो ही चली है तो उनसे कहना कि आओ हम अपने बेटों और औरतों को बुलायें और तुम अपने बेटों और औरतों को बुलाओ और हम खुद ही आयें और तुम खुद भी आओ फिर दोनों फ़रीक़ (खुदा) से दुआ और इल्तिजा करें और झूठों पर खुदा की

लानत भेजें (६१) यह तमाम बयानात सही हैं और खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं और बेशक खुदा ग़ालिब और साहिबे हिकमत है (६२) तो अगर यह लोग फिर जायें तो खुदा मुफ़सिदों को सब जानता है (६३) रुकू (६)

कह दो कि ऐ अहले किताब जो बात हमारे और तुम्हारे दरमियान यकसाँ (तस्लीम की गई) है उसकी तरफ आओ वह यह कि खुदा के सिवा हम किसी की इबादत न करें और उस के साथ किसी चीज़ को शरीक़ न बनायें और हममें से कोई किसी को खुदा के सिवा अपना कारसाज़ न समझे अगर यह लोग (इस बात को) न मानें तो (उन से) कह दो कि तुम ग़वाह रहो कि हम (खुदा के) फ़रमाँबरदार है (६४) ऐ अहले किताब तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो हालाँकि तौरात और अन्जील उन के बाद उतरी हैं (और वह पहले हो चुके हैं) तो क्या तुम अक़्ल नहीं रखते (६५) देखो ! ऐसी बात में तो तुमने झगड़ा किया ही था जिस का तुम्हें कुछ इल्म था भी मगर ऐसी बात में क्यों झगड़ते हो जिस का तुम को कुछ भी इल्म नहीं और खुदा जानता है और तुम नहीं जानते (६६) इब्राहीम न तो यहूदी थे न ईसाई बल्कि सब से बे तअल्लुक होकर (एक खुदा) के हो रहे थे और उसी के फ़रमाँ बरदार थे और मुश्रिकों में न थे (६७ इब्राहीम से क़ुर्ब रखने वाले तो वह लोग हैं जो उन की पैरवी करते हैं और यह पैग़म्बर (आख़िरुज़्ज़माँ) और वह लोग जो ईमान लाये हैं और खुदा मोमिनों का कारसाज़ है (६८) (ऐ

अहले इस्लाम) बाजे अहले किताब इस बात की ख्वाहिश रखते हैं कि तुम को गुमराह कर दें मगर वह (तुम को क्या गुमराह करेंगे) अपने आप को ही गुमराह कर रहे हैं और नहीं जानते (६९) ऐ अहले किताब तुम ख़ुदा की आयतों से क्यों इन्कार करते हो और तुम (तौरात को) मानतेतो हो (७०) ऐ अहले किताब तुम सच को झूठ के साथ क्यों ख़िल्त मिल्त करते हो और हक़ को क्यों छुपाते हो और तुम जानते भी हो (७१) रुकू (७)

और अहले किताब एक दूसरे से कहते हैं कि जो (किताब) मोमिनों पर नाज़िल हुई है उस पर दिन के शुरु में तो ईमान ले आया करो और उस के आख़िर में इन्कार कर दिया करो ताकि वह (इस्लाम से) बरगश्ता हो जायें (७२) और अपने दीन के पैरु के सिवा किसी और के क़ाईल न होना (ऐ पैग़म्बर) कह दो कि हिदायत तो ख़ुदा ही की हिदायत है (वह यह भी कहते हैं) यह भी (न मानना) कि जो चीज़ तुम को मिली है वैसी किसी और को मिलेगी या वह तुम्हें ख़ुदा के रुबरु क़ाईल माक़ूल कर सकेंगे यह भी कह दो कि बुजुर्गी ख़ुदा ही के हाथ में है वह जिसे चाहता है देता है और ख़ुदा कुशाईश वाला (और) इल्म वाला है (७३) वह अपनी रहमत से जिस को चाहता है ख़ास कर लेता है और ख़ुदा बड़े फ़ज़्ल का मालिक है (७४) और अहले किताब में से कोई तो ऐसा है कि अगर तुम उस के पास (रुपयों का) ढेर अमानत रख दो तो तुम को (फ़ौरन) दे दे

और कोई इस तरह का है कि अगर उसके पास एक दीनार भी

अमानत रक्खो तो जब तक उसके सर पर हर वक्त खड़े न रहो तुम्हें दे ही नहीं यह इस लिए कि वह कहते हैं कि उम्मियों के बारे में हम से मवाख़िज़ा नहीं होगा यह खुदा पर मेहज़ भूठ बोलते हैं और (इस बात को) जानते भी हैं (७५) हाँ जो शख़्स अपने इक़रार को पूरा करे और (खुदा से) डरे तो खुदा डरने वालों को दोस्त रखता है (७६) जो लोग खुदा के इक़रारों और अपनी क़समों को (बेच डालते हैं और उनके) ऐवज़ थोड़ी सी क़ीमत हासिल करते हैं उन का आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं उन से खुदा न तो क़लाम करेगा और न क़यामत के रोज़ उन की तरफ़ देखेगा• और न उनको पाक करेगा और उन को दःख देने वाला अज़ाब होगा (७७) और उन (अहले किताब) में अक्सर ऐसे हैं कि किताब (तौरात) को ज़बान मरोड़-मरोड़ कर पढ़ते हैं ताकि तुम समझो कि जो कुछ वह पढ़ते हैं किताब में से है हालाँ-कि वह किताब में से नहीं है और कहते हैं कि वह खुदा की तरफ़ से (नाज़िल हुआ) है हालाँकि वह खुदा की तरफ़ से नहीं होता और खुदा पर भूठ बोलते हैं और (यह बात) जानते भी हैं (७८) किसी आदमी को शायाँ नहीं कि खुदा तो उसे किताब और हकूमत और नबव्वत अता फ़रमाये और वह लोगों से कहे कि खुदा को छोड़ कर मेरे बन्दे हो जाओ (बल्कि) उस को यह करना सज़ावार है कि ऐ (अहले किताब) तुम (उलमाये) रब्बानी हो जाओ क्यों कि तुम किताब (खुदा) पढ़ते पढ़ाते रहते हो (७९) और उस को यह भी नहीं करना चाहिये कि तुम

फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को ख़ुदा बनालो भला जब तुम मुस्लमान हो चुके तो क्या उसे ज़ेबा है कि तुम्हें क़ाफ़िर ोने को कहे (८०) रुकू (८)

और जब ख़ुदा ने पैग़म्बरों से अहद लिया कि जब मैं तुम को किताब और दानई अता करूं फिर तुम्हारे पास कोई पैग़म्बर आये जो तुम्हारी किताब की तस्दीक करे तो तुम्हें ज़रूर उस पर ईमान लाना होगा और ज़रूर उसकी मदद करनी होगी और (अहद लेने के बाद) पूछा कि भला तुमने इक़रार कया और उस इक़रार पर मेरा ज़िम्मा लिया (यानी मुझे ज़ामिन ठेहराया) उन्होंने कहा (हाँ) हमने इक़रार किया (ख़ुदा नें) फ़रमाया कि तुम इस (अहदो पैमान) के गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ (८१) तो जो इस के बाद फिर जायें वह बद किरदार हैं (८२) क्या यह (काफ़िर) ख़ुदा के दीन के सिवा किसी और दीन के तालिब हैं हालाँकि सब अहले आस्मान व ज़मीं ख़ुशी या ज़बर-दस्ती से ख़ुदा के फ़रमाँबरदार हैं और उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं (८३) कहो कि हम ख़ुदा पर ईमान लाये और जो किताब हम पर नाज़िल हुई और जो सहीफ़े इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब और उनकी औलाद पर उतरे और जो किताबें ईसा और मूसा और दूसरे अम्बिया को पर्वरदि-गार की तरफ़ से मिलीं सब पर ईमान लाये हम उन पैग़म्बरों में से किसी में कुछ फ़र्क़ नहीं करते और हम उसी (ख़ुदाये वाहिद) के फ़रमाँ बरदार हैं (८४) और जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी

और दीन का तालिब होगा वह उससे हर्गिज़ क़बूल नहीं किया जायेगा और ऐसा शख़्स आख़िरत में नुकसान उठाने वालों में होगा (८५) ख़ुदा ऐसे लोगों को क्यों कर हिदायत दे जो ईमान लाने के बाद क़ाफ़िर हो गये और (पहले) इस बात की गवाही दे चुके कि यह पैग़म्बर बरहक़ हैं और उनके पास दलाईल भी आ गये और ख़ुदा बे इन्साफ़ों को हिदायत नहीं देता (८६) उन लोगों की सज़ा यह है कि उन पर ख़ुदा की और फ़रिश्तों की और इन्सानों की सब की लानत हो (८७) हमेशा इस लानत में (गिरफ़्तार) रहेंगे उन से न तो अज़ाब हल्का किया जायेगा और न उन्हें मोहलत दी जायेगी (८८) हाँ जिन्होंने उस के बाद तौबा की और अपनी हालत दुरुस्त कर ली तो ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान हैं (८९) जो लोग ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गये फिर कुफ्र में बढ़ते गये ऐसों की तौबा हर्गिज़ क़बूल नहीं होगी और यह लोग गुमराह हैं (९०) जो लोग क़ाफ़िर हुये और कुफ्र ही की हालत में मर गये वह अगर (नजात हासिल करनी चाहें और) और बदले में ज़मीन भर सोना दें तो हर्गिज़ क़बूल नहीं किया जायेगा और उन लोगों को दुख देने वाला अज़ाब होगा और उन का कोई मदद नहीं करेगा (९१) रुकू (९)

चौथा पारा–लनतना

मोमिनो ! जब तक तुम उन चीज़ों में से जो तुम्हें अज़ीज़ हैं (राहे ख़ुदा में) सर्फ़ न करोगे कभी नेकी हासिल न कर सकोगे और जो चीज़ तुम सर्फ़ करोगे ख़ुदा उस को जानता है (९२) बनी इसराईल के लिए (तौरात के नाज़िल होने से) पहले खाने की सब चीज़ें हलाल थीं वजुज़ (सिवा) उनके जो याक़ूब ने ख़ुद अपने ऊपर हराम कर ली थीं, कह दो कि अगर सच्चे हो तो तौरात लाओ और उसे पढ़ो (यानी) दलील पेश करो (९३) जो इस के बाद भी ख़ुदा पर झूठे इफ़्तिरा करें तो ऐसे लोग ही बे इन्साफ़ हैं (९४) कह दो कि ख़ुदा ने सच फ़रमा दिया, पस दीने इब्राहीम की पैरवी करो जो सब से बे तअल्लुक होकर (एक ख़ुदा) के हो रहे थे और मुश्रिकों में से न थे (९५) पहला घर जो लोगों (के इबादत करने) के लिए मुक़र्रर किया था वही है जो मक्के में बा बरकत और जहान के लिये मूजिबे हिदायत (९६) उस में खुली हुई निशानियाँ हैं जिन में से एक इब्राहीम के खड़े होने की जगह है जो शख़्स उस (मुबारिक) घर में दाख़िल हुआ उसने अम्न पा लिया और लोगों पर ख़ुदा का हक़ (यानी फ़र्ज़) है कि जो उस घर तक जाने का मक़दूर रखे वह उस का हज करे और जो इस हुक्म की तामील न करेगा तो ख़ुदा भी अहले आलम से बे न्याज़ है (९७) कहो कि तुम ख़ुदा की आयतों से क्यों कुफ़्र करते हो और ख़ुदा तुम्हारे सब आमाल से बाख़बर है (९८) कहो कि (ऐ अहले किताब) तुम मोमिनों को ख़ुदा के रस्ते से क्यों रोकते हो और

बावजूदे कि तुम इससे वाक़िफ़ हो, इस में कजी निकालते हो और खुदा तुम्हारे कामों से बे खबर नहीं (९९) मोमिनो ! अगर तुम अहले किताब के किसी फ़रीक़ का कहा मान लोगे तो वह तुम्हें ईमान लाने के बाद क़ाफ़िर बना देंगे (१००) और तुम क्यों कर कुफ्र करोगे जबकि तुम को ख़ुदा की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाई जाती हैं और तुम में उसके पैग़म्बर मौजूद हैं और जिस ने (ख़ुदा की) हिदायत की रस्सी को मज़बूत पकड़ लिया वह सीधे रस्ते पर लग गया (१०१) रुकू (१०)

मोमिनो ! ख़ुदा से डरो जैसा कि उससे डरने का हक़ है और मरना तो मुसलमान ही मरना (१०२) सब मिल कर खुदा की (हिदायत की) रस्सी को मज़बूत पकड़े रहना और मुतफ़र्रिक़ न होना और खुदा की उस मेहरबानी को याद करो जब तुम एक दूसरे के दुश्मन थे तो उसने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त डाल दी और तुम उस की मेहरबानी से भाई-भाई हो गये और तुम आग के गढ़े के क़िनारे तक पहुँच चुके थे तो खुदा ने तुम को उस से बचा लिया इस तरह खुदा तुम्हें अपनी आयतें खोल-खोल कर सुनाता है ताकि तुम हिदायत पाओ (१०३) और तुम में एक जमायत ऐसी होनी चाहिए जो लोगों को नेकी की तरफ़ बुलाये और अच्छे काम करने का हुक्म दे और बुरे कामों से मना करे यही लोग हैं जो नजात पाने वाले हैं (१०४) और उन लोगों की तरह न होना जो मुतफ़र्रिक़ हो गये और एहकामे बैय्यन (स्पष्ट आदेश) के आने

के बाद एक दूसरे से (ख़िलाफ़ व) इख़्तिलाफ़ (विरोध) करने

लगे यह वह लोग हैं जिन को (क़यामत के दिन) बड़ा अज़ाब होगा (१०५) जिस दिन बहुत से मुँह सफ़ैद होंगे और बहुत से मुँह सियाह तो जिन लोगों के मुँह सियाह होंगे (उनसे खुदा फ़रमायेगा) क्या तुम ईमान लाकर क़ाफ़िर हो गये थे? सो (अब) इस कुफ़्र के बदले अज़ाब (के मज़े) चखो (१०६) और जिन लोगों के मूँह सफ़ैद होंगे वह खुदा की रहमत (के बाग़ों) में होंगे और उनमें हमेशा रहेंगे (१०७) यह खुदा की आयतें हैं जो हम तुम को सेहत के साथ पढ़कर सुनाते हैं और खुदा अहले आलम पर ज़ुल्म नहीं करना चाहता (१०८) और जो कुछ आस्मानों मेंऔर जो कुछ ज़मीन में है सब खुदाही का है और सब कामों का रजू है (और अन्जाम) खुदा ही की तरफ़ है (१०९) (मोमिनो) जितनी उम्मतें (कौमें) लोगों में पैदा हुईं हैं तुम उन सबसे बेहतर हो कि नेक काम करने को कहते हो और बुरे कामों से मना करते हो और खुदा पर ईमान रखते हो और अगर अहले किताब भी ईमान ले आते तो उन के लिये बहुत अच्छा होता उन में ईमान लाने वाले भी हैं (लेकिन थोड़े) और अक्सर ना फ़रमान हैं (११०) रुकू (११)

और यह तुम्हें ख़फ़ीफ़ (साधारण) सी तक़लीफ़ के सिवा कुछ नुक़सान नही पहुंचा सकेंगे और अगर तुम से लड़ेंगे तो पीठ फेर कर भाग जायेंगे फिर उनको मदद भी (कहीं से) नहीं मिलेगी (१११) यह जहाँ नज़र आयेंगे ज़िल्लत (को देखोगे कि) उन से चिपट रही है बजुज़ (अतिरिक्त) इस के कि यह खुदा

और (मुसलमान) लोगों की पनाह में आ जायें और यह लोग खुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हैं और नादारी इन से लिपट रही है यह इस लिये कि खुदा की आयतों से इन्कार करते थे और (उस के) पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल कर देते थे यह इस लिये कि यह ना फ़रमानी किये जाते और हद से बढ़े जाते थे (११२) यह भी सब एक जैसे नहीं हैं इन अहले किताब में कुछ लोग (हुक्मे खुदा पर) क़ायम भी हैं जो रात के वक्त खुदा की आयतें पढ़ते और (उस के आगे) सजदा करते हैं (११३) (और) खुदा पर और रोज़े आख़िरत पर ईमान रखते और अच्छे काम करने को कहते और बुरी बातों से मना करते और नेकियों पर लपकते हैं और यही लोग नेकूकार हैं (११४) और यह जिस तरह की नेकी करेंगे उस की नाक़दरी नहीं की जायेगी और खुदा परहेज़गारों को खूब जानता है (११५) जो लोग क़ाफ़िर हैं उन के माल और औलाद खुदा के अज़ाब को हर्गिज़ नहीं टाल सकेंगे और यह लोग अहले दोज़ख हैं कि हमेशा उसी में रहेंगे (११६) यह जो माल दुनिया की ज़िन्दगी में खर्च करते हैं उस की मिसाल हवा की सी है जिस में सख्त सर्दी हो और वह ऐसे लोगों की खेती पर जो अपने आप पर ज़ुल्म करते थे चले और उसे तबाह कर दिया और खुदा ने उन पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया बल्कि यह खुद अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे हैं (११७) मोमिनो ! किसी ग़ैर (मज़हब के) आदमी को अपना राजदाँ न बनाना यह लोग तुम्हारी खराबी (और फ़ित्ना अंगेज़ी करने) में किसी तरह की कोताही नहीं

करते और चाहते हैं कि (जिस तरह हो) तुम्हें तक़लीफ़ पहुँचे और उनकी ज़बानों से तो दुश्मनी ज़ाहिर हो ही चुकी है और जो (कीने) उनके सीनों में मख़्फ़ी हैं (जो दुश्मनी उनके सीनों में छुपी हुई है) वह कहीं ज़्यादा हैं अगर तुम अक़्ल रखते हो तो हम ने तुम को अपनी आयतें खोल-खोल कर सुना दी हैं (११८) देखो तुम ऐसे (साफ़ दिल) लोग हो कि उन लोगों से दोस्ती रखते हो हालांकि वह तुमसे दोस्ती नहीं रखते और तुम सब किताबों पर ईमान रखते हो और वह तुम्हारी किताब को नहीं मानते और जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं हम ईमान ले आये और जब अलग होते हैं तो तुम पर ग़ुस्से के सबब उंगलियाँ काट काट खाते हैं (उन से) कह दो (बद बख़्तो) ग़ुस्से में मर जाओ खुदा तुम्हारे दिलों की बातों से खूब वाक़िफ़ है (११९) अगर तुम को आसूदगी हासिल हो तो उनको बुरी लगती है और अगर रंज पहुंचे तो खुश होते हैं और अगर तुम तकलीफ़ों की बर्दाश्त और (उन से) किनारा कशी करते रहोगे तो उन का फ़रेब तुम्हें कुछ भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा यह जो कुछ करते हैं खुदा उस पर अहाता किये हुए हैं (१२०) और (तुम उस वक्त को याद करो) जब तुम सुबह को अपने घर से रवाना होकर ईमान वालों को लड़ाई के लिये मोर्चों पर (मौक़ा बमौक़ा) मुत्ताईयन करने लगे और खुदा सब कुछ सुनता और जानता है (१२१) रुकू (१२)

उस वक्त तुम में से दो जमायतों ने जी छोड़ देना चाहा मगर ख़ुदा उनका मददगार था मोमिनो को ख़ुदा ही पर भरोसा

रखना चाहिये (१२२) और ख़ुदा ने जंगेबदर में भी तुम्हारी मदद की थी और उस वक्त भी तुम बे सरो सामान थे पस ख़ुदा से डरो (और उन एहसानों को याद करो) ताकि शुक्र करो (१२३) जब तुमने मोमिनों से यह कह कर उनके दिल बढ़ा दिये थे कि क्या यह काफ़ी नहीं कि पर्वरदिगार तीन हज़ार फ़रिश्ते भेजकर तुम्हें मदद दे (१२४) हाँ अगर तुम दिल को मज़बूत रक्खो और (ख़ुदा से) डरते रहो और काफ़िर तुम पर जोश के साथ दफ़ातन हमला कर दें तो पर्वरदिगार पाँच हज़ार फ़रिश्ते जिन पर निशान होंगे तुम्हारी मदद को भेजेगा (१२५) और उस मदद को तो ख़ुदा ने तुम्हारे लिए (ज़रिये) बशारत बनाया यानी इसलिए तुम्हारे दिलों को तसल्ली हासिल हो वर्ना मदद तो ख़ुदा ही की है जो ग़ालिब (और) हिकमत वाला है (१२६) (यह ख़ुदा ने) इस लिये (किया) कि काफ़िरों की एक जमायत को हलाक या उन्हें ज़लील व मग़लूब कर दे कि (जैसे आये थे वैसे ही) नाकाम वापिस जायें (१२७) ऐ पैग़म्बर इस काम में तुम्हारा कुछ अख़्तियार नहीं (अब दो सूरते हैं) या ख़ुदा उनके हाल पर मेहरबानी करे या उन्हें अज़ाब दे कि यह ज़ालिम लोग हैं (१२८) और जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब कुछ ख़ुदा ही का है वह जिसे चाहे बख़्श दे और जिसे चाहे अज़ाब करे (और) ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (१२९) ऐ ईमान वालो ! दुगुना चौगुना सूद न खाओ और ख़ुदा से डरो ताकि नजात हासिल करो (१३०) रुकू १३ ।

और (दोज़ख़ की) आग से बचो जो काफ़िरों के लिये तैयार की गई है (१३१) और ख़ुदा और उसके रसूल की इताअत करो ताकि तुम पर रहमत की जाये (१३२) और अपने पर्वरदिगार की बख़्शिश और बहिश्त की तरफ लपको जिसका अर्ज़ आसमान और ज़मीन के बराबर है और जो (ख़ुदा से) डरने वालों के लिये तैयार की गई है (१३३) जो आसूदगी और तंगी में अपना माल (ख़ुदा की राह में) खर्च करते हैं और गुस्से को रोकते और लोगों के क़सूर मुआफ़ करते हैं और ख़ुदा नेकू कारों को दोस्त रखता है (१३४) और वह कि जब कोई खुला गुनाह या अपने हक़ में कोई और बुराई कर बैठते हैं तो ख़ुदा को याद करते और अपने गुनाहों की बख़्शिश माँगते हैं और ख़ुदा के सिवा गुनाह बख़्श भी कौन सकता है और जानबूझ कर अपने अफ़आल पर अडे नहीं रहते (१३५) ऐसे ही लोगों का सिला पर्वरदिगार की तरफ़ से बख़्शिश और बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं और वह उसमें हमेशा बसते रहेंगे और (अच्छे) काम करने वालों का बदला बहुत अच्छा है (१३६) तुम लोगों से पहले भी बहुत से वाकैयात गुज़र चुके हैं तो तुम ज़मीन में सैर करके देख लो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ (१३७) यह (क़ुरआन) लोगों के लिये बयाने सरीह (दृष्टान्त) और अहले तक़वा के लिये हिदायत और नसीहत है (आदेश तथा उपदेश) (१३८) और (देखो) बे दिल न होना और न किसी तरह का ग़म करना अगर तुम मोमिन (सच्चे) हो तो तुम ही ग़ालिब रहोगे (१३९) अगर तुम्हें ज़ख़्म (पराजय) लगा है तो उन लोगों को

भी ऐसा ज़ख़्म लग चुका है और यह दिन हैं कि हम उन को लोगों में बदलते रहते हैं और इस से यह भी मक़सूद था कि ख़ुदा ईमान वालों को मुतमैय्यज़ (पहचान) कर दें और तुम में से गवाह बनायें और ख़ुदा बे-इन्साफ़ों को पसन्द नहीं करता (१४०) और यह भी मक़सूद था कि ख़ुदा ईमान वालों को ख़ालिस (शुद्ध-मोमिन) बना दे और काफ़िरों को नाबूद कर दे (१४१) क्या तुम यह समझते हो कि (बे आज़माईश) बहिश्त में जा दाख़िल होगे, हालाँकि अभी ख़ुदा ने तुम में से जहाद करने वालों को तो अच्छी तरह मालूम किया ही नहीं और (यह भी मक़सूद है) कि वह साबित क़दम रहने वालों को मालूम है (१४२) और तुम मौत (शहादत) के आने से पहले उसकी तमन्ना किया करते थे सो तुमने उस को आँखों से देख लिया (१४३) और मोहम्द (सलअम) तो सिर्फ़ (ख़ुदा के) पैग़म्बर हैं उन से पहले भी बहुत से पैग़म्बर हो गुज़रे हैं भला अगर यह मर जायें या मारे जायें तो तुम उलटे पाँव फिर जाओ ? (यानी मुर्तिद हो जाओ ?) और जो उलटे पाँव फिर जायेगा तो ख़ुदा का कुछ नुक़सान नहीं कर सकेगा और ख़ुदा शुक्र गुज़ारों को (बड़ा) सवाब देगा (१४४) रुकू (१४)

और किसी शख़्स में ताक़त नहीं कि ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर मर जाये (उसने मौत का) वक़्त मुकर्रर कर के लिख रक्खा है और जो शख़्स दुनिया में (अपने आमाल का) बदला चाहे उस को हम यहीं बदला देंगे और जो आख़िरत में तालिबे सवाब हो

उस को वहाँ अजर अता करेंगे और हम शुक्र गुज़ारों को अन्क़रीब (बहुत अच्छा) सिला देंगे (१४५) और बहुत से नबी हुए हैं जिन के साथ हो कर अक्सर अहल अल्लाह (खुदा के दुश्मनों से) लड़े हैं तो जो मुसीबतें उन पर राहे खुदा में वाकैय हुईं उनके सबब उन्होंने न तो हिम्मत हारी न बुज़दिली की न (काफ़िरों से) दबे और खुदा इस्तक़लाल रखने वालों को दोस्त रखता है (१४६) और (इस हालतमें) उनके मुँह से कोई बात निकलती तो यही कि ऐ पर्वरदिगार हमारे गुनाह और ज़्यादतियाँ जो हम अपने कामों में करते रहे हैं मुआफ़ फ़रमा और हम को साबित क़दम रख और क़ाफ़िरों पर फ़तह इनायत फ़रमा (१४७) तो खुदा ने उनको दुनियाँ में भी बदला दिया और आख़िरत में भी बहुत अच्छा बदला (देगा) और खुदा नेकूकारों को दोस्त रखता है (१४८) रुकू (१५)

मोमिनो ! अगर तुम क़ाफ़िरों का कहा मान लोगे तो वह तुम को उलटे पाँव फेर(र मुर्तिद कर) देंगे फिर तुम बड़े ख़सारे में पड़ जाओगे (१४९) (यह तुम्हारे मददगार नहीं हैं) बल्कि खुदा तुम्हारा मददगार है और वह सब से बेहतर मददगार है (१५०) हम अन्क़रीब क़ाफ़िरों के दिलों में तुम्हारा रोआब बैठा देंगे क्योंकि यह खुदा के साथ शिर्क करते हैं जिस की उस ने कोई भी दलील नाज़िल नहीं की और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, वहज़ालिमों का बहुत बुरा ठिकाना है (१५१) और खुदा ने अपना वायदा सच्चा कर दिया (यानी उस वक्त)

जब तुम क़ाफ़िरों को उस के हुक्म से क़त्ल कर रहे थे यहाँ तक कि जो तुम चाहते थे खुदा ने तुम को दिखा दिया उसके बाद तुमने हिम्मत हार दी और हुक्मे (पैग़म्बर) में झगड़ा करने लगे और उसकी ना फ़रमानी की बाज़ तो तुम में से दुनियाँ के ख़्वास्त्तगार थे और बाज़ आख़िरत के तालिब, उस वक्त खुदा ने तुम को उन (के मुक़ाबले) से फेर (कर भगा) दिया ताकि तम्हारी आज़माईश करे और उस ने तुम्हारा क़सूर मुआफ़ कर दिया और खुदा मोमिनों पर बड़ा फ़ज़ल करने वाला है (१५२) (वह वक्त भी याद करने के लायक़ है) जब तुम लोग दूर भागे जाते थे और किसी को पीछे फिर कर नहीं देखते थे और रसूल अल्लाह तुम को तुम्हारे पीछे खड़े बुला रहे थे तो खुदा ने तुम को ग़म पर ग़म पहुँचाया क्योंकि जो चीज तुम्हारे हाथ से जाती रही या जो मुसीबत तुम पर वाक़ैय होती है उससे तुम अन्दोह-नाक न हो और खुदा तुम्हारे सब अ.माल से ख़बरदार है (१५३) फिर खुदा ने ग़मोरंज के बाद तुम पर तसल्ली नाज़िल फ़रमाई (यानी) नींद कि तुम में से एक जमायत पर तारी हो गई और कुछ लोग जिन को जान के लाले पड़ रहे थे खुदा के बारे में नाहक़ (अय्यामे) कुफ्र के से गुमान करते थे और कहते थे भला हमारे अख़्तियार की कुछ बात है ? तुम कह दो कि बेशक सब बातें खुदा ही के अख़्तियार में हैं यह लोग (बहुत सी बातें) दिलों में मख़्फ़ी रखते थे जो तुम पर ज़ाहिर नहीं करते थे कहते थे कि हमारे बस की बात होती तो हम यहाँ क़त्ल ही न किये जाते कह दो कि अगर तुम अपने घरों में भी होते तो जिन की तक़दीर में

मारा जाना लिखा था वह अपनी अपनी क़त्ल गाहों की तरफ़ ज़रूर निकल आते इससे ग़रज़ यह थी कि खुदा तुम्हारे सीनों की बातों को अज़माये और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उस को साफ़ कर दे और ख़ुदा दिलों की बातों से खूबवाक़िफ़ है (१५४) जो लोग तुम में से (अहद के दिन) जब कि (मोमिनों और क़ाफ़िरों की) दो जमायतें एक दूसरे से गुत्थ गईं (जंग से) भाग गये तो उन के बाज़ अफ़आल के सबब शैतान ने उनको फुसला दिया मगर खुदा ने उन का क़सूर मुआफ़ कर दिया बेशक़ खुदा बख़्शने वाला और बुर्दबार है (१५५) रुकू (१६)

मोमिनो ! उन लोगों जैसे न होना जो कुफ़ करते हैं और उन के (मुस्लमान) भाई जब (खुदा की राह में) सफ़र करें (और मर जायें या जहाद को निकलें और मारे जायें) तो उन की निस्बत कहते हैं कि अगर वह हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते इन बातों से मक़सूद यह है कि खुदा उन लोगों के दिलों में अफ़सोस पैदा कर दे और ज़िन्दगी और मौत तो ख़ुदा ही देता है और ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को देख रहा है (१५६) और अगर तुम खुदा के रस्ते में मर जाओ या मारे जाओ तो जो (मालोमता) लोग जमा करते हैं उस से खुदा की बख़्शिश और रहमत कहीं बेहतर है (१५७) और अगर मर जाओ या मारे जाओ तो खुदा के हजूर में जरूर इकट्ठे किये जाओगे (१५८) (ऐ मोहम्मद) खुदा की मेहरबानी से तुम्हारा मिज़ाज उन लोगों के लिए वास्तविक रूप से नर्भ है

अगर तुम बदखू और सख्त दिल होते तो यह तुम्हारे पास से भाग खड़े होते तो इन को मुआफ़ कर दो और इन के लिए खुदा से मग़फ़रत माँगो और अपने कामों में इन से मशवरत लिया करो और जब (किसी काम का) अज़्म मुसम्मम (दृढ़ निश्चय) कर लो तो खुदा पर भरोसा रक्खो बेशक खुदा भरोसा रखने वालों को दोस्त रखता हैं (१५९) अगर खुदा तुम्हारा मददगार है तो तुम पर कोई नहीं आ सकता और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो फिर कौन है कि तुम्हारी मदद करे और मोमिनों को चाहिए कि खुदा ही पर भरोसा रखें (१६०) और कभी नहीं हो सकता कि पैग़म्बर (खुदा) ख़यानत करें और ख़यानत करने वालों को क़यामत के दिन ख़यानत की हुई चीज़ खुदा के रुबरु (सामने) ला हाज़िर करनी होगी फिर हर शख्स को उस के आमाल का पूरा पूरा बदला दिया जायेगा और बे इन्साफ़ी नहीं की जायेगी (१६१) भला जो शख्स खुदा की खुशनूदी का ताबेय हो वह उस शख्स की तरह ख़यानत कर सकता है जो खुदा की ना खुशी में गिरफ़्तार हो और जिस का ठिकाना दोज़ख है वह बुरा ठिकाना है (१६२) उन लोगों के खुदा के हाँ (भिन्न-भिन्न) दर्जे हैं और खुदा उन के सब कामों को देख रहा है (१६३) खुदा ने मोमिनों पर बड़ा एहसान किया है कि उन में उन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजे जो उनको ख़ुदा की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते और उन को पाक करते और (खुदा की) किताब और दानई सिखाते हैं और पहले तो यह लोग सरीह गुमराही में थे (१६४) (भला यह) क्या (बात है) कि जब (अहद के दिन

व फ़्फ़ार के हाथ से) तुम पर मुसीबत वाक़ैय हुई हालाँकि (जंगे बदर में) उससे दो चन्द मुसीबत तुम्हारे हाथ से उन पर पड़ चुकी है तो तुम चिल्ला उठे कि (हाय) आफ़त (हम पर) कहाँ से आ पड़ी कह दो कि यह तुम्हारी ही शामते आमाल है (कि तुम ने पैग़म्बर के हुक्म के ख़िलाफ़ किया) बेशक खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (१६५) और जो मुसीबत तुम पर दोनों जमायतों के मुकाबले के दिन वाक़ैय हुई सो खुदा के हुक्म से (वाक़ैय हुई) और (उससे) यह मक़सूद था कि खुदा मोमिनों को अच्छी तरह मालूम कर ले (१६६) और मुनाफ़िकों को भी मालूम कर ले और (जब) उन से कहा गया कि आओ खुदा के रस्ते में जंग करो या (क़ाफ़िरों के) हमलों को रोको तो कहने लगे कि अगर हम को लड़ाई की ख़बर होती तो हम जरूर तुम्हारे साथ रहते वह उस दिन ईमान की निस्बत कुफ्र से ज़्यादा करीब थे मुंह से वह बातें कहते हैं जो उन के दिल में नहीं हैं और जो कुछ यह छुपाते हैं खुदा उससे खूब वाक़िफ़ है (१६७) यह खुद तो जंग से बच कर बैठ ही रहे थे मगर (जिन्होंने राहे खुदा में अपनी जानें कुर्बान कर दीं) अपने (उन) भाईयों के बारे में भी कहते हैं कि अगर हमारा कहा मानते तो क़त्ल न होते कह दो कि अगर सच्चे हो तो अपने ऊपर से मौत को टाल देना (१६८) जो लोग खुदा की राह में मारे गये उन को मरे हुए न समझना (वह मरे हुए नहीं हैं) बल्कि खुदा के नज़दीक ज़िन्दा हैं और उन को रिज़्क मिल रहा है (१६९) जो कुछ खुदा ने उन को अपने फ़ज़ल से

बख़्श रखा है उस में ख़ुश हैं और जो लोग उनके पीछे रह गये हैं और (शहीद हो कर) उन में शामिल नहीं हो सके उन की निस्बत खुशियाँ मना रहे हैं कि (क़यामत के दिन) उन को भी न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मनाक होंगे (१७०) और खुदा की इनायात और फ़ज़ल से खुश हो रहे हैं और इस से कि खुदा मोमिनों का अजर ज़ाया नही करता (१७१) रुकू (१७)

जिन्होंने बावजूद ज़ख़्म खाने के ख़ुदा और रसूल के हुक्म को क़बूल किया जो लोग उन में नेकू-कार और परहेज़गार हैं उन के लिये बड़ा सवाब है (१७२) (जब) उन से लोगों ने आकर बयान किया कि कफ़्फ़ार ने तुम्हारे (मुकाबले के) लिये (लशकरे कसीर) जमा किया है तो उन से डरो तो उन का ईमान और (ज़्यादा) हो गया और कहने लगे कि हम को ख़ुदा काफ़ी है और वह बहुत अच्छा कार-साज़ है (१७३) फिर वह ख़ुदा की नैयमतों और उसके फ़ज़ल के साथ ख़ुश (ख़ुश) वापिस आये उन को किसी तरह का नुक़सान नहीं पहुंचा और वह ख़ुदाकी ख़ुशनदी के ताबैय रहे और ख़ुदा बड़े फ़ज़ल का मालिक है (१७४) यह ख़ौफ़ दिलाने वाले तो शैतान है जो अपने दोस्तों से डराता है तो अगर तुम मोमिन हो तो उन से मत डरना और मुझ से डरते रहना (१७५) और जो लोग कुफ्र में जल्दी करते हैं (उन की वजह) से ग़मगीन न होना यह ख़ुदा का कुछ नुक़सान नहीं कर सकते ख़ुदा चाहता है कि आख़िरत में उन को कुछ हिस्सा न दे और उन के लिये बड़ा अज़ाब (तैयार) है (१७६) जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ्र

खरीदा वह ख़ुदा का कुछ नहीं बिगाड़ सकते और उन को दुःख देने वाला अज़ाब होगा (१७७) और काफ़िर लोग यह न ख़याल करें कि हम जो उन को मोहलत दिये जाते हैं तो यह उन के हक़ में अच्छा है (नहीं) बल्कि हम उन को इस लिये मोहलत देते हैं कि और गुनाह कर लें उन को ज़लील करने वाला अज़ाब होगा (१७८) (लोगो) जब तक ख़ुदा नापाक को पाक से अलग न कर देगा मोमिनों को उस हाल में जिसमें तुम हो हर्गिज़ नहीं रहने देगा और अल्लाह तुम को ग़ैब की बातों से भी मुत्तला नहीं करेगा अलबत्ता ख़ुदा अपने पैग़म्बरों में से जिसे चाहता है इन्तख़ाब कर लेता है तो तुम ख़ुदा पर और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और अगर ईमान लाओगे और परहेज़गारी करोगे तो तुम को अजरे अज़ीम मिलेगा (१७९) जो लोग माल में जो ख़ुदा ने अपने फ़ज़ल से उन्हें अता फ़रमाया है बुख़्ल करते हैं वह इस बुख़्ल को अपने में अच्छा न समझें (वह अच्छा नहीं) बल्कि उन के लिये बुरा है वह जिस माल में बुख़्ल करते है क़यामत के दिन उस का तौक़ बना कर उन की गरदन में डाला जायेगा और आस्मानों और ज़मीन का वारिस ख़ुदा ही है और जो अमल तुम करते हो ख़ुदा को मालूम है (१८०) रुकू–१८

ख़ुदा ने उन लोगों का कौल सुन लिया जो कहते हैं कि ख़ुदा फ़क़ीर है और हम अमीर हैं यह जो कहते हैं हम उस को लिख लेंगे और पैग़म्बरों को जो यह नाहक़ कत्ल करते रहे हैं (उसको भी क़लमबन्द कर रखेंगे) और (क़यामत के दिन) कहेंगे कि

अज़ाबे (आतिशे सोज़ाँ के) मज़े चखते रहो (१८१) यह उन कामों की सज़ा है जो तुम्हारे हाथ आगे भेजते रहे हैं और खुदा तो बन्दों पर मुतलक़ ज़ुल्म नहीं करता (१८२) जो लोग कहते हैं कि खुदा ने हमें हुक्म भेजा है कि जब तक कोई पैग़म्बर हमारे पास ऐसी नयाज़ लेकर न आये जिसको आग आकर खा जाये तब तक हम उस पर ईमान नहीं लायेंगे (ऐ पैग़म्बर) उन से कह दो कि मुझ से पहले कई पैग़म्बर तुम्हारे पास खुली निशानियाँ लेकर आये और वह (मौजज़ा) भी लाये जो तुम कहते हो तो अगर सच्चे हो तो तुम ने उन को क़त्ल क्यों किया (१८३) फिर अगर यह लोग तुम को सच्चा न समझें तो तुम से पहले बहुत से पैग़म्बर खुली हुई निशानियाँ और सहीफ़े और रोशन किताबें ले कर आ चुके हैं और लोगों ने उन को भी सच्चा नहीं समझा (१८४) प्रत्येक जीव को मौत का स्वाद ज़रुर चखना है और तुम को क़यामत के दिन तुम्हारे आमाल का पूरा पूरा बदला दिया जायेगा तो जो शख्स आतिशें जहन्नुम से दूर रखा गया और बहिश्त में दाखिल किया गया वह मुराद को पहुँच गया और दुनियाँ की ज़िन्दगी तो धोखे का सामान है (१८५) (ऐ अहले ईमान) तुम्हारे मालो जान में तुम्हारी आज़माईश की जायेगी और तुम अहले किताब से और उन लोगों से जो मुश्रिक हैं बहुत सी ईज़ा की बातें सुनोगे तो अगर सब्र और परहेज़गारी करते रहोगे तो यह बड़ी हिम्मत के काम हैं (१८६) और खुदा ने उन लोगों से जिन को किताब इनायत की गई थी इक़रार लिया कि (जो कुछ इस

में लिखा है) उसे साफ़ साफ़ बयान करते रहना और इस (की किसी बात) को मत छुपाना तो उन्हों ने उस को पसे पुश्त फेंक दिया और उसके बदले थोड़ी सी क़ीमत हासिल की यह जो कुछ हासिल करते हैं बुरा हैं (१८७) जो लोगे अपने ना-पसन्द कामों से खुश होते हैं और (पसन्दीदा काम) जो करते नहीं उनके लिये चाहते हैं कि उन की तारीफ़ की जाये उन की निस्बत ख़याल न करना कि वह अज़ाब से रुस्तगार हो जायेंगे और उन्हें दर्द देने वाला अज़ाब होगा (१८८) और आस्मानों और ज़मीन की बादशाही खुदा ही की है और खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (१८९) रुकू-१९

बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाईश और रात और दिन के बदल-बदल कर आने जाने में अक़्ल वालों के लिये निशानियाँ हैं (१९०) जो खड़े और बैठे और लेटे (हर हाल में) खुदा को याद करते और आसमान और ज़मीन की पैदाईश में ग़ौर करते (और कहते) हैं कि ऐ पर्वरदीगार तू ने इस (मख़लूक़) को बे फायदा नहीं पैदा किया तू पाक है तो (कयामत के दिन) हमें दोज़ख के अज़ाब से बचाईओ (१९१) ऐ पर्वरदिगार जिसको तूने दोज़ख़ में डाला उसे रुसवा किया और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं (१९२) ऐ पर्वरदिगार हमने एक निदा करने वाले को सुना कि ईमान के लिए पुकार रहा था यानो अपने पर्वर-दिगार पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाये ऐ पर्वरदिगार हमारे गुनाह मुआफ़ फरमा और हमारी बुराईयों को हम से दूर

कर और हम को दुनिया से नेक बन्दों के साथ उठा (१९३) ऐ पर्वरदिगार तूने जिन जिन चीजों के हम से अपने पैग़म्बरों के ज़रिये से वायदे किये हैं वह हमें अता फ़रमा और क़यामत के दिन हमें रुसवा न कीजियो कुछ शक नहीं कि तू ख़िलाफ़े वायदा नहीं करता (१९४) तो उनके पर्वरदिगार ने उनकी दुआ क़बूल करली (और फ़रमाया) कि मैं किसी अमल करने वाले के अमल को मर्द हो या औरत ज़ाया नहीं करता तुम एक दूसरे की जिन्स हो तो जो लोग मेरे लिये वतन छोड़ गये और अपने घरों से निकाले गये और सताये गये और लड़े और क़त्ल किये गये मैं उनके गुनाह दूर कर दूंगा और उनको बहिश्तों में दाखिल करूंगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं (यह) खुदा के हाँ से बदला है और खुदा के हाँ अच्छा बदला है (१९५) (ऐ पैग़म्बर) काफ़िरों का शहरों में चलना फिरना तुम्हें धोखा न दे (१९६) (यह दुनिया का) थोड़ा सा फ़ायदा है फिर (आखिरत में) तो उनका ठिकाना दोज़ख़ है और वह बुरी जगह है (१९७) लेकिन जो लोग अपने पर्वरदिगार से डरते रहे उनके लिये बाग हैं जिनके नीचे नहरें बह रही है (और) उनमें हमेशा रहेंगे (यह) खुदा के हाँ से (उनको) मेहमानी है (और) जो कुछ खुदा के हाँ है वह नेकूकारों के लिये बहुत अच्छा है (१९८) और बाज़ अहले किताब ऐसे भी हैं जो खुदा पर और उस (किताब) पर जो तुम पर नाजिल हुई और उस पर जो उन पर नाज़िल हुई ईमान रखते हैं और खुदा के आगे आजिज़ी करते हैं और खुदा की आयतों के

बदले थोड़ी सी क़ीमत नहीं लेते यही लोग हैं जिनका सिला उनके पर्वरदिगार के हाँ तैयार है और खुदा जल्द हिसाब लेने वाला है (१९९) ऐ अहले ईमान (कफ़्फार के मुक़ाबले में) साबित क़दम रहो और इस्तक़ामत (मज़बूती) रक्खो और (मोर्चों पर) जमे रहो और खुदा से डरो ताकि मुराद हासिल करो (२००) रूकू—२०
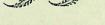
सूर-हे-निसा

सूरे-निसा मदोने में उतरी इसमें १७६ आयतें और २४ रूकू हैं।

शुरुखुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है लोगों ! अपने पर्वर दिगार से डरो जिसने तुम को एक शख़्स से पैदा किया (यानी अव्वल) उससे उसका जोड़ा बनाया फिर उन दोनों से कसरत से मर्द व औरत (पैदा करके रुए ज़मीन पर) फैला दिये और खुदा से जिनके नाम को तुम अपनी हाजत बरारी का ज़रिया बनाते हो डरो और (क़त-ऐ मौदत) अरहाम से (बचो) कुछ शक नहीं कि खुदा तुम्हें देख रहा है (१) और यतीमों का माल (जो तुम्हारी सुरक्षा में हो) उनके हवाले कर दो और उनके पाकीज़ा और (उमदा) माल

को(अपने ख़राब और)बुरे माल से न बदलो और न उनका माल अपने माल में मिला कर खाओ कि यह बड़ा सख्त गुनाह है (२) और अगर तुमको इस बात का ख़ौफ हो कि यतीम लड़कियों के बारे में इन्साफ न कर सकोगे तो उनके सिवा जो औरतें तुम को पसन्द हो दो-दो या तीन-तीन या चार-चार उनसे निक़ह कर लो और अगर इस बात का अन्देशा हो कि (सब औरतों से) यकसाँ सलूक न कर सकोगे तो एक औरत (काफी है) या लौण्डी जिसके तुम मालिक हो इससे तुम बे इन्साफी से बच जाओगे (३) और औरतों को उनके मेहर खुशी से दे दिया करो हां अगर वह अपनी खुशी से उसमें से कुछ तुम को छोड़ दें तो उसे ज़ौक़ शौक़ से खा लो (४) और बे अक़्लों को उन का माल जिसे खुदा ने तुम लोगों के लिये सबब मआशियत बनाया हैं मत दो (हम) उसमें से उनको खिलाते और पहनाते रहो और उनसे माक़ूल बातें कहते रहो (५) और यतीमों को बालिग होने तक काम काज में मसरुफ रखो फिर (बालिग होने पर)

आयत(१) – यानी पहले आदम से हव्वा बनाई और फिर सब लोग।

आयत (२) जिस लड़के का बाप मर जाये उसके वारिसों को ताकीद है कि उसके माल को सुरक्षा से अपने माल से अलग उठाकर रक्खें और लड़के के होश संभालने पर उसका माल उसके हवाले कर दें। आयत [५] —जिसके कई औरतें हों उसको वाजिब है कि खाने पहनने में और लेने देने में बराबर रक्खे और रात रहने मे बारी बराबर बान्धे—

अगर उनमें अक़्ल की पुख़्तगी देखो तो उनका माल उनके हवाले कर दो और इस ख़ौफ़ से कि वह बड़े हो जायेंगे (यानी बड़े होकर तुमसे अपना माल वापिस ले लेंगे) उसको फ़जूल खर्ची और जल्दी में न उड़ा देना जो शख़्स आसूदा हाल हो उसको (ऐसे माल से कैतई तौर से) परहेज़ रखना चाहिये और जो बे मक़दूर हो वह मुनासिब तौर पर (यानी बक़दरे ख़िदमत) कुछ ले लें और जब उनका माल उनके हवाले करने लगो तो गवाह कर लिया करो और हक़ीक़त में तो खुदा ही (गवाह और) हिसाब लेने वाला काफी है (६) जो माल मां बाप और रिश्तेदार छोड़ें थोड़ा हो या बहुत उसमें मर्दों का भी हिस्सा है और औरतों का भी यह हिस्से (खुदा के) मुक़र्रर किये हुये हैं (७) और जब मीरास की तक़सीम के वक्त (ग़ैर वारिस) रिश्तेदार और यतीम और मोहताज आजायें तो उनको भी उस में से कुछ दे दिया करो और शीरीं कलामी से पेश आया करो (८) और ऐसे लोगों को डरना चाहिए जो (ऐसी हालत में हो कि) अपने बाद नन्हे-नन्हे बच्चे छोड़ जायें और उनकी निस्बत खौफ हो (कि उनके मरने के बाद उन बेचारों का क्या हाल होगा) पस चाहिए कि यह लोग खुदा से डरें और माक़ूल बात कहें (९) जो लोग यतीमों का माल नाजायज़ तौर पर खाते हैं वह अपने पेट में आग भरते हैं और दोज़ख में डाले जायेंगे (१०) रुकू—१

खुदा तुम्हारी औलाद के बारे में तुम को इर्शाद फरमाता

है कि एक लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के हिस्से के बराबर है अगर औलादे मैयत सिर्फ लड़कियों ही हों (यानी दो या) दो से ज्यादा तो कुल तर्के में इन का दो तिहाई और अगर सिर्फ एक लड़की हो तो उस का हिस्सा निस्फ और मैयत के माँ बाप का यानी दोनों में से हर इक का तर्का में छटा हिस्सा बशर्ते कि मैयत के औलाद हो और अगर औलाद न हो और सिर्फ माँ बाप ही उस के वारिस हों तो एक तिहाई माँ का हिस्सा और अगर मैयत के भाई भी हों तो माँ का छटा हिस्सा (और यह तक़सीम तर्का मैयत की) वसीयत (की तामील) के बाद जो उस ने की हो या क़र्ज़ के (अदा होने के बाद जो उस के ज़िम्मे हो अमल में आयेगी) तुम को मालूम नहीं कि तुम्हारे बाप दादों और बेटों-पोतों में से फ़यादे के लिहाज़ से कौन तुम से ज्यादा क़रीब है यह हिस्से खुदा के मुकर्रर किये हुए हैं और खुदा सब कुछ जानने बाला और हिक़मत वाला है (११) और जो माल तुम्हारी औरतें छोड़ मरें अगर उनके औलाद न हो तो उस में निस्फ हिस्सा तुम्हारा और अगर औलाद हो तर्के में तुम्हारा हिस्सा चौथाई (लेकिन यह तक़सीम) वसीयत (की तामील) के बाद जो उन्होंने की हो यह क़र्ज़ के (अदा होने के बाद जो उनके ज़िम्मे हो की जायेगी) और जो माल तुम (मर्द) छोड़ मरो अगर तुम्हारे औलाद न हो तो तुम्हारी औरत का उस में चौथा हिस्सा और अगर औलाद हो तो उन का आठवाँ हिस्सा (यह हिस्से) तुम्हारी वसीयत (की तामील) के बाद जो तुम ने की हो और (अदाये क़र्ज़ के बाद तक़सीम किये जायेंगे) और अगर ऐसे मर्द या औरत

की मीरास हो जिसके न वाप हो न बेटा मगर उसके भाई या बहन हो तो उन में से हर एक का छटा हिस्सा और अगर एक से ज़्यादा हों तो सब एक तिहाई में शरीक़ होंगे (यह हिस्से भी) बाद अदाये वसीयत व क़र्ज बशर्ते कि उन में से मैयत ने किसी का नुकसान न किया हो (तक़सीम किये जायेंगे) यह खुदा का फ़रमान है और खुदा निहायत इल्म वाला (और) निहायत हिल्म वाला है (१२) यह तमाम (एहकाम) खुदा की हदें हैं और जो शख़्स खुदा और उस के पैग़म्बर की फरमाँ बरदारी करेगा खुदा उस को बहिश्तों में दाख़िल करेगा जिन में नहरें बह रही हैं वह उन में हमेशा रहेंगे और यह बड़ी कामयाबी है (१३) और जो खुदा और उसके रसूल की ना फ़रमानी करेगा और उस की हदों से निकल जायेगा उस को खुदा दोज़ख में डालेगा जहाँ वह हमेशा रहेगा और उस को ज़िल्लत का अज़ाब होगा (१४) रुकू (२)

मुस्लमानो ! तुम्हारी औरतें जो बदकारी का इर्तकाब कर बैठें उन पर अपने लोगों में से चार शख़्सों को शहादत लो अगर वह (उन की बदकारी की) गवाही दें तो उन औरतों को घरों

आयत १२:—यहाँ तक मर्द और औरत की मीरास फ़रमाई औरत के माल में मर्द का आधा हिस्सा है अगर औरत को औलाद नहीं और अगर औलाद है उस में मर्द से या उसे तो मर्द को चौथाई और इसी तरह मर्द के माल में औरत को चौथाई अगर मर्द को औलाद है तो औरत को आठवाँ हिस्सा हर जिन्स माल में नक़द या जिन्स या सलाह या जेवर या हवेली या वागबानी और नका मेहर मीरास से जुदा है—

में बन्द रखो यहां तक कि मौत उन का काम तमाम कर दे या ख़ुदा उन के लिये कोई और सबील पैदा करे (१५) और जो दो मर्द तुम में से बदकारी करें तो उन को ईज़ा दो फिर अगर वह तौबा कर लें और नेकूकार हो जायें तो उन का पीछा छोड़ दो, बेशक ख़ुदा तौबा क़बूल करने वाला (और) मेहरबान है (१६) ख़ुदा उन्हीं लोगों की तौबा क़बूल फ़रमाता है जो नादानी से बुरी हरकत कर बैठते हैं फिर जल्द तौबा कर लेते हैं पस ऐसे लोगों पर ख़ुदा मेहरबानी करता है और वह सब कुछ जानता (और) हिकमत वाला है (१७) और ऐसे लोगों की तौबा क़बूल नहीं होती जो (सारी उम्र) बुरे काम करते रहे यहां तक कि जब उन में से किसी की मौत आ मौजूद हो तो उस वक़्त कहने लगे कि अब मैं तौबा करता हूँ और न उनकी (तौबा क़बूल होती है) जो कुफ़्र की हालत में मरें ऐसे लोगों के लिये हम ने अज़ाबे अलीम तैयार कर रखा है (१८) मोमिनो ! तुम को जायज़ नहीं कि जबरदस्ती औरतों के वारिस बन जाओ और (देखना) इस

आयत १५:—यह हुक्म ज़ना का है जो फ़रमाया कि चार मर्द मुस्लमान नेक बख़्त शाहिद चाहियें और यहां हद जनाँ की नहीं फ़रमाई वायदा रक्खा—

आयत १६:—अगर दो मर्द फ़ेले बद करें उन का हुक्म भी उस वक़्त मुज्मिल ईज़ा देनी फ़रमाई और अगर तौबा करें तो ईज़ा न दो फिर जब हद नाज़िल हुई तो उस की हद बन्दी जुदा न फ़रमाई, सभी उलमा का इख़्तिलाफ़ रहा कि वहां हद है इस की भी या शम्शीर से जुदा करना या कुछ और तौर से—

नियत से कि जो कुछ तुम ने उन को दिया है उस में से कुछ ले लो उन्हें (घरों में) मत रोक रखना हाँ अगर वह खुले तौर पर बदकारी की मुरतकिब हों (तो रोकना ना मुनासिब नहीं) और उन के साथ अच्छी तरह रहो सहो अगर वह तुम को नापसन्द हों तो अजब नहीं कि तुम किसी चीज़ को न पसन्द करो और ख़ुदा उस में बहुत सी भलाई पैदा कर दे (१९) और अगर तुम एक औरत छोड़ कर दूसरी औरत करनी चाहो और पहली औरत को बहुत सा माल दे चुके हो तो उस में से कुछ मत लेना भला तुम नाजायज़ तौर पर और सरीह ज़ुल्म से अपना माल उस से वापिस लोगे (२०) और तुम दिया हुआ माल क्यों कर वापिस ले सकते हो जब कि तुम एक दूसरे के साथ सोहबत कर चुके हो और वह तुम से अहदे वासिक़ भी ले चुकी हैं (२१) और जिन औरतों से तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो उन से निकाह मत करना मगर (जाहिलियत में) जो हो चुका (सो हो चुका) यह निहायत बे हयाई और (ख़ुदा की) ना ख़ुशी की बात थी और बहुत बुरा दस्तूर था (२२) रुकू (३)

तुम पर तुम्हारी मायें और बेटियाँ और बहनें और फूफियाँ और ख़ालायें और भतीजियाँ और भान्जियाँ और वह मायें जिन्हों ने तुन्हें दूध पिलाया हो और रज़ाई बहनें और सासें हराम कर

आयत २१—यानी जब मर्द औरत तक पहुँचा तो उस का तमाम मेहर लाज़िम हुआ अब बग़ैर उस के छोड़े नहीं छूटता और अहद गाढ़ा यही कि हुक्मे शरआ से औरत मर्द के क़ब्ज़े में आई—

दी गई हैं और जिन औरतों से तुम मुबाशरत कर चुके हो उन की लड़कियां जिन्हें तुम परवरिश करते हो(वह भी तुम पर हराम हैं) हाँ अगर उन के साथ तुम ने मुबाशरत न की हो तो (उन की लड़कियों के साथ निकाह कर लेने में)तुम पर कुछ गुनाह नहीं और तुम्हारे सुलबी बेटों की औरतें भी और दो बहनों का इकट्ठा करना भी (हराम है) मगर जो हो चुका (सो हो चुका) बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला (और) रहम करने वाला है (२३)

पाञ्चवां परा—(वल्मुहसनात)—नूरे निसा

और शोहर वाली औरत भी (तुम पर हराम हैं) मगर वह जो (असीर हो कर लौंड़ियों के तौर पर) तुम्हारे क़ब्जे में आ जायें (यह हुक्म) ख़ुदा ने तुम को लिख दिया है और इन (मोहतरिमात) के सिवा और औरतें तुम को हलाल हैं, इस तरह से कि माल खर्च कर के उन से निकाह कर लो बशर्ते कि (निकाह से) मकसूद इफ़्फ़त क़ायम रखना हो न शेहवत-रानी तो जिन औरतों से तुम फ़ायादा हासिल करो उन का मेहर जो तुम ने मुक़र्रर किया हुआ हो अदा कर दो और अगर मुक़र्रर करने के बाद आपस की रज़ामन्दी से मेहर में कमी बेशी कर लो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं बेशक खुदा सब कुछ जानने वाला (और)

हिकमत वाला है (२४) और जो शख़्स तुम में से मोमिन आज़ाद औरतों (यानी बीवियों) से निकाह करने का मक़दूर न रखे तो मोमिन लौण्डियों में से जो तुम्हारे क़ब्ज़े में आ गई हों (निकाह कर लो) और खुदा तुम्हारे ईमान को अच्छी तरह जानता है, तुम दोनों आपस में एक दूसरे के हमजिन्स हो तो उन लौण्ड़ियों के साथ उन के मालिकों से इजाज़त हासिल कर के निकाह कर लो और दस्तूर के मुताबिक उन का मेहर भी अदा कर दो बशर्ते कि अफ़ीफ़ा हों न ऐसी खुल्लम खुल्ला बदकारी करें और न दर पर्दा दोस्ती करना चाहें फिर अगर निकाह में आ कर बदकारी का इर्तकाब कर बैठें तो जो सज़ा आज़ाद औरतों (यानी बीवियों) के लिये है उसकी आधी उन को (दीजाये) यह (लौण्डी के साथ निकाह करने की इजाज़त) उस शख़्स को है जिसे गुनाह कर बैठने का अन्देशा हो और अगर सब्र करो तो यह तुम्हारे लिये बहुत अच्छा है और खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (२५) रुकू—४

खुदा चाहता है कि (अपनी आयतें) तुम से खोल खोल कर

आयत २४—यानी जो औरतें हराम फरमाँ दीं उनके सिवा सब हलाल हैं मगर चार शर्त से (१) तलब करो यानी ज़बान से ईजाबो कबूल हो (२) माल देना क़बूल करो यानी मेहर (३) क़ैद में लाने की तरह हो मस्ती निकालनी न हो मुद्दत का ज़िक्र न आवे (४) कम से कम दोमर्द या एक मर्द और दो औरतें शाहिद हों जो औरत काम में आई उस का मेहर पूरा दो अगर बिना काम में लाये छोड़ दे तो मेहर आधा हो—

बयान फ़रमाये और तुम को अगले लोगों के तरीक़े बताये और तुम पर मेहरबानी करे और ख़ुदा जानने वाला (और) हिकमत वाला है (२६) और ख़ुदा तो चाहता है कि तुम पर मेहरबानी करे और जो लोग अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चलते हैं वह चाहते हैं कि तुम सीधे रास्ते से भटक कर दूर जा पड़ो (२७) ख़ुदा चाहता है कि तुम पर से बोझ हल्का करे और इन्सान (वास्तविक रूप से) कमज़ोर पैदा हुआ है (२८) मोमिनों। एक दूसरे का माल नाहक़ न खाओ हाँ अगर आपस की रज़ामन्दी से तिजारत का लेन देन हो (और उस से माली फ़ायदा हासिल हो जाये तो वह जाइज़ हैं) और अपने आप को हलाक न करो कुछ शक नहीं कि ख़ुदा तुम पर मेहरबान है (२९) और जो तआदी और ज़ुल्म से (ऐसा करेगा) हम उस को अन्क़रीब जहन्नुम में दाख़िल करेंगे और यह ख़ुदा को आसान है (३०) अगर तुम बड़े बड़े गुनाहों से जिन से तुम को मना किया जाता है इज्तिनाब रखोगे तो हम तुम्हारे छोटे छोटे गुनाह मुआफ़ कर देंगे और तुम्हें इज़्ज़त के मकानों में दाख़िल करेंगे (३१) और जिस चीज़ में ख़ुदा ने तुम में से बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है उस की हिर्स मत करो मर्दों को इन कामों का सवाब है जो उन्हों ने किये और औरतों को उन कामों का सवाब है जो उन्हों ने किये और ख़ुदा से उस का फ़ज़लो करम मांगते रहो कुछ शक नहीं कि ख़ुदा हर चीज़ से वाक़िफ़ है (३२) और जो माल माँ बाप और रिश्तेदार छोड़ मरे (वो हक़दारों में तक़सीम कर दो) कि हम ने हर एक के हक़दार

मुक़र्रर कर दिये हैं और जिन लोगों से तुम अहद कर चुके हो उन को भी उन का हिस्सा दो बेशक ख़ुदा हर चीज़ के सामने है (३३) रुकू - ५

मर्द औरतों पर हाकिम और मुसल्लत हैं इस लिये कि ख़ुदा ने बाज़ को बाज़ पर अफ़ज़ल बनाया है और इसलिये भी कि मर्द अपना माल ख़र्च करते हैं तो जो नेक बीबियां हैं वह मर्दों के हुक्म पर चलती हैं और उनकी पीठ पीछे ख़ुदा की हिफ़ाज़त में (मालो आबरू की) ख़बरदारी करती हैं और जिन औरतों की निस्बत तुम्हें मालूम हो कि सरकशी (और बद ख़ूई) करने लगी हैं तो (पहले) उनको (ज़बानी) समझाओ (अगर न समझें तो) उनके साथ सोना तर्क कर दो अगर इस पर भी बाज़ न आयें तो ज़दोकोब करो और अगर फ़रमांबरदार हो जायें तो फिर उन को ईज़ा देने का कोई बहाना मत ढूंढो बेशक ख़ुदा सब से आला और जलीलुक़द्र है (३४) और अगर तुम को मालूम हो कि मियां बीवी में अनबन है तो एक मुन्सिफ़ मर्द के ख़ानदान में से और एक मुन्सिफ़ औरत के ख़ानदान में से मुकर्रर करो वह अगर सुल्ह करा देनी चाहेंगे तो ख़ुदा उन में म्वाफ़िक़त पैदा कर देगा कुछ शक नहीं कि ख़ुदा सब कुछ जानता और सब बातों से ख़बरदार है (३५) और ख़ुदा ही की इबादत करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न बनाओ और माँ बाप और क़राबत वालों और भतीजों और मोहताजों और रिश्तेदारों और हमसायों और अजनबी हमसायों और रफ़ीक़ाये पहलू (पास बैठने वालों)

और मुसाफ़िरों और जो लोग तुम्हारे क़ब्जे में हों सबके साथ एहसान करो कि (खुदा एहसान करने वालों को दोस्त रखता है और) तकब्बुर करने वाले बड़ाई मारने वाले को दोस्त नहीं रखता (३६) और जो खुद भी बुख़्ल करें और लोगों को भी बुख़्ल सिखायें और जो माल खुदा ने उन को अपने फ़ज़ल से अता फ़रमाया है उसे छुपा छुपा के रखें और हम ने ना शुक्रों के लिये ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है (३७) और खर्च भी करें तो (खुदा के लिये नहीं बल्कि लोगों के दिखाने को और ईमान न खुदा पर लायें न रोज़े आख़िरत पर (ऐसे लोगों का साथी शैतान है) और जिस का साथी शैतान हुआ तो (कुछ शक नहीं) कि वह बुरा साथी है (३८) और अगर यह लोग ख़ुदा पर और रोज़े आख़िरत पर ईमान लाते और जो कुछ ख़ुदा ने उन को दिया था उस में से ख़र्च करते तो उन का क्या नुक़सान होता और ख़ुदा उन को ख़ूब जानता है (३९) ख़ुदा किसी की ज़रा भी हक़ तल्फ़ी नहीं करता और अगर नेकी (की) होगी तो उस को दो चन्द कर देगा और अपने हाँ से अजरे अज़ीम बख़्शेगा (४०) भला उस दिन क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से एहवाल बताने वाले को बुलायेंगे और तुम लोगों का (हाल बताने को) गवाह तलब करेंगे (४१) उस रोज़ काफ़िर और पैग़म्बर के नाफ़रमान आरज़ू करेंगे कि काश उन को ज़मीन में मदफ़ून कर के मिट्टी बराबर कर दी जाती और ख़ुदा से कोई बात छुपा नहीं सकेंगे (४२) रुकू—६

मोमिनो ! जब तुम नशे की हालत में हो तो जब तक (उन

अलफ़ाज़ को) जो मुहँ से व हो समझने (न) लगो नमाज़ के पास न जाओ और जनाबत की हालत में भी (नमाज़ के पास न जाओ) जब तक ग़ुस्ल (न) करलो हाँ अगर ब-हालते सफ़र रस्ते चले जा रहे हो (और पानी न मिलने के सबब ग़ुस्ल न कर सको तो तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ लो) और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या कोई तुम में से बैतुल खला से होकर आया हो या तुम औरतों से हम-बिस्तर हुये हो और तुम्हें पानी न मिले तो पाक मिट्टी लो और मूहँ और हाथों का मसहा (कर के तैयम्मुम) कर लो बेशक ख़ुदा मुआफ़ करने वाला (और) बख्शने वाला है (४३) भला तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताब से हिस्सा दिया गया था कि वह गुमराही को खरीदते हैं और चाहते हैं कि तुम भी रस्ते से भटक जाओ (४४) और ख़ुदा तुम्हारे दुश्मनों से ख़ूब वाक़िफ़ है और ख़ुदा ही काफ़ी कारसाज़ और काफ़ी मददगार है (४५) और यह जो यहूदी हैं इन में कुछ लोग ऐसे भी हैं कि कलमात को उनके मकामात से बदल देते हैं और कहते हैं कि हम से सुन लिया और नहीं माना और सुनिये न सुनवाये' जाओ और ज़बान को मरोड़ कर और दीन में तआन की राह से (तुम से गुफ़्तगू के वक्त) रायना कहते है और अगर (यूं कहते कि हमने सुन लिया और और मान लिया और (सिर्फ़) इस्मू और (रायना की जगह) नज़रना (कहते) तो उन के हक़में बेहतर

आयत ४३—तैयम्मुम :—कैफ़ियते तैयम्मुम में कई हदीसे आई हैं किसी में दो ज़रब और मसाह कोहनियों तक आया है और कुछ में फ़क़त एक ही ज़रब और मसाह कर लो कफ़े दस्त पर और कोहनियों के आया है

होता और बात भी बहुत दुरुस्त होती लेकिन ख़ुदा ने उन के कुफ़्र के सबब उन पर लानत कर रखी है तो यह कुछ थोड़े ही ईमान लाते हैं (४६) ऐ किताब वालो ! क़ब्ल इस के कि हम लोगों को मूहों को बिगाड़ कर उनको पीठ की तरफ़ फेर दें या उन पर इस तरह लानत करें जिस तरह हफ़्ते वालों पर की थी हमारी नाज़िल की हुई किताब पर जो तुम्हारी किताब की भी तस्दीक़ करती है ईमान ले आओ और ख़ुदा ने जो हुक्म फ़रमाया है सो (समझ लो कि) हो चुका (४७) ख़ुदा उस गुनाह को नहीं बख्शेगा कि किसी को उस का शरीक बनाया जाये और उस के सिवा और गुनाह जिस को चाहे मुआफ़ कर दे और जिस ने ख़ुदा का शरीक मुकर्रर किया उसने बड़ा बोहतान बान्धा (४८) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने तईं पाकीज़ा कहते हैं (नहीं बल्कि ख़ुदा ही जिस को चाहता है पाकीज़ा करता है और उन पर धागे बराबर भी जुल्म नहीं होगा (४९) देखो यह ख़ुदा पर कैसा झूट (तूफ़ान) बान्धते हैं और यही गुनाहे सरीह काफ़ी है (५०)—

रुकू—७

भला तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन को किताब से हिस्सा दिया गया है कि बुतों और शैतान को मानते हैं और क़ुफ़्फ़ार के बारे में कहते हैं कि यह लोग मोमिनों की निस्बत सीधे रहते हैं (५१) यही लोग हैं जिन पर ख़ुदा ने लानत की है और

आयत ५१ :—यहूदियों को हज़रत सल्हे अल्लाह अलेहा व सलम से मुखालिफ़त हुई तो मक्के के मुश्रिकों से मिल गये और उन की खातिर से बुतों की ताज़ीम की और कहा तुम्हारी राह बेहतर है मुस्लमानों

जिस पर खुदा लानत करे तो तुम उस का किसी को मददगार न पाओगे (५२) क्या उन के पास बादशाही का कुछ हिस्सा है (तो) लोगों को तिल के बराबर भी न देंगे (५३) जो खुदा ने अपने फ़ज़ल से लोगों को दे रखा है उस का हसद करते हैं तो हम ने इब्राहीम को किताब और दानाई अता फ़रमाई थी और सलतनते अज़ीम भी बख़्शी थी (५४) फिर लोगों में से किसी ने तो उस किताब को माना और कोई उस से रुका रहा तो इन के मानने वालों को दोज़ख़ की जलती हुई आग काफ़ी है (५५) जिन लोगों ने हमारी आयतों से कुफ़्र किया उन को हम अन्करीब आग में दाख़िल करेंगे जब उनकी खालें गल (और जल) जायेंगी तो हम और खालें बदल देंगे ताकि (हमेशा) अज़ाब का (मज़ा) चखते रहें बेशक खुदा ग़ालिब हिकमत वाला है (५६) और जो लोग ईमान लाये और अमले नेक करते रहे उन को हम बहिश्तों में दाखिल करेंगे जिन के नीचे नहरें बह रही हैं वह उन में हमेशा रहेंगे वहां उन के लिये पाक बीबियाँ हैं और उन को हम घने साये में दाख़िल करेंगे (५७) खुदा तुम को हुक्म देता है कि अमानत वालों की अमानतें उन के हवालें कर दिया करो और जब लोगों में फ़ैसला करने लगो तो इन्साफ़ से फैसला किया करो खुदा तुम्हें बहुत ख़ूब नसीहत करता है बेशक खुदा देखता और सुनता है (५८) मोमिनो खुदा और उसके रसूल की फ़रमाँ-बरदारी

से और यह सब हसद था कि नबूवत और रियासते दीन हमारे सिवा किसी और में क्यों हुई अल्लाह ताला इसी पर उनको इल्ज़ाम देता है इन सब आयतों में यही मज़मून है—

करो और जो तुम में से साहिबे हकूमत हैं उन की भी अगर किसी बात में तुम में इख़्तिलाफ़ वाक़ैय हो तो अगर ख़ुदा और रोज़े आख़िरत पर ईमान रखते हो तो उस में ख़ुदा और उसके रसूल (के हुक्म) की तरफ़ रजू करो यह बहुत अच्छी बात है और इस का मआल भी अच्छा है (५९) रुकू—८

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा तो यह करते हैं कि जो (किताब) तुम पर नाज़िल हुई और जो (किताबें तुम से पहले नाज़िल हुईं उन सब पर ईमान रखते हैं और चाहते यह हैं कि अपना मुक़दमा एक सरकश के पास ले जा कर फ़ैसला करायें हालांकि उन को हुक्म दिया गया था कि उस से ऐतक़ाद न रखें और शैतान तो (यह) चाहता है कि उन को बहका कर रस्ते से दूर डाल दे (६०) और जब उन से कहा जाता है कि जो हुक्म ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमाया है उसकी तरफ़ (रजू करो) और पैग़म्बर की तरफ़ आओ तो तुम मुनाफ़िक़ों को देखते हो कि तुम से ऐतराज़ करते और सके जाते हैं (६१) तो कैसी (नदामत) की बात है कि जब उन के आमाल की (शामत) से उन पर कोई मुसीबत वाक़ेय होती है तो तुम्हारे पास भागे आते हैं और क़समें खाते हैं कि वाल्लाह हमारा मक़सूद तो भलाई और म्वाफ़िक़त था (६२)* उन लोगों के

आयत ६२ :—मदीने में एक यहूदी और एक मुनाफ़िक़ में झगड़ा हुआ यहूदी ने कहा कि चलो मोहम्मद सलअम से फ़ैसला करायें, मुनाफ़िक़ ने कहा कि कआब बिन अशरफ़ के पास चलो यह शख़्स यहूद का सरदार

दिलों में जो जो कुछ है ख़ुदा उस को खूब जानता है तुम उन (की बातों) का कुछ ख़्याल न करो और उन्हें नसीहत करो उन से ऐसी बातें कहो जो उन के दिलों पर असर कर जायें (६३) और हम ने जो पैग़म्बर भेजा है, इस लिये भेजा है कि ख़ुदा के फ़रमान के मुताबिक़ उस का हुक्म माना जाये और यह लोग जब अपने हक़ में ज़ुल्म कर बैठते थे अगर तुम्हारे पास आते और ख़ुदा से बख़्शिश मांगते और रसूल (ख़ुदा) भी उन के लिये बाख़्शिश तलब करते तो ख़ुदा को मुआफ़ करने वाला (और) मेहरबान पाते (६४) तुम्हारे पर्वरदिगार की क़सम यह लोग जब तक अपने तनाज़ात में तुम्हें मुन्सिफ़ न बनायें और जो फ़ैसला

था, इस इख़्तिलाफ़ की वजह यह थी कि यहूदी हक़ पर था और जानता था कि हज़रत इस मुक़दमे को उसके हक़ में फ़ैसला कर देंगे तो वह हज़रत ही के पास जाने पर ज़ोर देता था, मुनाफ़िक़ जो ज़ाहिर में मुस्लमान और बातिन में काफ़िर था आप के पास जाना नहीं चाहता था आख़िर दोनों हज़रत सलअम के पास आये और हज़रत ने मुक़दमा यहूद के हक़ में फ़ैसला कर दिया, जब बाहर गये तो मुनाफ़िक़ ने कहा कि हज़रत उमर के पास चलो जो वह फ़ैसला कर दें वह मुझे मन्जूर है, यह हज़रत सलअम के हुक्म से मदीने में क़ज़ा करते थे, मुनाफ़िक़ ने जाना कि हम्मीयते इस्लाम करेंगे जब उन के आगे गये यहूदी ने कह दिया कि हज़रत सलअम के पास हम जा चुके हैं वह मुझ को सच्चा कर चुके हैं हज़रत उमर ने मुनाफ़िक़ की गर्दन मारी उस के वारिस हज़रत सलअम के पास दावाये ख़ून को आये और क़समें खाने लगे कि हम गये थे इस वास्ते कि शायद सुलह करा दें तब यह आयतें नाज़िल हुई—

तुम कर दो उस से अपने दिल में तंग न हो बल्कि उस को ख़ुशी से मान लें तब तक मोमिन नहीं होंगे (६५) और अगर हम उन्हें हुक्म देते कि अपने आप को क़त्ल कर डालो, या अपने घर छोड़ कर निकल जाओ तो उन में से थोड़े ही ऐसा करते और अगर यह उस नसीहत पर कारबन्द होते जो उन को की जाती है तो उन के हक़ में बेहतर और (दीन में) ज़्यादा साबित क़दमी का मूजिब होता (६६) और हम उन को अपने हाँ से अजरे अज़ीम भी अाता फरमाते (६७) और सीधा रस्ता भी दिखाते (६८) और जो लोग ख़ुदा और रसूल की इतायत करते हैं वह (क़यामत के रोज़) उन लोगों के साथ होंगे जिन पर ख़ुदा ने बड़ा फ़ज़्ल किया यानी अन्बिया और सद्दीक़ और शहीद और नेक लोग और उन लोगों की रफ़ाक़त बहुत ही खूब है (६९) यह ख़ुदा का फ़ज़्ल है और खुदा जानने वाला काफ़ी है (७०) रुकू—९

मोमिनो ! (ज़हाद के लिये) हथियार ले लिया करो फिर या तो जमायत २ हो कर निकला करो या सब इकट्ठे कूच किया करो (७१) और तुम में कोई ऐसा भी है कि (अमदन देर लगाता है फिर अगर तुम पर कोई मुसीबत पड़ जाती है तो कहता है कि ख़ुदा ने मुझ पर बड़ी मेहरबानी की कि मैं उन में मौजूद न था (७२) अगर ख़ुदा तुम पर फ़ज़्ल करे तो इस तरह से कि गोया तुम में उस में दोस्ती थी ही नहीं (अफ़सोस करता) है कि काश मैं भी उनके साथ होता तो मकसदे अज़ीम हासिल करता (७३) तो जो लोग आख़िरत (को खरीदते और उस) के बदले दुनियाँ

की ज़िन्दगी को बेचना चाहते हैं उन को चाहिये कि ख़ुदा की राह में जंग करें और जो शख़्स ख़ुदा की राह में जंग करे, फिर शहीद हो जाये, या ग़लबा पाये हम उस को बड़ा सवाब देंगे (७४) और तुम को क्या हुआ है कि ख़ुदा की राह में और उन बेबस मर्दों और औरतों और बच्चों की ख़ातिर नहीं लड़ते जो दुआयें किया करते हैं कि ऐ परवंदिगार हम को इस शहर से, जिस के रहने वाले ज़ालिम हैं निकाल कर कहीं और ले जा और अपनी तरफ़से किसी को हमारा हामी बना और अपनी हीतरफ़ सेकिसी को हमारा मददगार मुक़र्रर फ़रमा (७५) जो मोमिन हैं वह ख़ुदा लिये लड़ते हैं और जो काफ़िर हैं वह बुतों के लिये (लड़ते हैं) सो तुम शैतान के मददगारों से लड़ो (और डरो मत) क्योंकि शैतान का दाव बोदा होता है (७६) रुकू १०

भला तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनको (पहले यह) हुक्म दिया गया था कि अपने हाथों को (जगं से) रोके रहो और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहो फिर जब उन पर जहाद फ़र्ज़ कर दिया गया तो बाज़ लोग उन में से लोगों से यूं डरने लगे जैसे ख़ुदा से डरा करते हैं बल्कि इस से भी ज़्यादा और बुड़ बुड़ाने लगे कि ऐ ख़ुदा तू ने हम पर ज़हाद (जल्द) क्यों फ़र्ज़ कर दिया थोड़ी मुद्दत और हमें मोहलत क्यों न दी (ऐ पैग़म्बर उन से) कह दो कि दुनिया का फ़ायदा बहुत थोड़ा है और बहुत अच्छी चीज़ तो परहेज़गार के लिये (नजाते) आख़िरत है और तुम पर धागे बराबर भी ज़ुल्म नहीं किया जायेगा (७७) ऐ

जहाद से डरने वालो) तुम कहीं रहो मौत तो तुम्हें आ कर रहेगी, ख़्वाह बड़े २ महलों में रहो और उन लोगों को अगर कोई फ़ायदा पहुंचता है तो कहते हैं कि यह ख़ुदा की तरफ़ से है और अगर कोई गज़न्द पहुँचता है (तो ऐ मोहम्मद तुम से) कहते हैं कि यह (गज़न्द) आप की वजह से (हमें पहुँचा) है कह दो कि (रन्जो राहत) सब अल्लाह ही तरफ़ से है इन लोगों को क्या हो गया है कि बात भी नहीं समझ सकते (७८) (आदमज़ाद) तुम को जो फ़ायदा पहुँचे वह ख़ुदा की तरफ़ से है और जो नुक़सान पहुँचे वह तेरी ही (शामते आमाल) की वजह से है और (ऐ मोहम्मद) हम ने तुम को लोगों (की हिदायत) के लिये पैग़म्बर बना कर भेजा है और (इस बात का) खुदा ही गवाह काफ़ी है (७९) जो शख़्स रसूल की फ़रमांबरदारी करेगा तो बेशक उस ने ख़ुदा की फ़रमांबरदारी की और जो ना फ़रमानी करे तो ऐ पैग़म्बर तुम्हें हम ने उन का निगैहबान बना कर नहीं भेजा (८०) और यह लोग मूहं से तो कहते हैं कि (आप की) फ़रमांबरदारी (दिल से मन्जूर) है लेकिन जब तुम्हारे पास से चले जाते हैं तो उन में से बाज़ लोग रात को तुम्हारी बातों के ख़िलाफ़ मशवरे करते हैं और जो मशवरे यह करते हैं ख़ुदा उन को लिख लेता है तो उन का कुछ ख़्याल न करो और ख़ुदा पर भरोसा रखो और खुदा ही काफ़ी कार साज़ है (८१) भला यह कुरान में गौर क्यों नहीं करते अगर यह खुदा के सिवा किसी और का (कलाम) होता तो इस में बहुत सा) इख़्तलाफ़

पाते (८२) और जब उन के पास अम्न या खौफ़ की कोई खबर पहुँचती है तो उसे मशहूर कर देते हैं, और अगर उस को पैग़म्बर और सरदारों के पास पहुँचाते तो तैहक़ीक करने वाले उस की तैहक़ीक कर लेते और अगर तुम पर खुदा का फ़ज़ल और उस की मेहरबानी न होती तो चन्द अशखास के सिवा सब शैतान के पैरु हो जाते (८३) तो (ऐ मोहम्मद) तुम ख़ुदा की राह में लड़ो तुम अपने सिवा किसी के ज़िम्मेदार नहीं हो और मोमिनों को भी तरग़ीब दो क़रीब है कि खुदा कमफ़िरों की लड़ाई को बन्द कर दे और खुदा लड़ाई के ऐतबार से बहुत सख्त है और सज़ा के लिहाज़ से भी बहुत सख्त है (८४) जो शख्स नेक बात की सिफ़ारिश करे तो उस को इस (के सवाब) में से हिस्सा मिलेगा और जो बुरी बात की सिफ़ारिश करे तो उस को उस (के अज़ाब) में से हिस्सा मिलेगा (और) खुदा हर चीज़ पर कुदरत रखता है (८५) और जब तुम को कोई दुआ दे तो (जवाब में) तुम उस से बेहतर (कल्मे) से (उसे) दुआ दो या उन्हीं लफ़्ज़ों से दुआ दो बेशक ख़ुदा हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है (८६) ख़ुदा (वह माबूदे-बर-हक़ है कि) उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं वह क़यामत के दिन ज़रुर तुम सब को जमा करेगा और ख़ुदा से बढ़ कर बात का सच्चा कौन है (८७)—रुकू—११

आयत ८६ :—अरब का इस्लाम से पहले बाहमी बजाये सलाम अलैकम के हयाक अल्लाह कहेन का दस्तूर था लफ्ज सलाम में सलामती

तो क्या सबब है कि मुनाफ़िकों के बारे में तुम दो गिरोह हो रहे हो, हालांकि खुदा ने उनको उनके करतूतों के सबब औन्धा कर दिया है क्या तुम चाहते हो कि जिस शख्स को खुदाने गुमराह कर दिया है उसको रस्ते पर ले आओ और जिस शख्स को खुदा गुमराह कर दे तुम उसके लिये कभी भी रस्ता नहीं पाओगे (८८) वह तो यही चाहते हैं कि जिस तरह वह खुद काफ़िर हैं (उसी तरह) तुम भी काफ़िर हो कर (सब) बराबर हो जाओ तो जब तक वह खुदा की राह में वतन न छोड़ जायें उन में से किसी को दोस्त न बनाना अगर (तर्के वतन) को क़बूल न करें तो उनको पकड़लो और जहाँ पाओ क़त्ल करदो और उनमें से किसी को अपना रफ़ीक़ और मददगार न बनाओ (८९) जो लोग ऐसे लोगों से जा मिले हों जिन में और तुम में (सुलह) का अहद हो या उस हाल में कि उनके दिल तुम्हारे साथ या अपनी क़ौम के साथ लड़ने से रुक गये हों तुम्हारे पास आ जायें (तो अहतराज़ ज़रुर नहीं) और अगर खुदा चाहता तो उन को तुम पर ग़ालिब कर देता तो वह तुम से ज़रुर लड़ते फिर अगर वह तुम से (जंग करने से) किनारा कशी करें और

और आफ़ियते दारैन की भी दुआ है और नीज़ यह अल्लाह का भी नाम हैं और नीज़ इस में तस्लीम यानी फ़िरोतनी की तरफ़ भी इशारा है और मज़हबे इस्लाम की तरफ़ भी रम्ज़ है इस लिये इस जगह अस्सलाम अलैकम कहना क़रार पाया, मगर बेहतर तरह से जवाब देना व अलैकम अस्सलाम व रहमत अल्लाह व बरकाता कहना है वैसे अलैकम अस्सलाम भी कहा जाता है—

लड़ें नहीं और तुम्हारी तरफ़ सुलह का (पैग़ाम) भेजें तो खुदा ने तुम्हारे लिये उन पर (ज़बरदस्ती करने की) कोई सबील मुक़र्रर नहीं की (९०) कुछ और लोग ऐसे भी पाओगे जो यह चाहते हैं कि तुम से भी अम्न में रहें और अपनी क़ौम से भी अम्न में रहें लेकिन जब फ़ितना अंगेज़ी को बुलाये जायें तो उसमें औन्धे मूंह गिर पड़ें तो ऐसे लोग अगर तुम से (लड़ने से) कनारा कशी न करें और न तुम्हारी तरफ़ (पैग़ामे) सुलह भेजें और अपने हाथों को रोकें तो उनको पकड़ लो और जहां पाओ क़त्ल कर दो उन लोगों के मुक़ाबले में हम ने तुम्हारे लिये सनदे सरीह मुक़र्रर कर दी है (९१) रुकू १२

और किसी मोमिन को शायाने शाँ नहीं कि मोमिन को मार डाले मगर भूल कर और जो भूल कर भी मोमिन को मार डाले तो (एक तो) एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद कर दे और (दूसरे) मक़तूल के वारिसों को खूँ बहा दे, हाँ अगर वह मुआफ़ कर दे (तो उन को अख़्तियार है) अगर मक़तूल तुम्हारे दुश्मनों की जमायत में से हो और वह ख़ुद मोमिन हो तो सिर्फ़ एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करना चाहिये और अगर मक़तूल ऐसे लोगों में से हो जिन में और तुम में सुलह का अहद हो तो वारिसा-ने मक़तूल को खूं बहा देना और एक मुसलमान ग़ुलाम आज़ाद करना चाहिये और जिस को यह मैयस्सर न हो वह मुतवातिर दो महीने के रोज़े रक्खे यह (क़फ़ारा) ख़ुदा की तरफ़ से (क़बूले) तौबा (के लिये) है और ख़ुदा (सब कुछ)

जानता (और) बड़ी हिकमत वाला है (९२) और जो शख़्स मुसलमान को क़सदन मार डालेगा तो उसको सज़ा दोज़ख है जिस में वह हमेशा (जलता) रहेगा और खुदा उस पर ग़ज़ब नाक होगा और उस पर लानत करेगा और ऐसे शख़्स के लिये उसने बड़ा सख़्त) अज़ाब तैयार कर रखा है (९३) मोमिन जब तुम खुदा की राह में बाहर निकला करो तो तहक़ीक़ से काम लिया करो और जो शख़्स तुम से सलाम अलैक करे उससे यह न कहो कि तुम मोमिन नहीं हो और उन से तुम्हारी ग़रज़ यह हो कि दुनिया की ज़िन्दगी का फ़ायदा हासिल करो सो खुदा के पास बहुत से ग़नीमत के माल हैं तुम भी तो पहले ऐसे ही थे फिर खुदा ने तुम पर एहसान किया तो (आयन्दा) तहक़ीक़ कर लिया करो और जो अमल तुम करते हो खुदा को सब की खबर है (९४) जो मुसलमान (घरों में) बैठ रहते (और लड़ने से जी चुराते) हैं और कोई उज्र नहीं रखते वह और जो खुदा की राह में अपने माल और जान से लड़ते हैं वह दोनों बराबर नहीं हो सकते खुदा ने माल और जान से जहाद करने वालों को बैठ रहने वालों पर दर्जे में फ़ज़ीलत बख़्शी है और (गो) नेक वायदा सब से है लेकिन अजरे अज़ीम के लिहाज़ से खुदा ने जहाद करने वालों को बैठ रहने वालों पर कहीं फ़ज़ीलत बख़्शी है (९५ (यानी) खुदा की तरफ़ से दर्जात में और बख़्शिश

आयत ९२ ख़ूं बहा—मज़हबे हनफ़ी में मुसलमान के २७४०) रुपये हैं लगभग और देने आते हैं क़ातिल की बिरादरी को तीन बरस में—

में और रहमत में और खुदा बड़ा बख़्शने वाला और मेहरबान है (९६) रुकू—१३

जो लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म करते हैं जब फ़रिश्ते उन की जान क़ब्ज़ करने लगते हैं तो उन से पूछते हैं कि तुम किस हाल में थे वह कहते हैं कि मुल्क में हम आजिज़ व नातवाँ थे फ़रिश्ते कहते हैं कि क्या खुदा का मुल्क फ़राख नहीं था कि तुम उस में हिजरत कर जाते ऐसे लोगों का ठिकाना दोज़ख है और वह बुरी जगह है (९७) हाँ जो मर्द और औरतें और बच्चे बेबस हैं कि न तो कोई चारा कर सकते हैं और न रस्ता जानते हैं (९८) क़रीब है कि खुदा ऐसों को मुआफ़ करदे और खुदा मुआफ़ करने वाला (और) बख़्शने वाला है (९९) और जो शख्स खुदा की राह में घर वार छोड़ जाये वह ज़मीन में बहुत सी जगह और कुशाईश पायेगा और जो शख्स खुदा और उस के रसूल की तरफ़ हिजरत कर के घर से निकल जाये फिर उस को मौत आ पकड़े तो उस का सवाब खुदा के ज़िम्मे हो चुका और खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (१००) रुकू—१४

और जब तुम सफ़र को जाओ तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि नमाज़ को कम कर के पढ़ो वशर्ते कि तुम को ख़ौफ हो कि काफ़िर लोग तुम को ईज़ा देंगे बेशक काफ़िर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं (१०१) और (ऐ पैग़म्बर) जब तुम उन (मुजाहिदीन के

आयत १०१—सफ़र ख्वाह किसी ग़रज़ से हो उस में नमाज़ की क़सर करना यानी चार चार रकअतों की जगह दो दो रकअतें पढ़ना

लश्कर) में हो और उन को नमाज़ पढ़ाने लगो तो चाहिये कि उन की एक जमायत तुम्हारे साथ मुसल्लह हो कर खड़ी रहे जब वह सज्दा कर चुकें तो परे हो जायें फिर दूसरी जमायत जिसने नमाज़ नहीं पढी है (उन की जगह) आये और होशियार और मुसल्लह हो कर तुम्हारे साथ नमाज़ अदा करे काफ़िर इस घात में हैं कि तुम ज़रा अपने हथियारों और सामानों से गाफ़िल हो जाओ तो तुम पर यकबारगी हमला कर दें अगर तुम बारिश के सबब तकलीफ़ में हो या बीमार हो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि हथियार उतार रखो मगर होशियार जरुर रहना. खुदा ने काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है (१०२) फिर जब तुम नमाज़ तमाम कर चुको तो खड़े और बैठे और लेटे (हर हालत में) ख़ुदा को याद करो फिर जब ख़ौफ़ जाता रहे तो इस तरह से नमाज़ पढ़ो (जिस तरह नमाज़ अम्न की हालत में पढ़ते हो) बेशक नमाज़ का मोमिनों पर औक़ाते (मुक़र्रेरा) में अदा करना फ़र्ज़ है (१०३) और क़ुफ़्फ़ार का पीछा करने में सुस्ती न करना अगर तुम बे आराम होते हो तो जिस तरह तुम बे आराम होते हो उसी तरह वह भी बे आराम होते हैं और तुम ख़ुदा से ऐसी ऐसी उम्मीदें रखते हो जो वह नहीं रख सकते और ख़ुदा सब कुछ जानता (और) बड़ी हिकमत वाला है (१०४)—रुकू—१५—

जायज है, आयत से तो यह पाया जाता है कि जब कफ़ार से ईजा का ख़ौफ हो तब भी क़सर करना चाहिए—

(ऐ पैग़म्बर) हमने तुम पर सच्ची किताब नाज़िल की है ताकि खुदा की हिदायात के मुताबिक़ लोगों के मुक़दमात फ़ैसला करो और (देखो) दग़ाबाज़ों की हिमायत में कभी बहस न करना (१०५) और ख़ुदा से बख़्शिश मांगना, बेशक ख़ुदा बख़्शिश करने वाला मेहरबान है (१०६) *और जो लोग अपने हम जिन्सों की खयानत करते हैं उन की तरफ़ से बहस न करना क्योंकि खुदा खाईन और मुर्तकिबे जुर्म को दोस्त नहीं रखता (१०७) यह लोगों से तो छुपते हैं और खुदा से नहीं छुपते हालांकि जब वह रातों को ऐसी बातों के मशवरे किया करते हैं जिन को वह पसन्द नहीं करता तो खुदा उनके साथ हुआ करता है और खुदा उनके (तमाम) कामों पर अहाता किये हुए है (१०८) भला तुम लोग (दुनिया की ज़िन्दगी में तो उन की तरफ़ से बहस कर लेते हो क़यामत को उन की तरफ़ से खुदा के साथ कौन झगड़ेगा और कौन उन का वकील बनेगा (१०९) और जो शख्स कोई बुरा काम कर बैठे, या अपने हक़ में ज़ुल्म करले फिर खुदा से

---

*आयत १०७ :—एक अन्सारी थे उन की ज़िरेह एक शख्स तआमा बिन अबीरक़ ने चुरा ली, अन्सारी ने हज़रत से फ़रियाद की तआमा ने ज़िरेह किसी और के घर डलवा दी और अपने आदमियों के ज़रिये हज़रत से कहला भेजा कि तआमा बे गुनाह है ज़िरेह दूसरे शख्स ने चुराई है हज़रत को ग़ैब का इल्म तो था नहीं उन्हों ने उन को बरी कर दिया तब यह आयतें नाज़िल हुई कि दग़ाबाज़ों और खायनों के तरफ़दार न बनो और उनकी तरफ़ से बहस न करो और खुदा से मुआफ़ी मागो —

बख़्शिश मांगे तो ख़ुदा को बख़्शने वाला (और) मेहरबान पायेगा (११०) और जो कोई गुनाह करता है तो उस का वबाल उसी पर है और ख़ुदा जानने वाला (और) हिकमत वाला है (१११) और जो शख़्स कोई क़सूर या गुनाह तो ख़ुद करे और उससे किसी बेगुनाह को मुत्तहम करे तो उसने बोहतान और सरीह गुनाह का बोझ अपने सर पर रक्खा (११२)—रुकू –१६

और अगर ख़ुदा का फ़ज़ल और मेहरबानी न होती तो उनमें से एक जमायत तुम को बहकाने का क़सद कर ही चुकी थी और यह अपने सिवा (किसी को) बहका नहीं सकते और न तुम्हारा कुछ बिगाड़ सकते हैं और ख़ुदा ने तुम पर किताब और दानाई नाज़िल फ़रमाई है और तुम्हें वह बातें सिखाई हैं जो तुम जानते नहीं थे और तुम पर ख़ुदा का बड़ा फ़ज़ल है (११३) ❀उन लोगों को बहुत सी मशवरतें

. आयत ११२—यानी लोग ऐसे की हिमायत न करें और बेगुनाह पर तोहमत धरें इस वास्ते कि ख़ुदा जानता है और यही फ़रमाता है कि एक का गुनाह दूसरे पर नहीं—

आयत ११३ :—मुनाफ़िक लोग हज़रत के कान में बातें करते ताकि लोगों में अपना ऐतबार ठैरावें और मजलिस में बैठ कर आपस में कान में बातें करते किसी का ऐब किसी का गिला इस पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उन की मशवरत अकसर बे ख़बर है साफ़ बात को हाजत नहीं छुपाने की मगर इस में कुछ दग़ा मिली हैं और छुपावे तो ख़रात को ताकि लेने वाला शर्मिन्दा न हो या लड़ाईयों में सुलह कराने को इस लिये कि ग़ज़ब वाला जोश में सुलह नहीं मानता, अव्वल आपस में ठैहराये फिर उस को मनाये—

अच्छी नहीं, हाँ उस शख्स की मशवरत (अच्छी) हो सकती है जो ख़ैरात या नेक बात या लोगों में सुलह कराने को कहे और जो ऐसे काम ख़ुदा की ख़ुशनूदी हासिल करने के लिये करेगा तो हम उस को बड़ा सवाब देंगे (११४) और जो शख्स सीधा रस्ता मालूम होने के बाद पैग़म्बर की मुख़ालिफ़त करे और मोमिनों के रस्ते के सिवा और रस्ते पर चले तो जिधर वह चलता है हम उसे उधर ही चलने देंगे और (क़यामत के दिन) जहन्नुम में दाख़िल करेंगे और वह बुरी जगह है (११५)—रुकू १७—

ख़ुदा उस गुनाह को नहीं बख्शेगा कि किसी को उस का शरीक बनाया जाये और उसके सिवा (और गुनाह) जिस को चाहेगा बख्श देगा और जिस ने ख़ुदा के साथ शरीक बनाया वह रस्ते से दूर जा पड़ा (११६) यह जो ख़ुदा के सिवा परस्तिश करते हैं तो औरतों ही की ओर पुकारते हैं तो शैतान सरकश हो को (११७) जिस पर ख़ुदा ने लानत की है (जो ख़ुदा से) कहने लगा कि मैं तेरे बन्दों से (ग़ैर ख़ुदा की नज़र दिलवा कर माल का) एक मुक़र्रर हिस्सा ले लिया करूंगा (११८) और उन को गुमराह करता और उम्मीदें दिलाता रहूँगा और यह सिखाता रहूँगा कि जानवरों के कान चीरते रहें और यह भी कहता रहूँगा कि वह ख़ुदा को बनाई हुई सूरतों को बदलते रहें और जिस शख्स ने

आयत ११८—यानी तेरे बन्दे अपने माल में मेरा हिस्सा ठहरा सकेंगे जैसे दस्तूर हैं बुतों की न्याज़ निकालने का।

ख़ुदा को छोड़ कर शैतान को दोस्त बनाया वह सरीह नुक़सान में पड़ गया (११९) वह उन को वायदे देता है और उम्मीदें दिलाता है और जो कुछ शैतान उन्हें वायदे देता है वह धोखा ही धोखा है (१२०) ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नुम है और वह वहाँ से मुख़्लिसी नहीं पा सकेंगे (१२१) और जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे उन को हम बहिश्तों में दाखिल करेंगे जिन के नीचे नहरें जारी हैं, अबदुलाबाद उन में रहेंगे यह ख़ुदा का सच्चा वायदा है और ख़ुदा से ज़्यादा बात का सच्चा कौन हो सकता है (१२२) (नजात) न तो तुम्हारी आरज़ूओं पर है और न अहले किताब की आरज़ूओं पर, जो शख़्स बुरे अमल करेगा उसे उसी (तरह) का बदला दिया जायेगा और वह ख़ुदा के सिवा न किसी को हिमायती पायेगा और न मददगार (१२३)❀ और जो नेक काम करेगा, मर्द हो या औरत और वह साहिबे ईमान भी होगा तो ऐसे लोग बहिश्त में दाखिल होंगे और उन की तिल बराबर भी हक़ तल्फ़ी न की जायेगी (१२४) और उस शख़्स से किस का दीन अच्छा हो सकता है जिस ने हुक्मे ख़ुदा को क़बूल किया और वह नेकूकार भी है और इब्राहीम के दीन

आयत १२:—यहूदियों और नुसरानियों को यह गुमान था कि हम ही ख़ालिस बन्दे हैं कि गुनाहों में पकड़े नहीं जायेंगे हमारे पैग़म्बर हमारी हिमायत कर के हमें छुड़ा लेंगे और अहमक़ मुसलमान भी अपने दिल में यही समझते थे सो अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि जो कोई बुरा काम करेगा वैसी सजा पायेगा किसी की हिमायत काम न आयेगी—

का पैरु है जो यकसू (मुस्लमान) थे और ख़ुदा ने इब्राहीम को अपना दोस्त बनाया था (१२५) और आस्मान और ज़मीन में जो कुछ है सब कुछ ख़ुदा का ही है और ख़ुदा हर चीज़ पर अहाता किये हुऐ है (१२६) रुकू १८—

(ऐ पैग़म्बर) लोग तुम से (यतीम) औरतों के बारे में फ़तवा तलब करते हैं कह दो कि ख़ुदा तुम को उनके साथ (निकाह करने के) मामले में इजाज़त देता है और जो हुक्म इस किताब में पहले दिया गया है वह उन यतीम औरतों के बारे में है जिन को तुम उन का हक़ तो देते नहीं और ख़्वाहिश रखते हो कि उन के साथ निकाह कर लो और (नीज़) बेचारे बेकस बच्चों के बारे में है और यह (भी हुक्म देता है) कि यतीमों के बारे में इन्साफ़ पर क़ायम रहो और जो भलाई तुम करोगे ख़ुदा उस को जानता है (१२७) और अगर किसी औरत को अपने ख़ाविन्द की तरफ़ से ज़्यादती या बे रग़बती का अन्देशा हो तो मियां बीवी पर कुछ

आयत १२७ :—जिस लड़की का वाली न हो मगर चचा का बेटा अगर वह जाने कि मैं उस का हक़ अदा न कर सकूंगा तो ख़ुद आप उस को निकाह में न लावे किसी और का दे दे इस पर मुस्लमानों ने ऐसी औरतों को निकाह में लाना मौक़ूफ़ कर दिया फिर देखा कि बाज़ जगह लड़की के हक़ में बेहतर है कि अपना वाली ही निकाह में लावे वह उस की जो ख़ातिर करेगा ग़ैर न करेगा हज़रत से रुख़सत मांगी इस पर रुख़सत मिली और फ़रमाया कि वह जो किताब में मना फ़रमाया सो जब है कि उन का हक़ पूरा न दो और यतीम के हक़ में ताकीद थी कि अगर भलाई किया चाहो तो रुख़सत है।

गुनाह नहीं कि आपस में किसी क़रारदाद पर सुलह कर लें और सुलह खूब (चीज़) है और तबियतें तो बुख़्ल की तरफ़ माईल होती हैं और अगर तुम नेकूकारी और परहेज़गारी करोगे तो ख़ुदा तुम्हारे सब कामों से वाक़िफ़ है (१२८) और तुम ख्वाह कितना ही चाहो औरतों में हरगिज़ बराबरी न कर सकोगे तो ऐसा भी न करना कि एक ही तरफ़ ढल जाओ दूसरी को (ऐसी हालत में) छोड़ दो कि गोया अधर में लटक रही है और अगर आपस में म्वाफ़िक़त करलो और परहेज़गारी करो तो ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (१२९) और अगर मियां बीवी में म्वाफ़िक़त न हो सके (और) एक दूसरे से जुदा हो जायें तो ख़ुदा हर एक को अपनी दौलत से ग़नी कर देगा और ख़ुदा बड़ी कुसाईश वाला (और) हिकमत वाला है (१३०) और जो कुछ आस्मानों और जो कुछ ज़मीन में है सब ख़ुदा ही का है और जिन लोगों को तुम से पहले किताब दी गई थी उनको भी और (ऐ मोहम्मद) तुम को भी हम ने हुक्म ताकीदी किया है कि ख़ुदा से डरते रहो और अगर कुफ्र करोगे तो (समझ रखो कि) जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है सब ख़ुदा ही का है और ख़ुदा बे पर्वाह और सज़ावारे हम्दो सना है (१३१) और फिर सुन रखो कि जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है सब ख़ुदा ही का है और ख़ुदा ही कारसाज़ काफ़ी है (१३२) लोगो! अगर वह चाहे तो तुम को फ़ना कर दे और तुम्हारी जगह और लोगों को पैदा कर दे ख़ुदा इस बात पर क़ादिर है (१३३) जो

शख्स दुनिया (में अमलों) की सज़ा का तालिब हो तो ख़ुदा के पास दुनिया और आख़िरत (दोनों) के लिये अजर (मौजूद है और ख़ुदा सुनता और देखता है (१३४)—रुकू—१९

ऐ ईमान वालो ! इन्साफ़ पर क़ायम रहो और ख़ुदा के लिये सच्ची गवाही दो (इस में) तुम्हारा या तुम्हारे माँ बाप और रिश्तेदारों का नुक़सान ही हो अगर कोई अमीर है या फ़क़ीर तो ख़ुदा उन का ख़ैरख़्वाह है, तो तुम ख़्वाहिशे नफ़्स के पीछे चल कर अदल को न छोड़ देना अगर तुम पेचदार शहादत दोगें या (शहादत से) बचना चाहोगे तो (जान रखो) ख़ुदा तुम्हारे सब कामों से वाक़िफ़ है (१३५) मोमिनो ! ख़ुदा पर और उसके रसूल पर और जो किताब उस ने अपने पैग़म्बर (अख़िरुज़्ज़माँ) पर नाज़िल की है और जो किताबें इस से पहले नाज़िल की हैं सब पर ईमान लाओ और जो शख़्स ख़ुदा और उस के फ़रिश्तों और उस की किताबों और उस के पैग़म्बरों और रोज़े क़यामत से इन्कार करे वह रस्ते से भटक कर दूर जा पड़ा (१३६) जो लोग ईमान लाये फिर काफ़िर हो गये. ईमान लाये फिर काफ़िर होगये, फिर कुफ़्र में बढ़ते गये, उन को ख़ुदा न तो बख्शेगा न सीधा रस्ता दिखाएगा (१३७) (ऐ पैग़म्बर) मुनाफ़िक़ (यानी दो

आयत १३७—यानी अगर ज़ाहिर में मुस्लमान हुए और दिल से भटकते रहे और आख़िर को बे यक़ीन मरे तो काफ़िर के बराबर है उन को बख़्शिश नहीं और ज़ाहिर की मुस्लमानी वहाँ कुछ काम न आयेगी—

रखे लोगों) को बशारत सुना दो कि उन के लिये दुःख देने वाला अज़ाब तैयार है (१३८) जो मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त बनाते हैं, क्या यह उन के हाँ इज़्ज़त हासिल करना चाहते हैं, तो इज़्ज़त तो सब ख़ुदा ही की है (१३९) और ख़ुदा ने तुम (मोमिनों) पर अपनी किताब में यह (हुक्म) नाज़िल फ़रमाया है कि जब तुम (कहीं) सुनो कि ख़ुदा की आयतों से इन्कार हो रहा है और उन की हँसी उड़ाई जाती है तो जब तक वह लोग और बातें (न) करने लगें उन के पास मत बैठो वर्ना तुम भी उन्हीं जैसे हो जाओगे, कुछ शक नहीं कि ख़ुदा मुनाफ़िकों और काफ़िरों सब को दोज़ख में इकट्ठा करने वाला है (१४०) जो तुम को देखते रहते हैं, अगर ख़ुदा की तरफ़ से तुम को फ़तह मिले तो कहते हैं क्या हम तुम्हारे साथ न थे और अगर काफ़िरों को (फ़तह) नसीब हो तो (उन) से कहते हैं क्या हम तुम पर ग़ालिब नहीं थे और तुम को मुसलमानों (के हाथ) से बचाया नहीं, तो ख़ुदा तुम में क़यामत के दिन फ़ैसला करेगा और ख़ुदा काफ़िरों को मोमिनों पर हर्गिज़ ग़लबा नहीं देगा (१४१)—रुकू २०

मुनाफ़िक, (उन बातों से अपने नज़दीक) ख़ुदा को धोखा

आयत १४० —जो शख्स एक मजलिस में अपने दीन पर ताना और ऐब सुने और फिर उन ही में बैठा सुना करे अगरचे आप न कहे, मुनाफ़िक है—

आयत १४१:—हर शख्स जो ऐसा न हो कि काफ़िरों और मुसल-मानों से अपनी ग़रज़ के लिये दोस्ती रखे वह मुनाफ़िक है—

देते हैं (यह उस को क्या धोखा देंगे) वह उन्हीं को धोखे में डालने वाला है, और जब यह नमाज़ को खड़े होते हैं तो सुस्त और काहिल हो कर (सिर्फ़) लोगों के दिखाने को, मगर ख़ुदा की याद ही नहीं करते, मगर बहुत कम (१४२) बीच में पड़े लटक रहे हैं न उन की तरफ़ (होते हैं) न इन की तरफ़ और जिस को ख़ुदा भटकाऐ तुम उन के लिये कभी भी रस्ता न पाओगे (१४३) ऐ एहले ईमान ! मोमिनों के सिवा काफ़िरों को दोस्त न बनाओ क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर ख़ुदा का सरीह इल्ज़ाम लो (१४४) कुछ शक नहीं कि मुनाफ़िक लोग दोज़ख़ के सब से नीचे दर्जे में होंगे और तुम उनका किसी को मददगार न पाओगे (१४५) हाँ जिन्हों ने तौबा की और अपनी हालत को दुरुस्त किया और ख़ुदा (की रस्सी) को मज़बूत पकड़ा और ख़ास ख़ुदा के फ़रमांबरदार हो गये तो ऐसे लोग मोमिनों के ज़ुमरे में होंगे और ख़ुदा अन्क़रीब मोमिनों को बड़ा सवाब देगा (१४६) अगर तुम (ख़ुदा के) शुक्रगुज़ार रहो और (उस पर) ईमान ले आओ तो ख़ुदा तुम को अज़ाब देकर क्या करेगा और ख़ुदा तो क़दर शिनास और दाना है (१४७)

—छटा पारा (लायुहिब्बुल्लाह); सूर-ऐ-निसा—

खुदा इस बात को पसन्द नहीं करता कि कोई किसी को एलानिया बुरा कहे मगर वह जो मज़लूम हो और खुदा (सब कुछ) सुनता (और) जानता है (१४८) अगर तुम लोग भलाई खुल्लम खुल्ला करोगे, या छुपा कर, या बुराई से दर गुज़र करोगे तो खुदा भी मुआफ़ करने वाला (और साहिबे क़ुदरत है (१४९) जो लोग खुदा से और उसके पैग़म्बरों से कुफ़्र करते हैं और खुदा और उसके पैग़म्बरों में फ़र्क़ करना चाहते हैं और कहते हैं कि हम बाज़ को मानते हैं और बाज़ को नहीं मानते और ईमान और कुफ़्र के बीच में एक राह निकालनी चाहते हैं (१५०) वह बिला इशतबाह काफ़िर हैं और काफ़िरों के लिये हम ने ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है (१५१) और जो लोग खुदा और उस के पैग़म्बरों पर ईमान लाये और उन में से किसी में फ़र्क़ नहीं किया (यानी सब को माना) ऐसे लोगों को वह अन्क़रीब उन (की नेकियों) के सिले अता फरमायेगा और खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (१५२)—रुकू २१—

(ऐ मोहम्मद) अहले किताब तुम से दरख्वास्तें करते हैं कि तुम उन पर एक (लिखी हुई) किताब आस्मान से उतार लाओ तो यह मूसा से इस से भी बड़ी बड़ी दरख्वास्तें कर चुके हैं (उन से) कहते थे हमें खुदा कोज़ाहिर (यानी आंखों से) दिखाओ, सो

उन के गुनाह की वजह से उन को बिजली ने आ पकड़ा फिर खुली निशानियाँ आई पीछे बछड़े को (माबूद) बना बैठे तो इस से भी हम ने दर गुज़र की और मूसा को सरीह ग़लबा दिया (१५३) और उन से एहद लेने को हम ने उन को कोहे तूर पर उठा खड़ा किया और उन्हें हुक्म दिया शहर के दरवाज़े में (दाख़िल होना) तो सज्दा करते हुऐ दाख़िल होना और यह भी हुक्म दिया कि हफ़्ते के दिन (मछलियाँ पकड़ने) में तजावुज़ (यानी हुक्म के खिलाफ़) न करना ग़रज़ हम ने उनसे मज़बूत एहद लिया (१५४) लेकिन उन्हों ने एहद को तोड़ डाला तो उनके अहद तोड़ देने और ख़ुदा की आयतों से कुफ्र करने और अम्बिया को नाहक़ मार डालने और यह कहने के सबब कि हमारे दिलों पर पर्दे पड़े हुऐ हैं (ख़ुदा ने) उन को मर्दूद कर दिया और उन

आयत १५३:—यहाँ से ज़िक्र यहूदियों का है, कई सरदार यहूदियों के पैग़म्बर के पास आये और कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो एक किताब आस्मान से लाओ जैसे मूसा पर तौरात आई थी इस पर अगली आयत उतरी इस बिजली से सब मर गये फिर मूसा की दुआ से उन्हें ज़िन्दा किया—

आयत १५४:—यहूदियों को हुक्म था कि हफ़्ते के दिन शिकार मछली का न करें, सो इत्तिफ़ाक ऐसा होता कि सब दिनों से ज़्यादा हफ़्ते के दिन मछलियाँ दरिया से बहुत नज़र आतीं यहूदियों ने दरिया के पास हौज़ बनाये जब हफ़्ते के दिन मछलियाँ हौज़ में चली आतीं तो बन्द कर रखते फिर दूसरे दिन शिकार करते—यह हाल उनके फ़रेब का है और हुक्म से बाहर जाना हफ़्ते के दिन—

के दिलों पर पर्दे नहीं हैं) बल्कि उन के कुफ्र के सबब खुदा ने उन पर मोहर कर दी है तो यह कम ही ईमान लाते हैं (१५५) और उन के कुफ्र के सबब और मरियम पर एक बोहताने अज़ीम बान्धने के सबब (१५६) और यह कहने के सबब कि हम ने मरियम के बेटे ईसा मसीह को जो खुदा के पैग़म्बर (कहलाते) थे क़त्ल कर दिया है (ख़ुदा ने उन को मलाऊन कर दिया) और उन्होंने ईसा का क़त्ल नहीं किया और न उन्हें सूली पर चढ़ाया बल्कि उन को उन की सी सूरत मालूम हुई और जो लोग उन के बारे में इख़्तिलाफ़ करते हैं वह उन के हाल से शक में पड़े हुए हैं और पैरवीऐ जिन के सिवा उन को इस का मुतलक़ इल्म नहीं है और उन्होंने ईसा को यक़ीनन क़त्ल नहीं किया (१५७) बल्कि ख़ुदा ने उन को अपनी तरफ़ उठा लिया और ख़ुदा ग़ालिब (और) हिकमत वाला है (१५८) और कोई अहले

आयत १५७:—यहूदी कहते थे कि हमने हज़रत ईसा को मार डाला सो वह झूठे हैं, ख़ुदा तआला ने एक सूरत यहूदियों को बना दी उसी सूरत को उन्होंने सूली पर चढ़ा दिया। ईसाई कहते हैं कि वह नहीं मरा वह ज़िन्दा है बाज़ कहते हैं कि मरा था पर वह तीन रोज़ में ज़िन्दा होकर आस्मान में चले गये बाज़ कहते हैं बदन को मारा और रूह उन की ख़ुदा के पास चली गई हर तरह यह बात ठीक साबित नहीं होती ख़ुदा ने ख़बर दी कि सूरत को मारा था उस वक़्त वहाँ न यहूदी थे न नसारा—

आयत १५८:—हज़रत ईसा अभी ज़िंदा हैं जब यहूद में दज्जाल पैदा होगा तब इस जहान में आ कर उस को मारेंगे और यहूद व नसारा सब उन पर ईमान लावेंगे कि वह मरे न थे—

किताब नहीं होगा मगर उन की मौत से पहले उन पर ईमान ले आयेगा और वह क़यामत के दिन उन पर गवाह होंगे (१५९) तो हम ने यहूदियों के ज़ुल्मों के सबब (बहुत सी) पाकीजा चीजें जो उन को हलाल थीं उन पर हराम कर दीं और इस सबब से भी कि वह अक्सर ख़ुदा के रस्ते से (लोगों को) रोकते थे (१६०) और इस सबब से भी कि बावजूद मना किये जाने के सूद लेते थे और इस सबब से भी कि लोगों का माल नाहक़ खाते थे और उन में से जो काफ़िर हैं उन के लिये हम ने दर्द देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है (१६१) मगर जो लोग इन में से इल्म में पक्के हैं और जो मोमिन हैं वह इस (किताब) पर जो तुम पर नाज़िल हुई और जो (किताबें) तुम से पहले नाज़िल हुईं सब पर ईमान रखते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं और ज़कात देते हैं और रोज़े आख़िरत को मानते हैं (१६२)—रुकू २२

उन को हम अन्क़रीब अजरे अज़ीम देंगे (ऐ मोहम्मद) हम ने तुम्हारी तरफ़ उसी तरह वही भेजी जिस तरह नूह और उन से पिछले पैग़म्बरों की तरफ़ भेजी थी और इब्राहीम और इसहाक़ और याकूब और औलादे याकूब और ईसा और अय्यूब और यूनिस और हसन और सुलैमान की तरफ़ भी हमने वही भेजी थी और दाऊद को हमने ज़बूर भी इनायत की थी (१६३) और बहुत से पैग़म्बर हैं जिन के हालात हम तुम से पेशतर बयान कर चुके हैं और बहुत से पैग़म्बर हैं जिन के हालात तुम से बयान नहीं किये और मूसा से तो ख़ुदा ने बातें भी कीं (१६४)

(सब पैग़म्बरों को (ख़ुदा ने) खुश ख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला (बना कर भेजा था) ताकि पैग़म्बरों के आने के बाद लोगों को ख़ुदा पर इल्ज़ाम का मौक़ा न रहे और ख़ुदा ग़ालिब हिकमत वाला है (१६५) लेकिन (ख़ुदा ने) जो (किताब) तुम पर नाज़िल की है उस की निस्बत ख़ुदा गवाही देता है कि उस ने अपने इल्म से नाज़िल की है और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं और गवाह तो ख़ुदा ही काफ़ी है (१६६) जिन लोगों ने कुफ़्र किया और (लोगों को) ख़ुदा के रस्ते से रोका वह रस्ते से भटक कर दूर जा पड़े (१६७) जो लोग काफ़िर हुये और ज़ुल्म करते रहे ख़ुदा उन को बख़्शने वाला नहीं और न उन्हें रस्ता ही दिखायेगा (१६८) दोज़ख़ का रस्ता जिस पर वह हमेशा (चलते) रहेंगे पौर यह बात ख़ुदा को आसान है (१६९) लोगो ख़ुदा के पैग़म्बर तुम्हारे पास तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से हक़ बात ले कर आये हैं तो (उन पर) ईमान लाओ (यही तुम्हारे हक़ में बेहतर हैं और अगर कुफ़्र करोगे तो जान रखो कि जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है सब ख़ुदा ही का है और ख़ुदा सब कुछ जानने वाला (और) हिकमत वाला है (१७०) ऐ अहले किताब अपने दीन की बात में हद से न बढ़ो और ख़ुदा के बारे में हक़ के सिवा कुछ न कहो, मसीह (यानी) मरियम के बेटे ईसा (न ख़ुदा थे न ख़ुदा के बेटे बल्कि) ख़ुदा के रसूल और उस का कलमा (बशारत) थे जो उस ने मरियम की तरफ़ भेजा था और उस की तरफ़ से एक रुह थे

तो ख़ुदा और उस के रसूलों पर ईमान लाओ और (यह) न कहो कि (ख़ुदा) तीन हैं (इस ऐतक़ाद से) बाज़ आओ कि यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है ख़ुदा ही माबूदे अहद है और इस से पाक है कि उस के औलाद हो जो कुछ आसमानों में और जो कुछ जमीन में है सब उसी का है और ख़ुदा ही कारसाज़ काफ़ी है (१७१)—रुकू २३

मसीह इस बात से आर नहीं रखते कि ख़ुदा के बन्दे हों और न मुक़र्रब फ़रिश्ते (आर रखते है) और जो शख्स ख़दा का बन्दा होने को मूजिबे आर समझे और सरकशी करे तो ख़ुदा सब को अपने पास जमा कर लेगा (१७२) तो जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे वह उन को उन का पूरा बदला देगा और फ़ज़ल से कुछ ज़्यादा भी इनायत करेगा और जिन्होंने (बन्दा होने से) आर इन्कार और तकब्बुर किया उनको वह तकलीफ़ देने वाला अज़ाब देगा और यह लोग ख़ुदा के सिवा अपना हामी और मददगार न पायेंगे (१७३) लोगो तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास दलील (रोशन) आ चुकी है और हमने (कुफ़्र और ज़लालत का अन्धेरा दूर करने को) तुम्हारी तरफ़ चमकता हुआ नूर भेज दिया है (१७४) पस जो लोग ख़ुदा

आयत १७१:—यह खिताब फिर उन्हीं की तरफ़ है वह कहते हैं कि ख़ुदा तीन हैं एक ख़ुदा, दूसरे ईसा तीसरी मरियम यह इन तीनों को ख़ुदा कहते हैं सो ख़ुदा फ़रमाता है कि इस बात से बाज़ आओ और तौबा करो और लाज़िम रहे कि दीन की बात में मुबालग़ा न करे अगर किसी शख्स से ऐतक़ाद हो तो उस की तारीफ़ में हद से न बढ़े—

पर ईमान लाये और उस (के दीन को रस्सी) को मज़बूत पकड़े रहे उन को वह अपनी रहमत और फ़ज़ल (के बहिश्तों) में दाख़िल करेगा और अपनी तरफ़ (पहुँचने का) सीधा रस्ता दिखायेगा (१७५) (ऐ पैग़म्बर) लोग तुम से (कलाला के बारे में) हुक्मे (ख़ुदा) दरियाफ़त करते हैं कह दो कि ख़ुदा कलाला के बारे में यह हुक्म देता है कि अगर कोई ऐसा मर्द मर जाये जिस के औलाद न हो (और न माँ बाप) और उस के बहन हो तो उस को भाई के तर्के में से आधा हिस्सा मिलेगा और अगर बहन मर जाये और उसके औलाद न हो तो उस के तमाम माल का वारिस भाई होगा और (मरने वाले भाई की) दो बहनें हों तो दोनों को भाई के तर्के में से दो तिहाई और अगर भाई और बहन यानि मर्द और औरतें मिले जुले वारिस हों तो मर्द का हिस्सा औरतों के हिस्से के बराबर है (यह ऐहकाम) ख़ुदा तुम से इस लिये बयान फ़रमाता है कि भटकते न फिरो और ख़ुदा हर चीज़ से वाक़िफ़ है (१७६)

आयत १७६:—कलाला उसे कहते हैं जिस का बेटा और बाप न हो कि असल वारिस यही हैं तो उस वक्त में उस के भाई बहिन को बेटा बेटी का हुक्म है और अगर सगे न हों तो यही हुक्म सौतेलों का है एक बहन हो तो आधा दो हों तो तिहाई उस माल से जो छोड़ मरा और अगर भाई बहन हों तो मर्द को हिस्सा दोहरा और औरत को इकहरा और जो निरे भाई हों तो उनको फ़रमाया कि वह बहन के माल के वारिस हों यानी हिस्सा मौईयन नहीं दो हिस्से हैं अगर बेटी हो और बहन का हिस्सा बेटी को—

(५)-सूर-ऐ मायदा-

यह मदीने में उतरी इस में १२० आयतें और १६ रुकू हैं

ऐ ईमान वालो ! अपने इक़रारों को पूरा करो तुम्हारे लिये चार पाँच जानवर (जो चरने वाले हैं) हलाल कर दिये गए हैं, बजुज़ उन के जो तुम्हें पढ़ कर सुनाये जाते हैं मगर एहराम (हज) में शिकार को हलाल न जानना, ख़ुदा जैसा चाहता है हुक्म देता है (१) मोमिनो ! ख़ुदा के नाम की चीजों की बे हुरमती न करना और न अदब के महीने की और न कुर्बानी के जानवरों की और न उन जानवरों की जो ख़ुदा की नज्र कर दिये गए हों और जिन के गले में पट्टे बन्धे हों लोगों की जो इज़्ज़त के घर (यानी बैतुल्लाह) को जा रहे हों और अपने पर्वरदिगार के फ़ज़ल और उस की खुशनूदी के तलबगार हों और जब एहराम उतार दो तो (फिर अख्तियार है कि) शिकार करो और लोगों की दुश्मनी इस वजह से कि उन्होंने इज़्ज़त वाली मसजिद से रोका था, तुम्हें इस बात पर आमादा न कर के तुम उन पर ज़्यादती करने लगे और (देखो) नेकी और परहेज़गारी के कामों में एक दूसरे की मदद किया करो और गुनाह और ज़ुल्म की बातों में मदद न किया करो और ख़ुदा से डरते रहो कुछ शक नहीं कि ख़ुदा का अज़ाब सख्त है (२) तुम पर

आयत २:—रिवायत है कि मतम कुन्दी जहालत और बेबाकी और नादानी में अरब में मशहूर था वह आँ हज़रत के पास आया और कहा कि ऐ मोहम्मद साथ किस चीज़ के बुलाता है तू आदमियों को, आँ

मरा हुआ जानवर और (बहता) लहू और सूर का गोश्त और जिस चीज़ पर ख़ुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाये और जो जानवर गला घुट कर मर जाये और जो चोट लग कर मर जाये और जो गिर कर मर जाये और जो सींग लग कर मर जाये यह सब हराम हैं और वह जानवर भी जिस को दरिन्दे फाड़ खायें मगर जिस को तुम (मरने से पहले) ज़बहा कर लो और वह जानवर भी जो थान पर ज़बहा किया जाये और यह भी कि पासों से किस्मत मालूम करो, यह सब गुनाह के काम हैं, आज काफ़िर तुम्हारे दीन से ना उम्मीद हो गये हैं उन से मत डरो, और मुझ ही से डरते रहो और आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और अपनी नैयमत तुम पर

हज़रत ने फ़रमाया कि साथ इस के कि ख़ुदा को एक जानें और मुझ को पैग़म्बर पहचानें और नमाज़ अदा करें और ज़कात माल की देवें, मतम कुन्दी ने कहा ख़ूब फ़रमाया तुम ने लेकिन मेरे उमरा व सरदार हैं कि बग़ैर मशवरत के उन की मैं कुछ काम नहीं करता मैं उन से पूछूँ जो वह पसन्द करें दीन तेरा तो क़बूल करूँ मैं और आं हज़रत ने आगे इस के ख़बर दी थी कि आज एक शख़्स आवेगा जो शैतान की ज़बान से बातें करेगा काफ़िर आवेगा और झूठा और दग़ाबाज़ हो कर जावेगा, फिर मतम कुन्दी बाहर आया ऊन्ट सदके के और जो कुछ पाया मवाशी से सब हाँक ले गया जिस वक्त रसूल मुत्तवज्जोह हुए उमरे को मतम कुन्दी को मुस्लमानों ने देखा कि गले में उन्हीं ऊन्टों के पट्टे पड़े डोल कर कुर्बानी के लिये काबे को ले चला था सहाबियों ने चाहा कि ऊन्टों को छीन लें आं हज़रत ने फ़रमाया कि उसने पट्टे गले में डाले हैं इस लिए उन्हें लेना लायक़ नहीं है इस पर यह आयत नाज़िल हुई —

पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया, हाँ जो शख़्स भूख में नाचार हो जाये (बशर्ते कि) गुनाह की तरफ़ माईल न हो तो ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (३) तुम से पूछते हैं कि कौन कौन सी चीज़ें उन के लिए हलाल हैं (उन से) कह दो कि सब चीज़ें तुम को हलाल हैं और वह (शिकार) भी हलाल है जो तुम्हारे लिये इन शिकारी जानवरों ने पकड़ा हो जिन को तुम ने सधा रखा हो और जिस (तरीक़) से ख़ुदा ने तुम्हें (शिकार करना) सिखाया है (उस तरीक़ से) तुम ने उन को सिखाया हो तो जो शिकार तुम्हारे लिए पकड़ रखें उस को खा लिया करो और (शिकारी जानवरों के छोड़ते वक़्त) ख़ुदा का नाम लिया करो और ख़ुदा से डरते रहो बेशक ख़ुदा जल्द हिसाब लेने वाला है (४) आज तुम्हारे लिये सब पाकीज़ा चीज़ें हलाल कर दी गईं और अहले किताब का खाना भी तुम को हलाल है और तुम्हारा खाना उनको हलाल है और पाक दामन मोमिन औरतें और पाकदामन अहले किताब औरतें भी (हलाल हैं) जब कि उन का मेहर दे दो और उन से इफ़्फ़त क़ायम रखना मक़सूद हो न खुली बदकारी करनी और न छुपी दोस्ती करनी और जो शख़्स ईमान से मुन्किर हुआ उस के अमल ज़ाया हो गये और वह आख़िरत में नुक़सान पाने वालों में होगा (५)—रुकू १

मोमिनो ! जब तुम नमाज़ पढ़ने का क़सद किया करो तो मूंह और कोहनियों तक हाथ धो लिया करो और सर का मसाह

कर लिया करो और टखनों तक पाँव (धो लिया करो) और अगर नहाने की हाजत हो तो (नहा कर) पाक हो जाया करो और अगर बीमार हो या सफ़र में हो या कोई तुम में से बैतूल ख़ला से हो कर आया हो, या औरतों से हमबिस्तर हुए हो और तुम्हें पानी न मिल सके तो पाक मिट्टी लो और उस से मूँह और हाथों का मसाह (यानी तैयम्मुम) कर लो ख़ुदा तुम पर किसी तरह की तंगी नहीं करनी चाहता बल्कि यह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और अपनी नैयमत तुम पर पूरी करे ता कि तुम शुक्र करो (६) और खुदा ने जो तुम पर एहसान किये हैं उन को याद करो और उस अहद को भी जिस का तुम से क़ौल लिया था (यानी) जब तुम ने कहा था कि हम ने (खुदा का हुक्म) सुन लिया और क़बूल किया और खुदा से डरो कुछ शक नहीं कि खुदा दिलों की बातों (तक) से वाक़िफ़ है (७) ऐ ईमान वालो खुदा के लिये इन्साफ़ की गवाही देने के लिये खड़े हो जाया करो और लोगों की दुश्मनी

आयत ७: -अल्लाह तआला एहले किताब को याद दिलाया करता है कि मेरे अहद पर क़ायम रहो वह अहद यह है कि जब लोग मुसलमान होते तो हज़रत से बैयत करते यानी हाथ पकड़ कर क़ौल देते बहुत चीज़ें करने पर पाञ्च नमाज़ और रोज़ा रमज़ान का और ज़कात और हज और ख़ैर ख्वाही हर मुसलमान की और बहुत चीज़ें छोड़ने पर जैसे ख़ून ज़ना और चोरी और तोहमत लगानी, बेगुनाह पर और सरदार से मुख़ालिफ़त करनी और इसी अहद पर फ़रमाया कि क़ायम रहो—

तुम को इस बात पर आमादा न करे कि इन्साफ़ (छोड़ो) इन्साफ़ किया करो कि यही परहेज़गारी की बात है और ख़ुदा से डरते रहो कुछ शक नहीं कि ख़ुदा तुम्हारे सब आमाल से ख़बरदार है (८) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे उन से ख़ुदा ने वायदा फ़रमाया है कि उन के लिये बख़्शिश और अजरे अज़ीम है (९) और जिन्होंने ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया वह जहन्नुमी हैं (१०) ऐ ईमान वालो ! ख़ुदा ने जो तुम पर एहसान किया है उस को याद करो, जब एक जमायत ने इरादा किया कि तुम पर दस्त दराज़ी करे तो उस ने उन के हाथ रोक दिये और ख़ुदा से डरते रहो और मोमिनों को ख़ुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए (११)—

रुकू--२

और ख़ुदा ने बनी इसराईल से अहद लिया और उन में हम ने १२ सरदार मुक़र्रर किये, फिर ख़ुदा ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, अगर तुम नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहोगे और मेरे पैग़म्बरों पर ईमान लाओगे और उन को मदद करोगे और ख़ुदा को क़र्ज़ हसना दोगे तो मैं तुम से तुम्हारे

आयत ११:—इस में कई मामलों की तरफ़ इशारा है एक यहूदी ने चाहा कि अपने कोठे पर से आप के ऊपर पत्थर गिरा दे अल्लाह तआला ने उस का हाथ ख़ुश्क कर दिया, एक दफ़ा मुस्लीमा क़ज़ाब के एक साथी ने एक मौका पा कर आप को सदमा पहुँचाना चाहा अल्लाह तआला ने उस का हाथ सख़्त कर दिया—.

गुनाह दूर कर दूंगा और तुम को बहिश्तों में दाखिल करूंगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, फिर जिसने इस के बाद तुम में से कुफ्र किया वह सीधे रस्ते से भटक गया (१२) तो उन लोगों के अहद तोड़ देने के सबब हम ने उन पर लानत की और उन के दिलों को सख्त कर दिया यह लोग कलमात (किताब) को अपने मक़ामात से बदल देते हैं और जिन बातों का उन को नसीहत की गई थी उन का भी एक हिस्सा फ़रामोश कर बैठे और थोड़े आदमियों के सिवा हमेशा तुम उन की (एक न एक) ख़यानत की ख़बर पाते रहते हो तो उन की ख़तायें मुआफ़ कर दो और (उन से) दर गुज़र करो कि ख़ुदा एहसान करने वालों को दोस्त रखता है (१३) और जो लोग (अपने तईं) कहते हैं कि हम नसारा हैं हम ने उन से भी अहद लिया था मगर उन्हों ने भी उस नसीहत का जो उन को की गई थी एक हिस्सा फ़रामोश कर दिया तो हमने उन की बाहम क़यादत के लिये दुशमनी और कीना डाल दिया और जो कुछ वह करते रहे ख़ुदा अन्क़रीब उन को उस से आगाह करेगा (१४) ऐ अहले किताब तुम्हारे पास हमारे पैग़म्बर (आख़िरु ज़्ज़माँ) आ गये हैं कि जो कुछ तुम किताबे (इलाही) में से छुपाते हो वह उस में से बहुत कुछ तुम्हें खोल खोल कर बता देते हैं और तुम्हारे बहुत से क़सूर मुआफ़ कर देते हैं बेशक तुम्हारे पास ख़ुदा की तरफ़ से नूर और रोशन किताब आ चुकी है (१५) जिस से

आयत १५:—यानी तुम्हारे पास हमारा रसूल आ चुका है जो तुम पर उन बातों को ज़ाहिर करता है जिन को तुम छुपाया करते थे—

ख़ुदा अपनी रज़ा पर चलने वालों को नजात के रस्ते दिखाता है और अपने हुक्म से अन्धेरे में से निकाल कर रोशनी की तरफ़ ले जाता और उन को सीधे रस्ते पर चलाता है (१६) जो लोग इस बात के क़ाईल हैं कि ईसा बिन मरियम ख़ुदा हैं वह बेशक काफ़िर हैं, उन से कह दो कि अगर ख़ुदा ईसा बिन मरियम' और उन की वालिदा को और जितने लोग ज़मीन में हैं, सब को हलाक करना चाहे तो उस के आगे किस की पेश चल सकती है और आस्मान और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों में है सब पर ख़ुदा ही की बादशाही है वह जो चाहता है पैदा करता है और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (१७) और यहूद और नसारा कहते हैं कि हम ख़ुदा के बेटे हैं, उस के प्यारे हैं, कहो कि फिर वह तुम्हारी बद आमालियों के सबब तुम्हें अज़ाब क्यों देता हैं, नहां, बल्कि तुम उस की मख़्लूक़ात में (दूसरों की तरह के) इन्सान ही वह जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अज़ाब दे और आस्मान और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों में है सब पर ख़ुदा ही की हकूमत है और (सब को) उसी की तरफ़ लौट कर जाना है (१८) ऐ अहले किताब पैग़म्बरों के आने का सिलसिला जो एक अर्से तक मुन्क़ता रहा तो अब तुम्हारे पास हमारे पैगम्बर आ गये हैं जो तुम से (हमारे एहकाम) बयान करते हैं ता कि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई ख़ुशख़बरी या डर सुनाने वाला नहीं आया सो अब तुम्हारे पास ख़ुशख़बरी और डर सुनाने वाले आ गये हैं और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (१९) रुकू—३

और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि भाईयो खुदा ने तुम पर जो एहसान किये हैं उन को याद करो कि उसने तुम में पैग़म्बर पैदा किये और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम को इतना कुछ इनायत किया कि अहले आलम में से किसी को नहीं दिया (२०) तो भाईयो ! तुम अरजे मुक़द्दस (यानी मुल्क शाम) में जिसे खुदा ने तुम्हारे लिये लिख रखा है चल दाखिल हो और (देखना मुकाबले के वक्त) पीठ न फेर देना वर्ना नुक़सान में पड़ जाओगे (२१) वह कहने लगे कि मूसा वहाँ तो बड़े ज़बरदस्त लोग (रहते) हैं और जब तक वह उस सर ज़मीन से निकल न जायें हम वहां जा नहीं सकते हाँ अगर वह वहाँ से निकल जायें तो हम जा दाखिल होंगे (२२) जो लोग (खुदा से) डरते थे उन में से दो शख़्स जिन पर खुदा की इनायत थी कहने लगे कि उन लोगों पर दरवाज़े के रस्ते हमला कर दो जब तुम दरवाज़े में दाख़िल हो गये तो फ़तह तुम्हारी है और खुदा ही पर भरोसा रखो बशर्ते कि साहिबे ईमान हो (२३) वह बोले कि मूसा जब तक वह लोग वहाँ हैं हम कभी वहाँ नहीं जा सकते अगर लड़ना ही ज़रुर है तो तुम और तुम्हारा खुदा, जाओ और लड़ो हम यहीं बैठे रहेंगे (२४) मूसा ने (खुदा से) इल्तिजा की कि ऐ मेरे पर्वरदिगार में अपने और अपने भाई के सिवा और किसी पर अख्तियार नहीं रखता और हम में और उन नाफ़रमान लोगों में जुदाई कर दे (२५) खुदा ने फ़रमाया कि वह मुल्क उन पर ४० बरस के लिये हराम कर दिया गया। (कि वहाँ जाने न

पायेंगे और जंगल की ज़मीन में सरगर्दा फिरते रहेंगे तो उन ना फ़रमान लोगों के हाल पर अफ़सोस न करो (२६) रुकू—४

और (ऐ मोहम्मद) उनको आदम के दो बेटों (हाबील और क़ाबील) के हालात (जो बिल्कुल) सच्चे (हैं) पढ़कर सुना दो कि जब इन दोनों ने (खुदा की जनाब में कुछ) नमाज़ें चढ़ाई तो एक की नमाज़ क़बूल हो गई और दूसरे की क़बूल न हुई (तब क़ाबील हाबील से) कहने लगा कि मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा उसनें कहा कि खुदा परहेज़गारों ही की (नमाज़) कबूल फ़रमाता है (२७) और अगर तू मुझे क़त्ल करने के लिये मुझ पर हाथ चलायेगा तो मैं तुझ को क़त्ल करने के लिये तुझ पर हाथ नहीं चलाऊंगा मुझे तो खुदाये रब्बुल आलमीन से डर लगता है (२८) मैं चाहता हूं कि तू मेरे गुनाह में भी माखूज़ हो और अपने गुनाह में भी फिर (ज़ुमर-ऐ) अहले दोज़ख में हो और ज़ालिमों की यही सजा है (२९) मगर उस के नफ़्स ने उस को भाई के क़त्ल ही की तर्ग़ीब दी तो उस ने उसे क़त्ल कर दिया और खसारा उठाने वालों में हो गया (३०) खुदा ने एक कौव्वा भेजा जो ज़मीन कुरेदने लगा ताकि उसे दिखाये कि अपने भाई की लाश को क्यों कर छुपाये, कहने लगा ऐ हे मुझ से इतना भी न हो सका कि इस कौव्वे के बराबर होता कि अपने भाई की लाश छुपा देता फिर वह पशेमान हुआ (३१) इस (क़त्ल) की

आयत २७–३१:—हज़रत आदम के जिन दो बेटों का यह क़िस्सा है उन का नाम हाबील और क़ाबील था यह बात मशहूर है कि हज़रत हव्वा के बतन से दो बच्चे तवाम पैदा हुये थे एक लड़का और एक

वजह से हम ने बनी इसराईल पर यह हुक्म नाज़िल किया कि जो शख़्स किसी को (नाहक़) क़त्ल करेगा (यानी, बग़ैर इस के कि जान का बदला लिया जाये या मुल्क में ख़राबी करने की सज़ा दी जाये उस ने गोया तमाम लोगों को क़त्ल किया और जो उस की ज़िन्दगी का मूजिब हुआ तो गोया तमाम लोगों की ज़िन्दगी का मूजिब हुआ और उन लोगों के पास हमारे पैग़म्बर रोशन दलीलें ला चुके हैं फिर इस के बाद भी उन में बहुत से लोग मुल्क में हदे ऐतदाल से निकल जाते हैं (३२) जो लोग ख़ुदा और उस के रसूल से लड़ाई करें और मुल्क में फ़िसाद करने को दौड़ते फिरें उन की यही सजा है कि क़त्ल कर दिये

लड़की चूंकि ज़रुरत लाहक़ थी इस लिए एक बत्न के लड़के को दूसरे बत्न की लड़की से और इस बत्न की लड़की को उस बत्न के लड़के से ब्याह देते थे इतिफ़ाक़ यह हुआ कि क़ाबील के साथ जो लड़की पैदा हुई वह बहुत ख़ूबसूरत थी और हाबील के साथ जो लड़की पैदा हुई वह बदसूरत थी तो क़ाबील ने चाहा कि उस की बहन का अक़्द हाबील से न हो बल्कि ख़ुद उसी से हो आदम ने कहा कि तुम दोनों नमाज़ करो जिस की नमाज़ क़बूल हो वह उस को ले हाबील ने नमाज़ में मोटी ताज़ी बकरी दी और वह क़बूल हुई और क़ाबील ने अनाज की बाल दी और वह भी निकम्मी और ख़राब वह क़बूल न हुई, उन अय्याम में नमाज़ के क़बूल होने की निशानी यह थी कि क़बूल जो होती उस को आग आस्मान से उतर कर जला जाती, हाबील की नमाज़ को आग जला गई और क़ाबील की उसी तरह पड़ी रही, तब क़ाबील को भाई से हसद पैदा हुआ और उस से कहने लगा कि मैं तुझ को क़त्ल करके रहूँगा चुनांचे उस ने उस को क़त्ल कर दिया—

जायें या सूली चढ़ा दिये जायें या उन के एक एक तरफ़ के हाथ और एक एक तरफ़ के पांव काट दिये जायें या मुल्क से निकाल दिये जायें यह तो दुनिया में उन की रुसवाई है और आख़िरत में उन के लिए बड़ा (भारी) अज़ाब (तैयार) है (३३) हाँ जिन लोगों ने इस से पेशतर कि तुम्हारे क़ाबू आ जायें तौबा कर ली तो जान रखो कि ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (३४) रुकू—५

ऐ ईमान वालो ! ख़ुदा से डरते रहो और उस का कुर्ब हासिल करने का ज़रिया तलाश करते रहो और उस के रस्ते में जहाद करो ताकि रुस्तगारी पाओ (३५) जो लोग क़ाफ़िर हैं अगर उन के पास रुऐ ज़मीन (के तमाम ख़ज़ाने और उस) का सब मालो मता हो और उस के साथ उसी क़दर और भी हो ताकि क़यामत के रोज़ अज़ाब (से रुस्तगारी हासिल करने) का बदला दें, तो उन से क़बूल नहीं किया जायेगा और उन को दर्द देने वाला अज़ाब होगा (३६) (हर चन्द) चाहेंगे कि आग से निकल जायें मगर उससे नहीं निकल सकेंगे और उन के लिए हमेशा का अज़ाब है (३७) और जो चोरी करे मर्द हो या औरत, उन के हाथ काट डालो, यह उन के फ़ेलों की सज़ा और ख़ुदा की तरफ़ से इबरत है और ख़ुदा ज़बरदस्त (और) साहिबे हिकमत है (३८) और जो शख़्श गुनाह के बाद तौबा कर ले और नेकूकार हो जाये तो ख़ुदा उस को मुआफ़ कर देगा कुछ शक नहीं कि ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (३९) क्या तुम को

मालूम नहीं कि आस्मानों और ज़मीन में ख़ुदा ही की सलतनत है ? वह जिसको चाहे अज़ाब करे और जिसे चाहे बख़्श दे और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (४०) ऐ पैग़म्बर जो लोग कुफ्र में जल्दी करते हैं (कुछ तो) उन में से (हैं) जो मूँह से कहते हैं कि हम मोमिन हैं लेकिन उन के दिल मोमिन नहीं हैं और (कुछ) उन में से हैं जो यहूदी हैं उन की वजह से ग़मनाक न होना, यह ग़लत बातें बनाने के लिए जासूसी करते फिरते हैं और ऐसे लोगों (के बहकाने) के लिए जासूस बने हैं जो अभी तुम्हारे पास नहीं आये (सही) बातों को उन के मक़ामात (में साबित होने) के बाद बदल देते हैं और (लोगों से) कहते हैं कि अगर तुम को यही (हुक्म) मिले तो उसे क़बूल कर लेना और अगर यह न मिले तो इस से एहतराज़ करना और अगर किसी को ख़ुदा गुमराह करना चाहे तो उसके लिए तुम कुछ भी ख़ुदा से (हिदायत का) अख़्तियार नहीं रखते यह वह लोग हैं जिन के दिलों को ख़ुदा ने पाक करना नहीं चाहा उन के लिए दुनियाँ में भी ज़िल्लत है और आख़िरत में भी बड़ा अज़ाब है (४१)॥ यह झूठी

आयत ४१:—यह आयत यहूदियों के हक़ में नाज़िल हुई और तौरात में हुक्म था कि जो बदकारी करे उस को संगसार कर दिया जाये मगर उन्होंने इस हुक्म को बदल कर यह अमल जारी किया कि बद फ़ेली करने वाले को ताज़ियाने मारते और गधे पर सवार करा कर फ़ज़ीहत कराते जनाब सर्वरे कायनात के वक्त में कई वाक़ैयात हुए कि वह उंन को फ़ैसले के लिये आप के पास लाये हिजरत के बाद यह वाक्या हुआ कि एक यहूदी ने एक यहूदन से मुंह काला किया यहूदियों ने

बातें बनाने के लिये जासूसी करने वाले और (रिश्वत) का हराम माल खाने वाले हैं अगर यह तुम्हारे पास (कोई मुक़दमा फ़ैसला करने को) आयें तो तुम उन में फ़ैसला कर देना या ऐराज़ करना और उन से ऐराज़ करोगे तो वह तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेंगे और अगर फ़ैसला करना चाहो तो इन्साफ़ का फ़ैसला करना कि ख़ुदा इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है (४२) और यह तुम से (अपने मुकदमात) क्यों कर फ़ैसला करायेंगे जब कि ख़ुद उन के पास तौरात (मौजूद) है जिस में ख़ुदा का हुक्म (लिखा हुआ) है (यह उसे जानते हैं) फिर उस के बाद उस से फिर जाते हैं और यह लोग ईमान ही नहीं रखते (४३) रुकू—९

आपस में कहा चलो इस का फ़ैसला हज़रत से करायें अगर ताजियाने लगाने और मूँह काला करने का हुक्म दें तो मान लेना चाहिये नहीं तो नहीं, इब्ने उमर से रिवायत है कि यहूद हज़रत के पास आये और बयान किया कि इन में से एक मर्द औरत ने बदकारी की है इस बारे में क्या इर्शाद है आपने फ़रमाया कि तौरात में क्या लिखा है उन्होंने कहा कि हम तो कोड़े मारते और फ़ज़ीहत करते हैं आपने फ़रमाया कि तौरात लाओ, तौरात लाई गई तो एक शख़्स पढ़ने लगा जब उस आयत पर गुज़र हुआ जिस में बदकारी की सज़ा रजम यानी संगसारी करना लिखा था तो उस पर हाथ रख दिया और आगे पीछे की आयतें पढ़ दीं अब्दुल्लाह बिन सलाम ने जो तौरात के माहिर थे अर्ज़ किया कि आप हुक्म दें कि यह हाथ उठाये हाथ उठाया तो उस के नीचे रजम की आयत थी हज़रत ने रजम का हुक्म सादिर फ़रमाया और दोनों रजम किये गये इब्ने उमर कहते हैं कि उनके रजम के वक्त

बेशक हमीं ने तौरात नाज़िल फ़रमाई जिस में हिदायत और रोशनी है उसी के मुताबिक़ अन्बिया (जो ख़ुदा के) फ़रमाँ-बरदार थे यहूदियों को हुक्म देते रहे हैं और मशायख़ और उलमा भी क्योंकि वह किताब के निगैहबान मुक़र्रर किये गये थे और उस पर गवाह थे (यानी हुक्मे इलाही का यक़ीन रखते थे) तो तुम लोगों से मत डरना और मुझी से डरते रहना और मेरी आयतों के बदले थोड़ी सी क़ीमत न लेना और जो ख़ुदा के नाज़िल फ़रमाये हुए एहकाम के मुताबिक़ हुक्म न दे तो ऐसे ही लोग काफ़िर हैं (४४) और हम ने उन लोगों के लिए तौरात में यह हुक्म लिख दिया था कि जान के बदले जान और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दान्त के बदले दान्त और सब ज़ख़्मों का इसी तरह बदला है लेकिन जो शख़्स बदला मुआफ़ कर दे वह उस के लिए कफ़्फ़ारा होगा और जो ख़ुदा के नाज़िल फ़रमाये हुए एहकाम के मुताबिक हुक्म न दे तो ऐसे ही लोग बे इन्साफ़ हैं (४५) और इन पैग़म्बरों के बाद उन्हीं के क़दमों पर हम ने ईसा बिन मरियम को भेजा जो अपने से पहले की किताब तौरात की

मैं भी मौजूद था मैंने मर्द को देखा कि औरत पर झुक झुक जाता था और उस को पत्थर से बचाता था। सबब इस आयत का यह है कि एक मर्द और एक औरत ने अशराफ़े खबीर से मना किया हद उनकी तौरात में संगसार करना थी हज़रत ने क़सम दिला कर यह क़बूल करा लिया कि तौरात में हद ज़ानी निकाह करने वाले की सगंसारी ही है यहूदियों के आलिमों ने यह बात छुपा ली थी—

तसदीक़ करते थे और उन को अन्जील इनायत की जिस में हिदायत और नूर है और तौरात की जो इस से पहले (किताब) है तसदीक़ करती है और परहेज़गारों को राह बताती और नसीहत करती है (४६) और अहले अन्जील को चाहिये कि जो एहकाम ख़ुदा ने उस में नाज़िल फ़रमाये हैं उन के मुताबिक़ हुक्म दिया करें और जो ख़ुदा के नाज़िल किये हुए एहकाम के मुताबिक़ हुक्म न देगा तो ऐसे लोग ना फ़रमान हैं (४७) और (ऐ पैग़म्बर) हम ने तुम पर सच्ची किताब नाज़िल की है जो अपने से पहली किताबों की तसदीक़ करतो है और इन (सब) पर शामिल है तो जो हुक्म ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमाया है उस के मुताबिक़ उन का फ़ैसला करना और हक़ जो तुम्हारे पास आ चुका है उस को छोड़ कर उन की ख़्वाहिशों की पैरवी न करना, हम ने तुम में से हर एक (फ़िर्क़े) के लिए एक दस्तूर और तरीक़ा मुक़र्रर किया है और अगर ख़ुदा चाहता तो सब को एक ही शरियत पर कर देता मगर जो हुक्म उस ने तुम को दिये हैं उन में वह तुम्हारी आज़माईश करनी चाहता है सो नेक कामों में जल्दी करो तुम सब को ख़ुदा की तरफ़ लौट कर जाना है फिर जिन बातों में तुम को इख़्तिलाफ़ था वह तुम को बता देगा (४८) और हम फिर ताकीद करते हैं कि जो (हुक्म) ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमाया है उसी के मुताबिक़ उन में फ़ैसला करना और उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करना और उन से बचते रहना कि किसी हुक्म से जो ख़ुदा ने तुम पर नाज़िल

फ़रमाया है यह तुम को बहका न दें, अगर यह न मानें तो जान लो कि ख़ुदा चाहता है कि उन के बाज़ गुनाहों के सबब उन पर मुसीबत नाज़िल करे और अक्सर लोग तो ना फ़रमान हैं (४९)* क्या यह ज़माना-ए-जाहिलीयत के हुक्म के ख़्वाहिश मन्द हैं? और जो यक़ीन रखते हैं उन के लिए ख़ुदा से अच्छा हुक्म किस का है? (५०) रुकू—७

ऐ ईमान वालो! यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ, यह एक दूसरे के दोस्त हैं और जो शख़्स तुम में से इन को दोस्त बनायेगा वह भी उन्हीं में से होगा, बेशक ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता (५१) तो जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़) का मर्ज़ है तुम उन को देखोगे कि उन में दौड़ दौड़ कर मिले जाते हैं कहते हैं कि हमें ख़ौफ़ है कि हम पर ज़माने की गर्दिश न आ जाये सो क़रीब है कि ख़ुदा फ़तह भेजे या अपने हां से कोई और अमर नाज़िल फ़रमाये फिर यह अपने दिल

*आयत ४९:—बाजे उलमाऐ यहूद ने आपस में तदबीर की और मकर किया कि मोहम्मद के पास जावें और उस को बे राह करें और फ़रेब देवें और हज़रत के पास आये और कहा कि ऐ मोहम्मद! तू जानता है कि हम अशराफ़ और दाना क़ौम के हैं अगर हम तेरी मुताबैयत करेंगे तो तमाम छोटे और बड़े यहूदियों के, तेरी मुताबैयत करेंगे, दर्मियान हमारे और क़ौम हमारी के माल और खून में झगड़े रहते हैं अगर तू मुआफ़िक़ मरज़ी हमारी के हुक्म करे तो हम तेरी पैग़म्बरी को मानेंगे, हक़्क़े तआला ने इस आयत में पैग़म्बर को मना फ़रमाया कि उन की मरज़ी के मुआफ़िक़ हुक्म न करे—

की बातों पर जो छुपाया करते थे पशेमान हो कर रह जायेंगे (५२) और (उस वक्त) मुसलमान (ताज्जुब से) कहेंगे कि क्या यह वही हैं जो ख़ुदा की सख्त सख्त क़समें खाया करते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं, उन के अमल अकारत गये और वह ख़सारे में पड़ गये (५३) ऐ ईमान वालो ! अगर तुम में से कोई अपने दीन से फिर जायेगा तो ख़ुदा ऐसे लोग पैदा करेगा जिन को वह दोस्त रखे और जिसे वह दोस्त रखें और जो मोमिनों के हक़ में नरमी करें और काफ़िरों से सख्ती से पेश आयें, ख़ुदा की राह में जहाद करें और किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरें, यह ख़ुदा का फ़ज़्ल है जिसे चाहता है देता है और ख़ुदा बड़ी कुशाईश याला और जानने वाला है (५४) तुम्हारे दोस्त तो ख़ुदा और उस के पैग़म्बर और मोमिन लोग ही हैं जो नमाज़ पढ़ते हैं जकात देते और ख़ुदा के आगे झुकते हैं (५५) और जो शख़्स ख़ुदा और उस के पैग़म्बर और मोमिनों से दोस्ती करेगा तो (वह ख़ुदा की जमायत में दाख़िल होगा (और) ख़ुदा की ज़मायत ही ग़लबा पाने वाली है (५६) रकू—८

ऐ ईमान वालो ! जिन लोगों को तुम से पहले किताबें दी गई थीं उन को और काफ़िरों को जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी और खेल बना रखा है दोस्त न बनाओ और मोमिन हो तो ख़ुदा से डरते रहो (५७) और जब तुम लोग नमाज़ के लिये अज़ान देते हो यह उसे भी हंसो और खेल बताते हैं, यह इस लिए कि समझ नहीं रखते (५८)ꕥ कहो कि अहले किताब

तुम हम में बुराई ही क्या देखते हो सिवा इस के कि हम ख़ुदा पर और जो (किताब) हम पर नाज़िल हुई उस पर, और जो किताबें पहले नाज़िल हुईं उन पर, ईमान लाये हैं, और तुम मे अक्सर बदकिरदार हैं (५९) कहो कि मैं तुम्हें बताऊँ कि ख़ुदा के हाँ इस से भी बद तर जज़ा पाने वाले कौन हैं, यह वह लोग हैं जिन पर ख़ुदा ने लानत की और जिन पर वह गज़बनाक़ हुआ। और (जिन को) उन में से बन्दर और सूअर बना दिया और जिन्होंने शैतान की परस्तिश की ऐसे लोगों का बुरा ठिकाना है और वह सीधे रस्ते से बहुत दूर हैं (६०) और जब यह लोग तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान ले आये हालाँकि कुफ्र ले कर आते हैं और उसी को ले कर जाते हैं और जिन बातों को यह मख़्फ़ी रखते हैं ख़ुदा उन को ख़ूब जानता है (६१) और तुम देखोगे कि उन में अक्सर गुनाह और ज़्यादती और हराम खाने में जल्दी कर रहे हैं, बेशक यह जो कुछ करते हैं बुरा करते हैं (६२) भला उन के मशायख़ और उलमा उन्हें गुनाह की बातों और हराम खाने से मना क्यों नहीं करते, बिला शुबा वह भी बुरा करते हैं (६३) और यहूद कहते हैं कि ख़ुदा का हाथ (गर्दन) से बन्धा हुआ है (यानी अल्लाह बख़ील

---

*आयत ५८:—मदीने में एक नसरानी था कि जब अज़ान होती कहता 'जल जावे झूठ कहने वाला' एक दिन गुलाम उस का आग घर में लाया, नसरानी साथ अहलो अयाल अपने के सोता था, आग लगी, तमाम जमायत जो घर में थी जल गई—

है) उन्हीं के हाथ बान्धे जायें और ऐसा कहने के सबब उन पर लानत हो उस का हाथ बन्धा हुआ नहीं बल्कि उस के दोनों हाथ खुले हैं वह जिस तरह (और जितना) चाहता है खर्च करता है, और ऐ मोहम्मद यह (किताब) जो तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुई उस से उन में से अक्सर की शरारत और इन्कार बढ़ेगा और हम ने उन के बाहम अदावत और बुग़्ज़ क़यामत तक के लिये डाल दिया है, यह जब लड़ाई के लिए आग जलाते हैं ख़ुदा उस को बुझा देता है और यह मुल्क में फ़साद के लिए दौड़ते फिरते हैं और ख़ुदा फ़िसाद करने वालों को दोस्त नहीं रखता (६४) और अगर अहले किताब ईमान लाते और परहेज़गारी करते तो हम उन से उन के गुनाह मेहव कर देते और उन को नैयमत के बागों में दाख़िल करते (६५) और अगर तौरात और अन्जील को और जो (और किताबें) उन के पर्वरदिगार की तरफ़ से उन पर नाज़िल हुईं उनको क़ायम रखते तो उन पर रिज़्क़ मैंह की तरह बरसता कि)

---

*आयत ६४:—इन लोगों का अजब हाल था कभी ख़ुदा ताला को फ़क़ीर कहते और अपने आप को ग़नी अब जो आँ हज़रत की तकज़ीब व मुख़ालिफ़त की शामत से उन को अफ़्लास ने आ घेरा तो यूं चिल्लाने लगे कि ख़ुदा बख़ील है और बुख़्ल की वजह से हम पर बुज़्ल व अता से उस ने अपना हाथ रोक लिया है ख़ुदा ताला ने इन बे अदबियों के सबब उन पर लानत की और फ़रमाया कि हमारे वो दोनों हाथ खुले फिरते हैं और हम जिस तरह चाहते हैं खर्च करते हैं—

अपने ऊपर से और पांव के नीचे से खाते, उन में कुछ लोग मियाना रौ हैं और बहुत से ऐसे हैं जिन के आमाल बुरे हैं (६६) रुकू—६

ऐ पैग़म्बर जो इर्शादात ख़ुदा की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुए हैं सब लोगों को पहुँचा दो अगर ऐसा न किया तो तुम ख़ुदा के पैग़ाम पहुँचाने में क़ासिर रहे (यानी पैग़म्बरी का फ़र्ज़ अदा न किया) और खुदा तुम को लोगों से बचाये रखेगा, बेशक ख़ुदा मुन्किरों को हिदायत नहीं देता (६७) कहो कि ऐ अहले किताब ! जब तक तुम तौरात और अन्जील को और जो (और किताबें) तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से तुम लोगों पर नाज़िल हुईं उन को क़ायम न रखोगे कुछ भी राह पर नहीं हो सकते और यह (क़ुरान) जो तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुआ है इस से उन में से अक्सर की सरकशी और कुफ़्र बढ़ेगा, तो तुम क़ौमे कफ़्फ़ार पर अफ़सोस न करो (६८) जो लोग ख़ुदा पर और रोज़े आख़िरत पर ईमान लायेंगे और अमल नेक करेंगे ख्वाह वह मुसलमान हों या यहूदी या सितारा परस्त या ईसाई उन को (क़यामत के दिन) न कुछ खौफ़ होगा और न वह ग़मनाक होंगे (६९) हम ने बनी ईसराईल से अहद भी लिया और उन की तरफ़ पैग़म्बर भी भेजे (लेकिन) जब कोई पैग़म्बर उन के पास ऐसी बातें ले

---

*आयत ६६:—यानी आस्मान और ज़मीन से उन को रिज़्क़ फ़राग़ आवे—

कर आता जिन को उन के दिल नहीं चाहते थे तो वह (अम्बिया की) एक जमायत को तो झुठला देते और एक जमायत को क़त्ल कर देते थे (७०) और यह ख़्याल करते थे कि (उन से इन पर) कोई आफ़त नहीं आने की तो वह अन्धे और बहरे हो गये, फिर ख़ुदा ने उन पर मेहरबानी फ़रमाईं (मगर) फिर उन में से बहुत से अन्धे और बेहरे हो गये और ख़ुदा उन के सब कामों को देख रहा है (७१) वह लोग बिला शुब्हा क़ाफ़िर हैं जो कहते हैं मरियम के बेटे (ईसा) मसीह ख़ुदा हैं, हालाँकि मसीह यहूद से यह कहा करते थे कि ऐ बनी इसराईल ख़ुदा ही की इबादत करो जो मेरा भी पर्वरदिगार है और तुम्हारा भी (और जान रखो कि) जो शख़्स ख़ुदा के साथ शिर्क करेगा ख़ुदा उस पर बहिश्त को हराम कर देगा और उस का ठिकाना दोज़ख है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं (७२) वह लोग भी काफ़िर हैं जो इस बात के क़ाईल हैं कि ख़ुदा तीन में का तीसरा है हालाँकि उस माबूदे यकता के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, अगर यह लोग ऐसे अक़वाल और अक़ायद से बाज़ नहीं आयेंगे तो इन में जो काफ़िर हुए हैं वह तकलीफ़ देने वाला अज़ाब पायेंगे (७३)॥ तो क्यों ख़ुदा के आगे यह

॥आयत ७३:—मरक़ोशिया एक फ़िर्क़ा है नसारा का जो ऐतक़ाद रखते हैं कि ख़ुदाई मुश्तरिक है यानी दर्मियान अल्लाह के और ईसा के और मरियम के और अल्लाह तीनों में से एक है

नसारा में दो क़ौल हैं बाज़े कहते हैं कि अल्लाह ही था जो सूरते मसीह में आया और बाज़े कहते हैं तीन हिस्से हो गया, एक अल्लाह

तौबा नहीं करते और उस से गुनाहों की मुआफ़ी नहीं माँगते और ख़ुदा तो बख़्शने वाला मेहरबान है (७४) मसीह इब्ने मरियम तो सिर्फ़ (ख़ुदा के) पैग़म्बर थे उन से पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके थे और उन की वालिदा मरियम ख़ुदा की वली (और) सच्ची फ़रमाँबरदार थीं, दोनों (इन्सान थे) और खाना खाते थे, देखो हम इन लोगों के लिये अपनी आयतें किस तरह खोल खोल कर बयान करते हैं, फिर (यह) देखो यह किधर उल्टे जा रहे हैं (७५)* कहो कि तुम ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ की क्यों परस्तिश करते हो जिस को तुम्हारे नफ़ा व नुक़सान का कुछ भी अख़्तियार नहीं और ख़ुदा ही सब कुछ जानता सुनता है (७६)* कहो कि ऐ अहले किताब अपने दीन (की बात) में नाहक़ मुबालग़ा न करो और ऐसे लोगों की ख़्वाहिशों के पीछे न चलो जो (ख़ुद भी) पहले गुमराह हुए और भी अक्सरों को गुमराह कर गये और सीधे रस्ते से भटक गये (७७) रुकू—१०

जो लोग बनी इसराईल हुए और उन पर दाऊद और ईसा बिन मरियम की ज़बान से लानत की गई यह इस लिये कि

रहा, एक रुह उल कुदस, एक मसीह दोनों बातें सरीह कुफ्र हैं कामिलों के हक में—

*आयत ७५:—यानी इस से ज़्यादा क्या निशानी ? यानी जो शख़्स खाना खावे, उसे सब हाजते बशरी लगे अल्लाह की जाते पाक इस लायक़ कब है—

*आयत ७६:—मुराद इस से ईसा है

ना फ़रमानी करते थे और हद से तजावुज़ करते थे (७८) और बुरे कामों से जो वह करते थे एक दूसरे को रोकते थे, बिला शुब्हा वह बुरा करते थे (७९) तुम उन में से बहुतों को देखोगे कि काफ़िरों से दोस्ती रखते हैं उन्होंने जो कुछ अपने आगे भेजा है बुरा है (वह यह) कि ख़ुदा उन से नाख़ुश हो और वह हमेशा अज़ाब में (मुब्तिला) रहेंगे (८०) और अगर वह ख़ुदा पर और पैग़म्बर पर और जो किताब उन पर नाज़िल हुई थी उस पर यक़ीन रखते तो उन लोगों को दोस्त न बनाते लेकिन उन में अक्सर बद किरदार हैं (८१) (ऐ पैग़म्बर) तुम देखोगे कि मोमिनों के साथ सब से ज़्यादा दुश्मनी करने वाले यहूदी और मुश्रिक हैं और दोस्ती के लिहाज़ से मोमिनों से क़रीब तर उन लोगों को पाओगे जो कहते हैं कि हम नसारा हैं; यह इस लिये कि उन में आलिम भी हैं और मशायख़ भी और वह तकब्बुर नहीं करते (८२)

सातवां पारा-(व इज़ासमिऊ)

और जब इस (किताब) को सुनते हैं जो (सब से पिछले पैग़म्बर) मोहम्मद सलअम पर नाज़िल हुई तो तुम देखते हो कि उन की आँखों से आँसू जारी हो जाते हैं इस लिये कि

(उन्होंने हक़ बात पहचान ली और वह ख़ुदा की जनाब में) अर्ज़ करते हैं कि ऐ हमारे पर्वरदिगार हम ईमान ले आये तू हम को मानने वालों में रख ले (८३)✽ और हमें क्या हुआ है कि ख़ुदा पर और हक़ बात पर जो हमारे पास आई है ईमान न लायें और हम उम्मीद रखते हैं कि पर्वरदिगार हम को नेक बन्दों के साथ (बहिश्त में) दाख़िल करेगा (८४) तो ख़ुदा ने उन को इस कहने के ऐवज़ (बहिश्त के) बाग़ अता फ़रमाये जिन के नीचे नहरें बह रही हैं वह हमेशा उन में रहेंगे और नेकूकारों का यही सिला है (८५)✽ और जिन लोगों ने कुफ़्र

✽आयत ८३:—फ़रमाया रसूल अल्लाह ने कि दो क़िस्म की आँखों को दोज़ख की आग नहीं जला सकेगी एक वह आँख कि अल्लाह तआला के खौफ़ से रोई हो एक वह जो अल्लाह तआला की राह में यानी जहाद में हिफ़ाज़त और निगरानी के वास्ते जागी हो—

✽आयत ८५:—मक्के में काफ़िरों ने जब मुस्लमानों पर ज़ुल्म किया तो आँ हज़रत ने इज़्न दिया कि और मुल्क में निकल जाओ क़रीब ८० आदमी मुस्लमान बाजे तन्हा बाज़े घर समेत मुल्क हबश में जा रहे वहाँ का बादशाह खूब मुन्सिफ़ था, फिर मक्के के काफ़िरों ने उस को बहकाया कि इस क़ौम को रहने न दो कि हज़रत ईसा को ग़ुलाम कहते हैं तब बादशाह ने मुस्लमानों को बुला कर पूछा और कुरान पढ़वा कर सुना, उस के हुकमा बहुत रोये और कहा कि हज़रत ईसा की ज़बान से हम को इसी म्वाफ़िक़ पहुँचा है और हम को खबर दी है हज़रत ईसा अलहे अस्सलाम ने कि मेरे बाद पेश अज़ क़यामत एक नबी और आवेगा वह बेशक यही नबी है, वह बादशाह खुफ़िया मुस्लमान हुआ, उन के हक़ में यह आयतें हैं—

किया और हमारी आयतों को झुठलाया वह जहन्नुमी हैं (८६)

रुकू – ११

मोमिनो जो पाकीज़ा चीज़ ख़ुदा ने तुम्हारे लिये हलाल की हैं उन को हराम न करो और हद से न बढ़ो कि ख़ुदा हद से बढ़ने वाले को दोस्त नहीं रखता (८७) और जो हलाल तैयब रोज़ी ख़ुदा ने तुम को दी है उसे खाओ और ख़ुदा से जिस पर ईमान रखते हो डरते रहो (८८) ख़ुदा तुम्हारी बे इरादा क़समों पर तुम से मवाख़िज़ा नहीं करेगा लेकिन पुख़्ता क़समों पर (जिन के ख़िलाफ़ करोगे) मवाख़िज़ा करेगा तो इस का कफ़ारा दस मोहताजों को औसत दर्जे का खाना खिलाना है जो तुम अपने अहलो अयाल को खिलाते हो, या उन को कपड़े देना या एक ग़ुलाम आज़ाद करना और जिस को यह मैयस्सर न हो वह तीन रोज़े रखे, यह तुम्हारी क़समों का कफ़ारा है जब तुम क़सम खा लो (और उसे तोड़ दो) और (तुम को) चाहिये कि अपनी क़समों की हिफ़ाज़त करो इस तरह ख़ुदा तुम्हारे (समझाने के लिये अपनी आयतें खोल खोल कर बयान फ़रमाता है ताकि तुम शुक्र करो (८९) ऐ ईमान वालो शराब और जुआ और बुत और पांसे (यह सब) नापाक काम आमाले शैतान से हैं सो इन से बचते रहना ताकि नजात पाओ (९०) शैतान तो चाहता है कि शराब और जुए के सबब तुम्हारे आपस में दुश्मनी और रंजश डलवा दे और तुम्हें ख़ुदा की याद से और नमाज़ से रोक दे तो तुम को (इन कामों से) बाज़

रहना चाहिये (६१) और ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी और रसूले (ख़ुदा) की इताअत करते रहो और डरते रहो और अगर मूंह फेरोगे तो जान रखो कि हमारे पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़ पैग़ाम का खोल कर पहुँचाना है (६२) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे उन पर उन चीज़ों का कुछ गुनाह नहीं जो वह खा चुके, जब कि उन्होंने परहेज़ किया और ईमान लाये और नेक काम किये फिर परहेज़ किया और नेकू-कारी की और ख़ुदा नेकूकारों को दोस्त रखता है (६३) रुकू—१२

मोमिनो ! किसी क़दर शिकार से जिन को तुम हाथों और नेज़ों से पकड़ सको ख़ुदा तुम्हारी आज़माईश करेगा (यानी हालते एहराम में शिकार की मुमानियत से) ताकि मालूम करे कि इन से ग़ायबाना कौन डरता है, तो जो इस के बाद ज़्यादती करेगा उस के लिए दुख देने वाला अज़ाब (तैयार) है (६४) मोमिनो ! जब तुम एहराम की हालत में हो तो शिकार न मारना और जो तुम में से जान बूझ कर उसे मारे तो (या तो उस का) बदला दे और वह यह है कि उसी तरह का चारपाया जिसे तुम में से दो मौअतबर शख़्श मुक़र्रर कर दें क़ुर्बानी करे और यह क़ुर्बानी) काबे पहुँचाई जाये या कफ़ारा (दे और वह) मिस्कीनों को खाना खिलाना (है) या उस के बराबर रोज़े रखे ताकि अपने काम की सज़ा का (मज़ा) चखे (और) जो पहले हो चुका वह ख़ुदा ने मुआफ़ कर दिया और जो फिर

ऐसा काम करेगा तो ख़ुदा उस से इन्तक़ाम लेगा और ख़ुदा ग़ालिब और इन्तक़ाम लेने वाला हैं (९५) तुम्हारे लिये दरिया (की चीज़ों) का शिकार और उन का खाना हलाल कर दिया गया है यानी तुम्हारे और मुसाफ़िरों के फ़ायदे के लिये और जंगल (की चीज़ों) का शिकार जब तक तुम एहराम की हालत में रहो तुम पर हराम है और खुदा से जिस के पास तुम सब (जमा) किए जाओगे डरते रहो (९६) ख़ुदा ने इज़्ज़त के घर (यानी) काबे को लोगों के लिये मूजिबे अम्न मुक़र्रर फ़रमाया है और इज़्ज़त के महीनों को और कुर्बानी को और जानवरों को जिन के गले में पट्टे पड़े हों, यह इस लिये कि तुम जान लो कि जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है खुदा सब को जानता है और यह कि खुदा को हर चीज़ का इल्म है (९७) जान रखो कि खुदा सख़्त अज़ाब देने वाला है और यह कि खुदा बख़्शने वाला मेहरबान भी है (९८) पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़ (पैग़ाम खुदा का) पहुंचा देना है और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ मख़्फ़ी करते हो ख़ुदा को सब मालूम है (९९) कह दो कि नापाक चीज़ें और पाक चीज़ें बराबर नहीं होतीं, गो नापाक चीज़ों की कसरत तुम्हें खुश ही लगे, तो अक्ल वालो खुदा से डरते रहो ताकि रुस्तगारी हासिल करो (१००) रुकू—१३

मोमिनो ऐसी चीज़ों के बारे में मत सवाल करो कि अगर (उन की हक़ीक़तें) तुम पर ज़ाहिर कर दी जायें तो तुम्हें बुरी

लगें और अगर कुरान के नाज़िल होने के अय्याम में ऐसी बातें पूछोगे तो तुम पर ज़ाहिर भी कर दी जायेंगी (अब तो) खुदा ने ऐसी बातों (के पूछने) से दर गुज़र फ़रमाया है और खुदा बख़्शने वाला और बुर्दबार है (१०१) इस तरह की बातें तुम से पहले लोगों ने भी पूछी थीं (मगर जब बताई गईं तो) फिर उन से मुन्किर हो गये (१०२) खुदा ने न तो बुहीरा+ कुछ चीज़ बनाया है और न सायबा* और न वसीला× और न हाम(–) बल्कि खुदा पर झूठ और इफ़्तिरा करते हैं और यह अक्सर अक़्ल नहीं रखते (१०३)❈ और जब उन लोगों से कहा जाता है कि जो (किताब) खुदा ने नाज़िल फ़रमाई है उस की

+ऊन्टनी है जो बुतों की नज्र की जाती थी, उस के कान फाड़ कर छोड़ देते थे और कोई उस का दूध दोह नहीं सकता था—

* जानवर जो बुतों के नाम पर छोड़ दिया जाता था और उस पर बोझ नहीं लादते थे—

× ऊन्टनी जो अव्वल उम्र में ऊपर तले दो मादा बच्चे देती उसे बुतों के नाम पर छोड़ देते थे—

(–) ऊन्ट जिस की नस्ल से चन्द बच्चे लेकर सवारी वग़ैरा का काम लेना तर्क कर देते थे—

❈आयत १०३— इन काफ़िरों ने बुहीरा और सायबा और वसीला और हाम तो ख़ुद मुक़र्रर कर रखे हैं और यह कहते हैं कि यह शरीयते इब्राहीमी के हुक्म हैं और इन से तक़र्रुब अल्लाह तआला हासिल होता है ख़ुदा ने फ़रमाया यह सब झूठ और ख़ुदा पर बोहतान है उस ने किसी जानवर का नाम बुहीरा वग़ैरा रखा न उस ने मशरु किया न उस ने वज्हे क़ुर्बत क़रार दिया—

और रसूल अल्लाह की तरफ़ रजू करो तो कहते हैं कि जिस तरीक़ पर हमने अपने बाप दादा को पाया है वही हमें काफ़ी है भला उन के बाप दादा न तो कुछ जानते हों और न सीधे रस्ते पर हों (तब भी) (१०४) ऐ ईमान वालो अपनी जानों की हिफ़ाज़त करो जब तुम हिदायत पर हो तो कोई गुमराह तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता तुम सब को खुदा की तरफ़ लौट कर जाना है, उस वक्त वह तुम को तुम्हारे कामों से (जो दुनिया में) किये थे आगाह करेगा और उन का बदला देगा (१०५) मोमिनो ! जब तुम में से किसी की मौत आ मौजूद हो तो शहादत (का निसाब) यह है कि वसीयत के वक्त तुम (मुस्लमानों) में से दो मर्द आदिल (यानी साहिबे ऐतबार) गवाह हों या अगर (मुस्लमान) न मिलें और तुम सफ़र कर रहे हो और (उस वक्त) तुम पर मौत की मुसीबत वाक़ैय हो तो किसी दूसरे मज़हब के दो (शख्सों को) गवाह कर लो अगर तुम को उन गवाहों की निस्बत कुछ शक हो तो उन को (असर की) नमाज़ के बाद खड़ा करो और दोनों खुदा की क़समें खायें कि हम शहादत का कुछ ऐवज़ नहीं लेंगे गो हमारा रिश्तेदार ही हो और न हम अल्लाह की शहादत को छुपायेंगे अगर ऐसा करेंगे तो गुनेहगार होंगे (१०६) फिर अगर मालूम हो जाये कि इन दोनों ने (झूठ बोल कर) गुनाह हासिल किया है तो जिन लोगों का उन्होंने हक़ मारना चाहा था उन में से उन की जगह और दो गवाह खड़े हों (जो उम्मियत से) क़राबते

क़रीबा रखते हों फिर वह खुदा की क़समें खायें कि हमारी शहादत उन की शहादत से बहुत सच्चो है और हमने कोई ज़्यादती नहीं की, ऐसा किया हो ता हम बे इन्साफ़ हैं (१०७) इस तरीक़ से बहुत क़रीब है कि यह लोग सही सही शहादत दें या इस बात से खौफ़ करें कि (हमारी) क़समें उन की क़समों के बाद रद्द कर दी जायेंगी और ख़ुदा से डरो और उस के हुक्मों को गोश होश से सुनो और ख़ुदा ना फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता (१०८) रुकू—१४

(वह दिन याद रखने के लायक़ है) जिस दिन खुदा पैगम्बरों को जमा करेगा, फिर उन से पूछेगा कि तुम्हें क्या जवाब मिला था, वह अर्ज़ करगे हमें कुछ मालूम नहीं, तू ही ग़ैब की बातों से वाक़िफ़ है (१०६) जब खुदा (ईसा से) फ़रमायेगा कि ऐ ईसा बिने मरियम, मेरे उन एहसानों को याद करो जो मैंने तुम पर और तुम्हारी वालिदा पर किये हैं जब मैंने रूह उल क़ुदस (यानी जिब्राईल) से तुम्हारी मदद की तुम झूले में थे और जवान हो कर (एक हो नसक़ पर) लोगों से गुफ़्तगू करते थे और जब मैंने तुम को किताब और दानई और तौरात और अञ्जील सिखाई और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी का जानवर बना कर उस में फूंक मार देते थे तो वह मेरे हुक्म से उड़ने लगता था, मादरज़ाद अन्धे और सफ़ैद दाग वाले को तुम मेरे हुक्म से चंगा कर देते थे और मुर्दे को मेरे हुक्म से (ज़िन्दा कर के क़ब्र से) निकाल लिया करते थे और जब मैंने बनी इसराईल

के (हाथों) को तुम से रोक दिया जब तुम उन के पास खुले निशान ले कर आये तो जो उन में से काफ़िर थे कहने लगे कि यह तो सरीही जादू है (११०) और जब मैंने हवारियों की तरफ़ हुक्म भेजा कि मुझ पर और मेरे पैग़म्बर पर ईमान लाओ वह कहने लगे कि (पर्वरदिगार) हम ईमान लाये तो शाहिद रहो कि हम फ़रमाँबरदार हैं (१११)※ (वह किस्सा भी याद करो) जब हवारियों ने कहा कि ऐ ईसा बिने मरियम क्या तुम्हारा पर्वरदिगार एसा कर सकता है कि हम पर आस्मान से (तआम) का ख़्वान नाज़िल करे, उन्होंने कहा अगर ईमान रखते हो तो ख़ुदा से डरो (११२)※ वह बोले कि हमारी यह ख़्वाहिश है कि हम उस में से खायें और हमारे दिल तसल्ली पायें और हम जान लें कि तुम ने हम से सच कहा है और हम इस (ख़्वान के नज़ूल) पर गवाह रहें (११३) तब ईसा बिन मरियम ने दुआ की कि ऐ हमारे पर्वरदिगार हम पर आस्मान से ख़्वान नाज़िल करना कि हमारे लिये (वह दिन) ईद क़रार पाये यानी हमारे अगलों और पिछलों (सब) के लिये और वह तेरी तरफ़ से निशानी हो और हमें रिज़्क़ दे, तू बेहतर रिज़्क़

※आयत १११:—हज़रत ईसा के इत्तबा व अन्सार बाज़े असहाब हवारी कहलाते थे, हवारी हक़ीक़त में धोबी को कहते हैं और वह लोग भी ज़्यादा तर धोबी थे, आज कल यह लफ़्ज़ आम हो गया है और लोगों और और अन्सार पर भी इस का इतलाक़ करने लगे—

※आयत ११२:—यानी चाहिये कि बन्दा अल्लाह का न आज़माये कि मेरा कहा मानता है कि नहीं

देने वाला है (११४)❀ खुदा ने फ़रमाया मैं तुम पर ज़रूर (ख्वान) नाज़िल फ़रमाऊंगा लेकिन जो उस के बाद तुम से कुफ्र करेगा उसे ऐसा अज़ाब दूंगा कि अहले आलम में किसी को ऐसा अज़ाब न दूंगा (११५)❀ रुकू—१५

(और उस वक्त को भी याद रखो) जब ख़ुदा फ़रमायेगा कि ऐ ईसा बिन मरियम क्या तुम ने लोगों से कहा था कि ख़ुदा के सिवा मुझे और मेरी वालिदा को माबूद मुकर्रर करो? वह कहेंगे तू पाक है मुझे कब शायाँ था कि मैं ऐसी बात कहता जिस का मुझे कुछ हक़ नहीं, अगर मैंने ऐसा कहा होगा तो मुझ को मालूम होगा (क्योंकि) जो बात मेरे दिल में है तू उसे जानता है और जो तेरे ज़मीर में है उसे मैं नहीं जानता बेशक तू आलमुल ग़यूब है (११६) मैंने उन से कुछ नहीं कहा बजुज़ इस के जिस का तूने मुझे हुक्म दिया वह यह कि तुम ख़ुदा

आयत ११४:—कहते हैं वह ख्वान उतरा, यकशम्बा को, वह रोज़ नसारा की ईद है जैसे हमको रोज़े जुम्मा—

आयत ११५:—यह हवारी या तो हाजतमन्द थे या इतमीनाने क़ल्ब हासिल करने के लिये उन्होंने मायदे की दरख्वास्त की थी, कुछ भी हो ख़ुदा ने उन पर ख्वाने तआम नाज़िल फ़रमाया, मुफ़स्सरीन ने लिखा है कि ख्वान इतवार के दिन नाज़िल हुआ था जो ईसाईयों की ईद है मुमकिन है कि नज़ूले मायदा इतवार के दिन हुआ हो, मगर उनकी दरख्वास्त के अल्फ़ाज़ से पाया जाता है कि वह उसका इस तरह नाज़िल होना चाहते थे कि उनके लिये खुशी का मूजिब हो जाये यानी उस जमाने के लोग भी इससे खुश हो जायें और जो उनके बाद आयें वह भी खुश हो जायें—

की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा सब का पर्वरदिगार है और जब तक मैं उन में रहा उन (के हालात) की ख़बर रखता रहा, जब तूने मुझे दुनिया से उठा लिया, तो तू उन का निगराँ था और तू हर चीज़ से ख़बरदार है (११७) अगर तू इन को अज़ाब दे तो यह तेरे बन्दे हैं और अगर बख्श दे तो (तेरी मेहरबानी है) बेशक तू ग़ालिब और हिकमत वाला है (११८) खुदा फ़रमायेगा कि आज वह दिन है कि रास्त बाज़ों को उन की सच्चाई ही फ़ायदा देगी उन के लिए बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें बह रही हैं (अबद उल आबाद) उन में बसते रहेंगे, खुदा उन से खुश है और वह खुदा से खुश हैं यह बड़ी कामयाबी है (११९)आस्मान और ज़मीन और जो कुछ (इन दोनों) में है (सब पर) खुदा ही की बादशाही है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है (१२०) रुकू—१६

(६) सूर--ऐ अनआम

यह मक्के में उतरो, इसमें १६५ आयतें, २० रुकू हैं

शुरु ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है हर तरह की तारीफ़ ख़ुदा को सजावार है जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया और अन्धेरा और रोशनी

[1]बनाई फिर भी काफ़िर (और चीज़ों को) खुदा के बराबर ठहराते हैं (१) [2]वही तो है जिस ने तुम को मिट्टी से पैदा किया फिर (मरने का) एक वक्त मुक़र्रर कर दिया और एक मुद्दत उस के हाँ और मुक़र्रर है फिर भी तुम (ऐ काफ़िरो) खुदा के बारे में शक पैदा करते हो (२)[3] और आस्मान और ज़मीन में वही (एक) खुदा है, तुम्हारी पोशीदा और ज़ाहिर सब बातें जानता है और तुम जो अमल करते हो सबसे वाक़िफ़ है (३) और खुदा की निशानियों में से कोई निशानी इन लोगों के पास नहीं आती मगर यह उस से मूंह फेर लेते हैं (४) जब इन के पास हक़ आया तो उस को भी झुठला दिया सो इन को उन चीज़ों का जिन से यह इस्तेहज़ा करते हैं अन्क़रीब अन्जाम मालूम हो जायेगा।[4] (५) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम ने उन से पहले कितनी उम्मतों को हलाक कर दिया जिन के पाँव मुल्क में ऐसे जमा दिये थे कि तुम्हारे

---

1 अन्धेरा और उजाला यही रात और दिन के इशारे हैं, राहे ग़लत को अन्धेरा कहिये और राहे सही को उजाला, सो राहे सही एक है और उसके सिवा सब ग़लत हैं, सो वह बहुत हैं।

2 इस रिवायत में रदम जूसियों का है जो कहते हैं कि पैदा करने वाला रोशनी का अल्लाह तआला है और अन्धेरों का शैतान है, हक़ तआला ने फ़रमाया कि दोनों को खुद उसने पैदा किया है।

3 पहली अज़ल से मुराद उम्र ज़िन्दगी दुनिया की है और दूसरी अज़ल से मुराद क़ब्र से हश्र तक।

4 यानी अज़ाब उतरेगा और फ़तह इस्लाम की होगी

पाँव भी ऐसे नहीं जमाये[5] और उन पर आस्मान से लगातार मेंह[6] बरसाया और नहरें बना दीं जो उन के मकानों के नीचे बह रही थीं[7] फिर उन लोगों को उनके गुनाहों के सबब हलाक कर दिया और उनके बाद और उम्मतें पैदा कर दीं (६) और अगर हम तुम पर काग़ज़ों की लिखी हुई किताब नाज़िल करते[8] और यह उसे अपने हाथों से भी टटोल लेते तो जो काफ़िर हैं वह यही कह देते कि यह तो (साफ़ और सरीह) जादू है[9] (७) और कहते हैं कि उन (पैग़म्बर) पर फ़रिश्ता क्यों नाज़िल न हुआ (जो उनकी तसदीक़ करता) अगर हम फ़रिश्ता नाज़िल करते तो काम ही फैसल हो जाता फिर उन्हें (मुतलक़) मोहलत न दी जाती[10] (८) नीज़ अगर हम किसी फ़रिश्ते को भेजते तो जो शुब्हा (अब) करते हैं उस शुब्हे में उन्हें फिर डाल देते[11] (९) और तुम से पहले भी पैग़म्बरों

---

[5] यानी दी तुमको उमरे दराज़ और कुव्वत और माल [6] यानी रोज़ी का ज़रिया [7] यानी आराम और मेहनत में थे [8] रिवायत है कि नसर बिन हारस और नौफ़ल बिन खवेल और इब्ने उम्मिया आँ हज़रत के पास आये और कहा कि हम ऊपर तेरे ईमान न लावेंगे जब तक कि चार फ़रिश्ते नामा लिखा हुआ आस्मान से न लावें और मुशाहिदी देवें कि यह नामा ख़ुदा की तरफ़ से लाये हैं हमको मोहम्मद पैग़म्बरे बरहक़ है इस पर यह आयत नाज़िल हुई।

[9] यानी जिसकी किस्मत में हिदायत नहीं उसका शुबा कभी नहीं मिटता [10] कहते थे कि हमारे देखते फ़रिश्ते उतरे सो जब आदमी फ़रिश्तों को देखें तो आलमे ग़ैब ज़ाहिर होवे फिर अमल की जज़ा भी ग़ैब से ज़ाहिर में आने लगे [11] मुशरिकों ने कहा था कि पैग़म्बर फ़रिश्ता क्यों नहीं आता इस पर हक़ तआला ने यह फ़रमाया कि जैसे

के साथ तमस्ख़ुर होते रहे हैं सो जो लोग उनमें से तमस्ख़ुर किया करते थे उनको तमस्ख़ुर की सज़ा ने भी आ घेरा (१०)—रुकू–१

क़हो कि (ऐ मुन्किरीने रसालत) मुल्क में चलो फिरो फिर देखो कि झुठलाने वालों का क्या अन्जाम हुआ (११) (उनसे) पूछो कि आस्मान और ज़मीन में जो कुछ है किसका है, कह दो ख़ुदा का, उसने अपनी ज़ात (पाक) पर रहमत को लाज़िम कर लिया है, वह तुम सब को क़यामत के दिन जिसमें कुछ भी शक नहीं है जरुर जमा करेगा, जिन लोगों ने अपने तईं नुक़सान में डाल रखा है[12] वह ईमान नहीं लाते (१२) और जो मख़लूक़ रात और दिन में बस्ती है सब उसी की है और वह सुनता जानता है (१३) कहो क्या मैं ख़ुदा को छोड़ किसी और को मददगार बनाऊँ कि (वही तो) आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है और वही (सब को) खाना देता है और खुद किसी से खाना नहीं लेता (यह भी) कह दो कि मुझे हुक्म हुआ है कि मैं सब से पहले इस्लाम लाने वाला हूं और यह कि तुम (ऐ पैग़म्बर) मुशरिकों में न होना (१४)*

(यह भी) कह दो कि अगर मैं अपने पवर्रदिगार की ना-फ़रमानी करूँ तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब का खौफ़ है (१५) जिस शख्स से

अब पैग़म्बरी आदमी के क़ाबिल नहीं है उस वक्त भी ताना करते कि यह आदमी है मानिन्द तुम्हारे—

[12] यानी अक़्ल व रुह को ज़ाया किया है

आयत १४—क्योंकि वह खाने पीने की जरूरत से पाक है उसे इस की हाजत ही नहीं।

उस रोज़ अजाब टाल दिया गया उस पर ख़ुदा ने (बड़ी) मेहर-बानी फ़रमाई और यह खुली कामयाबी है (१६) और अगर ख़ुदा तुम को कोई सख़्ती पहुँचाये तो उसके सिवा उसको दूर करने वाला कोई नहीं और अगर नैयमत (व राहत) अता करे तो (कोई उसको रोकने वाला नहीं) वह हर चीज़ पर क़ादिर है (१७) और वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है और वह दाना और ख़बरदार है (१८) उनसे पूछो कि सबसे बढ़ कर (क़रीने इन्साफ़) किसकी शहादत है, कह दो कि ख़ुदा ही मुझमें और तुझ में गवाह है और यह क़ुरान मुझ पर इस लिये उतारा गया है कि उसके ज़रिये से तुमको और जिस शख़्स तक वह पहुँच सके उसको आगाह कर दूं क्या तुम इस बात की शहादत देते हो कि ख़ुदा के साथ और भी माबूद हैं (ऐ मोहम्मद) कह दो कि मैं तो ऐसी शहादत नहीं देता, कह दो कि सिर्फ़ वही एक माबूद है और जिन को तुम लोग शरीक बनाते हो मैं उनसे बेज़ार हूँ (१९) जिन लोगों को हमने किताब दी है वह उन (हमारे पैग़म्बर) को इस तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं जिन्होंने अपने तईं नुक़सान में डाल रक्खा है वह ईमान नहीं लाते (२०) रुकू—२

और उस शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम है जिसने ख़ुदा पर झूठ इफ़्तिरा किया या उसकी आयतों को झुठलाया, कुछ शक नहीं कि ज़ालिम लोग नजात नहीं पायेंगे (२१) और जिस दिन हम सब लोगों को जमा करेंगे फिर मुश्रिकों से पूछेंगे कि (आज)

वह तुम्हारे शरीक कहाँ हैं जिनका तुम्हें दावा था(२२) तो उनसे कुछ उज्र न बन पड़ेगा (और) बजुज़ इसके (कुछ चारा न होगा) कि कहें ख़ुदा की क़सम जो हमारा पवर्रदिगार है हम शरीक नहीं बनाते थे (२३) देखो उन्होंने अपने ऊपर कैसा झूठ बोला और जो कुछ यह इफ़्तिरा किया करते थे सब उनसे जाता रहा (२४) और इनमें बाज़ ऐसे हैं कि तुम्हारी (बातों की) तरफ़ कान रखते हैं और हमने उनके दिलों पर तो पर्दे डाल दिये हैं कि उनको समझ न सकें और कानोंमें सक़ल पैदा कर दिया है (कि सुन न सकें) और अगर यह तमाम निशानियाँ भी देख लें तब भी तो उन पर ईमान न लायें, यहाँ तक कि जब तुम्हारे पास तुम से बहस करने को आते हैं वो जो काफ़िर हैं कहते हैं यह (क़ुरान) और कुछ भी नहीं सिर्फ़ पहले लोगों की कहानियाँ हैं (२५) वह इससे (औरों को भी) रोकते हैं और ख़ुद भी परे रहते हैं मगर (इन बातों से) अपने आप ही को हलाल करते हैं और (इससे) बे ख़बर हैं (२६) काश तुम (इनको उस वक्त) देखो जब यह दोज़ख के किनारे खड़े किये जायेंगे और कहेंगे कि ऐ काश हम फिर (दुनियाँ में) लौटा दिये जायें ताकि अपने पवर्रदिगार की आयतों की तकज़ीब न करें और मोमिन हो जायें (२७) हाँ यह जो कुछ पहले छुपाया करते थे (आज) उन पर जाहिर हो गया है और अगर यह (दुनियाँ में) लौटाये भी जायें

आयत २६—यानी तुम्हारी बात तो वही लोग क़बूल करते हैं जो सुनते भी हैं और यह कफ़्फ़ार तो मुर्दों में हैं यह कब सुनते हैं इन मुर्दों को तो ख़ुदा क़यामत ही के दिन उठायेगा—

तो जिन (कामों) से इनको मना किया गया था वही फिर करने लगें, कुछ शक नहीं कि यह झूठे हैं (२८) और कहते हैं कि हमारी जो दुनिया की ज़िन्दगी है बस यही ज़िन्दगी है और हम (मरने के बाद) फिर ज़िन्दा नहीं किये जायेंगे (२९) और काश तुम (इन को उस वक्त) देखो जब यह अपने पवर्रदिगार के सामने खड़े किये जायेंगे और वह फरमायेगा क्या यह(दोबारा ज़िन्दा होना) बरहक़ नहीं ? तो कहेंगे क्यों नहीं ? पवर्रदिगार की क़सम (बिल्कुल बरहक़ है)ख़ुदा फ़रमायेगा अब कुफ्र के बदले (जो दुनिया में करते थे) अज़ाब के (मज़े) चखो (३०)रुकू—३

जिन लोगों ने ख़ुदा के रुबरु हाज़िर होने को झूठ समझा वह घाटे में आ गये यहाँ तक कि जब उन पर क़यामत नागहाँ आ मौजूद होगी तो बोल उठंगे कि (हाय) इस तक़सीर पर अफ़सोस है जो हमने क़यामत के बारे में की और वह अपने (आमाल के) बोझ अपनी पीठों पर उठाये हुऐ होंगे, देखो जो बोझ यह उठा रहे हैं बहुत बुरा है (३१) और दुनिया की ज़िन्दगी तो एक खेल और मशग़ूला है और बहुत अच्छा घर तो आख़िरत का घर है (यानी) उन के लिये जो (ख़ुदा से) डरते हैं क्या तुम समझते नहीं (३२) हमको मालूम है कि इन (काफ़िरों) की बातें तुम्हें रन्ज पहुँचाती हैं (मगर) यह तुम्हारी तकज़ीब नहीं करती, बल्कि ज़ालिम ख़ुदा की आयतों से इन्कार करते हैं (३३) और तुम से पहले भी पैग़म्बर झुठलाये जाते रहे तो वह तकज़ीब और ऐज़ा पर सब्र करते रहे यहाँ तक कि उन

के पास हमारी मदद पहुँती रही और ख़ुदा की बातों को कोई भी बदलने वाला नहीं और तुमको पैग़म्बरों (के एहवाल) की ख़बरें पहुँच चुकी हैं (तो तुम भी) सब्र से काम लो (३४) और अगर उनकी रुगर्दानी तुम पर शाक गुज़रती है तो अगर ताक़त हो तो ज़मीन में कोई सुरंग ढूंढ निकालो या आस्मान (तलाश करो) फिर उनके पास कोई मौजज़ा लाओ और अगर ख़ुदा चाहता तो सबको हिदायत पर जमा कर देता पस तुम हर्गिज़ नादानों में न होना (३५) बात यह है कि (हक़ को) क़बूल वही करते हैं जो सुनते भी हैं और मुर्दों को तो ख़ुदा (क़यामत ही) को उठायेगा फिर उसीकी तरफ़ लौटकर जायेंगे (३६)* और कहते हैं कि उन पर उनके पर्वरदिगार के पास से कोई निशानी क्यों नाज़िल नहीं हुई कह दो ख़ुदा निशानी उतारने पर क़ादिर है लेकिन अकसर लोग नहीं जानते (३७) और ज़मीन में जो चलने फिरने वाला (हैवान) या दो परों से उड़ने वाला जानवर है उनकी भी तुम लोगों की तरह जमायतें हैं हमने किताब (यानी लौहे मेहफ़ूज़) में किसी चीज़ (के लिखने) में कोताही नहीं की फिर सब अपने पर्वरदिगार की तरफ़ जमा किये जायेंगे (३८) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया वह बहरे और गूँगे हैं (इसके इलावा) अन्धेरे में (पड़े हुऐ) जिसको ख़ुदा चाहे गुमराह कर दे और जिसे चाहे सीधे रस्ते पर चला दे (३९) कहो (काफ़िरो) भला देखो तो अगर तुम पर ख़ुदा का अज़ाब

* दलीले रोशन यानी कुरान

आ जाये या क़यामत आ मौजूद हो तो क्या तुम (ऐसी हालत में) खुदा के सिवा किसी और को पुकारोगे ? अगर सच्चे हो तो बताओ (४०) (नहीं) बल्कि मुसीबतके वक्त तुम उसी को पुकारते हो तो जिस दुःख के लिये उसे पुकारते हो वह अगर चाहता है तो उसको दूर कर देता है और जिनको तुम शरीक बनाते हो उस वक्त उन्हें भूल जाते हो (४१) रुकू—४

और हमने तुम से पहले बहुत सी उम्मतों की तरफ़ पैग़म्बर भेजे (फिर उनकी ना फ़रमानियों के सबब) हम उन्हें सख्तियों में पकड़ते रहे ताकि आजिज़ी करें (४२) तो जब उन पर हमारा अज़ाब आता रहा क्यों नहीं आजिज़ी करते रहे मगर उनके तो दिल ही सख्त हो गये थे और जो वह काम करते थे, शैतान उन को उनकी निगाहों में आरास्ता कर दिखाता था (४३) फिर जब उन्होंने उस नसीहत को जो उनको की गई थी फ़रामोश कर दिया तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाजे खोल दिये यहाँ तक कि जब उन चीज़ों से जो उनको दी गई थीं खूब खुश हो गये तो हमने उनको नागहाँ पकड़ लिया और वह उस वक्त मायूस होकर रह गये (४४) ग़रज़ ज़ालिम लोगों की जड़ काट दी गई और सब तारीफ़ खुदाये रब्बुल आलमीन ही को सज़ावार है (४५) (उन काफ़िरों से कहो कि भला देखो तो अगर खुदा तुम्हारे कान और आँखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर लगा दे तो खुदा के सिवा कौनसा माबूद है जो तुम्हें यह नैयमतें फिर बख्शे ? देखो हम किस किस तरह अपनी आयतें बयान

करते हैं फिर भी यह लोग रुगर्दानी करते हैं (४६) कहो कि

भला बताओ तो अगर तुम पर ख़ुदा का अज़ाब बेख़बरी में या ख़बर आने के बाद आये तो क्या ज़ालिम लोगों के सिवा कोई और भी हलाक होगा ? (४७) और हम जो पैग़म्बरों को भेजते रहे हैं तो खुशख़बरी सुनाने और डराने को फिर जो शख़्श ईमान लाये और नेकूकार हो जाये तो ऐसे लोगों को न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वह अन्दोहनाक होंगे (४८) और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया उनकी ना फ़रमानियों के सबब उन्हें अज़ाब होगा (४९) कह दो कि मैं तुम से यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह तआला के ख़ज़ाने हैं और न (यह कि) मैं ग़ैब जानता हूं और न तुम से यह कहता हूं कि मैं फ़रिश्ता हूं मैं तो सिर्फ़ उस हुक्म पर चलता हूं जो मुझे (ख़ुदा की तरफ़ से) आता है, कह दो कि भला अन्धा और आँख वाला बराबर होते हैं, तो फिर तुम ग़ौर क्यों नहीं करते (५०) रुकू—५

और जो लोग ख़ौफ़ रखते हैं कि अपने पर्वरदिगार के रुबरु हाज़िर किये जायेंगे और जानते हैं कि उसके सिवा न तो उनका कोई दोस्त होगा और न सिफ़ारिश करने वाला उनको इस क़ुरान के ज़रिये से नसीहत कर दो ताकि परहेजग़ार बनें (५१) और जो लोग सुब्हो शाम अपने पर्वरदिगार से दुआ करते हैं (और) उसकी ज़ात के तालिब हैं उनको अपने पास से मत निकालो उनके हिसाब (आमाल) की जवाबदही तुम पर कुछ नहीं और तुम्हारे हिसाब की जवाबदही उन पर कुछ नहीं (पस ऐसा न करना) अगर उनको निकालोगे तो ज़ालिमों में

हो जाओगे (५२) और इसी तरह हमने बाज़ लोगों की बाज़ से आज़माईश की है कि (जो दौलतमन्द है वह ग़रीबों की निस्बत) कहते हैं कि क्या यही लोग हैं जिन पर ख़ुदा ने हम में से फ़ज़ल किया है (ख़ुदा ने फ़रमाया) भला ख़ुदा शुक्र करने वालों से वाक़िफ़ नहीं ? (५३) और जब तुम्हारे पास ऐसे लोग आया करें जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो (उन से) सलाम अलैकम कहा करो, ख़ुदा ने अपनी ज़ाते (पाक) पर रहमत को लाज़िम कर लिया है कि जो कोई तुम में से नादानी से बुरी हरकत कर बैठे फिर उसके बाद तौबा कर ले और नेकूकार हो जाये तो वह बख़्शने वाला मेहरबान है (५४) और इसी तरह हम अपनी आयतें खोल खोल कर बयान करते हैं ताकि तुम लोग उन पर अमल करो) और इस लिये कि गुन्हैगारों का रस्ता ज़ाहिर हो जाये (५५)—रुकू—६

(ऐ पैग़म्बर कफ़्फ़ार से) कह दो कि जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, मुझे उनकी इबादत से मना किया गया है (यह भी) कह दो कि मैं तुम्हारी ख़्वाहिशों की पैरवी नहीं करूंगा ऐसा करूं तो गुमराह हो जाऊँ और हिदायत याफ़्ता लोगों में न रहूं (५६) कह दो कि मैं तो अपने पर्वरदिगार की दलीले रोशन पर हूं और तुम उसकी तकज़ीब करते हो जिस चीज़ (यानी अज़ाब) के लिये तुम जल्दी कर रहे हो वह मेरे पास नहीं है (ऐसा) हुक्म अल्लाह ही के अख़्तियार में है वह सच्ची बात बयान फ़रमाता है और वह सब से बेहतर फ़ैसला

करने वाला है (५७) कह दो कि जिस चीज के लिये तुम जल्दी कर रहे हो अगर वह मेरे अख़्तियार में होती तो मुझ में और तुम में फ़ैसला हो चुका होता और ख़ुदा ज़ालिमों से खूब वाक़िफ़ है (५८) और उसी के पास ग़ैब की कुन्जियाँ हैं जिनको उसके सिवा कोई नहीं जानता और उसे दरियाओं की सब चीज़ों का इल्म है और कोई पत्ता नहीं झड़ता मगर वह इसको जानता है और ज़मीन के अन्धेरों में कोई दाना और कोई हरी और कोई सूखी चीज़ नहीं है मगर किताबे रोशन में लिखी हुई है (५९)❀ और वही तो है जो रात को (सोने की हालत में) तुम्हारी रुह क़ब्ज़ कर लेता है और जो कुछ तुम दिन में करते हो उसकी ख़बर रखता है फिर तुम्हें दिन को उठाता है ताकि (यही सिलसिला जारी रख कर ज़िन्दगी की) मौईयन मुद्दत पूरी कर दी जाये फिर तुम (सब) को उसी की तरफ़ लौट कर जाना है (उस रोज़) वह तुमको तुम्हारे अमल जो तुम करते हो एक एक करके बतायेगा (६०)—रुकू—७

और वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है और तुम पर निगेह बान मुक़र्रर किये रखता है यहाँ तक कि जब तुम में से किसी को मौत आती है तो हमारे फ़रिश्ते उस की रुह क़ब्ज़ कर लेते हैं और वह किसी तरह की कोताही नहीं करते (६१)❀ फिर

आयत ५९—यानी लौहे मेहफ़ूज़ में

आयत ६१:—हदीसे शरीफ़ में आया है कि रुह क़ब्ज़ करने वाले फ़रिश्ते मददगार इज़राईल के १४ होते हैं ७ फरिश्ते अज़ाब के और ७ रहमत के, इज़राईल रुह निकाल कर जो मोमिन है रहमत के

(क़यामत के दिन तमाम) लोग अपने मालिके बर हक़ खुदाय तआला के पास वापिस बुला लिये जायेंगे, सुन लो कि हुक्म उसी का है और वह निहायत जल्द हिसाब लेने वाला है (६२)❀ कहो भला तुम्हें जंगलों और दरियाओं के अन्धेरों से कौन मुख़्लिसी देता है (जब) कि तुम उसे आजिज़ी और नयाज़ पेह-नाई से पुकारते हो (और कहते हो) अगर ख़ुदा हमें इस (तंगी) से नजात बख़्शे तो हम उस के बहुत शुक्र गुज़ार होंगे (६३) कह दो ख़ुदा ही तुमको इस (तंगी) और हर सख़्ती से नजात बख़्शता हैं फिर (तुम) उस के साथ शरीक करते हो (६४) कह दो कि वह इस पर भी कुदरत रखता है कि तुम पर ऊपर की तरफ़ से या तुम्हारे पांव के नीचे से अज़ाब भेजे या तुम्हें

फ़रिश्तों को देता है और जो काफ़िर है अज़ाब के फरिश्तों को देता है—

आयत ६२—रिवायत है कि अल्लाह तआला मिक़दार दूध दोहने एक बकरी के हिसाब तमाम आदमियों और जिन्नों का करेगा बावजूद बहुत होने आदमियों और जिन्नों के और बावजूद कसरते आमाल उनके और यह दलील है ऊपर कमाले कुदरत के—

आयत ६३:—क़ुराने शरीफ़ में अक्सर काफ़िरों को अज़ाब का वायदा दिया यहाँ खोल दिया कि अज़ाब वह भी है जो अगली उम्मतों पर आया आस्मान से या ज़मीन से और यह भी है कि आदमियों को आपस में लड़ा दे और उनको क़त्ल या कैद या ज़लील करे हज़रते सलम ने समझ लिया कि इस उम्मत पर यही होगा, अक्सर अज़ाबे अलीम और अज़ाबे महीन और अज़ाबे शदीद और अजाबे अज़ीम, इन्हीं बातों को फ़रमाया है और आख़िरत का अज़ाब भी है उन पर जो काफ़िर ही मरे—

फ़िर्क़ा फ़िर्क़ा कर दे और एक को दूसरे से लड़ा कर (आपस) की लड़ाई का मज़ा चखा दे, देखो हम अपनी आयतों को किस तरह बयान करते हैं ताकि यह लोग समझें (६५)* और इस (क़ुरान) को तुम्हारी क़ौम ने झुठलाया हालाँकि वह सरासर हक़ है कह दो कि मैं तुम्हारा दारोग़ा नहीं हूँ (६६) हर ख़बर के लिये एक वक्त मुक़र्रर है और तुम को अन्क़रीब मालूम हो जायेगा (६७) और जब तुम ऐसे लोगों को देखो जो हमारी आयतों के बारे में बेहूदा बकवास कर रहे हों तो उन से अलग हो जाओ यहां तक कि और बातों में मसरुफ़ हो जाओ और अगर (यह बात) तुम्हें शैतान भुला दे तो याद आने पर ज़ालिम लोगों के साथ न बैठो (६८) और परहेज़गारों पर उन लोगों के हिसाब की कुछ भी जवाब दही नहीं, हाँ नसीहत, ताकि वह भी परहेज़गार हों (६९) और जिन लोगों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना रखा है और दुनिया की जिन्दगी ने उन को धोखे में डाल दिया है उन से कुछ काम न रखो, हाँ, इस क़ुरान के ज़रिये से नसीहत करते रहो ताकि (क़यामत के दिन) कोई अपने आमाल की सजा में हलाकत में न डाला जाये (उस रोज़) ख़ुदा के सिवा न तो कोई उस का दोस्त होगा और न सिफ़ारिश करने वाला और अगर वह हर चीज़ (जो रुऐ ज़मीन में है बतौर) मुआविज़ा देना चाहे तो वह उस से क़बूल न हो, यही लोग हैं कि अपने आमाल के वबाल में हलाकत में डाले गये. उन के लिये पीने को खौलता हुआ पानी और दुख देने वाला अज़ाब है इस लिये कि कुफ़्र करते हो (७०) रुकू—८

कहो क्या हम ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ को पुकारें जो न हमारा भला कर सके न बुरा और जब हम को ख़ुदा ने सीधा रस्ता दिखा दिया तो क्या हम उल्टे पाँव फिर जायें (फिर हमारी ऐसी मिसाल हो) जैसे किसी को जिन्नात ने जंगल में भुला दिया हो (और वह) हैरान (हो रहा हो) और उस के कुछ रफ़ीक़ हों जो उस को रस्ते की तरफ़ बुलायें कि हमारे पास चला आ, कह दो कि रस्ता तो वही है जो ख़ुदा ने बताया है और हमें तो यह हुक्म मिला है कि हम ख़ुदाये रब्बुल आलमीं के फ़रमाँबरदार हों (७१) और (यह भी) कि नमाज़ पढ़ते रहो और उस से डरते रहो और वही तो है जिस के पास तुम जमा किये जाओगे (७२) और वही तो है जिस ने आस्मानों और ज़मीन को तदबीर से पैदा किया है और जिस दिन वह फ़रमायेगा कि हो जा तो (हश्र बर्पा) हो जायेगा उस का इर्शाद बरहक़ है और जिस दिन सूर फूंका जायेगा (उस दिन) उसी की बादशाहत होगी वही पोशीदा और ज़ाहिर (सब) का जानने वाला है और वही दाना और ख़बरदार है (७३) और (वह वक्त भी याद करने के लायक़ है) जब इब्राहीम ने अपने बाप अज़र से कहा कि तुम बुतों को क्या माबूद बनाते हो मैं देखता हूँ कि तुम और तुम्हारी क़ौम सरीह गुमराही में हो (७४) और हम इस तरह इब्राहीम को आस्मानों और ज़मीन के अजायबात दिखाने लगे ताकि वह ख़ूब यक़ीन करने वालों में हो जायें (७५) (यानी) जब रात ने उन को (पर्दये तारीकी से) ढाँप लिया (तो) आस्मान में एक सितारा नज़र पड़ा कहने लगे यह मेरा

पर्वरदिगार है जब वह ग़ायब हो गया तो कहने लगे मुझे ग़ायब हो जाने वाले पसन्द नहीं (७६) फिर जब चान्द देखा कि चमक रहा है कहने लगे यह मेरा पर्वरदिगार है लेकिन जब वह भी छुप गया तो बोल उठे कि अगर मेरा पर्वरदिगार भी मुझे सीधा रस्ता नहीं दिखायेगा तो मैं उन लोगों में हो जाऊंगा जो भटक रहे हैं (७७) फिर जब सूरज को देखा कि जगमगा रहा है तो कहने लगे मेरा पर्वरदिगार यह है यह सब से बड़ा है मगर जब (वह) भी ग़रुब हो गया तो कहने लगे लोगो जिन चीज़ों को तुम ख़ुदा का शरीक बताते हो मैं उन से बेज़ार हूँ (७८) मैंने सब से यकसू हो कर अपने तईं उसी ज़ात की तरफ़ मुतवज्जोह किया जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया है और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ (७९) और उन की क़ौम उन से बहस करने लगी तो उन्होंने कहा कि तुम मुझ से ख़ुदा के बारे (क्या) बहस करते हो उस ने तो मुझे सीधा रस्ता दिखा दिया है और जिन चीज़ों को तुम उनका शरीक बनाते हो मैं उनसे नहीं डरता हाँ जो मेरा पर्वरदिगार कुछ चाहे, मेरा पर्वरदिगार अपने इल्म से हर चीज़ पर अहाता किये हुए है, क्या तुम ख़्याल नहीं करते (८०) भला मैं उन चीज़ों से जिन को तुम (ख़ुदा का) शरीक बनाते हो क्यों कर डरुं जब कि तुम उस से नहीं डरते कि ख़ुदा के साथ शरीक बनाते हो जिस की उस ने कोई सनद नाज़िल नहीं की अब दोनों फ़रीकों में से कौन सा फ़रीक लें (और जमीयते ख़ातिर) का मुस्तहक़ है, अगर समझ रखते हो (तो बताओ) (८१) जो लोग ईमान लाये और अपने ईमान को

(शिर्क के) ज़ुल्म से मखलूत नहीं किया उन के लिये अम्न और (जमीयते ख़ातिर) है और वही हिदायत पाने वाले हैं (८२)
रुकू—९

और यह हमारी दलील थी जो हमने इब्राहीम को उन की क़ौम के मुक़ाबले में अता की थी, हम जिस को चाहते हैं दर्जे बलन्द कर देते हैं, बेशक तुम्हारा पर्वरदिगार दाना और ख़बर-दार है (८३) और हमने उनको याक़ूब और इस्हाक़ बख़्शे (और) सब को हिदायत दी और पहले नूह को भी हिदायत दी थी और उनकी औलाद में से दाऊद और सुलेमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारुन को भी, और हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं (८४) और ज़करिया और यैहिया और ईसा और अलियास को भी, यह सब नेकू कार थे (८५) और इस्माईल और अलियास और यूनिस और लूत को भी और उन सबको जहान के लोगों पर फ़ज़ीलत बख़्शी थी (८६) और बाज़बाज़ को उनके बाप दादा और औलाद और भाइयों में से भी, और उनको बरगज़ीदा भी किया था और सीधा रस्ता भी दिखाया था (८७) यह ख़ुदा की हिदायत है इस पर अपने बन्दों में से जिसे चाहे चलाये और अगर वह लोग शिर्क करते तो जो अमल वह करते थे सब ज़ाया हो जाते (८८) यह वह लोग थे जिनको हमने किताब और हुक्म (शरीयत) और नबव्वत अता फरमाई थी अगर यह (कफ़्फ़ार) इन बातों से इन्कार करें तो हमने उन पर (ईमान लाने के लिये) ऐसे

लोग मुक़र्रर कर दिये हैं कि वह उन से कभी इन्कार करने वाले नहीं (८९) यह वह लोग है जिन को ख़ुदा ने हिदायत दी थी तो तुम उन्हीं की हिदायत की पैरवी करो कह दो कि मैं तुम से इस (क़ुरान) का सिला नहीं मांगता यह तो जहान के लोगों के लिये मेहज़ नसीहत है (९०) रुकू—१०

और उन लोगों ने ख़ुदा की क़दर जैसी जाननी चाहिये थी न जानी जब उन्होंने कहा कि ख़ुदा ने इन्सान पर वही और किताब वग़ैरा कुछ भी नाज़िल नहीं किया, कहो कि जो किताब मूसा ले कर आये थे उसे किसने नाज़िल किया था जो लोगों के लिये नूर और हिदायत थी और जिसे तुम ने अलहैदा अलहैदा औराक़ पर (नक़ल) कर रखा है उन के कुछ हिस्से को तो ज़ाहिर करते हो और अक्सर को छुपाते हो, और तुमको वह बातें सिखाई गईं जिनको न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप दादा, कह दो (उस किताब को) ख़ुदा ही ने (नाज़िल किया था) फिर उन को छोड़ दो कि अपनी बेहूदा बकवास में खेलते हैं (९१) और (वैसी ही) यह किताब है जिसे हमने नाज़िल किया है जो अपने से पहली (किताबों) की तसदीक़ करती है और जो इस लिये (नाज़िल की गई है) कि तुम मक्के और उसके आस पास के लोगों को आगाह कर दो और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं और वह अपनी नमाज़ों की (पूरी) ख़बर रखते हैं (९२) और उस से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो ख़ुदा पर

झूठ इफ़्तिरा करे या यह कहे कि मुझ पर वही आई है हालाँकि

उस पर कुछ भी वही न आई हो और जो यह कहे कि जिस तरह की किताब ख़ुदा ने नाज़िल की है इस तरह की मैं भी बना लेता हूं और काश तुम उन ज़ालिम (यानी मुश्रिक) लोगों को उस वक्त देखो जब मौत की सख़्तियों में (मुब्तिला) हों और फ़रिश्ते (उनकी तरफ़ अज़ाब के लिये) हाथ बढ़ा रहे हों कि निकालो अपनी जानें, आज तुम को ज़िल्लत के अज़ाब की सज़ा दी जायेगी इस लिये कि तुम ख़ुदा पर झूठ बोला करते थे और उसकी आयतों से सर कशी करते थे(९३)और जैसा हमने तुमको पहली दफ़ा पैदा किया था ऐसा ही आज (अकेले अकेले) हमारे पास आये और जो (मालो-मता) हमने तुम्हें अता फ़रमाया था वह सब अपनी पीठ पीछे छोड़ आये और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे सिफ़ारशियों को भी नहीं देखते जिनकी निस्बत तुम ख़याल करते थे कि वह तुम्हारे (शफ़ी) और (हमारे) शरीक हैं (आज) तुम्हारे आपस के सब ताल्लुक़ात मुन्क़ता हो गये और जो दावे तुम किया करते थे सब जाते रहे (९४) रुकू—११

बेशक ख़ुदा ही दाने और गुठली को फाड़ कर (उन से दरख़्त वग़ैरा उगाता है)वही जानदारको बेजानसे निकालने वाला है,यही तो ख़ुदा है फिर तुम कहाँ बहके फिरते हो(९५)वही (रात के अन्धेरे से) सुबह की रोशनी फाड़ निकालता है और उसी ने रात को (मूजिबे) आराम (ठैहराया) और सूरज और चान्द को (ज़रायाय) शुमार बनाया है यह ख़ुदा के (मुक़र्रर किये हुए) अन्दाज़े हैं जो ग़ालिब और इल्म वाला है (९६) और वही तो

है जिसने तुम्हारे लिये सितारे बनाये ताकि दरियाओं और जंगलों के अंधेरों में उन से रस्ते मालूम करो अक़्ल वालों के लिये हमने अपनी आयतें खोल खोल कर बयान कर दी हैं (९७) और वही तो है जिसने तुमको एक शख़्स से पैदा किया फिर (तुम्हारे लिये) एक ठैहरने की जगह है और एक सिपुर्द होने की, समझने वालों के लिये हमने अपनी आयतें खोल खोल कर बयान कर दी हैं (९८) और वही तो है जो आस्मान से मैहँ बरसाता है फिर हम ही (जो मैहँ बरसाते हैं) इस से हर तरह की रोईदगी उगाते हैं फिर उसमें से सरसब्ज़ कौंपलें निकालते हैं और इन कौंपलों में से एक दूसरे के साथ जुड़े हुऐ दाने निकालते हैं और खजूर के गाभे में से लटके हुऐ गुच्छे और अंगूरों के बाग़ और जैतून और अनार जो एक दूसरे से मिलते जुलते भी हैं और नहीं भी मिलते, यह चीजें जब फलती हैं तो उनके फलों पर और (जब पकती हैं) तो उनके पकने पर नज़र करो, उन में उन लोगों के लिये जो ईमान लाते हैं (क़ुदरते) ख़ुदा की बहुत सी निशानियां हैं (९९) और लोगों ने जिन्नों को ख़ुदा का शरीक ठैहराया हालांकि उनको उसी ने पैदा किया और बेसमझे झूठ (बोहतान) उसके लिये बेटे और बेटियां बना खड़ी की, वह उन बातों से जो उस की निस्बत बयान करते हैं पाक है और (उस की शान) उनसे बलन्द है (१००) रुकू—१२

(वही) आस्मानों और जमीन का पैदा करने वाला है उस के औलाद कहां से हो जबकि उसकी बीवी नहीं है और उसने

हर चीज़ को पैदा किया है और वह हर चीज़ से बा ख़बर है (१०१) यही (औसाफ़ रखने वाला) ख़ुदा तुम्हारा पवर्रदिगार है उसके सिवा कोई माबूद नहीं (वही हर चीज का पैदा करने वाला है तो फिर उसी की इबादत करो और वह हर चीज़ का निगरान है (१०२) (वह ऐसा है) कि निगाहें उसका इदराक नहीं कर सकतीं और वह निगाहों का इदराक कर सकता है और वह भेद जानने वाला ख़बरदार है (१०३) (ऐ मोहम्मद उनसे कह दो) कि तुम्हारे (पास) पवर्रदिगार की तरफ़ से (रोशन) दलीलें पहुंच चुकी हैं तो जिसने (उनको आंख खोल कर,देखा उसने अपना भला किया और जो अन्धा बना रहा उस ने अपने हक़ में बुरा किया और मैं तुम्हारा निगैहबान नहीं हूं (१०४) और हम इस तरह अपनी आयतें फेर फेर कर बयान करते हैं ताकि काफ़िर यह न कहें कि तुम (यह बातें एहले किताब से) सीखे हुए हो और ताकि समझने वालों के लिये तशरीह कर दें (१०५) और जो हुक्म तुम्हारे पवर्रदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास आता है उसकी पैरवी करो उस (पर्वर-दिगार के सिवा कोई माबूद नहीं और मुश्रिकों से किनारा कर लो (१०६) और अगर ख़ुदा चाहता तो यह लोग शिर्कत करते और (ऐ पैग़म्बर) हम ने तुम को इन पर निगैहबान मुक़र्रर नहीं किया और न तुम उन के दारोग़ा हो (१०७) और जिन लोगों को यह मुश्रिक ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं, उन को बुरा न कहना, यह भी कहीं ख़ुदा को बे अदबी से बे समझे बुरा न कह

बैठें, इस तरह हम ने हर एक फ़िरके के आमाल (उन की नज़रों में) अच्छे कर दिखाये, फिर उन को अपने पवर्रदिगार की तरफ़ लौट कर जाना है तब वह उन को बतायेगा कि वह क्या क्या किया करते थे (१०८) और यह लोग ख़ुदा की सख़्त क़समें खाते हैं कि अगर उन के पास कोई निशानी आये तो वह उस पर ज़रूर ईमान ले आयें कह दो कि निशानियां तो सब ख़ुदा ही के पास हैं और (मोमिनो) तुम्हें क्या मालूम है (यह तो ऐसे बद बख़्त हैं) कि इन के पास निशानियां आ भी जायें तब भी ईमान न लायें (१०९) और हम उनके दिलों और आंखों को उलट देंगे (तो) जैसे यह उस (क़ुरान) पर पहली दफ़ा ईमान नहीं लायें (वैसे फिर न लायेंगे) और न उनको छोड़ देंगे कि अपनी सरकशी में बहकते रहें (११०) रुकू—१३

—:o:—

आठवाँ पारा—वलौअन्नना (सूर-ऐ-अनआम)

और अगर हम उन पर फ़रिश्ते भी उतार देते और मुर्दे भी उन से गुफ़्तगू करने लगते और हम सब चीज़ों को उनके सामने ला मौजूद भी कर देते तो भी यह ईमान लाने वाले न थे, इल्ला माशा अल्लाह बात यह है कि अक्सर नादान हैं (१११) और इस तरह हमने शैतान (सीरत) इन्सानों और जिन्नों को हर पैग़म्बर का दुश्मन बना दिया था, वह धोखा देने के लिये एक

दूसरे के दिल में मुलम्मे की बातें डालते रहते थे और अगर तुम्हारा पर्वरदिगार चाहता तो वह ऐसा न करते तो उनको और जो कुछ यह इफ़्तिरा करते हैं उसे छोड़ दो (११२) और (ऐसे काम) इस लिये भी (करते थे) कि जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल उनकी बातों पर माईल हों और वह उन्हें पसन्द करें और जो काम वह करते थे वही करने लगें (११३) (कहो) क्या मैं ख़ुदा के सिवा और मुन्सिफ़ तलाश करूं ? हालांकि उसने तुम्हारी तरफ़ वाज़ेह उल मतलब किताब भी भेजी है और जिन लोगों को हमने किताब (तौरात) दी है वह जानते हैं कि वह तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से बरहक़ नाज़िल हुई है तो तुम हर्गिज़ शक करने वालों में न होना (११४) और तुम्हारे पर्वरदिगार की बातें सच्चाई और इन्साफ़ में पूरी हैं, उसकी बातों को कोई बदलने वाला नहीं और वह सुनना जानता है (११५) अक्सर लोग जो ज़मीन पर आबाद हैं, गुमराह हैं अगर तुम उनका कहना मान लोगे तो वह तुम्हें ख़ुदा का रस्ता भुला देंगे यह मेहज़ ख़याल के पीछे चलते और निरे अटकल के तीर चलाते हैं (११६) तुम्हारा पर्वरदिगार उन लोगों को खूब जानता है जो उसके रस्ते से भटके हुऐ हैं और उनसे भी खूब वाक़िफ़ है जो रस्ते पर चल रहे हैं (११७) तो जिस चीज़ पर (ज़ाबह के वक्त) ख़ुदा का नाम लिया जाये अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान रखते हो तो खा लिया करो (११८) और सबब क्या है कि जिस चीज़ पर ख़ुदा का नाम लिया जाये

तुम उसे न खाओ हालांकि जो चीज़ें उसने तुम्हारे लिये हराम ठहरा दी हैं वह एक एक करके बयान कर दी हैं, बेशक उनको नहीं खाना चाहिये अगर उस सूरत में कि उनके खाने के लिये नाचार हो जाओ और बहुत से लोग बेसमझे तभी अपने नफ़्स की ख़्वाहिशों से, कुछ शक नहीं कि ऐसे लोगों को जो ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई हद से बाहर निकल जाते हैं और तुम्हारा पर्वरदिगार खूब जानता है (११९) और ज़ाहिरी और पौशीदा (हर तरह का) गुनाह तर्क कर दो, जो लोग गुनाह करते हैं वह अन्क़रीब अपने किये की सज़ा पायेंगे (१२०) और जिस चीज़ पर ख़ुदा का नाम न लिया जाये उसे मत खाओ कि उसका खाना गुनाह है और शैतान (लोग) अपने रफ़ीकों के दिलों में यह बात डालते हैं कि वह तुम से झगड़ा करें और अगर तुम लोग उनके कहे पर चले तो बेशक तुम भी मुशरिक हुऐ (१२१)—रुकू—१४

भला जो पहले मुर्दा था फिर हमने उसको ज़िन्दा किया और उसके लिये रोशनी कर दी जिसके ज़रिये वह लोगों में चलता फिरता है कहीं उस शख़्स जैसा हो सकता है जो अन्धेरे में पड़ा हुआ हो और उस से निकल ही न सके, इसी तरह काफ़िर जो अमल कर रहे हैं वह उन्हें अच्छे मालूम होते हैं (१२२) और इसी तरह हमने हर बस्ती में बड़े-बड़े मुजरिम पैदा किये कि उनमें मक्कारियां करते हैं और जो मक्कारियां यह करते हैं, उनका नुक़सान उन्हीं को है और (इससे) बे ख़बर हैं

(१२३) और जब उनके पास कोई आयत आती है तो कहते हैं कि जिस तरह की रसालत ख़ुदा के पैग़म्बरों को मिली है जब तक उसी तरह की रसालत हमको न मिले हम हर्गिज़ ईमान नहीं लायेंगे, इसको ख़ुदा ही ख़ूब जानता है (कि रसालत का कौन सा महल है) और वह अपनी पैग़म्बरी किसे अता फ़रमाये जो लोग जुर्म करते हैं उनको ख़ुदा के हाँ ज़िल्लत और शदीद अज़ाब होगा इस लिये कि मक्कारियाँ करते थे (१२४) तो जिस शख़्स को ख़ुदा चाहता है कि हिदायत बख़्शे, उस का सीना इस्लाम के लिये खोल देता है और जिसे चाहता है कि गुमराह करे उसका सीना तंग और घुटा हुआ कर देता है गोया वह आस्मान पर चढ़ रहा है, इस तरह ख़ुदा, उन लोगों पर, जो ईमान नहीं लाते अज़ाब भेजता है (१२५) और यही तुम्हारे पवर्रदिगार का सीधा रस्ता है जो लोग ग़ौर करने वाले हैं उन के लिये हमने अपनी आयतें खोल-खोलकर बयान कर दी हैं (१२६) उनके लिये, उनके आमाल के सिले में पवर्रदिगार के हाँ सलामती का घर है और वही उनका दोस्तदार है (१२७) और जिस दिन वह सब (जिन व इन्स) को जमा करेगा (और फ़र-मायेगा) कि ऐ गिरोहे जिन्नात, तुमने इन्सानों से बहुत (फ़ायदे) हासिल किये, तो जो इन्सानों में उनके दोस्तदार होंगे कहेंगे कि ऐ हमारे पवर्रदिगार, हम एक दूसरे से फ़ायदा उठाते रहे और आख़िर उस वक्त को पहुंच गये जो तूने हमारे लिये मुक़र्रर किया था, ख़ुदा फ़रमायेगा (अब) तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ है, हमेशा

उसमें (जलते) रहेंगे, मगर जो ख़ुदा चाहे, बेशक तुम्हारा पवर्रदिगार दाना और खबरदार है (१२८) और इसी तरह हम ज़ालिमों को उनके आमाल के सबब जो वह करते थे, एक दूसरे पर मुसल्लत कर देते हैं (१२९) रुकू—१५

ऐ जिन्नों और इन्सानों की जमायत क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैग़म्बर नहीं आते रहे जो मेरी आयतें तुमको पढ़-पढ़कर सुनाते और उस दिन के सामने मौजूद होने से डराते थे वह कहेंगे कि (पवर्रदिगार) हमें अपने गुनाहों का इक़रार है, इन लोगों को दुनिया की ज़िन्दगी ने धोखे में डाल रखा था- और (अब) ख़ुद अपने ऊपर गवाही दी कि कुफ़्र करते थे (१३०) (ऐ मोहम्मद) यह (जो पैग़म्बर आते रहे और किताबें नाज़िल होती रहीं तो) इसलिये कि तुम्हारा पवर्रदिगार ऐसा नहीं कि बस्तियों को ज़ुल्म से हलाक करदे और वहां के रहने वालों को (कुछ भी) ख़बर न हो (१३१) और सब लोगों के बलिहाज आमाल दर्जे (मुक़र्रर) हैं और जो काम यह लोग करते हैं ख़ुदा उनसे बेख़बर नहीं (१३२) और तुम्हारा पवर्रदिगार बेपर्वाह और साहिबे रहमत है, अगर चाहे (तो ऐ बन्दो) तुम्हें नाबूद कर दे और तुम्हारे बाद जिन लोगों को चाहे तुम्हारा जानशीन बना दे जैसा कि तुमको भी दूसरे लोगों की नस्ल से पैदा किया है (१३३) कुछ शक नहीं कि जो वायदा तुम से किया जाता है वह (वक़्त में) आने वाला है और तुम (ख़ुदा को) मग़लूब नहीं कर सकते (१३४) कह दो कि लोगो ! तुम अपनी जगह अमल किये जाओ

मैं (अपनी जगह) अमल किये जाता हूँ, अन्क़रीब तुम को मालूम हो जायेगा कि आख़िरत में (बहिश्त) किसका घर होगा, कुछ शक नहीं कि मुश्रिक नजात नहीं पाने के (१३५) और (यह लोग) ख़ुदा ही की पैदा की हुई चीजों यानी खेती और चौपायों में ख़ुदा का भी एक हिस्सा मुक़र्रर करते हैं और अपने ख़्याले (बातिल) से कहते हैं कि यह (हिस्सा) तो ख़ुदा का और यह हमारे शरीकों (यानी बुतों) का तो जो हिस्सा उनके शरीकों का होता है वह तो ख़ुदा की तरफ़ नहीं जा सकता और जो हिस्सा ख़ुदा का होता है वह उनके शरीकों की तरफ़ जा सकता है, यह कैसा बुरा इन्साफ़ है (१३६)॥ इसी तरह बहुत से मुश्रिकों को उनके शरीकों ने उनके बच्चों को जान से मार डालना अच्छा कर दिखाया है ताकि उन्हें हलाकत में डाल दें और उनके दीन को उन पर ख़िल्त मिल्त कर दें, और अगर ख़ुदा चाहता तो वह ऐसा न करते तो उनको छोड़ो कि वह जानें और उनका झूठ (१३७)

आयत १३६:—इस आयत में ख़ुदा मुशरिकों की मजम्मत करता है कि उन्होंने तरह २ कुफ्रो शिर्क की रस्में निकाली हैं जिनमें औरों को ख़ुदा का शरीक बनाया है, मखलूक़ तो ख़ुदा की और उसी में से एक हिस्सा ख़ुदा का मुक़र्रर करते यानी ज़राअत और फलों और चौपायों में एक हिस्सा ख़ुदा का और दूसरा हिस्सा बुतों का ठैहराते, इससे बढ़कर यह हिमाक़त कि बुतों को ख़ुदा पर मुक़द्दम रखते, इस तरह से कि अगर बुतों के हिस्से में से कुछ खर्च हो जाता तो उतना ख़ुदा के हिस्से में से ले लेते और अगर ख़ुदा के हिस्से में से कुछ ख़र्च हो जाता तो बुतों के हिस्से में से न लेते और कहते कि ख़ुदा ग़नी है और बुत फ़क़ीर—

और अपने ख़याल से यह भी कहते हैं कि यह चारपाये और खेती मना है, इसे उस शख़्स के सिवा जिसे हम चाहें कोई न खाये और (बाज़) चारपाये ऐसे हैं कि उनकी पीठ पर चढ़ना मना कर दिया गया है और बाज़ मवेशी ऐसे हैं जिन पर (ज़ब्ह करते वक्त) ख़ुदा का नाम नहीं लेते, सब ख़ुदा पर झूठ है वह अन्क़रीब उनके झूठ का बदला देगा (१३८) और यह भी कहते हैं कि जो बच्चा इन चारपायों के पेट में है वह ख़ास हमारे मर्दों के लिये है और हमारी औरतों को (उसका खाना) हराम है और अगर वह बच्चा मरा हुआ हो तो सब उसमें शरीक हैं (यानी उसे मर्द और औरतें सब खायें) अन्क़रीब ख़ुदा उनको उनके ढकोसलों की सज़ा देगा बेशक वह हिकमत वाला ख़बरदार है (१३९)* जिन लोगों ने अपनी औलाद को बेवक़ूफ़ी से बेसमझी से क़त्ल किया और ख़ुदा पर इफ़्तिरा करके उसकी अता फ़रमाई हुई रोज़ी को हराम ठैहराया वह घाटे में पड़ गये वह बे शुब्हा गुम-राह हैं और हिदायत याफ़्ता नहीं हैं (१४०)* रुकू—१६

और ख़ुदा ही तो है जिसने बाग़ पैदा किये, छत्रियों पर

---

*आयत १३९:—मुश्रिकों ने एक यह भी रस्म निकाल रखी थी कि अगर जानवर ज़ब्हा किया जाये और उसके पेट में से बच्चा निकले तो अगर बच्चा ज़िन्दा निकले तो मर्दों को उसका खाना हलाल और औरतों को हराम और अगर वह मुर्दा निकले तो मर्दों और औरतों सब के लिये हलाल।

*आयत १४०:—बेटियों को मारना रवा रखते थे और यह सख़्त वबाल है।

चढ़ाये हुऐ भी और जो छत्रियों पर नहीं चढ़ाये हुए वह भी, और खजूर और खेती जिनके तरह-तरह के फल होते हैं और ज़ैतून और अन.र जो (बाज़ बाज़ हालतों में) एक दूसरे से मिलते जुलते हैं और (बाज बातों) में नहीं मिलते, जब यह चीजें फलें तो उनके फल खाओ और जिस दिन फल तोड़ो और खेती काटो तो ख़ुदा का हक़ भी उसमें से अदा करो और बेजा नउड़ाना कि ख़ुदा बेजा उड़ाने वालों को दोस्त नहीं रखता (१४१) और चार-पायों मैं बोझ उठाने वाले (यानी बड़े-बड़े) भी पैदा किये और ज़मीन से लगे हुए (यानी छोटे-छोटे) भी (पस) ख़ुदा का दिया हुआ रिज़्क़ खाओ और शैतान के क़दमों पर न चलो यह तुम्हारा सरीह दुश्मन है (१४२) (यह बड़े छोटे चारपाये) आठ क़िस्म के हैं, दो दो भेड़ों में से और दो दो बकरियों में से (यानी एक एक नर और एक एक मादा) ऐ पैग़म्बर (उनसे) पूछो कि (ख़ुदा ने) दोनों (के) नरों को हराम क़िया है या दोनों की मादीनों को, या जो बच्चा मादीनों के पेट में लिपट रहा हो उसे, अगर समझो तो मुझे सनद से बताओ (१४३) और दो दो ऊँटों में से और दो दो गायों में से (उनके बारे में भी उनसे) पूछो कि (ख़ुदा ने) दोनों (के) नरों को हराम कर दिया है या दोनों (की) मादीनों को, या जो बच्चा मादीनों के पेट में लिपट रहा हो उसको, भला जिसवक्त ख़ुदाने तुमको इसका हुक्मदिया था तुम उसवक्त मौजूद थे ? तो उस शख़्स से ज़्यादा कौन ज़ालिम है जो ख़ुदा पर झूठ इफ़्तिरा करे ताकि अज़ राहे बेदानिशी लोगों को गुमराह करे,

कुछ शक नहीं कि ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता (१४४) रुकू—१७

कहो कि जो एहकाम मुझ पर नाज़िल हुए हैं मैं उनमें कोई चीज़ जिसे खाने वाला खाये हराम नहीं पाता, बजुज़ इसके कि वह मरा हुआ जानवर हो या बहता लहू या सूर का गोश्त कि यह सब नापाक हैं, या कोई गुनाह की चीज़ हो कि उस पर खुदा के सिवा, किसी और का नाम लिया गया हो और अगर कोई मजबूर हो जाये लेकिन न तो नाफ़रमानी करे और न हद से बाहर निकल जाये तो तुम्हारा पवर्रदिगार बख़्शाने वाला मेहरबान है (१४५) और यहूदियों पर हमने सब नाखुन वाले जानवर हराम कर दिये थे और गायों और बकरियों से उनकी चर्बी हराम कर दी थी, सिवा उसके जो उनकी पीठ पर लगी हो या ओझड़ी में हो या हड्डी में मिली हो, यह सज़ा हमने उनको उनकी शरारत के सबब दी थी और हम तो सच कहने वाले हैं (१४६) और अगर यह लोग तुम्हारी तक़ज़ीब करें तो कह दो तुम्हारा पवर्र-दिगार साहिबे रहमत वसी है मगर इसका अज़ाब गुन्हेगार

*आयत १४६:—जिन चीज़ों को ख़ुदा ने यहूद पर उनके ज़ुल्म और शरारत व सरकशी के सबब हराम कर दिया था, वह एक तो वह जानवर थे जिन की उंगलियां फैली हुई हों जैसे ऊन्ट और शुतर मुर्ग़ और बत्तख या खुर वाले जानवर जैसे गोरख़र या पन्जे वाले परिन्दे और गाय बकरी की चर्बी सिवाय उस चर्बी के जो उनकी पीठ पर या ओझड़ी में लगी हुई हो जैसे हाथ, पांव या पस्ली, या आंख या कान की चर्बी कि यह हलाल थी।

लोगों से नहीं लूंगा (१४७) जो लोग शिर्क करते हैं वह कहेंगे कि अगर ख़ुदा चाहता तो हम (शिर्क न करते) और न हमारे बाप दादा (शिर्क करते) और न हम किसी चीज को हराम ठैहराते इसी तरह उन लोगों ने तकज़ीब की थी जो उनसे पहले थे यहां तक कि हमारे अज़ाब का मज़ा चख कर रहे, कह दो कि तुम्हारे पास कोई सनद है (अगर है) तो उसे हमारे सामने निकालो, तुम मेहज़ ख़्याल के पीछे चलते और अटकल के तीर चलाते हो (१४८) कह दो कि ख़ुदा ही की हुज्जत ग़ालिब है अगर वह चाहता तो वह तुम सबको हिदायत दे देता (१४९) कहो कि अपने गवाहों को लाओ जो बतायें कि ख़ुदा ने यह चीज़ें हराम की हैं फिर अगर वह (आकर) गवाही दें तो तुम नके साथ गवाही न देना और न उन लोगों की ख्वाहिशों की पैरवी करना जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और (बुतों को) अपने पवर्रदिगार के बराबर ठैहराते हैं (१५०) रुकू—१८

कहो कि (लोगो) आओ मैं तुम्हें वही चीज़ें पढ़कर सुनाऊँ जो तुम्हारे पवर्रदिगार ने तुम पर हराम की हैं (उनकी निस्बत उसने इस तरह इर्शाद फ़रमाया है) कि किसी चीज़ को ख़ुदा का शरीक न बनाना और माँ बाप से (बद-सलूकी न करना बल्कि) सलूक करते रहना और नादारी (के अन्देशे) से अपनी औलाद को क़त्ल न करना क्योंकि तुमको और उनको हमीं रिज़्क़ देते हैं और बे हयाई के काम ज़ाहिर हों या पोशीदा उन

के पास न फटकना × और किसी जान (वाले) को जिसके क़त्ल को ख़ुदा ने हराम कर दिया है, क़त्ल न करना, मगर जायज तौर पर (यानी जिसका शरीयत हुक्म दे) इन बातों का वह तुम्हें इर्शाद फ़रमाता है ताकि तुम समझो (१५१) और यतीम के माल के पास भी न जाना, मगर ऐसे तरीक़ से कि बहुत हो पसन्दीदा हो यहाँ तक किवह जवानी को पहुंच जाये और माप और तोल इन्साफ़ के साथ पूरी पूरी किया करो हम किसी को तकलीफ़ नहीं देते मगर उसकी ताक़त के मुताबिक़ और जब (किसी की निस्बत) कोई बात कहो तो इन्साफ़ से कहो तो वह (तुम्हारा) रिश्तेदार ही हो और ख़ुदा के अहद को पूरा करो, इन बातों काख़ुदा तुम्हें हुक्म देताहै ताकि तुम नसीहत हासिल करो (१५३) और यह कि मेरा सीधा रस्ता यही है तो तुम इसी पर चलना और और रस्तों पर न चलना कि (उन पर चल कर) ख़ुदा के रस्ते से अलग हो जाओ, इन बातों का ख़ुदा तुम्हें हुक्म देता है ताकि तुम परहेजगार बनो (१५३) (हाँ) फिर (सुन लो कि) हम ने मूसा को किताब इनायत की थी ताकि उन लोगों पर जो नेकूकार हैं इनायत पूरी कर दें और (उस में) हर चीज़ का

× मुराद बेहयाई से ज़ना है और उसके असबाब, सरदार अरब के आदमियों से पोशीदा ज़ना करते थे और ओबाश और बेबाक ज़ाहिर ज़ना करते थे, हक़ तआला ने फ़रमाया कि नजदीक न जाओ तुम दोनों क़िस्म के ज़ना के। बाज़ों ने कहा है कि बेहयाई जाहिर की शराब है और बातिन की ज़ना है या वेहयाई ज़ाहिर की जो हाथ पाँव से हो और बातिन की जो नीयत से हो।

बयान (है) और हिदायत (है) और रहमत (है) ताकि (उनकी उम्मत के) लोग अपने पर्वरदिगार के रूबरु हाज़िर होने का यक़ीन करें (१५४) रुकू—१६

और (ऐ कुफ़्र करने वालो) यह किताब भी हमीं ने उतारी है बरकत वाली, तो इसकी पैरवी करो और ख़ुदा से डरो ताकि तुम पर मेहरबानी की जाये (१५५) (और इस लिये उतारी है) कि (तुम यूं न) कहो कि हम से पहले दो ही गिरोहों पर किताबें उतरीं थीं और हम उनके पढ़ने से(माज़ूर)और बेख़बर थे (१५६) या (यह न) कहो कि अगर हम पर भी यह किताब नाज़िल होती तो हम उन लोगों की निस्बत कहीं सीधे रस्ते पर होते, सो तुम्हारे पास तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से दलील और हिदायत और रहमत आ गई है, तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो ख़ुदा की आयतों की तकज़ीब करे, और उनसे (लोगों) को फेरे, जो लोग हमारी आयतों से फिरते हैं उस फेरने के सबब हम उनको बुरे अज़ाब की सज़ा देंगे (१५७) यह इसके सिवा और किस बात के मुन्तज़िर हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आयें या खुद तुम्हारा पर्वरदिगार आये या तुम्हारे पर्वरदिगार की कुछ निशानियाँ आ जायें, मगर जिस रोज़ तुम्हारे पर्वरदिगार की निशानियाँ आ जायेंगी तो जो शख़्स पहले ईमान नहीं लाया होगा उस वक्त उसे ईमान लाना कुछ फ़ायदा नहीं देगा या अपने ईमान (की हालत) में नेक अमल नहीं किये होंगे तो गुनाहों से तौबा करना मुफ़ीद न होगा, ऐ पैग़म्बर उन

से कह दो कि तुम भी इन्तज़ार करो हम भी इन्तज़ार करते हैं (१५८) जिन लोगों ने अपने दीन में (बहुत से) रस्ते निकाले और कई कई फ़िर्क़े हो गये उनको तुम से कुछ काम नहीं, उन का काम ख़ुदा के हवाले फिर जो कुछ वह करते रहे, वह उनको (सब) बतायेगा (१५९) जो कोई (ख़ुदा के हज़ूर) नेकी लेकर आयेगा। उसको वैसी दस नेकियाँ मिलेंगी, और जो बुराई लायेगा उसे सज़ा वैसी ही मिलेगी और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा (१६०) कह दो कि मुझे मेरे पर्वरदिगार ने सीधा रस्ता दिखा दिया है (यानी दीने सही) मज़हब इब्राहीम का जो एक (ख़ुदा) ही की तरफ़ के थे और मुशरिकों में से न थे (१६१) (यह भी) कह दो कि मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरा जीना और मेरा मरना सब ख़ुदाये रब्बुल आलमीन ही के लिये है (१६२) जिसका कोई शरीक नहीं और मुझको इसी बात का हुक्म मिला है और मैं सब से अव्वल फ़रमाँ बरदार हूं (१६३) कहो क्या मैं ख़ुदा के सिवा और पर्वरदिगारकी तलाश करूं और वही तो हर चीज़ का मालिक है और जो कोई (बुरा) काम करता है तो उसका ज़रर उसी को होता है और कोई शख़्स किसी (के गुनाह) का बोझ नहीं उठायेगा फिर तुम सब को अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौट कर जाना है तो जिन जिन बातों में इख़्तिलाफ़ किया करते थे वह तुम को बतायेगा (१६४) और वही तो है जिसने ज़मीन में तुमको अपना नायब बनाया एक दूसरे पर दर्जे बलन्द किये ताकि जो कुछ उसने तुम्हें बख़्शा

है उसमें तुम्हारी आज़माईश करे, बेशक तुम्हारा पर्वरदिगार जल्द अज़ाब देने वाला है और बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान भी है (१६५) रुकू—२०

—:०:—

(७) सूर—ऐ—आराफ़

यह सूरत मक्के में उतरी, इसमें २०६ आयतें और २४ रुकू हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

अलिफ़, लाम, मीम, स्वाद (१)❀ (ऐ मोहम्मद) यह किताब (जो) तुम पर नाज़िल हुई है इससे तुम को तंग दिल नहीं होना चाहिये, यह (नाज़िल इस लिये हुई है) कि तुम इसके ज़रिये से (लोगों को) डर सुनाओ (और यह) ईमान वालों के लिये नसीहत है (२) (लोगो) जो (किताब) तुम पर तुम्हारे पर्वरदिगार के हाँ से नाज़िल हुई है उसकी पैरवी

❀आयत १ :—यह हरुफ़ नाम क़ुरान का है, या नाम इस सूरत का है, या हर्फ़ इशारत है तरफ़ इस्मे इलाही के, अलिफ़ से मुराद अल्लाह तआला है, और लाम लतीफ़ और मीम से मलिक और स्वाद से सबूर या मायनी यह हैं कि मैं अल्लाह हूं, दाना कि जुदा करता हूं हक़ को बातिल से !

करो और इसके सिवा और रफ़ीकों की पैरवी न करो (और) तुम कम ही नसीहत क़बूल करते हो (३) और कितनी ही बस्तियाँ हैं कि हमने तबाह कर डालीं, जिन पर हमारा अज़ाब (या तो रात को आता था) जब कि वह सोते थे, या (दिन को) जब वह क़ैलूला (दोपहर को आराम) करते थे (४) तो जिस वक्त उन पर अज़ाब आता था उनके मुंह से यही निकलता था कि (हाय) हम (अपने ऊपर) जुल्म करते रहे (५) तो जिन लोगों की तरफ़ पैगम्बर भेजे गये हम उनसे भी पुरसिश करेंगे और पैग़म्बरों से भी पूछेंगे (६) फिर अपने इल्म से उनके हालात बयान करेंगे और हम कहीं ग़ायब तो नहीं थे (७) और उस रोज़ (आमाल का) तुलना बरहक़ है तो जिन लोगों के (अमलों के) वज़न भारी होंगे वह तो नजात पाने वाले हैं (८) और जिन लोगों के (अमलों के) वज़न हल्के होंगे तो यही लोग हैं जिन्होंने अपने तईं ख़सारे में डाला इस लिये कि हमारी आयतों के बारे में बेइन्साफ़ी करते थे (९) और हमीं ने ज़मीन में तुम्हारा ठिकाना बनाया और उसमें तुम्हारे लिये सामाने मआशियत पैदा किये (मगर) तुम कम ही शुक्र करते हो (१०) रुकू—१

और हमीं ने तुम को (इब्तिदा में मिट्टी से पैदा किया, फिर तुम्हारी सूरत शक्ल बनाई फिर फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे सजदा करो तो सब ने) सजदा किया लेकिन इब्लीस, कि वह सजदा करने वालों में शामिल

न हुआ (११) (ख़ुदा ने) फ़रमाया जब मैंने तुझको हुक्म दिया तो किस चीज़ ने तुझे सजदा करने से बाज़ रखा, उसने कहा कि मैं उससे अफ़ज़ल हूं, मुझे तूने आग से पैदा किया है और उसे मिट्टी से बनाया है (१२)* फ़रमाया, तू (बहिश्त से) उतरजा, तुझे शायान नहीं कि यहाँ ग़रूर करे, बस निकल जा तू ज़लील है (१३) उसने कहा मुझे उस दिन तक मोहलत अता फ़रमा जिस दिन लोग (क़ब्रों से) उठाये जायेंगे (१४) फ़रमाया (अच्छा) तुझको मोहलत दी जाती है (१५) (फिर) शैतानने कहा कि मुझे तूने मलाऊन किया ही है, मैं भी तेरे सीधे रास्ते पर उनको गुमराह करने के लिये बैठूँगा (१६) फिर उनके आगे और पीछे से और दायें से और बायें से (ग़रज़ हर तरफ़ से) आऊँगा (और उनकी राह मारूँगा) और तू उनमें से अक्सर को शुक्र गुज़ार नहीं पायेगा (१७) ख़ुदा ने फ़रमाया निकल जा तू यहाँ से पाजी मरदूद जो लोग उनमें से तेरी पैरवी करेंगे मैं (उनको और तुमको जहन्नुम में डालकर) तुम सब से जहन्नुम को भर दूँगा (१८) और (हमने) आदम से कहा कि तुम और तुम्हारी बीवी बहिश्त में रहो सहो और

आयत १२ :—शैतान ने मुग़ाल्ता दिखाया कि क़यास किया, आग की बेहतरीका ख़ाक से, इस वास्ते कि आग ख़यानत करने वाली है कि जो चीज़ उसमें डाल दें उसे नेस्तो नाबूद कर देती है और ख़ाक अमानत दार, और आग मुत्तकब्बिर है और ख़ाक मुतवाज़ो है और ख़ाक नक़्श पज़ीर है और आग नक़्शा सोज़।

जहाँ से चाहो (और जो) चाहो नोश जान करो मगर उस दरख़्त के पास न जाना वर्ना गुन्हेगार हो जाओगे (१६)❀ तो शैतान दोनों को बहकाने लगा ताकि उनके सतर की चीज़ें जो उनसे पोशीदा थीं खोल दे और कहने लगा कि तुमको तुम्हारे पर्वरदिगार ने दरख़्त से सिर्फ़ इस लिये मना किया है कि तुम फ़रिश्ते न बन जाओ या हमेशा जीते न रहो (२०)❀ और उन से क़सम खाकर कहा कि मैं तो तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह हूं (२१) ग़रज़ मरदूद ने धोखा देकर उनको (मआसियत की तरफ़)खींच ही लिया, जब उन्होंने उस दरख़्त (के) फल को खा लिया तो उनकी सतर की चीज़ें खुल गईं और वह बहिश्त के (दरख्तों के) पत्ते तोड़ तोड़ कर अपने ऊपर चिपकाने (और सतर छुपाने) लगे, तब उनके पर्वरदिगार ने उनको पुकारा कि क्या मैंने तुझको उस दरख़्त (के पास जाने) से मना नहीं किया था और जिता नहीं दिया था कि शैतान तुम्हारा खुल्लम खुल्ला दुश्मन है (२२) दोनों अर्ज़ करने लगे कि ऐ हमारे पर्वरदिगार हमने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और (अगर तू) हमें नहीं बख़्शेगा और हम पर रहम नहीं करेगा तो हम तबाह हो जायेंगे (२३) (ख़ुदा ने) फ़रमाया तुम अब बहिश्त से उतर जाओ (अब से) तुम एक

❀आयत १६:—दरख़्त गेहूं है या अंगूर है या लहसन है।

❀आयत २०:—शैतान ने जाना कि गुनाह किये से लिबास इनका छिनेगा, पस चाहा कि गुनाह में डाले कि लिबास इनका दूर होवे और सतर के खुलने से फ़रिश्तों में रुसवा होवें।

दूसरे के दुश्मन हो और तुम्हारे लिये एक वक्त (खास.) तक ज़मीन पर ठिकाना और (ज़िन्दगी का) सामान कर दिया गया है (२४) (यानी) फ़रमाया कि इसी में तुम्हारा जीना होगा और इसी में मरना और इसी में से (क़यामत) को (ज़िन्दा करके) निकाले जाओगे (२५) रुकू—२

ऐ बनी आदम हमने तुम पर पोशाक उतारी कि तुम्हारा सतर ढांके और (तुम्हारे बदन को ज़ीनत दे) और (जो) परहेज़गारी का लिबास (है) वह सबसे अच्छा है। यहा खुदा की निशानियाँ हैं ताकि लोग नसीहत पकड़ें (२६)※ ऐ बनी आदम (देखना) कहीं शैतान तुम्हें बहका न दे जिस तरह तुम्हारे माँ बाप को (बहका कर) बहिश्त से निकलवा दिया और उनसे उनके कपड़े उतरवा दिये ताकि उनके सतर को खोल कर दिखा दे वह और उसके भाई तुमको ऐसी जगह से देखते रहते हैं जहाँ से तुम उनको नहीं देख सकते, हमने शैतानों को उन्हीं लोगों का रफ़ीक़ बनाया जो ईमान नहीं रखते (२७) और जब कोई बेहयाई का काम करते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने बुज़ुर्गोंको इसीतरह करतेदेखा है और खुदाने भी हमको यही हुक्म

※आयत २६:—यानी लिबास तवाज़ोह का कि पशमीना है और मोटा कपड़ा है वह बेहतर है, लिबासे नर्म और मुकल्लफ़ से कि तसव्वुर करने वाले पहनते हैं बाज़ों ने कहा है कि लिबास परहेज़गारी का बन्दगी है कि ऐब आदमी के पोशीदा होते हैं या पाकदामनी और हया और खौफ़े इलाही है।

दिया है कह दो कि ख़ुदा बेहयाई के काम करने का हुक्म हर्गिज़ नहीं देता भला तुम ख़ुदा की निस्बत ऐसी बातें क्यों कहते हो जिसका तुम्हें इल्म नहीं (२८) कह दो कि पर्वरदिगार ने तो इन्साफ़ करने का हुक्म दिया है और यह कि हर नमाज़ के वक्त सोधे (क़िब्ले की तरफ़) रुख किया करो और ख़ास उसी की इबादत करो और उसी को पुकारो, उसने जिस तरह तुमको इब्तिदा में पैदा किया था उसी तरह तुम फिर पैदा होगे (२९) एक फ़रीक़ को तो उसने हिदायत दी और एक फ़रीक़ पर गुम-राही साबित हो चुकी इन लोगों ने ख़ुदा को छोड़ कर शैतानों को रफ़ीक़ बना लिया और समझते (यह) हैं कि हिदायत याब हैं (३०) ऐ बनी आदम हर नमाज़ के वक्त अपने तेईं मुज़ै-ईयन किया करो और खाओ और पियो और बेजा न उड़ाओ कि ख़ुदा बेजा उड़ाने वालों को दोस्त नहीं रखता (३१) रुकू—३

पूछो तो कि जो ज़मीन और (आराईश) खाने (पीने) की पाकीज़ा चीज़ें ख़ुदा ने अपने बन्दों के लिये पैदा की हैं उनको हराम किसने किया है ? कह दो कि यह चीज़ें दुनिया की ज़िन्दगी में ईमान वालों के लिये हैं और क़यामत के दिन ख़ास उन्हींका हिस्सा होंगी इसी तरह ख़ुदा अपनी आयतें समझने वालों के लिये खोल खोल कर बयान फ़रमाता है (३२) कह दो कि मेरे पर्वरदिगार ने तो बेहयाई की बातों को ज़ाहिर हों या पोशीदा और गुनाह को और नाहक़ ज़्यादती करने को हराम किया है और उसको भी कि तुम किसी को ख़ुदा का शरीक बनाओ जिस

की उसने कोई सनद नाज़िल नहीं की और उसको भी ख़ुदा के बारे में ऐसी बातें कहो जिनका तुम्हें कुछ इल्म नहीं (३३) और हर एक फ़िर्के के लिये (मौत का) एक वक्त मुक़र्रर है जब वह वक्त आ जाता है तो न तो एक घड़ी देर कर सकते हैं न जल्दी (३४) ऐ बनी आदम हम तुम को यह नसीहत (हमेशा करते रहे हैं कि) जब हमारे पैग़म्बर तुम्हारे पास आया करें और हमारी आयतें तुमको सुनाया करें (तो उन पर ईमान लाया करो) जो शख़्स (उन पर ईमान लाकर) ख़ुदा से डरता रहेगा और अपनी हालत दुरुस्त रखेगा तो ऐसे लोगों को न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मनाक होंगे (३५) और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे सरताबी की वह दोज़खी हैं कि हमेशा उसमें जलते रहेंगे (३६) तो इससे ज़्यादा ज़ालिम कौन है जो ख़ुदा पर झूठ बान्धे या उसकी आयतों को झुठलाये उनको उनके नसीब का लिखा मिलता ही रहेगा यहाँ तक कि जब उनके पास हमारे भेजे हुऐ (फ़रिश्ते) जान निकालने आयेंगे तो कहेंगे कि जिनको तुम ख़ुदा के सिवा पुकारा करते थे वह (अब) कहाँ हैं ? वह कहेंगे (मालूम नहीं) कि वह हम से (कहाँ) ग़ायब हो गये और इक़रार करेंगे कि बेशक वह काफ़िर थे (३७) तो ख़ुदा फ़रमायेगा कि जिन्नों और इन्सानों की जो जमायतें तुमसे पहले हो गुज़री हैं उन ही के साथ तुम भी दाख़िले जहन्नुम हो जाओ, जब एक जमायत (वहाँ) जा दाख़िल होगी तो अपनी (मज़हबी) बहन (यानी अपनी जैसी दूसरी जमायत)

पर लानत करेगी यहाँ तक कि जब सब उसमें दाखिल हो जायेंगे तो पिछली जमायत पहली की निस्बत कहेगी ऐ हमारे पर्वरदिगार ! इन ही लोगों ने हमको गुमराह किया था, तू इन को आतिशे जहन्नुम का दुगना अज़ाब दे, खुदा फ़रमायेगा (कि) तुम सबको दुगना (अज़ाब दिया जायेगा) मगर तुम नहीं जानते (३८) और पहली जमायत पिछली से कहेगी कि तुम को हम पर कुछ भी फ़ज़ीलत न हुई तो जो अमल तुम किया करते थे उसके बदले में अज़ाब के मज़े चखो (३९) रुकू—४

जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उन से सरताबी की उनके लिये न आस्मान के दरवाज़े खोले जायेंगे और न वह बहिश्त में दाखिल होंगे यहाँ तक कि ऊँट सूई के नाके में से न निकल जाये और गुन्हेगारों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं (४०) ऐसे लोगों के लिये (नीचे) बिछौना भी (आतिश) जहन्नुम का होगा और ऊपर से ओढ़ना भी (उसी का) और ज़ालिमों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं (४१) और जो लोग ईमान लाये और अमले नेक करते रहे और हम (अमलों के लिये) किसी शख्स को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ नहीं देते, ऐसे ही लोग एहले बहिश्त हैं (कि) उसमें हमेशा रहेंगे (४२) और जो कीने उनके दिलों में होंगे हम सब निकाल डालेंगे उनके (महलों के) नीचे नहरें बह रही होंगी और वह कहेंगे कि खुदा का शुक्र है जिसने हमको वहाँ का रस्ता दिखाया और अगर खुदा हमको रस्ता न दिखाता तो हम रस्ता

न पा सकते, बेशक हमारे पर्वरदिगार के रसूल हक़ बात लेकर आये थे और (उस रोज़) मनादी करदी जायेगी कि तुम उन आमाल के सिले में जो (दुनिया में) करते थे इस बहिश्त के वारिस बना दिये गये हो (४३) और एहले बहिश्त दोज़खियों से पुकार कर कहेंगे कि जो वायदा हमारे पर्वरदिगार ने हम से किया था हमने तो उसे सच्चा पा लिया, भला जो वायदा तुम्हारे पर्वरदिगार ने तुमसे किया था तुमने भी उसे सच्चा पाया ? वह कहेंगे हाँ ! तो (उस वक्त) उनमें एक पुकारने वाला पुकार देगा कि बे इन्साफ़ों पर ख़ुदा की लानत (४४) जो ख़ुदा की राह से रोकते और उसमें कजा ढूंढते और आख़िरत से इन्कार करते थे (४५) इन दोनों यानी बहिश्त और दोज़ख़ के दरमियान (ऐराफ़ नाम) एक दीवार होगी और ऐराफ़ पर कुछ आदमी होंगे जो सब को उनकी सूरतों से पहचान लेंगे तो वह पहले बहिश्त को पुकार कर कहेंगे कि तुम पर सलामती हो यह लोग (अभी) बहिश्त में दाख़िल तो नहीं हुऐ होंगे मगर उमीद रखते होंगे (४६)* और जब उनकी निगाहें पलट

*आयत ४६:—ऐराफ़-बाज़ों ने कहा है कि ऐराफ़ एक टीला है मुश्के सफ़ेद का, इब्ने अब्बास ने कहा है कि ऐराफ़ बलन्द मकान है, पुले सरात से ज्यादा कि वहाँ अमीर हमज़ा और अब्बास और अली और जाफ़र तैयार खड़े होंगे, ख़ुदा के दोस्तों को बचानेंगे, ताज़गी और सफ़ैदी मूंह की से, और दुश्मनों को सियाही मूँह की से, और बाज़ों ने कहा है कि ऊपर ऐराफ़ के वह कोई होंगे कि नेकियां और बदियाँ उनकी बराबर होंगी, या वह होंगे कि एक दोनों माँ और बाप से राज़ी होंगे और एक नाख़ुश होगा।

कर पहले दोज़ख की तरफ जायेंगी तो अर्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे पर्वरदिगार हमको ज़ालिम लोगों के साथ (शामिल) न कीजियो (४७) रुकू—५

और एहले ऐराफ़ (काफ़िर) लोगों को जिन्हें उनकी सूरतों से शिनाख़्त करते होंगे पुकारेंगे और कहेंगे (कि आज) न तो तुम्हारी जमायत ही तुम्हारे कुछ काम आई और न तुम्हारा तकब्बुर ही (सूदमन्द हुआ) (४८) (फिर मोमिनों की तरफ़ इशारा करके कहेंगे) क्या यह वही लोग हैं जिनके बारे में तुम क़सम खाया करते थे कि ख़ुदा अपनी रहमत से उनकी दस्तगीरी नहीं करेगा (तो मोमिनों) तुम बहिश्त में दाख़िल हो जाओ तुम्हें कुछ खौफ़ नहीं और न तुम को कुछ रन्जो अन्दोह होगा (४९) और वह दोज़खी बहिश्तियों से (गिड़-गिड़ा कर) कहेंगे कि किसो क़दर हम पर पानी बहाओ या जो रिज़्क़ तुम्हें इनायत फ़रमाया है उसमें से (कुछ हमें भी दे दो) वह जवाब देंगे कि ख़ुदा ने बहिश्त का पानी और रिज़्क़ काफ़िरों पर हराम कर दिया है (५०) जिन्होंने अपने दीन को तमाशा और खेल बना रखा था और दुनिया की ज़िन्दगी ने उनको धोखे में डाल रखा था तो जिस तरह यह लोग उस दिन के आने को भूले हुऐ और हमारी आयतों से मुन्किर हो रहे थे उसी तरह आज हम भी उन्हें भुला देंगे (५१) और हमने उनके पास किताब पहुंचा दी है जिस को इल्मो दानिश के साथ खोल खोल कर बयान कर दिया है (और) वह मोमिन लोगों के लिये हिदायत और रहमत

है (५२) क्या यह लोग उसके वायद-ऐ अज़ाब के मुन्तज़िर हैं, जिस दिन वह वायदा आ जायेगा तो जो लोग उसको पहले से भूले हुऐ होंगे वह बोल उठेंगे किबेशक हमारे पर्वरदिगारके रसूल-हक़ लेकर आये थे भला (आज) हमारे कोई सिफ़ारिशी हैं कि हमारी सिफ़ारिश करें या हम (दुनिया में) फिर लौटा दिये जायें कि जो अमल (बद) हम (पहले) करते थे (वह न करें बल्कि) उनके सिवा और नेक (अमल) करें, बेशक उन लोगों ने अपना नुक़सान किया और जोकुछ यह इफ़्तिरा किया करते थे उनसे सब जाता रहा (५३) रुकू—६

कुछ शक नहीं कि तुम्हारा पर्वरदिगार ख़ुदा ही है जिसने आस्मानों और ज़मीन को छै दिन में पैदा किया, फिर अर्श जा बैठा, वही रात को दिन का लिबास पहनाता है कि वह उसके पीछे दौड़ता चला आता है और उसी ने सूरज और चान्द और सितारों को पैदा किया सब उसी के हुक्म के मुताबिक काम में लगे हुऐ हैं, देखो सब मख़्लूक़ भी उसी की है और हुक्म भी (उसी का) है, यह ख़ुदाये रब्बुल आलमीन बड़ी बरकत वाला है (५४) (लोगो) अपने पर्वरदिगार से आजिज़ी से और चुपके चुपके दुआयें मांगा करो, वह हद से बढ़ने वालों को दोस्त नहीं रखता (५५) और मुल्क में इस्लाह के बाद ख़राबी न करना और ख़ुदा से ख़ौफ़ करते हुऐ और उमीद रख कर दुआयें मांगते रहना, कुछ शक नहीं कि ख़ुदा की रहमत नेकी करने वालों से क़रीब है (५६) और वही तो है जो अपनी रहमत (यानी मेंह)

से पहले हवाओं को खुशख़बरी (बना कर) भेजता है, यहाँ तक कि जब वह भारी भारी बादलों को उठा लाती हैं तो हम उसको एक भरी हुई बस्ती की तरफ़ हाँक देते हैं, फिर बादल मेंह बरसाते हैं, फिर मेंह से हर तरह के फल पैदा करते हैं, इसी तरह हम मुर्दों को (ज़मीन से) ताज़ा करके निकालेंगे (यह आयात इस लिये बयान की जाती है) ताकि तुम नसीहत पकड़ो (५७) जो ज़मीन पाकीज़ा (है) उसमें से सब्ज़ा भी पर्वरदिगार के हुक्म से (नफ़ीस ही) निकलता है और जो ख़राब है उसमें से जो कुछ निकलता है सब नाक़िस होता है, इसी तरह हम आयतों को शुक्र गुज़ार लोगों के लिये फेर फेर कर बयान करते हैं (५८) रुकू—७

हमने नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो उन्होंने (उनसे) कहा कि ऐ मेरी बिरादरी के लोगो, ख़ुदा की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, मुझे तुम्हारे बारे में बड़े दिन के अज़ाब का (बहुत ही) डर है (५९) तो जो उनकी क़ौम के सरदार थे कहने लगे कि हम तुम्हें सरीह गुमराही में मुब्तिला देखते हैं (६०) उन्होंने कहा, ऐ मेरी क़ौम, मुझ में किसी तरह की गुमराही नहीं है बल्कि मैं पर्वरदिगारे आलम का पैग़म्बर हूं (६१) तुम्हें अपने पर्वरदिगार के पैग़ाम पहुंचाता हूं और तुहारी ख़ैर ख़्वाही करता हूँ और मुझको ख़ुदा की तरफ़ से ऐसी बातें मालूम हैं जिनसे तुम बेख़बर हो (६२) क्या तुमको इस बात से ताज्जुब है कि तुम में से एक शख़्स के हाथ तुम्हारे

पर्वरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास नसीहत आई ताकि वह तुमको डराये और ताकि तुम परहेज़गार बनो और ताकि तुम पर रहम किया जाये (६३) मगर उन लोगों ने उनकी तकज़ीब की तो हमने नूह को और जो उनके साथ कश्ती में सवार थे उनको तो बचा लिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था उन्हें ग़र्क़ कर दिया, कुछ शक नहीं कि वह अन्धे लोग थे (६४) रुकू—८

और इसी तरह क़ौम आद की तरफ़ उनके भाई हौद को भेजा उन्होंने कहा कि भाइयो ख़ुदा ही की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, क्या तुम डरते नहीं (६५) तो उनकी कौम के सरदार जो काफ़िर थे कहने लगे कि तुम हमें एहमक़ नज़र आते हो और हम तुम्हें झूठा ख़्याल करते हैं (६६) उन्होंने कहा कि (भाइयो) मुझ में हिमाक़त की कोई बात नहीं है बल्कि मैं रब्बुल आलमीन का पैग़म्बर हूं (६७) मैं तुम्हें ख़ुदा के पैग़ाम पहुंचाता हूं और तुम्हारा अमानतदार ख़ैर ख़्वाह हूं (६८) क्या तुमको इस बात से ताज्जुब हुआ है कि तुम में एक शख़्स के हाथ तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास नसीहत आई ताकि वह तुम्हें डराये, और याद तो करो जब उसने तुमको क़ौमे नूह के बाद सरदार बनाया और तुम्हें फैलाव ज़्यादा दिया पस ख़ुदा की नैयमतों को याद करो ताकि नजात हासिल करो (६९) वह कहने लगे क्या तुम हमारे पास इस लिये आये हो कि हम अकेले ख़ुदा ही की इबादत करें और जिन को हमारे बाप दादा पूजते चले आये हैं उनको छोड़ दें, तो अगर

सच्चे हो तो जिस चीज़ से हमें डराते हो उसे ले आओ (७०) हौद ने कहा तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से तुम पर अज़ाब और ग़ज़ब (का नाज़िल होना) मुक़र्रर हो चुका है, क्या तुम मुझ से ऐसे नामों के बारे में झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने (अपनी तरफ़ से) रख लिये हैं जिन की ख़ुदा ने कोई सनद नाज़िल नहीं की ? तो तुम भी इन्तज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तज़ार करता हूं (७१) फिर हमने हौद को और जो उनके साथ थे नजात बख़्शी और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था उनकी जड़ काट दी और वह ईमान लाने वाले थे ही नहीं (७२)—रुकू ९

और क़ौम समूद की तरफ़ उनके भाई सालैह को भेजा (तो) सालैह ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! ख़ुदा की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम्हारे पास पर्वरदिगार की तरफ़ से एक मौजज़ा आ चुका है (यानी) यही ख़ुदा की ऊन्टनी तुम्हारे लिये मौजज़ा है तो इसे (आज़ाद) छोड़ो कि ख़ुदा की ज़मीन में चरती फिरे और तुम उसे बुरी नीयत से हाथ भी न लगाना वर्ना अज़ाबे अलीम तुम्हें पकड़ लेगा (७३)* और याद

*आयत ७३:—क़ौम आद की हलाकत के बाद उसी ज़मीन में क़ौम सालैह के लोग जिनको समूद कहते हैं, नौ उमरी से हज़रत सालैह इनमें नबी हुए नसीहत करते २ बूढ़े हो गये मगर उनमें से चन्द ही शख़्स ईमान लाये, साल भर में एक रोज़ उनकी ईद का होता था, उस रोज़ उन्होंने हज़रत सालैह से कहा कि तुम अपने ख़ुदा से हमारे लिये एक मौजज़े की दुआ करो हम अपने बुतों से उसी मौजज़े की ख्वाहिश करते

तो करो जब उसने तुमको क़ौमे आद केबाद सरदार बनाया और ज़मीन पर आबाद किया कि नर्म ज़मीन से मिट्टी (ले ले कर) महल तामीर करते हो और पहाड़ों को तराश कर घर बनाते हो पस ख़ुदा की नैयमतों को याद करो और ज़मीन में फ़िसाद न करते फिरो (७४) तो उनकी क़ौम में सरदार लोग जो ग़रुर

हैं अगर तुम्हारे ख़ुदा ने हमारा मौज़ज़ा पूरा कर दिया तौ हम तुमको सच्चा जान कर ईमान ले आवेंगे, हज़रत सालैह ने उनसे पूछा क्या मौजज़ा चाहते हो जन्दा इब्न उमर एक शख्स समूद में सरदार था उसने पहाड़ में से हामला ऊन्टनी के पैदा होने का मौजज़ा चाहा, हज़रत सालैह ने दो रकअत नमाज पढ़कर दुआ मांगी उसी वक्त पत्थर हिलने लगा और मानिन्द ऊन्टनी के कि जनने के वक्त आवाज़ करती है, पत्थर ने आवाज़ की और फट गया, एक ऊन्टनी ख़ूबसूरत सुन्हैरे रंग की बरामद हुई और उसी वक्त बच्चा जना और बराबर उसी के हो गया, तमाम आदमियों ने देखा, जन्दा को ख़ुदा ने तौफ़ीक़ दी, ईमान लाया और बाकी अशराफ़ समूद के गुमराह रहे समूद के मुल्क में पानी की कशिश थी इस वास्ते हज़रत सालैह ने यह बात ठैहरा दी थी कि एक दिन ऊन्टनी पानी पिया करे और दूसरे दिन लोगों के सब जानवर, यह मौजज़े की ऊन्टनी और इसी के सबब से समूद के सब जानवर और आदमी हलाक़ होने वाले थे जानवर ऊन्टनी से अज़ाव की बू पाकर बिदक कर भाग जाते जब ऊन्टनी पानी पीती थी तो सारा कुवां खाली कर देती थी आखिर ९ आदमियों के गिरोह ने एक रोज़ उस ऊन्टनी को हलाक कर डाला, ऊन्टनी को हलाककरने के बाद हज़रत सालैहने समूद से फ़रमा दिया कि अगर वह तीन दिन के अन्दर २ बच्चे को ढून्ढ कर न ले आये तो उन पर अज़ाब आ जायेगा समूद डर कर पहाड़ की चोटी पर चढ़ गये बच्चा पत्थर में गायब हो गया आखिर एक चिन्धाड़ की आवाज़ आस्मान से आई और क्लेजा फट कर सब हलाक हो गये ।

रखते थे ग़रीब लोगों से जो उनमें से ईमान ले आये थे कहने लगे, भला तुम यक़ीन करते हो कि सालैह अपने पर्वरदिगार की तरफ़ से भेजे गये हैं ? उन्होंने कहा हां ! जो चीज़ वह देकर भेजे गये हैं हम उस पर बिला शुब्हा ईमान रखते हैं (७५) तो (सरदाराने) मग़रुर कहने लगे कि जिस चीज़ पर तुम ईमान लाये हो हम तो उसको नहीं मानते (७६) आख़िर उन्होंने ऊन्टनी (के बच्चों) को काट डाला और अपने पर्वरदिगार के हुक्म से सरकशी की और कहने लगे कि सालैह ! जिस चीज़ से तुम हमें डराते थे अगर तुम (ख़ुदा के) पैग़म्बर हो तो उसे हम पर ले आओ (७७) तो उनको भौंचाल ने आ पकड़ा और वह अपने घरों में औन्धे पड़े रह गये (७८) फिर सालैह उनसे नाउमीद होकर फिरे और कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! मैंने तुमको ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचा दिया और तुम्हारी ख़ैर-ख़्वाही की मगर तुम (ऐसे हो) कि ख़ैर-ख़्वाहों को दोस्त ही नहीं रखते (७९) और (इसी तरह जब हमने) लूत को पैग़म्बर बनाकर भेजा तो उस वक़्त उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम ऐसी बेहयाई का काम क्यों करते हो कि तुम से पहले एहले आलम में से किसी ने इस तरह का काम नहीं किया (८०) यानी ख़्वाहिशे नफ़्सानी पूरा करने के लिये औरतों को छोड़कर लौन्डों पर गिरते हो हक़ीक़त यह है कि तुम लोग हद से निकल जाने वाले हो (८१)* तो

*आयत ८१—हज़रत लूत जो हज़रत इब्राहीम ख़लील अल्लाह के भतीजे थे अपनी उम्मत के साथ जिन बस्तियों में रहते थे वह बड़ी शादाब और सर सब्ज़ थीं यानी बस्ती सदूम और अमूरा जब एक आम

उनसे इसका जवाब कुछ न बन पड़ा और बोले तो यह बोले कि इन लोगों (यानी लूत और उनके घर वालों) को अपने गाँव से निकाल दो कि यह लोग पाक बनना चाहते हैं (८२) तो हमने उनको और उनके घर वालों को तो बचा लिया मगर उनकी बीबी (न बची) कि वह पीछे रहने वालों में थी (८३) और हमने उन पर (पत्थरों का) मैंह बरसाया, सो देख लो कि गुन्हैगारों का कैसा अन्जाम हुआ (८४)—रुकू १०

और मदीन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को भेजा (तो) उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम ही की इबादत करो, उसके ख़ुदा सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं तुम्हारे पास तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से निशानी आ चुकी है तो तुम माप और तोल पूरी किया करो और लोगों को चीज़ें कम न दिया करो और ज़मीन में इस्लाह के बाद खराबी न करो अगर तुम साहिबे ईमान हो तो समझ लो कि यह बात तुम्हारे हक़ में बेहतर हैं (८५) और हर रस्ते पर मत बैठा करो कि जो शख़्स ख़ुदा पर ईमान लाता है उसे तुम डराते और राहे ख़ुदा से रोकते और उसमें कजी

कहतसाली की वज्हा से ग़ैर बस्तियों के लोग शादाबी के सबब से क़ौम लूत की बस्तियों में अक्सर आया जाया करते थे जिस की वज्हा से क़ौम लूत को तरह २ की तकलीफ़ होती थी, शैतान ने उनको बहकाया कि ग़ैर बस्तियों के लोग जो आवें उनके साथ जितने नौ उम्र लड़के हों उन लड़कों से बदफ़ेली की जावे तब लोग तुम्हारी बस्तियों में हर्गिज़ न आवेंगे, शैतान ने खूबसूरत लड़का बनकर उनको इग़लाम सिखाया बिलाख़िर उनमें यह आदत जम गई।

ढून्ढते हो, उस वक्त को याद करो जब तुम थोड़े से थे तो ख़ुदा ने तुमको जमायते क़सीर बना दिया और देख लो कि ख़राबी करने वालों का अन्जाम कैसा हुआ (८६) और अगर तुम में से एक जमायत मेरी रसालत पर ईमान ले आई है और एक जमा-यत नहीं लाई तो सब्र किये रहो, यहाँ तक कि ख़ुदा हमारे और तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर दे, और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है (८७)

नवाँ पारा—क़ाल अलमला–सूर-ऐ-अल सराफ़

(तो) उनकी क़ौम में जो लोग सरदार और बड़े आदमी थे वह कहने लगे कि शुऐब (या तो) हम तुमको और जो लोग तुम्हारे साथ ईमान लाये हैं उनको, अपने शहर से निकाल देंगे या तुम हमारे मज़हब में आ जाओ, उन्होंने कहा ख्वाह हम (तुम्हारे दीन से) बेज़ार ही हों (तो भी) ? (८८) अगर हम इसके बाद कि ख़ुदा हमें नजात बख्श चुका है, तुम्हारे मज़हब में लौट जायें तो बेशक हमने खुदा पर झूठ इफ़्तिरा बान्धा और हमें शायाँ नहीं कि हम उसमें लौट जायें, हां ! खुदा जो हमारा पर्वरदिगार है वह चाहे तो हम मजबूर है, हमारे पर्वरदिगार का इल्म हर चीज़ पर अहाता किये हुए है हमारा ख़ुदा ही पर भरोसा है, ऐ हमारे पर्वरदिगार हम में और हमारी क़ौम में

इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दे और तू सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है (८९) और उनकी क़ौम में सरदार लोग जो काफ़िर थे कहने लगे कि (भाईयो) अगर तुमने शुऐब की पैरवी की तो वेशक तुम ख़सारे में पड़ गये (९०) तो उन को भौन्चाल ने आ पकड़ा और वह अपने घरों में औन्धे पड़े रह गये (९१) (यह लोग) जिन्होंने शुऐब को तकजीब की थी ऐसे बबार्द हुऐ कि गोया वह उन में कभी आबाद हो नहीं हुऐ थे, ग़रज़ जिन्होंने ने शुऐब को झुठलाया वह ख़सारे में पड़ गये (९२ तो शुऐब उन में से निकल आये और कहा कि भाईयो मैं ने तुम को अपने पर्वरदिगार के पैग़ाम पहूंचा दिये हैं और तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही की थी तो मैं काफ़िरों पर (अज़ाब नाज़िल होने से) रन्जो ग़म क्यों करु ;(९३) रुकू—११

और हम ने किसी शहर में कोई पैगम्बर नहीं भेजा, मगर वहाँ के रहने वालों को (जो ईमान न लाये) दुखों और मुसीबतों

*आयत ९०—हज़रत शुऐब की उम्मत का अज़ाब तीन टुकड़ों में आया, यह तीनों अज़ाब इस तरह आये कि सब लोग घरों में थे तो ज़लज़ला आया जब घरों से बाहर निकले तो सख़्त गर्मी मालूम हुई और बादल की सूरत का एक टुकड़ा साया सा नज़र आया, पहले एक शख़्स उनमें से साये में गया और उसने उस साये की ठन्डक की तारीफ़ की जिसको सुनकर सब लोग उस साये में चले गये इतने में आस्मान से एक सख़्त चीख़ की आवाज़ आई और उस बादल से आग बरसी जिससे सब लोग एक दम में हलाक हो गये यह तीन क़िस्म का एक ही उम्मत का अज़ाब है ।

में मुब्तिला किया ताकि वह आजज़ी और ज़ारी करें (६४) फिर हम ने तकलीफ़ को आसूदगी से बदल दिया, जहां तक कि (माल व औलाद में) ज़्यादा हो गये वो कहने लगे कि इस तरह का रन्जो राहत हमारे बड़ों को भी पहुँचता रहा है तो हम ने उन को नागहाँ पकड़ लिया और वह अपने हाल में बे खबर थे (६५) अगर उन बस्तियों के लोग ईमान ले आते और परहेज़-गार हो जाते तो हम उन पर आस्मान और ज़मीन को बरक़ात के (दरवाज़े) खोल देते, मगर उन्हों ने तो तकज़ीब की, सो उन के आमाल की सज़ा में हम ने उन को पकड़ लिया (६६) क्या बस्तियों के रहने वाले इस से बे ख़ौफ़ हैं कि उन पर हमारा अज़ाब रात को वाक़ैय हो और वह (बे ख़बर)सोये हुऐ हो?(६७) और क्या एहले शहर इस से निडर हैं कि उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े आ नाज़िल हो और वह खेल रहे हों (६८) क्या यह लोग ख़ुदा के दाव का डर नहीं रखते (सुनलो) कि ख़ुदा के दाव से वही लोग निडर होते हैं जो ख़सारा पाने वाले हैं (६६)—रुकू १२—

क्या उन लोगों को जो एहले ज़मीन के (मर जाने के बाद) मालिक होते हैं, यह अमर मूजिबे हिदायत नहीं हुआ है कि अगर हम चाहें तो उनके गुनाहों के सबब उन पर मुसीबत डाल दें और उनके दिलों पर मोहर लगा दें कि कुछ सुन ही न सकें (१००) यह बस्तियां हैं जिन के कुछ हालात

हम तुम को सुनाते हैं और उन के पास उनके पैग़म्बर

निशानियाँ लेकर आये मगर वह ऐसे नहीं थे कि जिस चीज़ को पहले झुठला चुके हों उसे मानलें, इसी तरह खुदा काफ़िरों के दिलों पर मोहर लगा देता हैं (१०१) और हमने उनमें से अक्सरों में अहद (का निबाह) नहीं देखा और उनमें अक्सरों को (देखा तो) बदकार ही देखा (१०२) फिर उन (पैग़म्बरों) के बाद हमने मूसा को निशनियाँ देकर फ़िराऊन और उस के एयाने सलतनत के पास भेजा तो उन्होंने उनके साथ कुफ़्र किया सो देखलो कि ख़राबी करने वालों का क्या अन्जाम हुआ (१०३)❀ और मूसा ने कहा कि ऐ फ़िराऊन मैं रब्बुल आलमीन का पैग़म्बर हूँ (१०४) मुझ पर वाजिब है कि खुदा की तरफ़ से जो कुछ कहूँ सच ही कहूँ मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से निशानी ले कर आया हूँ सो बनी इसराईल को मेरे साथ जाने की रुख़सत दे दीजिये (१०५)

❀आयत १०३—हज़रत मूसा मिश्र से भाग कर मदीने में सोहबत हज़रत शुऐब की में पहुँचे और बेटी से हज़रत शुऐब की सफूरा नाम था निकाह किया, बाद इस के फिर क़सद मिश्र के जाने का किया, राह में वादिये ऐमन में पैग़म्बर हुए और असा और यदे बैज़ा दो मोजज़े मिले, हुक्मे इलाही हुआ कि मिश्र को जाओ और फ़िराऊन को ख़ुदा की तरफ़ बुलाओ और सरकशी और दावाये ख़ुदाई से मना करो, हज़रत मूसा मिश्र में आये और बाद मुद्दत के मुलाक़ात फ़िराऊन की मैयस्सर हुई—

❀आयत १०५—रिवायत है कि फ़िराऊन ने बनी इसराईल को ग़ुलाम लौन्डी अपना किया था, क़ब्ल मूसा के फ़िराऊन जब बादशाहे

फ़िराऊन ने कहा अगर तुम निशानी ले कर आये हो तो अगर सच्चे हो तो लाओ (दिखाओ) (१०६) मूसा ने अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दी तो वह उसी वक्त सरीह अज़दहा (हो गया) (१०७) और अपना हाथ बाहर निकाला तो उसी वक्त देखने वालों की नज़रों में सफ़ैद बुर्राक़ था (१०८)—रुकू–१३

तो क़ौमे फ़िराऊन में जो सरदार थे वह कहने लगे कि यह बड़ा अल्लामा जादूगर है (१०९) इसका इरादा यह है कि तुम को तुम्हारे मुल्क से निकाल दे भला तुम्हारी क्या सलाह है (११०) उन्होंने (फ़िराऊन) से कहा कि फ़िल्हाल मूसा और उसके भाई के मामले को माफ़ रखे और शहरों में नकीब रवाना कीजे (१११) कि तमाम माहिर जादूगरों को आप के पास ले आयें (११२) (चुनांचे ऐसा ही किया गया) और जादूगर फ़िराऊन के पास आ पहुंचे और कहने लगे कि अगर हम जीत गये तो हमें सिला अता किया जाये (११३) (फ़िराऊन) ने कहा हां ! (ज़रुर) और (इस के अलावा) तुम मुकरिबों में दाख़िल किये जाओगे (११४) (जब फ़रीक़ैन रोज़े मुक़र्रा

मिश्र हुआ था तो उस ने दावाये ख़ुदाई किया, बनी इसराईल ने मुताबेयत उस की क़बूल न की, फ़िराऊन ने कहा कि बाप तुम्हारा कि यूसुफ़ था ग़ुलाम ज़र ख़रीद नोकरों मेरे का था बस तुम ग़ुलाम ज़ादे मेरे हो, यह कह कर सब को ग़ुलाम किया, यहाँ तक कि मूसा आये और कहा कि बनी इसराईल को छोड़ दे—

पर जमा हुऐ तो) जादूगरों ने कहा कि मूसा या तो तुम (जादू की चीज़) डालो या हम डालते हैं (११५) (मूसा ने) कहा तुम ही डालो जब उन्होंने (जादू की चीज़ें) डालीं तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया (यानी नज़र बन्दी कर दी) और लाठियों और रस्सियों के साँप बना कर उन्हें डरा दिया और बड़ा भारी जादू दिखाया (११६) (उस वक्त) हम ने मूसा की तरफ़ वही भेजी कि तुम भी अपनी लाठी डाल दो वह फ़ौरन (साँप बन कर) जादूगरों के बनाये हुऐ सांपों को (एक एक करके) निगल जायेगी (११७) (फिर) तो हक़ साबित हो गया और जो कुछ फ़िरऔनी करते थे बातिल हो गया (११८) और वह मग़लूब हो गये और ज़लील हो कर रह गये (११९) (यह कैफ़ियत देखकर) जादूगर सजदे में गिर पड़े (१२०) और कहने लगे कि हम जहान के पर्वरदिगार पर ईमान लाये (१२१) यानी मूसा और हारुन के पर्वरदिगार पर (१२२) फ़िराऊन ने कहा कि पेशतर इस के कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं तुम इस पर ईमान ले आये ? बेशक यह फ़रेब है जो तुम ने मिल कर शहर में किया है ताकि एहले शहर को यहाँ से निकाल दो, सो अन्क़रोब (इसका) नतीजा मालूम कर लोगे (१२३)※ मैं (पहले तो) तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ

※आयत १२३:—रिवायत है कि फ़िराऊन खलक़ को अपनी बन्दगी का हुक्म करता था और आप सितारे को पूजता था और अपनी सूरत के बुत बनवा कर क़ौम को दिये थे कि उन की पूजा करो तुम

और दूसरे तरफ़ के पाँव कटवा दूँगा फिर तुम सब को सूली चढ़वा दूँगा (१२४) वह बोले कि हम तो अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं (१२५) और इस के सिवा तुम को हमारी कौन सी बात बुरी लगी है कि जब हमारे पर्वरदिगार की निशानियाँ हमारे पास आ गईं तो हम उन पर ईमान ले आये, ऐ हमारे पर्वरदिगार हम पर सब्रो इस्तक़ामत के दहाने खोल दे और हमें (मारियो तो) मुस्लमान ही मारियो (१२६)—रुकू—१४

और क़ौम फ़िराऊन में जो सरदार थे कहने लगे कि आप मूसा और उस की क़ौम को छोड़ दीजियेगा कि मुल्क में खराबी करें और आप से और आप के माबूदों से दस्तकश हो जायें वह बोला कि हम उन के लड़कों को क़त्ल कर डालेंगे और लड़कियों को ज़िन्दा रहने देंगे, बेशुब्हा हम उन पर ग़ालिब हैं (१२७)* मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा से मदद माँगो और साबित क़दम रहो, ज़मीन तो ख़ुदा की है और अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उसे मालिक बनाता है और आख़िर भला

ताकि वह बुत तुम को मुझ से नज़दीक कर दें और सरदारों ने रग़बत दिलाई फ़िराऊन को ऊपर क़स्ले मूसा के, और क़ौम उस की के—

*आयत १२७:—फ़िरऔन के बुत यह थे कि अपनी सूरत बना देता था लोगों को कि उस की पूजा करो और बेटे मारने और बेटियाँ छोड़नी पहले भी करता था, दर्मियान में छोड़ दिया था अब फिर क़सद किया—

तो डरने वालों का है (१२८)* वह बोले कि तुम्हारे आने से पहले भी हम को अज़ीयतें पहुँचती रहीं और तुम्हारे आने के बाद भी (मूसा) ने कहा कि क़रीब है कि तुम्हारा पर्वरदिगार तुम्हारे दुश्मनको हलाक कर दे और उस की जगह तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाये फिर देखे कि तुम कैसे अमल करते हो (१२९)—रुकू—१५

और हमने फ़िरऔनियों को क़हतों और मेवों के नुक़सान में पकड़ा ताकि नसीहत हासिल करें (१३०) तो जब उनको आसाईश हासिल होती तो कहते कि हम उसके मुस्तहक़ हैं और अगर सख़्ती पहुँचती तो मूसा और उनके रफ़ीकों की बदशगूनी बताते, देखो उनकी बदशगूनी ख़ुदा के हां (मुक़द्दर) है लेकिन उनमें अक्सर नहीं जानते (१३१) (और) कहने लगे कि तुम हमारे पास (ख़्वाह) कोई ही निशानी लाओ ताकि उससे हम पर जादू करो, मगर हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं (१३२) तो हमने उन पर तूफ़ान और टिड्डियाँ और जूऐं और मैन्डक और ख़ून कितनी खुली हुई निशानियां भेजीं, मगर वह तकब्बुर ही करते रहे और वह लोग थे ही गुन्हेगार (१३३)* और जब

---

*आयत १२८:—यानी मुल्क का हाकिम करे जो हक़ है आदम का—

*आयत १३३:—हज़रत मूसा को फ़िरऔन से ४० बरस मुक़ाबला रहा इस पर कि बनी इसराईल को अपने वतन जाने दे, उस ने न माना, उस की बददुआ से यह बलायें पड़ीं कि दरियाये नील चढ़ गया, खेत और बाग़ और घर बहुत तबाह हुए और टिड्डी सब्ज़ी खा

उन पर अज़ाब वाक़ैय होता तो कहते कि मूसा हमारे लिये अपने पर्वरदिगार से दुआ करो जैसा उसने तुम से एहद कर रखा है अगर तुम हम से अज़ाब को टाल दोगे तो हम तुम पर ईमान भी ले आयेंगे और बनी इसराईल को भी तुम्हारे साथ जाने की (इजाज़त) देंगे (१३४) फिर जब एक मुद्दत के लिये जिस तक उनको पहुँचना था उन से अज़ाब दूर कर देते तो वह एहद को तोड़ डालते (१३५) तो हमने उन से बदला लेकर ही छोड़ा कि उनको दरिया में डबो दिया, इस लिये कि वह हमारी आयतों को झुठलाते और उनसे बेपर्वाही करते थे (१३६) * और जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे उनको ज़मीन (शाम) के मशरिक़ व मग़रिब का जिस में हमने बरकत दी थी वारिस कर दिया और बनी इसराईल के बारे में उनके सब्र की वज्हे से तुम्हारे पर्वर-

---

गई और आदमी के बदन में और कपड़ों में खिचड़ियाँ पड़ गईं इसी तरह हर चीज़ में मैंडक फैल गये और हर पानी लहू बन गया आखिर हर्गिज़ न माना—

*आयत १३६:—यह सब बलायें उन पर आईं एक एक हफ़्ते के फ़र्क़ से, अव्वल हज़रत मूसा फ़िरऔन को कह आते कि अल्लाह तुम पर यह बला भेजेगा, वही बला आती, फिर मुज़तिर होते और हज़रत मूसा की ख़ुशामद करते उन की दुआ से दफ़ा होती और फिर मुन्किर हो जाते, आख़िर को वबा पड़ी सारे शहर में हर शख्स का पहला बेटा मर गया, वह लगे मुर्दों के ग़म में, हज़रत मूसा अपनी क़ौम को लेकर शहर से निकल गये फिर कई रोज़ बाद फ़िरऔन पीछे लगा और दरियाये क़ुल्ज़ुम पर जा पकड़ा वहाँ यह क़ौम सलामत से गुज़र गई और फ़िरऔन फ़ौज समेत ग़र्क़ हो गया—

दिगार का वायदये नेक पूरा हुआ और फ़िरऔन और क़ौमे फ़िरऔन जो (महल) बनाते और अंगूर के बाग़ जो छत्रियों पर चढ़ाते थे सबको हमने तबाह कर दिया (१३७) और हमने बनी इसराईल को दरिया से पार उतारा तो वह ऐसे लोगों के पास जा पहुँचे जो अपने बुतों (की इबादत) के लिये बैठे रहते थे (बनी इसराईल) कहने लगे कि मूसा ! जैसे इन लोगों के माबूद हैं हमारे लिये भी एक माबूद बना दो (मूसा ने कहा कि) तुम बड़े ही जाहिल लोग हो (१३८)* यह लोग जिस (शग़ल में फंसे हुऐ) हैं वह बर्बाद होने वाला है और जो काम यह करते हैं सब बेहूदा हैं (१३९) (और यह भी कहा) कि भला मैं ख़ुदा के सिवा तुम्हारे लिये कोई और माबूद तलाश करूं हालांकि उसने तुमको तमाम एहले आलम पर फ़ज़ीलत बख़्शी है (१४०) और (हमारे उन एहसानों को याद करो) जब हमने तुमको फ़िरऔनियों (के हाथ से) नजात बख़्शी वह लोग तुमको बड़ा दुःख देते थे, तुम्हारे बेटों को तो क़त्ल कर डालते थे और बेटियों को ज़िन्दा रहने देते थे और इस में तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से सख़्त आज़माईश थी (१४१) रुकू—१६

और हमने मूसा से तीस रात की मीयाद मुक़र्रर की और (दस रातें) और मिला कर उसे पूरा (चिल्ला) कर दिया तो उसके पर्वरदिगार की चालीस रात की मियाद पूरी हो गई और

*आयत १३८:—वह क़ौम देखी जो गाये की सूरत को पूजते थे, आख़िर सोने का बछड़ा बनाया और पूजा—

मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि मेरे (कोहे तूर पर जाने) के बाद तुम मेरी क़ौम में मेरे जा नशीन हो (उनकी) इस्लाह करते रहना और शरीरों के रस्ते पर न चलना (१४२)* और जब मूसा हमारे मुक़र्रर किये हुऐ वक्त पर (कोहे तूर पर) पहुंचे और उनके पर्वरदिगार ने उनसे कलाम किया तो कहने लगे कि ऐ पर्वरदिगार मुझे (जलवा) दिखा कि मैं तेरा दीदार (भी) देखूं, पर्वरदिगार ने फ़रमाया कि तुम मुझे हरगिज़ न देख सकोगे, हां पहाड़ की तरफ़ देखते रहो अगर यह अपनी जगह क़ायम रहा तो तुम मुझ को देख सकोगे जब उनका पर्वरदिगार पहाड़ पर नमूदार हुआ तो (तजल्ली ऐ अन्वारे रब्बानी ने) उसको रेज़ा रेज़ा कर दिया और मूसा बेहोश हो कर गिर पड़े, जब होश में आये तो कहने लगे कि तेरी ज़ात पाक है और मैं तेरे हजूर में तौबा करता हूं और जो ईमान लाने वाले हैं उनमें सबसे अव्वल हूं (१४३) ख़ुदा ने फ़रमाया, मूसा ! मैंने तुमको अपने पैग़ाम और अपने कलाम से लोगों से मुम्ताज़ किया है तो जो मैंने तुमको अता किया है उसे पकड़ रखो और

---

*आयत १४२:—ख़ुदा ने हज़रत मूसा को चालीस रातों के लिये बुलाया था ताकि उन को तौरात इनायत की जावे इब्ने अब्बास कहते हैं कि हज़रत मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा ने मुझे तीस रात के लिये तलब फ़रमाया है मैं तुम में अपने भाई हारून को अपनी जगह छोड़े जाता हूँ जब मूसा उन में से तशरीफ़ ले गये तो ख़ुदा ने दस रातें और बढ़ा दीं इस अशरा आख़िरी में बनी इसराईल बछड़े की परस्तिश करके गुमराह हो गये—

(मेरा) शुक्र बजा लाओ (१४४) (और) हमने (तौरात की) तख़्तियों में उनके लिये हर क़िसम की नसीहत और हर चीज़ की तफ़सील लिख दी फिर (इर्शाद फ़रमाया) कि इसे ज़ोर से पकड़े रहो और अपनी क़ौम से भी कह दो कि उन बातों को जो इसमें (मुन्दरज हैं और) बहुत बेहतर हैं पकड़े रहें, मैं अन्क़रीब तुमको नाफ़रमान लोगों का घर दिखाऊँगा (१४५) जो लोग ज़मीन में नाहक़ ग़रूर करते हैं उनको अपनी आयतों से फेर दूंगा और अगर यह सब निशानियाँ भी देख लें तब भी उन पर ईमान न लायें और अगर रास्ती का रास्ता देखें तो उसे (अपना) रस्ता न बनायें और अगर गुमराही की रह देखें तो उसे अपना रस्ता बना लें, यह इस लिये कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे ग़फ़लत करते रहे (१४६) और जिन लोगों ने हमारी आयतों और आख़िरत के आने को झुठलाया उनके आमाल ज़ाया हो जायगे, यह जैसे अमल करते हैं वैसा ही इनको बदला मिलेगा (१४७)—रुकू–१७—

और क़ौम मूसा ने मूसा के बाद अपने ज़ेवर का एक बछड़ा बना लिया (वह) एक जिस्म (था) जिस में से बैल की आवाज़ निकलती थी, इन लोगों ने यह न देखा कि वह न उनसे बात कर सकता है और न उनको रस्ता दिखा सकता है, उस को उन्होंने माबूद बना लिया और (अपने हक़ में) ज़ुल्म किया (१४८)❀ और जब वह नादिम हुए और देखा कि गुम-

❀आयत १४८:—मूसा के कोहे तूर पर चले जाने के बाद, एक

राह हो गये हैं तो कहने लगे कि अगर हमारा पर्वरदिगार हम पर रहम नहीं करेगा और हम को मुआफ़ नहीं फ़रमायेगा तो हम बर्बाद हो जायेंगे (१४९) और जब मूसा अपनी क़ौम में निहायत ग़ुस्से और अफ़सोस की हालत में वापिस आये तो कहने लगे कि तुम ने मेरे बाद बहुत ही बद अतवारी की क्या तुम ने अपने पर्वरदिगार का हुक्म (यानी मेरा अपने पास आना) जल्द चाहा (यह कहा) और शिद्दते ग़ज़ब से तौरात की तख्तियाँ डाल दीं और अपने भाई के सर (के बालों को) पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचने लगे, उन्होंने कहा कि भाईजान! लोग तो मुझे कमज़ोर समझते थे और क़रीब था कि क़त्ल कर दें तो ऐसा काम न कीजिये कि दुश्मन मुझ पर हँसें और मुझे ज़ालिम लोगों में मत मिलाईये (१५०) तब उन्होंने दुआ की कि ऐ मेरे पर्वरदिगार मुझे और मेरे भाई को मुआफ़ कर और हमें अपनी रहमत में दाखिल कर, तू सब से बढ़ कर रहम करने वाला है (१५१) रुक्कू—१८

शख्स सामरी नाम जो उन्हीं लोगों में से था उन से कहने लगा कि मैं तुम को एक ख़ुदा बना देता हूँ उस की परस्तिश किया करना, उन्होंने बात मान ली तो उस ने सोने का ज़ेवर जमा किया और उस को गला कर बछड़ा बनाया और उस के मूंह में हज़रत जब्रईल के घोड़े के पाँव के तले की मुट्ठी भर मिट्टी जो उस को मिल गई थी डाल दी, वह गाये की आवाज़ करने लगा सामरी ने कहा लो यह ख़ुदा है इस की पूजा करो वह उस की परस्तिश करने लगे, ख़ुदा फ़रमाता है कि उन्होंने इतना न सोचा कि यह कैसा माबूद है जो न कलाम करने की ताक़त रखता है और न हिदायत कर सकता है भला बछड़ा क्या और ख़ुदा क्या—

(ख़ुदा ने फ़रमाया) जिन लोगों ने बछड़े को (माबूद) बना लिया था उन पर पर्वरदिगार का ग़ज़ब वाक़ैय होगा और दुनिया की ज़िन्दगी में ज़िल्लत (नसीब होगी) और हम इफ़्तिरा परदाज़ों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं (१५२) और जिन्होंने बुरे काम किये फिर उस के बाद तौबा कर ली और ईमान ले आये तो कुछ शक नहीं तुम्हारा पर्वरदिगार उस के बाद (बख़्श देगा कि वह) बख़्शने वाला मेहरबान है (१५३) और जब मूसा का ग़ुस्सा फ़िरो हुआ तो (तौरात की) तख़्तियाँ उठा लीं और जो कुछ उन में लिखा था वह उन लोगों के लिये जो अपने पर्वरदिगार से डरते थे हिदायत और रहमत थी (१५४) और मूसा ने उस मियाद पर जो हम ने मुक़र्रर की थी अपनी क़ौम के सत्तर आदमी मुन्तख़िब (करके कोहे तूर पर हाज़िर किये) जब उन को ज़लज़ले ने पकड़ा तो मूसा ने कहा कि ऐ मेरे पर्वरदिगार अगर तू चाहता तो इन को और मुझ को पहले ही से हलाक कर देता, क्या तू इस फ़ेल की सज़ा में जो हम में से बे अक़्ल लोगों ने किया है, हमें हलाक़ कर देगा यह तो तेरी आज़माईश है इस से जिस को चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे हिदायत बख़्शे तू ही हमारा कारसाज़ हैं तू हमें (हमारे) गुनाह बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा, तू सब से बेहतर बख़्शने वाला है (१५५)* और हमारे लिये इस दुनियाँ

*आयत १५५:—रिवायत में है कि हक़ तआला ने मूसा को फ़रमाया था कि सत्तर उलमा बनी इसराईल के साथ अपने कोहे तूर

में भी भलाई लिख दे और आख़िरत में भी, हम तेरी तरफ़ रजू हो चुके हैं, फ़रमाया कि जो मेरा अज़ाब है उसे तो जिस पर चाहता हूं नाज़िल करता हूँ, और जो मेरी रहमत है वह हर चीज़ को शामिल है, मैं उस को उन लोगों के लिये लिख दूंगा जो परहेज़गारी करते और ज़कात देते और हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं (१५६) वह जो (मोहम्मद) रसूल (अल्लाह) की जो नबी-ऐ उम्मी हैं पैरवी करते हैं, जिन (के औसाफ़) को वह अपने हाँ तौरात और अन्जील में लिखा हुआ पाते हैं, वह उन्हें नेक काम का हुक्म देते हैं और बुरे काम से रोकते हैं, और पाक चीज़ों को उन के लिये हलाल करते हैं, और नापाक चीज़ों को उन पर हराम ठैहराते हैं,

---

पर लाओ कि बन्दगी बछड़े की से तौबा और उज्र ख्वाही करें और एक रिवायत में है कि बनी इसराईल ने आपस में कहा कि ख़ुदा ने मूसा से बातें नहीं कीं और जो चीज़ कि ऊपर तख्तियों के हैं कलाम मूसा का है, हक़ तआला ने कहा कि ऐ मूसा सत्तर आदमियों को बनी इसराईल के ऊपर कोहे तूर के लाओ कि कलाम मेरा सुनें और गवाह होवें, हज़रत मूसा सत्तार आदमियों को लेकर ऊपर कोहे तूर के आये, जब नज़दीक पहुँचे कोहे तूर के, एक बादल आया कि दर्मियान मूसा के और क़ौम के हायल हो गया, मूसा परे अब्र के आये और क़ौम सजदे में गिर पड़ी हक़ तआला ने मूसा से बातें कीं, अमरो निही फ़रमाया जिस वक्त बादल खुल गया मूसा बाहर आये और कहा क़ौम से कि सुने तुम ने क़ौल पर्वरदिगार मेरे के, क़ौम ने कहा, सुने हम ने लेकिन कलाम करने वाला मालूम नहीं हुआ और हम ईमान जब लायें कि ख़ुदा को ही ज़ाहिर देखें, नज़दीक इसी बात के एक बिजली गिरी और सब को जला दिया मूसा बेक़रार हुए—

और उन पर से बोझ और तौक़ जो उन (के सर) पर (और गले में) थे, उतारते हैं, तो जो लोग उन पर ईमान लाये और उन की रफ़ाक़त की, और उन्हें मदद दी, और जो नूर उन के साथ नाज़िल हुआ है, उस की पैरवी की, वही मुराद पाने वाले हैं (१५७) —रुकू—१६

(ऐ मोहम्मद) कह दो लोगों को मैं तुम सब की तरफ़ ख़ुदा का भेजा हुआ (यानी उस का रसूल) हूँ (वह) जो आस्मानों और ज़मीन का बादशाह है उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िन्दगी बख़्शता और वही मौत देता है, तो ख़ुदा पर और उस के पैग़म्बरे उम्मी पर जो ख़ुदा पर और उस के तमाम कलाम पर ईमान रखते हैं ईमान लाओ और उन की पैरवी करो, ताकि हिदायत पाओ (१५८) और क़ौम मूसा में कुछ लोग ऐसे भी है जो हक़ का रस्ता बताते और उसी के साथ इन्साफ़ करते हैं (१५९) और हम ने उन को (यानी बनी ईसराईल को) अलग अलग करके बारह क़बीले (और) बड़ी बड़ी जमायतें बना दिया, और जब मूसा से उन की क़ौम ने पानी तलब किया तो हम ने उन की तरफ़ वही भेजी कि अपनी लाठी पत्थर पर मारो, तो उस में से बारह चशमे फूट निकले और सब लोगों ने अपना अपना घाट मालूम कर लिया और हम ने उन (के सरों पर) बादल को सायेबान बनाये रखा और उन पर मिन्नो सल्वा उतारते रहे (और उन से कहा कि) जो पाकीज़ा चीज़ें हम तुम्हें देते हैं

उन्हें खाओ और उन लोगों ने हमारा कुछ नुक़सान नहीं किया बल्कि (जो) नुक़सान (किया) अपना ही किया (१६०) और याद करो जब उन से कहा गया कि इस शहर में सकूनत अख़्तियार कर लो और इस में जहाँ से जी चाहे खाना (पीना) और (हाँ शहर में जाना तो) हित्तत्न कहना और दरवाज़े में दाख़िल होना तो सजदा करना, हम तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर देंगे और नेकी करने वालों को और ज़्यादा देंगे (१६१) मगर जो उन में ज़ालिम थे उन्होंने उस लफ़्ज़ को जिस का उन को हुक्म दिया गया था बदल कर उस की जगह और लफ़्ज़ कहना शुरु किया तो हम ने उन पर आस्मान से अज़ाब भेजा इस लिये कि ज़ुल्म करते थे (१६२) रुकू—२०

और उन से उस गाँव का हाल तो पूछो जो लबे दरिया वाक़ैय हुआ था, जब यह लोग हफ़्ते के दिन के बारे में हद से तजावुज़ करने लगे (यानी) उस वक्त कि उन के हफ़्ते के दिन मछलियाँ उन के सामने पानी के ऊपर आतीं और जब हफ़्ते का दिन न होता तो न आतीं, इसी तरह हम उन लोगों को उन की नाफ़रमानियों के सबब आज़माईश में डालने लगे (१६३) और जब उन में से एक जमायत ने कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिन को ख़ुदा हलाक करने वाला या सख़्त अज़ाब देने वाला है तो उन्होंने कहा कि इस लिये कि तुम्हारे पर्वरदिगार के सामने माज़रत कर सकें और अजब नहीं कि परहेज़गारी अख़्तियार करें (१६४) जब उन्होंने

इन बातों को फ़रामोश कर दिया, जिन की उन को नसीहत की गई थी तो जो लोग बुराई से मना करते थे उन को हम ने नजात दी और जो ज़ुल्म करते थे उन को बड़े अज़ाब में पकड़ लिया कि नाफ़रमानी किये जाते थे (१६५) ग़रज़ जिन आमाले (बद) से उन को मना किया गया था जब वह उन पर (इसरार और हमारे हुक्म) से गर्दनकशी करने लगे तो हम ने उन को हुक्म दिया कि ज़लील बन्दर हो जाओ (१६६)* और (उस वक्त को याद करो) जब तुम्हारे पर्वरदिगार ने (यहूद को) आगाह कर दिया था कि वह उन पर क़यामत तक ऐसे शख्स को मुसल्लत रखेगा जो उन को बुरी बुरी तकलीफ़ें देता रहे, बेशक तुम्हारा पर्वरदिगार जल्द अज़ाब करने वाला है और वह बख्शने वाला मेहरबान भी है (१६७)* और हम ने उन को जमायत जमायत करके मुल्क में मुन्तशिर कर दिया बाज़ उन में नेकूकार हैं और बाज़ और तरह के

*आयत १६६:—रिवायत में है कि मना करने वाले नसीहत उन की से, ना उम्मीद हुए और एक घर में रहना मौक़ूफ़ किया और दर्मियान घरों अपने के धरों उनके के, दीवार खींची और आमदो रफ़्त उन के मोहल्ले की छोड़ दी, एक दिन अपने मोहल्ले से बाहर आये और उन के मोहल्ले का कोई बाहर न आया, तलाश की, देखा कि तमाम लंगूर हो गये और हर लंगूर अपने नातेदार के गिर्द रोता हुआ फिरता था और मूंह अपना उस के कपड़ों से मलता था, तीन रोज जीते रहे और चौथे रोज़ मर गये—

*आयत १६७:—तकलीफ़ें मानिन्द क़त्ल के और शहर बदर करने के और जज़िया मुक़र्रर करने के—

(यानी बदर का) और हम आसाईशों और तकलीफ़ों (दोनों) से उन की आज़माईश करते रहे ताकि (हमारी तरफ़) रुजू करें (१६८)* फिर उन के बाद ना ख़लफ़ उन के क़ायम मक़ाम हुए जो किताब के वारिस बने यह (बे ताम्मुल) इस दुनियाये दनी का मालो मता ले लेते हैं और कहते हैं कि हम बख़्श दिये जायेंगे [1] और (लोग ऐसों पर तान करते हैं) अगर उन के सामने भी वैसा ही माल आ जाता है तो वह भी उस से ले लेते हैं, क्या उन से किताब की निस्बत अहद नहीं लिया गया कि खुदा पर सच के सिवा और कुछ नहीं कहेंगे और जो कुछ उस (किताब) में है उस को उन्होंने पढ़ भी लिया है और आख़िरत का घर परहेज़गारों के लिये बेहतर है [2] क्या तुम समझते नहीं [3] (१६९) जो लोग किताब को मज़बूत पकड़े हुए हैं [4] और नमाज़ का इल्तिज़ाम रखते हैं

---

*आयत १६८:—यहूद की दौलत बरहम हुई तो आपस की मुखालिफ़त से हर तरफ़ निकल गये और मज़हब मुखतलिफ़ पैदा हुए, यह एहवाल उस उम्मत को सुनाया है कि यह कुछ उन पर भी होगा हदीस में फ़रमाया है कि इस उम्मत में बाज़े बन्दर और सूअर हो जायेंगे, अल्लाह गुमराही से पनाह दे—

[1] ऐतक़ाद था यहूद का कि दिन के गुनाह हमारे रात को बख़्श दिये जाते हैं और रात के गुनाह दिन को बख़्शे जाते हैं—

[2] यानी जो डरते हैं हलाल जानने हराम के से, और झूठ जोड़ने ऊपर ख़ुदा के से—

[3] पिछले लोग रिश्वत लेकर मसले ग़लत करने लगे कि उमीद रखते कि हम बख़्श दिये जायेंगे हालाँकि फिर इस काम को हाज़िर हैं—

[4] यानी अमल किया मुताबिक इस के

उन को हम अजर देंगे कि हम नेकूकारों का अजर ज़ाया नहीं करते (१७०) और जब हम ने उन (के सरों) पर पहाड़ उठा खड़ा किया गोया वह सायबान था और उन्होंने ख़्याल किया कि वह उन पर गिरता है तो (हम ने कहा कि) जो हम ने तुम्हें दिया है उसे ज़ोर से पकड़े रहो और जो उस में लिखा है उस पर अमल करो ताकि बच जाओ (१७१)–रुकू–२१

और जब तुम्हारे पर्वरदिगार ने बनी आदम से यानी उन की पीठों से उन की औलाद निकाली तो उन से ख़ुद उन के मुक़ाबले में इक़रार करा लिया (यानी उन से पूछा) "क्या में तुम्हारा पर्वरदिगार नहीं हूँ ?" वह कहने लगे—क्यों नहीं ? हम गवाह हैं (कि तू हमारा पर्वरदिगार है) (यह इक़रार इस लिए कराया था) कि क़यामत के दिन (कहीं यूं न) कहने लगो कि हम को तो इस की खबर ही न थी (१७२) या यह (न) कहो कि शिर्क तो पहले हमारे बड़ों ने किया था और हम तो उन की औलाद थे (जो) उन के बाद (पैदा हुए) तो क्या जो काम एहले बातिल करते रहे उस के बदले तू हमें हलाक करता है (१७३) और इसी तरह हम (अपनी) आयतें खोल खोल कर बयान करते हैं ताकि यह रजू करें (१७४) और उन को इस शख़्स का हाल पढ़ कर सुना दो जिस को हम ने अपनी आयतें अता फ़रमाईं (और हफ़्त पार्चा-ऐ-इल्मे शरैई से मुज़ैईयन किया) तो उस ने उन को उतार

दिया फिर शैतान उस के पीछे लगा तो वह गुमराहों में हो

गया (१७५) और अगर हम चाहते तो उन आयतों से उन (के दर्जे) को बलन्द कर देते मगर वह तो पस्ती की तरफ़ माईल हो गया और अपनी ख्वाहिश के पीछे चल पड़ा तो उस की मिसाल कुत्ते की सी हो गई कि अगर सख्ती करा तो ज़बान निकाले रहे और यूं ही छोड़ दो तो भी ज़बान निकाले रहे, यही मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तो (उन) से यह क़िस्सा बयान कर दो ताकि वह फ़िक्र करें (१७६)* जिन लोगों ने हमारी आयतों की तकज़ीब की उन की मिसाल बुरी है, और उन्होंने नुक़सान (किया तो) अपना ही किया (१७७) जिस को ख़ुदा हिदायत दे वही राहयाब है और जिस को गुमराह करे, तो ऐसे ही लोग नुक़सान उठाने वाले हैं (१७८) और हम ने बहुत से जिन्न और इन्सान दोज़ख़ के लिये पैदा किये हैं, उन के दिल हैं लेकिन उन से समझते नहीं और उन की आंखें हैं, मगर उन से देखते नहीं, और उन के कान हैं, पर उन से सुनते नहीं,

* हांपते कुत्ते की रिवायत:—यानी जब तक वह हिर्स से ख़ाली था उस को बातिन से सही मालूम हुआ जब दिल में हिर्स बैठी तो बातिन से मालूम न हुआ, उस को अपनी तबा के मवाफ़िक़ समझ लिया रिवायत में है कि जब वह चलने लगा तो चाहा कि फिर ग़ैब से कुछ मालूम हो, तब मालूम हुआ कि जा, जब राह में चला तो एक फ़रिश्ता मिला, शमशीर नंगी हाथ में लिये उस ने इल्तिजा की कि अगर हुक्म न हो तो न जाऊं, कहा जा, लेकिन कुछ बद दुआ न कर, तो फिर बादशाह के पास पहूँच कर लगा बद दुआ करने, मूंह से ख़ुद ब.ख़ुद दुआये नेक निकलने लगी—

यह लोग (बिल्कुल) चारपायों की तरह हैं बल्कि उन से भी भटके हुए, यही वह हैं जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं (१७९) और ख़ुदा के सब नाम अच्छे ही अच्छे हैं तो उस को उस के नामों से पुकारा करो और जो लोग उस के नामों में कजी (अख़्तियार) करते हैं उन को छोड़ दो, वह जो कुछ कर रहे हैं अन्क़रीब उस की सज़ा पायेंगे (१८०) और हमारी मख़्लूक़ात में से एक वह लोग हैं जो हक़ का रस्ता बताते हैं और उसी के साथ इन्साफ़ करते हैं (१८१) और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया उन को बतदरीज इस तरीक़ से पकड़ेंगे कि उन को मालूम ही न होगा (१८२)—रुकू—२२

और मैं उन को मोहलत दिये जाता हूँ, मेरी तदबीर बड़ी मज़बूत है (१८३) क्या उन्होंने ग़ौर नहीं किया कि उन के रफ़ीक़ (मोहम्मद) को किसी तरह का भी जनून नहीं है ? वह तो ज़ाहिर ज़हूर डर मानने वाले हैं (१८४) क्या उन्होंने आस्मान और ज़मीन की बादशाहत में और जो चीज़ें ख़ुदा ने पैदा की है, उन पर नज़र नहीं की और इस बात पर (ख़्याल नहीं किया) कि अजब नहीं उन (की मौत) का वक़्त नज़दीक पहुँच गया हो, तो उस के बाद वह और किस बात पर ईमान लायेंगे (१८५) जिस शख़्स को ख़ुदा गुमराह करे उस को कोई हिदायत देने वाला नहीं और वह उन (गुमराहों) को छोड़े रखता है कि अपनी सरकशी में पड़े बहकते रहें (१८६) (यह लोग) तुम से क़यामत के बारे में

पूछते हैं कि उस के वाक़ा होने का वक्त कब है, कह दो कि इस का इल्म तो मेरे पर्वरदिगार ही को है वही उसे उस के वक्त पर ज़ाहिर करेगा, वह आसमान और ज़मीन में एक भारी बात होंगी और नागहाँ तुम पर आ जायेंगी, यह तुम से इस तरह की दरयाफ़्त करते हैं कि गोया तुम इस से बख़ूबी वाक़िफ़ हो कहो कि इस का इल्म तो ख़ुदा को ही है लेकिन अक्सर लोग यह नहीं जानते (१८७) कह दो कि मैं अपने फ़ायदे और नुक़सान का कुछ भी अख़्तियार नहीं रखता, अगर जो ख़ुदा चाहे, अगर मैं ग़ैब की बातें जानता होता तो बहुत से फ़ायदे जमा कर लेता और मुझ को कोई तकलीफ़ न पहुँचती, मैं तो मोमिनों को डर और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला हूं (१८८)

रुकू--२३

वह ख़ुदा ही तो है जिस ने तुम को एक शख़्स से पैदा किया और उस से उस का जोड़ा बनाया ताकि उस से राहत हासिल करे, सो जब वह उस के पास जाता है तो उसे हल्का सा हमल रह जाता है, और वह उस के साथ चलती फिरती है, फिर जब कुछ बोझ मालूम करती (यानी बच्चा पेट में बड़ा होता) है तो दोनों (मियाँ बीवी) अपने पर्वरदिगार ख़ुदाये इज़्ज़ोजल से इल्तिजा करते हैं कि अगर तू हमें सही व सालिम बचा देगा तो हम तेरे शुक्र गुज़ार होंगे (१८९) जब वह उन को सही व सालिम (बच्चा) देता है तो उस (बच्चे) में जो वह उन को देता है उस का शरीक मुक़र्रर

करते हैं, जो वह शिर्क करते हैं ख़ुदा का (रुत्बा) उस से बलन्द है (१९०) क्या वह ऐसों को शरीक बनाते हैं जा कुछ भी पैदा नहीं कर सकते और ख़ुद पैदा किये जाते हैं (१९१) और न उन की मदद की ताक़त रखते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं (१९२) अगर तुम उन को सीधे रस्ते की तरफ़ बुलाओ तो तुम्हारा कहा न मानें, तुम्हारे लिए बराबर है कि तुम उन को बुलाओ या चुपके हो रहो (१९३) (मुशरिको) जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, वह तुम्हारी तरह के बन्दे ही हैं (अच्छा) तुम उन को पुकारो अगर सच्चे हो तो चाहिये कि वह तुम को जवाब भी दें (१९४) भला उन के पाँव हैं जिन से चलें, या हाथ हैं जिन से पकड़ें, या आँखें हैं जिन से देखें, या कान हैं जिन से सुनें ? कह दो कि अपने शरीकों को बुला लो और मेरे बारे में जो तदबीर (करनी हो) कर लो और मुझे कुछ मोहलत भी न दो फिर देखो वह मेरा क्या कर सकते हैं (१९५) मेरा मददगार तो ख़ुदा ही है जिस ने किताबे (बर हक़) नाज़िल की और नेक लोगों का वही दोस्तदार है (१९६) और जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, वह न तुम्हारी ही मदद की ताक़त रखते हैं और न ख़ुद ही मदद कर सकते हैं (१९७) अगर तुम उन को सीधे रस्ते की तरफ़ बुलाओ तो सुन न सकें और तुम उन्हें देखते हो कि (बज़ाहिर) आंखें खोले तुम्हारी तरफ़ देख रहे हैं मगर (फ़िल वाक़ेय) कुछ नहीं देखते (१९८) (ऐ

मोहम्मद) अफ़्व अख़्तियार करो और नेक काम करने का हुक्म दो और जाहिलों से कनारा कर लो (१९९) अगर शैतान की तरफ़ से तुम्हारे दिल में कोई वसवसा पैदा हो तो ख़ुदा से पनाह माँगो, बेशक वह सुनने वाला और सब कुछ जानने वाला है (२००) जो लोग परहेज़गार हैं, जब उन को शैतान की तरफ़ से कोई वसवसा पैदा होता है तो चौंक पड़ते हैं और (दिल की आँखें खोल कर) देखने लगते हैं (२०१) और इन (कफ़्फ़ार) के भाई उन्हें गुमराही में खींचे जाते हैं फिर (उस में किसी तरह की) कोताही नहीं करते (२०२) और जब तुम उन के पास (कुछ दिनों तक) कोई आयत नहीं लाते तो कहते हैं कि तुम ने (अपनी तरफ़ से) क्यों नहीं बना ली कह दो कि मैं तो उसी के हुक्म की पैरवी करता हूं जो मेरे पर्वरदिगार की तरफ़ से मेरे पास आता है, यह (क़ुरान) तुम्हारे पर्वरदिगार की जानिब से दानिशो बसीरत और मोमिनों की हिदायत और रहमत है (२०३) और जब क़ुरान पढ़ा जाये तो तव्वजोह से सुना करो और ख़ामोश रहा करो ताकि तुम पर रहम किया जाये (२०४) और अपने पर्वरदिगार को दिल ही दिल में आजिज़ी और ख़ौफ़ से और पस्त आवाज़ से सुब्हो शाम याद करते रहो और देखना, ग़ाफ़िल न होना (२०५) जो लोग तुम्हारे पर्वरदिगार के पास हैं वह उस की इबादत से गर्दनकशी नहीं करते और उस पाक ज़ात को याद करते और उस के आगे सजदा करते रहते हैं (२०६)

रुकू—२४

(८) सूर-ऐ—अन्फ़ाल—

मदीने में उतरी, इस में ७५ आयतें, १० रुकू हैं,

शुरु ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(ऐ मोहम्मद) मुजाहिद लोग तुम से गनीमत के माल के बारे में दरयाफ़्त करते हैं (कि क्या हुक्म है) कह दो कि ग़नीमत ख़ुदा और उस के रसूल का माल है, तो ख़ुदा से डरो और आपस में सुल्ह रखो, और अगर ईमान रखते हो तो ख़ुदा और उस के रसूल के हुक्म पर चलो (१) मोमिन तो वह हैं कि जब ख़ुदा का ज़िक्र किया जाता है तो उन के दिल डर जाते हैं, और जब उन्हें उस की आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो उन का ईमान और बढ़ जाता है और वह अपने पर्वरदिगार पर भरोसा रखते हैं (२) और बावजूद नमाज़ पढ़ते हैं और जो माल हमने उनको दिया है उसमें से (नेक कामों में) खर्च करते हैं (३) यही सच्चे मोमिन हैं और इनके लिये पर्वर-दिगार के हाँ (बड़े बड़े) दर्जे और बख़्शिशें और इज़्ज़त की रोज़ी है (४) इन लोगों को अपने घरों से इस तरह निकलना चाहिये था, जिस तरह तुम्हारे पर्वरदिगार ने तुमको तदबीर से निकाला और (उस वक्त) मोमिनों की एक जमायत नाख़ुश थी (५) वह लोग हक़ बात में उसके ज़ाहिर हुऐ पीछे तुम से झगड़ने लगे, गोया मौत की तरफ़ धकेले जाते हैं और उसे देख रहे हैं (६) और (उस वक्त को याद करो) जब ख़ुदा तुमसे वायदा करता

था कि (अबू सुफ़ियान और अबू जहल के) दो गिरोहों में से एक गिरोह तुम्हारा (मुसख़्ख़र) हो जायेगा और तुम चाहते थे कि जो क़ाफ़िला बे (शानो) शौकत (यानी बे हथियार) है वह तुम्हारे हाथ आ जाये और ख़ुदा चाहता था कि अपने फ़रमान से हक़ को क़ायम रखे और काफ़िरों की जड़ काट कर फेंक दे (७)* ताकि सच को सच और झूठ को झूठ कर दे गो मुश्रिक नाखुश ही हों (८) जब तुम अपने पर्वरदिगार से फ़रियाद करते थे, तो उसने तुम्हारी दुआ क़बूल कर ली (और फ़रमाया) कि तसल्ली रखो, हम हज़ार फ़रिश्तों से जो एक दूसरे के पीछे आते

*आयत ७ – यह आयत जंगे बदर के बारे में है, मदीने से आँ हज़रत और सहाबा जब यह ख़बर सुनकर कि अबू सुफ़ियान शाम से कुछ माल लेकर इधर आता है बाहर निकले और हज़ार आदमियों की जमैयत से क़ुरैश अबू सुफ़ियान की मदद को आ गये तो अक्सर मुस्ल-मानों ने आँ हज़रत से अर्ज़ की कि हम तो फ़क़त अबू सुफ़ियान का काफ़िला लूटने की नीयत से मदीने से निकले थे, लड़ाई की हस्बे दिल-ख़्वाह इस वक्त हममें ताक़त नहीं है उस पर अल्लाह ने यह आयत नाज़िल की हासिल मायनी आयत के यह हैं कि जिस तरह लड़ाई के ख़त्म होने के बाद तुमने ग़नीमत के माल में झगड़ा किया और अल्लाह ने हक़ हक़ उसका फ़ैसला कर दिया इसी तरह लड़ाई से पहले तुमने लड़ाई के छेड़ने और न छेड़ने में झगड़ा किया था और सिर्फ़ अबू सुफ़ि-यान का क़ाफ़िला जो मुल्क शाम से आया था उसका लूट लेना तुम्हारा अस्ली मन्शा था मगर अल्लाह ने तदबीर से तुमको लूट का माल भी दिया और जिस इरादे से अल्लाह ने अपने नबी को उसके घर यानी मदीने से बदर की तरफ़ निकाला था वह इरादा भी पूरा कर दिया यानी काफ़िरों को ज़ेर और तुमको फ़तहमन्द कर दिया।

जायेंगे तुम्हारी मदद करेंगे (९) और इस मदद को ख़ुदा ने मेहज़ बशारत बनाया था कि तुम्हारे दिल उस से इतमीनान हासिल करें और मदद तो अल्लाह ही की तरफ़ से है, बेशक ख़ुदा ग़ालिब हिकमत वाला है (१०) रुकू—१

जब उसने (तुम्हारी) तस्कीन के लिये अपनी तरफ़ से तुम्हें नींद (की चादर) उढ़ा दी, और तुम पर आस्मान से पानी बरसा दिया ताकि तुमको उससे (नहला कर) पाक कर दे और शैतानी नजासत को तुमसे दूर कर दे, और इस लिये भी कि तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और उसे तुम्हारे पाँव जमा रखे (११) जब तुम्हारा पर्वरदिगार फ़रिश्तों से इर्शाद फ़रमाता था कि मैं तुम्हारे साथ हूं, तुम मोमिनो को तसल्ली दो कि साबित क़दम रहें, मैं अभी अभी काफ़िरों के दिलों में रोआब व हैबत डाले देता हूं, तू उनके सर मार (कर) उड़ा दो और उनको पोर पोर मार (कर) तोड़ दो (१२) यह (सज़ा) इस लिये दी गई कि उन्होंने ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त की और जो शख़्स ख़ुदा और उसके रसूल मुख़ालिफ़त करता है, तो ख़ुदा भी सख़्त अज़ाब देने वाला है (१३) यह (मज़ा तो यहाँ) चखो और यह (जाने रहो) कि काफ़िरों के लिये (आख़िरत में) दोज़ख़ का अज़ाब (भी तैयार) है (१४) ऐ एहले ईमान ! जब मैदानेजंग में कुफ़्फ़ार से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो उनसे पीठ न फेरना (१५) और जो शख़्स जंग के रोज़ इस सूरत के सिवा

कि लड़ाई के लिये किनारे-किनारे चले (यानी हिकमते अमली

से दुश्मन को मारे) अपनी फ़ौज में जा मिलना चाहे, उनसे पीठ फेरेगा (तो समझो कि) वह ख़ुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार हो गया और उसका ठिकाना दोज़ख है और वह बहुत ही बुरी जगह है (१६) तुम लोगों ने उन (कफ़्फ़ार) को क़त्ल नहीं किया बल्कि ख़ुदा ने उन्हें क़त्ल किया और (ऐ मोहम्मद) जिस वक्त तुमने कंकरियाँ फैंकी थीं तो वह तुमने नहीं फैंकी थीं बल्कि अल्लाह ने फैंकी थीं, इससे यह ग़रज़ थी कि मोमिनों को अपने (एहसानों) से अच्छी तरह आज़माये, बेशक ख़ुदा सुनता जानता है (१७) (बात) यह (है) कुछ शक नहीं कि ख़ुदा काफ़िरों की तदबीर को कमज़ोर कर देने वाला है (१८) (काफ़िरो) अगर तुम (मोहम्मद सल्हे अल्लाह अलेहा व सलम पर) फ़तह चाहते हो तो तुम्हारे पास फ़तह आ चुकी (देखो) अगर तुम अपने (अफ़आल से) बाज़ आजाओ तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अगर फिर (नाफ़रमानी) करोगे तो हम भी फिर (तुम्हें अज़ाब) करेंगे और तुम्हारी जमायत ख़्वाह कितनी ही कसीर हो, तुम्हारे कुछ भी काम न आयेगी और ख़ुदा तो मोमिनों के साथ है (१९)—रुकू २

ऐ ईमान वालो ! ख़ुदा और उसके रसूल के हुक्म पर चलो और उससे रुगरदानी न करो तुम सुनते हो (२०) और उन लोगों जैसे होना जो कहते हैं कि हमने (हुक्मे ख़ुदा) सुन लिया मगर (हक़ीकत में) नहीं सुनते (२१) कुछ शक नहीं कि ख़ुदा के नज़दीक तमाम जानदारों से बेहतर गूंगे बहरे हैं जो कुछ नहीं

समझते (२२) और अगर ख़ुदा उनमें नेकी (का मादा) देखता तो उनको सुनने की तौफ़ीक़ बख़्शता और अगर बग़ैर सलाहियत (हिदायत) के समायत देता तो वह मूंह फेर कर भाग जाते (२३) मोमिनो ! ख़ुदा और उसके रसूल का हुक्म क़बूल करो जब कि रसूले ख़ुदा तुम्हें ऐसे काम के लिये बुलाते हैं जो तुमको ज़िन्दगीये जाविदाँ बख़्शता है और जान रखो कि ख़ुदा आदमी और उसके दिल के दर्मियान हायल हो जाता है और यह भी कि तुम सब उसके रुबरु हाज़िर किये जाओगे (२४) और उस फ़ित्ने से डरो जो खुसूसियत के साथ उन्हीं लोगों पर वाक़ैय ने होगा जो तुम में गुन्हेगार हैं और जान रखो कि ख़ुदा सख़्त अज़ाब देने वाला है (२५) और (उस वक्त को) याद करो जब तुम ज़मीने (मक्का) में क़लील और ज़ैईफ़ समझे जाते थे और डरते रहते थे कि लोग तुम्हें उड़ा (न) ले जायें (यानी बे ख़ाँनिमाँ न कर दें) तो उसने तुमको जगह दी और अपनी मदद से तुम को तक़वीयत बख़्शी और पाकीज़ा चीज़ें खाने को दीं ताकि (उसका) शुक्र करो (२६) ऐ ईमान वालो ! न तो ख़ुदा और रसूल की अमानत में ख़यानत करो और न अपनी अमानतों में खयानत करो. तुम (इन बातों को) जानते हो (२७) और जान रखो कि तुम्हारा माल और औलाद बड़ी आज़माईश है और यह कि ख़ुदा के पास (नेकियों का) बड़ा सबब है (२८)—रुकू ३

मोमिनो ! अगर तुम ख़ुदा से डरोगे तो वह तुम्हारे लिये

अमर फ़ायक़ पैदा कर देगा (यानी तुमको मुमताज़ कर देगा) और तुम्हारे गुनाह मिटा देगा और तुम्हें बख़्शिश देगा और ख़ुदा बड़े फ़ज़ल वाला है (२९) और (ऐ मोहम्मद उस वक्त को याद करो) जब काफ़िर लोग तुम्हारे बारे में चाल चल रहे थे कि तुमको क़ैद कर दें या जान से मार डालें (या वतन से) निकाल दें, तो इधर तो वह चाल चल रहे थे और (उधर) ख़ुदा चाल चला था, और ख़ुदा सबसे बेहतर चाल चलने वाला है (३०) और जब उनको हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो कहते हैं (यह कलाम) हमने सुन लिया है अगर हम चाहें तो इसी तरह का (कलाम) हम भी कह दें और यह है ही क्या सिर्फ़ अगले लोगों की हिकायतें हैं (३१) और जब उन्होंने कहा कि ऐ ख़ुदा अगर यह (क़ुरान) तेरी तरफ़ से बरहक़ है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या कोई और तकलीफ़ देने वाला अज़ाब भेज (३२) और ख़ुदा ऐसा न था कि जब तक तुम उन में थे उन्हें अज़ाब देता और न ऐसा था कि वह बख़्शिश मांगे और उन्हें अज़ाब दे (३३) और (अब) उनके लिये कौन सी वजह है कि वह उन्हें अज़ाब न दे जब कि वह मसजिदे मोहतरम (में नमाज़ पढ़ने) से रोकते हैं और वह उस मसजिद के मुत्तवल्ली भी नहीं, उसके मुत्तवल्ली तो सिर्फ़ परहेज़गार हैं लेकिन उनमें के अक्सर नहीं जानते (३४) और उन लोगों की नमाज़ ख़ान-ऐ-काबा के पास सीटियां और तालियाँ बजाने के सिवा कुछ न थी, तो तुम जो कुफ़्र करते थे अब उसके बदले अज़ाब (का मज़ा) चखो (३५) जो लोग काफ़िर हैं, अपना माल ख़र्च

करते हैं कि (लोगों को) ख़ुदा के रस्ते से रोकें, सो अभी और ख़र्च करेंगे, मगर आख़िर वह (खर्च करना) उनके लिये (मूजिबे) अफ़सोस होगा और वह मग़लूब हो जावेंगे और काफ़िर लोग दोज़ख़ की तरफ़ हाँके जायेंगे (३६) ताकि ख़ुदा नापाक को पाक से अलग कर दे, और नापाक को एक दूसरे पर रख कर एक ढेर बना दे, फ़िर उसको दोज़ख़ में डाल दे, यही लोग ख़सारा पाने वाले हैं (३७)—रुकू ४

(ऐ पैग़म्बर) कफ़्फ़ार से कह दो कि अगर वह अपने अफ़-आल से बाज़ आजायें तो जो हो चुका वह उन्हें मुआफ़ करदिया जायेगा और अगर फिर (वही हरकात) करने लगेंगे तो अगले लोगों का (जो) तरीक़ जारी हो चुका है (वही उनके हक़ में बरता जायेगा) (३८) और उन लोगों से लड़ते रहो यहाँ तक कि फ़ित्ना (यानी कुफ़्र का फ़िसाद) बाक़ी न रहे और दीन सब ख़ुदा ही का हो जाये और अगर बाज़ आजायें तो ख़ुदा उनके कामों को देख रहा है (३९) और अगर रुगरदानी करें तो जान रखो कि ख़ुदा तुम्हारा हिमायती है (और) वह ख़ूब हिमायती और ख़ूब मददगार है (४०)

—:०:—

दसवाँ पारा—वालमू–सूर-ऐ-अन्फ़ाल

और जान रखो कि जो चीज़ तुम (कफ़्फ़ार) से लूट कर लाओ, उसमें से पान्चवाँ हिस्सा ख़ुदा का और उसके रसूल का

और एहले क़राबत का और यतीमों का और मोहताजों का और मुसाफ़िरों का है अगर तुम खुदा पर और उस (नसरत) पर ईमान रखते हो जो (हक़ो बातिल) में फ़र्क़ करने के दिन (यानी जंगे बदर में) जिस दिन दोनों फ़ौजों में मुठभेड़ हो गई अपने बन्दे (मोहम्मद) पर नाज़िल फ़रमाई और खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (४१) जिस वक्त तुम (मदीने से) क़रीब के नाके पर थे और काफ़िर बैईद के नाके पर और क़ाफ़िला तुम से नीचे (उतर गया) था और अगर तुम (जंग के लिये) आपस में क़रार दाद कर लेते तो वक्त मौईन पर (जमा होने में) तक़दीमो ताख़ीर हो जाती लेकिन ख़ुदा को मन्ज़ूर था कि जो काम होकर रहने वाला था उसे कर ही डाले ताकि जो मरे बसीरत पर (यानी यक़ीन जान कर) मरे और जो जीता रहे वह भी बसीरत पर (यानी हक़ पहचान कर) जीता रहे और कुछ शक नहीं कि खुदा सुनता जानता है (४२) उस वक्त ख़ुदा ने तुम्हें ख्वाब में काफ़िरों को थोड़ी तादाद में दिखाया और अगर बहुत करके दिखाता तो तुम लोग जी छोड़ देते और (जो) काम (दरपेश था उस) में झगड़ने लगते लेकिन ख़ुदा ने (तुम्हें उससे) बचा लिया, बेशक वह सीनों को बातों तक से वाक़िफ़ है (४३) और उस वक्त जब तुम एक दूसरे के मुक़ाबिल हुए तो काफ़िरों को तुम्हारी नज़रों में थोड़ा करके दिखाता और तुमको उनकी निगाहों में थोड़ा करके दिखाता था ताकि ख़ुदा को जो काम करना मन्ज़ूर था उसे कर डाले, और सब कामों का रजू ख़ुदा ही की तरफ़ है (४४)—रुकू ५

मोमिनो ! जब (कफ़्फ़ार की) किसी जमाअ़त से तुम्हारा मुक़ाबला हो तो साबित क़दम रहो और ख़ुदा को बहुत याद करो ताकि मुराद हासिल करो (४५) और ख़ुदा और उसके रसूल के हुक्म पर चलो और आपस में झगडा न करना कि (ऐसा करोगे तो) तुम बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारा इक़बाल जाता रहेगा और सब्र से काम लो, कि ख़ुदा सब्र करने वाले का मददगार है (४६) और उन लोगों जैसे न होना जो इतराते हुए (यानी हक़ का मुक़ाबला करने के लिये) और लोगों को दिखाने के लिये घरों से निकल आये और लोगों को ख़ुदा की राह से रोकते हैं और जो आमाल यह करते हैं ख़ुदा उन पर एहाता किये हुऐ है (४७) और जब शैतानों ने उनके आमाल उनको आरास्ता कर दिखाये और कहा कि आज के दिन लोगों में से कोई तुम पर ग़ालिब न होगा और मैं तुम्हारा रफ़ीक़ हूँ (लेकिन) जब दोनों फ़ौजें एक दूसरे के मुकाबिल (सफ़ आरा) हुईं तो पस्पाह होकर चल दिया और कहने लगा कि मुझे तुम से कुछ वास्ता नहीं, मैं तो ऐसी चीज़ें देख रहा हूँ जो तुम नहीं देख सकते, मुझे तो ख़ुदा से डर लगता है और ख़ुदा सख़्त अज़ाब करने वाला है (४८)*—रुकू ६

---

*आयत ४८—रिवायत में आया है कि शैतान रोज़ बदर के हाथ हारिस बिना हशाम को पकड़ रहा था, फ़रिश्तों को देखा और हाथ हारिस का छोड़कर पीछे को भागा, हारिस ने कहा कि ऐ सराक़ा ऐसे वक़्त में छोड़ता है तू हमको ? शैतान ने हाथ अपनी छाती पर मारा और कहा कि मैं बेज़ार हूँ तुमसे, बदर के भागने वाले जिस वक़्त मक्का

उस वक्त मुनाफ़िक़ (और काफ़िर) जिन के दिलों में मरज़ था कहते थे कि उन लोगों को उन के दीन ने मग़रुर कर रखा है और जो शख्स ख़ुदा पर भरोसा रखता है तो ख़ुदा ग़ालिब हिकमत वाला है (४९) और काश तुम उस वक्त की कैफ़ियत देखो जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जानें निकालते हैं और उन के मूंहों और पीठों पर (कोड़े और हथौड़े वग़ैरा) मारते हैं और कहते हैं कि (अब) अज़ाबे आतिश (का मज़ा) चखो (५०) यह उन (आमाल) की सज़ा है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजे हैं और यह (जान रखो) कि ख़ुदा बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता (५१) जैसा हाल फ़िरऔनियों का और उन से पहले लोगों का (हुआ था वैसा ही उन का हुआ कि) उन्होंने ख़ुदा की आयतों से कुफ्र किया तो ख़ुदा ने उन के गुनाहों की सज़ा में उन को पकड़ लिया, बेशक ख़ुदा ज़बरदस्त और सख्त अज़ाब देने वाला है (५२) यह इस लिये कि जो नैयमत ख़ुदा किसी क़ौम को दिया करता है जब तक वह ख़ुद अपने दिलों की हालत न बदल डालें ख़ुदा उसे नहीं बदला करता और इस लिये कि ख़ुदा सुनता जानता है (५३) जैसा हाल फ़िरऔनियों और उन से पहले लोगों का (हुआ था वैसा ही उन का हुआ) उन्होंने अपने पर्वरदिगार की आयतों को झुठलाया तो हम ने उन के गुनाहों के सबब हलाक कर डाला,

---

को आये तो सराक़ा को पैग़ाम भेजा कि तूने हमको भगवाया, सराक़ा ने क़समें खाईं कि मुझको हर्गिज़ खबर नहीं है तुम्हारे जाने की और तुम्हारे भागने की, पस मालूम हुआ कि शैतान था।

फ़िरऔनियों को डबो दिया और वह सब ज़ालिम थे (५४) जानदारों में सब से बदतर ख़ुदा के नज़दीक वह लोग हैं, काफ़िर हैं सो वह ईमान नहीं लाते (५५) जिन लोगों से तुम ने (सुल्ह का) एहद किया है फिर वह हर बार अपने एहद को तोड़ डालते हैं और (ख़ुदा से) नहीं डरते (५६) अगर तुम उन को लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसी सज़ा दो कि जो लोग उन के पसे पुश्त हैं वह उन को देख कर भाग जायें, अजब नहीं कि उन को इस से इबरत हो (५७) और अगर तुम को किसी क़ौम से दग़ाबाजी का ख़ौफ़ हो तो (उन का एहद) उन्हीं की तरफ़ फैंक दो (और) बराबर (का जवाब दो) कुछ शक नहीं कि ख़ुदा दग़ाबाज़ों को दोस्त नहीं रखता (५८) रुकू—७

और काफ़िर यह न ख़्याल करें कि वह भाग निकले हैं वह (अपनी चालों से हम को) हर्गिज़ आजिज़ नहीं कर सकते (५९) और जहाँ तक हो सके (अफ़वाज की जमैयत के) ज़ोर से और घोड़ों के तैयार रहने से उन के (मुक़ाबले के) लिये मुस्तैयद रहो कि इस से ख़ुदा के दुश्मनों और तुम्हारे [1] दुश्मनों और उन के सिवा और लोगों पर जिन को तुम नहीं जानते और ख़ुदा जानता है, [2] हेबत बैठी रहेगी और तुम जो कुछ राहे ख़ुदा में ख़र्च करोगे उस का सवाब तुम को पूरा पूरा दिया

[1] यानी असबाब और हथियार लड़ाई के तैयार रखो, बाजों ने कहा कि कुव्वत से मुरादतीर अन्दाज़ी है या क़िले मुराद हैं—

[2] यानी यहूद या मुनाफ़िक या मजूसी या जिन्न मुराद हैं—

जायेगा और तुम्हारा ज़रा नुक़सान नहीं किया जायेगा (६०) और अगर यह लोग सुल्ह की तरफ़ मालूम हों तो तुम भी उस की तरफ़ मायल हो जाओ और ख़ुदा पर भरोसा रखो कुछ शक नहीं कि वह सब कुछ सुनता और जानता है (६१) और अगर यह चाहें कि तुम को फ़रेब दें तो ख़ुदा तुम्हें किफ़ायत करेगा वही तो है जिस ने तुम को अपनी मदद से [3] और मुसलमानों (की जमैयत) से तक़वीयत बख़्शी (६२) और उन के दिलों में उल्फ़त पैदा कर दी [4] अगर तुम दुनियाँ भर की दौलत सर्फ़ करते तब भी उन के दिलों में उल्फ़त पैदा न कर सकते थे मगर ख़ुदा ही ने उन में उल्फ़त डाल दी बेशक वह ज़बरदस्त (और) हिकमत वाला है (६३) ऐ नबी ! ख़ुदा तुम को और मोमिनों को जो तुम्हारे पैरो हैं काफ़ी हैं [5] (६४)-रुकू—८

ऐ नबी ! मुसलमानों को जहाद की तर्ग़ीब दो, अगर तुम में बीस आदमी साबित क़दम रहने वाले होंगे तो दो सौ काफ़िरों पर ग़ालिब रहेंगे और अगर सौ (ऐसे होंगे) तो हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे, इस लिये कि काफ़िर ऐसे लोग हैं जो कुछ भी

---

[3] यानी फ़रिश्तों को—

[4] दो फ़िर्क़े थे अन्सार के, ओस और ख़िज़रज कि १२० बरस से दर्मियान उन के दुश्मनी थी और क़त्ली ग़ारत एक दूसरे के में मशग़ूल थे तुम्हारी बरकत से दर्मियान उन के सुल्ह कर दी—

[5] रिवायत है कि ३९ मर्द और ६ औरतें ईमान लाये थे जिस वक्त हज़रत उमर मुसलमान हुए—

समझ नहीं रखते (६५) अब ख़ुदा ने तुम पर से बोझ हल्का कर दिया और मालूम कर लिया कि (अभी) तुम में किसी क़दर कमज़ोरी है पस अगर तुम में एक सौ साबित क़दम रहने वाले होंगे तो दो सो पर ग़ालिब रहेंगे और अगर एक हज़ार होंगे तो ख़ुदा के हुक्म से दो हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे और ख़ुदा साबित कदम रहने वालों का मददगार है (६६) पैग़म्बर को शायाँ नहीं कि उस के कब्ज़े में क़ैदी रहें, जब तक (काफ़िरों को क़त्ल कर के) ज़मीन में कसरत से ख़ून (न) बहा दें, तुम लोग दुनियाँ के माल के तालिब हो और ख़ुदा आख़िरत (की भलाई) चाहता है और ख़ुदा हिकमत वाला है (६७) अगर ख़ुदा का हुक्म पहले न हो चुका होता तो जो (फ़िदिया) तुम ने लिया है उस के बदले तुम पर बड़ा अज़ाब नाज़िल होता (६८) तो जो माले ग़निमत तुम को मिला है उसे खाओ (कि वह तुम्हारे लिये) हलाले तैय्यब (है) और ख़ुदा से डरते रहो, बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (६९) रुकू–९

ऐ पैग़म्बर जो क़ैदी तुम्हारे हाथ में (गिरफ़्तार) हैं उन से कह दो कि अगर ख़ुदा तुम्हारे दिलों में नेकी मालूम करेगा तो जो (माल) तुम से छिन गया है उस से बेहतर तुम्हें इनायत फ़रमायेगा और तुम्हारे गुनाह भी मुआफ़ कर देगा, और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (७०)* और अगर यह

*आयत ७०:—हज़रत अब्बास ने कहा कि दो वायदे मुझ को

ख़ुदा ने किये थे एक वह कि बेहतर जिस चीज़ से कि ली गई है बेगा,

लोग तुम से दग़ा करना चाहेंगे तो यह पहले ही ख़ुदा से दग़ा कर चुके हैं तो उस ने इन को (तुम्हारे) क़ब्ज़े में कर दिया और ख़ुदा दाना हिकमत वाला है (७१) जो लोग ईमान लाये और वतन से हिजरत कर गये और ख़ुदा की राह में अपने माल और जान से लड़े वह और जिन्होंने (हिजरत करने वालों को) जगह दी और उन की मदद की वह आपस में एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं और जो लोग ईमान तो ले आये लेकिन हिजरत नहीं की तो जब तक हिजरत न करें तुम को उन की रफ़ाक़त से कुछ सरोकार नहीं और अगर वह तुम से दीन (के मआमलात) में मदद तलब करें तो तुम को मदद करनी लाज़िम है अगर उन लोगों के मुक़ाबले में कि तुम में और उन में (सुल्ह का) एहद हो (इमदाद नहीं करनी चाहिए) और ख़ुदा तुम्हारे सब कामों को देख रहा है (७२) और जो लोग काफ़िर हैं (वह भी) एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं तो (मोमिनों) अगर तुम यह (काम) न करोगे तो मुल्क में फ़ित्ना बर्पा हो जायेगा और बड़ा फ़िसाद मचेगा (७३) और जो लोग ईमान लाये और वतन से हिजरत कर गये और ख़ुदा की राह में लड़ाईयाँ लड़ते रहे और जिन्होंने (हिजरत करने वालों को जगह दी) और उनकी मदद की, यही लोग सच्चे मुसलमान

यह वायदा ख़ुदा ने पूरा किया अब बीस ग़ुलाम हैं मेरे और हर एक वास्ते मेरे बीस हज़ार की सौदागरी करता है और पानी पिलाना चाहे ज़मज़म का भी मुझ को, दूसरा वायदा मग़फ़रत का है उम्मीदवार हूं कि इस में भी ख़ुदा वफ़ा करे।

हैं, उन के लिये ख़ुदा के हाँ बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है (७४) और जो लोग बाद में ईमान लाये और वतन से हिजरत कर गये और तुम्हारे साथ होकर जहाद करते रहे वह भी तुम्हीं में से हैं और रिश्तेदार ख़ुदा के हुक्म की रु से एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं, कुछ शक नहीं कि ख़ुदा हर चीज़ से वाक़िफ़ है (७५)—रुकू—१०

(९)—सूर—ऐ—तौबा—❀

मदीने में उतरी, इस में १२९ आयतें और १६ रुकू हैं।

(ऐ एहले इस्लाम अब) ख़ुदा और उस के रसूल की तरफ़ से मुश्रिकों से जिन से तुम ने एहद कर रखा था बेज़ारी (और जंग की तैयारी) है (१) तो (मुश्रिको ! तुम)

❀ इस सूरत के शुरू में बिस्मिल्लाह नहीं लिखी और इस की मुख़्तलिफ़ वजूहात बयान की गई हैं। हज़रत अली कहते हैं कि बिस्मिल्लाह में अमान है क्योंकि ख़ुदा का नाम उस वस्फ़ के साथ लिया जाता है जो अमान का क़ायम करने वाला है यानी रहमत और यह सूरत जंगे क़त्ताल और रफ़-ऐ-अमान के लिये नाज़िल हुई हैं। इस लिये इस में बिस्मिल्लाह नहीं है बाज़ ने कहा कि अरबकी आदत थी कि जब उन में और किसी क़ौम में एहद होता था और वह उस को तोड़ना चाहते थे तो इस बारे में जो ख़त वह उस को लिखते थे उस पर बिस्मिल्लाह नहीं लिखते थे जब कफ़्फ़ार ने वह एहद जो मुसलमानों ने

ज़मीन में चार महीने चल फिर लो और जान रखो कि तुम खुदा को आजिज़ न कर सकोगे और यह भी कि खुदा काफ़िरों को रुसवा करने वाला है (२) और हज्जे अकबर के दिन खुदा और उस के रसूल की तरफ़ से लोगों को आगाह किया जाता है कि खुदा मुश्रिकों में बेज़ार है और उस का रसूल भी (उन से दस्त बर्दार है) पस अगर तुम तौबा कर लो तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अगर न मानो (और खुदा से मुकाबला करो) तो जान रखो कि तुम खुदा को हरा नहीं सकोगे और (ऐ पैग़म्बर) काफ़िरों को दुख देने वाले अज़ाब की ख़बर सुना दो (३) अलबत्ता जिन मुश्रिकों के साथ तुम ने अहद किया हो और उन्होंने तुम्हारा किसी तरह का क़सूर न किया हो और न तुम्हारे मुक़ावले में किसी को मदद की हो, तो जिस रात तक उन के साथ अहद किया हो उसे पूरा करो (कि) खुदा परहेज़गारों को दोस्त रखता है (४) जब इज़्ज़त के महीने गुज़र जायें तो मुश्रिकों को जहाँ पाओ क़त्ल कर दो,

---

ख़ुदा के इज़्न से उन के साथ किया था तोड़ डाला तो ख़ुदा ने मुस्लमानों से फ़रमाया कि तुम को भी अपने एहद पर क़ायम रहना ज़रुर नहीं, पस चूंकि इस सूरत में एहद तोड़ डाला गया है और इस के नाज़िल होने पर जनाब रसालत मआब ने हज़रत अली को मुश्रिकों के पास भेजा, उन्होंने यह सूरत उन को सुना दी और उन से कह दिया कि अब सुल्ह का एहद टूट गया है चार महीने के बाद हर जगह तुम लोगों के साथ जंग है, इस लिये उन की आदत के मुताबिक़ इस के शुरु में बिस्मिल्लाह नहीं लिखी इस के सिवा कई और भी अक़वाल हैं, मगर ज़्यादा सही पहला क़ौल मालूम होता हैं—

और पकड़ लो और घेर लो, और हर घात की जगह पर उन की ताक में बैठे रहो, फिर अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने लगें तो उस की राह को छोड़ दो, बेशक खुदा बख्शने वाला मेहरबान है (५)* और अगर कोई मुश्रिक तुम से पनाह का ख्वास्तगार हो तो उस को पनाह दो यहाँ तक कि कलामे खुदा सुनने लगे फिर उस को अमल की जगह वापिस पहुंचा दो, इस लिये कि यह बेखबर लोग हैं (६) रुकू–१

भला मुश्रिकों के लिये (जिन्होंने एहद तोड़ डाला) खुदा और उस के रसूल के नज़दीक एहद क्यों कर क़ायम रह सकता है। हाँ जिन लोगों के साथ तुम ने मसजिदे मोहतरम (यानी खान-ऐ-काबा) के नज़दीक एहद किया है, अगर वह (अपने एहद पर) क़ायम रहें तो तुम भी अपने क़ौलो क़रार पर क़ायम रहो, बेशक खुदा परहेज़गारों को दोस्त रखता है (७) (भला उन से एहद) क्यों कर (पूरा किया जाये जब उन का यह हाल है) अगर तुम पर ग़लबा पा लें तो न क़राबत का लिहाज़ करें न एहद का, यह मुंह से तो तुम्हें खुश कर देते हैं लेकिन उन के दिल (इन बातों को , क़बूल नहीं करते, और उन में अक्सर नाफ़रमान हैं (८) यह खुदा की आयतों के ऐवज़ थोड़ा सा फ़ायदा हासिल करते और लोगों को खुदा के रस्ते से रोकते हैं कुछ शक नहीं कि जो काम यह करते हैं वह

*आयत ५:— इज्जत के महीने ज़िल्हिल की दसवी तारीख से रबी उल आखिर की दसवीं तक

बुरे हैं (९) यह लोग किसी मोमिन के हक़ में न तो रिश्तेदारी का पास करते हैं न एहद का, यह हद से तजावुज़ करने वाले हैं (१०) और अगर यह तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने लगें तो दीन में तुम्हारे भाई हैं और सामने वालों के लिये हम अपनी आयतें खोल खोल कर बयान करते हैं (११) और अगर एहद करने के बाद अपनी क़समों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में तान करने लगें तो उन कुफ्र के पेशवाओं से जंग करो (यह बे ईमान लोग हैं और) इन की क़समों का कुछ ऐतबार नहीं है, अजब नहीं कि (अपनी हरकात से) बाज़ आ जायें (१२) भला तुम ऐसे लोगों से क्यों न लड़ो जिन्होंने अपनी क़समों को तोड़ डाला और पैग़म्बरे (ख़ुदा) के जला वतन करने का अज़्मे मुसम्मम कर लिया और उन्होंने तुम से (एहद शिकनी की) इब्तिदा की क्या तुम ऐसे लोगों से डरते हो हालांकि डरने के लायक़ ख़ुदा है, बशर्ते कि ईमान रखते हो (१३) उन से (ख़ूब) लड़ो, ख़ुदा उन को तुम्हारे हाथों से अज़ाब में डालेगा और रुसवा करेगा और तुम को उन पर ग़लबा देगा और मोमिन लोगों के सीनों को शिफ़ा बख़्शेगा (१४) और उन के दिलों से ग़ुस्सा दूर करेगा और जिस पर चाहेगा रहमत करेगा और ख़ुदा सब कुछ जानता (और) हिकमत वाला है (१५) क्या तुम लोग यह ख्याल करते हो कि (बे आज़माईश) छोड़ दिये जाओगे और अभी तो ख़ुदा

ने ऐसे लोगों को मुतमैय्यज़ किया ही नहीं जिन्होंने तुम से

जहाद किये और खुदा ने उस के रसूल और मोमिनों के सिवा किसी को दिली दोस्त नहीं बनाया और खुदा तुम्हारे सब कामों से वाक़िफ़ है (१६) - रुकू — २

मुश्रिकों को ज़ेबा नहीं कि खुदा की मसजिदों को आबाद करें जब कि वह अपने आप पर कुफ्र की गवाही दे रहे हैं इन लोगों के सब आमाल बेकार हैं और यह हमेशा दोज़ख में रहेंगे (१७) खुदा की मसजिदों को तो वह लोग आबाद करते हैं जो खुदा (और रोज़े क़यामत पर) ईमान लाते और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते हैं, और खुदा के सिवा किसी से नहीं डरते, यही लोग, उमीद है कि हिदायत याफ़्ता लोगों में (दाखिल) हों (१८) क्या तुम ने हाजियों को पानी पिलाना और मसजिदे मोहतरम (यानी खान-ऐ-काबा) को आबाद करना उस शख्स के आमाल जैसा ख्याल कर लिया है जो खुदा और रोज़े आखिरत पर ईमान रखता है और खुदा की राह में जहाद करता है, यह लोग खुदा के नजदीक बराबर नहीं हैं और खुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं दिया करता (१९) जो लोग ईमान लाये और वतन छोड़ गये और ख़ुदा की राह में माल और जान से जहाद करते रहे, ख़ुदा के हाँ उस के दर्जे बहुत बड़े हैं और वही मुराद को पहुँचने वाले हैं (२०) उन का पर्वरदिगार उन को अपनी रहमत की और खुशनूदी की और बहिश्तों की ख़ुशखबरी देता है जिन में उन के लिये नैयमत-हाय-जाविदानी हैं (२१) (और वह) उन में अबदुल-आबाद रहेंगे, कुछ शक नहीं कि ख़ुदा के

हाँ बड़ा सिला (ईसार) है (२२) ऐ एहले ईमान ! अगर तुम्हारे (मां) बाप और (बहन) भाई ईमान के मुक़ाबिल कुफ्र को पसन्द करें तो उन से दोस्ती न रखो, और जो उन से दोस्ती रखेंगे वह ज़ालिम हैं (२३) कह दो कि अगर तुम्हारे बाप और बेटे और भाई और औरतें और ख़ानदान के आदमी और माल जो तुम कमाते हो, और तिजारत जिस के बन्द होने से तुम डरते हो और मकानात जिन को तुम पसन्द करते हो, ख़ुदा और उस के रसूल से और ख़ुदा की राह में जहाद करने से तुम्हें ज़्यादा अजीज़ हों तो ठेहरे रहो यहां तक कि ख़ुदा अपना हुक्म (यानी अज़ाब) भेजे और ख़ुदा नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं दिया करता (२४)—रुकू—३

ख़ुदा ने बहुत से मौक़ों पर तुम को मदद दी है और (जंगे) हुनैन के दिन, जबकि तुम को अपनी (जमायत की) कसरत पर ग़ुर्रा था, तो वह तुम्हारे कुछ भी काम न आई और ज़मीन बावजूद (इतनी बड़ी) फ़राख़ी के तुम पर तंग हो गई, फिर तुम पीठ फेर कर फिर गये (२५) फिर ख़ुदा ने अपने पैग़म्बर पर और मोमिनों पर अपनी तरफ़ से तस्कीन नाज़िल फ़रमाई और तुम्हारी मदद को फ़रिश्तों के लशकर जो तुम्हें नज़र नहीं आते थे (आस्मान) से उतारे और काफ़िरों को अज़ाब दिया और कुफ्र करने वालों की यही सज़ा है (२६) फिर ख़ुदा इस के बाद जिस पर चाहे मेहरबानी से तवज्जोह फ़रमाये और ख़ुदा

बख़्शने वाला मेहरबान है (२७) मोमिनो ! मुश्रिक तो पलीद

हैं तो इस बरस के बाद वह खान-ऐ-काबा के पास न जाने पायें और अगर तुम को मुफ़लिसी का खौफ़ हो तो ख़ुदा चाहेगा तो तुम को अपने फ़ज़ल से ग़नी कर देगा बेशक ख़ुदा सब कुछ जानता (और) हिकमत वाला है (२८) जो लोग एहले किताब में से ख़ुदा पर ईमान नहीं लाते और न रोज़े आखिरत पर यक़ीन (रखते हैं) और न उन चीज़ों को हराम समझते हैं जो ख़ुदा और उस के रसूल ने हराम की हैं और न दीने हक़ को क़बूल करते हैं, उन से जंग करो, यहाँ तक कि ज़लील हो कर अपने हाथ से जजिया दें (२९)—रुकू—४

और यहूद कहते हैं कि उज़ीर ख़ुदा के बेटे हैं और ईसाई कहते हैं कि मसीह ख़ुदा के बेटे हैं, यह उनके मूंह की बातें हैं, पहले काफ़िर भी इसी तरह बातें किया करते थे,यह भी उन्हीं की रीस करने लगे हैं, ख़ुदा इनको हलाक करे,यह कहाँ बहके फिरते हैं ? (३०) उन्होंने अपने उलमा और मशायख और मसीह इब्ने मरियम को अल्लाह के सिवा ख़ुदा बना लिया,हालांकि उनको यह हुक्म दिया गया था कि ख़ुदाये वाहिद के सिवा किसी की इबादत न करें, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, और वह उन लोगों के शरीक मुक़र्रर करने से पाक है (३१) यह चाहते हैं कि ख़ुदा नूर को अपने मूंह से (फूंक मारकर) बुझा दें और ख़ुदा अपने नूर को पूरा किये बग़ैर रहने का नहीं अगरचे काफ़िरों को बुरा ही लगे (३२) वही तो है जिसने अपने पैग़म्बर को हिदायत और दीने हक़ देकर भेजा ताकि उस (दीन) को (दुनिया के)

तमाम दीनों पर ग़ालिब करे अगरचे काफ़िर नाखुश ही हों (३३) मोमिनो ! (एहले किताब के) बहुत से आलिम और मशायख़ लोगों का माल नाहक़ खाते और (उनको) राहे ख़ुदा से रोकते हैं और जो लोग सोना और चान्दी जमा करते हैं और उसको ख़ुदा के रस्ते में खर्च नहीं करते उनको उस दिन के अज़ाबे अलीम की ख़ुशख़बरी सुना दो (३४) जिस दिन वह माल दोज़ख़ की (आग) में (खूब) गर्म किया जायेगा फिर उससे इन (बख़ीलों) की पेशानियाँ और पहलू और पीठें दाग़ी जायेंगी (और कहा जायेगा) कि यह वही है जो तुमने अपने लिये जमा किया था सो जो तुम जमा करते थे (अब) उसका मजा चखो (३५) ख़ुदा के नज़दीक महीने गिनती में उस रोज़ (से) कि उस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया किताबे ख़ुदा में बरस के बारह महीने (लिखे हुऐ हैं) उनमें से चार महीने अदब के हैं यही दीन (का) सीधा रस्ता है तो इन महीनों में (क़त्ताले नाहक़ से) अपने आप पर ज़ुल्म न करना और तुम सबके सब मुश्रिकों से लड़ो, जैसे वह सब के सब तुम से लड़ते हैं, और जान रखो ख़ुदा परहेज़गारों के साथ है (३६) अदब के किसी महीने को हटा कर आगे पीछे कर देना कुफ्र से इज़ाफ़ा करता है इससे काफ़िर गुमराही में पड़े रहते हैं एक साल तो इसको हलाल समझ लेते हैं और दूसरे साल हराम, ताकि अदब के महीनों की जो ख़ुदा ने मुक़र्रर किये हैं गिनती पूरी कर लें और जो ख़ुदा ने मना किया है उसको जायज़ करलें, उनके बुरे आमाल उनको

भले दिखाई देते हैं और खुदा काफ़िर लोगों को हिदायत नहीं दिया करता (३७)—रुकू ५

मोमिनो तुम्हें क्या हुआ है कि जब तुम से कहा जाता है कि ख़ुदा की राह में (जहाद के लिये) निकलो तो तुम (काहिली के सबब से) ज़मीन पर गिरे जाते हो (यानी घरों से निकलना नहीं चाहते) क्या तुम आख़िरत (की नैयमतों) को छोड़ कर दुनियाँ की ज़िन्दगी पर ख़ुश हो बैठे हो, दुनियाँ की ज़िन्दगोके फ़ायदे तो आख़िरत के मुक़ाबिल बहुत ही कम हैं (३८) अगर तुम न निकलोगे तो ख़ुदा तुम को बड़ी तकलीफ़ का अज़ाब देगा और तुम्हारी जगह और लोग पैदा कर देगा (जो ख़ुदा के पूरे फ़रमाँबरदार होंगे) और तुम उस को कुछ नुकसान न पहुँचा सकोगे और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है (३९) अगर तुम पैग़म्बर की मदद न करोगे तो ख़ुदा उन का मददगार है (वह वक्त तुम को याद होगा) जब उन को काफ़िरों ने घरों से निकाल दिया (उस वक्त) दो (ही शख़्स थे जिन) में (एक अबू बकर थे) दूसरे (ख़ुद रसूल अल्लाह) जब वह दोनों ग़ार (सौर) में थे, उस वक्त पैग़म्बर अपने रफ़ीक़ को तसल्ली देते थे कि ग़म न करो ख़ुदा हमारे साथ है, तो ख़ुदा ने उन पर तसकीन नाज़िल फ़रमाई और उनको ऐसे लशकरों से मदद दी, जो तुमको नज़र नहीं आते थे, और काफ़िरों की बात को पस्त कर दिया, और बात तो ख़ुदा ही की बलन्द है और ख़ुदा ज़बरदस्त (और) हिकमत

वाला है (४०)* तुम सुबुकसार हो या गराँबार (मालो अस्बाब थोड़ा रखते हो या बहुत, घरों से) निकल आओ और ख़ुदा के रस्ते में माल और जान से लड़ो, यही तुम्हारे हक़ में अच्छा है, बशर्ते कि समझो (४१) अगर माले ग़नीमत सहलुल हुसूल और सफ़र भी हल्का सा होता तो तुम्हारे साथ (शौक़) से चल देते, लेकिन मसाफ़त उन को दूर (दराज़) नज़र आई तो (उज्र करेंगे) और ख़ुदा की क़समें खायेंगे कि अगर हम ताक़त रखते तो आप के साथ निकल खड़े होते यह (ऐसे उज़रों से) अपने तईं हलाक कर रहे हैं और ख़ुदा जानता है कि यह झूठे हैं (४२)—रुकू—६

ख़ुदा तुम्हें मुआफ़ करे तुम ने पेशतर इस के कि तुम पर वह लोग भी ज़ाहिर हो जाते जो सच्चे हैं और वह भी तुम्हें

*आयत ४०: —ग़ार सौर—वह ग़ारे है ऊपर बलन्दी कोहे सौर के, शहर मक्के से तरफ़ यमन के, मक्के के बाईं तरफ़ और उस वक्त कोई उस जगह न चलता था, आँ हज़रत बरोज़ जुम्मेरात के ग़र्रा रबीउल अव्वल के मक्के से व रफ़ाक़त अबू बकर के बाहर आये और तरफ़ ग़ार के मुत्तावज्जोह हुए और रात को वहाँ रहे, दूसरे दिन सुब्ह को काफ़िर आँ हज़रत के ढून्ढने को निकले और ग़ार की तरफ़ आये हक़े तआला ने उसी वक्त कीकर का दरख़्त ऊपर दरवाज़े ग़ार के उगाया और जंगली क़बूतरों के जोड़े को हुक्म दिया कि वहाँ घौंसला बना कर अन्डे देवें और मकड़ी को इल्हाम हुआ कि जाला उस ग़ार के दरवाज़े पर तने, काफ़िर दरवाज़े पर पहुँचे, हक़ीकत ग़ार को देख कर फिर गये और हज़रत अबू बकर आँ हज़रत से कहते थे कि अगर काफ़िर नीचे क़दम अपने के निगाह करें तो हम को देख लेवें—

मालूम हो जाते जो झूठे हैं उन को इजाज़त क्यों दी (४३) जो लोग ख़ुदा पर और आख़िरत पर ईमान रखते हैं वह तुम से इजाज़त नहीं माँगते (कि पीछे रह जायें बल्कि चाहते हैं कि) अपने माल और जान से जहाद करें और ख़ुदा डरने वालों से वाक़िफ़ है (४४) इजाज़त वही लोग माँगते हैं जो ख़ुदा पर और पिछले दिन पर ईमान नहीं रखते और उन के दिल शक में पड़े हुऐ हैं, सो वह अपने शक में डाँवा डोल हो रहे हैं (४५) और अगर वह निकलने का इरादा करते हैं तो उस के लिये सामान तैयार करते हैं, लेकिन ख़ुदा ने उन का उठना और निकलना पसन्द न किया, तो उन को मिलने जुलने ही न दिया और (उन से) कह दिया गया कि जहाँ (माज़ूर) बैठे हैं तुम भी उन के साथ बैठे रहो (४६) अगर वह तुम में (शामिल हो कर) निकल भी खड़े होते तो तुम्हारे हक़ में शरारत करते और तुम में फ़िसाद डलवाने की ग़रज़ से दौड़े दौड़े फिरते, और तुम में उन के जासूस भी हैं और ख़ुदा ज़ालिमों को ख़ूब जानता है (४७) यह पहले भी तालिबे फ़िसाद रहे हैं और बहुत सी बातों में तुम्हारे लिये उलट फेर करते रहे हैं, यहाँ तक कि हक़ आ पहुँचा और ख़ुदा का हुक्म ग़ालिब हुआ और वह बुरा मानते ही रह गये (४८) और उन में कोई ऐसा भी है जो कहता है कि मुझे तो इजाज़त ही दीजिये और आफ़त में न डालिये, देखो यह आफ़त में पड़ गये हैं और दोज़ख़ सब काफ़िरों को घेरे हुऐ है (४९) (ऐ पैग़म्बर) अगर

तुम को आसाईश हासिल होती है तो उन को बुरी लगती है और अगर कोई मुश्किल पड़ती है तो कहते हैं कि हम ने अपना काम पहले ही (दुरुस्त) कर लिया था और ख़ुशियाँ मनाते लौट जाते हैं (५०) कह दो कि हम को कोई मुसीबत नहीं पहुँच सकती, बजुज़ उस के जो ख़ुदा ने हमारे लिये लिख दी हो, वही हमारा कारसाज़ है और मोमिनों को ख़ुदा ही का भरोसा रखना चाहिये (५१) कह दो कि तुम हमारे हक़ में दो भलाइयों में से एक के मुन्तज़िर हो और हम तुम्हारे हक़ में इस बात के मुन्तज़िर हैं कि ख़ुदा (या तो) अपने पास से तुम पर कोई अज़ाब नाज़िल करे या हमारे हाथों से अज़ाब (दिलवाये) तो तुम भी इन्तज़ार करो, हम भी तुम्हारे साथ इन्तज़ार करते हैं (५२) कह दो कि तुम (माल) ख़ुशी से ख़र्च करो या नाख़ुशी से, तुम से हरगिज़ क़बूल नहीं किया जायेगा तुम नाफ़रमान लोग हो (५३) और उन के ख़र्च (अमवाल) के क़बूल होने से कोई चीज़ मानेय नहीं हुई सिवा इस के कि उन्होंने ख़ुदा से और उस के रसूल से कुफ़्र किया, और नमाज़ को आते हैं तो सुस्त व काहिल हो कर और ख़र्च करते हैं तो नाख़ुशी से (५४) तुम उन के माल और औलाद से तअज्जुब न करना ख़ुदा चाहता है कि इन चीज़ों से दुनियाँ की ज़िन्दगी में उन को अज़ाब दे और (जब) उन की जान निकले (तो उस वक़्त भी) वह काफ़िर ही हों (५५) और ख़ुदा की क़समें खाते हैं कि वह तुम्हीं में से हैं; हालाँकि

वह तुम में से नहीं हैं, अस्ल यह है कि यह डरपोक लोग हैं (५६) अगर इन को कोई बचाओ की जगह, जैसे किला या ग़ारो मुग़ाक या (ज़मीन के अन्दर) घुसने की जगह मिल जाये तो उस तरफ़ रस्सियाँ तुड़ाते हुऐ भाग जायें (५७) और इन में बाज़ ऐसे भी हैं कि (तक़सीम) सदक़ात में तुम पर ताना ज़नी करते हैं अगर उन को उस में से (ख़ातिर ख़्वाह) दिया जाये तो ख़ुश रहें और अगर (इस क़दर) दिया जाये तो झट ख़फ़ा हो जायें (५८) और अगर वह उस पर ख़ुश रहते जो ख़ुदा और उस के रसूल ने उन को दिया था और कहते कि हमें ख़ुदा काफ़ी है, और ख़ुदा अपने फ़ज़ल से और उस के पैग़म्बर (अपनी मेहरबानी से) हमें (फिर) देदेंगे और हमें तो ख़ुदा ही की ख़्वाहिश है तो उन के हक़ में बेहतर होता (५९)—रुकू—७

सदक़ात (यानी ज़काती ख़ैरात) तो मुफ़लिसों और मोहताजों और कारकुनाने सदक़ात का हक़ है, और उन लोगों का जिन की तालीफ़े क़लूब मन्ज़ूर हैं और ग़ुलामों को आज़ाद कराने में और क़र्ज़दारों (के क़र्ज़ अदा करने में) और ख़ुदा की राह में और मुसाफ़िरों की (मदद) में (भी यह माल खर्च करना चाहिये, यह हक़ूक़) ख़ुदा की तरफ़ से मुक़र्रर कर दिये गये हैं और ख़ुदा जानने वाला (और) हिकमत वाला है (६०) और उन में बाज़ ऐसे हैं जो पैग़म्बर को ऐज़ा देते हैं और कहते हैं कि यह शख़्स निरा कान है (उन से) कह दो कि

(वह) कान (है तो) तुम्हारी भलाई के लिये वह ख़ुदा का और मोमिनों (की बात का) यक़ीन रखता है और जो लोग तुम में ईमान लाये हैं उन के लिये रहमत है, और जो लोग रसूले ख़ुदा को रन्ज पहुंचाते हैं उन के लिये अज़ाबे अलीम (तैयार) है (६१) (मोमिनो !) यह लोग तुम्हारे सामने ख़ुदा की क़समें खाते हैं ताकि तुम को खुश कर दें, हालाँकि अगर यह (दिल से) मोमिन होते तो ख़ुदा और उस के पैग़म्बर ख़ुश करने के ज़्यादा मुस्तैहक़ हैं (६२) क्या उन लोगों को मालूम नहीं कि जो शख़्स ख़ुदा और रसूल से मुक़ाबला करता है तो उस के लिये जहन्नुम की आग (तैयार) है जिस में वह हमेशा (जलता) रहेगा, यह बड़ी रुसवाई है (६३) मुनाफ़िक़ डरते रहते हैं कि उन के (पैग़म्बर) पर कहीं कोई ऐसी सूरत (न) उतर आये कि उन के दिल की बातों को उन (मुस्लमानों) पर ज़ाहिर कर दे. कह दो कि हँसी किये जाओ, जिस बात से तुम डरते हो ख़ुदा उस को ज़रुर ज़ाहिर कर देगा (६४) और अगर तुम उन से (इस बारे में) दरयाफ़्त करो तो कहेंगे कि हम तो यूंही बात चीत और दिल्लगी करते थे, कहो क्या तुम ख़ुदा और उस की आयतों और उस के रसूल से हंसी करते थे (६५) बहाने मत बनाओ, तुम ईमान लाने के बाद काफ़िर हो चुके हो, अगर हम तुम में से एक जमायत को मआफ़ कर दें तो दूसरी जमायत को सज़ा देंगे, क्योंकि वह गुनाह करते रहे हैं (६६)—रुकू—८

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें एक दूसरे के हम जिन्स (यानी एक ही तरह के) हैं कि बुरे काम करने को कहते हैं और नेक कामों से मना करते और (ख़र्च) करने से हाथ बन्द किये रहते हैं, उन्होंने ख़ुदा को भुला दिया तो ख़ुदा ने भी उन को भुला दिया, बेशक मुनाफ़िक़ नाफ़रमान हैं (६७) अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और काफ़िरों से आतिशे जहन्नुम का वायदा किया है जिस में वह हमेशा (जलते) रहेंगे, वही उन के लायक़ है और ख़ुदा ने उन पर लानत कर दी है और उन के लिये हमेशा का अज़ाब (तैयार) है (६८) (तुम मुनाफ़िक़ लोग) उन लोगों की तरह हो जो तुम से पहले हो चुके हैं, वह तुम से बहुत ताक़तवर और माल और औलाद में कहीं ज़्यादा थे तो वह अपने हिस्से से बहरायाब हो चुके सो जिस तरह तुम से पहले लोग अपने हिस्से से फ़ायदा उठा चुके हैं, उसी तरह तुम ने अपने हिस्से से फ़ायदा उठा लिया और जिस तरह वह (बातिल में) डूबे रहे, यह वह लोग हैं जिन के आमाल दुनियाँ और आख़िरत में ज़ाया हो गये और यही नुक़-सान उठाने वाले हैं (६९) क्या इन को उन लोगों (के हालात) की ख़बर नहीं पहुँची जो उन से पहले थे (यानी) नूह [1] और आद [2] और समूद [3] की क़ौमें और इब्राहीम की क़ौम और मदीन वाले और उलटी हुई बस्तियों वाले, उन के पास पैग़म्बर

[1] क़ौम नूह की कि तूफ़ान से ग़र्क़ हुई [2] क़ौम आद की कि आन्धी से हलाक हुई [3] कौम समूद की कि भोंचाल से हलाक हुई—

निशानियाँ ले ले कर आये और ख़ुदा तो ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता लेकिन वही अपने आप पर ज़ुल्म करते थे (७०)❀ और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के दोस्त हैं कि अच्छे काम करने को कहते हैं और बुरी बातों से मना करते हैं और नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते और ख़ुदा और उस के रसूल की इताअत करते हैं यही लोग हैं जिन पर ख़ुदा रहम करेगा, बेशक ख़ुदा ग़ालिब हिकमत वाला है (७१) ख़ुदा ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से बहिश्तों का वायदा किया है जिन के नीचे नहरें बह रही हैं (वह) उन में हमेशा रहेंगे और बहिश्त-हाय-जाविदानी में नफ़ीस मकानात का (वायदा किया है) और ख़ुदा की रज़ामन्दी तो सब से बढ़ कर नैयमत है यही बड़ी कामयाबी है (७२)—रुकू—९

ऐ पैग़म्बर ! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से लड़ो और उन पर सख़्ती करो और उन का ठिकाना दोज़ख है और वह बुरी जगह है (७३) यह ख़ुदा की क़समें खाते हैं कि उन्होंने (तो कुछ) नहीं कहा हालाँकि उन्होंने कुफ़्र का कल्मा कहा है और यह इस्लाम लाने के बाद काफ़िर हो गये हैं, और ऐसी बात का क़सद कर चुके हैं जिस पर क़ुदरत नहीं पा सके और उन्होंने (मुसलमानों में) ऐब ही कौन सा देखा है, सिवा इस के कि ख़ुदा ने अपने फ़ज़ल से और उस के पैग़म्बर ने (अपनी मेहरबानी से) उन को दौलतमन्द कर दिया है तो अगर यह लोग तौबा कर लें तो उन के हक़ में बेहतर होगा और अगर मूंह

फेर लें तो ख़ुदा उन को दुनियाँ और आख़िरत में दुख देने वाला अज़ाब देगा और ज़मीन में उन का कोई दोस्तदार और मदद-गार न होगा (७४) और उन में बाज़ ऐसे हैं जिन्होंने ख़ुदा से एहद किया था कि अगर वह हम को अपनी मेहरबानी से (माल) अता फ़रमायेगा तो हम ज़रुर ख़ैरात किया करेंगे और नेकूकारों में हो जायेंगे (७५) लेकिन जब ख़ुदा ने उन को अपने फ़ज़ल से (माल) दिया तो उस में बुख़्ल करने लगे और (अपने एहद से) रुगर्दानी कर के फिर बैठे (७६) तो ख़ुदा ने उस का अन्जाम यह किया कि उस रोज़ तक के लिये जिस में वह ख़ुदा के रुबरु हाज़िर होंगे उन के दिलों में निफ़ाक़ डाल दिया, इस लिये कि उन्होंने ख़ुदा से जो वायदा किया था उस के ख़िलाफ़ किया और इस लिये कि वह झूठ बोलते थे (७७) क्या उन को मालूम नहीं कि ख़ुदा उन के भेदों और मशवरों तक से वाक़िफ़ है और यह कि वह ग़ैब की बातें जानने वाला है (७८) जो (ज़ीइस्तताअत) मुस्लमान दिल खोल कर ख़ैरात करते हैं और जो (बेचारे ग़रीब) सिर्फ़ इतना ही कमा सकते हैं जितनी मज़दूरी करते (और उस थोड़ी सी कमाई में से भी ख़र्च करते) हैं उन पर जो (मुनाफ़िक़) ताना करते और हँसते हैं ख़ुदा उन पर हंसता है, और उन के लिये तकलीफ़ देने वाला अज़ाब (तैयार) है (७९) तुम उन के लिये बख़्शिश माँगो या न माँगो (बात एक है) अगर उन के लिए सत्तर दफ़ा भी बख़्शिश माँगोगे तो भी ख़ुदा उन को नहीं बख़्शेगा, यह इस

लिये कि ख़ुदा और उस के रसूल से कुफ़्र किया और ख़ुदा ना फ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता (८०) —रुकू—१०

जो लोग (ग़ज़बहे बतूक में) पीछे रह गये, वह पैग़म्बरे ख़ुदा (की मरज़ी) के ख़िलाफ़ बैठ रहने से ख़ुश हुए और इस बात को ना पसन्द किया कि ख़ुदा की राह में अपने माल और जान से जहाद करें और (औरतों से भी) कहने लगे कि गर्मी में मत निकलना, उन से कह दो कि दोज़ख़ की आग उस से कहीं ज़्यादा गर्म है काश यह (इस बात को) समझते (८१) यह (दुनिया में) थोड़ा सा हंस लें और (आख़िरत में) उन को उन आमाल के बदले जो वह करते रहे हैं बहुतसा रोना होगा (८२) फिर अगर ख़ुदा तुम को उन में से किसी गिरोह की तरफ़ ले जाये और वह तुम से निकलने की इजाज़त तलब करें तो कह देना कि तुम मेरे साथ हर्गिज़ नहीं निकलोगे और न मेरे साथ (मददगार होकर) दुश्मन से लड़ाई करोगे तुम पहली दफ़ा बैठ रहने से ख़ुश हुए तो अब भी पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो (८३) और (ऐ पैग़म्बर) उनमें से कोई मर जाये तो कभी उस (के जनाज़े पर) नमाज़ न पढ़ना और न उस की क़ब्र पर (जाकर) खड़े होना, यह ख़ुदा और उस के रसूल के साथ कुफ़्र करते रहे और मरे भी तो नाफ़रमान (ही) मरे (८४) और उन के माल और औलाद से ताज्जुब न करना, इन चीज़ों से ख़ुदा यह चाहता है कि उन को दुनियाँ में अज़ाब करे और (जब) उन की जान निकले (तो उस वक़्त भी) यह काफ़िर

ही हों (८५) और जब कोई सूरत नाज़िल होती है कि ख़ुदा पर ईमान लाओ और उस के रसूल के साथ हो कर लड़ाई करो तो जो उन में दौलतमन्द हैं वह तुम से इजाज़त तलब करते हैं और कहते हैं कि हमें तो रहने ही दीजिये कि जो लोग घरों में रहेंगे हम भी उन के साथ रहें (८६) यह इस बात से ख़ुश हैं कि औरतों के साथ जो पीछे रह जाती हैं (घरों में बैठ) रहें, उन के दिलों पर मोहर लगा दी गई है तो यह समझते ही नहीं (८७) लेकिन पैग़म्बर और जो लोग उन के साथ ईमान लाये सब अपने माल और जान से लड़े, इन्हीं लोगों के लिये भलाइयाँ हैं, और यही मुराद पाने वाले हैं (८८) ख़ुदा ने उन के लिये बाग़ात तैयार कर रखे हैं जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा उन में रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है (८९)—रुकू—११

और सहरा नशीनों में से भी कुछ लोग उज़र करते हुए (तुम्हारे पास) आये कि उन को भी इजाज़त दी जाये और जिन्होंने ख़ुदा और उस के रसूल से झूठ बोला वह (घर में) बैठ रहे सो जो लोग उन में से काफ़िर हुए हैं उन को दुख देने वाला अज़ाब पहुँचेगा (९०) न तो ज़ैईफ़ों पर कुछ गुनाह है और न बीमारों पर और न उन पर जिन के पास खर्च मौजूद नहीं (कि शरीके जहाद न हों यानी) जब कि ख़ुदा और उस के रसूल के ख़ैर अन्देश (और दिल से उन के साथ हों) नेकू-कारों पर किसी तरह का इल्ज़ाम नहीं है, ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (९१) और उन (बे सरो सामान) लोगों पर

(इल्ज़ाम) है कि तुम्हारे पास आये कि उन को सवारी दो और तुम ने कहा कि मेरे पास कोई ऐसी चीज़ नहीं जिस पर तुम को सवार करा दूं तो वह लौट गये और इस ग़म से कि उन के पास खर्च मौजूद न था उन की आँखों से आँसू बह रहे थे (९२) इल्ज़ाम तो उन लोगों पर है जो दौलतमन्द हैं और (फिर) तुम से इजाज़त तलब करते हैं (यानी) इस बात से खुश हैं कि औरतों के साथ जो पीछे रह जाते हैं (घरों में बैठ) रहें, ख़ुदा ने उन के दिलों पर मोहर लगा दी है, पस वह समझते ही नहीं (९३)

ग्यारहवाँ पारा—यातज़िरून—सूर-ऐ तौबा

जब तुम उन के पास वापिस जाओगे तो तुम से उज्र करेंगे, तुम कहना कि उज्र मत करो हम हर्गिज़ तुम्हारी बात नहीं मानेंगे, ख़ुदा ने हम को तुम्हारे सब हालात बता दिये हैं, और अभी ख़ुदा और तुम्हारा रसूल तुम्हारे अमलों को (और) देखेंगे फिर तुम ग़ायब व हाज़िर के जानने वाले (ख़ुदाये वाहिद) की तरफ़ लौटाये जाओगे, और जो अमल तुम करते रहे हो, वह सब बतायेगा (९४) जब तुम उन के पास लौट कर जाओगे तो तुम्हारे रुबरु ख़ुदा की क़समें खायेंगे ताकि तुम उन से दरगुज़र करो, सो उन की तरफ़ इल्तिफ़ात न करना, यह नापाक

हैं और जो काम यह करते रहे हैं उन के बदले उन का ठिकाना दोज़ख है (९५) यह तुम्हारे आगे क़समें खायेंगे ताकि तुम उन से खुश हो जाओ, लेकिन अगर तुम उन से खुश हो जाओगे तो खुदा तो नाफ़रमान लोगों से खुश नहीं होता (९६) देहाती लोग सख्त काफ़िर और मुनाफ़िक़ हैं और इस क़ाबिल हैं कि जो एहकाम (शरीयत) खुदा ने अपने रसूल पर नाज़िल फ़रमाये हैं उन से वाक़िफ़ (ही) न हों और खुदा जानने वाला (और) हिकमत वाला है (९७) और बाज़ देहाती ऐसे हैं कि जो कुछ खर्च करते हैं उसे तावान समझते हैं और तुम्हारे हक़ में मुसीबतों के मुन्तज़िर हैं, इन्हीं पर बुरी मुसीबत वाक़ैय हो और खुदा सुनने वाला (और) जानने वाला है (९८) और बाज़ देहाती ऐसे हैं कि खुदा पर और रोज़े आखिरत पर ईमान रखते हैं और जो कुछ खर्च करते हैं उन को खुदा की कुर्बत और पैग़म्बर की दुआओं का ज़रिया समझते हैं, देखो वह बे शुब्हा उन के लिये (मूजिबे) क़ुव्वत है, खुदा उन को अन्क़रीब अपनी रहमत में दाखिल करेगा, बेशक खुदा बख्शने वाला मेहरबान है (९९)—रुकू—१२

जिन लोगों ने सबक़त की (यानी सब से) पहले (ईमान लाये) महाजरीन में से भी और अन्सार में से भी और जिन्होंने नेकूकारी के साथ उन की पैरवी की, खुदा उन से खुश है और वह खुदा से खुश हैं, और उन में उन के लिये बाग़ात तैयार किये हैं जिन के नीचे नहरें बह रही हैं (और) हमेशा उन में रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है (१००) और तुम्हारे गिर्दोनवाह

के बाज़ देहाती मुनाफ़िक़ हैं और बाज़ मदीने वाले भी निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं तुम उन्हें नहीं जानते, हम जानते हैं, हम उन को दूसरा अज़ाब देंगे, फिर वह बड़े अज़ाब की तरफ़ लौटाये जायेंगे (१०१) और कुछ और लोग हैं कि अपने गुनाहों का (साफ़) इक़रार करते हैं उन्होंने अच्छे और बुरे अमलों को मिला जुला दिया था, क़रीब है कि ख़ुदा उन पर मेहरबानी से तवज्जोह फ़रमाये, बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (१०२) उन के माल में से ज़कात क़बूल कर लो कि इस से तुम उन को (ज़ाहिर में भी) पाक और (बातिन में भी) पाकीज़ा करते हो और उन के हक़ में दुआये ख़ैर करो कि तुम्हारी दुआओं के लिये मूजिबे तस्कीन है और ख़ुदा सुनने वाला जानने वाला है (१०३) क्या यह लोग नहीं जानते कि ख़ुदा ही अपने बन्दों से तौबा क़बूल फ़रमाता और सदक़ात (व ख़ैरात) लेता है और बेशक ख़ुदा तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है (१०४) और उन से कह दो कि अमल किये जाओ, ख़ुदा और उस का रसूल और मोमिन (सब) तुम्हारे अमलों को देख लेंगे और तुम ग़ायबो हाज़िर के जानने वाले (ख़ुदाये वाहिद) की तरफ़ लौटाये जाओगे फिर जो कुछ तुम करते रहे हो, वह सब तुम को बता देगा (१०५) और कुछ और लोग हैं जिन का काम ख़ुदा के हुक्म पर मौक़ूफ़ है, चाहे उन को अज़ाब दे और चाहे मुआफ़ कर दे और ख़ुदा जानने वाला हिकमत वाला है (१०६) और (उन में ऐसे भी हैं) जिन्होंने इस ग़रज़ से मसजिद बनाई है कि ज़रर पहुँचायें और कुफ़्र करें

और मोमिनों में तफ़रुक़ा डालें, और जो लोग खुदा और उस के रसूल से पहले जंग कर चुके हैं उन के लिये घात की जगह बतायेंगे और कसमें खायेंगे, कि हमारा मक़सूद तो सिर्फ़ भलाई थी, मगर ख़ुदा गवाही देता है कि यह झूठे हैं (१०७) तुम उस (मसजिद) में कभी (जाकर) खड़े भी न होना (अलबत्ता) वह मसजिद जिस की बुनियाद पहले दिन से तक़वे पर रखी गई है इस क़ाबिल है कि उस में जाया (और नमाज़ पढ़ाया) करो, उस में ऐसे लोग हैं जो पाक रहने को पसन्द करते हैं और खुदा पाक रहने वालों ही को पसन्द करता है (१०८) भला जिस शख्स ने अपनी इमारत की बुनियाद खुदा के खौफ़ और उस की रज़ामन्दी पर रखी वह अच्छा है या वह जिस ने अपनी इमारत की बुनियाद गिर जाने वाली खाई के किनारे पर रखी कि वह उस को दोज़ख की आग में ले गिरे और खुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता (१०९)* यह इमारत

*आयत १०९:—मदीने में एक मसजिद थी जो मसजद क़बा के नाम से मशहूर थी हज़रत सर्वरे कायनात अक्सर हफ़्ते के रोज़ वहाँ तशरीफ़ ले जाते और नमाज़ पढ़ते थे, मुनाफ़िक़ों ने चाहा कि इस के मुक़ाबले में अपनी एक अलग मसजिद बनायें, इस की बिना यह हुई कि मदीने में आँ हज़रत के तशरीफ़ ले जाने से पेशतर एक शख्स अबू उमर नामी रहता था जो अय्यामे जाहिलियत में ईसाई हो गया था निहायत कज सिरिश्त था वह आप के मदीने में तशरीफ़ ले जाने पर इस्लाम तो क्या लाता आप का खुल्लम खुल्ला दुश्मन हो गया और वहाँ से निकल कर मदीने के काफ़िरों से जा मिला और उन को हज़रत से लड़ने पर बरअंगेख्ता किया चुनाँचे उहद की लड़ाई हुई और वह इस में

जो उन्होंने बनाई है, हमेशा उन के दिलों में मूजिबे खिलजान रहेगी, (और उन को मुत्तरुद्दद रखेगी) मगर यह कि उन के दिल पाश पाश हो जायें और खुदा जानने वाला (और) हिकमत वाला है (११०) —रुकू—१३

काफ़िरों के साथ था, फिर रुम के बादशाह क पास चला गया और उस से आँ हज़रत के मुक़ाबले के लिये मदद का ख्वास्तगार हुआ उस ने मदद का वायदा कर लिया, वह उस के पास ठेहरा रहा और मदीने के काफ़िरों को लिख भेजा कि रुम से अनक़रीब एक लशकर आता है जो मुस्लमानों को तबाह कर देगा तुम एक मज़बूत जगह बना रखो जहाँ वह शख्स जो उस के पास से पैग़ाम रसानी के लिये आया करे, अक़ामत किया करे, तो उन लोगों ने मसजिद क़बा के पास ही एक मसजिद बनानी शुरू की उस मसजिद को मसजिदे मज़ार कहते हैं, जब वह तैयार हो चुकी तो मुनाफ़िक़ आँ हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे कि हम ने बीमारों और नातवानों के लिये नीज बरसात के ख्याल से एक मसजिद बनाई है आप वहाँ तशरीफ़ ले चलें और नमाज पढ़ें और दुआये बरक़त करें ताकि वहाँ जमायत क़ायम हो जाये, आप को उस वक्त तक मुतलक़ इल्म न था कि यह मसजिद किस नीयत और किस ग़रज़ से बनाई है इस लिये आपने फ़रमाया कि अब तो हम सफ़र में जा रहे हैं जब वापिस आयेंगे तब इन्शा अल्लाह वहाँ नमाज़ पढ़ेंगे, जब आप जंगे बतूक से वापिस आये और मदीने पहूँचने में एक दो दिन का रस्ता रह गया तो यह आयत नाज़िल हुई जिस से आप को मालूम हो गया कि मुनाफ़िक़ों का मक़सद इस मसजिद की तामीर से मुस्लमानों को मसजिद क़बा से जिस की बुनियाद तक़वा पर रखी गई थी मुतफ़र्रिक़ करना और उन में तफ़रुक़ा डालना था तब आप ने हुक्म दिया कि हमारे पहूँचने से पहले वह मसजिद ढा दी जाये चुनांचे इस हुक्म की तामील की गई और मसजिद ढा दी गई और जला दी गई—

खुदा ने मोमिनों से उन की जानें और उन के माल ख़रीद लिये हैं (और इस के) ऐवज़ में उन के लिये बहिश्त (तैयार की) है, यह लोग खुदा की राह में लड़ते हैं तो मारते भी हैं मारे भी जाते हैं यह तौरात और अन्जील और क़ुरान में सच्चा वायदा है जिस का पूरा करना उसे ज़रुर है, और खुदा से ज़्यादा वायदा पूरा करने वाला कौन है, तो जो सौदा तम ने उस से किया है उस से खुश रहो और यही बड़ी कामयाबी है (१११) तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, हम्द करने वाले, रोज़ा रखने वाले, रुको करने वाले, सजदा करने वाले, नेक कामों का अमर करने वाले और बुरी बातों से मना करने वाले, खुदा की हदों की हिफ़ाज़त करने वाले (यही मोमिन लोग हैं) और ऐ पैग़म्बर ! मोमिनों को (बहिश्त की) खुशख़बरी सुना दो (११२) पैग़म्बर और मुस्लमानों को शायाँ नहीं कि जब उन पर ज़ाहिर हो गया कि मुश्रिक एहले दोज़ख़ हैं तो उन के लिये बख़्शिशें माँगें, गो वह उन के क़राबतदार ही हों (११३) और इब्राहीम का अपने लिये बख़्शिश माँगना तो एक वायदे के सबब था जो वह उस से कर चुके थे, लेकिन जब उन को मालूम हो गया कि वह खुदा का दुश्मन है तो उस से बेज़ार हो गये, कुछ शक नहीं कि इब्राहीम बड़े नर्म दिल और मुतहम्मल थे (११४) और खुदा ऐसा नहीं कि किसी क़ौम को हिदायत देने के बाद गुमराह कर दे जब तक उन को वह चीज़ न बता दे जिस से वह परहेज़ करें, बेशक खुदा हर चीज़ से वाक़िफ़ है (११५) खुदा ही है जिस के लिये आस्मानों और

ज़मीन की बादशाहत है, वही ज़िन्दगी बख़्शता और (वही) मौत देता है और खुदा के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त और मददगार नहीं है (११६) बेशक खुदा ने पैग़म्बर पर मेहरबानी की और महाजरीन और अन्सार पर बावजूद इस के कि उन में से बाज़ों के दिल फिर जाने को थे मुश्किल की घड़ी में पैग़म्बर के साथ रहे फिर खुदा ने उन पर मेहरबानी फ़रमाई, बेशक वह उन पर निहायत शफ़क़त करने वाला (और) मेहरबान है (११७) और उन तीनों पर भी, जिन का मामला मुल्तवी किया गया था, यहाँ तक कि जब ज़मीन बावजूद फ़राख़ी के उन पर तंग हो गई और उन की जानें भी उन पर दूभर हो गईं और उन्होंने जान लिया कि खुदा (के हाथ) से खुद उस के सिवा कोई पनाह नहीं, फिर खुदा ने उन पर मेहरबानी की ताकि तौबा करें, बेशक खुदा तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है (११८)*—रुकू—१४

*आयत ११८:—यह तीन शख़्स भी उन्हीं लोगों में हैं जो ग़ज़्वऐ बतूक से पीछे रह गये थे और जनाब रसालत मआब के साथ जंग में नहीं गये थे, बतूक एक कस्बे का नाम है जो शाम और कावी अल्करा के दर्मियान वाक़ै है इस जंग से पीछे रह जाने वाले तीन किसम के लोग थे एक मुनाफ़िक़, यह बेईमान भला क्यों घर से निकलने लगे थे उन्होंने तरह तरह के हीले और बहाने किये और इस वज्ह से खुदा ने उन पर सख़्त लान तान की, दूसरे मुसलमान जो किसी उज़्र से पीछे रह गये थे, तीसरे यही तीन शख़्स जो बग़ैर उज़्र के न गये तो जिन शख़्सों ने अपने क़सूरों का ऐतराफ़ किया उन को मुआफ़ कर दिया गया मगर इन तीनों शख़्सों का मामला तक़रीबन पचास दिन तक मुल्तवी

ऐ एहले ईमान ! खुदा से डरते रहो और रास्तबाज़ों के साथ रहो (११९) एहले मदीना को और जो उन के आस पास देहाती रहते हैं, उन को शायाँ न था कि पैग़म्बरे खुदा से पीछे रह जायें और न यह कि अपनी जानों को उन की जानों से ज़्यादा अज़ीज़ रखें यह इस लिये कि उन्हें खुदा की राह में जो तकलीफ़ पहुँचती है, प्यास की या मेहनत की, या भूख की, या वह ऐसी जगह चलते हैं कि काफ़िरों को ग़ुस्सा आये या दुश्मनों से कोई चीज़ लेते हैं तो हर बात पर उन के लिये अमले नेक लिखा जाता है, कुछ शक नहीं कि अल्लाह नेकूकारों का अजर ज़ाया नहीं करता (१२०) और (इसी तरह) जो वह ख़र्च करते हैं, थोड़ा या बहुत, या कोई मैदान तैय करते हैं तो यह सब कुछ उन के लिये (आमाले सालेहा में) लिख लिया जाता है ताकि खुदा उन को उन के आमाल का बहुत अच्छा बदला दे (१२१) और यह तो हो नहीं सकता कि मोमिन सब के आगे निकल आयें तो यूं क्यों न किया कि हर एक जमायत में से चन्द अशख़ास निकल जाते ताकि दीन (का इल्म सीखते और उस) में समझ पैदा करते और जब अपनी क़ौम की तरफ़ वापिस आते तो उन को डर सुनाते ताकि वह हज़र करते (१२२)- -रुकू—१५

रखा गया यह तीन शख़्स, मरारा बिन रबी, और कआब बिन मालिक और हिलाल बिन उम्मिया थे इन अय्याम में उन पर ऐसी सख़्त हालत गुज़री कि उसे मौत से भी बदतर समझते थे आख़िर सच कहने के सबब उन के कसूर भी मुआफ़ कर दिये गये—

ऐ ऐहले ईमान ! अपने नज़दीक के (रहने वाले) काफ़िरों से जंग करो, और चाहिए कि वह तुम में सख़्ती (यानी मेहनत व क़ुव्वते जंग) मालूम करें, और जान रखो कि खुदा परहेज़गारों के साथ है (१२३) और जब कोई सूरत नाज़िल होती है तो बाज़ मुनाफ़िक (इस्तैहज़ा करते और) पूछते हैं कि इस सूरत ने तुम में से किस का ईमान ज़्यादा किया है, सो जो ईमान वाले हैं उन का तो ईमान ज़्यादा किया और वह खुश होते हैं (१२४) और जिनके दिलों में मरज़ है उनके हक़ में खबस पर खबस ज़्यादा किया और वह मरे भी तो काफ़िर के काफ़िर (१२५) क्या यह देखते नहीं कि यह हर साल एक या दो बार बला में फ़ंसा दिये जाते हैं फिर भी तौबा नहीं करते और न नसीहत पकड़ते हैं (१२६) और जब कोई सूरत नाज़िल होती हैं तो एक दूसरे की तरफ़ देखने लगते हैं और पूछते हैं (कि) भला तुम्हें कोई देखता है ? फिर, फिर जाते हैं खुदा ने उनके दिलों को फेर रखा है क्योंकि ये ऐसे लोग हैं जो समझ से काम नहीं लेते (१२७) (लोगो) तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक पैगम्बर आये हैं तुम्हारी तकलीफ़ उनको गराँ मालूम होती हैं और तुम्हारी भलाई के बहुत ख़्वाहिशमन्द हैं और मोमिनो पर निहायत शफ़क़त करने वाले (और) मेहरबान है (१२८) फिर अगर यह लोग फिरजायें (और न मानें) तो कह दो कि ख़ुदा मुझे किफ़ायत करता है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं उसी पर मेरा भरोसा है और वही अर्शे अज़ीम का मालिक हैं (१२९)--रुकू १६

(१०)—सूर-ऐ-यूनिस

मक्के में उतरी इसमें १०९ आयतें और ११ रुकू हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलिफ़, लाम, रे, अलिफ़ (अलरा) * यह बड़ी दानाई की किताब की आयतें हैं (१) क्या इन लोगों को तअाज्जुब हुआ कि हमने उन्हीं में से एक मर्द को हुक्म भेजा कि लोगों को डर सुना दो और ईमान लाने वालों को खुशखबरी दे दो कि उनके पर्वरदिगार के हाँ उन का सच्चा दर्जा है (ऐसे शख्स की निस्बत) काफ़िर कहते हैं कि यह तो सरीह जादूगर है (२) तुम्हारा पर्वरदिगार तो खुदा ही है जिसने आस्मान और ज़मीन छै दिन में बनाए, फिर (तख्ते शाही पर) क़ायम हुआ वहीं हर एक का इन्तज़ाम करता है, कोई (उसके पास) उस का इज़्न हासिल किए बिना (किसी की) सिफ़ारिश नहीं कर सकता, यही खुदा तुम्हारा पर्वरदिगार है तो इसी की इबादत करो, भला तुम ग़ौर क्यों नहीं करते (३) उसी के पास तुम सब को लौट कर जाना है, ख़ुदा का वायदा सच्चा है, वही खल-कत को पहली बार पैदा करता है फिर वही उसको दोबारा पैदा

---

*आयत १:—बहरूल हक़ायक़ में है कि हर हर्फ़ इशारा है ख़ुदा की तरफ़ से तरफ़ पैग़म्बर के, यानी सोगन्ध है साथ नेयमत के मुझको कि तेरे ऊपर अज़ल है और साथ लुत्फ़ मेरे के जो साथ तेरे है और साथ मेहरबानी मेरी के कि [illegible]—

करेगा ताकि ईमान वालों और नेक काम करने वालों को इन्साफ़ के साथ बदला दें और जो काफ़िर हैं उनके लिए पोने को निहायत गर्म पानी और दर्द देने वाला अज़ाब होगा, क्योंकि (ख़ुदा से) इन्कार करते थे (४) वही तो है जिसने सूरज को रोशन और चान्द को मुन्नव्वर बनाया और चान्द की मन्जिलें मुकर्रर की ताकि तुम बरसों का शुमार और (कामों का) हिसाब मालूम करो यह (सब कुछ) खुदा ने तदबीर से पैदा किया है समझने वालों के लिये वह अपनी आयतें खोल २ कर बयान फ़रमाता है (५) रात और दिन के (एक दूसरे के पीछे आने जाने में और जो चीज़ें ख़ुदा ने आसमान और जमीन में पैदा की है (सब में , डरने वालों के लिए निशानियां हैं (६) जिन लोगों को हमसे मिलने की तवक़्क़ो नहीं और दुनिया की ज़िन्दगीं से खुश और उसी पर मुतमैईन हो बैठे और हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हो रहे हैं (७) उनका ठिकाना उन (आमाल) के सबब जो वह करते है दोज़ख है (८) (और) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे उनको पवर्रदिगार उनके ईमान की वज्हे से (ऐसे महलों की) राह दिखायेगा (कि) उनके नीचे नैयमत के बाग़ों में नहरें बह रही होंगी (९) (जब वह) उन में (उनकी नैयमतों को देखेंगे तो बेसाख्ता) कहेंगे सुब्हान अल्लाह ! और आपस में उनकी दुआ सलाम अलैकम होंगी और उनका आख़िरी क़ौल यह (होगा) कि खुदाये रब्बुल आलमीं की हम्द (और उसका) शुक्र है (१०) रुकू १

और अगर ख़ुदा लोगों की बुराई में जल्दी करता तो जिस तरह वह तलबे खैर में जल्दी करते हैं तो उनकी (उम्र की मीयाद पूरी हो चुकी होती, सो जिन लोगों को हमसे मिलने की तवक़्क़ो नहीं, उन्हें हम छोड़े रखते है कि अपनी सरकशीमें बहकते रहें (११) और जब इन्सान को तकलीफ़ पहुँचती हैं तो लेटा और बैठा और खड़ा (हर हाल में) हमें पुकारता है फिर जब हम उस तकलीफ़ को उस से दूर कर देते हैं तो (बेलिहाज़ हो जाता और) इस तरह गुज़र जाता है गोया किसी तकलीफ़ पहुंचने पर हमें पुकारता ही न था इसी तरह हद से निकल जाने) वालों को उनके आमाल आरास्ता करके दिखाये गये हैं (१२) और तुम से पहले हम कई उम्मतों को जब उन्हों ने ज़ुल्म अख़्तियार किया हलाक कर चुके हैं और उनके पास पैग़म्बर खुली निशानियाँ लेकर आये मगर वह ऐसे न थे कि ईमान लाते हम गुन्हैगार लोगों को इसी तरह बदला दिया करते हैं (१३) फिर हमने उनके बाद तुम लागों को मुल्क का ख़लीफ़ा बनाया ताकि देखें तुम कैसे काम करते हो (१४) और जब उनको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती है तो जिन को हमसे मिलने की उम्मीद नहीं वह कहते हैं कि (या तो) इसके सिवा कोई और कुरान (बना) लाओ या इसको बदल दो कहदो कि मुझको अख़्यियार नहीं है कि इसे अपनी तरफ़ से बदल दू में तो उसी के हुक्म का ताबै हूँ जो मेरी तरफ़ आता है अगर मैं अपने पवर्रदिगार की ना फ़रमानी करू तो मुझे बड़े (सख़्त) अज़ाब के दिन से खौफ़ आता है (१५) (यह भी) कह दो कि अगर ख़ुदा चाहता तो

(न तो) मैं ही यह (किताब) तुम को पढ़ कर सुनाता और न वह ही तुम्हे इससे वाक़िफ़ करता मैं इससे पहले तुम में एक उम्र रहा हू (और कभी एक कलमा भी इस तरह का नहीं कहा) भला तुम समझते नहीं (१६)* तो उससे बढ़ कर जालिम कौन जो ख़ुदा पर झूठा इफ़्तिरा करे और उसकी आयतों को झुठलाये बेशक गुनेहगार फ़लाह नहीं पायेंगे (१७) और यह (लोग) ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ों की परस्तिश करते हैं जो न उनका कुछ बिगाड़ सकती हैं और न कुछ भला ही कर सकती है और कहते हैं कि यह ख़ुदा के पास हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं, कह दो क्या तुम ख़ुदा को ऐसी चीज़ बताते हो जिस का बजूद उसे न आस्मानों में मालूम होता हैं और न ज़मीन में वह है और (उसकी शान) उनके शिर्क करने से बहुत बलन्द है (१८) और (सब लोग पहले) एक ही उम्मत (यानी एक मिल्लत पर) थे, फिर जुदा २ हो गये और अगर एक बात जो तुम्हारे पवर्रदिगार की तरफ़ सेपहले हो चुकी है न होती तो जिन बातों में वह इख़्तिलाफ़ करते है उनमें फ़ैसला कर दिया जाता (१९) और कहते हैं कि उस पर उस के पवरदिगार की

---

*आयत १६:—यानी जिस ज़माने में के पैग़म्बर न था मैं, न मैं क़ुरान पढ़ता था न तुम दाना थे, पस क्यों नहीं दरयाफ़्त करते तुम कि वह कोई ४० बरस दर्मियान तुम्हारे रहा और इल्म न पढ़ा होवे और साथ किसी आलिम के सोहब्बत न की होवे वह कलाम ऊपर तुम्हारे पढ़ता है कि साफ़ गो अरब के फ़साहत इस कलाम की से हैरान हैं कि वह शख़्स कि जाहिल महज़ होवे कुरान जैसा कलाम कैसे बना दे—

तरफ़ से कोई निशानी क्यों नाज़िल नहीं हुई कह दो कि ग़ैब (का इल्म) तो ख़ुदा ही को है सो तुम इन्तज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तज़ार करता हूं (२०) रुकू--२

और जब हम लोगों को तकलीफ़ पहुँचाने के बाद (अपनी) रहमत (से आसाईश का मज़ा चखाते हैं) तो वह हमारी आयतों के हीले करने लगते हैं, कह दो कि ख़ुदा बहुत जल्द हीला करने वाला है और जो हीले तुम करते हो हमारे फ़रिश्ते उन को लिखते जाते हैं (२१) वही तो है जो तुम्हें जंगल और दरिया में चलने फिरने और सैर करने की तौफ़ीक़ देता है, यहाँ तक कि जब तुम कश्तियों में (सवार) होते हो और कश्तियाँ पाकीज़ा हवा के नरम नरम झोंकों से सवारों को ले कर चलने लगती हैं और वह उन से ख़ुश होते हैं तो नागहां ज़न्नाटेदार हवा चल पड़ती है और लहरें हर तरफ़ से उन पर (जोश मारती हुई) आने लगती हैं और वह ख्याल करते हैं कि (अब तो) लहरों में घिर गये, तो उस वक्त ख़ालिस ख़ुदा ही की इबादत कर के उस से दुआ माँगने लगते हैं कि (ऐ ख़ुदा) अगर तू हम को नजात बख़्शे तो हम (तेरे) बहुत ही शुक्रगुज़ार हों (२२) लेकिन जब वह उन को नजात दे देता है तो मुल्क में नाहक़ शरारत करने लगते हैं, लोगो ! तुम्हारी शरारत का वबाल तुम्हारी ही जानों पर होगा तुम दुनियाँ की ज़िन्दगी के फ़ायदे उठा लो, फिर तुम को हमारे ही पास लौट कर आना है, उस वक्त हम तुम को बतायेंगे जो कुछ तुम किया करते थे (२३) दुनियाँ की ज़िन्दगी की मिसाल मेंह की सी है

कि हम ने उस को आस्मान से बरसाया फिर उस के साथ सब्ज़ा जिसे आदमी और जानवर खाते हैं, मिल कर निकला, यहाँ तक की ज़मीन सब्ज़े से ख़ुशनुमा और आरास्ता हो गई और जमीन वालों ने ख्याल किया कि वह उस पर पूरी दस्तरस रखते हैं, नागहाँ रात को या दिन को हमारा हुक्मे (अज़ाब) आ पहुँचा तो हार ने उस को काट (कर ऐसा कर) डाला कि गोया कल वहाँ कुछ था ही नहीं, जो लोग ग़ौर करने वाले हैं उन के लिये हम (अपनी क़ुदरत को) निशानियाँ इसी तरह खोल खोल कर बयान करते हैं (२४) और ख़ुदा सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है और जिस को चाहता है सीधा रस्ता दिखाता है (२५) जिन लोगों ने नेक्कारी की, उन के लिये भलाई है और (मज़ीद बराँ) और भी उन के मूंहों पर न तो सियाई छायेगी और न रुसवाई, यही जन्नती हैं कि उस में हमेशा रहेंगे (२६) और जिन्होंने बुरे काम किये तो बुराई का बदला वैसा ही होगा और उन के मूंहों पर ज़िल्लत छा जायेगी और कोई उन को खुदा से बचाने वाला न होगा, उन के मूंहों (की सियाही का यह आमाल होगा कि उन) पर गोया अन्धेरी रात के टुकड़े उढ़ा दिये गये हैं, यही दोज़खी हैं और हमेशा इस में रहेंगे (२७) और जिस दिन हम उन सब को जमा करेंगे फिर मुश्रिकों से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे शरीक अपनी अपनी जगह ठैहरे रहो तो उन में तफ़रुक़ा डाल देंगे और उन के शरीक (उन से) कहेंगे कि हम तुम को नहीं पूजा करते थे (२८) हमारे और तुम्हारे दर्मियान खुदा ही गवाह काफ़ी है, हम तुम्हारी

परस्तिश से बिल्कुल बेखबर थे (२९) वहाँ हर शख्स (अपने आमाल की) जो उस ने आगे भेजे होंगे आज़माईश कर लेगा और वह अपने सच्चे मालिक की तरफ़ लौटाये जायेंगे और जो कुछ वह बोहतान बान्धा करते थे सब उन से जाता रहेगा (३०) रुकू —३

(उन से) पूछो कि तुम को आस्मान और ज़मीन में रिज़्क कौन देता है या (तुम्हारे) कानों और आँखों का मालिक कौन है और बेजान से जानदार कौन पैदा करता है और दुनियाँ के कामों का इन्तज़ाम कौन करता है, झट से कह देंगे कि ख़ुदा, तो क़हो फिर तुम (ख़ुदा से) डरते क्यों नहीं ? (३१) यही खुदा तो तुम्हारा पर्वरदिगार बर हक़ है और हक़ बात के ज़ाहिर होने के बाद गुमराही के सिवा है ही क्या ? तो तुम कहां फिरे जाते हो ? (३२) इसी तरह ख़ुदा का इर्शाद ना-फ़रमानों के हक़ में साबित हो कर रहा, यह ईमान नहीं लायेंगे (३३) उन से पूछो कि भला तुम्हारे शरीकों में कोई ऐसा है कि मख़लूक़ात को इब्तिदाअन पैदा करे (और) फिर उस को दोबारा बनाये कह दो कि खुदा ही पहली बार पैदा करता है, फिर वही दोबारा उस को पैदा करेगा तो तुम कहाँ उड़े जा रहे हो (३४) पूछो कि भला तुम्हारे शरीकों में कौन ऐसा है कि हक़ का रस्ता दिखाये कह दो कि खुदा ही हक़ का रस्ता दिखाता है, भला जो हक़ का रस्ता दिखाये वह इस क़ाबिल है कि उस की पैरवी की जाये या वह कि जब तक कोई रस्ता न बताये तो तुम को क्या हुआ है, कैसा इन्साफ़ करते हो (३५)

और उन में के अक्सर सिर्फ़ ज़िन्न की पैरवी करते हैं और कुछ शक नहीं कि ज़िन हक़ के मुक़ाबले में कुछ भी कारामद नहीं हो सकता, बेशक ख़ुदा तुम्हारे (सब) अफ़आल से वाक़िफ़ है (३६) और यह क़ुरान ऐसा नहीं कि खुदा के सिवा कोई इस को अपनी तरफ़ से बना लाये, हाँ (यह ख़ुदा का कलाम है) जो किताबें इस से पहले (की) है उनकी तसदीक़ करता है और उन्हीं किताबों की उस में तफ़सील है, इस में कुछ शक नहीं (कि) यह रब्बुल आलमीन की तरफ़ से (नाज़िल हुआ) है (३७) क्या यह लोग कहते हैं कि पैग़म्बर ने इस को अपनी तरफ़ से बना लिया है, कह दो कि अगर सच हो तो तुम भी इसी तरह की एक सूरत बना लाओ और खुदा के सिवा जिन को तुम बुला सको बुला भी लो (३८) हक़ीकत यह है कि जिस चीज़ के इल्म पर यह काबू नहीं पा सके उस को (नादानी से) झुठला दिया और अभी इस की हक़ीकत उन पर खुली ही नहीं, इसी तरह जो लोग इन से पहले थे उन्हों ने तकज़ीब की थी, सो देख लो कि ज़ालिमों का कैसा अन्जाम हुआ (३९) और उन में कुछ तो ऐसे हैं कि इस पर ईमान ले आते हैं और कुछ ऐसे हैं कि ईमान नहीं लाते और तुम्हारा पर्वरदिगार शरीरों से खूब वाकिफ़ है (४०)—रुकू—४

और अगर यह तुम्हारी तकज़ीव करें तो कह दो कि मुझ को मेरे आमाल का (बदला मिलेगा) और तुम को तुम्हारे (आमाल का) तुम मेरे अमलों के जवाबदेह नहीं हो और मैं तुम्हारे अमलों का जवाबदेह नहीं हूं (४१) और इन में बाज़

ऐसे हैं कि तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं, तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे, अगरचे कुछ भी (सुनते) समझते न हों (४२) और बाज़ ऐसे हैं कि तुम्हारी तरफ़ देखते हैं, तो क्या तुम अन्धों को रस्ता दिखाओगे, अगरचे कुछ भी देखते भालते न हों (४३) खुदा तो लोगों पर कुछ ज़ुल्म नहीं करता लेकिन लोग ही अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं (४४) और जिस दिन ख़ुदा उन को जमा करेगा (तो वह दुनियां की निस्बत ऐसा ख़्याल करेंगे कि) गोया (वहाँ) घड़ी भर दिन से ज़्यादा रहे ही नहीं थे (और) आपस में एक दूसरे को शिनाख़्त भी करेंगे, जिन लोगों ने ख़ुदा के रुबरु हज़िार होने को झुठला दिया वह ख़सारे में पड़ गये और राहयाब न हुए (४५) अगर हम कोई अज़ाब जिस का इन लोगों से वायदा करते हैं तुम्हारी आँखों के सामने (नाज़िल करें) या (उस वक्त जब) तुम्हारी मुद्दते-हयात पूरी कर दें तो उन को हमारे पास लौट कर आना है फिर जो कुछ यह कर रहे हैं खुदा उस को देख रहा है (४६) और हर एक उम्मत की तरफ़ पैग़म्बर भेजा गया, जब उन का पैग़म्बर आता है तो उन में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है और उन पर कुछ ज़ुल्म नहीं किया जाता (४७) और यह कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (जिस अज़ाब का) यह वायदा है वह आयेगा कब (४८) कह दो कि मैं तो अपने नुक़सान और फ़ायदे का भी कुछ आख़्तियार नहीं रखता, मगर जो खुदा चाहे, हर एक उम्मत के लिये (मौत का) एक वक्त मुकर्रर है, जब वह वक्त आ जाता है तो एक घड़ी भी देर नहीं कर सकते और न

जल्दी कर सकते हैं (४९) कह दो कि भला देखो तो अगर उसका अज़ाब तुम पर नागहाँ आ जाये, रात को या दिनको तो फिर गुन्हेगार किस बात की जल्दी करेंगे (५०)क्या जब वह आ वाक़ैय होगा तब उस पर ईमान लाओगे (उस वक्त कहा जायेगा कि) और अब (ईमान लाये ?) इसी के लिये तो तुम जल्दी मचाया करते थे (५१) फिर ज़ालिम लोगों से कहा जायेगा कि अज़ाबे दायमी का मज़ा चखो (अब) तुम उन्ही (आमाल का) बदला पाओगे जो (दुनियाँ में) करते रहे (५२) और तुम से दरयाफ़्त करते हैं कि आया यह सच है, कह दो हाँ, ख़ुदा की क़सम सच है, और तुम (भाग कर ख़ुदा को) आजिज़ नहीं कर सकोगे (५३)—रुकू—५

और अगर हर एक नाफ़रमान शख्स के पास रुऐ ज़मीन की तमाम चीज़ें हों तो (अज़ाब से बचने के) बदले में (सब) दे डाले और जब वह अज़ाब को देखेंगे तो (पछताएंगे और) नदामत को छुपायेंगे और उन में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जायेगा और (किसी तरह का) उन पर जुल्म नहीं होगा (५४) सुन रखो कि जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है सब ख़ुदा ही का है और यह भी सुन रखो कि ख़ुदा का वायदा सच्चा है लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते (५५) वही जान बख़्शता और (वही) मौत देता है और तुम लोग उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे (५६) लोगो ! तुम्हारे पास पर्वरदिगार की तरफ़ से नसीहत और दिलों की बीमारियों की शिफ़ा और मोमिनों के लिये हिदायत और रहमत आ पहुँची है (५७) कह

दो कि (यह किताब) ख़ुदा के फ़ज़ल और उस की मेहरबानी से (नाज़िल हुई है) तो चाहिए कि लोग उस से खुश हों, यह उस से कहीं बेहतर है जो वह जमा करते हैं (५८) कहो कि भलादेखो तो, खुदा ने तुम्हारे लिये जो रिज़्क नाज़िल फ़रमाया है, तो तुम ने उस में से (बाज़ को) हराम ठैहराया और (बाज़ को) हलाल (उन से) पूछो क्या खुदा ने तुम्हें इस का हुक्म दिया है या तुम खुदा पर इफ़्तिरा करते हो (५६) और जो लोग खुदा पर इफ़्तिरा करते हैं वह क़यामत के दिन की निस्बत क्या ख़्याल रखते हैं ? बेशक खुदा लोगों पर मेहरबान है, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते (६०)—रुकू—६

और तुम जिस हाल में होते हो, या क़ुरान में से कुछ पढ़ते हो, या तुम लोग कोई (और) काम करते हो, जब उस में मसरुफ़ होते हो, हम तुम्हारे सामने होते हैं और तुम्हारे पर्वर-दिगार से ज़र्रा बराबर भी कोई चीज़ पोशीदा नहीं है न ज़मीन में और न आसमान में और न कोई चीज़ उस से छोटी है या बड़ी, मगर किताबे रोशन में (लिखी हुई) है (६१) सुन रखो कि जो खुदा के दोस्त हैं उन को न कुछ खौफ़ होगा और न वह ग़मनाक होंगे (६२) (यानी) वह जो ईमान लाये और परहेज़गार रहे (६३) उन के लिये दुनियाँ की ज़िन्दगी में भी बशारत है और आखिरत में भी, खुदा की बातें बदलती नहीं, यही तो बड़ी कामयाबी है (६४) और (ऐ पैग़म्बर) इन लोगों की बातों से आज़ुर्दा न होना (क्योंकि) इज़्ज़त सब खुदा ही

की है वह (सब कुछ) सुनता (और) जानता है (६५) सुन रखो कि जो मख़लूक़ आस्मानों में है और जो लोग ज़मीन में हैं सब ख़ुदा ही के (बन्दे और उस के ममलूक) हैं और यह जो ख़ुदा के सिवा (अपने बनाये हुए) शरीकों को पुकारते हैं वह (किसी और चीज़ के) पीछे नहीं चलते, सिर्फ़ जिन के पीछे चलते हैं और मेहज़ अटकलें दौड़ा रहे हैं (६६) वही तो है जिस ने तुम्हारे लिये रात बनाई ताकि उस में आराम करो और रोज़े रोशन बनाया (ताकि उस में काम करो) जो लोग (माद्द-ऐ) समाअत रखते हैं उन के लिये उन में निशानियाँ हैं (६७) (बाज़ लोग) कहते हैं कि ख़ुदा ने बेटा बना लिया है, उस की ज़ात (औलाद से) पाक है (और) वह बेन्याज़ है जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है (ऐ इफ़्तिरा परदाज़ो !) तुम्हारे पास इस (क़ौले बातिल) की कोई दलील नहीं है, तुम ख़ुदा की निस्बत ऐसी बातें क्यों कहते हो जो जानते नहीं (६८) कह दो कि जो लोग ख़ुदा पर झूठ बोहतान बान्धते हैं, फ़लाह नहीं पायेंगे (६९) उन के लिये जो फ़ायदे हैं दुनियाँ में (हैं) फिर उन को हमारी ही तरफ़ लौट कर आना है, उस वक्त हम उन को अज़ाबे शदीद के मज़े चखायेंगे क्योंकि कुफ़्र की बातें किया करते थे (७०)—रुकू—७

और उन को नूह का किस्सा पढ़ कर सुनाओ जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि (ऐ क़ौम) अगर तुम को मेरा तुम में रहना और खुदा की आयतों से नसीहत करना नाग- वार हो तो मैं तो खुदा पर भरोसा रखता हूँ तुम अपने

शरीकों के साथ मिल कर एक काम (जो मेरे बारे में करना चाहो) मुक़र्रर कर लो और वह तुम्हारी जमायत को मालूम हो जाये और किसी से पोशीदा न रहे, फिर वह काम मेरे हक़ में कर गुज़रो और मुझे मोहलत मत दो (७१) और अगर तुम ने मूंह फेर लिया तो (तुम जानते हो) कि मैंने तुम से कुछ मआवज़ा नहीं मांगा मेरा मआवज़ा तो ख़ुदा के ज़िम्मे है और मुझे हुक्म हुआ है कि फ़रमाँबरदार रहूं (७२) लेकिन उन लोगों ने उस की तकज़ीब की तो हम ने उन को और जो लोग उन के साथ कश्ती में सवार थे सब को (तूफ़ान से) बचा लिया और उन्हें (ज़मीन में) ख़लीफ़ा बना दिया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया उन को ग़र्क़ कर दिया तो देख लो कि जो लोग डराये गये थे उन का कैसा अन्जाम हुआ (७३) फिर नूह के बाद हम ने और पैग़म्बर अपनी अपनी क़ौम की तरफ़ भेजे, तो वह उन के पास खुली निशानियाँ लेकर आये मगर वह लोग ऐसे न थे कि जिस चीज़ की पहले तकज़ीब कर चुके थे उस पर ईमान ले आते, इसी तरह हम ज़्यादती करने वालों के दिलों पर मोहर लगा देते हैं (७४) फिर उन के बाद हम ने मूसा और हारुन को अपनी निशानियाँ दे कर फ़िरऔन और उस के सरदारों के पास भेजा तो उन्होंने तकब्बुर किया और वह गुन्हेगार लोग थे (७५) तो जब उन के पास हमारे हां से हक़ आया तो कहने लगे कि यह तो सरीह जादू है (७६) मूसा ने कहा, क्या तुम हक़ के बारे में, जब वह तुम्हारे पास आया तो कहते हो कि यह जादू है, हालाँकि जादूगर फ़लाह नहीं

पाने के (७७) वह बोले क्या तुम हमारे पास इस लिये आये हो कि जिस (राह) पर हम अपने बाप दादा को पा रहे हैं उस से हम को फेर दो और (इस) मुल्क में तुम दोनों ही की सरदारी हो जाये और हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं (७८) और फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि सब कामिले फ़न जादूगरों को हमारे पास ले आओ (७९) जब जादूगार आये, तो मूसा ने उन से कहा कि जो तुम को डालना हो डालो (८०) जब उन्होंने (अपनी रस्सियों और लाठियों को) डाला तो मूसा ने कहा कि जो चीज़ें तुम (बना कर) लाये हो जादू है, ख़ुदा इस को अभी नेस्तो नाबूद कर देगा, ख़ुदा शरीरों के काम संवारा नहीं करता (८१) और ख़ुदा अपने हुक्म से सच को सच ही कर देगा, अगरचे गुन्हेगार बुरा ही मानें (८२)—रुकू–८

तो मूसा पर कोई ईमान न लाया मगर उस की क़ौम में से चन्द लड़के (और वह भी) फ़िरऔन और उस के एहले दर्बार से डरते डरते कि कहीं वह उन को आफ़त में न फसा दे और फ़िरऔन मुल्क में मुतकब्बिर और मुतक़ल्लिब और (किब्र व कुफ्र में) हद से बढ़ा हुआ था (८३) और मूसा ने कहा कि भाइयो ! अगर तुम ख़ुदा पर ईमान लाये हो तो अगर (दिल से) फ़रमांबरदार हो तो उसी पर भरोसा रखो (८४) तो वह बोले कि हम ख़ुदा ही पर भरोसा रखते हैं, ऐ हमारे पर्वरदिगार हम को ज़ालिम लोगों के हाथ से आज़माईश में न डाल (८५) और अपनी रहमत से क़ौमे कफ़्फ़ार से नजात बख़्श (८६) और हम ने मूसा और उस के भाई की तरफ़ वही भेजो कि अपने

लोगों के लिये मिश्र में घर बनाओ और अपने घरों को क़िब्ला (यानी मस्जिदें) ठहराओ और नमाज़ पढ़ो और मोमिनों को खुशख़बरी सुना दो (८७) और मूसा ने कहा ऐ हमारे पर्वरदिगार ! तूने फ़िरऔन और उस के सरदारों को दुनियाँ की ज़िन्दगी में (बहुत सा) साज़ोबर्ग और मालो ज़र दे रक्खा है, ऐ पर्वरदिगार ! उन का मआल यह है कि तेरे रस्ते से गुमराह कर दे, ऐ पर्वरदिगार ! उन के माल को बर्बाद कर दे और उन के दिलों को सख़्त कर दे कि ईमान न लायें जब तक अज़ाबे अलीम न देख लें (८८) (ख़ुदा ने) फ़रमाया कि तुम्हारी दुआ क़बूल कर ली गई तो तुम साबित क़दम रहना और बेअक़्लों के रस्तेपर न चलना(८९) और हम ने बनी इसराईल को दरिया के पार कर दिया तो फ़िरऔन और उस के लशकर ने सरकशी और तआद्दी से उन का तआक़ुब किया, यहाँ तक कि जब उस को ग़र्क़ (के अज़ाब) ने आ पकड़ा तो कहने लगा मैं ईमान लाया कि जिस (ख़ुदा) पर बनी इसराईल ईमान लाये हैं, और मैं फ़रमाँबरदारों में हूं (९०) (जवाब मिला कि) अब (ईमान लाता है) हालाँकि तू पहले नाफ़रमानी करता रहा और मुफ़्सिद बना रहा (९१) तो आज हम तेरे बदन को दरिया से निकाल लेंगे ताकि तू पिछलों के लिये इबरत हो, और बहुत से लोग हमारी निशानियों से बेख़बर हैं (९२)—

रुकू— ९

और हमने बनी इसराईल को रहने को उमदा जगह दी और

खाने को पाक़ीज़ा चीज़ें अता कीं लेकिन बावजूद इल्म हासिल होने के इख़्तिलाफ़ करते रहे, बेशक जिन बातों में वह इख़्तिलाफ़ करते रहे हैं, तुम्हारा पर्वरदिगार क़यामत के दिन उन में उन बातों का फ़ैसला कर देगा (९३) अगर तुम को इस (किताब के) बारे में जो हम ने तुम पर नाज़िल की है कुछ शक हो तो जो लोग पहले की (उतरी हुई) किताबें पढ़ते हैं उन से पूछ लो तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से तुम्हारे पास हक़ आ चुका है तो तुम हर्गिज़ शक करने वालों में न होना (९४) और न उन लोगों में होना जो ख़ुदा की आयतों की तकज़ीब करते हैं नहीं तो नुक़सान उठाओगे (९५) जिन लोगों के बारे में ख़ुदा का हुक्म (अज़ाब) क़रार पा चुका है वह ईमान नहीं लाने के (९६) जब तक कि अज़ाबे अलीम न देख लें, ख़्वाह उन के पास हर (तरह की) निशानी आ जाये (९७) तो कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुई कि ईमान लाती, तो उस का ईमान उसे नफ़ा देता हो ! यूनिस की क़ौम कि जब ईमान लाई तो हम ने दुनियाँ की ज़िन्दगी में उन से ज़िल्लत का अज़ाब दूर कर दिया और एक मुद्दत तक (फ़वाईदे दुनियावी से) उन को बहरा मन्द रखा (९८) और अगर तुम्हारा पर्वरदिगार चाहता तो जितने लोग ज़मीन पर हैं, सब के सब ईमान ले आते, तो क्या तुम लोगों पर ज़बरदस्ती करना चाहते हो कि वह मोमिन हो जायें (९९) हालांकि किसी शख़्स को क़ुदरत नहीं है कि ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर ईमान लाये और जो लोग बे अक़्ल हैं उन पर वह (कुफ़्रो ज़िल्लत की) नजासत डालता है (१००)

(इन कफ़्फ़ार से) कहो कि देखो तो आस्मानों और ज़मीन में क्या कुछ है, मगर जो लोग ईमान नहीं रखते उन की निशानियाँ और डरावे कुछ काम नहीं आते (१०१) सो जैसे (बुरे) दिन इस से पहले लोगों पर गुज़र चुके हैं उसी तरह के (दिनों के) यह मुन्तज़िर हैं, कह दो कि तुम भी इन्तज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तज़ार करता हूँ (१०२) और हम अपने पैग़म्बरों को और मोमिनों को नजात देते रहे हैं इसी तरह हमारा ज़िम्मा है कि मुसलमानों को नजात दें (१०३)—रुकू—१०

(ऐ पैग़म्बर) कह दो कि लोगो ! अगर तुम को मेरे दीन में किसी तरह का शक हो तो (सुन रखो कि) जिन लोगों की तुम खुदा के सिवा इबादत करते हो मैं उन की इबादत नहीं करता बल्कि मैं खुदा की इबादत करता हूँ जो तुम्हारी रुहें क़ब्ज़ कर लेता है और मुझको यही हुक्म हुआ है कि ईमान लाने वालों में होऊँ (१०४) और यह कि (ऐ मोहम्मद सब से) यकसू हो कर दीन (इस्लाम) की पैरवी किये जाओ और मुश्रिकों में हरगिज़ न होना (१०५) और खुदा को छोड़ कर ऐसी चीज़ को न पुकारना, जो न तुम्हारा कुछ भला कर सके और न बिगाड़ सके अगर ऐसा करोगे तो ज़ालिमों में हो जाओगे (१०६) और अगर खुदा तुम को कोई तकलीफ़ पहुंचाये तो उस के सिवा कोई उस का दूर करने वाला नहीं, और अगर तुम से भलाई करना चाहे तो उस के फ़ज़ल को कोई रोकने वाला नहीं, वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है फ़ायदा पहूंचाता है और वह बख्शने वाला मेहरबान है (१०७) कह दो कि लोगो ! तुम्हारे

पर्वरदिगार के हाँ से तुम्हारे पास हक़ आ चुका है तो जो कोई हिदायत हासिल करता है तो हिदायत से अपने ही हक़ में भलाई करता है, और जो गुमराही अख्तियार करता है, तो गुमराही से अपना ही नुक़सान करता है, और मैं तुम्हारा वकील नहीं हूँ (१०८) और (ऐ पैग़म्बर) तुम को जो हुक्म भेजा जाता है, उस की पैरवी किये जाओ और (तकलीफ़ों पर) सबर करो, यहाँ तक कि ख़ुदा फ़ैसला कर दे और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है (१०९)—रुकू—११

(११) सूर-ऐ-हूद—

मक्के में उतरी, इसमें १२३ आयतें और १० रुकू हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलरा यह वह किताब है जिसकी आयतें मुस्तैहकम हैं और ख़ुदाये हकीम व ख़बीर की तरफ़ से वातफ़सील बयान कर दी गई हैं (१) (वह यह) कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करो और मैं उसकी तरफ़ से तुमको डर सुनाने वाला और ख़ुश ख़बरी देने वाला हूँ (२) और यह कि अपने पवर्रदिगार से बख्शिश मांगो और उसके आगे तौबा करो वह तुमको एक मुक़र्रर वक्त तक मता-ए नेक से बेहरा मन्द करेगा और हर साहिबे बुज़र्ग को उस की बुज़र्गी (की दाद) देगा और अगर

रुगर्दानी करोगे तो मुझे तुम्हारे बारे में (क़यामत के) बड़े दिन के अज़ाब का डर है (३) तुम (सब) को खुदा की तरफ़ लौट कर जाना है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है (४) देखो यह अपने सीनो को दोहरा करते हैं ताकि खुदा से पर्दा करें, सुन रखो जिस वक्त, यह कपड़ों में लिपट कर पड़ते हैं (तब भी) वह उनकी छुपी और खुली बातों को जानता है वह तो दिलों तक की बातों से आगाह है (५)

—:०:—

बारहवाँ पारा--वमामिन दाब्बतिन--सूर-ऐ-हूद

और ज़मीन पर कोई चलने फिरने वाला नहीं मगर उसका रिज़्क खुदा के ज़िम्मे है वह जहाँ रहताहै उसे भी जानता है और जहां सौंपा जाता है उसे यहभी सब कुछ किताबे रोशन में लिखा हुआ है(६) और वही तो है जिसने आस्मानों और ज़मीन को छै दिन में बनाया और(उस वक्त)उमका अर्श पानी पर था (तुम्हारे पैदा करने से) मक़सूद यह है कि वह तुमको आज़माये कि तुम में अमल के कौन बेहतर है और अगर तुम कहो कि तुम लोग मरने के बाद (ज़िन्दा करके) उठाये जाओगो तो काफ़िर कह देंगे कि यह तो खुला जादू है (७) और अगर एक मुद्दते मौईयन तक हम उन से अज़ाब रोक दें तो कहेंगे कि कौन सी चीज़ अज़ाब को रोके हुये है देखो जिस रोज़ बह उन पर वाकैय होगा (फिर) टलने का नहीं और जिस चीज़ के साथ यह इस्तैहज़ा किया करते हैं वह उनको घेर लेगी (८)—रुकू १

और अगर हम इन्सान को अपने पास से नैयमत बख्शें फिर उस से उस को छीन लें तो ना उमीद (और) नाशुक्र (हो जाता) है (९) और अगर तकलीफ़ पहुचने के बाद आसाईश का मज़ा चखायें तो (खुश होकर) कहता है कि (यह) सब सख्तियाँ मुझ से दूर हो गईं, बेशक वह खुशियाँ मनाने वाला (और) फ़खर करने वाला है (१०) हाँ जिन्होंने सब्र किया और अमल नेक किये यहीहैं जिनके लिये बख्शिश और अजरे अज़ीम है (११) शायद तुम कुछ चीज़ वहीं में से जो तुम्हारे पास आती है छोड़ दो इस (ख्याल) से तुम्हारा दिल तंग हो कि (काफ़िर) यह कहने लगे कि उस पर कोई ख़ज़ाना क्यों नाज़िल नहींहुआ या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया (ऐ मोहम्मद) तुम तो सिर्फ़ नसीहत करने वाले हो और खुदा हर चीज़ का निगेहवान है (१२) यह क्या कहते हैं कि उसने क़ुरान अज खुद बना लिया है ? कहदो कि अगर सच्चे हो तो तुम भी ऐसी दस सूरतें बना लाओ और ख़ुदा के सिवा जिस जिस को बुला सकते हो बुला भीलो (१३) अगर वह तुम्हारी बात क़बूल न करें तो जान लो कि वह ख़ुदा केइल्म से उतरा है और यह कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं तो तुम्हे भी इस्लाम ले आना चाहिए (१४) जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी ज़ेबो ज़ीनत के तालिब हों हम उनके आमाल का बदला उन्हे दुनिया में ही दे देते हैं और इसमें उनकी हक़तल्फ़ी नहीं की जाती (१५) यह वह लोग हैं जिनके लिये आखिरत में आतिश (जहन्नुम) के सिवा और कुछ नहीं और जो अमल उन्होंने दुनियां में किये सब बर्बाद

और जो कुछ वह करते रहे वह सब ज़ाया (१६) भला जो लोग अपने पवर्रदिगार की तरफ़ से दलील (रोशन) रखते हों और उनके साथ एक (आस्मानी) गवाह भी उसकी जानिब से हो और उससे पहले मूसा की किताब हो जो पेशवा और रहमत है (तो क्या वह क़ुरान पर ईमान नहीं लायेंगे) यही लोग तो उस पर ईमान लाते हैं और जो कोई और फ़िर्क़ों में से उससे मुन्किर हों तो उसका ठिकाना आग है तो तुम इस (क़ुरान) से शक में न होना यह तुम्हारे पवर्रदिगार की तरफ़ से हक़ है लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते (१७) और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो ख़ुदा पर झूठ इफ़्तिरा करे, ऐसे लोग ख़ुदा के सामने पेश किये जायेंगे और गवाह कहेंगे कि यही लोग हैं जिन्होंने अपने पवर्रदिगार पर झूठ बोला था सुन रखो कि ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत है (१८) जो ख़ुदा के रस्ते से रोकते हैं और उसमें कजी चाहते हैं और वह आख़िरत से भी इन्कार करते हैं (१९) यह लोग ज़मीन में (कहीं भागकर ख़ुदा को) हरा नहीं सकते और न ख़ुदा के सिवा कोई उनका हिमायती है (ऐ पैग़म्बर) उनको दुगना अज़ाब दिया जायेगा, क्योंकि यह (शिद्दते कुफ़्र से तुम्हारी बात) नहीं सुन सकते थे और न (तुमको) देख सकते थे (२०) यही हैं जिन्होंने अपने तईं ख़सारे में डाला और जो कुछ यह इफ़्तिरा किया करते थे उनसे जाता रहा (२१) बिला शुबा यह आख़िरत में सबसे ज़्यादा नुक़सान पाने वाले हैं (२२) जो लोग ईमान लाये और अमल नेक किये

और अपने पवर्रदिगार के आगे आजिज़ी की, यही साहिबे जन्नत हैं, हमेशा उसमें रहेंगे (२३) दोनों फ़िर्क़ों (यानी काफ़िर व मोमिन) की मिसाल ऐसी है, जैसे एक अन्धा बहरा हो और एक देखता सुनता हो, भला दोनों का हाल यकसाँ हो सकता है ? फिर तुम सोचते क्यों नहीं (२४)—रुकू २

और हमने नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा (तो उन्होंने उनसे कहा) कि मैं तुमको खोल-खोलकर डर सुनाने (और यह पैग़ाम पहुंचाने) आया हूं (२५) कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करो, मुझे तुम्हारी निस्बत अज़ाबे अलीम का ख़ौफ़ है (२६) तो उनकी क़ौम के सरदार जो काफ़िर थे कहने लगे कि हम तुमको अपने ही जैसा एक आदमी देखते हैं और यह भी देखते हैं कि तुम्हारे पैरू वही लोग हुए हैं जो हम में अदना दर्जे के हैं और वह भी राये ज़ाहिर से (न ग़ौरो तआम्मुक़ से) और हम तुम में अपने ऊपर किसी तरह की फ़ज़ीलत नहीं देखते बल्कि तुम्हें झूठा ख़्याल करते हैं (२७) उन्होंने कहा कि ऐ क़ौम ! देखो तो अगर मैं अपने पवर्रदिगार की तरफ़ से दलील (रोशन) रखता हूं और उसने मुझे अपने हां से रहमत बख्शी हो जिसकी हक़ीक़त तुमसे पोशीदा रखी गई हो, तो क्या हम इसके लिये तुम्हें मजबूर कर सकते हैं, और तुम हो कि इससे नाखुश हो रहे हो (२८) ऐ क़ौम ! मैं इस (नसीहत) के बदले तुमसे मालो ज़र का ख़्वाहाँ नहीं हूं, मेरा सिला तो ख़ुदा के ज़िम्मे है और जो लोग ईमान लाये हैं, मैं उनको निकालने वाला भी नहीं हूं, वह तो अपने पवर्रदिगार से मिलने वाले हैं, लेकिन मैं देखता हूं कि तुम लोग नादानी कर रहे हो (२९) और बिरादराने

मिल्लत ! अगर मैं इनको निकाल दूं तो (अज़ाब) ख़ुदा से (बचाने के लिये) कौन मेरी मदद कर सकता है, भला तुम ग़ौर क्यों नहीं करते (३०) मैं न तुम से यह कहता हूँ कि मेरे पास ख़ुदा के ख़ज़ाने हैं, और न यह कि मैं ग़ैब जानता हूं और न यह कहता हूं कि मैं फ़रिश्ता हूं, और न उन लोगों की निस्बत, जिन को तुम हिक़ारत की नज़र से देखते हो, यह कहता हूं कि ख़ुदा उनको भलाई (यानी आमाल की जज़ाये नेक) नहीं देगा, जो उनके दिलों में है, उसे ख़ुदा ख़ूब जानता है, अगर मैं ऐसा कहूं तो बे इन्साफ़ों में हूं (३१) उन्होंने कहा कि नूह तुमने हम से झगड़ा तो किया और झगड़ा भी बहुत किया लेकिन अगर सच्चे हो तो जिस चीज़ से हमें डराते हो वह हम पर ला नाज़िल करो (३२) नूह ने कहा, कि उसको तो ख़ुदा ही चाहेगा तो नाज़िल करेगा और तुम उसको किसी तरह हरा नहीं सकते (३३) और अगर मैं सच्चा हूं कि तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही करूं और ख़ुदा यह चाहे कि तुम्हें गुमराह करे, तो मेरी ख़ैर ख़्वाही तुम को कुछ फ़ायदा नहीं दे सकती वही तुम्हारा पवर्रदिगार है और तुम्हें उसी की तरफ़ लौट कर जाना है (३४) क्या यह कहते हैं कि उस (पैग़म्बर) ने क़ुरान अपने दिल से बना लिया है, कह दो कि अगर मैंने दिल से बना लिया है तो मेरे गुनाह का वबाल मुझ पर और जो गुनाह तुम करते हो, उससे मैं बरी उलज़िम्मा हूँ (३५)—रुकू—३

और नूह की तरफ़ वही की गई कि तुम्हारी क़ौम में जो लोग ईमान ला चुके (ला चुके) उनके सिवा और कोई ईमान नहीं लायेगा तो जो काम यह कर रहे हैं उनकी वज्ह से ग़म न

खाओो (३६) और एक कश्ती हमारे हुक्म से हमारे रुबरु बनाओ और जो लोग ज़ालिम हैं उनके बारे में हम से कुछ न कहना, क्योंकि वह ज़रूर ग़र्क़ कर दिये जायेंगे (३७) तो नूह ने कश्ती बनानी शुरू कर दी, और जब उनकी क़ौम के सरदार उनके पास से गुज़रते तो उनसे तमस्खुर करते, वह कहते कि अगर तुम हम से तमस्खुर करते हो तो जिस तरह तुम हम से तमस्खुर करते हो, उसी तरह एक दिन हम भी तुम से तमस्खुर करेंगे (३८)* और तुमको मालूम हो जायेगा कि किस पर अज़ाब आता है जो उसे रुसवा करेगा और किस पर हमेशा का अज़ाब नाज़िल होता है (३९) यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आ पहुंचा और तनूर जोश मारने लगा तो हमने (नूह को) हुक्म दिया कि

---

*आयत ३८: उनकी क़ौम के बड़े २ सरदार ठठ्ठहा करते थे इस लिये कि वह कश्ती जंगल में बनाते थे, पानी से दूर रखते थे कि कश्ती तो बनाते हो, पानी कहाँ है और ताना देते थे कि पहले नबी थे अब बढ़ई बने हो—

*आयत ३९:—नूह ने कश्ती बनाई दो बरस में कि ३०० गज़ लम्बी थी और बाज़ों ने कहा है कि १२००० गज़ लम्बी और ५० गज़ चौड़ी और बाज़ोंने लिखा है कि ६०० गज़ लम्ली और ३० गज़ ऊँची और एक क़ौल में ३३ गज़ है और इसके सिवा और भी रिवायतें हैं, और इसके तीन दर्जे बनाये और रोग़न मल दिया, और हुक्मे इलाही से सब क़िस्म के जानवरों में से एक एक जोड़ा जमा किया और परिन्दों को नीचे के दर्जे में रखा और परिन्दे और चौपाये बीच के दर्जे में रखे और आदमियों को मैय असबाब और खाने पीने की चीज़ों के ऊपर के दर्जे में जगह दी—

हर क़िस्म (के जानदारों) में से जोड़ा-जोड़ा (यानी दो दो जानवर, एक एक नर और एक एक मादा) ले लो और जिस शख्स की निस्बत हुक्म हो चुका हो (कि हलाक हो जायेगा) उस को छोड़कर अपने घर वालों को और जो ईमान लाया हो उस को कश्ती में सवार करलो और उनके साथ ईमान बहुत कम लोग लाये थे (४०) (नूह ने) कहा कि ख़ुदा का नाम लेकर (कि उसी के हाथ में) उसका चलना और ठैहरना (है) उसमें सवार हो जाओ, बेशक मेरा पवर्रदिगार बख़्शने वाला मेहर-बान है (४१)* और वह उनको लेकर (तूफ़ान की) लहरों में चलने लगे (लहरें क्या थीं गोया पहाड़ थे), उस वक्त नूह ने अपने बेटे को कि (कश्ती से) अलग था पुकारा कि बेटा हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों में शामिल न हो (४२) उसने कहा कि मैं (अभी) पहाड़ से जा लगूंगा वह मुझे पानी से बचा लेगा, उन्होंने कहा कि आज ख़ुदा के अज़ाब से कोई बचाने वाला नहीं (और न कोई बच सकता है) मगर जिस पर ख़ुदा रहम करे, इतने में दोनों के दर्मियान लहर आ शामिल हुई और वह डूब कर रह गया (४३) और हुक्म दिया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल जा और ऐ आस्मान थम जा तो पानी खुश्क

---

*आयत ४१:—यानी अल्लाह का नाम लो कश्ती के चलाने के वक्त और ठैहराने के वक्त और बाज़ों ने कहा है कि अल्लाह के नाम से है किश्ती का चलना और ठैहरना, क्योंकि हदीसे शरीफ़ में आया है कि जब चाहते थे कश्ती चले तो बिस्मिल्लाह कहते थे और जब चाहते थे कि कश्ती ठैहर जाये तो बिस्मिल्लाह कहते थे—

हो गया और काम तमाम कर दिया गया और कश्ती कोहे जूदी पर जा ठैहरी और कह दिया गया कि बे इन्साफ़ लोगों पर लानत (४४) और नूह ने अपने पवर्रदिगार को पुकारा और कहा कि पवर्रदिगार मेरा बेटा भी मेरे घर वालों में है (तू उस को भी नजात दे) तेरा वायदा सच्चा है और तू सबसे बेहतर हाकिम है (४५) ख़ुदा ने फ़रमाया, नूह वह तेरे घर वालों में नहीं है वह तो ना-साईश्त-ऐ-अफ़आल है तो जिस चीज़ की तुम को हक़ीक़त मालूम नहीं उसके बारे में मुझ से सवाल ही न करो और मैं तुमको नसीहत करता हूं कि नादान न बनो (४६) नूह ने कहापवर्रदिगार मैं तुम से पनाह मांगता हूँ कि ऐसी चीज़ का तुझ से सवाल करूं जिस की मुझे हक़ीक़त मालूम नहीं और अगर तू मुझे नहीं बख़्शेगा और मुझ पर रहम नहीं करेगा तो मैं तबाह हो जाऊंगा (४७) हुक्म हुआ कि नूह हमारी तरफ़ से सलामती और बरकतों के साथ (जो) तुम पर और तुम्हारे साथ की जमायतों पर (नाज़िल की गई हैं) उतर आओ और कुछ और जमायतें होंगी जिनको हम दुनिया के (फ़वायद से) मेहज़ूज़ करेंगे फिर उनको हमारी तरफ़ से अज़ाबे अलीम पहुंचेगा (४८) यह (हालात) मिन्जुमला ग़ैब की ख़बरों के हैं जो हम तुम्हारी तरफ़ भेजते हैं और इससे पहले न तुम ही इनको जानते थे और न तुम्हारी क़ौम (ही इनसे वाक़िफ़ थी) तो सब्र करो कि अन्जाम परहेज़गारों का ही (भला) है (४९)—रुकू ४

और हम ने आद की तरफ़ उन के भाई यहूद को (भेजा) उन्होंने कहा कि मेरी क़ौम ! ख़ुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं तुम (शिर्क कर के ख़ुदा

पर) मेहज़ बोहतान बान्धते हो (५०) मेरी क़ौम ! मैं उस (वाज़ो नसीहत की) तुम से कुछ सिवा नहीं मांगता, मेरा सिला तो उस के ज़िम्मे है, जिस ने मुझे पैदा किया, भला तुम समझते क्यों नहीं (५१) और ऐ क़ौम ! अपने पर्वरदिगार से बख़्शिश माँगो, फिर उस के आगे तौबा करो, वह तुम पर आस्मान से मूसलाधार मैंह बरसायेगा और तुम्हारी ताक़त पर ताक़त बढ़ायेगा, और देखो गुन्हेगार बन कर रु गर्दानी न करो (५२) वह बोले हूद ! तुम हमारे पास कोई दलीले ज़ाहिर नहीं लाये और हम (सिर्फ़) तुम्हारे कहने से न अपने माबूदों को छोड़ने वाले हैं और न तुम पर ईमान लाने वाले हैं (५३) हम तो यह समझते हैं कि हमारे किसी माबूद ने तुम्हें आसेब पहुँचा कर दीवाना कर दिया है, उन्होंने कहा कि मैं ख़ुदा को गवाह करता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि तुम जिन को (ख़ुदा का) शरीक बनाते हो, मैं उन से बेज़ार हूं (५४) (यानी जिन की) ख़ुदा के सिवा (इबादत करते हो तो) तुम सब मिल कर मेरे बारे में (जो) तदबीर (करनी चाहो) कर लो और मुझे मोहलत न दो (५५) मैं ख़ुदा पर जो मेरा और तुम्हारा (सब का) पर्वरदिगार है भरोसा रखता हूँ (ज़मीन पर) जो चलने फिरने वाला है वह उस को चोटी से पकड़े हुए है, बेशक मेरा पर्वरदिगार सीधे रस्ते पर है (५६) अगर तुम रु गर्दानी करोगे तो जो पैग़ाम मेरे हाथ तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है, वह मैंने तुम्हें पहुंचा दिया है, और मेरा पर्वरदिगार तुम्हारी जगह और लोगों को ला बसायेगा, और तुम ख़ुदा का कुछ भी नुक़्सान नहीं कर सकते, मेरा पर्वरदिगार तो हर चीज़ पर निगेह-

बान है (५७) और जब हमारा हुक्मे अज़ाब आ पहुँचा तो हम ने हूद को और जो लोग उन के साथ ईमान लाये थे उन को अपनी मेहरबानी से बचा लिया और उन्हें अजाबे शदीद से नजात दी (५८) यह (वही) आद है जिन्होंने ख़ुदा की निशानियों से इन्कार किया और उस के पैग़म्बरों की नाफ़रमानी की और हर मुतकब्बिर सरकश का कहा माना (५९) तो इस दुनियाँ में भी लानत उन के पीछे लगी रही और क़यामत के दिन भी (लगी रहेगी) देखो आद ने अपने पर्वरदिगार से कुफ़्र किया (और) सुन रखो, हूद की क़ौम आद पर फिटकार है (६०)—रुकू—५

और समूद की तरफ़ उन के भाई सालेह को (भेजा) तो उन्होंने कहा कि क़ौम ! ख़ुदा ही की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, उसी ने तुम को ज़मीन से पैदा किया और उस में आबाद किया तो उस से मग़फ़रत माँगो और उस के आगे तौबा करो, बेशक मेरा पर्वरदिगार नज़दीक (भी है और दुआ का) क़बूल करने वाला भी है (६१) उन्होंने कहा कि सालेह इस से पहले हम तुम से (कई तरह की) उमीदें रखते थे (अब वह मुन्क़ता हो गईं) क्या तुम हम को उन चीज़ों के पूजने से मना करते हो जिन को हमारे बुज़ुर्ग पूजते आये हैं और जिस बात की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, उस में हमें क़वी शुबा है (६२) सालेह ने कहा क़ौम ! भला देखो तो, अगर मैं अपने पर्वरदिगार की तरफ़ से खुली दलील पर हूँ और उस ने मुझे अपने हाँ से (नबुव्वत की) नेयमत बख़्शी हो तो

अगर मैं ख़ुदा की नाफ़रमानी करूं तो उस के सामने मेरी कौन मदद करेगा, तुम तो कुफ़्र की बातों से मेरा नुक़सान करते हो (६३) और (यह भी कहा कि) ऐ क़ौम ! यह ख़ुदा की ऊंटनी तुम्हारे लिये एक निशानी (यानी मौजज़ा) है तो इस को छोड़ दो कि ख़ुदा की ज़मीन में (जहाँ चाहे) चरे और इस को किसी तरह की तकलीफ़ न देना वरना तुम्हें जल्द अज़ाब आ पकड़ेगा (६४) मगर उन्होंने उस की कौन्चें काट डालीं तो (सालेह ने) कहा, अपने घरों में तीन दिन (और) फ़ायदे उठा लो, यह वायदा है कि झूठा न होगा (६५) जब हमारा हुक्म आ गया तो हम ने सालेह को और जो लोग उन के साथ ईमान लाये थे उन को अपनी मेहरबानी से बचा लिया और उस दिन की रुसवाई से (मेहफ़ूज़ रखा) बेशक तुम्हारा पर्वरदिगार ताक़तवर और ज़बरदस्त है (६६) और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया था उन को (चिन्घाड़ की सूरत में) अज़ाब ने आ पकड़ा और वह अपने घरों में औन्धे पड़े रह गये (६७) गोया कभी उन में बसे ही न थे सुन रखो कि समूद ने अपने पर्वरदिगार से कुफ़्र किया और सुन रखो समूद पर फिटकार है (६८) और हमारे फ़रिश्ते इब्राहीम के पास बशारत ले कर आये तो सलाम कहा, उन्होंने भी (जवाब में) सलाम कहा, अभी कुछ वक़्फ़ा नहीं हुआ था कि इब्राहीम एक भुना हुआ बछड़ा ले आये (६९)*—रुकू—६

---

*आयत ६९:—जो फ़रिश्ते खुशख़बरी ले कर आये थे वह जिब्राईल, मैकाईल और इसराफ़ील थे और वह जो ख़ूबसूरत नौजवानोंकी शक्ल में आये थे, हज़रत इब्राहीम ने उन को मोअज़्ज़िज़ मेहमान समझ

जब देखा कि उन के हाथ खाने की तरफ़ नहीं जाते (यानी वह खाना नहीं खाते) तो उन को अजनबी समझ कर दिल में ख़ौफ़ किया (फ़रिश्तों ने) कहा कि ख़ौफ़ न कीजिये हम क़ौम लूत की तरफ़ (उन के हलाक करने को) भेजे गये हैं (७०) और इब्राहीम की बीवी (जो पास) खड़ी थी हंस पड़ी तो हम ने उस को इसहाक़ की और इसहाक़ के बाद याक़ूब की ख़ुशख़बरी दी (७१) उस ने कहा ए है मेरे बच्चा होगा, मैं तो बुढ़िया हूं और यह मेरे मियाँ भी बूढ़े हैं, यह तो बड़ी अजीब बात है (७२) उन्होंने कहा कि क्या तुम ख़ुदा की कुदरत से

कर उन के लिये एक मोटा ताज़ा बछड़ा ज़ब्हा किया और उस के कबाब बना कर उन के पास लाये, हज़रत इब्राहीम की बीवी सारा ने जब देखा कि इब्राहीम मेहमानों की ख़ातिर और इकराम करते हैं तो ख़ुद भी उन की ख़िदमत के लिये आ खड़ी हुई, मेहमानों की यह कैफ़ियत कि खाना सामने रखा है और उन के हाथ खाने को तरफ़ जाते ही नहीं, यह हालत देख कर हज़रत इब्राहीम के दिल में ख़ौफ़ पैदा हुआ कि यह लोग किसी बुरे इरादे से न आये हों, क्योंकि उन लोगों की आदत थी कि जब कोई मेहमान आता और मेज़बान के हाँ खाना न खाता तो वह यह ख़्याल करते कि यह नीयत नेक से नहीं आया बल्कि किसी बुरे इरादे से आया है, मेहमानों ने कहा ख़ौफ़ न कीजे हम ख़ुदा के फ़रिश्ते है और क़ौम लूत को हलाक करने के लिये भेजे गये हैं, फ़रिश्तों का यह क़ौल सुन कर बीवी सारा हंस पड़ीं, फिर फ़रिश्तों ने बीवी सारा को हज़रत इसहाक़ और उस के बाद हज़रत याक़ूब के पैदा होने की ख़ुशख़बरी सुनाई तो वह मारे ख़ुशी के बेसाख़्ता हंस पड़ी—

तश्राज्जुब करती हो ? ऐ एहले बैत तुम पर ख़ुदा की रहमत श्रौर उस की बरकतें हैं वह सज़ावारे तारीफ़ श्रौर बुज़ुर्गवार है (७३) जब इब्राहीम से ख़ौफ़ जाता रहा श्रौर उन को ख़ुशखबरी भी मिल गई तो क़ौम लूत के बारे में लगे हम से बहस करने (७४) बेशक इब्राहीम बड़े तहम्मुल वाले श्रौर रजू करने वाले थे (७५) ऐ इब्राहीम इस बात को जाने दो, तुम्हारे पर्वरदिगार का हुक्म श्रा पहुँचा है श्रौर उन लोगों पर श्रज़ाब श्राने वाला है जो कभी टलेगा नहीं (७६) श्रौर जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास श्राये तो वह उन (के श्राने) से ग़मनाक श्रौर तंग दिल हुए श्रौर कहने लगे कि श्राज का दिन बड़ी मुश्किल का दिन है (७७) श्रौर लूत की क़ौम के लोग बे तहाशा दौड़ते हुए श्राये श्रौर यह लोग पहले ही से फ़ेले शनीय किया करते थे लूत ने कहा कि ऐ क़ौम (यह जो) मेरी (क़ौम की) लड़कियाँ हैं यह तुम्हारे लिये (जायज़ श्रौर) पाक हैं, तो ख़ुदा से डरो श्रौर मेरे मेह-मानों के (बारे) में मेरी श्राबरु न खोश्रो, क्या तुम में कोई भी शाईसता श्रादमी नहीं (७८) वह बोले तुम को मालूम है कि तुम्हारी (क़ौम) की बेटियों की हमें कुछ हाजत नहीं श्रौर जो हमारी ग़रज़ है उसे तुम (खूब) जानते हो (७९) लूत ने कहा ऐ काश मुझ में तुम्हारे मुक़ाबले की ताक़त होती या मैं किसी मज़बूत क़िले में पनाह पकड़ सकता (८०) फ़रिश्तों ने कहा कि लूत हम तुम्हारे पर्वरदिगार के फ़रिश्ते हैं, यह लोग हर्गिज़ तुम तक नहीं पहुंच सकेंगे, तो कुछ रात रहे से श्रपने घर वालों को ले कर चल दो श्रौर तुम में से कोई शख्स पीछे फिर कर न देखे,

मगर तुम्हारी बीवी, कि जो श्राफ़त उन पर पड़ने वाली है पड़ेगी

उन के (अज़ाब के) वायदे का वक्त सुब्ह है और क्या सुब्ह कुछ दूर है (८१) तो जब हमारा हुक्म आया हम ने इस (बस्ती) को उलट कर नीचे ऊपर कर दिया और उन पर पत्थर की तँह बतँह (यानी पै-दर-पै) कंकरियाँ बरसाईं (८२) जिन पर तुम्हारे पर्वरदिगार के हां से निशान किये हुए थे और वह (बस्ती उन) ज़ालिमों से कुछ दूर नहीं (८३)—रुकू—७

और मदीन की तरफ़ उनके भाई, शुऐब को भेजा तो उन्होंने कहा कि ऐ क़ौम ख़ुदा ही की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, और माप और तौल में कमी न किया करो, मैं तो तुमको आसूदा हाल देखता हूं और (अगर तुम ईमान न लाओगे तो) मुझे तुम्हारे बारे में एक ऐसे दिन के अज़ाब का ख़ौफ़ है जो तुम को घेर कर रहेगा (८४) और क़ौम माप और तौल, इन्साफ़ के साथ पूरी पूरी किया करो, और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो और ज़मीन में खराबी करते न फिरो (८५) अगर तुमको (मेरे कहने का) यक़ीन हो तो ख़ुदा का दिया हुआ नफ़ा ही तुम्हारे लिये बेहतर है और मैं तुम्हारा निगेहबान नहीं हूं (८७) उन्होंने कहा, शुऐब क्या तुम्हारी नमाज़ तुम्हें यह सिखाती है कि जिनको हमारे बाप दादा पूजते आये हैं हम उनको तर्क करदें, या अपने माल में जो तसर्रुफ़ करना चाहें न करें, तुम तो बड़े नरम दिल के और रास्तबाज हो (८७) उन्होंने कहा, कि ऐ क़ौम देखो तो अगर मैं अपने पर्वरदिगार की तरफ़ से दलीले रोशन हूँ और उस ने अपने हां से मुझे नेक रोज़ी दी हो (तो क्या मैं उनके खिलाफ़ करूँगा) और मैं नहीं चाहता कि जिस अमर से तुम्हें मना करूँ ख़ुद उस को करने

लगूं, मैं तो जहाँ तक मुझ से हो सके (तुम्हारे मामलात की इस्लाह) चाहता हूं और (इस बारे में) मुझे तौफ़ीक़ का मिलना ख़ुदा ही (के फ़ज़ल) से है, मैं उसी पर भरोसा रखता हूं और उसी की तरफ़ रजू करता हूं (८८) और (ऐ क़ौम) मेरी मुख़ालिफ़त तुम से कोई ऐसा काम न करा दे कि जैसी मुसीबत नूह की क़ौम, या हूद की क़ौम या सालेह की क़ौम पर वाक़ैय हुई थी वैसी ही मुसीबत तुम पर वाक़ैय हो और लूत की क़ौम (का ज़माना तो) तुम से कुछ दूर नहीं (८९) और अपने पर्वरदिगार से बख़्शिश माँगो और उस के आगे तौबा करो, बेशक मेरा पर्वरदिगार रहम वाला (और) उजलत वाला है (९०) उन्होंने कहा, शुऐब, तुम्हारी बहुत सी बातें हमारी समझ में नहीं आतीं और हम देखते हैं कि तुम हम में कमज़ोर भी हो, और अगर तुम्हारे भाई बन्द न होते तो हम तुम को संगसार कर देते और तुम हम पर (किसी तरह भी) ग़ालिब नहीं हो (९१) उन्होंने कहा कि क़ौम ! क्या मेरे भाई बन्दों का दबाव तुम पर ख़ुदा से ज़्यादः है और उस को तुम ने पीठ पीछे डाल रखा है मेरा पर्वरदिगार तो तुम्हारे सब आमाल पर अहाता हुए है (९२) और बिरादराने मिल्लत ! तुम अपनी जगह काम किये जाओ, मैं (अपनी जगह) काम किये जाता हूं तुम को अन्क़रीब मालूम हो जायेगा कि रुसवा करने वाला अज़ाब किस पर आता है और झूठा कौन है, और तुम भी इन्तज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तज़ार करता हूं (९३) और जब हमारा हुक्म आ पहूँचा तो हम ने शुऐब को और जो लोग उन के साथ ईमान लाये थे उन को तो अपनी रहमत से बचा लिया और जो ज़ालिम थे उन को

चिंघाड़ ने आ दबोचा, तो वह अपने घरों में औन्धे पड़े रह गये (९४) गोया कभी उन में बसे ही न थे, सुन रखो कि मदीन पर (वैसी ही) फिटकार है जैसी समूद पर फिटकार थी (९५)—रुकू—८

और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ और दलीलें रोशन देकर भेजा (९६) यानी फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़ तो वह फ़िरऔन ही के हुक्म पर चले और फ़िरऔन का हुक्म दुरुस्त नहीं था (९७) वह क़यामत के दिन अपनी क़ौम के आगे आगे चलेगा और उनको दोज़ख में जा उतारेगा और वह जिस मुक़ाम पर उतारे जायेंगे वह बुरा है (९८) और इस जहान में भी लानत उनके पीछे लगा दी गई और क़यामत के दिन भी (पीछे लगी रहेगी) जो इनाम उनको मिला है बुरा है (९९) यह (पुरानी) बस्तियों के थोड़े से हालात हैं जो हम तुम से बयान करते हैं, इनमें से बाज़ तो बाक़ी हैं और बाज़ का तँहस नँहस हो गया (१०० और हमने उन लोगों पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने खुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया, गरज़ जब तुम्हारे पर्वरदिगार का हुक्म आ पहुँचा तो जिन माबूदों को खुदा के सिवा पुकारते थे वह उनके कुछ भी काम न आये और तबाह करने के सिवा उनके हक़में कुछ न करसके (१०१) और तुम्हारा पर्वरदिगार जब नाफ़रमान बस्तियों को पकड़ा करता है तो उसकी पकड़ इसी तरह की होती है, बेशक उसकी पकड़ दुख देने वाली और सख्त है (१०२) इन (क़िस्सों) में उस शख्स के लिये जो अज़ाबे आखिरत से डरे इबरत है, यह वह दिन होगा जिसमें सब लोग इकट्ठे किये जायेंगे, और यही वह दिन होगा जिस में सब

(ख़ुदा के रूबरू) हाज़िर किये जायेंगे (१०३) और हम उसके लाने में एक वक़्ते मौईयन तक ताख़ीर कर रहे हैं (१०४) जिस रोज़ वह आ जायेगा तो कोई मुतन्नफ़िस ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर बोल भी नहीं सकेगा, फिर उन में से कुछ बदबख़्त होंगे, और कुछ नेक बख़्त (१०५) तो जो बदबख़्त होंगे, वह दोज़ख में डाल दिये जायेंगे, उस में उन का चिल्लाना और दहाड़ना होगा (१०६) (और) जब तक आसमान व ज़मीन है हमेशा उसी तरह रहेंगे, मगर जितना तुम्हारा पर्वरदिगार चाहे, बेशक तुम्हारा पर्वरदिगार जो चाहता है कर देता है (१०७) और जो नेक बख़्त होंगे वह बहिश्त में (दाखिल किये जायेंगे) और जब तक आस्मान और ज़मीन हैं हमेशा उसी में रहेंगे, मगर जितना तुम्हारा पर्वरदिगार चाहे, यह (ख़ुदा की) बख़्शिश है जो कभी मुन्क़ता नहीं होगी (१०८) तो यह लोग जो (ग़ैर ख़ुदा की) परस्तिश करते हैं, इससे तुम ख़िल्जान में न पड़ना यह उसी तरह परस्तिश करते हैं जिस तरह पहले से इन के बाप दादा परस्तिश करते आये हैं और हम उन को हिस्सा उन का, पूरा पूरा, बिला कमो कास्त देने वाले हैं (१०९)—रुकू—९

और हमने मूसा को किताब दी उस में इख़्तिलाफ़ किया गया, और अगर तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से एक बात न हो चुकी होती तो उन में फ़ैस्ला कर दिया जाता और (वह) तो इस क़वी शुबे में (पड़े हुए) हैं (११०) और तुम्हारा पर्वरदिगार उन सब को (क़यामत के दिन) उन के आमाल का पूरा पूरा बदला देगा, बेशक जो अमल यह करते हैं वह उन से

वाक़िफ़ है (१११) सो (ऐ पैग़म्बर) जैसा तुमको हुक्म होता है (उस पर) और जो लोग तुम्हारे साथ ताईब हुए हैं, क़ायम रहो, और हद से तजावुज़ न करना वह तुम्हारे सब आमाल देख रहा है (११२) और जो लोग ज़ालिम हैं उन की तरफ़ माईल न होना, नहीं तो तुम्हें (दोज़ख की) आग आ लिपटेगी और ख़ुदा के सिवा तुम्हारे और दोस्त नहीं है, अगर तुम ज़ालिमों की तरफ़ माईल हो गये तो फिर तुम को (कहीं से) मदद न मिल सकेगी (११३) और दिन के दोनों सिरों (यानी सुब्ह और शाम के औक़ात में) और रात की चन्द (पहली) साअ़ात में नमाज़ पढ़ा करो, कुछ शक नहीं कि नेकियाँ गुनाहों को दूर कर देती हैं, यह उन के लिये नसीहत है जो नसीहत क़बूल करने वाले हैं (११४) और सब्र किये रहो, कि ख़ुदा नेकूकारों का अजर ज़ाया नहीं करता (११५) तो जो उम्मतें तुम से पहले गुज़र चुकी हैं, उन में ऐसे होशमन्द क्यों न हुए जो मुल्क में ख़राबी करने से रोकते हाँ (ऐसे) थोड़े से (थे) जिन को हम ने उन में से मुख़लिसी बख़्शी और जो ज़ालिम थे वह इन्हीं बातों के पीछे लगे रहे जिन में ऐशव आराम था और वह गुनाहों में डूबे हुए थे (११६) और तुम्हारा पर्वरदिगार ऐसा नहीं है कि बस्तियों को जबकि वहाँ के बाशिन्दे नेकूकार हों अज़राहे ज़ुल्म तबाह कर दे (११७) और अगर तुम्हारा पर्वरदिगार चाहता तो तमाम लोगों को एक ही जमायत कर देता, लेकिन वह हमेशा इख़्तलाफ़ करते रहेंगे (११८) मगर जिन पर तुम्हारा पर्वरदिगार रहम करे, और इसी लिये उस ने उन को पैदा किया है और तुम्हारे पर्वरदिगार का क़ौल पूरा हो गया कि मैं दोज़ख को जिन्नों और

इन्सानों सब से भर दूंगा (११९) (ऐ मोहम्मद !) और पैग़म्बरों के वह हालात जो हम तुम से बयान करते हैं, इन से हम तुम्हारे दिल को क़ायम रखते हैं और इन (क़सिस) में तुम्हारे पास हक़ पहुँच गया (और) यह मोमिनों के लिये नसीहत और इबरत है (१२०) और जो लोग ईमान नहीं लाये, उन से कह दो कि तुम अपनी जगह अमल किये जाओ हम (अपनी जगह) अमल किये जाते हैं (१२१) और (नतीजा आमाल का) तुम भी इन्तज़ार करो हम भी इन्तज़ार करते हैं (१२२) और आस्मान और ज़मीन की छुपी चीज़ों का इल्म ख़ुदा ही का है और तमाम अमूर का रजू उसी की तरफ़ है, तो उसी की इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो, और जो कुछ तुम कर रहे हो, तुम्हारा पर्वरदिगार उस से बेख़बर नहीं (१२३)— रुकू—१०

(१२)—सूर-ऐ-यूसुफ़

यह सूरत मक्की है और इसमें १११ आयतें और १२ रुकू हैं

शुरु ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

अलरा, यह किताब रोशन की आयतें हैं (१) हम ने इस क़ुरान को अरबी में नाज़िल किया है ताकि तुम समझ सको (२) (ऐ पैग़म्बर) हम इस क़ुरान के ज़रिये से जो हम ने तुम्हारी

तरफ़ भेजा है, तुम्हें एक निहायत अच्छा किस्सा सुनाते हैं और तुम इस से पहले बेखबर थे (३) जब यूसुफ़ ने अपने वालिद से कहा कि अब्बा मैंने (ख्वाब में) ग्यारह सितारों और सूरज चान्द को देखा है, देखता (क्या हूँ) कि वह मुझे सजदा कर रहे हैं (४) उन्होंने कहा कि बेटा अपने ख्वाब का ज़िक्र अपने भाइयों से न करना, नहीं तो वह तुम्हारे हक़ में कोई फ़रेब की चाल चलेंगे कुछ शक नहीं कि शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है (५) और इसी तरह तुम्हें बरगज़ीदा (व मुमताज़) करेगा और (ख्वाब की) बातों की ताबीर का इल्म सिखायेगा और जिस तरह उस ने अपनी नैयमत पहले तुम्हारे दादा परदादा इब्राहीम और इसहाक़ पर पूरी की थी उसी तरह तुम पर और औलादे याक़ूब पर पूरी करेगा, बेशक तुम्हारा पर्वरदिगार (सब कुछ) जानने वाला (और) हिकमत वाला है (६)—रुकू—१

हाँ, यूसुफ़ और उन के भाइयों (के किस्से) में पूछने वालों के लिये (बहुत सी) निशानियाँ हैं (७) जब उन्होंने (आपस में) तज़करा किया कि यूसुफ़ और उस का भाई अब्बा को हम से ज़्यादा प्यारे हैं, हालाँकि हम जमायत की (जमायत हैं) कुछ शक नहीं कि अब्बा सरीह ग़लती पर हैं (८) तो यूसुफ़ को (या तो जान से) मार डालो या किसी मुल्क में फैंक आओ, फिर अब्बा की तवज्जोह तुम्हारी तरफ़ हो जायेगी और इस के बाद तुम अच्छी हालत में हो जाओगे (९) उन में से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ़ को जान से न मारो, किसी गहरे कुएँ में डाल दो कि कोई राहगीर निकाल कर और मुल्क में ले जायेगा, अगर तुम को करना है (तो यूं) करो (१०)

(यह मशवरा कर के वह याक़ूब से) कहने लगे कि अब्बा जान क्या सबब है कि आप यूसुफ़ के बारे में हमारा ऐतबार नहीं करते, हालाँकि हम उस के ख़ैर ख़्वाह हैं (११) कल उसे हमारे साथ भेज दीजिये कि ख़ूब मेवे खाये और खेले कूदे, हम उस के निगैहबान हैं (१२) उन्होंने कहा कि यह आकर मुझे ग़मनाक किये देता है कि तुम इसे ले जाओ (यानी वह मुझ से जुदा हो जाये) और मुझे यह भी ख़ौफ़ है कि तुम (खेल में) इस से गाफ़िल हो जाओ और इसे भेड़िया खा जाये (१३ वह कहने लगे कि अगर हमारी मौजूदगी में कि हम एक ताक़तवर जमायत हैं इसे भेड़िया खा गया तो हम बड़े नुक़सान में पड़ गये (१४) ग़रज जब वह उस को ले गये और इस बात पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया कि इस को गहरे कुएँ में डाल दें तो हम ने यूसुफ़ की तरफ़ वही भेजी कि (एक वक्त ऐसा आयेगा कि) तुम इन को इस सलूक से आगाह करोगे और इन को (इस वही की) कुछ ख़बर न होगी (१५) (यह हरकत कर के , वह बाप के पास रोते हुए आये (१६) और कहने लगे कि अब्बा जान ! हम तो दौड़ने और एक दूसरे से आगे निकलने में मसरुफ़ हो गये और यूसुफ़ को अपने असबाब के पास छोड़ गये तो उसे भेड़िया खा गया और हमारी बात को गो हम सच ही कहते हों, बावर नहीं करेंगे (१७) और उन के कुर्ते पर झूठ मूठ का लहू भी लगा लाये, याक़ूब ने कहा (कि हक़ीक़तुल हाल यूं नहीं है) बल्कि तुम अपने दिल से (यह) बात बना लाये हो अच्छा सब्र (कि वही) ख़ूब (है) और जो तुम बयान करते हो उस के बारे में ख़ुदा ही से मदद मतलूब है (१८) (अब ख़ुदा की शान देखो,

कि उस कुएँ के क़रीब) एक क़ाफ़िला आ वारिद हुआ और उन्होंने (पानी के लिये) अपना सक्का भेजा, उस ने कुएँ में डोल लटकाया (तो यूसुफ़ उस से लटक गये) वह बोला ज़हे किस्मत यह तो (निहायत हसीन) लड़का है, और उस को कीमती सरमाया समझ कर छुपा लिया, और जो कुछ वह करते थे ख़ुदा को सब मालूम था (१९) और उस को थोड़ी सी कीमत (यानी) माद्दूदे चन्द दिरहमों पर बेच डाला और उन्हें उन (के बारे) में कुछ लालच भी न था (२०)—रुकू—२

और मिश्र में जिस शख़्स ने उसको ख़रीदा उसने अपनी बीवी से (जिसका नाम जुलैखा था) कहा कि इसको इज़्ज़त और इकराम से रखो. अजब नहीं कि यह हमें फ़ायदा दे या हम इसे अपना बेटा बना लें, इस तरह हमने यूसुफ़ को सर ज़मीने (मिश्र)में जगह दी और यह ग़रज़ थी कि हम उनको(ख्वाब की) बातों की ताबीर सिखायें और ख़ुदा अपने काम पर ग़ालिब है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते (२१) और जब वह अपनी जवानी को पहुँचे तो हमने उनको दानाई और इल्म बख़्शा और नेकूकारों को हम इसी तरह बदला दिया करते हैं (२२) तो जिस औरत के घर में वह रहते थे, उसने उनको अपनी तरफ़ माईल करना चाहा और दरवाज़े बन्द करके कहने लगी (यूसुफ़) जल्दी आओ, उन्होंने कहा कि ख़ुदा पनाह में रखे वह (यानी तुम्हारे मियां) तो मेरे आक़ा हैं, उन्होंने मुझे अच्छी तरह से रखा है (मैं ऐसा जुल्म नहीं कर सकता) बेशक ज़ालिम लोग फ़लाह नहीं पायेंगे (२३) और उस औरत ने उनका क़सद किया और उन्होंने उसका क़सद किया अगर वह अपने पर्वरदिगार की

निशानी नहीं देखते (तो जो होता होता) यूं इसलिये किया गया) कि हम उन बुराई और बेहयाई को रोक दें, बेशक वह हमारे ख़ालिस बन्दों में से थे (२४) और दोनों दरवाज़े की तरफ़ भागे (आगे यूसुफ़ पीछे ज़ुलेख़ा) और औरत ने उनका कुर्ता पीछे से (पकड़ कर जो खींचा) तो फाड़ डाला और दोनों को दरवाज़े के पास औरत का ख़ाविन्द मिल गया, तो औरत बोली कि जो शख़्स तुम्हारी बीवीके साथ बुरा इरादा करे,उसकी उसको क्या सज़ा है कि या तो क़ैद किया जाये या दुख का अज़ाब दिया जाये (२५) यूसुफ़ ने कहा, इसी ने मुझको अपनी तरफ़ माईल करना चाहा था, उसके क़बोले में से एक फ़ैसला करने वाले ने यह फ़ैसला दिया कि उसका कुर्ता आगे से फटा हो तो यह सच्ची और यूसुफ़ झूठा (२६) और अगर कुर्ता पीछे से फटा हो तो वह सच्चा (२७) जब उसका कुर्ता देखा (तो) पीछे से फटा था (तब उसने ज़ुलेख़ा से कहा) कि यह तुम्हारा ही फ़रेब है और कुछ शक नहीं कि तुम औरतों के फ़रेबबड़े (भारी) होते हैं(२८) यूसुफ़, इस बात का ख्याल न कर और (ज़ुलैख़ा) तू अपने गुनाह की बख़्शिश मांग, बेशक ख़ता तेरी ही है (२९) —रुकू—३

और शहर में औरतें गुफ़्तूगूऐं करने लगीं कि अज़ीज़ की बीवी अपने गुलाम को अपनी तरफ़ माईल करना चाहती है, और उस की मोहब्बत उसके दिल में घर कर गई है, हम देखते हैं कि वह सरीह गुमराही में है (३०) जब ज़ुलैख़ा ने उन औरतों की (गुफ़्तगू जो हक़ीक़त में दीदारे यूसुफ़ के लिये एक) चाल (थी) सुनी, तो उनके पास (दावत का) पैग़ाम भेजा और उनके लिये एक महफ़िल मुरत्तब की और (फल तराशने के लिये) हर

एक को एक-एक छुरी दी और (यूसुफ़ से) कहा कि उनके सामने बाहर आओ, जब औरतों ने उनको देखा तो उनका रोबाबे (हुस्न) उन पर (ऐसा) छा गया कि (फल तराशते तराशते) अपने हाथ काट लिये और बे साख़्ता बोल उठीं कि सुब्हान अल्लाह यह हुस्न, यह आदमी नहीं कोई बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है (३१) तब ज़ुलैख़ा ने कहा, यह वही है जिसके बारे में तुम मुझे ताने देती थीं और बेशक मैंने इसको अपनी तरफ़ माईल करना चाहा मगर यह बचा (रहा) और अगर यह वह काम न करेगा जो मैं इसे कहती हूं तो क़ैद कर दिया जायेगा और ज़लील होगा (३२) यूसुफ़ ने दुआ की कि परवर्रदिगार, जिस काम की तरफ़ यह मुझे बुलाते हैं उसकी निस्बत मुझे क़ैद पसन्द है और अगर तू मुझ से इनके फ़रेब को न हटायेगा तो मैं इनकी तरफ़ माईल हो जाऊंगा और नादानों में दाख़िल हो जाऊंगा (३३) तो ख़ुदा ने उनकी दुआ क़बूल कर ली और उनसे औरतों का मक्र दफ़ा कर दिया बेशक वह सुनने (और) जानने वाला है (३४) फिर बावजूद इसके कि वह लोग निशान दे चुके थे, उनकी राय यही ठैहरी कि कुछ अर्से के लिये उनको क़ैद ही कर दें (३५)–रुकू ४

और उनके साथ दो और नौजवान भी दाख़िले ज़िन्दाँ हुऐ, एक ने उनमें से कहा कि (मैंने ख़्वाब देखा है) देखता (क्या) है कि शराब (के लिये अन्गूर) निचोड़ रहा हूं, दूसरे ने कहा कि (मैंने भी ख़्वाब देखा है) मैं यह देखता हूं कि अपने सर पर रोटियाँ उठाये हुए हूं और जानवर उनमें से खा रहे हैं (तो) हमें उनकी ताबीर बता दीजिये कि हम तुम्हें नेकूकार देखते हैं (३६) यूसुफ़ ने कहा कि जो खाना तुमको मिलने वाला है वह

आने नहीं पायेगा कि मैं उससे पहले तुमको उनकी ताबीर बता दूंगा, यह उन (बातों) में से है जो मेरे पवर्रदिगार ने मुझे सिखाई हैं, जो लोग ख़ुदा पर ईमान नहीं लाते और रोज़े आख़िरत का इन्कार करते हैं मैं उनका मज़हब छोड़े हुए हूं (३७)और अपने बाप दादा इब्राहीम और इसहाक़ और याक़ूब के मज़हब पर चलता हूं, हमें शायाँ नहीं है कि किसी चीज़ को ख़ुदा के साथ शरीक बनायें, यह ख़ुदा का फ़ज़ल है हम पर भी और लोगों पर भी, मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते (३८) मेरे जेलख़ाने के रफ़ीको ! भला कई जुदा जुदा आक़ा अच्छा या (एक) ख़ुदाये यकता व ग़ालिब (३९) जिन चीज़ों की तुम ख़ुदा के सिवा परस्तिश करते हो वह सिर्फ़ नाम ही नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये हैं, ख़ुदा ने उनकी कोई सनद नाज़िल नहीं की (सुन रखो) कि ख़ुदा के सिवा किसी की हकूमत नहीं है, उसने इर्शाद फ़रमाया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो, यही सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते (४०) ऐ मेरे जेलख़ाने के रफ़ीको ! तुम में एक (जो पहला ख़्वाब बयान करने वाला है, वह) तो अपने आक़ा को शराब पिलाया करेगा और जो दूसरा है वह सूली दिया जायेगा और जानवर उस का सर खा खा जायेंगे, जो अगर तुम मुझ से पूछते थे वह फ़ैसला हो चुका है (४१) और दोनों शख़्सों में से जिसकी निस्बत (यूसुफ़ ने) ख़्याल किया कि वह रिहाई पा जायेगा, उससे कहा कि अपने आक़ा से मेरा ज़िक्र भी करना,

लेकिन शैतान ने उनका अपने आक़ा से ज़िक्र करना भुला दिया

और यूसुफ़ (अल्हे अस्सलाम) कई बरस जेलख़ाने ही में रहे (४२)—रुकू ५

और बादशाह ने कहा कि मैं (ने ख़्वाब देखा है) देखता (क्या) हूं कि सात मोटी गाये हैं जिनको सात दुबली गायें खा रही हैं और सात ख़ोशे सब्ज़ हैं और (सात) खुश्क, ऐ सरदारो ! अगर तुम ख़्वाबों की ताबीर दे सकते हो तो मुझे मेरे ख़्वाब की ताबीर बताओ (४३) उन्होंने कहा कि यह तो परेशान से ख़्वाब हैं और हमें ऐसे ख़्वाबों की ताबीर नहीं आती (४४) अब वह शख़्स जो दोनों क़ैदियों में से रिहाई पा गया था, और जिसे मुद्दत के बाद वह बात याद आ गई, बोल उठा कि मैं आपको इसकी तदबीर (ला) बताता हूं, मुझे (जेलख़ाने) जाने की इजाज़त दीजिये (४५) (ग़रज़ वह यूसुफ़ के पास आया और कहने लगा) यूसुफ़ ऐ बड़े सच्चे (यूसुफ़) हमें (इस ख़्वाब की ताबीर) बताइये कि सात मोटी गायों को सात दुबली गायें खा रही हैं और सात ख़ोशे सब्ज हैं और सात सूखे ताकि मैं लोगों के पास जाकर (ताबीर) बताआऊँ, अजब नहीं कि वह (तुम्हारी) क़दर जानें (४६) उन्होंने कहा कि तुम लोग सात साल मुतवातिर खेती करते रहोगे, तो जो (ग़ल्ला) काटो थोड़े से ग़ल्ले के सिवा जो खाने में आये उसे ख़ोशों में ही रहने देना (४७) फिर उसके बाद (खुश्कसाली के) सात सख्त (साल) आयेंगे कि जो (ग़ल्ला) तुमने जमा कर रखा होगा वह उस सबको खा जायेंगे सिर्फ़ वह थोड़ा सा रह जायेगा जो तुम ऐह-तियात से रख छोड़ोगे (४८) फिर उसके बाद एक ऐसा साल

आयेगा कि ख़ूब मेंह बरसेगा और लोग उसमें रस निचोड़ेंगे (४६) - रुकू ६

(यह ताबीर सुन कर) बादशाह ने हुक्म दिया कि यूसुफ़ को मेरे पास ले आओ, जब क़ासिद उन के पास गया, तो उन्होंने कहा, कि अपने आक़ा के पास जाओ, और उन से पूछो कि उन औरतों का क्या हाल है जिन्होंने अपने हाथ काट लिये थे, बेशक मेरा पर्वरदिगार उन के मक्रों से ख़ूब वाक़िफ़ है (५०) बादशाह ने (उन औरतों से) पूछा कि भला उस वक्त क्या हुआ था जब तुम ने यूसूफ़ को अपनी तरफ़ माईल करना चाहा, सब बोल उठीं कि माशा अल्लाह हम ने उस में कोई बुराई मालूम नहीं की, अज़ीज़ की औरत ने कहा अब सच्ची बात तो जाहिर हो ही गई है (अस्ल यह है कि) मैंने उस को अपनी तरफ़ माईल करना चाहा था बेशक वह सच्चा है (५१) (यूसुफ़ ने कहा) कि मैंने यह बात इस लिये पूछी है कि अज़ीज़ को यक़ीन हो जाये कि मैंने उस की पीठ पीछे उस की अमानत में ख़यानत नहीं की और ख़ुदा ख़यानत करने वालों के मक्रों को एबराह नहीं करता (५२)

तेरहवाँ पारा—वमाउबरिअ—सूर-ऐ-यूसुफ़

और मैं अपने तईं पाकसाफ़ नहीं कहता क्योंकि नफ़्से अम्मारा (इन्सान को) बुराई ही सिखाता रहता है, मगर यह कि मेरा पर्वरदिगार रहम करे, बेशक मेरा पर्वरदिगार बख़्शने

वाला मेहरबान है (५३) बादशाह ने हुक्म दिया कि उसे मेरे पास लाओ मैं उसे अपना मुसाहिबे खास बनाऊँगा, फिर जब उन से गुफ्तगू की तो कहा कि आज से तुम हमारे हाँ, साहिबे मन्ज़िलत और साहिबे ऐतबार हो (५४) (यूसुफ़ ने) कहा कि मुझे इस मुल्क के खजानों पर मुक़र्रर कर दीजिये क्योंकि मैं हिफ़ाज़त भी कर सकता हूँ और इस काम से वाक़िफ़ भी हूँ (५५) इस तरह हमने यूसुफ़ को मुल्के (मिश्र) में जगह दी, और वह उस मुल्क में जहाँ चाहते थे, रहते थे, हम अपनी रहमत जिस पर चाहते हैं करते हैं, और नेकूकारों के अजर को ज़ाया नहीं करते (५६) और जो लोग ईमान लाये और डरते रहे उन के लिये आख़िरत का अजर बहुत बेहतर है (५७) —रुकू—७

और यूसुफ़ के भाई (कनान से मिश्र में, ग़ल्ला ख़रीदने के लिये) आये तो यूसुफ़ के पास गये तो यूसुफ़ ने उन को पहचान लिया, और वह उन को न पहचान सके (५८) जब यूसुफ़ ने न के लिये उन का सामान तैयार कर दिया तो कहा कि (फिर आना तो) जो बाप की तरफ़ से तुम्हारा एक और जो भाई है उसे भी मेरे पास लेते आना, क्या तुम नहीं देखते कि मैं माप भी पूरी पूरी देता हूं और मेहमानदारी भी खूब करता हूं (५९) और अगर तुम उसे मेरे पास न लाओगे तो न तुम्हें मेरे हाँ से ग़ल्ला मिलेगा और न तुम मेरे पास ही आ सकोगे (६०) उन्होंने कहा कि हम उस के बारे में उस के वालिद से तज़करा करेंगे और हम (यह काम) कर के रहेंगे (६१) और (यूसुफ़ ने) अपने खुद्दाम से कहा कि इन का सरमाया (यानी ग़ल्ले की

क़ीमत) उन के थलीतों में रख दो, अजब नहीं कि जब यह अपने एहलो अयाल में जायें तो उसे पहचान लें (और) अजब नहीं कि यह फिर यहाँ आयें (६२) जब वह अपने बाप के पास वापिस गये तो कहने लगे कि अब्बा (जब तक हम बिनयामीन को साथ न ले जायें) हमारे लिये ग़ल्ले की बन्दिश कर दी गई है, तो हमारे साथ भाई को भेज दीजिये ताकि हम ग़ल्ला लायें और हम उस के निगैहबान हैं (६६) (याक़ूब ने) कहा कि मैं उस के बारे में तुम्हारा ऐतबार नहीं करता, मगर वैसा ही जैसा इस के भाई के बारे में किया था, सो ख़ुदा ही बेहतर निगैहबान है, और वह सब से ज़्यादा रहम करने वाला है (६४) और जब उन्होंने अपना असबाब खोला तो देखा कि उन का सरमाया उन को वापिस कर दिया गया है: कहने लगे, अब्बा ! हमें (और) क्या चाहिये (देखिये) यह हमारी पून्जी भी हमें वापिस कर दी गई है. अब हम अपने एहलो अयाल के लिये फिर ग़ल्ला लायेंगे और अपने भाई की निगैहबानी करेंगे और एक बार शुतर ज़्यादा लायेंगे; (कि) यह ग़ल्ला (जो हम लाये हैं) थोड़ा है (६५) (याक़ूब ने) कहा कि जब तक तुम ख़ुदा का एहद न दो कि इस को मेरे पास (सही व सालिम) ले आओगे मैं इसे हर्गिज़ तुम्हारे साथ नहीं भेजने का मगर यह कि तुम घेर लिये जाओ (यानी बेबस हो जाओ तो मजबूरी है) जब उन्होंने उन से एहद कर लिया तो (याक़ूब ने) कहा कि जो क़ौलो क़रार हम कर रहे हैं उस का ख़ुदा ज़ामिन है (६६) और हिदायत की गई कि

बेटा एक ही दरवाज़े से दाखिल न होना बल्कि जुदा जुदा दरवाज़ों

से दाख़िल होना और मैं ख़ुदा की तक़दीर तो तुम से रोक नहीं सकता (बेशक) हुक्म उसी का है, मैं उसी पर भरोसा रखता हूं और एहले तवक्कुल को उसी पर भरोसा रखना चाहिये (६७) और जब वह उन उन मक़ामात से दाख़िल हुए जहाँ जहाँ से (दाख़िल होने के लिये) बाप ने उन से कहा था तो वह तदबीर ख़ुदा के हुक्म को ज़रा भी टाल नहीं सकती थी, हाँ वह याक़ूब के दिल की ख़्वाहिश थी जो उन्होंने पूरी की थी, और बेशक यह साहिबे इल्म थे, क्योंकि हम ने उन को इल्म सिखाया था मगर अक्सर लोग नहीं जानते (६८)—रुकू—८

और जब वह लोग यूसुफ़ के पास पहुंचे तो यूसुफ़ ने अपने हक़ीक़ी भाई को अपने पास जगह दी और कहा कि मैं तुम्हारा भाई हूँ, तो जो सलूक यह (हमारे साथ) करते रहे हैं, उस पर अफ़सोस न करना (६९) जब उन का असबाब तैयार कर दिया तो अपने भाई के शलीते में गिलास रख दिया, फिर (जब वह आबादी से बाहर निकल गये तो) एक पुकारने वाले ने आवाज़ दी कि क़ाफ़िले वालो तुम तो चोर हो (७०) वह उन की तरफ़ मुत्तवज्जोह हो कर कहने लगे कि तुम्हारी क्या चीज़ खो गई है (७१) वह बोले कि बादशाह (के पानी पीने) का गिलास खोया गया है और जो शख़्श उस को लेकर आये उस के लिये एक बारे शुतर (इनाम) और मैं इस का ज़ामिन हूँ (७२) वह कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम तुम को मालूम है कि हम (इस) मुल्क में इस लिये नहीं आये कि ख़राबी करें और न हम चोरी किया करते हैं (७३) बोले कि अगर तुम झूठे

निकले (यानी चोरी साबित हुई) तो उस की सज़ा क्या (७४) उन्होंने कहा कि उस की सज़ा यह कि जिस के शलीते में वह दस्तयाब हो, वही उस का बदल क़रार दिया जाये, हम ज़ालिमों को यही सज़ा दिया करते हैं (७५) फिर यूसुफ़ ने अपने भाई के शलीते से पहले उन के शलीते देखना शुरु किया फिर अपने भाई के शलीते में से उस को निकाल लिया, इस लिये हमने यूसुफ़के लिये तदबीर की (वर्ना) बादशाह के क़ानून के मुताबिक वह मशैय्यते ख़ुदा के सिवा अपने भाई को ले नहीं सकते थे, हम जिस के चाहते हैं दर्जे बलन्द करते हैं, और हर इल्म वाले से दूसरा इल्म वाला बढ कर है (७६) (बिरादराने) यूसुफ़ ने कहा कि अगर इस ने चोरी की हो तो (कुछ अजब नहीं कि) इस के एक भाई ने भी पहले चोरी की थी, यूसुफ़ ने इस बात को अपने दिल में मख़फ़ी रखा और उन पर ज़ाहिर न होने दिया (और) कहा कि तुम बड़े बदक़िमाश हो और जो तुम बयान करते हो, ख़ुदा उसे ख़ूब जानता है (७७) वह कहने लगे कि ऐ अज़ीज़, इस के वालिद बहुत बूढ़े हैं (और इस से बहुत मोहब्बत रखते हैं) तो (इस को छोड़ दीजिये और) इस की जगह हम में से किसी को रख लीजिये, हम देखते हैं कि आप एहसान करने वाले हैं (७८) (यूसुफ़ ने) कहा, कि ख़ुदा पनाह में रखे, कि जिस शख़्स के पास हम ने अपनी चीज़ पाई है उस के सिवा किसी और को पकड़ लें, ऐसा करें तो हम (बड़े) बे इन्साफ़ हैं (७९)—रुकू—९

जब वह उस से ना उमीद हो गये, तो अलग हो कर सलाह

करने लगे, सब से बड़े ने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे वालिद ने तुम से ख़ुदा का एहद लिया है, और इस से पहले भी तुम यूसुफ़ के बारे में क़सूर कर चुके हो, तो जब तक वालिद साहब मुझे हुक्म न दें, मैं तो इस जगह से हिलने का नहीं, या ख़ुदा मेरे लिये कोई और तदबीर करे और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है (८०) तुम सब वालिद साहब के पास जाओ और कहो कि अब्बा आप के साहिबज़ादे ने (वहाँ जाकर) चोरी की और हम न तो अपनी दानिस्त के मुताबिक़ आप से (उस को ले आने का) एहद किया था मगर हम ग़ैब (की बातों) के (जानने और) याद रखने वाले तो नहीं थे (८१) और जिस बस्ती में हम (ठहरे) थे वहाँ से (यानी एहले मिश्र से) और जिस काफ़िले में आये हैं उस से दरयाफ़्त कर लीजिये और हम (इस बयान में) बिल्कुल सच्चे हैं (८२) (जब उन्होंने यह बात याक़ूब से आकर कही) तो उन्होंने कहा (कि हक़ीक़त यूं नहीं है) बल्कि यह बात तुम ने अपने दिल से बना ली है, तो सब्र ही बेहतर है, अजब नहीं कि ख़ुदा उन सब को मेरे पास ले आये, बेशक वह दाना (और) हिकमत वाला है (८३) फिर उन के पास से चले गये और कहने लगे कि हाय अफ़सोस यूसुफ़ (हाय अफ़सोस) और रन्जो अलम में इस क़दर रोये कि आंखें सफ़ैद हो गईं और उन का दिल ग़म से भर रहा था (८४) बेटे कहने लगे कि व अल्लाह अगर आप यूसुफ़ को इसी तरह याद करते रहेंगे तो या तो बीमार हो जायेंगे या जान ही दे देंगे (८५) उन्होंने कहा कि मैं तो अपने ग़मो अन्दोह का इज़्हार

ख़ुदा से करता हूँ और ख़ुदा की तरफ़ से वह बातें जानता हूं जो तुम नहीं जानते (८६) बेटा (यूं करो, कि एक दफ़ा फिर) जाओ और यूसुफ़ और उस के भाई को तलाश करो और ख़ुदा की रहमत से ना उमीद न हो कि ख़ुदा की रहमत से बे ईमान लोग ना उमीद हुआ करते हैं (८७) जब यूसुफ़ के पास गये तो कहने लगे कि अज़ीज़ हमें और हमारे एहलो अयाल को बड़ी तक़लीफ़ हो रही है और हम थोड़ा सा सरमाया लाये हैं, आप हमें (इस के ऐवज़) पूरा ग़ल्ला दीजिये और ख़ैरात कीजिये कि ख़ुदा ख़ैरात करने वालों को सवाब देता है (८८) (यूसुफ़ ने) कहा तुम्हें मालूम है कि जब तुम नादानी में फंसे हुए थे तो तुम ने यूसुफ़ और उस के भाई के साथ क्या किया था (८९) वह बोले क्या तुम ही यूसुफ़ हो, उन्होंने कहा, हाँ ! मैं ही यूसुफ़ हूँ (और बिनयामीन की तरफ़ इशारा करके कहने लगे) यह मेरा भाई है, ख़ुदा ने हम पर बड़ा एहसान किया है, जो शख़्स ख़ुदा से डरता है और सब्र करता है तो ख़ुदा नेकूकारों का अजर ज़ाया नहीं करता (९०) वह बोले ख़ुदा की क़सम ख़ुदा ने तुम को हम पर फ़ज़ीलत बख़्शी है और बेशक हम ख़ताकार थे (९१) यूसुफ़ ने कहा कि आज के दिन (से) तुम पर कुछ इताब (व मलामत) नहीं है. ख़ुदा तुम को मुआफ़ करे और वह बहुत रहम करने वाला है (९२) यह मेरा कुर्ता ले जाओ और इसे वालिद साहब के मूंह पर डाल दो, वह बीना हो जायेंगे और अपने तमाम एहलो अयाल को मेरे पास ले आओ (९३)-रुकू-१०

और जब क़ाफ़िला (मिश्र) से रवाना हुआ तो उन के

वालिद कहने लगे कि अगर मुझ को यह न कहो (कि बूढ़ा) बहक गया है तो मुझे तो यूसुफ़ की बू आ रही है (९४) वह बोले कि व अल्लाह आप उसी क़दीम ग़लती में (मुब्तिला) हैं (९५) जब ख़ुशख़बरी देने वाला आ पहुँचा तो कुर्ता याक़ूब के मूंह पर डाल दिया और वह बीना हो गये और बेटों से कहने लगे क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि मैं ख़ुदा की तरफ़ से वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते (९६) बेटों ने कहा कि अब्बा हमारे लिये हमारे गुनाह की मग़फ़रत माँगिए, बेशक हम ही ख़तावार थे (९७) उन्होंने कहा कि मैं अपने पर्वरदिगार से तुम्हारे लिये बख़्शिश मांगूंगा, बेशक वह बख़्शने वाला मेहरबान है (९८) जब (यह सब लोग) यूसुफ़ के पास पहुंचे तो यूसुफ़ ने अपने वालिदैन को अपने पास बैठाया और कहा कि मिश्र में दाख़िल हो जाइये, ख़ुदा ने चाहा तो ख़ातिर जमा रहियेगा (९९) और अपने वालिदैन को तख़्त पर बैठाया और सब यूसुफ़ के आगे सजदे में गिर पड़े (उस वक्त) यूसुफ़ ने कहा, अब्बा जान यह मेरे उस ख़्वाब की तसवीर है जो मैंने पहले (बचपन में) देखा था, मेरे पर्वरदिगार ने उसे सच कर दिया और उस ने मुझ पर (बहुत से) एहसान किये हैं कि मुझ को जेल खाने से निकाला और उस के बाद शैतान ने मुझ में और मेरे भाइयों में फ़िसाद डाल दिया था, आप को गाँव से यहाँ लाया, बेशक मेरा पर्वरदिगार जो चाहता है, तदबीर से करता है वह दाना (और) हिकमत वाला है (१००)* (जब यह सब बातें हो लीं

*आयत १०० :—ग्यारह सितारे जिनको यूसुफ़ ने ख़्वाब में सजदा

तो यूसुफ़ ने ख़ुदा से दुआ की) ऐ मेरे पर्वरदिगार तूने मुझ को हकूमत से बहरावर किया और ख़्वाबों की ताबीर का इल्म बख़्शा, ऐ आस्मानों और ज़मीन के पैदा करने वाले ! तू ही दुनियाँ और आख़िरत में मेरा कारसाज़ है, तू मुझे (दुनियाँ से) अपनी इताअत (की हालत में) उठाइयो और (आख़िरत में अपने नेक बन्दों में दाख़िल कीजियो (१०१) (ऐ पैग़म्बर) यह अख़बार ग़ैब में से हैं जो हम तुम्हारी तरफ़ भेजते हैं और जब बिरादराने यूसुफ़ ने अपनी बात पर इत्तिफ़ाक़ किया था और वह फ़रेब कर रहे थे तो तुम उन के पास तो न थे (१०२) और बहुत से आदमी गो तुम कितनी ही ख़्वाहिश करो, ईमान लाने वाले नहीं हैं (१०३) और तुम उन से इस (ख़ैर ख़्वाही) का कुछ सिला भी तो नहीं माँगते, यह क़ुरान और कुछ नहीं, तमाम आलम के लिये नसीहत है (१०४)—रुकू—११

और आस्मान व ज़मीन में बहुत सी निशानियां हैं जिन पर यह गुज़रते हैं और उनसे ऐराज़ करते हैं (१०५) और यह अक्सर ख़ुदा पर ईमान नहीं रखते मगर (उसके साथ) शिर्क करते हैं (१०६) क्या यह इस (बात) से बे खौफ़ हैं कि उन पर ख़ुदा का अज़ाब नाज़िल होकर उनको ढाँप ले या उन पर नागाहाँ क़यामत आ जाये और उन्हें ख़बर भी न हो (१०७) कह दो मेरा रस्ता तो यह है, मैं ख़ुदा की तरफ़ बुलाता हूं (अज़

करते देखा था वह यही ग्यारह भाई थे और सूरज और चान्द उनके वालिदैन ।

रुऐ यक़ीन व बुरहान) समझ बूझ कर मैं भी (लोगों को ख़ुदा की तरफ़ बुलाता हूं) और मेरे पैरो भी, और ख़ुदा पाक है और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूं (१०८) और हमने तुमसे पहले बस्तियों के रहने वालों में से मर्द ही भेजे थे जिनकी तरफ़ हम वही भेजते थे, क्या उन लोगों ने मुल्क में सैर (व सैयाहत) नहीं की कि देख लेते कि जो लोग उनसे पहले थे उनका अञ्जाम क्या हुआ और मुत्तक़ियों के लिये आख़िरत का घर बहुत अच्छा है, क्या तुम समझते नहीं (१०९) यहां तक कि जब पैग़म्बर ना उमीद हो गये और उन्होंने ख्याल किया कि अपनी नुसरत के बारे में, जो बात उन्होंने कही थी, उसमें वह सच्चे निकले तो उनके पास हमारी मदद आ पहुँची, फिर जिसे हमने चाहा बचा दिया और हमारा अज़ाब (उतर कर) गुन्हेगार लोगों से फिरा नहीं करता (११०) उनके क़िस्से में अक़्लमन्दों के लिये इबरत है (यह कुरान ऐसी बात नहीं है अपने दिल से) बना ली गई हो, बल्कि जो (किताबें) इससे पहले नाज़िल हुई हैं, उनकी तसदीक़ (करने वाला) है और हर चीज़ की तफ़्सील (करने वाला) और मोमिनों के लिये हिदायत और रहमत है (१११) रुकू—१२

१३—सूर-हे-रम्राद

यह सूरत मक्के में उतरी और इसमें ४३ आयतें और ६ रुकू हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलमरा (ऐ मोहम्मद) यह किताबे (इलाही) की आयतें हैं और जो तुम्हारे पवर्रदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुआ है, हक़ है लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते (१) ख़ुदा वही तो है जिसने सितूनों के बग़ैर आस्मान जैसा कि तुम देखते हो (इतने) ऊञ्चे बनाये फिर अर्श पर जा ठैहरा और सूरज और चान्द को काम में लगा दिया हर एक एक मीयादे मौईयन तक गर्दिश कर रहा है, वही (दुनिया) के कामों का इन्तज़ाम करता है, इस तरह वह अपनी आयतें खोलकर बयान करता है ताकि तुम अपने पवर्रदिगार के रुबरु जाने का यक़ीन करो (२) और वह वही है जिसने ज़मीन को फैलाया और उसमें पहाड़ और दरिया पैदा किये और हर तरह के मेवों की दो दो क़िसमें बनाई वही रात को दिन का लिबास पहनाता है, ग़ौर करने वालों के लिये इसमें बहुत सी निशानियां हैं (३) और ज़मीन में कई तरह के कतैयात हैं, एक दूसरे से मिले हुए और अंगूर के बाग़ और खेती और खजूर के दरख़्त, बाज़ की बहुत सी शाखें होती हैं और बाज़ की इतनी नहीं होतीं (बावजूदे कि) पानी सबको एक ही मिलता हैं और हम बाज़ मेवों को बाज़ पर लज़्ज़त में फ़ज़ी-

लत देते हैं, इसमें समझने वालों के लिये बहुत सी निशानियां हैं (४) अगर तुम अजीब बात सुननी चाहो तो काफ़िरों का यह कहना अजब है कि जब हम (मर कर) मिट्टी हो जायेंगे तो क्या अज़ सरे नौ पैदा होंगे, यही लोग हैं जो अपने पवर्रदिगार से मुन्किर हुए हैं और यही हैं जिनकी गर्दनों में तौक़ होंगे और यही एहले दोज़ख हैं कि हमैशा उसमें जलते रहेंगे (५) और यह लोग भलाई से पहले तुम से बुराई के जल्द ख्वास्तगार (यानी तालिबे अज़ाब)हैं, हालांकि इनसे पहले अज़ाब (वाक़ैय) हो चुके हैं, और तुम्हारा पवर्रदिगार लोगों को बावजूद उनकी बे इन्साफ़ियों के मुआफ़ करने वाला है और बेशक तुम्हारा पवर्रदिगार सख्त अज़ाब देने वाला है (६) और काफ़िर लोग कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) पर उसके पवर्रदिगार की तरफ़ से कोई निशानी नाज़िल नहीं हुई, सो (ऐ मोहम्मद) तुम तो सिर्फ़ हिदायत करने वाले हो और हर एक क़ौम के लिये रेहनुमा हुआ करता है (७)

रुकू — १

ख़ुदा ही उस बच्चे से वाक़िफ़ है जो औरत के पेट में होता है और पेट के सुकड़ने और बढ़ने से भी (वाक़िफ़ है) और हर चीज़ का उसके हाँ अन्दाजा मुक़र्रर है (८) वह दानाये निहाँ व आशकार है, सबसे बुज़ुर्ग (और) आली रुत्बा है (९) कोई तुम से चुपके से बात कहे या पुकार कर, या रात को कहीं छुप जाये, या दिन (की रोशनी) में खुल्लम खुल्ला चले फिरे (उसके नज़दीक) बराबर है (१०) उसके आगे और पीछे ख़ुदा के चौकीदार हैं जो ख़ुदा के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं, ख़ुदा उस

(नैयमत) को जो किसी क़ौम को (हासिल) है नहीं बदलता, जब तक कि वह अपनी हालत को न बदले, और जब ख़ुदा किसी क़ौम के साथ बुराई का इरादा करता है तो फिर वह फिर नहीं सकती और ख़ुदा के सिवा उनका कोई मददगार नहीं होता (११) और वही तो है जो तुमको डराने और उमीद दिलाने के लिये बिजली दिखाता और भारी भारी बादल पैदा करता है (१२) और रआद और फ़रिश्ते सब उसके ख़ौफ़ से तस्बीह व तैहमीद करते रहते हैं और वह वही बिजलियां भेजता है, फिर जिस पर चाहता है गिरा भी देता है, और वह ख़ुदा के बारे में झगड़ते हैं, और वह बड़ी क़ुव्वत वाला है (१३) सूदमन्द पुकारना तो उसी का है, और जिनको यह लोग उसके सिवा पुकारते हैं, वह उनकी पुकार को किसी तरह क़बूल नहीं करते, मगर उस शख़्स की तरह जो अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ फैला दे ताकि (दूर ही से) उसके मूंह तक आ पहुंचे, हालांकि वह (उस तक कभी भी) नहीं आ सकता, और (इसी तरह) काफ़िरों की पुकार बेकार है (१४)* और जितनी मख़लूक़ात आसमानों और ज़मीन में है, ख़ुशी से या ज़बरदस्ती से ख़ुदा के आगे सजदा करती है और उनके साये भी सुब्हो शाम (सजदा

---

*आयत १४:—यानी पुकारते हैं काफ़िर जिन को, बाज़े जिन्न हैं और बाज़ चीज़ें हैं कि उनमें कुछ ख़्वास हैं लेकिन अपने ख़्वास के मालिक नहीं हैं, फिर क्या हासिल उनका पुकारना ? जैसे आग या पानी, शायद सितारे भी इसी किसम में हों ।

करते हैं) (१५)※ उनसे पूछो कि आस्मानों और ज़मीन का पवरंदिगार कौन है ? (तुम ही उनकी तरफ से) कह दो कि ख़ुदा फिर (उन से) कहो कि तूमनें ख़ुदा को छोड़ कर ऐसे लोगों को क्यों कारसाज़ बनाया है जो ख़ुद अपनें नफ़ा व नुक़सान का भी कुछ अख़्तियार नहीं रखते (यह भी) पूछो क्या अन्धा और आंखों वाला बराबर हैं ? या अन्धेरा और उजाला बराबर हो सकता है ? भला उन लोगों ने जिनको ख़ुदा का शरीक मुक़र्रर किया है, क्या उन्होंनें ख़ुदा की सी मखलूक़ात पैदा की है, जिस के सबब उनको मख़लूक़ात मुशतबाह हो गई है, कह दो कि ख़ुदा ही हर चीज़ का पैदा करने वाला हैं और वह यकता (और) ज़बरदस्त है (१६) उसी ने आस्मान से मैंह बरसाया फिर उस से अपनें अपने अन्दाज़े के मुताबिक नाले बह निकले, फिर नाले पर फूला हुआ झाग आ गया और जिस चीज़ को ज़ेवर या कोई और सामान बनाने के लिये आग में तपाते हैं, उसमें भी ऐसा ही झाग होता है, इस तरह ख़ुदा हक़्क़ो बातिल की मिसाल बयान फ़रमाता है, सो झाग तो सूखकर ज़ाईल हो जाता है और (पानी) जो लोगों को फ़ायदा पहुंचाता है, वह ज़मीन में ठहरा रहता है इस तरह ख़ुदा (सही

※आयत १५: – और जो यक़ीन लाया अल्लाह पर, वह ख़ुशी से सर रखता है उसके एहकाम पर, और जो न यक़ीन लाया आख़िर उसपर भी उसी का हुक्म जारी है और परछाई सुब्हो शाम ज़मीन पर फैल जाती है यही उसको सजदा है।

और ग़लत की) मिसालें बयान फ़रमाता है (ता कि) तुम समझो (१७) जिन लोगों ने खुदा के हुक्म को क़बूल किया उनकी हालत बहुत बेहतर होगी और जिन्होंने इसको क़बूल न किया, अगर ऐसे ज़मीन के सब खजाने उनके अख्तियार में हों तो वह सबके सब और उनके साथ ही उतने और (नजात के बदले में सर्फ़ कर डालें, मगर नजात कहाँ ?) ऐसे लोगों का हिसाब भी बुरा होगा और उनका ठिकाना भी दोज़ख है और वह बुरी जगह है (१८) रुक २

भला जो शख्स यह जानता है कि जो कुछ तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल हुआ है, हक है वह उस शख्स की तरह है जो अन्धा है ? और समझते तो वही हैं जो अकलमन्द हैं (१९) जो खुदा के एहद को पूरा करते हैं और इक़रार को नहीं तोड़ते (२०) और जिन (रिश्ताहाय क़राबत) के जोड़े रखने का खुदा ने हुक्म दिया है उनको जोड़े रखते हैं और पर्वरदिगार से डरते रहते और बुरे हिसाब से खौफ़ रखते हैं (२१) और पर्वरदिगार की खुशनूदी हासिल करने के लिये (मसाईब) पर सब्र करते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं और जो (माल) हमने उनको दिया है उसमें से पोशिदा और ज़ाहिर खर्च करते हैं और नेकी से बुराई को दूर करते हैं, यही लोग हैं जिनके लिये आक़बत का घर है (२२) (यानी) हमेशा रहने के बाग़ात जिनमें वह दाखिल होंगे और उनके बाप दादा और बीवियों और औलाद में से जो नेककार होंगे वह भी (वहिश्त में

जायेंगे) और फ़रिश्ते (बहिश्त के) हर एक दरवाज़े से उनके पास आयेंगे (२३) (और कहेंगे) तुम पर रहमत हो (यह) तुम्हारी साबित क़दमी का बदला है और आक़बत का घर खूब (घर) है (२४) और जो लोग ख़ुदा से एहदे वासिक़ करके उस को तोड़ डालते और जिन (रिश्ताहाय क़राबत) के जोड़े रखने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है, उनको क़ता कर देते हैं और मुल्क में फ़िसाद करते हैं, ऐसों पर लानत है और उनके लिये घर भी बुरा है (२५) ख़ुदा जिसका चाहता है, रिज़्क़ फ़राख़ कर देता है और (जिसका चाहता है) तंग कर देता है और काफ़िर लोग दुनिया की ज़िन्दगी पर खुश हो रहे हैं, और दुनिया की ज़िन्दगी में आख़िरत (के मुक़ाबिले)में (बहुत) थोड़ा फ़ायदा है (२६)—रुकू—३

और काफ़िर कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) पर उसके पवर्र-दिगार की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नाज़िल नहीं हुई, कह दो ख़ुदा जिसे चाहता है गुमराह करता है और जो (उसकी तरफ़) रजू होता है, उसको अपनी तरफ़ का रस्ता दिखाता है (२७) (यानी) जो लोग ईमान लाते और जिनके दिल यादे ख़ुदा से आराम पाते हैं (उनको) और सुन रखो कि ख़ुदा की याद से दिल आराम पाते हैं (२८) जो लोग ईमान लाये और अमल नेक किये, उनके लिये खुशहाली और उमदा ठिकाना है (२९) (जिस तरह) हम और पैग़म्बर भेजते रहे हैं, उसी तरह (ऐ मोहम्मद) हमने तुमको उस उम्मत में, जिस से पहले बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं भेजा है, ताकि तुम उनको वह (किताब)

जो हमने तुम्हारी तरफ़ भेजी है पढ़ कर सुना दो और यह लोग रेहमान को नहीं जानते, कह दो वह तो मेरा पवर्रदिगार है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, मैं उसी पर भरोसा रखता हूं और उसी की तरफ़ रजू करता हूं (३०) और अगर कोई क़ुरान ऐसा होता कि उस (की तासीर) से पहाड़ चल पड़ते, या ज़मीन फट जाती या मुर्दों से कलाम कर सकते, तो यही क़ुरान उन (औसाफ़ से मुत्तसफ़ होता मगर) बात यह है कि सब बातें ख़ुदा के अख़्तियार में हैं, तो क्या मोमिनों को इससे इतमीनान नहीं हुआ कि अगर ख़ुदा चाहता तो सब लोगों को हिदायत के रस्ते पर चला देता और काफ़िरों पर हमैशा उनके आमाल के बदले बला आती रहेगी, या उनके मकाफ़ात के क़रीब नाज़िल होती रहेगी यहां तक कि ख़ुदा का वायदा आ पहुंचे, बेशक ख़ुदा वायदा ख़िलाफ़ी नहीं करता (३१)- -रुकू ४

और तुम से पहले भी रसूलों के साथ तमस्ख़ुर होते रहे हैं, तो हमने काफ़िरों को मोहलत दी फिर पकड़ लिया, सो (देख लो कि) हमारा अज़ाब कैसा था (३२) तो क्या जो (ख़ुदा) हर मुतनफ़्फ़िस के अमाल का निगरान (निगेहबान) है (वह बुतों की तरह बे इल्मो बे ख़बर हो सकता है ?) और इन लोगों ने ख़ुदा के शरीक मुक़र्रर कर रक्खे हैं, उनसे कहो कि (ज़रा) उन के नाम तो लो, क्या तुम उसे ऐसी चीज़ें बताते हो जिसको वह ज़मीन में (कहीं भी) मालूम नहीं करता, या महज़ ज़ाहिरी (बातिल और झूठी) बात की तक़लीद करते हैं, और वह (हिदा-यत के) रस्ते से रोक लिये गये हैं, और जिसे ख़ुदा गुमराह करे

उसे कोई हिदायत करने वाला नहीं (३३) उनको दुनिया की ज़िन्दगी में भी अज़ाब है और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत ही सख़्त है और उनको ख़ुदा के (अज़ाब से) कोई भी बचाने वाला नहीं है (३४) जिस बाग़ का मुत्तक़ियों से वायदा किया गया है, उसके औसाफ़ यह हैं कि उसके नीचे नहरें बह रही हैं उस के फल हमैशा (क़ायम रहने वाले) हैं और उसके साये भी, यह उन लोगों का अन्जाम है जो मुत्तक़ी हैं और काफ़िरों का अन्जाम दोज़ख़ है (३५) और जिन लोगों को हमने किताब दी है, वह उस (किताब) से जो तुम पर नाज़िल हुई है ख़ुश होते हैं और बाज़ फ़िर्क़े उसके बाज़ बातें नहीं भी मानते, कह दो कि मुझको यही हुक्म हुआ है कि ख़ुदा ही की इबादत करूं और उसके साथ (किसी को) शरीक न बनाऊं, मैं उसी की तरफ़ बुलाता हूं और उसी की तरफ़ मुझे लौटना है (३६) और इसी तरह हमने इस क़ुरान को अरबी ज़बान का फ़रमान नाज़िल किया है और अगर तुम इल्म (व दानिश) आने के बाद इन लोगों की ख़्वाहिशों के पीछे चलोगे तो ख़ुदा के सामने कोई न तुम्हारा मददगार होगा और न कोई बचाने वाला (३७)—

रुकू—५

और (ऐ मोहम्मद) हमने तुमसे पहले भी पैग़म्बर भेजे थे और उनको बीवियां और औलाद भी दी थी और पैग़म्बर के अख़्तियार की बात न थी कि ख़ुदाके हुक्म के बग़ैर कोई निशानी लाये हर (हुक्म) क़ज़ा (किताब में) मरक़ूम है (३८) ख़ुदा जिसको चाहता है मिटा देता है और (जिसको चाहता है)

क़ायम रखता है और उसी के पास असल किताब है (३९) अगर हम कोई अज़ाब, जिस का इन लोगों से वायदा करते हैं तुम्हें दिखायें (यानी तुम्हारे रूबरु इन पर नाज़िल करें) या तुम्हारी मुद्दते हयात पूरी कर दें (यानी तुम्हारे इन्तक़ाल के बाद अज़ाब भेजें) तो तुम्हारा काम (हमारे एहकाम का) पहुंचा देना है और हमारा काम हिसाब लेना है (४०) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम ज़मीन को उसके किनारों से घटाते चले आते हैं और ख़ुदा (जैसा चाहता है) हुक्म करता है, कोई उसके हुक्म को रद्द करने वाला नहीं, और वह जल्द हिसाब लेने वाला है (४१) जो लोग उनसे पहले थे, वह भी (बहुतेरी) चालें चलते रहे हैं सो चाल तो सब अल्लाह ही की हैं, हर मुतनफ़्फ़िस जो कुछ कर रहा है, वह उसे जानता है, और काफ़िर जल्द मालूम करेंगे कि अक़्बत का घर (यानी अन्जामे मेहमूद) किस के लिये है (४२) और काफ़िर लोग कहते हैं कि तुम (ख़ुदा के) रसूल नहीं हो, कह दो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान ख़ुदा और वह शख़्स जिस के पास किताब (आस्मानी) का इल्म है, गवाह काफ़ी है (४३) रुकू—६

—:०:—

(१४)—सूर-ऐ-इब्राहीम(१३ वाँ पारा वमा उबरिऊ)

यह सूरत मक्के में उतरी इसमें ५२ आयतें और ७ रुकू हैं

शुरु ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

*अलरा (यह) एक (पुरनूर) किताब (है) इस को हम ने तुम पर इस लिये नाज़िल किया है कि लोगों को अन्धेरे से निकाल कर रोशनी की तरफ़ ले जाओ (यानी) उन के पर्वरदिगार के हुक्म से ग़ालिब और क़ाबीले तारीफ़ (ख़ुदा)के रस्ते की तरफ़ (१) वह ख़ुदा कि जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है सब उसी का है और काफ़िरों के लिये अज़ाबे सख़्त (की वज्ह) से ख़राबी है (२) जो आख़िरत की निस्बत दुनियाँ को पसन्द करते और (लोगों को) ख़ुदा के रस्ते से रोकते और उस में कजी चाहते हैं, यह लोग परले सिरे की गुमराही में हैं (३) और हम ने कोई पैग़म्बर नहीं भेजा मगर अपनी क़ौम की ज़बान बोलता था ताकि उन्हें (एहकामे ख़ुदा) खोल खोल कर बता दे, फिर ख़ुदा जिसे चाहे गुमराह करता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है और वह ग़ालिब (और) हिकमत वाला है (४) और हम ने मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा कि अपनी क़ौम को तारीकी से निकाल कर रोशनी में ले जाओ और उन को ख़ुदा के दिन याद दिलाओ, उस में उन लोगों के लिये जो साबिरो शाकिर हैं (कुदरते ख़ुदा की) निशानियाँ हैं (५) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा ने तुम पर जो मेहरबानियाँ की हैं, उन को याद करो, जबकि तुम को फ़िरऔन की क़ौम (के हाथ) से मुख़लसी दी, वह लोग तुम्हें

*अलरा:—यानी लौहे मेहफ़ूज़, जिस में सब किताबें और सब एहबाब ज़र्रा ज़र्रा लिखा हुआ है

बड़ा अज़ाब देते थे और तुम्हारे बेटों को मार डालते थे, और औरत ज़ात यानी तुम्हारी लड़कियों को ज़िन्दा रहने देते थे और इस में तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से बड़ी (सख्त) आज़माइश थी (६)—रुकू—१

और जब तुम्हारे पर्वरदिगार ने (तुम को) आगाह किया कि अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें ज़्यादा दूंगा और अगर नाशुक्री करोगे तो (याद रखो) मेरा अज़ाब (भी) सख्त है (७) और मूसा ने (साफ़ साफ़) कह दिया कि अगर तुम और जितने और लोग ज़मीन में हैं, सब के सब ना शुक्री करो तो ख़ुदा भी बे न्याज़ (और) क़ाबीले तारीफ़ है (८) भला तुम को उन लोगों (के हालात) की ख़बर नहीं पहुँची, जो तुम से पहले थे (यानी) नूह और आद और समूद की क़ौम और जो उन के बाद थे जिन का इल्म ख़ुदा के सिवा किसी को नहीं (जब) ख़ुदा के पास पैग़म्बर निशानियाँ लेकर आये तो उन्होंने अपने हाथ उन के मूंहों पर रख दिये (कि ख़ामोश रहो) और कहने लगे कि हम तो तुम्हारी रसालत को तस्लीम नहीं करते और जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो हम उस से क़वी शक में हैं (९) उन के पैग़म्बरों ने कहा क्या (तुम को) ख़ुदा (के बारे) में शक है, जो आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, वह तुम्हें इस लिये बुलाता है कि तुम्हारे गुनाह बख़्शे और फ़ायदा पहुँचाने (के लिये) एक मुद्दत मुक़र्ररा तक तुम को मोहलत दे वह बोले, तुम तो हमारे ही जैसे आदमी हो, तुम्हारा यह मन्शा है कि जिन चीज़ों को हमारे बड़े पूजते रहे हैं उन (के पूजने) से हम को बन्द कर दो तो (अच्छा) कोई

खुली दलील लाओ (यानी मौजज़ा दिखाओ) (१०) पैग़म्बरों ने उन से कहा हाँ ! हम तुम्हारे ही जैसे आदमी हैं लेकिन ख़ुदा अपने बन्दों में से जिस पर चाहता हैं (नब्बवत का) एहसान करता है और हमारे अख्तियार की बात नहीं कि हम ख़ुदा के हुक्म के बग़ैर तुम को (तुम्हारी फ़रमाईश के मुताबिक) मौजज़ा दिखायें और ख़ुदा ही पर मोमिनों को भरोसा रखना चाहिए (११) और हम क्यों कर ख़ुदा पर भरोसा न रखें, हालाँकि उस ने हम को (दीन के सीधे) रस्ते बताये हैं और जो तक़लीफ़ें तुम हम को देते हो, उन पर सब्र करेंगे, और एहले तवक्कुल को ख़ुदा ही पर भरोसा रखना चाहिए (१२)—रुकू—२

और जो काफ़िर थे उन्होंने अपने पैग़म्बरों से कहा कि (या तो) हम तुम को अपने मुल्क से बाहर निकाल देंगे, या हमारे मज़हब में दाख़िल हो जाओ, तो पर्वरदिगार ने उनकी तरफ़ वही भेजी कि हम ज़ालिमों को हलाक कर देंगे (१३) और उस के बाद तुम को उस ज़मीन में आबाद कर देंगे यह उस शख़्स के लिये है जो (क़यामत के रोज़) मेरे सामने खड़े होने से डरे और मेरे अज़ाब से ख़ौफ़ करे (१४) और पैग़म्बरों ने (ख़ुदा से अपनी) फ़तह चाही, तो हर सरकश जिद्दी ना मुराद रह गया (१५) उस के पीछे दोज़ख है और उसे पीप का पानी पिलाया जायेगा (१६) वह उस को घून्ट घून्ट पियेगा और गले से नहीं उतार सकेगा, और हर तरफ़ से उसे मौत आ रही होगी, मगर वह मरने में नहीं आयेगा, और उस के पीछे सख्त अज़ाब होगा (१७) जिन लोगों ने अपने पर्वरदिगार से कुफ़्र किया, उन के

आमाल की मिसाल राख की सी है कि आन्धी के दिन उस पर ज़ोर की हवा चले और उसे उठा ले जाये (इसी तरह) जो काम वह करते रहे उन पर उन को कुछ दस्तरस न होगी, यही तो परले सिरे की गुमराही है (१८) क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा ने आस्मानों और ज़मीन को तदबीर से पैदा किया है, अगर वह चाहे तो तुम को नाबूद कर दे और तुम्हारी जगह नई मख़-लूक़ पैदा कर दे (१९) और ख़ुदा को कुछ भी मुश्किल नहीं (२०) और क़यामत के (दिन) सब लोग ख़ुदा के सामने खड़े होंगे तो जैईफ़ (उल अक़्ल मुतबैय अपने रुसाये) मुत्त-कब्बरीन से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे पैरों थे, क्या तुम ख़ुदा का कुछ अज़ाब हम पर से दफ़ा कर सकते हो, वह कहेंगे अगर ख़ुदा हम को हिदायत करता तो हम तुम को हिदायत करते, अब हमें घबड़ायें या सब्र करें हमारे हक़ में बराबर है, कोई जगह (गुरेज़ और) रिहाई की हमारे लिये नहीं है (२१—रुकू—३

जब (हिसाब किताब का) काम फैसला हो चुकेगा तो शैतान कहेगा (जो) वायदा ख़ुदा ने तुम से किया था (वह तो) सच्चा (था) और (जो) वायदा मैंने तुम से किया था वह झूठा था और मेरा तुम पर किसी तरह का ज़ोर नही था, हाँ मैंने तुम को (गुमराही और बातिल की तरफ़) बुलाया, तो तुम ने जल्दी से (बे दलील) मेरा कहना मान लिया, तो आज मुझे मलामत न करो अपने आप ही को मलामत करो, न मैं तुम्हारी फ़रयादरसी कर सकता हूँ और तुम न मेरी फ़रियाद रसी कर सकते हो, मैं इस बात से इन्कार करता हूँ कि तुम पहले मुझे शरीक

बनाते थे, बेशक जो ज़ालिम हैं, उन को दर्द देने वाला अज़ाब है (२२) और जो ईमान लाये और अमल नेक किये, वह बहिश्तों में दाख़िल किये जायेंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं अपने पर्वरदिगार के हुक्म से हमेशा उन में रहेंगे वहाँ उन की साहब सलामत सलाम होगा (२३) क्या तुमने नहीं देखा कि ख़ुदा ने पाक बात की कैसी मिसालें बयान फ़रमाई है (वह ऐसी है) जैसे पाकीज़ा दरख़्त जिसकी जड़ मज़बूत (यानी ज़मीन को पकड़े हुये) हो और शाख़ें आस्मान में (२४) अपने पर्वरदिगार के हुक्म से हर दो वक्त फल लाता और मेवे देता हो और ख़ुदा लोगों के लिये मिसालें बयान फ़रमाता है ताकि वह नसीहत पकड़ें (२५) और नापाक बात की मिसाल नापाक दरख़्त की सी है (न जड़ मस्तैहकम न शाख़ें बलन्द) ज़मीन के ऊपर ही से उखेड़ कर फ़ैंक दिया जाये, उसको ज़रा भी क़रार (न सबात) नहीं (२६) ख़ुदा मोमिनों के दिलों को (सही और) पक्की बात से दुनिया की ज़िन्दगी में भी मज़बूत रखता है और आख़िरत में भी (रखेगा) और ख़ुदा बेइन्साफ़ों को गुमराह कर देता है और ख़ुदा जो चाहता है करता है (२७)—रुकू—४—

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने ख़ुदा के एहसान को नाशुक्री से बदल दिया और अपनी क़ौम को तबाही के घर में उतारा (२८) (वह घर) दोज़ख़ है (सब नाशुक्रे) उसमें दाख़िल होंगे और वह बुरा ठिकान है (२९) और उन लोगों ने ख़ुदा के शरीक मुक़र्रर किये कि (लोगों को) उसके रस्ते से

गुमराह करें, कह दो कि (चन्द रोज़) फ़ायदे उठा लो, आख़िर-कार तुमको दोज़ख़की तरफ़ लौटकर जाना है (३०) (ऐ पैग़म्बर) मेरे मोमिन बन्दों से कह दो कि नमाज़ पढ़ा करें और उस दिन के आने से पेशतर जिसमें न (आमाल का) सौदा होगा और न दोस्ती (काम आयेगी) हमारे दिये हुये माल में से दर पर्दा और ज़ाहिर ख़र्च करते रहें (३१) ख़ुदा ही तो है जिसने असमानों और ज़मीन को पैदा किया और आस्मान से मेंह बरसाया फिर उससे तुम्हारे खाने के लिये फल पैदा किये और कश्तियों (और जहाज़ों) को तुम्हारे ज़ेरे फ़रमान किया, ताकि दरिया (और समन्दर) में उसके हुक्म से चलें और नहरों को भी तुम्हारे ज़ेरे फ़रमान किया (३२) और सूरज और चान्द को तुम्हारे लिये काम में लगा दिया कि दोनों (दिन रात) एक दस्तूर पर चल रहे हैं और रात और दिनको भी तुम्हारी खातिर काम में लगा दिया (३३) और जो कुछ तुमने मांगा सब में से तुमको इनायत किया और अगर ख़ुदा के एहसान गिनने लगो तो शुमार न कर सको (मगर लोग नैयमतों का शुक्र नहीं करते) कुछ शक नहीं कि इन्सान बड़ा बेइन्साफ़ और नाशुक्रा है (३४)—रुकू—५

और जब इब्राहीम ने दुआ की कि मेरे पर्वरदिगार इस शहर को (लोगों के लिये) अमन की जगह बना दे और मुझे और मेरी औलाद को इस बात से कि बुतों की परस्तिश करने लगें बचाये रखें (३५) ऐ पर्वरदिगार ! उन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह किया है, सो जिस शख्स ने मेरा कहा माना वह मेरा है,

और जिसने मेरी नाफ़रमानी की तो तू बख़्शने वाला मेहरबान है (३६) ऐ पर्वरदिगार ! मैंने अपनी औलाद को मैदान (मक्का) में जहाँ खेती नहीं, तेरे इज़्ज़त (व अदब) वाले घर के पास ला बसाई है, ऐ पर्वरदिगार ! ताकि यह नमाज़ पढ़े तो लोगों के दिलों को ऐसा करदे कि उनकी तरफ़ झुके रहें और उनको मेवों से रोज़ी दे ताकि (तेरा) शुक्र करें (३७) ऐ पर्वरदिगार ! जो बात हम छुपाते और जो ज़ाहिर करते हैं तू सब जानता है और ख़ुदा से कोई चीज़ मख़्फ़ी नहीं (न) ज़मीन में (न) आस्मान में (३८) ख़ुदा का शुक्र है जिसने मुझको बड़ी उम्र में इस्माईल और इसहाक़ बख़्शे, बेशक मेरा पर्वरदिगार दुआ सुनने वाला है (३९) ऐ पर्वरदिगार ! मुझको (ऐसी तौफ़ीक़ इनायत) कर कि नमाज़ पढ़ता रहूं और मेरी औलाद को भी (यह तौफ़ीक़ बख़्श), ऐ पर्वरदिगार ! मेरी दुआ क़बूल फ़रमा (४०) ऐ पर्वरदिगार ! हिसाब (किताब) के दिन मुझको और मेरे वालिदैन को और मोमिनों को मग़फ़रत कीजो (४१) —रुकू—६—

(और मोमिनो) मत ख़्याल करना कि यह ज़ालिम जो अमल कर रहे हैं ख़ुदा उनसे बेख़बर है, वह इनको उस दिन तक मोहलत दे रहा है जब कि (देहशत के सबब) आखें खुली की खुली रह जायेंगी (४२) और लोग सर उठाये हुऐ (मैदाने क़यामत की तरफ़) दौड़ रहे होंगे, उनकी निगाहें उनकी तरफ़ लौट न सकेंगी और उनके दिल (मारे ख़ौफ़ के) हवा हो रहे होंगे (४३) और लोगों को उस दिन से आगाह करो जब उन पर

अज़ाब आ जायेगा तब ज़ालिम लोग कहेंगे कि ऐ हमारे पर्वर-दिगार ! हमें थोड़ी सी मोहलत अता कर ताकि हम तेरी दावते (तौहीद) क़बूल करें और (तेरे) पैग़म्बरों के पीछे चलें (तो जवाब मिलेगा) क्या तुम पहले क़समें नहीं खाया करते थे, कि तुमको (इस हाल से जिसमें तुम हो) ज़वाल और क़यामत को हिसाबे आमाल नहीं होगा (४४) और जो लोग अपने आप पर ज़ुल्म करते थे तुम उनके मकानों में रहते थे और तुम पर ज़ाहिर हो चुका था कि हमने उन लोगों के साथ किस तरह का (मामला) किया था और तुम्हारे (समझाने) के लिये मिसालें भी बयान करदी थीं (४५) और उन्होंने (बड़ी बड़ी) तदबीरें कीं और उनकी (सब) तदबीरें ख़ुदा के हाँ (लिखी हुई) हैं गो वह तदबीरें ऐसी (ग़ज़ब की) थीं कि उनसे पहाड़ भी टल जायें (४६) तो ऐसा ख़्याल न करना कि ख़ुदा ने अपने पैग़म्बरों से जो वायदा किया है, उसके ख़िलाफ़ करेगा, बेशक ख़ुदा ज़बर-दस्त (और) बदला लेने वाला है (४७) जिस दिन यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जायेगी और आस्मान भी (बदल दिये जायेंगे) और सब लोग ख़ुदाये यगाना व ज़बरदस्त के सामने निकल खड़े होंगे (४८) और उस दिन तुम गुन्हेगारों को देखोगे कि ज़न्जीरों में जकड़े हुए हैं (४९) उनके कुर्ते गन्धक के होंगे और उनके मुँहों को आग लिपट रही होगी (५०) यह इस लिए कि ख़ुदा हर शख़्स को उसके आमाल का बदला दे, बेशक ख़ुदा जल्द हिसाब लेने वाला है (५१) यह क़ुरान, लोगों के नाम

(ख़ुदा का पैग़ाम) है ताकि उनको इससे डराया जाये और ताकि वह जान लें कि वही अकेला माबूद है और ताकि एहले अक़्ल नसीहत पकड़ें (५२)—रुकू—७—

चौदहवां पारा—रुबमा

(१५)–सूर-हे–हजर

सूरहे हज्र मक्के में उतरी, इसमें ९९ आयतें और ६ रुकू हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

अलरा यह (ख़ुदा की) किताब और क़ुरान रोशन की आयतें हैं (१) किसी वक्त काफ़िर लोग आरज़ू करेंगे कि ऐ काश वह मुस्लमान होते (२) (ऐ मोहम्मद) उनको उनके हाल पर रहने दो कि खा लें और फ़ायदे उठालें और (तूले अमल) उनको (दुनिया में) मशग़ूल किये रहे अन्क़रीब उनको (इसका अन्जाम) मालूम हो जायेगा (३) और हमने कोई बस्ती हलाक नहीं की, मगर उसका वक्त मरक़ूम व मौईय्यन था (४) कोई जमायत अपनी मुद्दते (वफ़ात) से न आगे निकल सकती है न पीछे रह सकती है (५) और (कफ़्फ़ार) कहते हैं कि ऐ शख्स जिस पर नसीहत (की किताब) नाज़िल हुई है तू तो दीवाना है (६) अगर तू सच्चा है तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आता

(७) (कह दो) हम फ़रिश्तों को नाज़िल नहीं किया करते, मगर हक़ के साथ और उस वक्त उनको मोहलत नहीं मिलती (८) बेशक यह (किताबे) नसीहत भी हम ही ने उतारी है और हम ही उसके निगैहबान हैं (९) और हमने तुम से पहले लोगों में भी पैग़म्बर भेजे थे (१०) और उनके पास कोई पैग़म्बर नहीं आता था मगर वह उसके साथ इस्तेहज़ा करते थे (११) इसी तरह हम इस (तकजीब व जलाल) को गुन्हेगारों के दिलों में दाखिल कर देते हैं (१२)सो वह उस पर ईमान नहीं लाते और पहलों की रविश भी यही रही है (१३) और अगर हम आस्मान का कोई दरवाज़ा उन पर खोल दें और वह उसमें चढ़ने भी लगें (१४) तो भी यही कहेंगे कि हमारी आंखें मख़मूर हो गई हैं, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है (१५)—रुकू—१

और हम ही ने आस्मान में बुर्ज बनाये और देखने वालों के लिये उनको सजा दिया (१६) और हर शैतान राँदा-ऐ-दर्गाह से उसे मेहफ़ूज़ कर दिया (१७) हाँ अगर कोई चोरी से सुनना चाहे तो चमकता हुआ अङ्गारा उसके पीछे लपकता है (१८)* और ज़मीन को भी हमने फैलाया और उस पर पहाड (बनाकर)

---

*आयत १८.—हज़रत आदम के पैदा होने के वक्त तक देव आस्मान में जाते थे और फ़रिश्ते लौहे मेहफ़ूज़ में लिखी हुई बातें आपस में करते थे, देव, वह बातें सुनकर ज़मीन पर उतरते और अपने दोस्तों (काहिनों) से कहते थे, फिर जब हज़रत ईसा पैदा हुए तो देव तीन आस्मानों से मना हुए, फिर जब मोहम्मद मुस्तफ़ा पैदा हुए तब तो सब आस्मानों के जाने से बन्द हुए, हांकने के वास्ते एक तारा मुकर्रर हुआ,

रख दिये और उसमें हर एक सन्जीदा चीज़ उगाई (१९, और हमने तुम्हारे लिये और उन लोगों के लिये जिनको तुम रोज़ी नहीं देते, उसमें मआश के सामान पैदा किये (२०) और हमारे हाँ हर चीज़ के ख़ज़ाने हैं, और हम उनको बमिक़दारे मुनासिब उतारते हैं (२१) और हम ही हवायें चलाते हैं (जो बादलों के पानी से) भरी हुई (होती हैं) और हम ही आस्मान से मैंह बरसाते हैं और हम ही तुम को उसका पानी पिलाते हैं, और तुम तो उस का ख़ज़ाना नहीं रखते (२२) और हम ही हयात बख़्शते और मौत देते हैं, और हम ही सब के वारिस (मालिक) हैं (२३) और जो लोग तुम में पहले गुज़र चुके हैं, हमको मालूम हैं और जो पीछे आने वाले हैं वह भी हमको मालूम हैं २४) और तुम्हारा पर्वरदिगार (क़यामत के दिन) उन सब को जमा करेगा, वह बड़ा दाना (और) ख़बरदार है (२५)—रुकू—२

और हम ने इन्सान को ख़न्खनाते सड़े हुऐ गारे से पैदा किया (२६) और जिन्नों को इस से पहले बे धुंएँ की आग से पैदा किया था (२७) और जब तुम्हारे पर्वरदिगार ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं खन्खनाते हुए गारे से एक बशर बनाने वाला हूँ (२८) जब उस की (सूरते इन्सानिया में) दुरुस्त कर लूं और उस में अपनी (बे बहा चीज़ यानी) रुह फूंक दूं तो उस के आगे सजदे में गिर पड़ना (२९) तो फ़रिश्ते सब के सब सजदे

नाम शहाबे साकिब है, तब से काहिन जो ग़ैब की बातें बताते थे, मौक़ूफ़ हुए ।

में गिर पड़े (३०) मगर शैतान कि उस ने सजदा करने वालों के साथ होने से इन्कार कर दिया (३१) (ख़ुदा ने) फ़रमाया कि इब्लीस ! तुझे क्या हुआ है कि तू सजदा करने वालों में शामिल न हुआ (३२) (उस ने) कहा मैं ऐसा नहीं हूँ कि इन्सान को जिस को तूने खन्खनाते सड़े हुए गारे से बनाया है सजदा करूं (३) ख़ुदा ने फ़रमाया, यहाँ से निकल जा तू मरदूद है (३४) और तुम पर क़यामत के दिन तक लानत (बरसेगी) (३५) (उस ने) कहा कि पर्वरदिगार ! मुझे उस दिन तक मोहलत दे, जब लोग (मरने के बाद) ज़िन्दा किये जायेंगे (३६) फ़रमाया कि तुझे मोहलत दी जाती है (३७) वक्ते मुकर्रा (यानी क़यामत) के दिन तक (३८) (उस ने) कहा कि पर्वरदिगार जैसा तूने मुझे रस्ते से अलग किया है मैं भी ज़मीन में लोगों के लिये (गुनाहों को) आरास्ता कर दिखाऊँगा और सब को बेहकाऊँगा (३९) हां उन में जो तेरे मुख़्लिस बन्दे हैं (उन पर काबू चलना मुश्किल है) (४०) ख़ुदा ने फ़रमाया कि मुझ तक (पहुंचने का) यानी सीधा रस्ता है (४१) जो मेरे मुख़्लिस बन्दे हैं उन पर तुझे कुछ क़ुदरत नहीं (कि उन को गुनाह में डाल सके) हाँ बदराहों में से जो तेरे पीछे चल पड़े (४२) और उन सब के वायदे की जगह जहन्नुम है (४३) उस के सात दरवाज़े हैं, हर एक दरवाज़े के लिये उन में से जमायतें तक़सीम कर दी गई हैं (४४)*—रुकू— ३

*आयत ४४— दरवाज़ों से मुराद तबके हैं दोज़ख के नीचे ऊपर

जो मुतक़्क़ी हैं वह बाग़ों और चश्मों में होंगे (४५) (उन से कहा जायेगा) कि उन में ख़ातिरजमा और सलामती से दाख़िल हो जाओ (४६) और उन के दिलों में जो कदूरत होगी उस को हम निकाल कर (साफ़) कर देंगे (गोया) भाई-भाई तख़्तों पर एक दूसरे के सामने बैठे हुऐ हैं (४७) न उन को वहाँ कोई तकलीफ़ पहुँचेगी और न वह वहाँ से निकाले जायेंगे (४८) (ऐ पैग़म्बर) मेरे बन्दों को बता दो कि मैं बड़ा बख़्शने वाला (और) मेहरबान हूँ (४९) और यह कि मेरा अज़ाब भी दर्द देने वाला अज़ाब है (५०) और उन को इब्राहीम के मेहमानों का हाल सुना दो (५१) जब वह इब्राहीम के पास आये तो सलाम कहा (उन्होंने) कहा हमें तो तुम से डर लगता है (५२) (मेहमानों ने) कहा कि डरिये नहीं, हम आप को एक दानिशमन्द लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं (५३) (वह) बोले कि जब मुझे बुढ़ापे ने आ पकड़ा तो तुम ख़ुशख़बरी देने लगे, अब काहे की ख़ुशख़बरी देते हो (५४) (उन्होंने) कहा कि हम आप को सच्ची ख़ुशख़बरी देते हैं आप मायूस न होजिये (५५) (इब्राहीम ने) कहा कि ख़ुदा की रहमत से (मैं मायूस क्यों होने लगा उस से) मायूस होना गुमराहों का काम है (५६)

---

७ तबक़े हैं और मंज़िलें हैं, पहला तबक़ा जहन्नुम है दूसरा नता, तीसरा हतना, चौथा शैईद पाचवां सक़र, छटा हज़म, सातवाँ दादिया—यह दर्जे बलिहाज़ आमाल हैं मगर इस का इल्म ख़ुदा ही को है कि किस तरह के अमल और अक़ीदे के लिये कौन सा तबक़ा है—

फिर कहने लगे कि फ़रिश्तो ! तुम्हें और) क्या काम है (५७) (उन्होंने) क़हा कि हम एक गुनैहगार क़ौम की तरफ़ भेजे गये हैं (कि उस को अज़ाब करें) (५८) मगर लूत के घर वाले कि उन सब को हम बचा लेंगे (५९) अलबत्ता, उन की औरत (कि) उस के लिये हम ने ठैहरा दिया है कि वह पीछे रह जायेगी (६०) —रुकू—४

फिर जब फ़रिश्ते लूत के घर गये (६१) तो लूत ने कहा कि तुम तो ना आशना से लोग हो (६२) वह बोले कि (नहीं) बल्कि हम आप के पास वह चीज़ लेकर आये हैं जिस में लोग शक करते थे (६३) और हम आप के पास यक़ीनी बात लेकर आये हैं और हम सच कहते हैं (६४) तो आप कुछ रात रहे से अपने घर वालों को लेकर निकलें और ख़ुद उन के पीछे चल दें और आप में से कोई शख़्स पीछे मुड़ कर न देखे, और जहाँ आप को हुक्म हो वहाँ चले जाइये (६५) और हम ने लूत की तरफ़ वही भेजी कि इन लोगों की जड़ सुब्ह होते होते काट दी जायेगी (६६) और एहले शहर (लूत के पास) ख़ुश ख़ुश (दौड़े) आये (६७) (लूत ने) कहा कि यह मेरे मेहमान हैं (कहीं इन के बारे में) मुझे रुसवा न करना (६८) और ख़ुदा से डरो और मेरी बे आबरुई न कीजो (६९) वह बोले क्या हम ने तुम को सारे जहान की हिमायत व तरफ़दारी से मना नहीं किया (७०) (उन्होंने) कहा कि अगर तुम्हें करना यही है तो यह मेरी (क़ौम) की लड़कियाँ हैं (इन से शादी) कर लो (७१) (ऐ मोहम्मद)

तुम्हारी जान की क़सम वह अपनी मस्ती में मदहोश (हो रहे) थे (७२) सो उन को सूरज निकलते निकलते चिन्घाड़ ने आ पकड़ा (७३) और हम ने उस (शहर) को (उलट कर) नीचे ऊपर कर दिया और उन पर कन्धर की पथरियाँ बरसाईं (७४) बेशक इस (क़िस्से) में एहले फ़िरासत के लिये निशानी है (७५) और वह (शहर) अब तक सीधे रस्ते पर (मौजूद) है (७६) बेशक इस में ईमान लाने वालों के लिये निशानी है (७७) और बन के रहने वाले (यानी क़ौम शुऐब के लोग) भी गुन्हे-गार थे (७८) मौसम ने उन से भी बदला लिया और यह दोनों शहर खुले रस्ते पर (मौजूद) हैं (७९)—रुकू –५

और (वालिये) हजर के रहने वालों ने भी पैग़म्बरों की तकज़ीब की (८०) हम ने उन को अपनी निशानियाँ दीं और वह उन से मूंह फेरते रहे (८१) और वह पहाड़ों को तराश तराश कर घर बनाते थे (कि) अम्न (व इतमीनान) से रहेंगे (८२) तो चीख़ ने उन्हें सुब्ह होते होते आ पकड़ा (८३) और जो काम वह करते थे वह उन के कुछ भी काम न आये (८४) और हम ने आस्मानों और ज़मीन को और जो (मख़-लूक़ात) उन में है, उन को तदबीर के साथ पैदा किया है और क़यामत तो ज़रुर आ कर रहेगी, तो तुम (उन लोगों से) अच्छी तरह दर गुज़र करो (८५) कुछ शक नहीं कि तुम्हारा पर्वरदिगार, वही (सब कुछ) पैदा करने वाला (और) जानने वाला है (८६) और हम ने तुम को सात आयतें जो (नमाज़)

में दोहरा कर पढ़ी जाती हैं (यानी सूर-ऐ-अलहम्द) और अज़मत वाला क़ुरान अता फ़रमाया है (८७) और हमने कफ़्फ़ार की कई जमायतों को जो (फ़वायदे दुनियावी से) मुत्तमत्तौ किया है, तुम उन की तरफ़ (रग़बत से) आँख उठा कर न देखना, और न उन के हाल पर तास्सुफ़ करना, और मोमिनो से खातिर व तवाज़ौ से पेश आना (८८) और कह दो कि मैं तो ऐलानियाँ डर सुनाने वाला हूँ (८९) और हम उन कफ़्फ़ार पर इस तरह अज़ाब नाज़िल करेंगे, जिस तरह उन लोगों पर नाज़िल किया, जिन्होंने तक़सीम कर दिया (९०) यानी क़ुरान को (कुछ मानने और कुछ न मानने से) टुकड़े टुकड़े कर डाला (९१) तुम्हारे पर्वरदिगार की क़सम उन से ज़रुर पुरसिश करेंगे (९२) उन कामों को जो वह करते रहे (९३) पस जो हुक्म तुम को (ख़ुदा की तरफ़ से) मिला है वह (लोगों को) सुना दो और मुशिरकों का ज़रा ख़्याल न करो (९४) हम तुम्हें उन लोगों के (शर्र) से बचाने के लिये जो तुम से इस्तैहज़ा करते हैं काफ़ी हैं (९५) जो ख़ुदा के साथ और माबूद क़रार देते हैं, सो अन्क़रीब उन को (इन बातों का अन्जाम) मालूम हो जायेगा (९६) और हम जानते हैं कि उन की बातों से तुम्हारा दिल तंग होता है (९७) तो तुम अपने पर्वरदिगार की तस्बीह कहते और उस की ख़ूबियाँ बयान करते रहो, और सजदा करने वालों में दाख़िल रहो (९८) और अपने पर्वरदिगार की इबादत किये जाओ यहाँ तक कि तुम्हारी मौत (का वक्त) आ जाये (९९)–रुकू—६

१६—सूर-हे-नह्ल—

यह सूरत मक्के में उतरी, इसमें १२८ आयतें और १६ रुकू हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

ख़ुदा का हुक्म (यानी अज़ाब गोया) आ ही पहुंचा तो (काफ़िरो) इसके लिये जल्दी मत करो, यह लोग जो (ख़ुदा का) शरीक बनाते हैं, वह उससे पाक और बालातर है (१) वही फ़रिश्तों को पैग़ाम देकर अपने हुक्म से अपने बन्दों में से जिस के पास चाहता है भेजता है कि (लोगों को) बता दो कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मुझी से डरो (२) उसी ने आस्मानों और ज़मीन को मबनी बर हिकमत पैदा किया, उसकी ज़ात इन (काफ़िरों) के शिर्क से ऊंची है (३) उसी ने इन्सान को नुत्फ़े से बनाया मगर वह उस (ख़ालिक़) के बारे में ऐलानिया झगड़ने लगा (४) और चारपायों को भी उसी ने पैदा किया, उनमें तुम्हारे लिये जड़ावल[1] और बहुत से फ़ायदे हैं और उनमें से बाज़ को तुम खाते भी हो (५) और जब शाम को उन्हें (जंगल से) लाते हो और सुब्ह को (जंगल) चराने ले जाते हो, तो इन से तुम्हारी इज़्ज़त और शान है (६) और (दूर दराज़) शहरों में जहाँ तुम मेहनते शाक़्क़ा के बग़ैर पहुंच नहीं सकते, वह तुम्हारे

[1] जड़ावल—जाड़े के सामान को कहते हैं—

बोझ उठा कर ले जाते हैं, कुछ शक नहीं कि तुम्हारा पवर्रदिगार निहायत शफ़क़त वाला मेहरबान है (७) और उसी ने घोड़े और खच्चर और गधे पैदा किये ताकि तुम उन पर सवार हो और (वह तुम्हारे लिये) रौनक़ो ज़ीनत (भी हैं) और वह (और चीज़ें भी) पैदा करता है, जिन की तुम को ख़बर नहीं (८) और सीधा रस्ता तो ख़ुदा तक जा पहुंचता है और बाज़ रस्ते टेढ़े हैं (वह उस तक नहीं पहुंचते) और अगर वह चाहता तो तुम सबको सीधे रस्ते पर चला देता (९)—रुकू–१ .

वही तो है जिसने आस्मान से पानी बरसाया जिसे तुम पीते हो और उससे दरख़्त भी (शादाब) होते हैं, जिनमें तुम अपने चारपायों को चराते हो (१०) उसी पानी से वह तुम्हारे लिये खेती और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और (और बेशुमार दरख़्त) उगाता है, और हर तरह के फल (पैदा करता है) ग़ौर करने वालों के लिये इसमें (क़ुदरते ख़ुदा की बड़ी) निशानी है (११) और उसी ने तुम्हारे लिये रात और दिन और सूरज और चान्द को काम में लगाया और उसी के हुक्म से सितारे भी काम में लगे हुए हैं, समझने वालों के लिये इसमें (क़ुदरते ख़ुदा की बहुत सी) निशानियाँ हैं (१२) और जो तरह तरह के रंगों की चीज़ें, उसने ज़मीन में पैदा कीं (सब तुम्हारे ज़ेरे फ़रमान कर दीं) नसीहत पकड़ने वालों के लिये इस में निशानी है (१३) और वही तो है जिसने दरिया को तुम्हारे अख़्तियार में किया ताकि उसमें से ताज़ा गोश्त खाओ और उससे ज़ेवर (मोती वग़ैरा)

निकालो जिसे तुम पहनते हो, और तुम देखते हो कि कश्तियाँ दरिया में पानी को फाड़ती चली जाती हैं और इस लिये भी (दरिया को तुम्हारे अख़्तियार में किया) कि तुम ख़ुदा के फ़ज़्ल से (मआश) तलाश करो और ताकि उसका शुक्र करो (१४) और उसी ने ज़मीन पर पहाड़ (बना कर) रख दिये कि तुम को लेकर कहीं झुक न जायें और नहरें और रस्ते बना दिये ताकि एक मकाम से दूसरे मक़ाम तक (आसानी से) जा सको (१५) और (रास्तों में) निशानात बना दिये, और लोग सितारों से भी रस्ते मालूम करते हैं (१६) तो जो (इतनी मख़लूक़ात) पैदा करे क्या वह वैसा ही है जो कुछ भी पैदा न कर सके, तो फिर तुम ग़ौर क्यों नहीं करते (१७) और अगर तुम ख़ुदा की नैयमतों को शुमार करना चाहो तो गिन न सको, बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (१८) और जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो सबसे ख़ुदा वाक़िफ़ है (१९) और जिन लोगों को यह ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं वह कोई चीज़ भी तो नहीं बना सकते, बल्कि ख़ुद उनको और बनाते हैं (२०) (वह) लाशें हैं बेजान, उनको यह भी तो मालूम नहीं कि वह उठाये कब जायेंगे (२१)—रुकू २

तुम्हारा माबूद तो अकेला ख़ुदा है, तो जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उनके दिल इन्कार कर रहे हैं और वह सर-कश हो रहे हैं (२२) यह जो कुछ छुपाते हैं और ज़ाहिर करते हैं ख़ुदा जरूर उसको जानता है वह सरकशों को हर्गिज़ पसन्द नहीं

करता (२३) और जब उन (काफ़िरों) से कहा जाता है कि तुम्हारे पवर्रदिगार ने क्या उतारा है तो कहते हैं कि (वह तो) पहले लोगों की हिकायतें हैं (२४) (ऐ पैग़म्बर) उनको बकने दो यह क़यामत के दिन अपने (आमाल के) पूरे बोझ भी उठायेंगे और जिनको यह बे तहक़ीक़ गुमराह करते हैं उनके बोझ (भी उठायेंगे) सुन रखो कि जो बोझ यह उठा रहे हैं, बुरे हैं (२५)- रुकू—३

उनसे पहले लोगों ने भी (ऐसी ही) मक्कारियां की थीं, तो ख़ुदा का हुक्म उनकी इमारत के सितूनों पर आ पहुंचा और छत उन पर, उनके ऊपर से गिर पड़ी और (ऐसी तरफ़ से) उन पर अज़ाब आ वाक़ैय हुआ जहां से उनको ख़्याल भी न था (२६) फिर उनको क़यामत के दिन भी ज़लील करेगा और कहेगा कि मेरे वह शरीक कहाँ हैं जिनके बारे में तुम झगड़ा करते थे, जिन लोगों को इल्म (दिया) गया था वह कहेंगे कि आज काफ़िरों की रुसवाई और बुराई है (२७) (उनका हाल यह है कि) जब फ़रिश्ते उनकी रुहें क़ब्ज़ करने लगते हैं (और) यह अपने ही हक़ में जुल्म करने वाले (होते हैं) तो मुती व मिन्क़ाद हो जाते हैं (और कहते हैं) कि हम कोई बुरा काम नहीं करते थे, हाँ जो कुछ तुम किया करते थे ख़ुदा उसे ख़ूब जानता है (२८) सो दोज़ख़ के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उसमें रहोगे, अब तकब्बुर करने वालों का बुरा ठिकाना है(२९)और जब परहेज़गारों से पूछा जाता है कि तुम्हारे पवर्रदिगार ने क्या नाज़िल

किया है तो कहते हैं कि बेहतरीन (कलाम) जो लोग नेकूकार हैं उनके लिये इस दुनिया में भी भलाई है और आख़िरत का घर तो बहुत ही अच्छा है और परहेज़गारों का घर बहुत ख़ूब है (३०) वह बहिश्ते जाविदानी (हैं) जिनमें वह दाख़िल होंगे, उनके नीचे नहरें बह रही हैं, वहां जो चाहेंगे, उनके लिये मैयस्सर होगा ख़ुदा परहेज़गारों को ऐसा ही बदला देता है (३१) (उन की कैफ़ियत यह है कि) जब फ़रिश्ते उन की जानें निकालने लगते हैं और यह (कुफ़्र व शिर्क से) पाक होते हैं तो सलाम अलैकम कहते हैं (और कहते हैं) कि जो अमल तुम किया करते थे उन के बदले में बहिश्त में दाख़िल हो जाओ (३२) क्या यह (काफ़िर) इस बात के मुन्तज़िर हैं कि फ़रिश्ते उन के पास (जान निकालने) आयें या तुम्हारे पर्वरदिगार का हुक्मे (अज़ाब) आ पहुंचे, इसी तरह उन लोगों ने किया था, जो उन से पहले थे, और ख़ुदा ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वह ख़ुद अपने आप पर ज़ुल्म करते थे (३३) तो उन को उन के आमाल के बुरे बदले मिले, और जिस चीज़ के साथ वह ठट्ठे किया करते थे उस ने उन को (हर तरफ़ से) घेर लिया (३४)— रुकू—४

और मुश्रिक कहते हैं कि अगर ख़ुदा चाहता तो न हम ही उस के सिवा किसी चीज़ को पूजते और न हमारे बड़े ही (पूजते) और न उस के (फ़रमान के) बग़ैर हम किसी चीज़ को हराम ठैहराते (ऐ पैग़म्बर) इसी तरह उन के अगले लोगों

ने किया था तो वह पैग़म्बरों के ज़िम्मे ख़ुदा के (एहकाम को) खोल खोल कर पहुँचा देने के सिवा और कुछ नहीं (३५) और हमने हर जमायत में पैग़म्बर भेजा कि ख़ुदा ही की इबादत करो और बुतों की परस्तिश से इज्तिनाब करो, तो उन में बाज़ ऐसे हैं जिन को ख़ुदा ने हिदायत दी और बाज़ ऐसे हैं जिन पर गुमराही साबित हुई, सो ज़मीन पर चल फिर कर देख लो कि झुठलाने वालों का अन्जाम कैसा हुआ (३६) अगर तुम उन (कुफ़्फ़ार) की हिदायत के लिये ललचाओ, तो जिस को ख़ुदा गुमराह कर देता है, उस को वह हिदायत नहीं दिया करता, और ऐसे लोगों का कोई भी मददगार नहीं होता (३७) और यह ख़ुदा की सख़्त सख़्त क़समें खाते हैं कि जो मर जाता है ख़ुदा उसे (क़यामत के दिन क़ब्र से) नहीं उठायेगा, हर्गिज़ नहीं, यह (ख़ुदा का) वायदा सच्चा है और उसे पूरा करना उसे ज़रुर है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते (३८) ताकि जिन बातों से यह इख़्तिलाफ़ करते हैं वह उन पर ज़ाहिर कर दे और इस लिये कि काफ़िर जान लें, कि वह झूठे थे (३९) जब हम किसी चीज़ का इरादा करते हैं तो हमारी बात यही है कि उस को कह देते हैं कि हो जा तो वह हो जाती है (४०)—रुकू—५

और जिन लोगों ने ज़ुल्म सहने के बाद, ख़ुदा के लिये वतन छोड़ा हम उन को दुनिया में अच्छा ठिकाना देंगे और आख़िरत का अजर तो बहुत बड़ा है काश वह इसे जानते (४१) यानी वह लोग जो सब्र करते हैं और अपने पर्वरदिगार पर भरोसा

रखते हैं (४२) और हम ने तुम से पहले मर्दों ही को पैग़म्बर बना कर भेजा था, जिन की तरफ़ हम वही भेजा करते थे, अगर तुम लोग नहीं जानते एहले किताब से पूछ लो (४३) (और उन पैग़म्बरों को) दलीलें और किताबें देकर (भेजा था) और हम ने तुम पर भी यह किताव नाज़िल की है ताकि जो (इर्शादात) लोगों पर नाज़िल हुए हैं वह उन पर ज़ाहिर कर दो और ताकि वह ग़ौर करें (४४) क्या जो लोग बुरी बुरी चालें चलते हैं, इस बात से बे ख़ौफ़ है कि ख़ुदा उन को ज़मीन में धंसा दे या (ऐसी तरफ़ से) उन पर अज़ाब आ जाये जहाँ से उन को ख़बर ही न हो (४५) या उन को चलते फिरते पकड़ ले, वह (ख़ुदा को) आजिज़ नहीं कर सकते (४६) या जब उन को अज़ाब का डर पैदा हो गया हो तो उन को पकड़ ले, बेशक तुम्हारा पर्वरदिगार शफ़क़त करने वाला (और) मेहरबान है (४७) क्या उन्होंने ख़ुदा की मख़लूक़ात में से ऐसी चीज़ें नहीं देखीं, जिन के साये दायें से (बायें को) और बायें से (दायें को) लौटते रहते हैं (यानी) ख़ुदा के आगे आजिज़ हो कर सजदे में पड़े रहते हैं (४८) और तमाम जानदार जो आस्मानों में हैं और जो ज़मीन में हैं सब ख़ुदा के आगे सजदा करते हैं और फ़रिश्ते भी, और वह ज़रा ग़ुरुर नहीं करते (४९) और अपने पर्वरदिगार से जो उन के ऊपर हैं डरते हैं और जो उन को इर्शाद होता है, उस पर अमल करते हैं (५०)—रुकू—६

और ख़ुदा ने फ़रमाया है कि दो दो माबूद न बनाओ, माबूद ही एक है तो मुझी से डरते रहो (५१) और जो कुछ

आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है और उसी की इबादत लाज़िम है, तो तुम ख़ुदा के सिवा औरों से क्यों डरते हो (५२) और जो नैयमतें तुम को मैयस्सर हैं, सब ख़ुदा की तरफ़ से हैं, फिर जब तुमको कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो उसी के आगे चिल्लाते हो (५३) तो फिर जब वह तुम से तकलीफ़ को दूर कर देता है तो कुछ लोग तुम में से ख़ुदा के साथ शरीक करने लगते हैं (५४) ताकि जो (नैयमतें) हमने उनको अता फ़रमाई हैं उनकी ना शुक्री करें तो (मुश्रिको) दुनिया में फ़ायदे उठा लो, अन्क़रीब तुमको (इसका अन्जाम) मालूम हो जायेगा (५५) और हमारे दिये हुए माल में से ऐसी चीज़ों का हिस्सा मुक़र्रर करते हैं जिन को जानते ही नहीं, (काफ़िरो) ख़ुदा की क़सम कि जो तुम इफ़्तिरा करते हो उसकी तुम से ज़रूर पुर्सिश होगी (५६) और यह लोग ख़ुदा के लिये तो बेटियां तजवीज़ करते हैं (और) वह इनसे पाक है और अपने लिये (बेटे) जो मरग़ूब (व दिलपसन्द) हैं (५७) हालाँकि जब उनमें से किसी को बेटी (के पैदा होने) की ख़बर मिलती है तो उसका मुंह (ग़म के सबब) काला पड़ जाता है और (उसके दिल को देखो तो) वह अन्दोहनाक हो जाता है (५८) और इस खबरे बद से (जो वह सुनता है) लोगों से छुपता फिरता है (और सोचता है) कि आया ज़िल्लत बर्दाश्त करके लड़की को ज़िन्दा रहने दे, या ज़मीन में गाढ़ दे, देखो यह जो तजवीज करते हैं, बहुत बुरी है (५९) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन्हीं के लिये बुरी बातें (शायाँ) हैं और ख़ुदा

को सिफ़ते (आला ज़ेब देती है) और वह गालिब हिक़मत वाला है (६०)—रुकू ७

और अगर खुदा लोगों को उनके ज़ुल्म के सबब पकड़ने लगे तो एक जानदार को ज़मीन पर न छोड़े, लेकिन उनको एक वक्ते मुक़र्रर तक मोहलत दिये जाता है, जब वह वक्त आ जाता है तो एक घड़ी न पीछे रह सकते हैं न आगे बढ़ सकते है (६१) और यह खुदा के लिये ऐसी चीज़ें तजवीज़ करते हैं जिनको खुद ना पसन्द करते हैं और ज़बान से झूठ बके जाते हैं कि उनको (क़यामत के दिन) भलाई (यानी नजात) होगी, कुछ शक नहीं कि उनके लिये (दोज़ख की) आग (तैयार) है, और यह (दोज़ख में) सबसे आगे भेजे जायेंगे (६२) खुदा की क़सम, हमने तुम से पहली उम्मतों की तरफ़ पैग़म्बर भेजे तो शैतान ने उनके किर्दार (ना शाईस्ता) उनको आरास्ता कर दिखाये, तो आज भी वही उनका दोस्त है और उनके लिये अज़ाबे अलीम है (६३) और हमने जो कितःब तुम पर नाज़िल की है तो उसके लिये कि जिस अमर में उन लोगों को इख्तिलाफ़ है तुम उसका फ़ैसला कर दो, और (यह) मोमिनों के लिये हिदायत और रहमत है (६४) और खुदा ही ने आस्मान से पानी बरसाया फिर उससे ज़मीन को उसके मरने के बाद ज़िन्दा किया, बेशक इसमें सुनने वालों के लिये निशानी है (६५)—रुकू ८

और तुम्हारे लिये चारपायों में भी (मक़ामे) इबरत (व ग़ौर) है कि उनके पेटों में जो गोबर और लहू है उससे हम तुम

को ख़ालिस दूध पिलाते हैं, जो पीने वालों के लिये खुशगवार है (६६) और खजूर और अंगूर के मेवों से भी (तुम पीने की चीज़ें तैयार करते हो) कि उनसे शराब बनाते हो, और उमदा रिज़्क खाते हो, जो लोग समझ रखते हैं उनके लिये इन (चीज़ों) में (क़ुदरते खुदा की) निशानी है (६८) और तुम्हारे पवर्रदिगार ने शहद की मक्खियों को इर्शाद फ़रमाया कि पहाड़ों में और दरख़्तों में और ऊंची ऊँची छत्रियों में बनाते हैं घर अपनी (६८) और हर क़िस्म के मेवे खाओ और अपने पवर्रदिगार के साफ़ सितून पर चली जा,उस के पेट से पीने की चीज़ निकलती है जिस के मुख़्तलिफ़ रंग होते हैं, इस में लोगों के (कई अमराज़ को) शिफ़ा है, बेशक सोचने वालों के लिये इस में भी निशानी है (६९) और ख़ुदा ने ही तुम को पैदा किया, फिर वही तुम को मौत देता है, और तुम में बाज़ ऐसे होते हैं कि निहायत ख़राब उम्र को पहुंच जाते हैं, और (बहुत कुछ) जानने के बाद हर चीज़ से बे इल्म हो जाते हैं, बेशक ख़ुदा (सब कुछ) जानने वाला (और) कुदरत वाला है (७०) – रुकू– ९

और ख़ुदा ने रिज़्क़ (व दौलत) बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है, तो जिन लोगों को फ़ज़ीलत दी है वह अपना रिज़्क़ अपने ममलूकों को दे डालने वाले हैं (नहीं) कि सब उस में बराबर हो जायें, तो क्या यह लोग नैयमते इलाही के मुन्किर हैं (७१) [और ख़ुदा ही ने तुम में से तुम्हारे लिये औरतें पैदा कीं और औरतों से तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किये और खाने को तुम्हें

पाकीज़ा चीज़ें दीं, तो क्या यह बे असल चीज़ों पर ऐतक़ाद रखते और ख़ुदा की नैयमतों से इन्कार करते हैं (७२) और ख़ुदा के सिवा ऐसों को पूजते हैं जो उन को आस्मानों और ज़मीन में रोज़ी देने का ज़रा भी अख़्तियार नहीं रखते और न किसी तरह का मक़दूर रखते हैं (७३) तो (लोगो) ख़ुदा के बारे में (ग़लत) मिसालें न बनाओ (सही मिसालों का तरीक़ा) ख़ुदा ही जानता है और तुम नहीं जानते (७४) ख़ुदा एक और मिसाल बयान फ़रमाता है कि एक ग़ुलाम है जो (बिल्कुल) दूसरे के अख़्तियार में है और किसी चीज़ पर क़ुदरत नहीं रखता और एक ऐसा शख़्स है जिस को हम ने अपने हाँ से (बहुत) सा माल तैय्यब अता फ़रमाया है और वह उस में से (रात दिन) पोशीदा और ज़ाहिर ख़र्च करता रहता है, तो क्या यह दोनों शख़्स बराबर हैं ? (हर्गिज़ नहीं) अलहम्द लिल्लाह लेकिन इन में से अक्सर लोग नहीं समझ सकते (७५) और ख़ुदा एक और मिसाल बयान फ़रमाता है कि दो आदमी हैं, एक उनमें से गूंगा (और दूसरे की मिल्क) है (बे अख़्तियार व नातवाँ) कि किसी चीज़ पर क़ुदरत नहीं रखता और अपने मालिक को दूभर हो रहा है, वह जहाँ उसे भेजता है, ख़ैर से कभी भलाई नहीं लाता, क्या ऐसा (गूंगा बहरा) और वह शख़्स जो (सुनता बोलता और) लोगों को इन्साफ़ करने का हुक्म देता है और खुद सीधे रस्ते पर चल रहा है दोनों बराबर हैं ? (७६)— रुकू—१०

और आस्मानों और ज़मीन का इल्म ख़ुदा ही को है और

(खुदा के नज़दीक) क़यामत का आना यूं है जैसे आँख का झपकना, बल्कि (इस से भी) जल्दतर, कुछ शक नहीं कि खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (७७) और खुदा ही ने तुम को तुम्हारी माओं के शिकम से पैदा किया कि तुम कुछ जानते नहीं थे और उस ने तुम को कान और आँखें और दिल (और इन के अलावा और) आज़ा बख्शे ताकि तुम शुक्र करो (७८) क्या उन लोगों ने परिन्दों को नही देखा कि आस्मान की हवा में घिरे हुए (उड़ते रहते) हैं, उन को खुदा थामे हुऐ है, ईमान वालों के लिये इस में (बहुत सी) निशानियाँ हैं (७९) और खुदा ही ने तुम्हारे लिए घरों को रहने की जगह बनाया और उसी ने चौपायों की खालों से तुम्हारे लिये डेरे बनाये जिन को तुम सुबक देख कर सफ़र और हज़र में काम में लाते हो और उन की ऊन और पशम और बालों से तुम असबाब और बरतने की चीज़ें (बनाते हो जो) मुद्दत तक काम देती हैं (८०) और खुदा ही ने तुम्हारे (आराम के) लिये अपनी पैदा की हुई चीज़ों के साये बनाये और पहाड़ों में ग़ारें बनाईं और कुरते बनाये जो तुम को गर्मी से बचायें और (ऐसे) कुरते (भी) जो तुम को (असलाह) जंग (के ज़रर) से मेहफ़ूज़ रखें, इसी तरह खुदा अपना एहसान तुम पर पूरा करता है, ताकि तुम फ़रमाँबरदार बनो (८१) और अगर यह लोग ऐराज़ करें तो (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारा काम फ़क़त खोल कर सुना देना है यह खुदा की नेयमतों से वाक़िफ़ हैं, मगर (वाक़िफ़ होकर) उन से इन्कार करते हैं और यह अक्सर नाशुके हैं (८३) रुकू (११)

और जिस दिन हम हर उम्मत में से गवाह (यानी पैग़म्बर) खड़ा करेंगे तो न तो कफ़्फ़ार को (बोलने) की इजाज़त मिलेगी और न उन के उज़्र क़बूल किये जावेंगे (८४) और जब ज़ालिम लोग अज़ाब देख लेंगे तो फिर न तो उन के अज़ाब में तख़फ़ीफ़ की जायेगी और न उन को मोहलत ही दी जायेगी (८५) और जब मुशरिक अपने (बनाये हुए) शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे कि पर्वरदिगार यह वही हमारे शरीक हैं जिन को हम तेरे सिवा पुकारते थे तो वह (उन के क़लम को मुस्तरद कर देंगे और) उन से कहेंगे कि तुम तो झूठे हो (८६) और उस दिन ख़ुदा के सामने सर निगूं हो जायेंगे और जो तूफ़ान वह बान्धा करते थे, सब उन से जाता रहेगा (८७) जिन लोगों ने कुफ़्र किया और (लोगों को) ख़ुदा के रस्ते से रोका, हम उन को अज़ाब पर अज़ाब देंगे, इस लिये कि शरारत किया करते थे (८८) और (उस दिन को याद करो) जिस दिन हम हर उम्मत में से ख़ुद उन पर गवाह खड़े करेंगे और (ऐ पैग़म्बर) तुम को उन लोगों पर गवाह लायेंगे और हम ने तुम पर (ऐसी) किताब नाज़िल की है कि (उस में) हर चीज़ का बयान (मुफ़स्सिल) है और मुसलमानों के लिये हिदायत और रहमत और बशारत है (८९)—रुकू—१२

ख़ुदा तुम को इन्साफ़ और एहसान करने और रिश्तेदारों को (ख़र्च से मदद) देने का हुक्म देता है और वे हयाई और ना माक़ूल कामों और सरकशी से मना करता है (और) तुम्हें

नसीहत करता है ताकि तुम याद रखो (९०) और जब खुदा से एहदे वासिक़ करो तो उस को पूरा करो और जब पक्की क़समें खाओ तो उन को मत तोड़ो कि तुम खुदा को अपना ज़ामिन मुक़र्रर कर चुके हो, और जो कुछ तुम करते हो खुदा उस को जानता है (९१) और उस औरत की तरह न होना जिस ने मेहनत से तो सूत काता, फिर उस को तोड़ कर टुकड़े कर डाला, कि तुम अपनी क़समों को आपस में इस बात का ज़रिया बनाने लगो कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से ज़्यादा ग़ालिब रहे, बात यह है कि खुदा तुम्हें इस से आज़माता है, और जिन बातों में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो, क़यामत को उस की हक़ीक़तें तुम पर ज़ाहिर कर देगा (९२) और अगर खुदा चाहता तो तुम (सब) को एक ही जमायत बना देता, लेकिन वह जिसे चाहता है गुम-राह करता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है, और जो अमल तुम करते हो (उस दिन) उन के बारे में तुम से ज़रुर पूछा जायेगा (९३) और अपनी क़समों को आपस में इस बात का ज़रिया न बनाओ कि लोगों के क़दम जम चुकने के बाद लड़खड़ा जायें और इस वज्ह से कि तुम ने लोगों को खुदा के रस्ते से रोका तुम को अक़ूबत का मज़ा चखना पड़े, और बड़ा सख्त अज़ाब मिले (९४) और खुदा से जो तुम ने एहद किया है (उस को मत बेचो और) उस के बदले थोड़ी सी क़ीमत मत लो (क्योंकि ईफ़ाये एहद का) जो (सिला) खुदा के हाँ मुकर्रर है वह अगर समझो तो तुम्हारे लिये बेहतर है (९५) जो कुछ

तुम्हारे पास है वह ख़त्म हो जाना है और जो खुदा के पास है वह बाक़ी है (कि कभी ख़त्म नहीं होगा) और जिन लोगों ने सब्र किया, हम उन को उन के आमाल का निहायत अच्छा बदला देंगे (९६) जो शख्स नेक अमल करेगा, मर्द हो या औरत, और वह मोमिन भी होगा तो हम उस को (दुनियाँ में) पाक (और आराम की) ज़िन्दगी से ज़िन्दा रखेंगे और (आख़िरत में) उन के आमाल का निहायत अच्छा सिला देंगे (९७) और जब तुम क़ुरान पढ़ने लगो तो शैतान मरदूद से पनाह माँग लिया करो (९८) जो मोमिन हैं और अपने पर्वरदिगार पर भरोसा रखते हैं, उन पर उन का कुछ ज़ोर नहीं चलता (९९) उस का ज़ोर उन्हीं लोगों पर चलता है जो उस को रफ़ीक़ बनाते हैं और उस के (वसवसे के) सबब (खुदा के साथ) शरीक मुक़र्रर करते हैं (१००)—रुकू—१३

और जब हम कोई आयत किसी आयत की जगह बदल देते हैं और ख़ुदा जो कुछ नाज़िल फ़रमाता है उसे खूब जानता है तो (काफ़िर) कहते हैं कि तुम तो (यूहीं) अपनी तरफ़ से बना लाते हो, हक़ीक़त यह है कि उनमें अक्सर नादान हैं (१०१) कह दो कि उसको रुहउल क़ुदस तुम्हारे पवर्रदिगार की तरफ़ से सच्चाई के साथ नाज़िल होते हैं ताकि यह (क़ुरान) मोमिनों को साबित क़दम रखे और हुक्म मानने वालों के लिये तो (यह) हिदायत और बशारत है (१०२) और हमें मालूम है कि यह कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) को एक शख्स सिखा जाता है, मगर

जिसकी तरफ़ (तालीम की) निस्बत करते हैं उस की ज़बान तो अजमी है और यह साफ़ अरबी है (१०३) जो लोग ख़ुदा की आयतों पर ईमान नहीं लाते उनको ख़ुदा हिदायत नहीं देता और उनके लिये अज़ाबे अलीम है (१०४) झूठे इफ़्तिरा तो वही लोग किया करते हैं जो ख़ुदा की आयतों पर ईमान नहीं लाते और वही झूठे हैं (१०५) जो शख़्स ईमान लाने के बाद ख़ुदा के साथ कुफ़्र करे, वह नहीं जो कुफ़्र पर ज़बरदस्ती मजबूर किया जाये और उसका दिल ईमान के साथ मुतमैईन हो बल्कि वह जो (दिल से और) दिल खोल कर कुफ़्र करे तो ऐसों पर अल्लाह का ग़ज़ब है और उनको बड़ा सख़्त अज़ाब होगा (१०६) यह इस लिये कि उन्होंने दुनियाँ की ज़िन्दगी को आख़िरत के मुक़ाबले में अज़ीज़ रखा और इसलिये कि खुदा काफ़िरों को हिदायत नहीं देता (१०७) यही लोग हैं जिनके दिलों पर और कानों पर और आंखों पर ख़ुदा ने मोहर लगा रखी है और यही ग़फ़लत में पड़े हुए हैं (१०८) कुछ शक नहीं यह आख़िरत में ख़सारा उठाने वाले होंगे (१०९) फिर जिन लोगों ने ईज़ायें उठाने के बाद तर्के वतन किया, फिर जहाद किये और साबित क़दम रहे. तुम्हारा पवर्रदिगार उनको बेशक उन (आज़्माईशों के) बाद बख़्शने वाला (और) उन पर रहमत करने वाला है (११०)—

रुकू १४—

जिस दिन हर मुतनफ़्फ़िस अपनी तरफ़ से झगड़ा करने आयेगा और हर शख़्स को उसके आमाल का पूरा पूरा बदला

दिया जायेगा और किसी का नुक़सान नहीं किया जायेगा (१११) और खुदा एक बस्ती की मिसाल बयान फ़रमाता है कि (हर तरह) अम्नचैन से बस्ती थी, हर तरफ़ से रिज़्क़ बा फ़रागत चला आता था, मगर उन लोगों ने खुदा की नैयमतों की ना शुक्री की तो खुदा ने उनके आमाल के सबब उनको भूख और ख़ौफ़ का लिबास पहना कर (नाशुक्री का) मजा चखा दिया (११२) और उनके पास उन्हीं में से एक पैग़म्बर आया तो उन्होंने उसको झुठलाया सो उनको अजाब ने आ पकड़ा, और वह जालिम थे (११३) पस खुदा ने जो तुमको हलाल तैय्यब रिज़्क़ दिया है उसे खाओ और अल्लाह की नैयमतों का शुक्र करो, और उसी की इबादत करते रहो (११४) उसने तुम पर मुरदार और लहू और सूर का गोश्त हराम कर दिया है और जिस चीज पर खुदा के सिवा किसी और का नाम पुकारा जाये (उसको भी) हाँ ! अगर कोई नाचार हो जाये तो बशर्ते कि गुनाह करने वाला न हो और न हद से निकलने वाला, तो खुदा बख्शने वाला मेहरबान है (११५) और यूंही झूठ जो तुम्हारी जबान पर आ जाये मत कह दिया करो कि यह हलाल है और यह हराम है कि ख़ुदा पर झूठ बोहतान बान्धने लगो, जो लोग ख़ुदा पर झूठ बोहतान बान्धते हैं उनका भला नहीं होगा (११६) झूठ का फ़ायदा तो थोड़ा सा है, मगर (उसके बदले) उनको अजाबे अलीम बहुत होगा (११७) और जो चीज़ हम तुम को पहले बयान कर चुके हैं, वह हमने यहूदियों पर हराम कर दी थी, और हमने उन पर कुछ जुल्म नहीं किया बल्कि वही अपने

आप पर जुल्म किया करते थे (११८) फिर जिन लोगों ने नादानी से बुरा काम किया, उसके बाद तौबा की और नेकूकार हो गए तो तुम्हारा पवर्रदिगार (उनको) तौबा करने और नेकूकार हो जाने के बाद उनको बख्शने वाला और (उन पर) रहमत करने वाला है (११९)—रुकू १५

बेशक इब्राहीम (लोगों के) इमाम (और) खुदा के फ़रमाँबरदार थे जो एक तरफ़ के हो रहे थे और मुश्रिकों में से न थे (१२०) उसकी नैयमतों के शुक्र गुजार थे, खुदा ने उनको बरगजीदा किया था और (अपनी) सीधी राह पर चलाया था (१२१) और हमने उनको दुनिया में भी खूबी दी थी और वह आख़िरत में भी नेक लोगों में होंगे (१२२) फिर हमने तुम्हारी तरफ़ वही भेजी कि दीने इब्राहीम की पैरवी अख्तियार करो, जो एक तरफ़ के हो रहे थे और मुश्रिकों में से न थे (१२३) हफ़्ते का दिन तो उन्हीं लोगों के लिये मुक़र्रर किया गया था, जिन्होंने उसमें इख्तिलाफ़ किया और तुम्हारा पवर्रदिगार क़यामत के दिन उन में इन बातों का फ़ैसला कर देगा, जिन में वह इख्तिलाफ़ करते थे (१२४) (ऐ पैग़म्बर) लोगों को दानिश और नेक नसीहत से अपने पवर्रदिगार के रस्ते की तरफ बुलाओ और बहुत ही अच्छे तरीक़ से उनसे मुनाज़रा करो, जो उसके रस्ते से भटक गया, तुम्हारा पवर्रदिगार उसे भी ख़ूब जानता है और जो रस्ते पर चलने वाले हैं उन से भी ख़ूब वाक़िफ़ है (१२५) और अगर तुम उनको तकलीफ़ देनी चाहो तो उतनी ही दो, जितनी तक-

लीफ़ तुमको उनसे पहुँची और अगर सब्र करो तो वह सब्र करने वालों के लिये बहुत अच्छा है (१२६) और सब्र ही करो और तुम्हारा सब्र भी ख़ुदा ही की मदद से है और उनके बारे में ग़म न करो, और जो यह वद अन्देशी करते हैं, उनसे तंग दिल न हो (१२७) कुछ शक नहीं कि जो परहेगज़ार हैं और नेकूकार हैं, ख़ुदा उनका मददगार है (१२८)—रुकू १६

१५ वाँ पारा—सुब्हानलल्ज़ो

१७—सूर ए बनी इसराईल

सूर ए बनी इसराईल मक्के में उतरी, इसमें १११ आयतें और १२ रुकू हैं

शुरु ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

वह (ज़ात) पाक है, जो एक रात अपने बन्दे को मसजिदुल-हराम (यानी ख़ान-ऐ-काबा) से मसजिदे अक्सा (यानी बैतुल मुक़द्दस) तक जिस के गिर्दा गिर्द हमने बरकतें रखी हैं, ले गया, ताकि हम उसे अपनी (क़ुदरत की) निशानियाँ दिखायें, बेशक वह सुनने वाला (और) देखने वाला है (१) और हम ने मूसा को किताब इनायत की थी और उस को बनी इसराईल

के लिये रेहनुमा मुक़र्रर किया था, कि मेरे सिवा किसी को कारसाज़ न ठैहराना (२) ऐ उन लोगों की औलाद जिन को हम ने नूह के साथ (कश्ती में) सवार किया था, बेशक नूह (हमारे) शुक्रगुज़ार बन्दे थे (३) और हम ने किताब में बनी इसराईल से कह दिया था, कि तुम ज़मीन में दो मर्तबा फ़िसाद मचाओगे और बड़ी सरकशी करोगे (४) पस, जब पहले वायदे का वक्त आया तो हम ने अपने सख्त लड़ाई लड़ने वाले बन्दे तुम पर मुसल्लत कर दिये, और वह शहरों के अन्दर फैल गये और वह वायदा पूरा होकर रहा (५) फिर हमने दूसरी बार तुम को उन पर ग़लबा दिया, और माल और बेटों से तुम्हारी मदद की और तुम को जमायते कसीर बना दिया (६) अगर तुम नेकूकारी करोगे तो अपनी जानों के लिये करोगे और अगर आमाले बद करोगे तो (उन का) वबाल भी तुम्हारी ही जानों पर होगा, फिर जब दूसरे वायदे का वक्त आया (तो हम ने फिर अपने बन्दे भेजे) ताकि तुम्हारे चेहरों को बिगाड़ दें और जिस तरह पहली दफ़ा मसजिद (बैतुल मुक़द्दस) में दाखिल हो गये थे, उसी तरह फिर उसमें दाखिल हो जायें, और जिस चीज़ पर ग़लबा पायें उसे तबाह कर दें (७)* उमीद है

---

*आयत ७:—कहते हैं कि इन दोनों खराबियों के बीच २०० बरस का तफ़ावुत था, जब हज़रत सुलेमान नबी की औलाद बैतुल मुक़द्दस में बहुत दौलतमन्द हुई और खुदा ने उन्हें नैयामतें बहुत दीं, तब उन्होंने ज़ुल्म और गुनाह और तकब्बुरी शुरु की, उस वक्त उन में अंबिया पैग़म्बर थे, उन्होंने बहुतेरा समझाया कि यह पहला वायदा है

कि तुम्हारा पर्वरदिगार तुम पर रहम करे, और अगर तुम फिर नहीं (हरकतें) करोगे तो हम भी वही (पहला सा सलूक) करेंगे, और हम ने जहन्नुम को काफ़िरों के लिये क़ैदखाना बना रखा है (८) यह क़ुरान वह रस्ता दिखाना है, जो सब से सीधा है और मोमिनों को जो नेक अमल करते हैं, बशारत देता है कि उन के लिये अजरे अज़ीम है (९) और यह भी (बताता है) कि जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उन के लिये हम ने दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है (१०)— रुकू—१

और इन्सान जिस तरह (जल्दी से) भलाई माँगता है उसी तरह बुराई माँगता है और इन्सान जल्दबाज़ (पैदा हुआ) है (११) और हम ने दिन और रात को दो निशानियाँ

तो तौरात में ख़ुदा ने फ़रमाया था, खबरदार रहो और नाफ़रमानी न करो ख़ुदा की, उन्होंने कहा हज़रत अर्मिया का न माना तब ख़ुदा ने वाबुल के शहर से बख़्त क़सर बादशाह को भेजा उस ने आकर बैतुल मुक़द्दस के सरदारों को लूटा और इमारत गिरा फिलफ़ौर वीरान किया और सत्तर हज़ार आदमियों को क़ैद कर के ले गया फिर ख़ुदा ने सबब किया वह शहर उस से ज़्यादा आबाद हुआ और मालो दौलत पहले से ज़्यादा ख़ुदा ने दी, बनी इसराईल लगे ऐश करने, दो सौ बरस तक इसी तरह रहे फिर ख़ुदा की नाफ़रमानी करने लगे, यहाँ तक कि हज़रत यैहिया को शहीद किया और हज़रत ईसा को शहीद करने की फ़िक्र में हुए तब फिर ख़ुदा ने उन के अज़ाब करने के वास्ते तस्तूस रूम बादशाह को भेजा, उसने आन कर फिर वैसा ही हाल किया यानी लूटा और क़त्ल किया और इमारत गिराई और वीरान किया—

बनाया है रात की निशानी को तारीक बनाया और दिन की निशानी को रोशन, ताकि तुम अपने पर्वरदिगार का फ़ज़ल (यानी) रोज़ी तलाश करो और बरसों का शुमार और हिसाब जानो, और हमने हर चीज़ की (बख़ूबी) तफ़सील कर दी है (१२) और हम ने हर इन्सान के आमाल को (ब सूरते किताब) उसके गले में लटका दिया है और क़यामत के रोज़ (वह) किताब उसे निकाल दिखायेंगे, जिसे वह खुला हुआ देखेगा (१३) (कहा जायेगा कि) अपनी किताब पढ़ ले, तू आज अपना आप ही मुहाफ़िज़ काफ़ी है (१४) जो शख़्स हिदायत अख़्तियार करता है तो अपने लिये करता है; और जो गुमराह होता है तो गुमराही का ज़रर भी उसी को होगा, और कोई शख़्स दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा, और जब तक हम पैग़म्बर न भेज लें, अज़ाब नहीं दिया करते (१५) और जब हमारा इरादा किसी बस्ती के हलाक करने का हुआ तो वहाँ के आसूदा लोगों को (ख़्वाहिश पर) मामूर कर दिया तो वह नाफ़रमानियाँ करते रहे, फिर उस पर (अज़ाब) का हुक्म साबित हो गया, और हम ने उसे हलाक कर डाला (१६) और हम ने नूह के बाद बहुत सी उम्मतों को हलाक कर डाला, और तुम्हारा पर्वरदिगार अपने बन्दों के गुनाहों को जानने और देखने वाला काफ़ी है (१७) जो शख़्स दुनियाँ की (आसूदगी का) ख़्वाहीशमन्द हो तो हम उस में से जिसे चाहते हैं और जितना चाहते हैं जल्द दे देते हैं, फिर उस के लिये जहन्नुम को (ठिकाना) मुक़र्रर कर रखा है जिस में वह नफ़ीन सुन कर और (दर्गाहे ख़ुदा से)

रान्दा हो कर दाख़िल होगा (१८) और जो शख़्स आख़िरत का ख़्वास्तगार हो और उस में इतनी कोशिश करे जितनी उसे लायक़ है, और वह मोमिन भी हो तो ऐसे ही लोगों की कोशिश ठिकाने लगती है (१९) हम उन को और उन के सब को तुम्हारे पर्वरदिगार से बख़्शिश से मदद देते हैं और तुम्हारे पर्वरदिगार की बख़्शिश (किसी से) रुकी हुई नहीं (२०) देखो हम ने किस तरह बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत बख़्शी है और आख़िरत दर्जों में (दुनियाँ से) बहुत बरतर और बरतरी में कहीं बढ़ कर हैं (२१) और ख़ुदा के साथ कोई और माबूद न बनाना कि मलामतें सुन कर और बेकस हो कर बैठे रह जाओगे (२२)-रुकू—२

और तुम्हारे पर्वरदिगार ने इर्शाद फ़रमाया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो और माँ बाप के साथ भलाई करते रहो, अगर उन में से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जायें तो उन को उफ़ तक न कहना और न उन्हें झिड़कना, और (उन से) बात अदब के साथ करना (२३) और इज्ज़ो न्याज़ से उन के आगे झुके रहो, और उन के हक़ में दुआ करो कि ऐ पर्वरदिगार ! जैसा उन्होंने मुझे बचपन में (शफ़क़त से) परवरिश किया है कि तू भी उन (के हाल) पर रहमत फ़रमा (२४) जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, तुम्हारा पर्वरदिगार उस से बख़ूबी वाक़िफ़ है, अगर तुम नेक होगे तो वह रुजू लाने वालों को बख़्श देने वाला है (२५) और रिश्तेदारों

और मुसाफ़िरों और मोहताजों को उनका हक़ अदा करो और फ़जूल खर्ची से माल न उड़ाओ (२६) और फ़जूल ख़र्ची करने वाले तो शैतान के भाई हैं, और शैतान अपने पर्वरदिगार की नैयमतों का कुफ़रान करने वाला (यानी ना शुक्रा) है (२७) और अगर तुम अपने पर्वरदिगार की रहमत (यानी फ़राख़दस्ती) के इन्तज़ार में, जिस की तुम्हीद उमीद हो उन (तहक़ीक़) की तरफ़ तवज्जोह न कर सको, तो उन से नरमी से बात कह दिया करो (२८) और अपने हाथ को न तो गर्दन से बन्धा हुआ (यानी बहुत तंग) कर लो कि किसी को कुछ दो ही नहीं, और न बिल्कुल खोल ही दो (कि सभी कुछ दे डालो, और अन्जाम यह हो) कि मलामत ज़दा और दरमान्दा होकर बैठ जाओ (२९) बेशक तुम्हारा पर्वरदिगार जिस की रोज़ी चाहता है फ़राख़ कर देता है और (जिस की रोज़ी चाहता है) तग कर देता है वह अपने बन्दों को देख रहा है और उन से ख़बर-दार है (३०)—रुकू—३

और अपनी औलाद को मुफ़्लिसी के ख़ौफ़ से क़त्ल न करना (क्योंकि) उनको और तुमको हम ही रिज़्क देते हैं, कुछ शक नहीं कि उन का मार डालना बड़ा सख़्त गुनाह है (३१) और ज़िना के पास भी न जाना कि वह बेहयाई और बुरी राह है (३२) और जिस जानदार का मारना ख़ुदा ने हराम किया है, उसे क़त्ल न करना मगर जायज़तौर पर (यानी ब फ़ितव-ए शरीयत) और जो शख़्स ज़ुल्म से क़त्ल किया जाये. हमने उसके

वारिस का अख्तियार दिया है (कि ज़ालिम क़ातिल से बदलाले) तो उसको चाहिये कि क़त्ल (के क़सास) में ज़्यादती न करें कि वह मन्सूरो फ़तैहयाब है (३३) और यतीम के माल के पास भी न फटकना, मगर ऐसे तरीक़ से कि बहुत बेहतर हो, यहाँ तक कि वह जवानी को पहुंच जाये और एहद को पूरा करो कि एहद के बारे में ज़रूर पुर्सिश होगी (३४) और जब (कोई चाज़) नाप कर देने लगो, तो पैमाना पूरा भरा करो और जब तोल कर दो तो (तराज़ू) सीधी रख कर तोला करो, यह बहुत अच्छी बात और अन्जाम के लिहाज़ से भी बहुत बेहतर है (३५) और (ऐ बन्दे जिस चोज़ का तुझे इल्म नहीं, उसके पीछे न पड़ कि कान और आँख और दिल, इन सब (जवारेह) से ज़रूर बाज़ पुर्स होगी (३६) और ज़मीन पर अकड़ कर (और तन कर) मत चल, कि तू ज़मीन को फ़ाड़ तो नहीं डालेगा और न लम्बा होकर पहाड़ों की चोटी तक पहुँच जायेगा (३७) इन सब (आदतों) को बुराई तेरे पवर्रदिगार के नज़दीक बहुत ना-पसन्द है (३८) (ऐ पैग़म्बर) यह उन (हिदायतों) में से हैं जो ख़ुदा ने दानाई की बातें तुम्हारी तरफ़ वही की हैं और ख़ुदा के साथ कोई और माबूद न बनाना (ऐसा करने से) मलामत ज़दा और (दर्गाहे ख़ुदा से) रान्दा बना कर जहन्नुम में डाल दिये जाओगे (३९) (मुश्रिको) क्या तुम्हारे पवर्रदिगार ने तुमको तो लड़के दिये और ख़ुद फ़रिश्तों को बेटियाँ बनाया, कुछ शक नहीं कि (यह) तुम बड़ी (नामाकूल) बात करते हो (४०)—रुकू ४

और हमने इस क़ुरान में तरह तरह की बातें बयान की हैं ताकि लोग नसीहत पकड़ें मगर वह इससे और बिदक जाते हैं (४१) कह दो कि अगर ख़ुदा के साथ और माबूद होते जैसा कि यह कहते हैं तो वह ज़रूर (ख़ुदाये) मालिके अर्श की तरफ़ (लड़ने भिड़ने के लिये) रस्ता निकालते (४२, वह पाक है और जो कुछ यह बकवास करते हैं उस से (उसका रुत्बा) बहुत आली है (४३) सातो आस्मान और ज़मीन और जो लोग उन में हैं सब उसी की तस्बीह करते हैं और (मख़लूक़ात में से) कोई चीज़ नहीं, मगर उसकी तारीफ़ के साथ तस्बीह करते हैं लेकिन तुम उसकी तस्बीह को नहीं समझते बेशक वह बुर्दबार (और) गफ़्फ़ार है (४४) और जब तुम क़ुरान पढ़ा करते हो तो हम तुम में और उन लोगों में जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते हिजाब पर हिजाब कर देते हैं (४५) और उनके दिलों पर पर्दा डाल देते हैं कि उसे समझ न सकें और उनके कानों में सक़ल पैदा कर देते हैं और जब तुम क़ुरान में अपने पवर्रदिगारे यकता का ज़िक्र करते हो तो वह बिदक जाते और पीठ फेर कर चल देते हैं (४६' यह लोग जब तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं तो जिस नीयत से यह सुनते हैं हम उसे ख़ूब जानते हैं, और जब यह सरगोशियां करते हैं (यानी) जब ज़ालिम कहते हैं तो तुम एक ऐसे शख़्स की पैरवी करते हो, जिस पर जादू किया गया है (४७) देखो उन्होंने, किस किस तरह की तुम्हारे बारे में बातें बनाई हैं, सो यह गुमराह हो रहे हैं और रस्ता नहीं पा सकते

(४८) और कहते हैं कि जब हम मर कर (बोसीदा) हड्डियाँ और चूर चूर हो जायेंगे तो क्या अज़ सरे नौ पैदा होकर उठेंगे (४९) कह दो कि (ख्वाह तुम) पत्थर हो जाओ या लोहा (५०) या कोई और चीज़ तुम्हारे नज़दीक (पत्थर और लोहे से भी) बड़ी (सख्त) हो (झट कहेंगे) कि (भला) हमें दोबारा कौन जिलायेगा ? कह दो कि वही जिसने तुमको पहली बार पैदा किया, तो (ताज्जुब से) तुम्हारे आगे सर हिलायेंगे और पूछेंगे कि ऐसा कब होगा ? कह दो उमीद है कि जल्द होगा (५१) जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तो तुम उसकी तारीफ़ के साथ जवाब दोगे और ख्याल करोगे कि तुम (दुनिया में) बहुत कम (मुद्दत) रहे (५२)—रुकू—५

और मेरे बन्दों से कह दो कि (लोगों से) ऐसी बातें कहा करें जो बहुत पसन्दीदा हों, क्यों कि शैतान (बुरी बातों से) उन में फ़िसाद डलवा देता है, कुछ शक नहीं कि शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है (५३) तुम्हारा पवर्रदिगार तुम से खूब वाक़िफ़ है, अगर चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर चाहे तो तुम्हें अज़ाब दे और हमने तुमको उन पर दारोग़ा (बना कर) नहीं भेजा (५४) और जो लोग आस्मानों और ज़मीन में हैं तुम्हारा पवर्रदिगार उनसे ख़ूब वाक़िफ़ है, और हमने बाज़ पैग़म्बरों को बाज़ पर फ़ज़ीलत बख्शी और दाऊद को ज़बूर इनायत की (५५) कहो कि (मुश्रिको) जिन लोगों की निस्बत तुम्हें (माबूद होने का) गुमान है उनको बुला देखो वह तुम से तकलीफ़ के दूर

करने या उसको बदल देने का कुछ भी अख़्तियार नहीं रखते (५६) यह लोग जिन को (ख़ुदा के सिवा) पुकारते हैं वह ख़ुद अपने पवर्रदिगार के हाँ जरिय-ऐ (तक़र्रुब) तलाश करते रहते हैं कि कौन उन में (ख़ुदा का) ज्यादा मुक़र्रब (होता) है और उसकी रहमत के उमीदवार रहते हैं और उसके अजाब से ख़ौफ़ रखते हैं, बेशक तुम्हारे पवर्रदिगार का अजाब डरने की चीज है (५७) और (कुफ़्र करने वालों की) कोई बस्ती नहीं मगर क़याामत के दिन से पहले हम उसे हलाक कर देंगे या सख़्त अजाब से मौअज्जब करेंगे, यह किताब (यानी तक़दीर) में लिखा जा चुका है (५८) और हमने निशानियां भेजनी इस लिये मौक़ूफ़ कर दीं, कि अगले लोगों ने उस की तकजीब की थी, और हमने समूद को ऊन्टनी (नबव्वते सालेह की खुली) निशानी दी, तो उन्होने उस पर जुल्म किया और हम जो निशानियां भेजा करते हैं तो डराने को (५९) जब हमने तुम से कहा कि तुम्हारा पवर्रदिगार लोगों को अहाता किये हुए है और जो नुमाइश हमने तुम्हें दिखाई उसको लोगों के लिये आजमाइश किया और इस तरह (थोहरा के) दरख़्त को जिस पर क़ुरान में लानत की गई है और हम उन्हें डराते हैं तो उनको इस से (बड़ी) सख़्त सरकशी पैदा हुई है (६०)—रुकू ६

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो, तो सबने सजदा किया, मगर इब्लीस ने न किया, बोला कि मैं

ऐसे शख़्स को सजदा करूं जिसको तूने मिट्टी से पैदा किया है

(६१) और अज राहे तन्ज) कहने लगा कि देख तो यही है वह जिसे तूने मुझ पर फ़जीलत दी है अगर तू मुझको क़यामत के दिन तक की मोहलतें दे तो मैं थोड़े शख्सों के सिवा (उसकी) तमाम औलाद की जड़ काटता रहूंगा (६२) ख़ुदा ने फ़रमाया (यहां से) चला जा, जो शख्स इन में से तेरी पैरवी करेगा तो तुम सबकी जगह जहन्नुम हैं (और वह) पूरी सजा (है) (६३) और इन में से जिस को बहका सके अपनी आवाज से बहकाता रहे, और इन पर अपने सवारों और प्यादों को चढ़ा कर लाता वह और उनके माल और औलाद में शरीक होता रहे और इन से वायदा करता रहे, और शैतान जो वायदे इनसे करता है, सब धोखा है (६४) जो मेरे (मुख़्लिस) बन्दे हैं उन पर तेरा कुछ ज़ोर नहीं, और ऐ पैग़म्बर तुम्हारा पर्वरदिगार कारसाज़ काफ़ी है (६५) तुम्हारा पर्वरदिगार वह है जो तुम्हारे लिये दरिया में कश्तियाँ चलाता है ताकि तुम उसके फ़ज़ल से (रोज़ी) तलाश करो, बेशक वह तुम पर मेहरबान है (६६) और जब तुम को दरिया में तकलीफ़ पहुंचती है (यानी डूबने का खौफ़ होता है) तो जिनको तुम पुकारा करते हो, सब उस (पर्वरदिगार) के सिवा गुम हो जाते है, फिर जब वह तुमको डूबने से बचा कर खुशकी की तरफ़ ले जाता है तो तुम मूंह फेर लेते हो, और इन्सान है ही ना शुक्रा (६७) क्या तुम (इससे) बे खौफ़ हो कि ख़ुदा तुम्हे ख़ुश्की की तरफ़ (ले जाकर ज़मीन में) धंसा दे या तुम पर संगरेज़ों की भरी हुई आन्धी चला दे, फिर तुम अपना कोई निगैहबान न पाओ (६८) या (इससे) बे खौफ़ होकर कि

तुम को दूसरी दफ़ा दरिया में ले जाये, फिर तुम पर तेज हवा चलाये और तुम्हारे कुफ्र के सबब तुम्हें डबो दे, फिर तुम उस ग़र्क़ के सबब अपने लिये कोई हमारा पीछा करने वाला न पाओ (६९) और हमने बनी आदम को इज़्ज़त बख़्शी और उनको जंगल और दरिया में सवारी दी और पाकीज़ा रोज़ी अता की और अपनी बहुत सी मखलूक़ात पर फ़ज़ीलत दी (७०)—रुकू ७

जिस दिन हम सब लोगों को उनके पेशवाओं के साथ बुलायेंगे तो जिनके (आमाल) की किताब उनके दाहिने हाथ में दी जायेगी वह अपनी किताब को (खुश हो होकर) पढ़ेंगे और उन पर धागे के बराबर भी जुल्म न होगा (७१) और जो शख़्स इस (दुनियां) में अन्धा हो वह आखिरत में भी अन्धा होगा और (नजात) के रस्ते से बहुत दूर (७२) और ऐ पैग़म्बर जो वही हमने तुम्हारी तरफ़ भेजी है, क़रीब था कि यह (काफ़िर) लोग तुमको उससे भुला दें ताकि तुम उसके सिवा और बातें हमारी निस्बत बना लो, और उस वक्त वह तुमको दोस्त बना लेते (७३) अगर हम तुमको साबित क़दम न रहने देते तो तुम किसी क़दर उनकी तरफ़ माईल होने ही लगे थे (७४) उस वक्त हम तुमको जिन्दगी में भी (अजाब का) दूना और मरने पर भी दूना अजाब चखाते, फिर तुम हमारे मुक़ाबले में किसी को अपना मददगार न पाते (७५) और क़रीब था कि यह लोग तुम्हें जमीन (मक्का) से फुस्ला दें, ताकि तुम्हें वहां से जलावतन कर दें, और उस वक्त तुम्हारे पीछे यह भी न रहते मगर कम (७६) जो पैग़म्बर

हमने तुम से पहले भेजे थे उनका (और उनके बारे में हमारा) यही तरीक़ रहा है कि तुम हमारे तरीक़ में तग़य्युर तबद्दुल न पाओगे (७७)—रुकू ८

(ऐ मोहम्मद) सूरज के ढलने से रात के अन्धेरे तक (जोहर, असर, मग़रिब, अशा की) नमाज़ें और सुबह को क़ुरान पढ़ा करो, क्योंकि सुब्ह के वक्त क़ुरान का पढ़ना, मूजिब हुज़ूर (मलायका) है (७८) और बाज़ हिस्से शब में बेदार हुआ करो (और तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा करो) यह (शब खेज़ी) तुम्हारे लिये (सबबे) ज़्यादते (सवाब और नमाज़े तहज्जुद तुम को नुफ्ल) है, क़रीब है कि खुदा तुमको मक़ामे मेहमूद में दाखिल करे (७९) और कहो कि ऐ पर्वरदिगार मुझे (मदीने में) अच्छी तरह दाखिल कीजियो और (मक्के से) अच्छी तरह निकालियो और अपने हां से ज़ोरो क़ुव्वत को मेरा मददगार बनाईयो (८०) और कह दो कि हक़ आ गया और बातिल नाबूद हो गया, बेशक बातिल नाबूद होने वाला है (८१) और हम क़ुरान (के ज़रिये) से वह चीज़ नाज़िल करते हैं जो मोमिनो के लिये शिफ़ा और रहमत है और ज़ालिमों के हक़ में तो उससे नुक़सान ही बढ़ता है (८२) और जब हम इन्सान को नैयमत बख्शते हैं तो रुगर्दा हो जाता है और पहलू फेर लेता है और जब उसे सख्ती पहुँचती है तो ना उम्मीद हो जाता है (८३) कह दो कि हर शख्स अपने तरीक़ के मुताबिक अमल करता है, सो तुम्हारा पर्वर-दिगार उस शख्स से खूब वाक़िफ़ है जो सबसे ज़्यादा सीधे रस्ते पर है (८४)—रुकू ९

और तुम से रुह के बारे में सवाल करते हैं, कह दो कि वह मेरे पर्वरदिगार की एक शान है, और तुम लोगों को (बहुत ही कम) इल्म दिया गया है (८५) और अगर हम चाहें तो जो (किताब) हम तुम्हारी तरफ़ भेजते हैं उसे (मेहव कर दें, फिर तुम उस के लिये हमारे मुक़ाबले में किसी को मददगार न पाओगे (८६) मगर उसका क़ायम (रहना) तुम्हारे पर्वरदिगार की रहमत है, कुछ शक नहीं कि तुम पर उसका बड़ा फ़ज़ल है (८७) कह दो कि अगर इन्सान और जिन इस बात पर मुजतमा हों कि इस क़ुरान जैसा बना लायें तो इस जैसा न ला सकें, अगरचे वह एक दूसरे के मददगार हों (८८) और हमने इस क़ुरान में सब बातें तरह तरह से बयान कर दी हैं, मगर अक्सर लोगों ने इन्कार करने के सिवा क़बूल न किया (८९) और कहने लगे कि हम तुम पर ईमान नहीं लायेंगे जब तक कि (अजीबो ग़रीब बातें न दिखाओ, यानी या तो) हमारे लिये ज़मीन में से चश्मा जारी कर दो (९०) या तुम्हारा खजूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो और उसके बीच में नहरें बहा निकालो (९१) या जैसा तुम कहा करते हो हम पर आस्मान के टुकड़े ला गिराओ, या ख़ुदा और फ़रिश्तों को हमारे सामने ले आओ (९२, या तुम्हारा सोने का घर हो या तुम आस्मान पर चढ़ जाओ, और हम तुम्हारे चढ़ने को भी नहीं मानेंगे जब तक कि कोई किताब न लाओ जिसे हम पढ़ भी लें, कह दो कि मेरा पर्वरदिगार पाक है मैं तो सिर्फ़ एक पैग़ाम पहुँचाने वाला इन्सान हूं (९३)—

रुकू- -१०—

और जब लोगों के पास हिदायत आ गई तो उनको ईमान लाने से इस के सिवा कोई चीज़ मानैय नहीं हुई कि कहने लगे कि ख़ुदा ने आदमी को पैग़म्बर कर के भेजा है (९४) कह दो कि अगर ज़मीन में फ़रिश्ते होते (कि उसमें) चलते फिरते और आराम करते (यानी बस्ते) तो हम उनके पास फ़रिश्ते को पैग़म्बर बना कर भेजते (९५) कह दो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान ख़ुदा ही गवाह काफ़ी है. वही अपने बन्दों से ख़बरदार (और) उनको देखने वाला है (९६) और जिस शख़्स को ख़ुदा हिदायत दे वही हिदायत याब है, और जिनको गुमराह करे तो तुम ख़ुदा के सिवा उनके रफ़ीक़ नहीं पाओगे, और हम उनको क़यामत के दिन औन्धे मूंह अन्धे, बहरे और गूंगे (बना कर) उठायेंगे और उनका ठिकाना दोज़ख़ है, जब (उसकी) आग बुझने को होगी, तो हम उनको अज़ाब देने के लिये और भड़का देंगे (९७) यह उनकी सज़ा है, इसलिये कि वह हमारी आयतों से कुफ़्र करते थे और कहते थे कि जब हम (मर कर बोसीदा) हड्डियां और रेज़ा रेज़ा हो जायेंगे तो क्या अज़ सरे नौ पैदा किये जायेंगे (९८) क्या उन्होंने नहीं देखा, कि ख़ुदा, जिसने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया है, इस बात पर क़ादिर है कि उन जैसे (लोग) पैदा कर दे, और उसने उनके लिये एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया है जिसमें कुछ शक नहीं, तो ज़ालिमों ने इन्कार करने के सिवा (उसे) क़बूल न किया (९९) कह दो कि अगर मेरे पर्वरदिगार की रहमत के ख़ज़ाने तुम्हारे हाथ में होते, तो तुम

खर्च हो जाने के खौफ से (उनको) बन्द कर रखते और इन्सान दिल का बहुत तंग है (१००)—रुकू ११

और हम ने मूसा को नो खुली निशानियाँ दीं तो बनी इसराईल से दरयाफ़्त कर लो, कि जब वह उन के पास आये, तो फिरऔन ने उन से कहा, कि मूसा मैं ख्याल करता हूं कि तुम पर जादू किया गया है (१०१)* उन्होंने कहा कि तुम यह जानते हो कि आस्मानों और ज़मीन के पर्वरदिगार के सिवा उन को किसी ने नाज़िल नहीं किया, और वह भी तुम (लोगों के) समझाने को, और ऐ फ़िरऔन ! मैं ख्याल करता हूं कि तुम हलाक हो जाओगे (१०२) तो उस ने चाहा कि उन को सर-ज़मीने (मिश्र) से निकाल दे, तो हम ने उस को और जो उस के साथ थे, सब को डबो दिया (१०३) और इस के बाद बनी इसराईल से कहा कि तुम इस मुल्क में रहो सहो, फिर जब आख़िरत का वायदा आ जायेगा तो हम तुम सब को जमा कर के ले आयेंगे (१०४) और हम ने क़ुरान को सच्चाई के साथ नाज़िल किया है, और वह सच्चाई के साथ नाज़िल हुआ, और (ऐ मोहम्मद) हम ने तुम को सिर्फ़ ख़ुशख़बरी देने वाला (और) डर सुनाने वाला बना कर भेजा है (१०५) और हम

*आयत १०१:—यानी ६ मौजजे और वह असा और यदे बैज़ा और टिड्डी का पैदा होना और ग़ायब होना और मैन्डक और तूफ़ान, और काफ़िरों का पानी लहू हो जाना, और क़हत और पत्थर से पानी निकलना और मन्नो सल्वा का आना—

ने क़ुरान को जुज़्व जुज़्व कर के नाज़िल किया है, ताकि तुम लोंगो को ठैहर ठैहर कर सुनाओ, और हमने इस को आहिस्ता आहिस्ता उतारा है (१०६) कह दो कि तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ (यह फ़ीनफ़्सा हक़ है) जिन लोगों को इस से पहले इल्म (किताब) दिया गया है, जब वह उन को पढ़ कर सुनाया जाता है तो वह ठोड़ियों के बल सजदे में गिर पड़ते हैं (१०७) और कहते हैं कि हमारा पर्वरदिगार का वायदा पूरा हो कर रहा (१०८) और वह ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं (और) रोते जाते हैं, और इस से उन को और ज़्यादा आजज़ी पैदा होती है (१०९) कह दो कि तुम (खुदा को) अल्लाह के नाम से पुकारो (या रेहमान के नाम से) जिस नाम से पुकारो, उसके सब नाम अच्छे है और नमाज़ न बलन्द आवाज़ से पढ़ो न आहिस्ता बल्कि उस के बीच का तरीक़ा अख़्तियार करो (११०) और कहो कि सब तारीफ़ ख़ुदा ही की है जिस ने न तो किसी को बेटा बनाया है और न उस की बादशाही में कोई शरीक है और न इस वज्हा से कि वह अजिज़ वा नातवाँ है कोई उस का मददगार है उस को बड़ा जान कर उस की बड़ाई करते रहो (१११) — रुकू — १२

१८—सूर-ऐ-कहफ़

यह सूरत मक्के में उतरी, और इसमें ११० आयतें और १२ रुकू हैं

शुरु ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है

सब तारीफ़ ख़ुदा ही को है जिस ने अपने बन्दे (मोहम्मद) पर (यह) किताब नाज़िल की, और उसमें किसी तरह की कजी और (पेचीदगी) न रखी (१) (बल्कि) सीधी (और सलीस उतारी) ताकि (लोगों को) अज़ाबे सख़्त से जो उस की तरफ़ (आने वाला) है डराये, और मोमिनों को जो नेक अमल करते हैं ख़ुशख़बरी सुनाये कि उन के लिये उन के कामों का नेक बदला (यानी बहिश्त) है (२) जिस में वह अबद-उल-आबाद रहेंगे (३) और उन लोगों को भी डराये जो कहते हैं कि ख़ुदा ने (किसी को) बेटा बना लिया है (४) उन को इस बात का कुछ भी इल्म नहीं और न उनके बाप दादा ही को था (यह) बड़ी सख़्त बात है जो उन के मूंह से निकलती है (और कुछ शक नहीं कि) यह जो कुछ कहते हैं, मेहज़ झूठ है (५)* (ऐ पैग़म्बर) अगर यह उस कलाम पर ईमान न लायें तो शायद

---

* आयत ५:—यह हज़रत मूसा और हज़रत ईसा की उम्मत के काफ़िर और मक्के के लोग कहते थे मक्के के लोग तो कहते थे कि फ़रिश्ते ख़ुदा की बेटियाँ हैं और हज़रत मूसा को हज़रत ईसा को कहते हैं कि ख़ुदा के बेटे हैं—

तुम उन के पीछे रन्ज कर के अपने तईं हलाक कर दोगे (६) जो चीज़ ज़मीन पर है हम ने उस को ज़मीन के लिये आराईश बनाया है ताकि लोगों की आज़माइश करें कि उनमें कौन अच्छे अमल करने वाला है (७) और जो चीज़ ज़मीन पर है, हम उस को (नाबूद कर के) बञ्जर मैदान कर देंगे (८) क्या तुम ख्याल करते हो कि ग़ार और लौह वाले हमारी निशानियों में से अजीब थे (९) जब वह जो इन ग़ारों में जा रहे तो कहने लगे कि ऐ हमारे पर्वरदिगार हम पर अपने हाँ से रहम नाज़िल फ़रमा और हमारे काम में दुरुस्ती (के सामान) मुहिया कर (१०) तो हम ने ग़ार से कई सालों तक उन के कानों पर (नींद का) पर्दा डाले रखा (यानी उन को सुलाये रखा) (११) फिर उन को जगा उठाया ताकि मालूम करें कि जितनी मुद्दत वह (ग़ार में) रहे, दोनों जमायतों से उस की मिक़दार ख़ूब याद है (१२)—रुकू—१

हम उन के हाल तुम से सही सही बयान करते हैं, वह कई जवान थे जो अपने पर्वरदिगार पर ईमान लाये थे और हम ने उन को और ज़्यादा हिदायत दी थी (१३) और उन के दिलों को मरबूत (यानी मज़बूत) कर दिया, जब वह (उठ) खड़े हुए तो कहने लगे कि हमारा पर्वरदिगार आस्मानों और जमीन का मालिक है, हम उस के सिवा किसी को माबूद (समझ कर) न पुकारेंगे (अगर ऐसा किया) तो उस वक्त हम ने बैईद अज़-अक़्ल बात कही (१४) इन हमारी क़ौम के लोगों ने उस के

सिवा और माबूद बना रखे हैं, भला यह इन (के ख़ुदा होने) पर कोई खुली दलील क्यों नहीं लाते, तो उस से ज़्यादा कौन ज़ालिम है जो ख़ुदा पर झूठ इफ़्तिरा करे (१५) और जब तुम ने इन (मुश्रिकों) से और जिन की यह ख़ुदा के सिवा इबादत करते हैं उन से कनारा कर लिया है, तो ग़ार में चल रहो, तुम्हारा पर्वरदिगार तुम्हारे लिये अपनी रहमत वसी कर देगा और तुम्हारे कामों में आसानी के सामान मुहिया करेगा (१६) और जब सूरज निकले तो तुम देखो कि (धूप) उन के ग़ार से दाहिनी तरफ़ सिमट जाये और जब ग़रुब हो तो उन से बाईं तरफ़ कतरा जाये, और वह उस के मैदान में थे, यह ख़ुदा की निशानियों में से हैं, जिस को ख़ुदा हिदाहत दे वह हिदायत-याब हैं और जिस को गुमराह करे तो तुम उस के लिये कोई दोस्त राह बताने वाला न पाओगे (१७)—रुकू—२

और तुम उन को ख़्याल करो कि जाग रहे हैं, हालाँकि वह सोते हैं, और हम उन को दायें और बायें करवट बदलते थे, और उन का कुत्ता चौखट पर दोनों हाथ फैलाये हुए था, अगर तुम उन को झाँक कर देखते तो पीठ फेर कर भाग जाते, और उन से देहशत में आ जाते (१८) और इसी तरह हम ने उन को उठाया, ताकि आपस में एक दूसरे से दरयाफ़्त करें, एक कहने वाले ने कहा कि तुम (यहाँ) कितनी मुद्दत रहे, उन्होंने कहा कि एक दिन या उस से भी कम, उन्होंने कहा कि जितनी

मुद्दत रहे हो, तुम्हारा पर्वरदिगार ही इस को ख़ूब जानता है,

तो अपने में से किसी को यह रुपया देकर शहर भेजो वह देखे कि नफ़ीस खाना कौन सा है, तो उस में से खाना ले आये, और आहिस्ता आहिस्ता जाये और तुम्हारा हाल किसी को न बताये (१६)❀ अगर वह तुम पर दस्तरस पा लेंगे तो तुम्हें संगसार कर देंगे या फिर अपने मज़हब में दाख़िल कर लेंगे और उस वक्त तुम कभी फ़लाह नहीं पाओगे (२०) और इसी तरह हम ने (लोगों को) उन (के हाल) से ख़बरदार कर दिया ताकि वह जानें कि ख़ुदा का वायदा सच्चा है, और यह कि क़यामत (जिस का वायदा किया जाता है) इस में कुछ शक नहीं, उस वक्त लोग उन के बारे में बाहम झगड़ने लगे, और कहने लगे कि उन (के ग़ार) पर इमारत बनाओ, उन का पर्वरदिगार उन (के हाल) से ख़ूब वाक़िफ़ है, जो लोग उन के मामले में ग़लबा रखते थे वह कहने लगे कि हम उन (के ग़ार) पर मसजिद बनायेंगे, (२१) बाज़ लोग अटकल पच्चू कहेंगे कि वह तीन थे (और) चौथा उन का कुत्ता था और (बाज़) कहेंगे कि वह पान्च थे और छठा उन का कुत्ता था, और (बाज़) कहेंगे कि वह सात थे और आठवाँ उन का कुत्ता था, कह दो कि मेरा पर्वरदिगार ही उन के शुमार से ख़ूब वाक़िफ़ है, उन को जानते भी हैं तो थोड़े ही लोग (जानते हैं) तो तुम उन (के मामले) में गुफ़्तगू न करना, मगर सरसरी सी गुफ़्तगू (और न उन के) बारे में उन में से किसी से कुछ दरयाफ़्त ही करना (२२) रुकू ३

और किसी काम की निस्बत न कहना कि मैं उसे कल करूंगा (२३) मगर इन्शा अल्लाह कह कर (यानी अगर ख़ुदा चाहे) तो (कर दूंगा) और जब ख़ुदा का नाम लेना भूल जाओ, तो याद आने पर ले लो और कह दो कि उमीद है कि मेरा पर्वरदिगार इस से भी ज़्यादा हिदायत की बातें बताये (२४)❋ और असहाबे कहफ़ अपने ग़ार में नौ ऊपर तीन सौ साल रहे (२५) कह दो कि जितनी मुद्दत वह रहे, उसे ख़ुदा ही ख़ूब जानता है, उसी को आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें (मालूम) हैं, वह क्या ख़ूब देखने वाला और क्या ख़ूब सुनने वाला है उस के सिवा उन का कोई (कारसाज़) नहीं, और न अपने हुक्म में किसी को शरीक करता है (२६) और अपने पर्वरदिगार की किताब जो तुम्हारे पास भेजी जाती है, पढ़ते रहा करो, उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं, और उस के सिवा तुम कहीं पनाह की जगह न पाओगे (२७) और जो

---

*आयत २४:—असहाबे कहफ़ का किस्सा: तारीख की किताबों में लिखा है कि हर किसी को खबर कहाँ हो सकती है काफ़िरों ने यहूद के सिखाने से हज़रत से पूछा आज़माने को, हज़रत ने वायदा किया कि कल बताऊँगा, इसी भरोसे पर कि जिब्राईल आवेंगे तो पूछ लूंगा, जिब्राईल न आये अठारह दिन तक, हज़रत ग़मगीन हुए आखिर यह क़िस्सा लेकर आये और नसीहत यह की कि अगली बात पर वायदा न कीजिये, बग़ैर इन्शा अल्लाह कहे, अगर एक वक्त भूल जावे तो फिर याद कर के कह लेवे, और फ़रमाया कि उमीद रख कि तेरा दर्जा अल्लाह इस से ज़्यादा करे ... भी न भूले

लोग सुब्हो शाम अपने पर्वरदिगार को पुकारते और उस की खुशनूदी के तालिब हैं, उस के साथ सब्र करते रहो, और तुम्हारी निगाहें उन में से (गुज़र कर) और तरफ़ न दौड़ें कि तुम आराईशे ज़िन्दगानिये दुनियां के ख्वास्तगार हो जाओ और जिस शख्स के दिल को, हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया है, और वह अपनी ख्वाहिश की पैरवी करता है, और उस का काम हद से बढ़ गया है, उस का कहा न मानना (२८) और कह दो कि (लोगो) यह क़ुरान तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से बरहक़ है, तो जो चाहे ईमान लाये और जो चाहे काफ़िर रहे, हम ने ज़ालिमों के लिये दोज़ख की आग तैयार कर रखी है, जिस की क़नातें उन को घेर रही होंगी, और अगर फ़रियाद करेंगे तो ऐसे खौलते हुए पानी से उन की दादरसी की जायेगी (जो) पिघले हुए ताँबे की तरह (गर्म होगा और जो) मूंहों को भून डालेगा, उन के पीने का पानी भी बुरा और आराम-गाह भी बुरी (२६) (और) जो ईमान लाये और काम भी नेक करते रहे तो हम नेक काम करने वालों का अजर ज़ाया नहीं करते (३०) ऐसे लोगों के लिये रहने के बाग़ हैं जिन में उन के (महलों के) नीचे नहरें बह रही हैं, उन को वहाँ सोने के कङ्गन पहनाये जायेंगे और वह बारीक दीबा और अतलस के सब्ज़ कपड़े पहना करेंगे (और) तख्तों पर तकिया लगा कर बैठा करेंगे (क्या) ख़ूब बदला और (क्या) ख़ूब आराम-गाह है (३१)—रुकू—४

और उन से दो शख्सों का हाल बयान करो तो जिन में से एक को हमने अंगूर के दो बाग़ (इनायत) किये थे और उन के गिर्दा गिर्द खजूरों के दरख़्त लगा दिये थे और उन के दर्मियान खेती पैदा कर दी थी (३२) दोनों बाग़ (कसरत से) फल लाते और उस (की पैदावार) में किसी तरह की कमी न होती और दोनों में हम ने एक नहर भी जारी कर रखी थी (३३) और (इस तरह) उस (शख्स) को (उन की) पैदावार (मिलती रहती थी) तो (एक दिन) जबकि वह अपने दोस्त से बातें कर रहा था कहने लगा, कि मैं तुम से मालो दौलत में भी ज़्यादा हूं और जत्थे (और जमायत) के लिहाज़ से भी ज़्यादा इज़्ज़त वाला हूं (३४) और (ऐसी शेखियों से) अपने हक़ में ज़ुल्म करता हुआ अपने बाग़ में दाखिल हुआ, कहने लगा कि मैं नहीं ख्याल करता कि यह बाग़ कभी तबाह हो (३५) और न ख्याल करता हूं कि क़यामत बर्पा हो और अगर मैं अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौटाया भी जाऊँ तो (यहाँ) जरुर इस से अच्छी जगह पाऊँगा (३६) तो उस का दोस्त जो उस से गुफ़्तगू कर रहा था, कहने लगा कि क्या तुम उस (ख़ुदा) से कुफ्र. करते हो जिस ने तुम को मिट्टी से पैदा किया, और फिर नुत्फ़े से तुम्हें पूरा मर्द बनाया (३७) मगर मैं तो यह कहता हूं कि ख़ुदा ही मेरा पर्वरदिगार है और मैं अपने पर्वरदिगार के साथ किसी को शरीक नहीं करता (३८) और (भला) जब तुम अपने बाग़ में दाखिल हुए तो तुम ने माशा अल्लाह

ला कुव्वत-इल्लाह बिल्लाह क्यों न कहा, अगर तुम मुझे मालो औलाद में अपने से कमतर देखते हो (३९) तो अजब नहीं कि मेरा पर्वरदिगार मुझे तुम्हारे बाग़ से बेहतर अता फ़रमाये और इस (तुम्हारे बाग़) पर आस्मान से आफ़त भेज दे तो वह साफ़ मैदान हो जाये (४०) या इस (नहर) का पानी गहरा हो जाये तो फिर तुम इसे न ला सको (४१) और उस के मेवों को अज़ाब ने आ घेरा और वह अपनी छत्रियों पर गिर कर रह गया, तो जो माल उस ने उस पर ख़र्च किया था उस पर (हसरत से) हाथ मलने लगा और कहने लगा कि काश मैं अपने पर्वरदिगार के साथ किसी को शरीक न बनाता (४२) (उस वक्त) ख़ुदा के सिवा कोई जमायत उस की मददगार न हुई और न वह बदला ले सका (४३) यहाँ (से साबित हुआ कि) हकूमत सब ख़ुदाये बरहक़ ही की है, उसी का सिला बेहतर और (उसी का) बदला अच्छा है (४४)— रुकू—५

और उस से दुनियाँ की ज़िन्दगी की मिसाल भी बयान कर दो (वह ऐसी है) जैसे पानी जिसे हम ने आस्मान से बरसाया तो उस के साथ ज़मीन की रोईदगी मिल गई, फिर वह चूरा चूरा हो गई कि हवायें उसे उड़ाती फिरती हैं, और ख़ुदा तो हर चीज़ पर कुदरत रखता है (४५) और बेटे तो दुनिया की ज़िन्दगी की (रौनक़ व) ज़ीनत हैं, और नेकियाँ जो बाक़ी रहने वाली हैं, वह सवाब के लिहाज़ से तुम्हारे पर्वरदिगार के हाँ बहुत अच्छी और उम्मीद के लिहाज़ से बहुत बेहतर हैं

(४६) और जिस दिन हम पहाड़ों को जलायेंगे और तुम ज़मीन को साफ़ मैदान देखोगे और उन (लोगों को) हम जमा कर लेंगे, तो उन में से किसी को भी नहीं छोड़ेंगे (४७) और सब तुम्हारे पर्वरदिगार के सामने सफ़ बान्धकर लाये जायेंगे (तो हम उन से कहेंगे) कि जिस तरह हम ने तुम को पहली बार पैदा किया था (उसी तरह आज) तुम हमारे सामने आये, लेकिन तुम ने तो यह ख़्याल कर रखा था कि हम ने तुम्हारे लिये (क़यामत का) कोई वक्त मुक़र्रर ही नहीं किया (४८) और (अमलों की) किताब (खोल कर) रखी जायेगी, तो तुम गुन्हेगारों को देखोगे कि जो कुछ उस में (लिखा) होगा, उस से डर रहे होंगे, और कहेंगे हाय शामत, यह कैसी किताब है कि न छोटी बात को छोड़ती है, न बड़ी को (कोई बात भी नहीं) मगर उसे लिख रखा है, और जो अमल किये हैं, सब को हाज़िर पायेंगे और तुम्हारा पर्वरदिगार किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा (४९) – रुकू—६

और जब हमने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सजदा करो, तो सबने सजदा किया, मगर इब्लीस (ने न किया) वह जिन्नात में से था, तो अपने पर्वरदिगार के हुक्म से बाहर हो गया, क्या तुम उस को और उसकी औलाद को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो, हालाँकि वह तुम्हारे दुश्मन हैं (और शैतान की दोस्ती) ज़ालिमों के लिये (ख़ुदा की दोस्ती का) बुरा बदल है

(५०) मैंने उनको न तो आस्मानों और ज़मीन के पैदा करते वक्त

बुलाया था, और न खुद उन को पैदा करने के वक्त, और मैं ऐसा न था कि गुमराह करने वालों को मददगार बनाता (५१) और जिस दिन खुदा फरमायेगा कि (अब) मेरे शरीकों को जिन की निस्बत तुम गुमाने (अलविहत) रखते थे बुलाओ तो वह उन को बुलायेंगे मगर वह उनको कुछ जवाब न देंगे और हम उनके बीच में एक हलाकत की जगह बना देंगे (५२) और गुन्हेगार लोग दोज़ख को देखेंगे तो यक़ीन कर लेंगे कि वह उस में पड़ने वाले हैं और उस से बचने का कोई रास्ता न पायेंगे (५३)— रुकू —७

और हमने इस क़ुरान में समझाने के लिये तरह तरह की मिसालें बयान फरमाई हैं, लेकिन इन्सान सब चीज़ों से बढ़ कर झगड़ालू है (५४) और लोगों के पास जब हिदायत आ गई तो उनको किस चीज ने मना किया, कि ईमान लायें और अपने पर्वरदिगार से बख्शिश मांगें, बजुज़ इस के कि (इस बात के मुन्तजिर हों कि) उन्हें भी पहलों का सा मामला पेश आये, या उन पर अजाब सामने आ मौजूद हो (५५) और हम जो पैग़म्बरों को भेजा करते हैं तो सिर्फ़ इस लिये कि (लोगों की खुदा की नैयमतों की) खुशखबरियाँ सुनायें और (अजाब से) डरायें, और जो काफ़िर हैं वह बातिल (की सनद) से झगड़ा करते हैं ताकि उससे हक़ को फुस्ला दें, और उन्होंने हमारी आयतों को और जिस चीज से उन्हें डराया जाता है हंसी बना लिया (५६) और उस से ज़ालिम कौन, जिस को उसके पर्वरदिगार के कलाम से

समझाया गया तो उसने उससे मूंह फेर लिया और जो आमाल वह आगे कर चुका उसको भूल गया, हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिये हैं कि उसे समझ न सकें और कानों में सक़ल (पैदा कर दिया है कि सुन न सकें) अगर तुम उन को रस्ते की तरफ़ बुलाओ तो कभी रस्ते पर नहीं आयेंगे (५७) और तुम्हारा पर्वरदिगार बख़्शने वाला साहिबे रहमत है, अगर वह उनकी करतूतों पर उनको पकड़ने लगे, तो उन पर झट अजाब भेज दे मगर उनके लिये एक वक्त (मुक़र्रर कर रखा है) कि उसके अज़ाब से कोई पनाह की जगह न पायेंगे (५८) और यह बस्तियां (जो वीरान पड़ी हैं) जब उन्होंने (कुफ़्र किया) तो हमने उनको तबाह कर दिया, और उनकी तबाही के लिये एक वक्त मुक़र्रर कर दिया था (५९)*—रुकू ८

और जब मूसा ने अपने शागिर्द से कहा कि जब तक मैं दो दरियाओं के मिलने की जगह न पहुंच जाऊं, हटने का नहीं,

---

क़िस्सा मूसा व ख़िज्र अलेहे अस्सलाम का(आयत ५९)—मूसा अपनी क़ौम में नसीहत फ़रमाते थे, एक शख़्स ने पूछा कि ऐ मूसा तुम से ज्यादा भी किसी को इल्म है, कहा, मुझको इल्म नहीं, यह बात तेहक़ीक़ थी पर अल्लाह की खुशी थी कि यूं कहते, कि मुझ से बन्दे अल्लाह के बहुत हैं सब की खबर उसी को है, तब वह आई. एक बन्दा है हमारा, दरिया के मिलाप पास, उसको ज्यादा इल्म है तुझ से, मूसा ने दुआ की कि मुझको उस की मुलाक़ात मैयस्सर हो, हुक्म हुआ कि एक मछली तल कर साथ ले लो तो जहां भी मछली गुम हो वह वहीं मिलेगा।

ख्वाह बरसों चलता रहूं (६०) जब उनके मिलने के मक़ाम पर पहुंचे तो अपनी मछली भूल गये तो उसने दरिया में सुरंग की तरह अपना रस्ता बना लिया (६१) जब आगे चले तो (मूसा ने) अपने शार्गिद से कहा कि हमारे लिये खाना लाओ, इस सफर से हमको बहुत तकान हो गई है (६२) (उसने) कहा कि भला आपने देखा कि जब हमने पत्थर के पास आराम किया था तो मैं मछली (वहीं) भूल गया और मुझे (आप से) इसका जिक्र करना शैतान ने भुला दिया, और उसने अजीब तरह से दरिया में अपना रस्ता लिया (६३) (मूसा ने) कहा, यही तो (वह मकाम) है जिसे हम तलाश करते थे तो वह अपने पाँव के निशान देखते देखते लौट गये (६४) (वहाँ) उन्होंने हमारे बन्दों में से एक बन्दा देखा, जिसको हमने अपने हाँ से रहमत (यानी नब्बत या नैयमते विलायत) दी थी और अपने पास से इल्म बख्शा था (६५) मूसा ने उनसे (जिनका नाम खिज्र था) कहा कि जो इल्म (खुदा की तरफ से) आपको सिखाया गया है, अगर आप उसमें से मुझे कुछ भलाई (की बातें) सिखायें तो मैं आपके साथ रहूं (६६) (खिज्र ने) कहा कि तुम मेरे साथ रह कर सब्र नहीं कर सकोगे (६७) और जिस बात की तुम्हें खबर ही नहीं उस पर सब्र कर भो क्यों कर सकते हो (६८) (मूसा ने) कहा कि खुदा ने चाहा तो आप मुझे साबिर पाईयेगा और मैं आपके इर्शाद के खिलाफ नहीं करूंगा (६९) (खिज्र ने) कहा कि अगर तुम मेरे साथ रहना चाहो तो (शर्त यह है) मुझ से कोई बात

न पूछना, जब तक मैं ख़ुद उसका जिक्र तुम से न करूं (७०)—रुकू—९

तो वह दोनों चल पड़े, यहां तक कि जब कश्ती में सवार हुए तो ख़िज्र ने कश्ती को फाड़ डाला (मूसा ने) कहा, क्या आपने इसको इस लिये फाड़ डाला है कि सवारों को ग़र्क़ कर दें, यह तो आपने बड़ी (अजीब) बात की (७१) (ख़िज्र ने) कहा क्या मैंने नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे (७२) (मूसा ने) कहा कि जो भूल मुझ से हुई, उस पर म्वाख़जा न कीजिये और मेरे मामले में मुझ पर मुश्किल न डालिये (७३) फिर दोनों चले यहाँ तक कि (रस्ते में) एक लड़का मिला तो (ख़िज्र ने) उसे मार डाला (मूसा ने) कहा, कि आपने एक बेगु-नाह शख़्स को (नाहक) बग़ैर क़सास के मार डाला, यह तो आपने बुरी बात की (७४)

—:०:—

सोलहवाँ पारा—क़ाल अलम अकल

(ख़िज्र ने) कहा, क्या मैंने नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकोगे (७५) उन्होंने कहा कि अगर मैं इसके बाद (फिर) कोई बात पूछूं (यानी ऐतराज करूं) तो मुझे अपने साथ न रखियेगा कि आप मेरी तरफ़ से (उज्र) के क़बूल करने में (ग़ायत) को पहुंच गये (७६) फिर दोनों चले, यहाँ तक कि एक गाँव वालों के पास पहुँचे और उनसे खाना तलब किया,

उन्होंने उनकी ज़ियाफ़त करने से इन्कार कर दिया, फिर उन्होंने वहां एक दीवार देखी जो (झुक कर) गिरा चाहती थी, ख़िज्र ने उसको सीधा कर दिया, मूसा ने कहा कि अगर आप चाहते तो उनसे (इसका) मुआविज़ा लेते (ताकि खाने का काम चलता (७७) ख़िज्र ने कहा कि अब मुझ में अलैहदगी (मगर) जिन बातों पर तुम सब्र न कर सके, मैं उनका तुम्हें भेद बताये देता हूं (७८) (कि वह जो) कश्ती (थी) ग़रीब लोगों की थी जो दरिया में मेहनत (कर के यानी कश्तियां चला कर गुज़ारा) करते थे और उनके सामने (की तरफ़ एक बादशाह था जो हर एक कश्ती को ज़बरदस्ती छीन लेता था, तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं (ताकि वह उसे ग़सब न कर सके) (७९) और वह जो लड़का था, उसके माँ बाप दोनों मोमिन थे, हमें अन्देशा हुआ कि वह (बड़ा होकर) जो बद किर्दार होता कहीं उनको सरकशी और कुफ़्र में न फंसा दे (८०) तो हमने चाहा कि उन का पर्वरदिगार उसकी जगह उनको (और) बच्चा अता फ़रमाये जो पाकनीयती और मोहब्बत में उस से बेहतर हो (८१) और जो दीवार थी, सो वह यतीम लड़कों की थी (जो) शहर में (रहते थे) और उसके नीचे उनका ख़ज़ाना (मदफ़ून) था, और उनका बाप एक नेक बख़्त आदमी था, तो तुम्हारे पर्वरदिगार ने चाहा कि वह अपनी जवानी को पहुंच जायें (फिर) अपना ख़ज़ाना निकालें, यह तुम्हारे पर्वरदिगार की मेहरबानी है, और यह काम मैंने अपनी तरफ़ से नहीं किये, यह उन बातों का राज़ है जिन पर तुम सब्र न कर सके (८२)—रुकू १०

और तुम से जुलक़रनैन के बारे में दरयाफ़्त करते हैं, कह दो कि मैं उसका किसी क़दर हाल तुम्हें पढ़ कर सुनाता हूं (८३) हमने उसको ज़मीन में बड़ी दस्तरस दी थी और हर तरह का सामान अता किया था (८४) तो उसने (सफर का) एक सामान किया (८५) यहाँ तक कि जब सूरज के ग़रूब होने की जगह पहुंचा तो उसे ऐसा पाया कि एक कीचड़ की नदी में डूब रहा है और उस नदी के पास एक कौम देखी, हमने कहा, जुलकरनैन ! तुम उनको ख्वाह तकलीफ़ दो, ख्वाह (उनके बारे में) भलाई अख्तियार करो (दोनों बातों की) तुमको क़ुदरत है (८६) जुल-क़रनैन ने कहा कि जो (कुफ्र व बद किर्दारी से) हम पर अज़ाब ज़ुल्म करेगा, उसे हम अज़ाब देंगे, फिर (जब) वह अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौटाया तो वह भी उसे (अज़ाब) देगा (८७) और जो ईमान लायेगा और अमल नेक करेगा, उस के लिये बहुत अच्छा बदला है, और हम अपने मामले में उस पर किसी तरह की सख्ती नहीं करेंगे, बल्कि उस से नर्म बात कहेंगे (८८) फिर उस ने एक और सामान (सफ़र का) किया (८९) यहाँ तक कि सूरज के तुलू होने के मक़ाम पर पहुंचा तो देखा कि वह ऐसे लोगों पर तुलू करता है कि जिन के लिये हम ने सूरज के इस तरफ़ कोई ओट नहीं बनाई थी (९०) हक़ीक़ते हाल यूं (थी) और जो कुछ उस के पास था हम को सब की खबर थी (९१) फिर उस ने एक और सामान किया (९२) यहाँ तक कि दो दीवारों के दर्मियान पहुंचा तो देखा कि उन के इस तरफ़ कुछ लोग हैं कि बात को समझ नहीं सकते (९३)

उन लोगों ने कहा ज़ुलक़रनैन ! याजूज और माजूज ज़मीन में फ़िसाद करते रहते हैं, भला हम आप के लिये खर्च (का इन्त-ज़ाम) कर दें कि आप हमारे और उन के दर्मियान एक दीवार खींच दें (९४) ज़ुलक़रनैन ने कहा, कि खर्च का जो मिक़दार, ख़ुदा ने बख़्शा है वह बहुत अच्छा है तुम मुझे क़ुव्वते (बाज़ू) से मदद दो, मैं तुम्हारे और उन के दर्मियान एक मज़बूत ओट बना दूंगा (९५) तो तुम लोहे के (बड़े बड़े) तख़्ते लाओ (चुनाँचे काम जारी कर दिया गया) यहाँ तक कि जब उस ने दोनों पहाड़ों के दर्मियान (का हिस्सा) बराबर कर दिया और कहा कि (अब इसे) धौंको, यहाँ तक कि जब इस को धौंक धौंक कर आग कर दिया तो कहा कि (अब) मेरे पास ताँबा लाओ, कि इस पर पिघला कर डाल दूं (९६) फिर उन में यह कुदरत न रही कि उस पर चढ़ सकें और न यह ताक़त रही कि उस में नक़ब लगा सकें (९७) बोला कि यह मेरे पर्वर-दिगार की मेहरबानी है, जब मेरे पर्वरदिगार का वायदा आ पहुंचेगा तो इस को (ढा कर) हमवार कर देगा, और मेरे पर्वरदिगार का वायदा सच्चा है (९८) (उस रोज़) हम उन को छोड़ देंगे कि (रुऐ ज़मीन पर फैल कर) एक दूसरे में घुस जायेंगे, और जब सूर फूंका जायेगा तो हम सबको जमा कर लेंगे (९९) और उस रोज़ जहन्नुम को काफ़िरों के सामने लायेंगे (१००) जिन की आँखें मेरी याद से पर्दे में थीं और वह सुनने की ताक़त नहीं रखते थे (१०१)—रुकू—११

क्या काफ़िर यह ख्याल करते हैं कि वह हमारे बन्दों को

हमारे सिवा (अपना) कारसाज़ बनायेंगे (तो हम ख़फ़ा नहीं होंगे) हम ने (ऐसे) काफ़िरों के लिये जहन्नुम की (मेहमानी) तैयार कर रखी है (१०२) कह दो कि हम तुम्हें बतायें जो अमलों के लिहाज़ से बड़े नुक़सान में हैं (१०३) वह लोग जिन की सई, दुनिया की ज़िन्दगी में बर्बाद हो गई और वह यह समझे हुए हैं कि अच्छे काम कर रहे हैं (१०४) यह वह लोग हैं जिन्होंने अपने पर्वरदिगार की आयतों और उस के सामने जाने से इन्कार किया तो उन के आमाल ज़ाया हो गये, और हम क़यामत के दिन, उन के लिये कुछ भी वज़न क़ायम नहीं करेंगे (१०५) यह उन की सज़ा है (यानी) जहन्नुम, इस लिये कि उन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतों और हमारे पैग़म्बरों की हँसी उड़ाई (१०६) जो लोग ईमान लाये और अमल नेक किये, उन के लिये बहिश्त के बाग़ मेहमानी होंगे (१०७) हमेशा उन में रहेंगे और वहाँ से मकाम बदलना न चाहेंगे (१०८) कह दो कि अगर समन्दर मेरे पर्वरदिगार की बातों के (लिखने के) लिये सियाही हो, तो क़ब्ल इस के कि मेरे पर्वरदिगार की बातें तमाम हों, समन्दर खत्म हो जाये, अगरचे हम वैसा ही और समन्दर उसकी मदद को लायें (१०९) कह दो कि मैं तुम्हारी तरह का एक बशर हूँ (अलबत्ता) मेरी तरफ़ वही आती है कि तुम्हारा माबूद (वही) एक माबूद है, जो शख़्स अपने पर्वरदिगार से मिलने की उमीद रखे, चाहिये कि अमल नेक करे, और अपने पर्वरदिगार की इबादत में किसी को शरीक न बनाये (११०) रुकू—१२

१६ सूर-ऐ-मरियम—❀

सूर ऐ मरियम मक्के में उतरी, इसमें ९८ आयतें और ६ रुकू हैं

शुरु ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

काफ़, हे, य, ऐन, सुआद (१) (यह) तुम्हारे पर्वरदिगार की मेहरबानी का बयान (है जो उस ने) अपने बन्दे ज़क्रिया पर (की) थी (२) जब उन्होंने अपने पर्वरदिगार को दबी

❀ हज़रत यैहिया व हज़रत ज़क्रिया:—

हज़रते ज़क्रिया हज़रत मरियम के खालू थे, तो गोया हज़रत यैहिया मरियम के ख़ाला ज़ाद भाई और ईसा रिश्ते में यैहिया के भान्जे थे, दोनों एक ही ज़माने में थे और यैहिया ने ईसा की नब्वत की तस्दीक़ की है हज़रत ज़क्रिया बैतुल मुक़द्दस के मुतवल्लियों में थे, सिलसिल-ऐ नबव्वत के खत्म हो जाने के खौफ़ से १२० वर्ष की उम्र में लड़के की दुआ माँगी चुनान्चे हज़रत यैहिया पैदा हुए, यह नाम खुद अल्लाह ताला ने रखा है जिस के मानी हैं कि जिन्दा रहेगा, हज़रत यैहिया बनी इसराईल के हाथ से शहीद होकर गोया हमेशा अपने नाम के मवाफ़िक़ ज़िन्दा है उसी ज़माने में बनी इसराईल का एक रूमी हाकिम एक नाजायज़ शादी करनी चाहता था, उस ने बनी इसराईल के आलिमों से मसला दर्याफ़्त किया, उन्होंने साज़िश करके कहा कि हम में यैहिया आलिम है अगर वह इस को सच कह दें तो बेहतर, वर्ना चूंकि सब लोग उन को मानते हैं, बाद में वह सब में आप को बदनाम कर देंगे, हाकिम ने आप को बुलाया, आपने फ़रमाया कि वह नाजायज़ है, तब उस ने ग़ुस्से में आप को शहीद किया, इसराईली आलिमों का मकसद पूरा हो गया, इसी

अर्से में बख्त नसर बाबुल का बादशाह बनी इसराईल पर चढ़ाई कर के आया और ७० हज़ार बनी इसराईल क़त्ल किये हज़रत ज़क्रिया से बनी इसराईल आखिर को मुनहरिफ़ हो गये थे, हज़रत ज़क्रिया डर से जंगल को भाग गये और जंगल के एक दरख्त से पनाह चाही वह पेड़ शक़ हो गया और उस के अन्दर छुप गये, बनी इसराईल को यह कैफ़ियत मालूम हुई तो वह लोहे का आरा बना लाये और मैय पेड़ के हज़रत ज़क्रिया को बीच में से चीर कर दो टुकड़े कर डाला, हज़रत यैहया और हज़रत ईसा की पैदाईश एक ही साल की है, हज़रत यैहिया पर तौरेत की शरियत का ज़माना खत्म हो गया अब इस से आगे हज़रत ईसा की नबव्वत और अन्जील की शरीयत का ज़माना शुरु हुआ—

हज़रत ईसा की पैदाईश:—बनी इसराईल में दस्तूर था कि अपने लड़कों को बैतुल मुक़द्दस का खादिम बना दिया करते थे हज़रत मरियम की माँ हन्ना ने नज्र फ़रमाई कि उनके पेट में जो बच्चा है उसके पैदा होने के बाद बैतुल मुक़द्दस का खादिम बनाऊगी जब हज़रत मरियम पैदा हुई तो लड़की पैदा होने से उन को बड़ा रन्ज हुआ, मगर अल्लाह ताला ने मरियम का खादिमा होना क़बूल फ़रमा लिया, हज़रत मरियम अपने खालू हज़रत ज़क्रिया के पास परवरिश पाकर बैतुल मुक़द्दस की खिदमत किया करती थीं, सीरियानी ज़बान में मरियम के मानी खादिमा के हैं जब अल्लाह ताला को मन्ज़ुर हुआ कि दुनिया में अपनी कुदरत का नमूना पैदा करे तो हज़रत जबराईल ने उनके जिस्म में हज़रत ईसा की रुह फ़ूक दी और उनको हमल रह गया, उलमा ने लिखा है कि अल्लाह ताला ने हर तरह की पैदाईश दुनिया में जाहिर कर दी ताकि इन्सान को उसकी हर तरह की क़ुदरत पर ईमान हो, हज़रत आदम को बग़ैर माँ बाप के पैदा किया हज़रत मरियम को बग़ैर औरत सिर्फ़ मर्द के जिस्म से और हज़रत ईसा को सिर्फ़ औरत के जिस्म से पैदा किया।

आवाज़ से पुकारा (३) (और) कहा कि ऐ मेरे पर्वरदिगार ! मेरी हड्डियां बुढ़ापे के सबब कमज़ोर हो गई हैं और सर (है कि) बुढ़ापे (की वज्ह से) शोले मारने लगा है, और ऐ मेरे पर्वरदिगार ! मैं तुम से मांग कर कभी मेहरुम नहीं रहा (४) और मैं अपने बाद अपने भाई बन्दों से डरता हूं, और मेरी बीबी बाञ्झ है, तू मुझे अपने पास से एक वारिस अता फ़रमा (५) जो मेरी और औलादे याक़ूब की मीरास का मालिक हो और (ऐ) मेरे पर्वरदिगार उस को ख़ुश अतवार बनाईयो (६) ऐ ज़क्रिया हम तुम को एक लड़के की बशारत देते हैं, जिस का नाम यैहिया है, इस से पहले हम ने इस नाम का कोई शख़्स पैदा नहीं किया (७) उन्होंने कहा, ऐ मेरे पर्वरदिगार, मेरे हाँ किस तरह लड़का होगा जिस हाल में मेरी बीबी बाँझ है, और मैं बुढ़ापे की इन्तिहा को पहुँच गया हूं (८) हुक्म हुआ कि इसी तरह (होगा) तुम्हारे पर्वरदिगार ने फ़रमाया है कि यह मुझे आसान है और मैं पहले तुम को भी तो पैदा कर चुका हूँ, और तुम कुछ चीज़ न थे (९) कहा, कि ऐ मेरे पर्वरदिगार मेरे लिये कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमा, फ़रमाया, निशानी यह है कि तुम सही व सालिम होकर तीन (रात दिन) लोगों से बात न कर सकोगे (१०) फिर वह (इबादत के) हुजरे से निकल कर अपनी क़ौम के पास आये, तो उन से इशारे से कहा कि सुब्हो शाम (ख़ुदा को) याद करते रहो (११) ऐ यैहिया ! हमारी किताब को ज़ोर से पकड़े रहो, और हमने उनको लड़कपन हो में दानाई अता फ़रमाई थी (१२) और अपने पास से

शफ़क़त और पाकीज़गी दी थी, और वह परहेज़गार थे (१३) और माँ बाप के साथ नेकी करने वाले थे और सरकश और नाफ़रमान नहीं थे (१४) और जिस दिन पैदा हुए और जिस दिन वफ़ात पायेंगे और जिस दिन ज़िन्दा कर के उठाये जायेंगे, उन पर सलाम और रहमत है (१५)—रुकू—१

और किताब (क़ुरान) में मरियम का भी मज़कूर करो, जब वह अपने लोगों से अलग हो कर मश्रिक की तरफ़ चली गईं (१६) तो उन्होंने उन की तरफ़ से पर्दा कर लिया (उस वक़्त) हम ने उन की तरफ़ अपना फ़रिश्ता भेजा, तो वह उन के सामने ठीक आदमी (की शक्ल) बन गया (१७) मरियम बोलीं कि अगर तुम परहेज़गार हो तो मैं तुम से ख़ुदा की पनाह मांगती हूँ (१८) और उन्होंने कहा, कि मैं तो तुम्हारे पर्वरदिगार का भेजा हुआ (यानी फ़रिश्ता) हूं (और इस लिये आया हूं) कि पाकीज़ा लड़का बख़्शूं (१६) मरियम ने कहा कि मेरे हाँ लड़का क्यों कर होगा, मुझे किसी बशर ने छुआ तक नहीं और मैं बदकार भी नहीं हूँ (२०) (फ़रिश्ते ने) कहा, कि यूं ही (होगा) तुम्हारे पर्वरदिगार ने फ़रमाया कि यह मुझे आसान है और (मैं उसे इसी तरीक़ पर पैदा करूंगा) ताकि उस को लोगों के लिए अपनी तरफ़ से निशानी और (ज़रिय-ऐ) रहमत और (मेहरबानी) बनाऊं और यह काम मुक़र्रर हो चुका है (२१) तो वह उस (बच्चे) के साथ हामिला हो गईं, और

उसे लेकर एक दूर जगह चली गईं (२२) फिर दर्दे ज़ उन

को खजूर के तने की तरफ़ ले आया, कहने लगीं कि काश मैं इस से पहले मर चुकती और भूली बिसरी हो गई होती (२३) उस वक्त उन के नीचे की जानिब से फ़रिश्ते ने आवाज़ दी, कि ग़मनाक न हो तुम्हारे पर्वरदिगार ने तुम्हारे नीचे एक चश्मा जारी कर दिया है (२४) और खजूर के तने को पकड़ कर अपनी तरफ़ हिलाओ, तुम पर ताज़ा खजूरें झड़ पड़ेंगी (२५) तो खाओ और पिओ और आँखें ठण्डी करो, अगर तुम किसी आदमी को देखो तो कहना कि मैंने खुदा के लिये आज रोज़े की मन्नत मानी है, तो आज मैं किसी आदमी से, हर्गिज़ कलाम नहीं करुंगी (२६) फिर वह उस (बच्चे) को उठा कर अपनी क़ौम के लोगों के पास ले आईं, वह कहने लगे, कि मरियम यह तो तूने बुरा काम किया (२७) ऐ हारुन की बहन, न तो तेरा बाप ही बद अतवार आदमी था और न तेरी माँ बदकार थी (२८) तो मरियम ने उस लड़के की तरफ़ इशारा किया, वह बोले कि हम इस से कि गोद का बच्चा है, क्यों कर बात करें (२९) बच्चे ने कहा. कि मैं खुदा का बन्दा हूँ, उस ने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है (३०) और मैं जहाँ हूँ (और जिस हाल में हूँ) मुझे साहिबे बरकत किया है और जब तक ज़िन्दा हूं मुझ को नमाज़ और ज़कात का इर्शाद फ़रमाया है (३१) और (मुझे) अपनी माँ के साथ नेक सलूक करने वाला (बनाया है) और सरकशो बद बख्त नहीं बनाया (३२) और जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मरूंगा और जिस दिन ज़िन्दा कर के

उठाया जाऊंगा मुझ पर सलाम (व रहमत) है (३३) यह मरियम के बेटा ईसा हैं (और यह) सच्ची बात है जिस में लोग शक करते हैं (३४) खुदा को सज़ाबार नहीं कि किसी को बेटा बनाये, वह पाक है, जब किसी चीज़ का इरादा करता है तो उस को यही कहता है कि हो जा तो वह हो जाती है (३५) और बेशक खुदा ही मेरा और तुम्हारा पर्वरदिगार है, तो उसी की इबादत करो यही सीधा रस्ता है (३६) फिर (एहले किताब के) फ़िर्क़ों ने बाहम इख्तिलाफ़ किया जो लोग काफ़िर हुए हैं, उन को बड़े दिन (यानी क़यामत के रोज़) हाज़िर होने से खराबी है (३७) वह जिस दिन हमारे सामने आयेंगे, कैसे सुनने वाले और कैसे देखने वाले होंगे, मगर ज़ालिम आज सरीह गुमराही में हैं (३८) और उन को हसरत (व अफ़सोस) के दिन से डराओ, जब बात फ़ैसल कर दी जायेगी और (हैईयात) वह ग़फ़लत में (पड़े हुए हैं) और ईमान नहीं लाते (३९) हम ही ज़मीन के और जो लोग उस पर (बस्ते) हैं, उन के वारिस हैं और हमारी ही तरफ़ उनको लौटाया जाना होगा (४०)—रुकू–२

और किताब में इब्राहीम को याद करो, बेशक वह निहायत सच्चे पैग़म्बर थे (४१) जब उन्होंने अपने बाप से कहा कि

हज़रत इब्राहीम (आयत ४१ से)—नमरुद शाहे बाबुल ने ख्वाब देखा था कि एक बड़ा रोशन सितारा आसमान पर निकला है, उस वक्त के नजूमियों ने इसकी यह ताबीर दी कि इस साल एक लड़का पैदा होगा जिसके सबब से अपनी इज्ज़त को नुक़सान पहुंचेगा, इस खौफ़ से नमरुद सब मर्दों को अपने साथ लेकर शहर के बाहर चला गया और

अब्बा आप ऐसी चीज़ों को क्यों पूजते हैं जो न सुनें और न देखें और न आप के कुछ काम आ सकें (४२) अब्बा, मुझे ऐसा इल्म मिला है जो आप को नहीं मिला, तो मेरे साथ होजिये, मैं आप को सीधी राह पर चलाऊंगा (४३) अब्बा शैतान की परस्तिश न कीजिये, बेशक शैतान ख़ुदा का नाफ़रमान है (४४) अब्बा मुझे डर लगता है कि आप को ख़ुदा का अज़ाब आ पकड़े तो आप शैतान के साथी हो जायें (४५) उस ने कहा कि इब्राहीम

औरतों को अन्दर छोड़ दिया ताकि उस साल मर्द व औरत में मुवाशरत न हो, नमरुद ने आज़र को शहर में एक ज़रूरी काम के लिये भेजा और ताकीद की कि अपनी बीबी से मुवाशरत न करना मगर जब आज़र आये तो बावजूदे कि उनको हुक्म की ताबेदारी का बड़ा ख्याल था मगर ब तक़ाज़ा-ऐ बशरी हम बिस्तर हुए और हमल रहा लेकिन इब्राहीम की माँ को देखने से हमल नहीं मालूम होता था, आखिर इब्राहीम पैदा हुए चूंकि नजूमियों ने नमरुद को हमल क़रार पाने की खबर दी थी तो उसने हुक्म दिया था कि इस साल जो बच्चा पैदा हो मार डाला जाये, माँ ने अपने खाविन्द से भी छुपाया और यह कहा कि मरा हुआ बच्चा पैदा हुआ था और सात बरस तक उनको एक तहखाने में पाला, जब इब्राहीम खूब बातें करने लगे तो माँ ने एक रोज़ आज़र से मोहब्बत दिलाने के लिये इब्राहीम की बातों का और पैदाइश का हाल कहा, आज़र ने उनको तहखाने में जाकर देखा और जितलाया कि मैं तुम्हारा बाप हूं, आपने फ़रमाया ऐ मेरे बाप तुम्हारा पैदा करने वाला कौन है, आज़र ने कहा नमरुद इब्राहीम ने कहा नमरुद को किसने पैदा किया, आज़र ने एक तमाचा इब्राहीम के मूंह पर मारा और गुस्सा होकर बाहर चले आये, यह गोया बुत परस्ती की पहली बहस थी इसके बाद और भी बहसें होती रहीं जिन में से एक का इस आयत में ज़िक्र है।

क्या तू मेरे माबूदों से बरगश्ता है, अगर तू बाज़ न आयेगा तो मैं तुझे संगसार कर दूंगा, और तू हमेशा के लिये मुझ से दूर हो जा (४६) इब्राहीम ने सलाम अलैक कहा (और कहा कि) मैं आप के लिये अपने पर्वरदिगार से बख़्शिश मागूंगा, बेशक वह मुझ पर निहायत मेहरबान है (४७) और मैं आप लोगों से, और जिन को आप ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं, उन से कनारा करता हूँ और अपने पर्वरदिगार ही को पुकारुंगा, उमीद है कि मैं अपने पर्वरदिगार को पुकार कर मेहरुम नहीं रहूँगा (४८) और जब इब्राहीम उन लोगों से और जिन की वह ख़ुदा के सिवा परस्तिश करते थे उन से अलग हो गये, तो हम ने उन को इसहाक़ और (इसहाक़ को) याक़ूब बख्शे और सब को पैग़म्बर बनाया (४९) और उन को अपनी रहमत से (बहुत सी चीज़ें) इनायत कीं और उन का ज़िक्रे जमील बलन्द किया (५०)—रुकू—३

और किताब में मूसा का भी जिक्र करो, बेशक वह हमारे बरग़ज़ीदा और पैग़म्बरे मुर्सिल थे (५१) और हम ने उन को तूर की दाहिनी जानिब पुकारा और बातें करने के लिये नज़दीक बुलाया (५२) और अपनी मेहरबानी से उन को उन का भाई हारुन पैग़म्बर अता किया (५३) और किताब में ईसराईल का भी ज़िक्र करो, वह वायदे के सच्चे और (हमारे) भेजे हुए नबी थे (५४) और अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म करते थे, और अपने पर्वरदिगार के हाँ पसन्दीदा और

बरग़ज़ीदा थे (५५) और किताब में इद्रीस का भी ज़िक्र करो, वह भी निहायत सच्चे नबी थे (५६) और हम ने उन को ऊंची जगह उठा लिया था (५७) वह लोग हैं जिन पर ख़ुदा ने पैग़म्बरों में से फ़ज़ल किया (यानी) औलादे आदम में से और उन लोगों में से जिन को हमने नूह के साथ (क़श्ती) में सवार किया, और इब्राहीम और याक़ूब की औलाद में से और उन लोगों में से जिन को हमने हिदायत दी और बरग़ज़ीदा किया, जब उन के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती थीं, तो सजदे में गिर पड़ते और रोते रहते थे (५८) फिर उन के बाद चन्द ना खलफ़ उन के जानशीन हुए, जिन्होंने नमाज़ को छोड़ दिया गोया (उसे) खो दिया और ख्वाहिशाते नफ़सानी के पीछे पड़ गये, सो, अन्क़रीब उन को गुमराही (की सज़ा) मिलेगी (५९) हाँ ! जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अमल नेक किये, तो ऐसे लोग बहिश्त में दाख़िल होंगे और उन का ज़रा नुक़सान न किया जायेगा (६०) (यानी) बहिश्ते जाविदानी (में) जिस

आयत ५७-हज़रत इद्रीस:—लिखा है कि हज़रत इद्रीस पहले हज़रत नूह से, हिसाब, सितारों की चाल का, और सीना कहते हैं इन ही से सीखा खल्क़ ने, मलिकुल मौत उनसे आशना था एकबार आजमाने को अपनी जान बदन से निकलवाई फिर डाल दी और बहिश्त की सैर फिर वहाँ रह गये अल्लाह के हुक्म से आँ हजरत सल्हे अल्लाह अलैहा व सलम से मिले थे मैयराज की रात आस्मान पर, और बाज़े कहते हैं, हज़रत इलियास का लक़ब है इद्रीस यह बनी इसराईल में पैग़म्बर हुए थे।

का ख़ुदा ने अपने बन्दों से वायदा किया है (और जो उन की आँखों से) पोशिदा है, बेशक, उस का वायदा (नेकूकारों के सामने) आने वाला है (६१) वह इस में इस्लाम के सिवा कोई बेहूदा कलाम न सुनेंगे और उन के लिये सुब्हो शाम गर्म खाना तैयार होगा (६२) यही वह जन्नत है जिस का हम अपने बन्दों में से ऐसे शख़्स को वारिस बनायेंगे, जो परहेज़गार होगा (६३) और (फ़रिश्तों ने पैग़म्बर को जवाब दिया) कि हम तुम्हारे पर्वरदिगार के हुक्म के सिवा उतर नहीं सकते, जो कुछ हमारे आगे है और जो पीछे है और जो उन के दर्मियान है, सब उसी का है और तुम्हारा पर्वरदिगार भूलने वाला नहीं (६४) (यानी) आस्मान और ज़मीन का और जो उनके दर्मियान है, सब का पर्वरदिगार, तो उसी की इबादत करो और उसी की इबादत पर साबित क़दम रहो, भला तुम उस का कोई हम नाम जानते हो (६५)—रुकू—४

और (काफ़िर) इन्सान कहता है कि जब मैं मर जाऊंगा तो क्या ज़िन्दा कर के निकाला जाऊंगा (६६) क्या (ऐसा) इन्सान याद नहीं करता कि हमने उस को पहले भी तो पैदा किया था और वह कुछ भी चीज़ न था (६७) तुम्हारे पर्वरदिगार की क़सम, हम उन को जमा करेंगे, और शैतानों को भी, फिर उन सब को जहन्नुम के गिर्द हाज़िर करेंगे (और वह) घुटनों पर गिरे हुए होंगे (६८) फिर हर जमायत में से हम ऐसे लोगों को खींच निकालेंगे जो ख़ुदा से सख़्त सरकशी

करते थे (६६) और हम उन लोगों से खूब वाक़िफ़ हैं, जो उन में दाखिल होने के ज़्यादा लायक़ हैं (७०) और तुम से कोई (शख्स) नहीं, मगर उसे उस पर गुजरना होगा, यह तुम्हारे पर्वरदिगार पर लाज़िम और मुक़र्रर है (७१) फिर हम परहेज़गारों को नजात देंगे और ज़ालिमों को उस में घुटनों के बल पड़ा हुआ छोड़ देंगे (७२) और जब उन लोगों के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो जो काफ़िर हैं वह मोमिनों से कहते हैं कि दोनों फ़रीक़ में से मकान किस के अच्छे और मजलिसें किस की बेहतर हैं (७३) और हम ने उन से पहले बहुत सी उम्मतें हलाक कर दीं वह लोग (इन से) ठाठ और नमूद में कहीं अच्छे थे (७४) कह दिया कि जो शख्स गुमराही में पकड़ा हुआ है, खुदा उस को, आहिस्ता आहिस्ता मोहलत दिये जाता है, यहाँ तक कि जब उस चीज़ को देख लेंगे, जिस का उन से वायदा किया जाता है, ख्वाह अज़ाब और ख्वाह क़यामत तो (उस वक्त) जान लेंगे कि मकान किस का बुरा है और लशकर किस का कमज़ोर है (७५) और जो लोग हिदयतयाब हैं, खुदा उन को ज़्यादा हिदायत देता है और नेकियां जो बाकी रहने वाली हैं, वह तुम्हारे पर्वरदिगार के सिले के लिहाज से खूब और अञ्जाम के ऐतबार से बेहतर हैं (७६) भला तुम ने उस शख्स को देखा, जिस ने हमारी आयतों से कुफ्र किया और कहने लगा कि (अगर मैं अज़ सरे नौ ज़िन्दा हुआ भी तो यही) माल और औलाद मुझे (वहाँ) मिलेगा (७७) क्या उस ने ग़ैब की खबर पा ली है

या ख़ुदा के यहाँ उस ने अहद ले लिया है (७८) हर्गिज़ नहीं ! यह जो कुछ कहता है, उस को हम लिखते जाते हैं और उस के लिये आहिस्ता आहिस्ता अज़ाब बढ़ाते जाते हैं (७९) और जो चीज़ें यह बताता है, उन के हम वारिस होंगे और यह अकेला हमारे सामने आयेगा (८०) और इन लोगों ने ख़ुदा के सिवा और माबूद बना लिये हैं ताकि वह इन के लिये (मूजिबे इज़्ज़त व) मदद हों (८१) हर्गिज़ नहीं ! वह माबूदाने बातिल इन की परस्तिश से इन्कार करेंगे और इन के दुश्मन (व मुख़ालिफ़) होंगे (८२)—रुकू—५

क्या तुम ने नहीं देखा कि हम ने शैतानों को काफ़िरों पर छोड़ रखा है कि वह उन को बरअंगेख़्ता करते रहें (८३) तो तुम इन पर (अज़ाब के लिये) जल्दी न करो, और हम तो इन के लिये दिन शुमार कर रहे हैं (८४) जिस रोज़ हम परहेज़गारों को ख़ुदा के सामने (बतौर) मेहमान जमा करेंगे (८५) और गुन्हेगारों को दोज़ख़ की तरफ़, प्यासे हाँक ले जायेंगे (८६) (तो लोग) किसी की सिफ़ारिश का अख़्तियार न रखेंगे, मगर जिस ने ख़ुदा से इक़रार लिया हो, (८७) और कहते हैं कि ख़ुदा बेटा रखता है (८८) (ऐसा कहने वालो, यह तो) तुम बुरी बात (ज़बान पर) लाते हो (८९) क़रीब है कि इस (इफ़्तिरा) से आस्मान फट पड़ें (और) ज़मीन शक़ हो जाये, और पहाड़ पारा पारा हो कर गिर पड़ें (९०) कि उन्हों ने ख़ुदा के लिये बेटा तजवीज़ किया (९१) और ख़ुदा को शायाँ नहीं कि किसी

को बेटा बनायें (९२) तमाम शख्स जो आस्मानो जमीन में हैं, सब खुदा के रुबरु बन्दे हो कर आयेंगे (९३) उस ने उन (सब) को (अपने इल्म से) घेर रखा है और एक एक को शुमार कर रखा है (९४) और सब क़यामत के दिन उस के सामने अकेले अकेले हाज़िर होंगे (९५) और जो लोग ईमान लाये और अमल नेक किये, खुदा उन की मोहब्बत (मखलूक़ात) के दिल में पैदा कर देगा (९६) (ऐ पैग़म्बर) हम ने यह (क़ुरान) तुम्हारी ज़बान में आसान (नाज़िल) किया है, ताकि तुम इस से परहेज़गारों को खुशखबरी पहुँचा दो और झगड़ालुओं को डर सुना दो (९७) और हम ने उन से पहले बहुत से गिरोहों को हलाक कर दिया है, भला तुम उन में से किसी को देखते हो, या (कहीं) उन की भनक सुनते हो (९८)—रुकू—६

२०—सूर-ऐ-ताहा

सूर ऐ ताहा मक्के में उतरी, इस में १३५ आयतें और ८ रुकू हैं

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

ताहा (१) (ऐ मोहम्मद) हमने तुम पर क़ुरान इस लिये नाज़िल नहीं किया कि तुम मुशक्कत में पड़ जाओ (२) बल्कि

उस शख़्स को नसीहत देने के लिये (नाज़िल किया है) जो ख़ौफ़ रखता है (३) यह उस (ज़ाते बर तर) का उतारा हुआ है, जिसने ज़मीन और ऊंचे ऊंचे आस्मान बनाये (४) (यानी ख़ुदाये) रेहमान जिसने अर्श पर क़रार पकड़ा (५) जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और जो कुछ इन दोनों के बीच में है और जो कुछ (ज़मीन की मिट्टी के) नीचे है, सब उसी का है (६) और अगर तुम पुकार कर बात कहो, तो वह छुपे भेद और पोशीदा बात तक को जानता है (७) (वह माबूदे बरहक़ है कि) उसके सिवा कोई माबूद नहीं उसके (सब) काम अच्छे हैं (८) और क्या तुम्हें मूसा के हाल की ख़बर मिली है (९) जब उन्होंने आग देखी तो अपने घर के लोगों से कहा कि तुम (यहाँ) ठहरो, मैंने आग देखी है (मैं वहाँ जाता हूं) शायद उसमें से तुम्हारे पास अङ्गारी लाऊँ, या आग (के मक़ाम) का रस्ता मालूम कर सकूं (१०) जब वहाँ पहुंचे तो आवाज़ आई, कि, मूसा (११) मैं तो तुम्हारा पर्वरदिगार हूं तो अपनी जूतियाँ उतार दो, तुम (यहाँ) पाक मैदान (यानी तूआ) में हो (१२) और मैंने तुमको इन्तख़्वाब कर लिया है, तो जो हुक्म दिया जाये उसे सुनो (१३) बेशक मैं ही ख़ुदा हूं, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी इबादत करो और मेरी याद के लिये नमाज़ पढ़ा करो (१४) क़यामत यक़ीनन आने वाली है, मैं चाहता हूं कि उस (के वक़्त) को पोशीदा रखूं ताकि हर शख़्स जो कोशिश करे उसका बदला पाये (१५) तो जो शख़्स उस पर ईमान नहीं रखता और अपनी ख़्वाहिश के पीछे चलता है (कहीं) तुमको उस (के यक़ीन) से

रोक न दे, तो (उस सूरत में) तुम हलाक हो जाओ (१६) और मूसा ! यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है (१७) उन्होंने कहा, यह मेरी लाठी है, इस पर मैं सहारा लगाता हूं और इससे अपनी बकरियों के लिये पत्ते झाड़ता हूँ, और इसमें मेरे लिये और भी फ़ायदे हैं (१८) फ़रमाया कि मूसा, इसे डाल दो (१९) तो उन्होंने उसको डाल दिया, और वह नागहाँ साँप बन कर दौड़ने लगा (२० ख़ुदा ने फ़रमाया कि इसे पकड़ लो, और डरना मत हम इसको अभी इसकी पहली हालत पर लौटा देंगे (२१) और अपना हाथ अपनी बग़ल से निकालो, वह किसी ऐब (व बीमारी के) बग़ैर सफ़ैद (चमकता दमकता) निकलेगा (यह) दूसरी निशानी है (२२) ताकि हम तुम्हें अपने निशानाते अज़ीम दिखायें (२३) तुम फ़िरऔन के पास जाओ (कि) वह सर कश हो रहा है (२४)—रुकू—१

कहा, ऐ मेरे पर्वरदिगार (इस काम के लिये) मेरा सीना खोल दे (२५) और मेरा काम आसान कर दे (२६) और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे (२७) ताकि वह बात समझ लें (२८) और मेरे घर वालों में से (एक को) मेरा वज़ीर (यानी मदद-गार) मुक़र्रर फ़रमा (२९) (यानी) मेरे भाई हारुन को (३०) उससे मेरी कुव्वत को मज़बूत फ़रमा (३१) और उसे मेरे काम में शरीक कर (३२) ताकि हम तेरी बहुत सी तस्बीह करें (३३) और तुझे कसरत से याद करें (३४) तू हमको (हर हाल में) देख रहा है (३५) फ़रमाया, मूसा तुम्हारी दुआ क़बूल की गई (३६) और हमने तुम पर एक बार और भी एहसान किया था (३७)

जब हमने तुम्हारी वालिदा को इल्हाम किया था, जा तुम्हें बताया जाता है (३८) (वह यह था) कि उसे (यानी मूसा को) सन्दूक में रखो, फिर उस (सन्दूक) को दरिया में डाल दो, तो दरिया उसे किनारे पर डाल देगा(और) मेरा और उसका दुश्मन उसे उठा लेगा, और (मूसा) मैंने तुम पर अपनी तरफ़ से मोहब्बत डाल दी (इस लिये कि तुम पर मेहरबानी की जाये) और इस लिये कि तुम मेरे सामने परवरिश पाओ (३९) जब तुम्हारी बहन (फ़िरऔन के यहाँ) गई और कहने लगी कि मैं तुम्हें ऐसा शख्स बताऊं जो उसको पाले (तो इस तरीक़ से) हमने तुमको तुम्हारी माँ के पास पहुंचा दिया, त कि उनकी आँखें ठन्डी हों और वह रन्ज न करें, और तुमने एक शख्स को मार डाला, तो हमने तुम को ग़म से मुख़्लिसी दी और हमने तुम्हारी कई बार आज़माईश की, फिर तुम कई साल अहले मदीन में ठैहरे रहे, फिर ऐ मूसा तुम (क़ाबिलियते रसालत) के अन्दाज़े पर आ पहुंचे (४०) और मैंने तुमको अपने (काम के) लिये बनाया है (४१) तो तुम और तुम्हारा भाई दोनों हमारी निशानियाँ लेकर जाओ, और मेरी याद में सुस्ती न करना (४२) दोनों फ़िरऔन के पास जाओ कि वह सरकश हो रहा है (४३) और उसे नर्मी से बात करना, शायद वह ग़ौर करे या डर जाये (४४) दोनों कहने लगे, कि पर्वरदिगार हमें खौफ़ है कि वह हम पर ताअद्दी करने लगे, या ज्यादा सर कश हो जाये (४५) ख़ुदा ने फ़रमाया कि डरो मत, मैं तुम्हारे साथ हूं (और) सुनता और देखता हूं (४६) (अच्छा) तो उसके पास जाओ और कहो कि हम आपके पर्वरदिगार के

भेजे हुए हैं, तो बनी इसराईल को हमारे साथ जाने की इजाज़त दीजिये और उन्हें अज़ाब न कीजिये, हम आप के पास आप के पर्वरदिगार की तरफ़ ते निशानी लेकर आये हैं और जो हिदायत की बात माने, उसको सलामती हो (४७) हमारी तरफ़ यह वही आई है कि जो झुठलाये और मूंह फेरे, उसके लिये अज़ाब (तैयार) है (४८) (ग़रज़ मूसा और हारून फ़िरऔन के पास गये) उसने कहा, मूसा तुम्हारा पर्वरदिगार कौन है (४६) कहा कि हमारा पर्वरदिगार वही है, जिसने हर चीज़ को उसकी शक्ल व सूरत बख़्शी, फिर राह दिखाई (५०) कहा तो पहली जमायतों का क्या हाल ? (५१) कहा, उनका इल्म मेरे पर्वरदिगार को है (जो) किताब में (लिखा हुआ) है, मेरा पर्वरदिगार न चूकता है न भूलता है (५२) वह (वही तो है) जिसने तुम लोगों के लिये ज़मीन को फ़र्श बनाया, और उसमें तुम्हारे लिये रस्ते जारी किये और आस्मान से पानी बरसाया, फिर उससे अनवा व अक़्साम की मुख़्तलिफ़ रोईदगियाँ पैदा कीं (५३) (कि ख़ुद भी) खाओ और अपने चारपायों को भी चराओ, बेशक इन (बातों) में अक़्ल वालों के लिये बहुत सी निशानियां हैं (५४)—रुकू २

उसी (ज़मीन) से हमने तुमको पैदा किया और उसी में तुम्हें लौटायेंगे और उसी से दूसरी दफ़ा तुम्हें निकालेंगे (५५)❋

❋आयत ५५:—कहते हैं कि ख़ुदा ने एक फ़रिश्ता भेजा और उसे यह खिदमत दी है कि जिस जगह आदमी की क़ब्र होती है उसी जगह की खाक उठा कर उसकी माँ के पेट में डाल देता है फिर उस खाक का

और हमने फ़िरऔन को अपनी सब निशानियाँ दिखाईं मगर वह तकज़ीब और इन्कार ही करता रहा (५६) कहने लगा कि मूसा तुम हमारे पास इस लिये आये हो कि अपने जादू के (ज़ोर) से हमें हमारे मुल्क से निकाल दो (५७) तो हम भी तुम्हारे मुक़ाबिल ऐसा ही जादू लायेंगे, तो हमारे और अपने दर्मियान एक वक्त मुक़र्रर कर लो कि न तो हम उसके ख़िलाफ़ करेंगे और न तुम (और यह मुक़ाबला) एक हमवार मैदान में होगा (५८) मूसा ने कहा, कि आपके लिये मुक़ाबिले का दिन नौ रोज़ (मुक़र्रर किया जाता है) और यह कि लोग उस दिन चाश्त के वक्त इकट्ठे हो जायें (५९) तो फ़िरऔन लौट गया और अपने सामान जमा करके फिर आया (६०) मूसा ने उन (जादूगरों) से कहा. कि हाय तुम्हारी कमबख़्ती, ख़ुदा पर झूठ इफ़्तरा न करो कि वह तुम्हें अज़ाब से फ़ना कर देगा, और जिसने इफ़्तिरा किया वह नामुराद रहा (६१) तो वह बाहम अपने मामले में झगड़ने और चुपके चुपके सरगोशी करने लगे (६२) कहने लगे कि यह दोनों जादूगर हैं, चाहते हैं कि अपने जादू (के ज़ोर) से तुम को तुम्हारे मुल्क से निकाल दें और तुम्हारे शाईस्ता मज़हब को नाबूद कर दें (६३) तो तुम (जादू का) सामान इकट्ठा करलो और फिर क़तार बान्ध कर आओ, आज जो ग़ालिब रहा, वही कामयाब रहा (६४) बोले, कि मूसा, या तो तुम (अपनी चीज़)

बच्चा बनता है फिर जब वह मर जाता है तो उसी जगह में उसकी गोर होती है ।

डालो, या हम (अपनी चीज़ें) डालते हैं (६५) मूसा ने कहा, नहीं तुम ही डालो, (जब उन्होंने चीज़ें डालीं) तो नागहाँ उनकी रस्सियाँ और लाठियाँ, मूसा के ख़्याल में ऐसी आने लगीं कि वह (मैदान में) इधर उधर दौड़ रही हैं (६६) (उस वक्त) मूसा ने अपने दिल में ख़ौफ़ मालूम किया (६७) हमने कहा, खौफ़ न करो, बिला शुब्हा तुम ही ग़ालिब हो (६८) और जो चीज़ (यानी लाठी) तुम्हारे दाहिने हाथ में है उसे डाल दो, कि जो कुछ इन्होंने बनाया है, उसको निगल जायेगी, जो कुछ इन्होंने बनाया है (यह तो) जादूगरों के हथकंडे हैं और जादूगर जहाँ में जाये फ़लाह नहीं पायेगा (६९) (अल क़िस्सा यूं हुआ) तो जादूगर सजदे में गिर पड़े (और) कहने लगे कि हम हारुन और मूसा के ख़ुदा पर ईमान लाये (७०) (फ़िरऔन) बोला, कि पेशतर इस के कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं, तुम उस पर ईमान ले आये, बेशक वह तुम्हारा बड़ा (यानी उस्ताद) है, जिसने तुमको जादू सिखाया है, सो मैं तुम्हारे हाथ और पाँव (जानिबे) खिलाफ़ से कटवा दूंगा और खजूर के तनों पर सूली चढ़वा दूंगा, (उस वक्त) तुम को मालूम होगा कि हम में से किस का अज़ाब ज़्यादा सख़्त और देर तक रहने वाला है (७१) उन्होंने कहा कि जो दलायल हमारे पास आ गये हैं, उन पर और जिसने हमको पैदा किया है, उस पर हम आपको तर्जीह नहीं देंगे तो आपको जो हुक्म देना हो दे दीजिये और आप जो हुक्म दे सकते हैं, सिर्फ़ इसी दुनियाँ की ज़िन्दगी में (दे सकते हैं) (७२)* हम अपने पर्वरदिगार पर,

*आयत ७२: कहते हैं कि जादूगरों को सजदा करते वक्त खुदा ने बहिश्त और उसकी नैयमतें दिखा दीं।

ईमान ले आये, ताकि वह हमारे गुनाहों को मआफ़ करे और (उसे भी) जो आपने हमसे ज़बरदस्ती जादू कराया, और ख़ुदा बेहतर और बाकी रहने वाला है (७३) जो शख़्स अपने पर्वरदिगार के पास गुन्हेगार होकर आयेगा तो उसके लिये जहन्नुम है, जिसमें न मरेगा न जियेगा (७४) और जो उसके रूबरू ईमानदार होकर आयेगा, और अमल भी नेक किये होंगे तो ऐसे लोगों के लिये ऊंचे ऊंचे दर्जे हैं (७५) (यानी) हमेशा रहने के बाग़ जिसके नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा उनमें रहेंगे और यह उस शख़्स का बदला है जो पाक हुआ (७६)—रुकू ३

और हमने मूसा की तरफ़ बही भेजी कि हमारे बन्दों को रातों रात निकाल ले जाओ फिर उनके लिये दरिया में (लाठी मार कर) ख़ुश्क रस्ता बनाओ, फिर तुमको न तो (फ़िरऔन के) आ पकड़ने का खौफ़ होगा और न (ग़र्क़ होने का) डर (७७) फिर फ़िरऔन ने अपने लश्कर के साथ उनका ताक़ुब किया तो (दरिया) की मौजों ने चढ़ कर उन्हें ढाँक लिया (यानी डबो दिया) (७८) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह कर दिया और सीधे रस्ते पर न डाला (७९) ऐ आले याक़ूब, हमने तुमको तुम्हारे दुश्मनों से नजात दी और तौरात देने के लिये तुम से कोहेतूर की दाहिनी तरफ़ मुक़र्रर की और तुम पर मन्नो सलवा नाज़िल किया (८०) (और हुक्म दिया कि) जो पाकीज़ा चीज़ें हमने तुमको दी हैं उनको खाओ और उसमें हद से न निकलना वर्ना तुम पर मेरा ग़ज़ब नाज़िल होगा (और जिस पर

मेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ वह हलाक हो गया) (८१) और जो तौबा करे और ईमान लाये और अमल नेक करे, फिर सीधे रस्ते पर चले, उसको मैं बख़्श देने वाला हूं (८२) और ऐ मूसा तुमने अपनी क़ौम से (आगे चले आने में) क्यों जल्दी की (८३) कहा, वह मेरे पीछे (आ रहे) हैं और ऐ मेरे पर्वरदिगार मैंने तेरी तरफ़ (आने की) जल्दी इस लिये की, कि तू खुश हो (८४) फ़रमाया, कि हमने तुम्हारी क़ौम को तुम्हारे बाद आज़माईश में डाल दिया है, और सामरी ने उनको बहकाया है (८५) और मूसा गुस्से और ग़म की हालत में अपनी क़ौम के पास वापिस आये (और) कहने लगे कि ऐ मेरी क़ौम, क्या तुम्हारे पर्वरदिगार ने तुम से एक अच्छा वायदा नहीं किया था, क्या (मेरी जुदाई की) मुद्दत तुम्हें दराज़ (मालूम) हुई या तुमने चाहा कि तुम पर तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से ग़ज़ब नाज़िल हो और (इसलिये) तुमने मुझ से जो वायदा किया था (उसके खिलाफ़ किया (८६) वह कहने लगे कि हमने अपने अख्तियार से तुम से वायदा खिलाफ़ नहीं किया, बल्कि हम लोगों के ज़ेवरों का बोझ उठाये हुए थे, फिर हमने उसको (आग में) डाल दिया और इसी तरह सामरी ने डाल दिया (८७) तो उसने उनके लिये एक बछड़ा बना दिया (यानी उसका) क़ालिब जिस की आवाज़ गाये की सी थी, तो लोग कहने लगे कि यही तुम्हारा माबूद है और मूसा का भी माबूद है, मगर वह भूल गये हैं (८८) क्या यह लोग नहीं देखते कि वह उनकी किसी बात का जवाब नहीं देता

और न उनके नुक़सान और नफ़े का कुछ अख्तियार रखता है (८६)—रुकू ४

और हारून ने उनसे पहले ही कह दिया था, कि लोगो ! इस से सिर्फ़ तुम्हारी आज़माईश की गई है और तुम्हारा पर्वरदिगार तो ख़ुदा है, तो मेरी पैरवी करो और मेरा कहा मानो (६०) वह कहने लगा कि जब तक मूसा हमारे पास वापिस न आयें हम तो इस (की पूजा) पर क़ायम रहेंगे (६१) (फिर मूसा ने हारून से से कहा) कि हारुन जब तुमने उनको देखा था कि गुमराह हो रहे हैं तो तुम को किस चीज़ ने रोका (६२) (यानी) इस बात से कि तुम मेरे पीछे चले आओ, भला तुमने मेरे हुक्म केखिलाफ़ (क्यों) किया (६३) कहने लगे कि भाई मेरी दाढी और (सर के बालों) को न पकड़िये, मैं तो इस से डरा कि आप यह न कहें कि तुमने बनी इसराईल में तफरुक़ा डाल दिया और मेरी बात को मलहूज न रखा (६४) (फिर सामरी से) कहने लगे कि सामरी तेरा क्या हाल है ? (६५) उसने कहा कि मैंने एक ऐसी चीज़ देखी जो औरों ने नहीं देखी, तो मैंने फ़रिश्ते के नक़्शे पा से (मिट्टी की) एक मुठ्ठी भर ली, फिर उसको (बछड़े के क़ालिब में) डाल दिया, और मुझे मेरे जी ने (इस काम को) अच्छा बताया (६६) (मूसा ने) कहा, जा तुझ को दुनिया की ज़िन्दगी में यह (सज़ा है) कि कहता रहे कि मुझको हाथ न लगाना और तेरे लिये एक और वायदा है (यानी अज़ाब का) जो तुझ से टल न सकेगा और जिस माबूद की (पूजा) पर तू (क़ायम व) मौत-

कफ़ था, उसको देख, हम उसे जला देंगे, फिर (उसकी राख) को उड़ा कर दरिया में बखेर देंगे (९७)* तुम्हारा माबूद ख़ुदा ही है, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसका इल्म हर चीज़ पर मुहीत है (९८) इस तरह पर हम तुम से वह हालात बयान करते हैं जो गुज़र चुके हैं और हमने तुम्हें अपने पास से नसीहत (की किताब) अता फ़रमाई है (९९) जो शख्स उससे मूंह फेरेगा, वह क़यामत के दिन (गुनाह का) बोझ उठायेगा (१००) (ऐसे लोग) हमेशा (अज़ाब) में (मुब्तिला) रहेंगे और यह बोझ क़यामत के रोज़ उनके लिये बराबर है (१०१) जिस रोज़ सूर फूंका जायेगा और हम गुन्हेगारों को इकट्ठा करेंगे और उनकी आंखें नीली २ होंगी (१०२) (तो) वह आपस में आहिस्ता आहिस्ता कहेंगे कि तुम (दुनिया में) सिर्फ़ दस ही दिन रहे हो (१०३) जो बातें यह करेंगे, हम ख़ूब जानते हैं उस वक्त उनमें से अच्छी राह वाला (यानी आक़िल व होशमन्द) कहेगा कि (नहीं बल्कि) सिर्फ़ एक ही रोज़ ठैहरे हो (१०४)—रुकू ५

और तुम से पहाड़ों के बारे में दरियाफ़्त करते हैं, कह दो कि ख़ुदा उन को उड़ा कर बखेर देगा (१०५) और ज़मीन को

---

*आयत ९७:— यानी बनी इसराईल को गुमराह करने के सबब ख़ुदा ने उसको यह सज़ा दी कि तमाम उम्र सबसे अलग रहो, उसकी कैफ़ियत यह थी कि अगर वह किसी को हाथ लगाता या कोई उसको हाथ लगाता तो दोनों को तप आ जाती, इसलिये वह यही कहता रहा कि कोई मुझे छुऐ नहीं यह दुनियां का अज़ाब था और आखिरत का अज़ाब अलग रहा।

हमवार कर छोड़ेगा (१०६) जिस में न तुम कजी (और पस्ती) देखोगे, न टीला (और बलन्दी) (१०७) उस वक्त लोग एक पुकारने वाले के पीछे चलेंगे और उस की पैरवी से इन्हराफ़ न कर सकेंगे, और खुदा के सामने आवाजें पस्त हो जायेंगी, तो तुम आवाज खफ़ी के सिवा कोई आवाज न सुनोगे (१०८) उस रोज़ (किसी की) सिफ़ारिश कुछ फ़ायदा न देगी, मगर उस शख्स की जिसे खुदा इजाज़त दे और उस की बात को पसन्द फ़रमाये (१०९) जो कुछ उन के आगे है, और जो कुछ उन के पीछे है, वह उस को जानता है और (वह) अपने इल्म से खुदा (के इल्म) पर अहाता नहीं कर सकते (११०) और इस ज़िन्दा व क़ायम के रुबरु मूंह नीचे हो जायेंगे और जिस ने ज़ुल्म का बोझ उठाया, वह ना मुराद रहा (१११) और जो नेक काम करेगा और मोमिन भी होगा, तो उस को न ज़ुल्म का खौफ़ होगा, और न नुकसान का (११२) और हम ने उस को इसी तरह का क़ुराने अरबी नाज़िल किया है और उस में तरह तरह के डरावे बयान कर दिये हैं ताकि लोग परहेज़गार बनें या खुदा के लिये नसीहत पैदा कर दे (११३) तो खुदा जो सच्चा बादशाह है, आली क़दर है और क़ुरान की वही जो तुम्हारी तरफ़ भेजी जाती है, उस के पूरा होने से पहले क़ुरान के (पढ़ने के) लिये जल्दी न किया करो और दुआ करो कि ऐ मेरे पर्वरदिगार मुझे और ज्यादा इल्म दे (११४) और हम ने पहले आदम से अहद लिया था मगर वह (उसे) भूल गये और हम ने उन में सब्र व सबात न देखा (११५)—रुकू—६

और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम के आगे सजदा करो तो सब सजदे में गिर पड़े, मगर इब्लीस ने इन्कार किया (११६) पस हमने फ़रमाया कि आदम यह तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है तो यह कहीं तुम दोनों को बहिश्त से निकलवा न दे, फिर तुम तकलीफ़ में पड़ जाओ (११७) यहाँ तुम को यह (आसाईश) होगी कि न भूखे रहोगे न नन्गे (११८) और यह कि न प्यासे रहो और धूप खाओ (११६) तो शैतान ने उन के दिल में वसवसा डाला (और) कहा, कि आदम, भला मैं तुम को (ऐसा) दरख़्त बताऊं (जो) हमेशा की ज़िन्दगी का (समरा दे) और (ऐसी) बादशाहत कि कभी ज़ाईल न हो (१२०) तो दोनों ने उस दरख़्त का फल खा लिया, तो उन पर उन की शर्मगाहें ज़ाहिर हो गईं और वह अपने (बदनों) पर बहिश्त के पत्ते चिपकाने लगे और आदम ने अपने पर्वरदिगार के हुक्म के ख़िलाफ़ किया तो (वह अपने मतलूब से) बे राह हो गये, (१२१) फिर उनके पर्वरदिगार ने उनको नवाज़ा तो उनपर मेहरबानी से तवज्जोह फ़रमाई और सीधी राह बताई (१२२) फ़रमाया कि तुम दोनों यहाँ से उतर जाओ, तुम में बाज़ बाज के दुश्मन (होंगे) फिर अगर मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास हिदायत आये तो जो शख़्स मेरी हिदायत की पैरवी करेगा, वह न गुमराह होगा न तकलीफ़ में पड़ेगा (१२३) और जो मेरी नसीहत से मूंह फेरेगा, उस की ज़िन्दगी तंग हो जायेगी और क़यामत को हम उसे अन्धा कर के उठायेंगे (१२४) वह कहेगा कि ऐ मेरे पर्वरदिगार

तूनें मुझे अन्धा कर के क्यों उठाया, मैं तो देखता भालता था (१२५) ख़ुदा फ़रमायेगा, कि ऐसा ही (चाहिये था) तेरे पास हमारी आयतें आईं तो तूने उन को भुला दिया, इसी तरह हम आज तुझ को भुला देंगे (१२६) और जो शख़्स हद से निकल जाये और अपने पर्वरदिगार की आयतों पर ईमान न लाये, हम उस को ऐसा ही बदला देते हैं और आख़िरत का अज़ाब बहुत सख़्त और बहुत देर रहने वाला है (१२७) क्या यह बात उन लोगो के लिये मूजिबे हिदायत न हुई कि हम उन से पहले बहुत से लोगों को हलाक कर चुके हैं, जिन के रहने के मक़ामात में यह चलते फिरते हैं, अक़्ल वालों के लिये इन में (बहुत सी) निशानियाँ हैं (१२८)—रुकू—७

और अगर एक बात तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से पहले सादिर और (अजज़ाये आमाल के लिये) एक मियाद मुक़र्रर न हो चुकी होती तो (नज़ूल) अज़ाब लाज़िम हो जाता (१२९) पस जो कुछ यह बकवास करते हैं, उस पर सब्र करो और सूरज निकलने से पहले और उस के ग़ुरुब होने से पहले अपने पर्वर-दिगार की तस्बीह व तहमीद किया करो और रात की साआते (अव्वलीन) में भी उस की तस्बीहें किया करो और दिन की अत-राफ़ (यानी दोपहर के क़रीब ज़िहर के वक्त भी) ताकि तुम ख़ुश हो जाओ (१३०) और किसी तरह के लोगों को जो हम ने दुनिया की ज़िन्दगी में आराईश की चीज़ों से बहरामन्द किया है कि उन की आज़माईश करें, उन पर निगाह करना और

तुम्हारे पर्वरदिगार की (अता फ़रमाई हुई) रोज़ी बहुत बेहतर और बाकी रहने वाली है (१३ । और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म करो और उस पर क़ायम रहो, हम तुम से रोज़ी के ख्वास्तगार नहीं, बल्कि तुम्हें हम रोज़ी देते हैं, और (नेक) अन्जाम (अहले) तक़वा का है (१३२) और कहते हैं कि यह (पैग़म्बर) अपने पर्वरदिगार की तरफ़ से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाते ? क्या इन के पास पहली किताबों की निशानी नहीं आई (१३३) और अगर हम उन को पैग़म्बर (के भेजने) से पेशतर, किसी अज़ाब से हलाक कर देते तो वह कहते कि ऐ हमारे पर्वरदिगार तूने हमारी तरफ़ कोई पैग़म्बर क्यों न भेजा, कि हम ज़लील व रुसवा होने से पहले तेरे कलाम (व एहकाम) की पैरवी करते (१३४) कह दो सब (नतायज आमाल के) मुन्तज़िर हैं, सो तुम भी मुन्तजिर रहो, अन्क़रीब तुम को मालूम हो जायेगा कि दीन के सीधे रस्ते पर चलने वाले कौन हैं, और (जन्नत की तरफ़) राह पाने वाले कौन हैं (हम या तुम) (१३५)—रुकू—८

—०—

सत्रहवाँ पारा—इक तर बलिन्नास

२१—सूर-ऐ-अम्बिया

सूर ऐ अम्बिया मक्के में उतरी, इसमें ११२ आयतें हैं और ७ रुकू हैं

शुरु ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

लोगों का हिसाब (आमाल का वक्त) नज़दीक आ पहुँचा है, और वह ग़फ़लत में (पड़े उस से) मूंह फेर रहे हैं (१) उन के पास कोई नई नसीहत उन के पर्वरदिगार की तरफ़ से नहीं आती, मगर वह उसे खेलते हुए सुनते हैं (२) उन के दिल ग़फ़लत में पड़े हुए हैं और ज़ालिम लोग (आपस में) चुपके चुपके बातें करते हैं कि यह (शख़्स कुछ भी) नहीं मगर तुम्हारे जैसा आदमी है तो तुम आंखों देखते जादू (की लपेट में) क्यों आते हो (३) (पैग़म्बर ने) कहा, कि जो बात आस्मान और ज़मीन में (कही जाती) है, मेरा पर्वरदिगार उसे जानता है, और वह सुनने वाला (और) जानने वाला है (४) बल्कि (ज़ालिम) कहने लगे कि यह (क़ुरान) परेशान (बातें हैं जो) ख़्वाब में (देख ली हैं, (नहीं) बल्कि इसने उसको अपनी तरफ़ से बना लिया है (नहीं) बल्कि यह (शेर है जो इस) शायर (का नतीज-ऐ-तबा) है तो जैसे पहले (पैग़म्बर निशानियाँ देकर) भेजे गये थे (उसी तरह) यह भी हमारे पास कोई निशानी लाये (५) इन से पहले जिन बस्तियों को हमने हलाक किया, वह ईमान नहीं लाई थीं, तो क्या यह ईमान ले आयेंगे (६) और हमने तुम से पहले मर्द ही (पैग़म्बर बना कर) भेजे, जिन की तरफ़ हम वही भेजते थे अगर तुम नहीं जानते तो जो याद रखते हैं, उन से पूछ लो (७) और हम ने उन के ऐसे जिस्म नहीं बनाये थे कि खाना न खायें, और न

वह हमेशा रहने वाले थे (८) फिर हम ने उनके बारे में (अपना) वायदा सच्चा कर दिया तो उन को और जिस को चाहा नजात दी और हद से निकल जाने वालों को हलाक कर दिया (९) हमने तुम्हारी तरफ़ ऐसी किताब नाज़िल की है, जिसमें तुम्हारा तज़करा है, क्या तुम नहीं समझते (१०)—रुकू—१

और हम ने बहुत सी बस्तियों को जो सितमगार थीं हलाक कर मारा और उन के बाद और लोग पैदा कर दिये हैं (११) जब उन्होंने हमारे (मुक़दमा) अज़ाब को देखा तो लगे उस से भागने (१२) मत भागो, और जिन (नैयमतों) में तुम ऐश व आसाईश करते थे, उनकी और अपने घरों की तरफ़ लौट जाओ, शायद तुम से इस बारे में दरयाफ़्त किया जाये (१३) कहने लगे, हाय शामत, बेशक हम ज़ालिम थे (१४) तो वह हमेशा इसी तरह पुकारते रहे, यहाँ तक कि हम ने उन को (खेती की तरह) काट कर (और आग की तरह) बुझा कर ढेर कर दिया है (१५) और हम ने आसमान और ज़मीन को और जो (मखलूक़ात) इन दोनों के दरमियान है, उस को, लहव व लाब के लिये पैदा नहीं किया (१६) अगर हम चाहते कि खेल (की चीजें यानी ज़नो फ़रज़न्द) बनायें तो अगर हम को करना ही होता, तो हम अपने पास से बना लेते (१७) (नहीं) बल्कि हम सच को झूठ पर खींच मारते हैं तो वह उस का सर तोड़ देता है और झूठ उसी वक्त नाबूद हो जाता है और जो बातें तुम बनाते हो, उन से तुम्हारी ही खराबी है (१८) और जो लोग आस्मानों

में और जो जमीन में हैं सब उसी के (ममलूक और उसी का) माल हैं और जो (फ़रिश्ते) उस के पास हैं वह उस की इबादत से न कनियाते हैं और न उकताते हैं (१९) रात दिन (उस की) तस्बीह करते रहते हैं (न थकते हैं) न उकताते हैं (२०) भला लोगों ने जो ज़मीन की चीज़ों से (बाज़ को) माबूद बना लिया है (तो क्या) वह उनको (मरने के बाद) उठा खड़ा करेंगे (२१) अगर आस्मान और ज़मीन में ख़ुदा के सिवा और माबूद होते तो ज़मीनो आस्मान दरहम बरहम हो जाते, जो यह लोग बताते हैं, ख़ुदाये मालिके अर्श उन से पाक हैं (२२) वह जो काम करता है, उस की पुर्सिश नहीं होगी और (जो काम यह लोग करते हैं (उस की) उन से पुर्सिश होगी (२३) क्या लोगों ने ख़ुदा को छोड़ कर और माबूद बना लिये हैं ? कह दो कि (इस बात पर) अपनी दलील पेश करो, यह (मेरी और) मेरे साथ वालों की किताब भी है और जो मुझ से पहले (पैग़म्बर) हुए हैं, उन की किताबें भी हैं, बल्कि (बात यह है कि) उन में अक्सर हक़ बात को नहीं जानते और इस लिये उस से मूंह फेर लेते हैं (२४) और जो पैग़म्बर हम ने तुम से पहले भेजे उन की तरफ़ यही वही भेजी कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी ही इबादत करो (२५) और कहते हैं कि ख़ुदा बेटा रखता है, वह पाक है (उस के न बेटा है न बेटी) बल्कि (जिन को यह लोग उस के बेटे और बेटियाँ समझते हैं) वह उस के इज़्ज़त वाले बन्दे हैं (२६) उस के आगे बढ़ के बोल नहीं सकते और उस के

हुक्म पर अमल करते हैं (२७) जो कुछ उन के आगे हो चुका है, और जो पीछे होगा, वह सब से वाक़िफ़ है और वह (उस के पास किसी को) सिफ़ारिश नहीं कर सकते, अगर उस शख़्स की जिस से ख़ुदा ख़ुश हो और वह उस की हैबत से डरते रहते हैं (२८) और जो शख़्स उन में से यह कहे, कि ख़ुदा के सिवा मैं माबूद हूँ, तो उसे हम दोज़ख़ की सज़ा देंगे, और ज़ालिमों को हम ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं (२९)—रुकू—२

क्या काफ़िरों ने नहीं देखा कि आस्मान और ज़मीन दोनों मिले हुए थे, तो हम ने उन को जुदा जुदा कर दिया और तमाम जानदार चीज़ें हम ने पानी से बनाईं. फिर यह लोग ईमान क्यों नहीं लाते (३०) और हम ने ज़मीन में पहाड़ बनाये ताकि लोग उन पर चलें (३१) और आस्मान को मेहफ़ूज़ छत बनाया इस पर भी वह हमारी निशानियों से मूंह फेर रहे हैं (३२) और वही तो है जिस ने रात और दिन और सूरज और चान्द को बनाया (यह सब (यानी सूरज और चान्द और सितारे) आस्मान में (इस तरह चलते हैं, गोया) तैर रहे हैं (३३) और (ऐ पैग़म्बर) हमने तुम से पहले किसी आदमी को बकाये दवाम नहीं बख़्शा. भला अगर तुम मर जाओ, तो क्या लोग हमेशा रहेंगे (३४) हर मुतनफ़्फ़िस को मौत का मज़ा चखना है और तुम लोगों को सख़्ती और आसूदगी में आज़माईश के तौर पर मुब्तिला करते हैं और तुम हमारी ही तरफ़ लौट कर आओगे (३५) और जब काफ़िर तुमको देखते हैं, तो तुमसे इस्तै-

हज़ा करते हैं, कि क्या यही शख़्श है जो तुम्हारे माबूदों का ज़िक्र (बुराई से) किया करता है, हालाँकि वह ख़ुद रेहमान के नाम से मुन्क़िर हैं (३६) इन्सान (कुछ ऐसा जल्द बाज़ है कि गोया) जल्द बाज़ो ही से बनाया गया है मैं तुम लोगों को अन्क़रीब अपनी निशानियाँ दिखाऊंगा, तो तुम जल्दी न करो (३७) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो (जिस अज़ाब का) यह वईद है (वह) कब आयेगा (३८) ऐ काश ! काफ़िर उस वक्त को जानें, जब वह अपने मूंहों पर से (दोज़ख की) आग को रोक न सकेंगे, और न अपनी पीठों पर से, और न उन का कोई मददगार होगा (३९) बल्कि क़यामत उन पर नागहाँ आ वाक़ेय होगी और उन के होश खो देगी, फिर न तो वह उस को हटा ही सकेंगे और न उन को मोहलत दी जायेगी (४०) और तुम से पहले भी पग़म्बरों के साथ इस्तहज़ा होता रहा है, तो जो लोग उन से तमसख़ुर किया करते थे, उन को उसी (अज़ाब) ने जिस की हंसी उड़ाते थे, आ घेरा (४१) रुकू—२

कहो कि रात और दिनमें ख़ुदा से तुम्हारी कौन हिफ़ाज़त कर सकता है ? बात यह है कि यह अपने पर्वरदिगार की याद से मूंह फेरे हुए हैं (४२) क्या हमारे सिवा, इनके और माबूद हैं कि उनको (मुसायब से) बचा सकें ? वह आप अपनी मदद तो कर ही नहीं सकते और न हम से पनाह ही दिये जायेंगे (४३) बल्कि हम उन लोगों को और उनके बाप, दादा को मुतमत्तो

करते रहे, यहाँ तक कि (इसी हालत में) उनकी उम्रें बसर हो गईं, क्या यह नहीं देखते कि हम ज़मीन को उसके किनारों से घटाते चले आते हैं तो क्या यह लोग ग़लबा पाने वाले हैं ? (४४) कह दो कि मैं तुम को हुक्मे ख़ुदा के मुताबिक नसीहत करता हूँ और बहरों को जब नसीहत की जाये तो वह पुकार को सुनते ही नहीं (४५) और अगर उनको तुम्हारे पर्वरदिगार का थोड़ा सा अज़ाब भी पहुंचे तो कहने लगें कि हाय कमबख़्ती हम बेशक सितमगार थे (४६) और हम क़यामत के दिन इन्साफ़ की तराज़ू खड़ी करेंगे, तो किसी शख़्स की ज़रा भी हक़ तलफ़ी न की जायेगी, और अगर राई के दाने के बराबर भी (किसी का अमल) होगा तो हम उसको ला हाज़िर करेंगे और हम हिसाब करने को काफ़ी हैं (४७) और हमने मूसा और हारुन को (हिदायत और गुमराही में) फ़र्क कर देने वाली और (सरतापा) रोशनी और नसीहत (कि किताब) अता की (यानी) परहेज़गारों के लिये (४८) जो बिन देखे अपने पर्वरदिगार से डरते हैं और क़यामत का भी ख़ौफ़ रखते हैं (४९) और यह मुबारिक नसीहत है, जिसे हमने नाज़िल फ़रमाया है तो क्या तुम इससे इन्कार करते हो (५०)—रुकू ४

और हमने इब्राहीम को पहले ही से हिदायत दी थी, और हम उन (के हाल) से वाकिफ़ थे (५१) जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा, कि यह क्या मूर्तें हैं जिन (की परस्तिश) पर तुम मौतक़िफ़ (व क़ायम) हो (५२) वह कहने

लगे कि हमने अपने बाप दादा को इनकी परस्तिश करते देखा है (५३) (इब्राहीम ने) कहा, कि तुम भी (गुमराह हो) और तुम्हारे बाप दादा भी सरीह गुमराही में पड़े रहे (५४) वह बोले कि क्या तुम हमारे पास (वाक़ई) हक़ लाये हो या (हम से) खेल (की बातें) करते हो (५५) (इब्राहीम ने) कहा, (नहीं) बल्कि तुम्हारा पर्वरदिगार, आस्मानों और ज़मीन का पर्वर-दिगार है, जिस ने उनको पैदा किया है और मैं इस (बात) का गवाह (और) इसी का क़ाईल हूं (५६) और ख़ुदा की क़सम जब तुम पीठ फेर कर चले जाओगे तो मैं तुम्हारे बुतों से एक चाल चलूंगा (५७) फिर उनको तोड़ कर रेज़ा रेज़ा कर दिया, मगर एक बड़े (बुत) को (न तोड़ा) ताकि वह उसकी तरफ़ रजू करें (५८) कहने लगे, कि हमारे माबूदों के साथ यह मामला किस ने किया ? वह तो कोई ज़ालिम है (५९) लोगों ने कहा कि हमने एक जवान को ज़िक्र करते हुए सुना है, उसको इब्राहीम कहते हैं (६०) वह बोले कि उसे लोगों के सामने लाओ, ताकि वह गवाह रहे (६१) जब इब्राहीम आये तो बुत परस्तों ने कहा कि इब्राहीम भला यह काम हमारे माबूदों के साथ तुमने किया है ? (६२) (इब्राहीम ने) कहा, (नहीं) बल्कि यह उनके इस बड़े (बुत) ने किया (होगा) अगर यह बोलते हों तो इनसे पूछ लो (६३) उन्होंने अपने दिल में ग़ौर किया तो आपस में कहने लगे बेशक तुम्हीं बे इन्साफ़ हो (६४) फिर शर्मिन्दा (होकर) सर नीचा कर लिया (इस पर भी) इब्राहीम से कहने लगे (कि) तुम जानते हो, यह बोलते नहीं (६५) (इब्राहीम ने) कहा, कि फिर तुम ख़ुदा को

छोड़ कर ऐसी चीज़ों को क्यों पूजते हो, जो तुम्हें न कुछ फ़ायदा दे सकें, और न नुक़सान पहुंचा सकें (६६) तुफ़ है तुम पर, और जिनको तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो उन पर भी क्या तुम अक़्ल नहीं रखते (६७) (तब वह) कहने लगे कि अगर तुम्हें (इस से अपने माबूद का इन्तक़ाम लेना और) कुछ करना है तो इसको जला दो और अपने माबूदों की मदद करो (६८) हमने हुक्म दिया, ऐ आग, सर्द हो जा और इब्राहीम पर (मूजिबे) सलामती (बन जा) (६९) उन लोगों ने बुरा तो उनका चाहा था, मगर हमने उन्हीं को नुक़सान में डाल दिया (७०) और इब्राहीम और लूत को उस सर ज़मीन की तरफ़ बचा निकाला, जिसमें हमने अहले आलम के लिये बर्कत रखी है (७१) और हमने इब्राहीम को इसहाक़ अता किये और मुस्तज़ाद बराँ याक़ूब और सब को नेक बख़्त किया (७२) और उनको पेशवा बनाया, कि हमारे हुक्म से हिदायत करते थे और उनको नेक काम करने और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने का हुक्म भेजा और वह हमारी इबादत किया करते थे (७३) और लूत (का क़िस्सा याद करो) जब उनको हमने हुक्म (यानी हिकमत और नब्वत) और इल्म बख़्शा और उसी बस्ती से जहाँ के लोग गन्दे काम किया करते थे, बचा निकला, बेशक वह बुरे और बद किर्दार लोग थे (७४) और उन्हें अपनी रहमत (के महल में) दाखिल किया, कुछ शक नहीं कि वह नेक बख़्तों में थे (७५)—रुकू ५

और नूह (का क़िस्सा भी याद करो) जब इससे पेशतर

उन्होंने हमको पुकारा तो हमने उनकी दुआ क़बूल फ़रमाई, और उनको और उनके साथियों को बड़ी घबड़ाहट से नजात दी (७६) और जो लोग हमारी आयतों की तक़ज़ीब किया करते थे, उन पर नफ़रत बख़्शी, बेशक वह बुरे लोग थे, सो हमने उन सब को ग़र्क़ कर दिया (७७) और दाऊद और सुलैमान का हाल भी सुन लो (कि) जब वह एक खेती का मुक़दमा फ़ैसला करने लगे, जिसमें कुछ लोगों की बकरियाँ रात को चर गईं (और उसे रौन्द गईं) थीं और हम उनके फ़ैसले के वक्त मौजूद थे (७८)* तो हमने फ़ैसला (करने का तरीक़) सुलैमान को समझा दिया और हमने दोनों को हुक्म (यानी हिकमत नबव्वत) और इल्म बख़्शा था, और हमने पहाड़ों को दाऊद का मुसख़्ख़र कर दिया था, कि उनके साथ तस्बीह करते थे, और जानवरों को भी (मुसख़्ख़र कर दिया था और हम ही) ऐसा करने वाले थे (७९) और हमने तुम्हारे लिये उनको एक (तरह का) लिबास बनाना

*आयत ७८:—हज़रत दाऊद ने यह फ़ैसला किया कि बकरियाँ खेती वालों को दिलवा दीं, हज़रत सुलैमान को चरवाहों से यह हाल मालूम हुआ तो उन्होंने कहा कि अगर मैं तुम्हारा मुक़दमा फ़ैसला करने वाला होता तो कुछ और फ़ैसला करता यह खबर हज़रत दाऊद को हुई तो उन्होंने हज़रत सुलैमान को बुलाकर कहा, कि तुम इस मुक़दमे का फ़ैसला क्या करते हो, उन्होंने कहा कि मेरा फ़ैसला यह है कि खेती वालों को बकरियां दिलवाई जायें कि उनके दूध वग़ैरा से फ़ायदा उठायें और बकरियों के मालिक खेती में तुख़म रेज़ी करें, जब खेती इस हालत में हो जाये जिस हालत में पहले थी तो उसको खेती वाले ले लें और बकरियां उनके मालिकों को वापिस कर दी जायें।

भी सिखा दिया, ताकि तुमको लड़ाई के (ज़रर) से बचाये, पस तुमको शुक्रगुज़ार होना चाहिये (८०) और हमने तेज़ हवा सुलैमान के ताबैये (फ़रमान) कर दी थी जो उनके हुक्म से उस मुल्क में चलती थी, जिसमें हमने बर्कत दी थी (यानी शाम) और हम हर चीज़ से ख़बरदार हैं (८१) और देवों (की जमायत को भी उनके ताबै कर दिया था, कि उन) में से बाज़ उनके लिये ग़ोता मारते थे, और इसके सिवा और काम भी करते थे और हम उनके निगैहबान थे (८२) और अय्यूब को (याद करो) जब उन्होंने अपने पर्वरदिगार से दुआ की कि मुझे ईज़ा हो रही है और तू सबसे बढ़ कर रहम करने वाला है (८३) तो हमने उनकी दुआ क़बूल कर ली और जो उनको तकलीफ़ थी वह दूर कर दी और उन को बाल बच्चे भी अता फ़रमाये और अपनी मेहरबानी से उनके साथ उतने ही और (बख्शे) और इबादत करने वालों के लिये (यह) नसीहत है (८४) और इसराईल और इद्रीस और ज़ुलकफ़ल (को भी याद करो) यह सब सब्र करने वाले थे (८५) और हमने उनको अपनी रेहमत में दाखिल किया बिला शुब्ह वह नेकू कार थे (८६) और ज़ुलनून (को याद करो) जब वह (अपनी क़ौम से नाराज़ होकर) ग़ुस्से की हालत में चल दिये और ख्याल किया कि हम उन पर क़ाबू नहीं पा सकेंगे, आखिर अन्धेरे में (ख़ुदा को) पुकारने लगे, कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक है (और) बेशक मैं क़सूरवार हूं (८७) तो हमने उनकी दुआ क़बूल कर ली, और उनको ग़म से नजात

बख़्शी, और ईमान वालों को हम इसी तरह नजात दिया करते हैं (८८) और ज़किया (को याद करो) जब उन्होंने अपने पर्वरदिगार को पुकारा कि पर्वरदिगार ! मुझे अकेला न छोड़, और तू सबसे बेहतर वारिस है (८६) तो हमने उनकी पुकार सुन ली और उनको यँहिया बख़्शे, और उनकी बीबी को उनके एहसने मआशरत के क़ाबिल बना दिया, यह लोग लपक लपक कर नेकियाँ करते और हमें उमीद और ख़ौफ़ से पुकारते और हमारे आगे आजिज़ी किया करते थे (९०) और उन (मरियम को भी याद करो) जिन्होंने अपनी इफ़्फ़त को मेहफूज़ रखा, तो हमने उनमें अपनी रूह फूंक दी और उनके बेटे को अहले आलम के लिये निशानी बना दिया (९१) यह तुम्हारी जमायत एक ही जमायत है, और मैं तुम्हारा पर्वरदिगार हूं तो मेरी ही इबादत किया करो (९२) और यह लोग अपने मामले में बाहम मुतफ़र्रिक़ हो गये (मगर) सब हमारी तरफ़ रजू करने वाले हैं (९३)—रुकू—६

जो नेक काम करेगा और मोमिन भी होगा, तो उसकी कोशिश रायगाँ न जायेगी और हम उसके लिये(सवाबे आमाल) लिख रहे हैं (९४) और जिस बस्ती (वालों) को हम ने हलाक कर दिया, महाल है कि (वह दुनिया की तरफ़ रजू करें) वह रजू नहीं करेंगे (९५) यहां तक कि याजूज और माजूज खोल दिये जायें और वह हर बलन्दी से दौड़ रहे हों (९६) और (क़यामत का सच्चा) वायदा करीब आ जाये, तो नागाह,

काफ़िरों की आँखें खुली की खुली रह जायें और कहने लगें कि हाय शामत, हम इस (हाल) से ग़फ़लत में रहे, बल्कि हम (अपने हक़ में) ज़ालिम थे (९७) (काफ़िरो उस रोज़) तुम, और जिन की तुम ख़ुदा के सिवा इबादत करते हो (दोज़ख़ का) ईन्धन होगे (और) तुम (सब) उस में दाख़िल होकर रहोगे (९८) अगर यह लोग (दर हक़ीक़त) माबूद होते तो उस में दाख़िल न होते और सब उस में हमेशा (जलते) रहेंगे (९९) वहाँ उन को चिल्लाना होगा और उस में (कुछ) न सुन सकेंगे (१००) जिन लोगों के लिये हमारी तरफ़ से भलाई मुक़र्रर हो चुकी है, वह उस से दूर रखे जायेंगे (१०१) (यहाँ तक कि) उस की आवाज़ भी नहीं सुनेंगे, और जो कुछ उन का जी चाहेगा, उस में (यानी हर तरह के ऐश और लुत्फ़ में) हमेशा रहेंगे (१०२) उन को (उस दिन का) बड़ा भारी ख़ौफ़ ग़मगीन नहीं करेगा और फ़रिश्ते उन को लेने आयेंगे (और कहेंगे कि) यही वह दिन है, जिस का तुम से वायदा किया जाता था (१०३) जिस दिन हम आस्मान को इस तरह लपेट लेंगे, जैसे ख़तों का तूमार लपेट लेते हैं, जिस तरह हम ने (कायनात को) पहले पैदा किया था उसी तरह दोबारा पैदा कर देंगे (यह) वायदा (जिस का पूरा करना लाज़िम) है, हम (ऐसा) ज़रूर करने वाले हैं (१०४) और हम ने नसीहत (की किताब यानी तौरात) के बाद ज़बूर में लिख दिया था कि मेरे नेकूकार बन्दे मुल्क के वारिस होंगे (१०५) इबादत करने वाले लोगों के लिये इस में (ख़ुदा के हुक्मों

को) तब्लीग़ है (१०६) और (ऐ मोहम्मद) हमने तुम को तमाम जहान के लिये रेहमत (बनाकर) भेजा है (१०७) कह दो कि मुझ पर (ख़ुदा की तरफ़ से) यह वही आती है कि तुम सब का माबूद ख़ुदाये वाहिद है तो तुम को चाहिये कि फ़रमांबर्दार हो जाओ (१०८) अगर यह लोग मूंह फेरें तो कह दो कि मैंने तुम सब को यकसाँ (अहकामे) इलाही से आगाह कर दिया है और मुझ को मालूम नहीं कि जिस चीज़ का तुम से वायदा किया जाता है वह (अन) क़रीब (आने वाली) है या (उस का वक्त) दूर है (१०९) जो बात पुकार कर की जाये वह उसे भी जानता है, और जो तुम पोशीदा करते हो, उस से भी वाक़िफ़ है (११०) और मैं नहीं जानता, शायद वह तुम्हारे लिये आज़-माईश हो, और एक मुद्दत तक (तुम उस से) फ़ायदा उठाते रहो (१११) पैग़म्बर ने कहा कि ऐ मेरे पर्वरदिगार हक़ के साथ फ़ैसला कर दे, और हमारा पर्वरदिगार बड़ा मेहरबान है, उसी से उन बातों में, जो तुम बयान करते हो, मदद माँगी जाती है (११२)—रुकू—७

२२—सूर-हे-अल-हज्ज

यह सूरत मदीने में उतरी, और इसमें ७८ आयतें और १० रुकू हैं

शुरु ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है

लोगो ! अपने पर्वरदिगार से डरो, कि क़यामत का ज़लज़ला एक हादस-ऐ अज़ीम होगा (१) (ऐ मुख़ातिब) जिस दिन तू उस को देखेगा (उस दिन यह हाल होगा कि) तमाम दूध पिलाने वाली औरतें अपने बच्चों को भूल जायेंगी और तमाम हमल वालियों के हमल गिर पड़ेंगे, और लोग तुझ को मतवाले नज़र आयेंगे, मगर वह मतवाले नहीं होंगे बल्कि (अज़ाब देख कर) मदहोश हो रहे होंगे, बेशक ख़ुदा का अज़ाब बड़ा सख़्त है (२) और बाज़ लोग ऐसे हैं जो ख़ुदा (की शान) में इल्म (व दानिश) के बग़ैर झगड़ते और हर शैताने सरकश की पैरवी करते हैं (३) जिस के बारे में लिख दिया गया है कि जो उसे दोस्त रखेगा, तो वह उसे गुमराह कर देगा, और दोज़ख़ के अज़ाब का रस्ता दिखायेगा (४) लोगो ! अगर तुम को मरने के बाद जी उठने में कुछ शक हो तो हम ने तुम को (पहली बार भी) तो पैदा किया था (यानी इब्तिदा में) मिट्टी से, फिर उस से नुत्फ़ा बना कर, फिर उस से ख़ून का लोथड़ा बनाकर, फिर उस से बोटी बनाकर, जिस की बनावट कामिल भी होती है और नाक़िस भी, ताकि तुम पर (अपनी ख़ालीक़ियत) ज़ाहिर कर दें, और हम जिसको चाहते हैं एक मीयादे मुक़र्रर तक पेट में ठहराये रखते हैं, फिर तुमको बच्चा बनाकर निकालते हैं, फिर तुम जवानी को पहुंचते हो और बाज़ (क़ब्ल अज़ पीरी) मर जाते हैं (शेख़ फ़ानी हो जाते और बुढ़ापे की) निहायत ख़राब उम्र की तरफ़ लौटाये जाते हैं, कि बहुत कुछ जानने के बाद बिल्कुल बे इल्म हो

जाते हैं और (ऐ देखने वाले) तू देखता है (कि एक वक्त में) ज़मीन ख़ुश्क (पड़ी होती है) फिर जब हम उसपर मेहं बरसाते हैं, तो वह शादाब हो जाती और उभरने लगती है और तरह तरह की बा रौनक़ चीज़ें लगती हैं (५) इन कुदरतों से ज़ाहिर है कि ख़ुदा ही (क़ादिरे मुतलक़ है जो) बरहक़ हैं, और यह कि वह मुर्दों को ज़िन्दा कर देता है और यह कि वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है (६) और यह कि क़यामत आने वाली है, इस में कुछ शक नहीं, और यह कि ख़ुदा सब लोगों को जो क़बरों में हैं, जिला उठायेगा (७) और लोगों में कोई ऐसा भी है जो ख़ुदा (की शान) में बग़ैर इल्म (व दानिश) के और बग़ैर हिदायत के और बग़ैर किताबे रोशन के झगड़ता है (८) (और तकब्बुर से) गर्दन मोड़ लेता (है) ताकि (लोगों को) ख़ुदा के रस्ते से गुमराह कर दे, उस के लिये दुनिया में ज़िल्लत है और क़यामत के दिन हम उसे अज़ाबे (आतिशे) सोज़ाँ का मज़ा चखायेंगे (९) (ऐ सरकश) यह उस (कुफ्र) की सज़ा है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा था और ख़ुदा अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं (१०)— रुकू—१

और लोगों में बाज़ ऐसा भी है जो किनारे खड़ा होकर ख़ुदा की इबादत करता है अगर उस को कोई दुनियावी फ़ायदा पहुंचे तो उस के सबब मुतमैयन हो जाये और अगर कोई आफ़त पड़े तो मूंह के बल लौट जाये (यानी फिर काफ़िर हो जाये) उस ने दुनिया में भी नुकसान उठाया और आख़िरत में भी,

यही तो नुक़साने सरीह है (११) यह ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ को पुकारता है जो न उसे नुक़सान पहुँचाये और न फ़ायदा दे सके, यही तो परले दर्जे की गुमराही है (१२) (बल्कि) ऐसे शख़्स को पुकारता है, जिस का नुक़सान फ़ायदे से ज़्यादा क़रीब है ऐसा दोस्त भी बुरा और ऐसा हम सोहबत भी बुरा (१३) जो लोग ईमान लाये और अमल नेक करते रहे, ख़ुदा उन को बहिश्तों में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें चल रही हैं, कुछ शक नहीं कि ख़ुदा जो चाहता है करता है (१४) जो शख़्स यह गुमान करता है कि ख़ुदा उस को दुनिता और आखिरत में मदद नहीं देगा, तो उस को चाहिये कि ऊपर की तरफ़ (यानी अपने घर की छत में) एक रस्सी बान्धे फिर (उस से अपना) गला घोन्ट ले, फिर देखे कि आया यह तदबीर उस के गुस्से को दूर कर देती है (१५) और इसी तरह हम ने इस क़ुरान को उतारा है जिस की तमाम) बातें खुली हुई हैं, और यह (याद रखो) कि ख़ुदा जिस को चाहता है, हिदायत देता है (१६) जो लोग मोमिन (यानी मुसलमान) हैं, और जो यहूदी हैं, और सितारा परस्त और ईसाई और मजूसी और मुश्रिक, ख़ुदा उन (सब) में क़यामत के दिन फ़ैसला कर देगा, बेशक, ख़ुदा हर चीज़ से बा ख़बर है (१७) क्या तुम ने नहीं देखा कि जो (मख़लूक़) आस्मानों में है और जो ज़मीन में है, और सूरज और चान्द और सितारे, और पहाड़ और दरख़्त और चारपाये और बहुत से इन्सान ख़ुदा को सजदा करते हैं

और बहुत से ऐसे हैं जिन पर अज़ाब साबित हो चुका है और जिस शख़्स को ख़ुदा ज़लील करे, उस को कोई इज्ज़त देने वाला नहीं, बेशक, ख़ुदा जो चाहता है करता है (१८) यह दो (फ़रीक़) एक दूसरे के दुश्मन, अपने पर्वरदिगार (के बारे) में झगड़ते हैं तो जो काफ़िर हैं, उन के लिये आग के कपड़े क़ता किये जायेंगे (और) उन के सरों पर जलता हुआ पानी डाला जायेगा (१९) इस से उन के पेट के अन्दर की चीजें और खालें जल जायेंगी (२०) और उन (के मारने ठोकने के) लिये लोहे के हथौड़े होंगे (२१) जब वह चाहेंगे कि इस रन्जो (तक़लीफ़ की वज्हा) से दोज़ख़ से निकल जायें, तो फ़िर उसी में लौटा दिये जायेंगे, और (कहा जायेगा कि) जलने के अज़ाब का मज़ा चखते रहो (२२)—रुकू—२

जो लोग ईमान लाये और अमल नेक करते रहे, ख़ुदा उन को बहिश्तों में दाख़िल करेगा, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, वहाँ उन को सोने के कङ्गन पहनाये जायेंगे और मोती और वहाँ उन का लिबास रेशमी होगा (२३) और उन को पाकीज़ा कलाम की हिदायत की गई और (ख़ुदाये) हमीद की राह बताई गई (२४) जो लोग काफ़िर हैं और (लोगों को) ख़ुदा के रस्ते से, और मसजिदे मोहतरम से जिसे हम ने लोगों के लिये, यकसाँ, (इबादत गाह) बनाया है रोकते हैं, ख़्वाह वह वहाँ के रहने वाले हों या बाहर से आने वाले, और जो इस में शरारत से कजरवी (व कुफ़्र) करना चाहे उस को हम दर्द देने वाले अज़ाब का मज़ा चखायेंगे (२५)—रुकू—३

और (एक वक्त था) जब हम ने इब्राहीम के लिये खान-ऐ-क़ाबा को मक़ाम मुक़र्रर किया (और इर्शाद फ़रमाया) कि मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न कीजो, और तवाफ़ करने वालों और क़ायम करने वालों और शक करने वालों (और) सजदा करने वालों के लिये मेरे घर को साफ़ रखा करो (२६) और लोगों में हज़ के लिये निदा कर दो कि तुम्हारी तरफ़ पैदल और दुबले दुबले ऊन्टों पर जो दूर (दराज़) रस्तों से चले आते हों (सवार होकर) चले आयें (२७) ताकि अपने फ़ायदे के कामों के लिये हाज़िर हों (क़ुर्बानी के) अय्यामें मालूम में चहार पायान मवेशी (के ज़ब्ह के वक्त) जो ख़ुदा ने उन को दिये हैं, उन पर ख़ुदा का नाम लें, उस में से तुम भी खाओ फ़क़ीर दरमान्दा को भी खिलाओ (२८) फिर चाहिये कि लोग अपना मैल कुचैल दूर करें और नज्रें पूरी करें और खान-ऐ-क़दीम (यानी बैतुल्लाह) का तवाफ़ करें (२९) यह (हमारा हुक्म है) और जो शख़्स अदब की चीज़ों की जो ख़ुदा ने मुक़र्रर की हैं, अज़मत रखे, तो यह पर्वरदिगार के नज़दीक उस के हक़ में बेहतर है और तुम्हारे लिये मवेशी हलाल कर दिये हैं, सिवा उन के जो तुम्हें पढ़कर सुनाये जाते हैं, तो बुतों की पलीदी से बचो, और झूठी बात से इज्तिनाब करो (३०) सिर्फ़ एक ख़ुदा के हो कर और उस के साथ शरीक न ठैहरा कर और जो शख़्स (किसी को) ख़ुदा के साथ शरीक मुक़र्रर करे, तो वह गोया ऐसा है, जैसे आसमान से गिर पड़े, फिर उस को परिन्दे उचक

ले जायें, या हवा किसी दूर जगह उठा कर फैंक दे (३१) यह (हमारा हुक्म) है और जो शख़्स अदब की चीज़ों की जो ख़ुदा ने मुक़र्रर की हैं, अज़मत रखे, तो यह (फ़ेल) दिलों की परहेज़-गारी में से है (३२) उन में एक वक्त मुक़र्रर तक तुम्हारे लिये फ़ायदे हैं फिर उन को खान-ऐ-क़दीम (यानी बैतुल्लाह) तक पहुंचना और ज़ब्हा होना है (३३)—रुकू—४

और हमने हर एक उम्मत के लिये कुर्बानी का तरीक़ मुक़र्रर कर दिया है, ताकि जो मवेशी चारपाये ख़ुदा ने उन को दिये हैं (उन के ज़ब्ह करने के वक्त) उन पर ख़ुदा का नाम लें, सो तुम्हारा माबूद एक ही है, तो उस के फ़रमाँबर्दार हो जाओ और आजिज़ी करने वालों को ख़ुशख़बरी सुनाओ (३४) यह वह लोग हैं कि जब ख़ुदा का नाम लिया जाता है तो उन के दिल डर जाते हैं और (जब) उन पर मुसीबत पड़ती है, तो सब्र करते हैं और नमाज़ आदाब से पढ़ते हैं, और जो (माल) हम ने उन को अता फ़रमाया है, उस में से (नेक कामों में) ख़र्च करते हैं (३५) और कुर्बानी के ऊन्टों को भी हम ने तुम्हारे लिये शुआइरे ख़ुदा मुक़र्रर किया है उन में तुम्हारे लिये फ़ायदे हैं तो (कुर्बानी करने के वक्त) क़तार बान्ध कर उन पर ख़ुदा का नाम लो, जब पहलू के बल गिर पड़ें, तो उन में से खाओ और क़नायत से बैठ रहने वालों और सवाल करने वालों को भी खिलाओ, इस तरह हम ने उन को, तुम्हारे ज़ेरे फ़रमान कर दिया है, ताकि तुम शुक्र करो (३६) ख़ुदा तक न उन का

गोश्त पहुंचता है और न खून, बल्कि उस तक तुम्हारी परहेज़-गारी पहुंचती है, इसी तरह ख़ुदा ने उन को तुम्हारा मुसख़्खर कर दिया है ताकि इस बात के बदले उस ने तुम को हिदायत बख्शी है, उसे बुज़ुर्गी से याद करो, और (ऐ पैग़म्बर) नेकूकारों को खुशख़बरी सुना दो (३७) ख़ुदा तो मोमिनों से उस के दुश्मनों को हटाता रहता है, बेशक ख़ुदा किसी खयानत करने वाले और कुफ़ाने नैयमत करने वाले को दोस्त नहीं रखता (३८)—रुकू - ५

जिन मुसलमानों से (ख़्वाह मख़्वाह) लड़ाई की जाती है, उन को इजाज़त है कि वह भी लड़ें क्योंकि उन पर ज़ुल्म हो रहा है, और ख़ुदा (उन की मदद करेगा) यक़ीनन वह उन की मदद पर क़ादिर है (३९) यह वह लोग हैं कि अपने घरोंसे नाहक़ निकाल दिये गये (उन्होंने कुछ क़सूर नहीं किया) हाँ यह कहते हैं कि हमारा पर्वरदिगार ख़ुदा है और अगर ख़ुदा लोगों को एक दूसरे से न हटाता रहता तो (राहिबों के) सोमैय और (ईसाईयों के) गिरजे, और (यहूदियों के) इबादत खाने और (मुसलमानों की) मसजिदें, जिनमें ख़ुदा का बहुत सा जिक्र किया जाता है, वीरान हो चुकी होतीं और जो शख्स ख़ुदा की मदद करता है, ख़ुदा उसकी ज़रुर मदद करता है बेशक ख़ुदा तवाना और ग़ालिब है (४०) यह वह लोग हैं कि अगर हम उन को मुल्क में दस्तरस दें तो नमाज़ पढ़ें और ज़कात अदा करें और नेक काम करने का हुक्म दें और बुरे कामों से मना करें, और सब कामों का

अन्जाम ख़ुदा ही के अख़्तियार में है (४१) और अगर यह लोग तुमको झुठलाते हैं तो उनसे पहले नूह की क़ौम और आद और समूद भी (अपने पैग़म्बरों को) झुठला चुके हैं (४२) और क़ौमे इब्राहीम और क़ौमे लूत भी (४३) और मदीन के रहने वाले भी और मूसा भी तो झुठलाये जा चुके हैं, लेकिन मैं काफ़िरों को मोहलत देता रहा, फिर उन को पकड़ लिया, तो (देख लो कि) मेरा अज़ाब कैसा (सख्त) था (४४) और बहुत सी बस्तियाँ हैं कि हम ने उन को तबाह कर डाला, कि वह नाफ़रमान थीं, सो वह अपनी छतों पर गिर पड़ी हैं, और (बहुत से) कुएँ बेकार, और (बहुत से) महल वीरान (पड़े हैं) (४५) क्या उन लोगों ने मुल्क में सैर नहीं की ताकि उन के दिल (ऐसे) होते कि उन से समझ सकते, और कान (ऐसे) होते कि उनसे सुन सकते, बात यह है कि आँखें अन्धी नहीं होतीं, बल्कि दिल जो सीनों में हैं (वह) अन्धे होते हैं (४६) और यह (लोग) तुम से अज़ाब के लिये जल्दी कर रहे हैं और ख़ुदा अपना वायदा हर्गिज़ खिलाफ़ नहीं करेगा, और बेशक तुम्हारे पर्वरदिगार के नज़दीक एक रोज़ तुम्हारे हिसाब की रु से दस हज़ार बरस के बराबर है (४७) और बहुत सी बस्तियाँ ऐसी हैं कि मैं उन को मोहलत देता रहा, और वह नाफ़रमान थीं, फिर मैंने उन को पकड़ लिया, और मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है (४८)—रुकू—१

(ऐ पैग़म्बर) कह दो कि लोगो ! मैं तुम को ख़ुल्लम ख़ुल्ला नसीहत करने वाला हूँ (४९) तो जो लोग ईमान लाये और

काम नेक किये, उन के लिये बख्शिश और आबरु की रोज़ी है (५०) और जिन लोगों ने हमारी आयतों में (अपने ज़ोमे बातिल में) हमें आजिज़ करने के लिये सैई की, वह अहले दोज़ख हैं (५१) और हम ने तुम से पहले कोई रसूल और नबी नहीं भेजा, मगर(मगर उसका यह हाल था)कि जब वह कोई आरज़ू करता था तो शैतान उस की आरज़ू (वसवसे) में डाल देता है, तो जो (वसवसा) शैतान डालता है खुदा उस को दूर कर देता है, फिर खुदा अपनी आयतों को मज़बूत कर देता है और खुदा इल्म वाला (और) हिकमत वाला है (५२) ग़रज़ (इस से) यह है कि जो (वसवसा) शैतान डालता है, उस को उन लोगों के लिये, जिन के दिलों में बीमारी है और जिन के दिल सख्त हैं, ज़रिय-ऐ-आज़माईश ठहराये, बेशक ज़ालिम परले दर्जे की मुख़ालिफ़त में हैं (५३) और यह भी ग़रज़ है कि जिन लोगों को इल्म अता हुआ है वह जान लें कि (यानी वही) तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से हक़ है, तो वह उस पर ईमान लायें और उन के दिल खुदा के आगे आजिज़ी करें और जो लोग ईमान लाये हैं, खुना उन को सीधे रस्ते की तरफ़ हिदायत करता है (५४) और काफ़िर लोग हमेशा इस से शक में रहेंगे, यहाँ तक कि क़यामत उन पर नागहां आ जाये या एक ना मुबारिक दिन का अज़ाब उन पर आ वाक़ैय हो (५५) उस रोज़ बादशाही खुदा ही की होगी (और) वह उन में फ़ैसला कर देगा, तो जो लोग ईमान लाये और अमल नेक करते रहे वह नैयमत के बाग़ों

में होंगे (५६) और जो काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुठलाते रहे, उन के लिये ज़लील करने वाला अज़ाब होगा (५७)—रुकू—७

और जिन लोगों ने ख़ुदा की राह में हिजरत की फिर मारे गये या मर गये, उनको ख़ुदा अच्छी रोज़ी देगा, बेशक ख़ुदा सबसे बेहतर रिज़्क़ देने वाला है (५८) वह उनको ऐसे मक़ाम में दाख़िल करेगा जिसे वह पसन्द करेंगे और ख़ुदा तो जानने वाला (और) बुर्दबार है (५९) और जो शख़्स (किसी को) उतनी ही ईज़ा दे जितनी ईज़ा उसको दी गई, तो ख़ुदा उसकी मदद करेगा बेशक ख़ुदा मआफ़ करने वाला (और) बख़्शने वाला है (६०) यह इसलिये कि ख़ुदा रात को दिन में दाख़िल करता है, और दिन को रात में दाख़िल करता है और ख़ुदा तो सुनने वाला देखने वालाहै (६१)यह इसलिये कि ख़ुदा ही बरहक़ है और जिस चीज़ को (काफ़िर) ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं वह बातिल है, और इसलिये कि ख़ुदा रफ़ी उशशन और बड़ा है (६२) क्या तुम नहीं देखते कि ख़ुदा आस्मान से मैंह बरसाता है, तो ज़मीन सर सब्ज़ हो जाती है, बेशक ख़ुदा बारीक बीन और ख़बरदार है(६३)जो कुछ आस्मानों में है और जोकुछ ज़मीन में है उसी का है, और बेशक ख़ुदा बे न्याज़ और क़ाबिले सिताईश है (६४)—रुकू ८

क्या तुम नहीं देखते कि जितनी चीज़ें ज़मीन में हैं (सब) ख़ुदा ने तुम्हारे ज़ेरे फ़रमान कर रखी हैं, और कश्तियाँ (भी)

जो उसी के हुक्म से दरिया में चलती हैं और वह आस्मान को थामे रहता है कि ज़मीन पर (न) गिर पड़े, मगर उसके हुक्म से बेशक ख़ुदा लोगों पर निहायत शफ़क़त करने बाला मेहरबान है (६५) और वही तो है जिसने तुमको हयात बख़्शी, फिर तुमको मारता है, फिर तुम्हें जिन्दा भी करेगा और इन्सान तो बड़ा ना शुक्रा है (६६) हमने हर एक उम्मत के लिये एक शरीयत मुक़र्रर करदी है, जिस पर वह चलते हैं, तो यह लोग तुमसे इस अमर में झगड़ा करें और तुम (लोगों को) अपने पर्वरदिगार की तरफ़ बुलाते रहो, बेशक तुम सीधे रस्ते पर हो (६७) और अगर यह तुम से झगड़ा करें तो कह दो कि जो अमल तुम करते हो, ख़ुदा उनसे ख़ूब वाक़िफ़ है (६८) जिन बातों में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो ख़ुदा तुम में क़यामत के रोज़ उनका फ़ैसला कर देगा (६९) क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, ख़ुदा उसको जानता है यह (सब कुछ) किताब में (लिखा हुआ) है, बेशक यह सब ख़ुदा को आसान है (७०) और (यह लोग) ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं, जिनकी कि कोई सनद नाज़िल फ़रमाई और न उसके पास इसकी कोई दलील है और ज़ालिमों का कोई भी मददगार नहीं होगा (७१) और जब उनको हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो उनकी शक्ल बिगड़ जाती है और तुम उनके चेहरों में साफ़ तौर पर नाखुशी के आसार देखते हो, क़रीब आते हैं कि जो लोग उनको हमारी आयतें पढ़ कर सुनाते हैं उन पर हमला कर दें, कह दो कि मैं

तुमको इससे भी बुरी चीज़ बताऊं, इस से भी बुरी चीज़ बताऊँ वस दोजख़ की आग है, जिसका ख़ुदा ने काफ़िरों से वायदा किया है, और वह बुरा ठिकाना है (७२) —रुकू ६

एक मिसाल बयान की जाती है, उसे ग़ौर से सुनो कि जिन लोगों को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो वह एक मक्खी भी नहीं बना सकते, अगरचे उसके लिये सब मुजतमा हो जायें और अगर उनसे मक्खी कोई चीज़ छीन ले जाये, तो उससे उसे छुड़ा नहीं सकते, तालिब और मतलूब (यानी आबिद और माबूद दोनों) गये गुज़रे हैं (७३) इन लोगों ने ख़ुदा की क़द्र जैसी करनी चाहिये थी, नहीं की, कुछ शक नहीं कि ख़ुदा ज़बरदस्त (और) ग़ालिब है (७४) ख़ुदा फ़रिश्तों में से पैग़ाम पहुंचाने वाले चुन लेता है और इन्सानों में से भी बेशक ख़ुदा सुनने वाला (और) देखने वाला है (७५) जो उनके आगे है और जो उनके पीछे है वह उससे वाक़िफ़ है, और सब कामों का रजू ख़ुदा ही की तरफ़ है (७६) मोमिनो ! रकू करते और सजदा करते और अपने पर्वरदिगार की इबादत करते रहो, और नेक काम करो ताकि फ़लाह पाओ (७७) और ख़ुदा की राह में जहाद करो, जैसा जहाद करने का हक़ है, उसने तुमको बरगज़ीदा किया है और तुम पर दीन (की किसी बात) में तंगी नहीं की, (और तुम्हारे लिये) तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन (पसन्द किया) उसी ने पहले (यानी पहली किताबों में) तुम्हारा नाम मुस्लमान रखा था और इस किताब में भी (वही नाम रखा है, तो जहाद करो)

ताकि पैग़म्बर, तुम्हारे बारे में शाहिद हों, और तुम लोगों के मुक़ाबले मेंशाहिद हो,पस नमाज़ पढ़ो और जक़ात दो और ख़ुदा (के दीन की रस्सी) को पकड़े रहो, वही तुम्हारा दोस्त है और ख़ूब दोस्त और ख़ूब मददगार है (७८)- -रुकू १०

अट्ठारहवाँ पारा—क़द् अफ़्लहल मोमिनून

२३—सूर–हे–अल मोमिनून

सूर हे मोमिनून मक्के में उतरी, इसमें ११८ आयतें और ६ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

बेशक ईमान वाले रुस्तगार हो गये (१) जो नमाज़ में इज्ज़ो न्याज़ करते हैं (२) और जो बेहूदा बातों से मुंह मोड़ लेते हैं (३) और ज़कात अदा करते हैं (४) और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं (५) मगर अपनी बीवियों या (क़नीज़ों से) जो इन की मिल्क होती हैं, कि (उन से) मुबाशरत करने से उन्हें मलामत नहीं (६) और जो उनके सिवा औरों के तालिब हों, वह (ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई) हद से निकल जाने वाले हैं (७) और जो अमानतों और इक़रारों को मलहूज़ रखते हैं (८) और

ज़ो नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं (९) यही लोग मीरास हासिल करने वाले हैं (१०) (यानी) जो बहिश्त की मीरास हासिल करेंगे, और उसमें हमेशा रहेंगे (११) और हमने इन्सान को मिट्टी के ख़ुलासे से पैदा किया (१२) फिर उसको एक मज़बूत (और मेहफ़ूज़) जगह में नुत्फ़ा बना कर रखा (१३) फिर नुत्फ़े का लोथड़ा बनाया, फिर लोथड़े की बोटी बनाई, फिर बोटी की हड्डियाँ बनाईं, फिर हड्डियों पर गोश्त (पोस्त) चढ़ाया, फिर उसको नई सूरत में बना दिया, तो ख़ुदा जो सबसे बेहतर बनाने वाला है, बड़ा बा बर्कत है (१४) फिर उसके बाद तुम मर जाते हो (१५) फिर क़यामत के दिन उठा खड़े किये जाओगे (१६) और हमने तुम्हारे ऊपर (की जानिब) सात आसमान पैदा किये और हम खलक़त से ग़ाफ़िल नहीं हैं (१७) और हम ही ने आसमान से एक अन्दाज़े के साथ पानी नाज़िल किया, फिर उस को ज़मीन पर ठैहरा दिया, और हम उसके नाबूद कर देने पर भी क़ादिर हैं (१८) फिर हमने उससे तुम्हारे लिये खजूरों के बाग़ बनाये, उनमें तुम्हारे लिये बहुत से मेवे पैदा होते हैं और उनमें से तुम खाते भी हो (१९) और वह दरख़्त भी (हम ही ने पैदा किया) जो तूरे सीना में पैदा होता है (यानी ज़ैतून का दरख़्त कि) खानें वालों के लिये रोग़न और सालन लिये हुए उगता है (२०) और तुम्हारे चारपायों में इबरत (और निशानी) है कि उनके पेटों में है, उससे हम तुम्हें (दूध) पिलाते हैं और तुम्हारे लिये उनमें और भी बहुत से फ़ायदे हैं, बाज़ को तुम खाते भी

हो (२१) और उन पर और कश्तियों पर तुम सवार होते हो (२२)—रुकू १

और हमने नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो उन्होंने उनसे कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! ख़ुदा ही की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, क्या तुम डरते हो ? (२३) तो उनकी क़ौम के सरदार जो काफ़िर थे, कहने लगे, यह तो तुम ही जैसा आदमी है, तुम पर बड़ाई हासिल करना चाहता है, और अगर ख़ुदा चाहता तो फ़रिश्ते उतार देता, हमने अपने अगले बाप दादा में तो यह बात कभी नहीं सुनी थी (२४) इस आदमी को तो दीवान्गी (का आरज़ा) है, तो इसके बारे में कुछ मुद्दत इन्तज़ार करो (२५) नूह ने कहा, कि ऐ मेरे पर्वरदिगार, इन्होंने मुझे झुटला दिया है, तू मेरी मदद कर (२६) हमने उन की तरफ़ वही भेजी कि हमारे सामने और हमारे हुक्म से कश्ती बनाओ, फिर जब हमारा हुक्म आ पहुँचे और तनूर (पानी से भर कर) जोश मारने लगे, तो (सब क़िसम के हैवानात) में से जोड़ा जोड़ा (यानी नर और मादा) दो दो कश्ती में बैठा दो, और अपने घर वालों को, सिवा उनके जिनकी निस्बत, उनमें से (हलाक होने का) हुक्म पहले सादिर हो चुका है, और ज़ालिमों के बारे में हम से कुछ न कहना, वह ज़रूर डबो दिये जायेंगे (२७) और जब तुम और तुम्हारे साथी कश्ती में बैठ जाओ तो (ख़ुदा का शुक्र करना और) कहना, कि सब तारीफ़ ख़ुदा ही को (सज़ा वार) है, जिसने हमको नजात बख़्शी ज़ालिम लोगों से (२८)

और (यह भी) दुआ करना, कि ऐ मेरे पर्वरदिगार, मुझको मुबारिक जगह उतारियो, और तू सब से बेहतर उतारने वाला है (२९) बेशक इस (क़िस्से) में निशानियां हैं और हमें तो आज-माईश करनी थी (३०) फिर उनके बाद हमने एक जमायत और पैदा की (३१) और उन्हीं में से उनमें एक पैग़म्बर भेजा (जिस ने उनसे कहा) कि ख़ुदा ही की इबादत करो (कि उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं (३२)–रुकू २

तो उनकी क़ौम के सरदार जो काफ़िर थे, और आख़िरत के आने को झूठ समझते थे और दुनियाँ की ज़िन्दगी में हमने उनको आसूदगी दे रखी थी, कहने लगे कि यह तो तुम्हारे जैसा आदमी है, जिस क़िसम का खाना तुम खाते हो, उसी तरह का यह भी खाता है और पानी जो तुम पीते हो, उसी क़िसम का यह भी पिता है (३३) और अगर तुमने अपने ही जैसे आदमी का कहा मान लिया, तो घाटे में पड़ गये (३४) क्या यह तुम से यह कहता है कि तुम मर जाओगे और मिट्टी हो जाओगे और उस्तुखाँ (के सिवा कुछ न रहेगा) तो फिर (ज़मीन से) निकाले जाओगे (३५) जिस बात का तुम से वायदा किया जाता है (बहुत) बईद और (बहुत) बईद है (३६) ज़िन्दगी तो हमारी यही दुनिया की ज़िन्दगी है कि इसी में हम मरते और जीते हैं, और हम फिर नहीं उठाये जायेंगे (३७) यह तो एक ऐसा आदमी है जिसने ख़ुदा पर झूठ इफ़्तिरा किया है और हम इस को मानने वाले नहीं (३८) पैग़म्बर ने कहा कि ऐ मेरे पर्वर-

दिगार इन्होंने मुझे झूठा समझा है तू मेरी मदद कर (३९) फ़रमाया कि थोड़े ही अर्से में परेशान होकर रह जायेंगे (४०) तो उनको (वायद-ऐ) बरहक़ के मुताबिक़ ज़ोर की आवाज़ ने आन पकड़ा. तो हमने उनको कोड़ा कर डाला, पस ज़ालिम लोगों पर लानत है (४१) फिर उनके बाद हमने और जमायतें पैदा की (४२) कोई जमायत अपने वक्त से न आगे जा सकती है और न पीछे रह सकती है (४३) फिर हम पै दर पै अपने पैग़म्बर भेजते रहे, जब किसी उम्मत के पास उसका पैग़म्बर आता था, तो वह उसे झुठला देते थे, तो हम भी बाज़ के पीछे (हलाक करते और उन पर) अज़ाब लाते रहे, और उनके आफ़साने बनाते रहे पस जो लोग ईमान नहीं लाते, उन पर लानत (४४) फिर हमने मूसा और उनके भाई हारुन को अपनी निशानियाँ और दलीले ज़ाहिर दे कर भेजा (४५) (यानी) फ़िरऔन और उसकी जमायत की तरफ़ तो उन्होंने तदब्बुर किया और बह सरकश लोग थे (४६) कहने लगे कि क्या हम अपने जैसे दो आदमियों पर ईमान ले आयें और उनकी क़ौम के लोग हमारे ख़िदमतगार हैं (४७) तो उन लोगों ने उनकी तकज़ीब की, सो (आख़िर) हलाक कर दिये गये (४८) और हमने मूसा को किताब दी थी, ताकि वह लोग हिदायत पायें (४९) और मरियम के बेटे (ईसा) और उनकी माँ को (अपनी) निशानी बनाया था और उनको एक ऊँची जगह पर जो रहने के लायक थी और जहाँ (नथरा हुआ) पानी जारी था, पनाह दी थी (५०)—रुकू ३

ऐ पैग़म्बर ! पाकीज़ा चीज़ें खाओ और नेक अमल करो, जो अमल तुम करते हो मैं उनसे वाक़िफ़ हूं (५१) और यह तुम्हारी जमायत (हक़ीक़त में) एक ही जमायत है और मैं तुम्हारा पर्वरदिगार हूं तो मुझ से डरो (५२) तो फिर आपस में अपने काम को मुतफ़र्रिक़ करके जुदा जुदा कर दिया, जो चीज़ जिस फ़िर्के के पास है, वह उसी से खुश हो रहा है (५३) तो उन को एक मुद्दत तक उनकी ग़फ़लत ही में रहने दो (५४) क्या यह लोग ख्याल करते हैं कि हम जो दुनिया में उनको माल और बेटों से मदद देते हैं (५५) तो (इससे) उनकी भलाई में जल्दी कर रहे हैं (नहीं), बल्कि यह समझते ही नहीं (५६) जो लोग अपने पर्वरदिगार के खौफ़ से डरतें हैं (५७) और जो लोग अपने पर्वरदिगार की आयतों पर ईमान रखते हैं (५८) और जो अपने पर्वरदिगार के साथ शरीक नहीं करते (५९) और जो दे सकते हैं वह देते हैं, और उनके दिल इस बात से डरते हैं कि उनको अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौट कर जाना है (६०) यही लोग नेकियों में जल्दी करते हैं और यही उनके लिये आगे निकल जाते हैं (६१) और हम किसी शख्स को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देते और हमारे पास किताब है, जो सच सच कह देती है और लोगों पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा (६२) मगर उनके दिल इन (बातों) की तरफ़ से ग़फ़लत में (पड़े हुए) हैं और उनके सिवा और आमाल भी हैं, जो यह करते रहते हैं (६३) यहां तक कि जब हमने उनमें से आसूदा हाल लोगों को पकड़ लिया तो वह उस वक्त चिल्लायेंगे (६४) आज मत चिल्लाओ !

तुमको हमसे कुछ मदद नहीं मिलेगी (६५) मेरी आयतें तुमको पढ़ पढ़ कर सुनाई जाती थीं और तुम उलटे पाँव फिर फिर जाते थे (६६) उनसे सरकशी करते, कहानियों में मशग़ूल होते और बेहूदा बकवास करते थे (६७) क्या उन्होंने इस कलाम पर ग़ौर नहीं किया. या उनके पास कुछ ऐसी चीजें आई है जो उनके अगले बाप दादा के पास नहीं थीं (६८) या यह अपने पैग़म्बर को जानते पहचाहते नहीं, इस वज्हे से उनको नहीं मानते (६९) क्या यह कहते हैं कि उसे सौदा है, (नहीं), बल्कि वह उनके पास हक़ को लेकर आये हैं और उनमें से अक्सर हक़ को ना पसन्द करते हैं (७०) और अगर खुदाये बर हक़ उनकी ख्वाहिशों पर चले, तो आस्मान और ज़मीन जो उनमें है, सब दरहम बरहम हो जायें, बल्कि हमने उनके पास उनकी नसीहत (की किताब) पहुंचादी है और अपनी (किताब) नसीहत से मूंह फेर रहे हैं (७१) क्या तुम उनसे (तब्लीग़ के सिले में) कुछ माल माँगते हो, तो तुम्हारे पर्वदिगार का माल बहुत अच्छा है, और वह सबसे बेहतर रिज़्क देने वाला है (७२) और तुम उनको सीधे रस्ते की तरफ़ बुलाते हो (७३) और जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं लाते वह रस्ते से अलग हो रहे हैं (७४) और अगर हम उन पर रहम करें, और जो तकलीफ़ें उनको पहुंच रही हैं, वह दूर कर दें, तो अपनी सरकशी पर अड़े रहें (और) भटकते (फिरें) (७५) और हमने उनको अज़ाब में भी पकड़ा तो भी उन्होंने खुदा के आगे आजिज़ी न की और वह आजिज़ी

करते ही नहीं (७६) यहाँ तक कि जब हमने उन पर अज़ाबे शदीद का दरवाज़ा खोल दिया, तो उस वक्त वहाँ ना उमीद हो गये (७७)— रुकू ४

और वही तो है जिस ने तुम्हारे कान और आँखें और दिल बनाये (लेकिन) तुम कम शुक्र गुज़ारी करते हो (७८) और वही है जिस ने तुम को ज़मीन में पैदा किया, और उसी की तरफ़ तुम सब जमा होकर जाओगे (७९) और वही है जो ज़िन्दगी बख़्शता है और मौत देता है, और रात और दिन का बदलते रहना, उसी का तसर्रुफ़ है, क्या तुम समझते नहीं (८०) बात यह है कि जो अगले (काफ़िर) कहते थे, उसी तरह की (बात यह) कहते हैं (८१) कहते हैं कि जब हम मर जावेंगे और मिट्टी हो जावेंगे और उस्तुख़ाने (बोसीदा के सिवा कुछ) न रहेगा तो क्या हम फिर उठाये जायेंगे (८२) यह वायदा हम से और हम से पहले हमारे बाप दादा से भी होता चला आया है (अजी) यह तो सिर्फ़ अगले लोगों की कहानियाँ हैं (८३) कह दो अगर तुम जानते हो तो बताओ कि ज़मीन और जो कुछ ज़मीन में है, सब किस का माल है (८४) झट बोल उठेंगे कि ख़ुदा का, कहो, फिर तुम सोचते क्यों नहीं (८५) (उन से) पूछो, कि सात आस्मानों का मालिक कौन है, और अर्शे अज़ीम का (कौन) मालिक (है) (८६) बे साख़ता कह देंगे कि यह (चीज़ें) ख़ुदा ही की हैं, कहो कि फिर तुम डरते क्यों नहीं (८७) कहो, कि

अगर तुम जानते हो तो बताओ कि वह कौन है जिस के हाथ

में हर चीज़ की बादशाही है और वह पनाह देता है, और उस के मुक़ाबिल कोई पनाह नहीं दे सकता (८८) फ़ौरन कह देंगे कि (ऐसी बादशाही तो) ख़ुदा ही की है, तो कहो फिर तुम पर जादू कहाँ कहाँ से पड़ जाता है (८९) बात यह है कि हम ने उन के पास हक़ पहुंचा दिया है और यह जो (बुत परस्ती किये जाते हैं) बेशक झूठे हैं (९०) ख़ुदा ने न तो (अपना) किसी को बेटा बनाया है और न उस के साथ कोई और माबूद है, ऐसा होता तो हर माबूद अपनी अपनी मख़लूक़ात को लेकर चल देता और एक दूसरे पर ग़ालिब आ जाता, यह लोग जो कुछ (ख़ुदा के बारे में) बयान करते हैं ख़ुदा उस से पाक है (९१) वह पोशीदा और ज़ाहिर को जानता है और (मुश्रिक) जो उस के साथ शरीक करते हैं, उस की शान उस से ऊंची है (९२)—रुकू—५

(ऐ मोहम्मद) कहो, कि ऐ मेरे पर्वरदिगार जिस अज़ाब का इन (कफ़्फ़ार) से वायदा हो रहा है, अगर तू मेरी ज़िन्दगी में उन पर नाज़िल करके मुझे भी दिखा दे (९३) तो ऐ मेरे पर्वर-दिगार मुझे (उस से मेहफ़ूज़ रखिओ) और ज़ालिमों में शुमार न कीजिओ (९४) और जो वायदा हम उनसे कर रहे हैं, हम तुमको दिखा कर उन पर नाज़िल करने पर क़ादिर हैं (९५) और बुरी बात के जवाब में ऐसी बात कहो, जो निहायत अच्छी हो, और यह जो कुछ बयान करते हैं, हमें ख़ूब मालूम है (९६) और कहो कि ऐ मेरे पर्वरदिगार मैं शैतानों के वसवसों से तेरी पनाह

माँगता हूं (९७) और मेरे पर्वरदिगार ! (इस से भी) तेरी पनाह माँगता हूं, कि वह मेरे पास आ मौजूद हों (९८) (यह लोग इसी ग़फ़लत में रहेंगे) यहाँ तक कि जब उनमें से किसी के पास मौत आ जायेगी तो कहेगा कि ऐ मेरे पर्वरदिगार ! मुझे फिर(दुनिया में) वापिस भेज दे (९९) ताकि मैं उसमें जिसे छोड़ आया हूं, नेक काम करूं, हर्गिज नहीं, एक ऐसी बात है, कि वह उसे ज़बान से कह रहा होगा (और उसके साथ अमल नहीं होगा) और उसके पीछे बरज़ख है (जहाँ वह) उस दिन तक कि (दोबारा) उठाये जायेंगे, (रहेंगे) (१००) फिर जब सूर फूंका ज़ायेगा, तो न तो उनमें कराबतें होंगी और न एक दूसरे को पूछेंगे (१०१) तो जिनके (अमलों के) बोझ भारी होंगे, वह फ़लाह पाने वाले हैं (१०२) और जिन को बोझ हल्के होंगे, वह लोग हैं, जिन्होंने अपने तईं खसारे में डाला, हमेशा दोज़ख में रहेंगे (१०३) आग उनके मूंहों को झुलस देगी और वह उस में त्योरी चढ़ाये होंगे (१०४) क्या तुमको मेरी आयतें पढ़ कर नहीं सुनाई जाती थीं ? (नहीं) तुम उनको (सुनते थे और) झुटलाते थे (१०५) कहने लगे कि ऐ हमारे पर्वरदिगार ! हम पर हमारी कम्बख्ती ग़ालिब हो गई और रस्ते से भटक गये (१०६) ऐ हमारे पर्वरदिगार ! हमको इसमें से निकाल दे, अगर हम फिर (ऐसे काम) करें तो ज़ालिम होंगे (१०७) (खुदा) फ़रमायेगा कि इसी में जिल्लत के साथ पड़े रहो, और मुझ से बात न करो (१०८) मेरे बन्दों में गिरोह था जो दुआ किया

करता था, कि ऐ हमारे पर्वरदिगार ! हम ईमान लाये, तो तू हमको बख़्श दे और हम पर रहम कर, और तू सबसे बेहतर रहम करने वाला है (१०६) तो तुम उनसे तमस्ख़ुर करते रहे, यहाँ तक कि उनके पीछे हमारी याद भी भूल गये, और तुम (हमेशा) उनसे हंसी करते रहते थे (११०) आज मैंने उनको उन के सब्र का बदला दिया कि वह क़ामयाब हो गये (१११) ख़ुदा पूछेगा कि तुम ज़मीन में कितने बरस रहे (११२) वह कहेंगे कि हम एक रोज़ या एक रोज़ से भी कम रहे थे, शुमार करने वालों से पूछ लीजिये (११३) ख़ुदा फ़रमायेगा कि (वहाँ) तुम (बहुत ही) कम रहे, काश तुम जानते होते (११४) क्या तुम यह ख़्याल करते हो, कि हमने तुमको बे फ़ायदा पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ़ लौट कर नहीं आओगे ? (११५) तो ख़ुदा जो सच्चा बादशाह है (उसकी शान उससे) ऊँची है उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वही अर्शे बुज़ुर्ग का मालिक है (११६) और जो शख़्स ख़ुदा के साथ किसी और माबूद को पुकारता है, जिस की उसके पास कुछ सनद नहीं, तो उसका हिसाब ख़ुदा ही के हाँ होगा कुछ शक नहीं कि काफ़िर रुस्तगारी नहीं पायेंगे (११७) और ख़ुदा से दुआ करो कि ऐ मेरे पर्वरदिगार मुझे बख़्श दे और (मुझ पर) रहम कर, और तू सबसे बेहतर रहम करने वाला है (११८)—रुकू ६

—:०:—

२४—सूर-हे-नूर

सूर हे नूर मदीने में उतरी, और इसमें ६४ आयतें और ६ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

यह (एक) सूरत है जिसको हमने नाज़िल किया और उस (के एहकाम) को फ़र्ज़ कर दिया, और उसमें वाज़ेह उल मतालिब आयतें नाज़िल कीं ताकि तुम याद रखो (१) बदकारी करने वाली औरत और बदकारी करने वाला मर्द (जब उनकी बदकारी साबित हो जाये तो) दोनों में से हर एक को सौ दुर्रे मारो, और अगर तुम ख़ुदा और रोज़े आख़िरत पर ईमान रखते हो, तो शरा ख़ुदा (के हुक्म) में तुम्हें उन पर हर्गिज़ तरस न आये, और चाहिये कि उनकी सज़ा के वक्त मुस्लमानों की एक जमायत भी मौजूद हो (२) बदकार मर्द तो बदकार या मुश्रिक औरत के सिवा निकाह नहीं करता और बदकार औरत को भी बदकार या मुश्रिक मर्द के सिवा और कोई निकाह में नहीं लाता, और यह (यानी बदकार औरत से निकाह करना) मोमिनों पर हराम है (३) और जो लोग परहेज़गार औरतों को बदकारी का इल्ज़ाम लगायें और उस पर चार गवाह न लायें, तो उनको अस्सी दुर्रे मारो और कभी उनकी शहादत क़बूल न करो, और यही बदकिर्दार हैं (४) हाँ जो इनके बाद तौबा कर लें और (अपनी हालत) संवार लें, तो ख़ुदा (भी) बख़्शने वाला

मेहरबान है (५) और जो लोग अपनी औरतों पर बदकारी की तोहमत लगायें और ख़ुद उनके सिवा उनके गवाह न हों, तो हर एक की शहादत यह है कि पहले तो चार बार ख़ुदा की क़सम खाये, कि बेशक वह सच्चा है (६) और पांचवीं बार यह (कहे) कि अगर वह झूठा हो तो उस पर ख़ुदा की लानत (७) और औरत को सज़ा से यह बात निकाल सकती है, कि वह पहले चार बार ख़ुदा की क़सम खाये कि बेशक यह झूठा है (८) और पाँचबीं दफ़ा यूं (कहे) कि अगर यह सच्चा हो तो मुझ पर ख़ुदा का ग़ज़ब (नाज़िल हो) (९) और अगर तुम पर ख़ुदा का फ़ज़ल और उसकी मेहरबानी न होती, तो बहुत सी खराबियाँ पैदा हो जातीं, मगर वह साहिबे करम है और यह कि ख़ुदा तौबा क़बूल करने वाला और हकीम है (१०)—रुकू १

जिन लोगों ने बोहतान बान्धा है, तुम ही में से एक जमायत है, उसको अपने हक़ में बुरा न समझना, बल्कि वह तुम्हारे लिये अच्छा है, उनमें से जिस शख़्स ने गुनाह का जितना हिस्सा लिया उसके लिये उतना वबाल है, और जिसने उनमें से बोहतान का बड़ा बोझ उठाया है, उसको बड़ा अज़ाब होगा (११) जब तुम ने बात सुनी थी तो मोमिन मर्दों और औरतों ने क्यों अपने दिलों में नेक गुमान न किया, और क्यों न कहा कि यह सरीह तूफ़ान है (१२) यह (इफ़्तिरा पदार्ज़) अपनी बात (की तस्दीक़) के (लिये) चार गवाह क्यों न लाये, तो जब यह गवाह नहीं ला सके तो ख़ुदा के नज़दीक यही झूठे हैं (१३) और अगर दुनिया

और आख़िरत में ख़ुदा का फ़ज़ल और उसकी रहमत न होती तो जिस बात का तुम चर्चा करते थे, उसकी वज्हे से तुम पर बड़ा (सख़्त) अज़ाब नाज़िल होता (१४) जब तुम अपनी ज़बानों से इसका एक दूसरे से ज़िक्र करते थे, और अपने मूंह से ऐसी बात कहते थे, जिसका तुमको कुछ इल्म न था, और तुम उसे एक हल्की बात समझते थे, और ख़ुदा के नज़दीक वह बड़ी भारी बात थी (१५) और जब तुमने उसे सुना, तो क्या कह दिया कि हमें शायाने शाँ नहीं कि ऐसी बात ज़बान पर लायें (पर्वरदिगार) तू पाक है यह तो (बहुत) बड़ा बोहतान है (१६) ख़ुदा तुम्हें नसीहत करता है, कि अगर मोमिन हो तो फिर कभी ऐसा (काम) न करना (१७) और ख़ुदा तुम्हारे (समझाने के लिये) अपनी आयतें खोल खोल कर बयान फ़रमाता है, और ख़ुदा जानने वाला और हिकमत वाला है (१८) और जो लोग इस बात को पसन्द करते हैं कि मोमिनों में बेहयाई (यानी) तोहमते बदकारी की ख़बर फैले उनको दुनिया और आख़िरत में दुख देने वाला अज़ाब होगा, और ख़ुदा जानता है और तुम नहीं जानते (१९) और अगर तुम पर ख़ुदा का फ़ज़ल और उसकी रहमत न होती, तो क्या कुछ न होता, मगर वह करीम है, और यह कि ख़ुदा निहायत मेहरबान और रहीम है (२०)—रुकू २

ऐ मोमिनो ! शैतान के क़दमों पर न चलना और जो शख़्स शैतान के क़दमों पर चलेगा, तो शैतान तो बे हयाई (की बातें) और बुरे काम ही बतायेगा, और अगर तुम पर ख़ुदा का फ़ज़ल

और मेहरबानी नहीं होती, तो एक शख़्स भी तुम में पाक न हो सकता, मगर ख़ुदा जिसको चाहता है पाक कर देता है (और) ख़ुदा सुनने वाला (और) जानने वाला है (२१) और जो लोग तुम में साहिबे फ़ज़्ल (और साहिबे) वुसअत हैं वह इस बात की क़सम खायें कि रिश्तेदारों और मोहताजों और ख़ुदा की राह में वतन छोड़ जाने वालों को कुछ ख़र्च पात नहीं देंगे, उनको चाहिये कि मआफ़ कर दें और दरगुज़र करें, क्या तुम पसन्द नहीं करते हो कि ख़ुदा तुमको बख़्श दे, और ख़ुदा तो बख़्शने वाला मेहरबान है (२२) जो लोग परहेज़गार और बुरे कामों से बे ख़बर और ईमानदार औरतों पर बदकारी की तोहमत लगाते हैं, उन पर दुनिया व आख़िरत (दोनों) में लानत है और उनको सख़्त अज़ाब होगा (२३) (यानी क़यामत के रोज़) जिस दिन उनकी ज़बानें और उनके हाथ पाँव सब उनके कामों की गवाही देंगे (२४) उस दिन ख़ुदा उनको (उनके) आमाल (का) पूरा पूरा (और) ठीक बदला देगा और उनको मालूम हो जायेगा कि ख़ुदा बरहक़ (और हक़ को) ज़ाहिर करने वाला है (२५) नापाक औरतें नापाक मर्दों के लिये और नापाक मर्द नापाक औरतों के लिये, और पाक औरतें पाक मर्दों के लिये और पाक मर्द पाक औरतों के लिये, यह (पाक लोग) उन (बद गोयों) की बातों से बरी हैं (और) उनके लिये बख़्शिश और नेक रोज़ी है (२६)

रुकू—३

मोमिनो ! अपने घरों के सिवा दूसरे (लोगों के) घरों में,

घर वालों से इजाज़त लिये और उनको सलाम किये बग़ैर दाख़िल न हुआ करो, यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है (और हम यह नसीहत इसलिये करते हैं कि) शायद तुम याद रखो (२७) (और) अगर तुम घर में किसी को मौजूद न पाओ तो जब तक तुमको इजाज़त न दी जाये उसमें मत दाख़िल हो अगर यह कहा जाये कि (इस वक़्त) लौट जाओ तो लौट जाया करो, यह तुम्हारे लिये बड़ी पाकीज़गी की बात है और जो काम तुम करते हो ख़ुदा सब जानता है (२८) (हाँ !) अगर तुम किसी ऐसे घर में जाओ जिस में कोई बसता न हो, और उसमें तुम्हारा (असबाब) रखा हो, तुम पर कुछ गुनाह नहीं, और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो पोशीदा करते हो, ख़ुदा को सब मालूम है (२९) मोमिन मर्दोंसे कह दो कि अपनी निगाहें नीची रखा करें, और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त किया करें, यह उनके लिये बड़ी पाकीज़गी की बात है, और जो काम यह लोग करते हैं, ख़ुदा उन से ख़बरदार है (३०) और मोमिन औरतों से भी कह

आयत ३०-३४:—शृङ्गार में से खुली चीज़ या ऐसी चीज़ को कहा जैसे चिट्टे कपड़े और नई पापोश, या यह कि औरत के मूंह को थोड़ा सा और हाथ की उंगलियाँ और पाँव का पन्जा खोलना दुरुस्त है, नाचारी को फिर हाथ की मेंहदी खिली, या आँख का काजल या उंगली का छल्ला और बाक़ी बदन और गहना ढाँकना ज़रुर है ग़ैर से, मगर अपने मेहरमों से छाती से जानूं तक और अपनी औरतें जो नेक चलन की हों उन से भी इतना ज़रुर है और बदकार औरतों से कनारा पकड़ना और ताबैयन वह जिन को ग़रज़ नही कि वह खाने और सोने

दो कि वह भी अपनी निगाहें नीची रखा करें और अपनी शर्म-गाहों की हिफ़ाज़त किया करें और अपनी आराईश (यानी ज़ेवर के मक़ामात) को ज़ाहिर न होने दिया करें, मगर जो उस में से खुला रहता हो, और अपने सीनों पर ओढ़नियां ओढ़े रहा करें, और अपने खाविन्द और बाप और ख़ुसर और बेटों और भाईयों और भतीजों और भान्जों और अपनी ही (क़िसम की) औरतों और लौन्डी ग़ुलामों के सिवा, नीज़ उन ख़ुद्दाम से जो औरतों की ख्वाहीश न रखें, या ऐसे लड़कों से जो औरतों के पर्दे की चीज़ों से वाक़िफ़ न हों (ग़रज़ इन लोगों के सिवा) किसी पर अपनी ज़ीनत (और सिंगार के मक़ामात) को ज़ाहिर न होने दें, और अपने पाँव (ऐसे तौर से ज़मीन पर) न मारें (कि झंकार की आवाज़ कानों में पहुँचे और) उन का पोशीदा ज़ेवर मालूम हो जाये, और मोमिनो ! सब ख़ुदा के आगे तौबा करो, ताकि तुम फ़लाह पाओ (३१) और अपनी क़ौम की बेवा औरतों के निकाह कर दिया करो, और अपने ग़ुलामों और लौन्डियों के भी जो नेक हों (निकाह कर दिया करो) अगर वह मुफ़्लिस हों तो ख़ुदा उन को अपने फ़ज़ल से ख़ुशहाल कर देगा और ख़ुदा बहुत वुसअत वाला और (सब कुछ) जानने

में ग़र्क़ हैं शोखी नहीं रखते, और लड़का दस बरस का और अपना ग़ुलाम भी मेहरम है, बहुत उलमा के नज़दीक और पाँव की धुमकी से मालूम होते हैं, घुन्घरु या गोजरी और बारीक कपड़ा जिस से बदन नज़र आवे, नन्गे और वह बराबर हैं और इतना भी न खुले तो बेहतर है—

वाला है (३२)❀ और जिन को ब्याह का मक़दूर न हो, वह पाकदामनी को अख़्तियार किये रहें, यहाँ तक कि ख़ुदा उन को अपने फ़ज़ल से ग़नी कर दे और जो ग़ुलाम तुम से मकातिबत चाहें, अगर तुम उन में (सलाहियत और) नेकी पाओ तो उन से मुकातिबत कर लो और ख़ुदा ने जो माल तुम को बख़्शा है, उस में से उन को भी दो, और अपनी लौन्डियों को, अगर वह पाकदामन रहना चाहें तो (बेशर्मी से) दुनियाबी ज़िन्दगी के फ़वायद हासिल करने के लिये बदकारी पर मजबूर करेगा तो उन (बेचारियों) के मजबूर किये जाने के बाद ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (३३) और हम ने तुम्हारी तरफ़ रोशन आयतें नाज़िल की हैं, और जो लोग तुम से पहले गुज़र चुके हैं, उन की खबरें और परहेज़गारों के लिये नसीहत (३४)-रुकू—४

ख़ुदा आस्मानों और ज़मीन का नूर है, उस के नूर की

अय्यामे जाहिलियत की रसूमे बदः—इस्लाम से पहले अरब में यह दस्तूर था कि नौ उम्र लड़कियाँ लेते थे और कमाई के तौर पर उन से बदकारी कराते थे, चुनाँचे जब आँ हज़रत मदीन-ऐ-मुन्नव्वरा तशरीफ़ लाये और इस्लाम की बातें फैल गईं तो अब्दुल्लाह बिन अबी मुनाफ़िक़ों के सरदार के पास दो छोकरियाँ थीं, उन्होंने इस्लाम की सोहबत पाकर बदकारी से इन्कार किया और अब्दुल्लाह बिन अबी ने उन को बदकारी पर मज़बूर किया हज़रत अबुबकर ने तरस खा कर उस लौन्डी को अपने घर में छुपा दिया, अब्दुल्लाह बिन अबी ने बहुत ग़ुल मचाया कि अब हमारी लौन्डियों को ज़ब्त करने की नौबत आ गई इस पर अल्लाह ताला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई—

मिसाल ऐसी है कि गोया एक ताक़ है जिस में चिराग़ है (और) चिराग़ एक क़न्दील में है (और) क़न्दील (ऐसी साफ़ शफ़्फ़ाफ है कि) गोया मोती का सा चमकता हुआ तारा है, उस में एक मुबारिक दरख़्त का तेल जलाया जाता है (यानी) ज़ैतून कि न मशरिक की तरफ़ है, न मग़रिब की तरफ़ (ऐसा मालूम होता है कि) उस का तेल, ख़्वाह आग उसे न भी छुए जलने को तैयार है, (पड़ी) रोशनी पर रोशनी (हो रही है) ख़ुदा अपनें नूर से जिस को चाहता है सीधी राह दिखाता है और ख़ुदा (जो मिसालें) बयान फ़रमाता है (तो) लोगों के (समझाने के) लिये और ख़ुदा हर चीज़ से वाक़िफ़ है (३५) (वह क़न्दील) उन घरों में (है) जिन के बारे में ख़ुदा ने इर्शाद फ़रमाया है कि बलन्द किये जायें, और वहाँ ख़ुदा के नाम का ज़िक्र किया जाये (और) उन में सुब्ह व शाम उस की तस्बीह करते रहें (३६) (यानी ऐसे) लोग जिन को ख़ुदा के ज़िक्र और नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने से न सौदागरी ग़ाफ़िल करती है, न ख़रीदो फ़रोख़्त, वह उस दिन से जब दिन (खौफ़ और घबराहट के सबब) उलट जायेंगे और आंखें (ऊपर को चढ़ चायेंगी) डरते हैं (३७) ताकि ख़ुदा उन को उन के अमलों का बहुत अच्छा बदला दे, और अपने फ़ज़ल से ज़्यादा भी अता करे, और जिस को चाहता है, ख़ुदा बेशुमार रिज़्क़ देता है (३८) जिन लोगों ने कुफ्र किया उन के आमाल (की मिसाल ऐसी है) जैसे मैदान में रेत, कि प्यासा उसे पानी समझे, यहाँ तक कि जब उस के

पास आये, तो उसे कुछ न पाये और ख़ुदा ही को अपने पास देखे, तो वह उस का हिसाब पूरा पूरा चुका दे, और ख़ुदा जल्द हिसाब करने वाला है (३९) या (उन के आमाल की मिसाल ऐसी है) जैसे दरियाये अमीक़ में अन्धेरे, जिस पर लहर चली आती हो, और उस के ऊपर और लहर (आ रही हो) और उस के ऊपर बादल हो ग़रज़ अन्धेरे ही अन्धेरे हों, एक पर एक (छाया हुआ) जब अपना हाथ निकाले तो कुछ न देख सके और जिस को ख़ुदा रोशनी न दे उस को (कहीं भी) रोशनी नहीं (मिल सकती) (४०)—रुकू—५

क्या तुम ने नहीं देखा कि जो लोग आस्मानों और ज़मीन में हैं, ख़ुदा की तस्बीह करते हैं और पर फैलाये हुए जानवर भी, और सब अपनी नमाज़ और तस्बीह के तरीक़े से वाक़िफ़ हैं और जो कुछ वह करते हैं (सब) ख़ुदा को मालूम है (४१) और आस्मान और ज़मीन की बादशाही ख़ुदा ही के लिये है और ख़ुदा ही की तरफ़ लौट कर जाना है (४२) क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा ही बादलों को चलाता है फिर उन को आपस में मिला देता है और उन को तैह ब तैह कर देता है, फिर तुम देखते हो, बादल से मैंह निकल (कर बरस) रहा है और आस्मानों में जो (ओलों के) पहाड़ हैं, उन से ओले नाज़िल करता है, तो जिस पर चाहता है, उस को बरसा देता है और जिस से चाहता है हटा देता है, और बादल में जो बिजली होती है, उस की चमक आँखों को (ख़ीरा कर के, बीनाई को) उचक

ले जाती है (४३) और ख़ुदा ही रात और दिन को बदलता रहता है, एहले बसीरत के लिये इस में बड़ी इब्रत है (४४) और ख़ुदा ही ने हर चलने फिरने वाले जानदार को पानी से पैदा किया, तो उन में से बाज़े ऐसे हैं कि पेट के बल चलते हैं, और बाज़ ऐसे हैं जो दो पाँव से चलते हैं और बाज़ ऐसे हैं कि जो चार पाँव से चलते है, खुदा जो चाहता है पैदा करता है, बेशक खुदा हर चीज़ पर क़ादिर हैं (४५) हम ही ने रोशन आयतें नाज़िल को हैं और खुदा जिस को चाहता है सीधे रस्ते की तरफ़ हिदायत करता है (४६) और बाज़ लोग कहते हैं कि हम खुदा पर और रसूल पर ईमान लाये (उन का) हुक्म मान लिया फिर उस के बाद उन में से एक फ़िर्क़ा फिर जाता है, और यह लोग साहिबे ईमान ही नहीं (४७) और जब उन को खुदा और उस के रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है ताकि (रसूले ख़ुदा) उन का क़ज़िया चुका दें तो उस में से एक फ़िर्क़ा मूंह फेर लेता है (४८) और अगर (मामला हक़ हो और) उन को (पहुंचता) हो तो उन की तरफ़ मुती होकर चले आते हैं (४९) क्या उन के दिलों में बीमारी है या (यह) शक में हैं, या उन को यह खौफ़ है कि खुदा और उस का रसूल उन के हक़ में ज़ुल्म करेंगे (नहीं) बल्कि यह खुद ज़ालिम हैं (५०)–रुकू—६

मोमिनों की तो यह बात है कि जब खुदा और उस के रसूल की तरफ़ से बुलाये जायें, ताकि वह उन में फैसला कर दें, तो कहें कि हम ने (हुक्म) सुन लिया और मान लिया, और यही

लोग फलाह पाने वाले हैं (५१) और जो शख्स ख़ुदा और उस के रसूल की फ़रमाँबर्दारी करेगा, और उस से डरेगा, तो ऐसे ही लोग मुराद को पहुंचने वाले हैं (५२) और (यह) ख़ुदा की सख्त २ क़समें खाते हैं कि अगर तुम उन को हुक्म दो तो (सब घरों से) निकल खड़े हों, कह दो कि क़समें मत खाओ, पसन्दीदा फ़रमाँबरदारी (दरकार) है बेशक ख़ुदा तुम्हारे सब आमाल से ख़बरदार है (५३) कह दो कि ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी करो और रसूले ख़ुदा के हुक्म पर चलो, अगर मूंह मोड़ोगे तो रसूल पर (इस चीज़ का अदा करना) जो इन के ज़िम्मे है और तुम पर (उस चीज़ का अदा करना) है जो तुम्हारे ज़िम्मे है और अगर तुम उन के फ़रमान पर चलोगे तो सीधा रस्ता पा लोगे और रसूल के ज़िम्मे तो साफ़ साफ़ (एहकाम ख़ुदा का) पहुँचा देना है (५४) जो लोग तुम में से ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन से ख़ुदा का वायदा है कि उन को मुल्क का हाकिम बना देगा, जैसा उन से पहले लोगों को हाकिम बनाया था, और उन के दीन को जिसे उस ने उन के लिये पसन्द किया है, मुस्तैहकम व पायदार करेगा और ख़ौफ़ के बाद उन को उस ने उन के लिये पसन्द किया है, मुस्तैहकम व पाय-दार करेगा और ख़ौफ़ के बाद उन को अम्न बख़्शेगा, वह मेरी इबादत करेंगे और मेरे साथ किसी और को शरीक न बनायेंगे और जो उस के बाद कुफ्र करे, तो ऐसे लोग बद किर्दार हैं (५५) और नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात देते रहो और पैग़म्बरे ख़ुदा

के फ़रमान पर चलते रहो ताकि तुम पर रहमत की जाये (५६) और ऐसा ख़्याल न करना कि तुम पर काफ़िर लोग ग़ालिब आ जायेंगे (वह जा ही कहाँ सकते हैं) उन का ठिकाना दोज़ख है और वह बहुत बुरा ठिकाना (५७) – रुकू – ७

मोमिनो ! तुम्हारे ग़ुलाम लौन्डियाँ और जो बच्चे तुम में से बलूग़ को नहीं पहुँचे तीन दफ़ा (यानी तीन औक़ात में) तुम से इजाज़त लिया करें (एक तो) नमाज़े सुब्ह से पहले और (दूसरे गर्मी की दोपहर को) जब तुम कपड़े उतार देते हो और तीसरे अशा की नमाज़ के बाद (यह) तीन (औक़ात) तुम्हारे पर्दे (के) है, इन के आगे पीछे (यानी दूसरे वक्तों में) न तुम पर कुछ गुनाह है न उन पर, कि काम काज के लिये एक दूसरे के पास आते रहते हो, इस तरह खुदा अपनी आयतें तुम से खोल खोल कर बयान फ़रमाता है और खुदा बड़ा इल्म वाला और हिकमत वाला है (५८) और जब तुम्हारे लड़के बालिग़ हो जायें, तो उन को भी इसी तरह इजाज़त लेनी चाहिये, जिस तरह से उन से अगले (यानी बड़े आदमी) इजाज़त हासिल करते रहे हैं, इसी तरह खुदा तुम से अपनी आयतें खोल खोल कर सुनाता है, और ख़ुदा जानने वाला और हिकमत वाला है (५९) और बड़ी उम्र की औरतें जिन को निकाह की तवक्क़ो नहीं रही और वह कपड़े उतार कर सर नंगा कर लिया करें, तो उन पर कुछ गुनाह नहीं, बशर्ते कि अपनी जीनत की चीज़ें न ज़ाहिर करें और अगर इस से भी बचें, तो यह उन के हक़

में बेहतर है और ख़ुदा सुनता जानता है (६०) न तो अन्धे पर कुछ गुनाह है, न लगंड़े पर और न बीमार पर और न ख़ुद तुम पर कि अपने घरों से खाना खाओ या अपने बापों के घरों से या अपनी माओं के घरों से, या भाईयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से, या अपने चाचाओं के घरों से, या अपनी फूफियों के घरोंसे या अपने मामुओं के घरों से,या अपनी खालाओं के घरों से, या उस घर से जिस की कुन्जियाँ तुम्हारे हाथ में हों या अपने दोस्तों के घरों से (और इस का भी) तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि सब मिल कर खाना खाओ, या जुदा जुदा, और जब घरों में जाया करो (तो अपने घर वालों को) सलाम किया करो (यह) ख़ुदा की तरफ़ से मुबारिक और पाकीज़ा तोहफ़ा है, इस तरह ख़ुदा अपनी आयतें खोल खोल कर बयान फ़रमाता है कि तुम समझो (६१)—रुकू—८

मोमिन तो वह हैं जो ख़ुदा पर और उस के रसूल पर ईमान लाये और जब कभी ऐसे काम के लिये, जो जमा होकर करने का हो, पैग़म्बरे ख़ुदा के पास जमा हों, तो उन से इजाज़त लिये बग़ैर चले नहीं जाते, ऐ पैग़म्बर जो लोग तुम से इजाज़त हासिल करते हैं, वही ख़ुदा पर और उस के रसूल पर ईमान रखते हैं, सो जब यह लोग, तुम से, काम के लिये इजाजत माँगा करें, तो उन में से जिसे चाहा, इजाजत दे दिया करो, और उन के लिये ख़ुदा से बख़्शिश मांगा करो, कुछ शक नहीं कि ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (६२) मोमिनो ! पैग़म्बर के

बुलाने को ऐसा ख्याल न करना, जैसा तुम आपस में एक दूसरे को बुलाते हो, बेशक ख़ुदा को वह लोग मालूम हैं, जो तुम में से आँख बचा कर चल देते हैं, तो जो लोग उन के हुक्म की मुख़ालिफ़त करते हैं, उन को डरना चाहिये कि (ऐसा न हो कि) उन पर कोई आफ़त पड़ जाये, या तकलीफ़ देने वाला अज़ाब नाज़िल हो (६३) देखो जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, सब ख़ुदा ही का है, जिस (तरीक़) पर तुम हो वह उसे जानता है और जिस रोज़ लोग उस की तरफ़ लौटाये जायेंगे, तो जो लोग अमल करते रहे, वह उन को बता देगा, और ख़ुदा हर चीज पर क़ादिर है (६४)—रुकू—९

—०—

२५—सूर-हे-फ़ुर्क़ान—(अल-फ़ुर्क़ान)

यह सूरत मक्के में उतरी, और इसमें ७७ आयतें और ६ रुकू हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

वह (ख़ुदाये इज़्ज़ोजल) बहुत ही बा बरकत है, जिस ने अपने बन्दे पर क़ुरान नाज़िल फ़रमाया ताकि अहले हाल को हिदायत करे (१) वही कि आस्मानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है और जिस ने (किसी को) बेटा नहीं बनाया, जिस

की बादशाही में कोई शरीक नहीं, और जिस ने हर चीज़ को पैदा किया, फिर उस का एक अन्दाज़ा ठैहराया (२) और (लोगों ने) उस के सिवा और माबूद बना लिये हैं जो कोई चीज़ भी पैदा नहीं कर सकते और ख़ुद पैदा किये गये हैं, और न अपने नुक़सान और नफ़े का कुछ अख़्तियार रखते हैं, और न मरना उन के अख़्यितार में है और न जीना और न मर कर उठ खड़े होना (३) और काफ़िर कहते हैं कि यह (क़ुरान) मन घड़त बातें हैं जो इस (मुद्दई-ऐ-रसालत) ने बना ली हैं, और लोगों ने इस में उस की मदद की है, यह लोग (ऐसा कहने से) ज़ुल्म और झूठ पर (उतर) आये हैं (४) और कहते हैं कि यह पहले लोगों की कहानियाँ हैं जिस को उस ने लिख रखा है, और वह सुब्हो शाम इस को पढ़ पढ़ कर सुनाई जाती है (५) कह दो कि उस ने उस को उतारा है जो आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातों को जानता है, बेशक वह बख्शने वाला मेहरबान है (६) और कहते हैं कि यह कैसा पैग़म्बर है कि खाता है और बाज़ारों में चलता फिरता है, क्यों नाज़िल नहीं किया गया इसके पास कोई फ़रिश्ता न कि इसके साथ हिदायत करने को रहता (७) या इसकी तरफ़ (आस्मान से) ख़ज़ाना उतारा जाता, या इस का कोई बाग़ होता कि उस में से खाया करता, और ज़ालिम कहते हैं कि तुम तो एक जादूज़दा शख्स की पैरवी करते हो (८) (ऐ पैग़म्बर) देखो तो यह तुम्हारे बारे में किस किस तरह की बातें करते हैं, सो गुमराह हो गये हैं और रस्ता नहीं पा सकते (९)—रुकू—१

वह (ख़ुदा) बहुत बा बरकत है, जो अगर चाहे तो तुम्हारे लिये इस से बेहतर (चीज़ें) बना दे (यानी) बाग़ात जिन के नीचे नहरें बह रही हों नीज़ तुम्हारे लिये महल बना दे (१०) बल्कि यह तो क़यामत ही को झुठलाते हैं, और हम ने क़यामत के झुठलाने वालों के लिये दोज़ख तैयार कर रखी है (११) जिस वक्त वह उन को दूर से देखेगी (तो ग़ज़बनाक हो रही होगी, और यह) उस के जोशे (ग़ज़ब) और चीख़ने चिल्लाने को सुनेंगे (१२) और जब यह दोज़ख की किसी तंग जगह में (ज़न्जीरों में) जकड़ कर डाले जायें, वहाँ मौत को पुकारेंगे (१३) आज एक ही मौत को न पुकारो, बहुत सी मौतों को पुकारो (१४) पुछो कि यह बेहतर है या बहिश्ते जाविदानी, जिस का परहेज़गारों से वायदा है, यह उन (के अमलों) का बदला और रहने का ठिकाना होगा (१५) वहाँ जो चाहेंगे, उन के लिये मैयस्सर होगा, हमेशा उस में रहेंगे, यह वायदा ख़ुदा को (पूरा करना) लाज़िम है और इस लायक़ है कि माँग लिया जाये (१६) और जिस दिन (ख़ुदा) उन को, जिन्हें यह ख़ुदा के सिवा पूजते हैं, जमा करेगा तो फ़रमायेगा, क्या तुम ने मेरे इन बन्दों को गुमराह किया था, या यह ख़ुद गुमराह हो गये थे (१७) वह कहेंगे, तू पाक है, हमें यह बात शायाँ न थी कि तेरे सिवा औरों को दोस्त बनाते, लेकिन तूने ही इन को और इन के बाप दादा को बरतने को नैयमतें दीं, यहाँ तक कि यह तेरी याद को भूल गये, और यह हलाक होने वाले लोग थे (१८) तो

(काफ़िरो) उन्होंने तो तुम को तुम्हारी बात में झुठला दिया पस (अब) तुम (अज़ाब को) न फेर सकते हो, न (किसी से) मदद ले सकते हो, और जो शख्स तुम में से ज़ुल्म करेगा, हम उस को बड़े अज़ाब का मज़ा चखायेंगे (१९) और हम ने तुम से पहले जितने पैग़म्बर भेजे हैं सब खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते फिरते थे, और हमने तुम्हें एक दूसरे के लिये आज़-माइश बनाया है, क्या तुम सब्र करोगे, और तुम्हारा पर्वरदिगार तो देखने वाला है (२०)—रुकू—२

उन्नीसवाँ पारा—वक़ालल्लज़ीन

(सूर–हे–फ़ुर्क़ान)

और जो लोग हम से मिलने की उमीद नहीं रखते, कहते हैं कि हम पर फ़रिश्ते क्यों न नाज़िल किये गये, या हम अपनी आँख से अपने पर्वरदिगार को देख लें. यह अपने ख्याल में बड़ाई रखते हैं और (इस बिना पर) बड़े सरकश हो रहे हैं (२१) जिस दिन यह फ़रिश्तों को देखेंगे, यह उस दिन गुन्हेगारों के लिये कोई खुशी की बात नहीं होगी, और कहेंगे (खुदा करे) तुम रोक लिये (और) बन्द कर दिये जाओ (२२) और जो इन्होंने अमल किये होंगे, हम उनकी तरफ़ मुतवज्जोह होंगे, तो उनको उड़ती खाक कर देंगे (२३) उस दिन अहले जन्नत का ठिकाना भी

बेहतर होगा, और मक़ामे इस्तराहत भी होगा (२४) और जिस दिन आस्मान अबर के साथ फूट जायेगा, और फ़रिश्ते नाज़िल किये जायेंगे (२५) उस दिन सच्ची बादशाही ख़ुदा ही की होगी और वह दिन काफ़िरों पर (सख़्त) मुश्किल होगा (२६) और जिस दिन (ना आक़बत अन्देश) ज़ालिम अपने हाथ काट काट खायेगा (और कहेगा) ऐ काश, मैंने पैग़म्बर के साथ रिश्ता अख़्तियार किया होता (२७) हाय, शामत, काश मैंने फ़लाँ शख़्स को दोस्त न बनाया होता (२८) उसने मुझको (किताब) नसीहत के मेरे पास आने के बाद बहका दिया और शैतान इन्सान को वक्त पर दग़ा देने वाला है (२९) और पैग़म्बर कहेंगे कि पर्वर-दिगार मेरी क़ौम ने इस क़ुरान को छोड़ रखा था (३०) और इसी तरह हमने गुन्हेगारों में से हर पैग़म्बर का दुश्मन बना दिया, और तुम्हारा पर्वरदिगार हिदायत देने और मदद करने को काफ़ी है (३१) और काफ़िर कहते हैं, कि उस पर क़ुरान एक ही दफ़ा क्यों न उतारा गया, इस तरह (आहिस्ता आहिस्ता) इसलिये उतारा गया, कि इस से तुम्हारे दिल को क़ायम रखें, और इसी वास्ते हम इसको ठैहर ठैहर कर पढ़ते हैं (३२) और यह लोग तुम्हारे पास जो (ऐतराज़ की) बात लाते हैं, हम तुम्हारे पास उनका माक़ूल और ख़ूब मुश्शर्रेह जवाब भेज देते हैं (३३) जो लोग अपने मूंहों के बल दोज़ख की तरफ़ जमा किये जायेंगे, उनका ठिकाना भी बुरा है, और वह रस्ते से भी बहके हुए हैं (३४)—रुकू ३

और हमने मूसा को किताब दी, और उनके भाई हारुन को मददगार बना कर उनके साथ किया (३५) और कहा कि दोनों उनके पास जाओ, जिन लोगों ने हमारी आयतों की तक़ज़ीब की (जब तक़ज़ीब पर अड़े रहे) तो हमने उनको हलाक कर डाला (३६) और नूह की क़ौम ने भी जब पैग़म्बरों को झुठलाया तो हमने उन्हें गर्क़ कर डाला, और लोगों के लिये निशानी बना दिया, और ज़ालिमों के लिये हमने दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है (३७) और अगर समूद और कुऐं वालों और उनके दर्मियान बहुत सी जमायतों को भी (हलाक कर डाला) (३८) और सबके (समझाने के लिये) हमने मिसालें बयान कीं और (न मानने पर) सबको तैहस नैहस कर दिया (३९) और यह काफ़िर उस बस्ती पर भी गुज़र चुके हैं; जिस पर बुरी तरह से मैंह बरसाया गया था, क्या वह उस को देखते न होंगे, बल्कि उनको (मरने के बाद) जी उठने की उमीद ही नहीं थी (४०) और यह लोग जब तुमको देखते हैं तो तुम्हारी हंसी उड़ाते हैं, कि क्या यही शख्स है जिसको ख़ुदा ने पैग़म्बर बना कर भेजा है (४१) अगर हम अपने माबूदों के बारे में साबित क़दम न रहते तो यह ज़रूर हमको बहका देता (और उनसे फेर देता) और यह अन्क़रीब मालूम कर लेंगे जब अज़ाब देखेंगे कि सीधे रस्ते से कौन भटका हुआ है (४२) क्या तुमने उस शख्स को देखा, जिसने अपनी ख़्वाहिशें नफ़्स को माबूद बना रखा है, तो क्या तुम उस पर निगेहबान हो सकते हो (४३) या तुम यह ख़्याल

करते हो कि इनमें अक्सर सुनते या समझते हैं, (नहीं) यह तो चौपायों की तरह हैं, बल्कि उनसे भी ज़्यादा गुमराह हैं (४४)-रुकू—४

बल्कि तुमने पर्वरदिगार (की क़ुदरत) को नहीं देखा कि वह साये को किस तरह दराज़ करके (फैला) देता है और अगर वह चाहता तो उसको (बे हरकत) ठैहरा रखता, फिर सूरज को उस का रेहनुमा बना देता है (४५) फिर हम उस को आहिस्ता आहिस्ता अपनी तरफ़ समेट लेते हैं (४६) और वही तो है तो जिसने तुम्हारे लिये रात को पर्दा नीन्द को आराम बनाया और दिन को उठ खड़े होने का वक्त ठैहराया (४७) और वही तो है, जो अपनी रहमत के मैंह के आगे हवाओं को खुशखबरी बनाकर भेजता है और हम आस्मान से पाक (और निथरा हुआ) पानी बरसाते हैं (४८) ताकि उससे शहरे मुर्दा (यानी ज़मीने उफ़्तादा) को ज़िन्दा कर दें, और फिर हम उसे बहुत से चौपायों और आदमियों को जो हमने पैदा किये हैं, पिलाते हैं (४६) और हमने इस (क़ुरान की आयतों) को तरह तरह के लोगों में बयान किया ताकि नसीहत पकड़ें, मगर बहुत से लोगों ने इन्कार के सिवा क़बूल न किया (५०) और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में डराने बाला भेज देते (५१) तो तुम काफ़िरों का कहा न मानो, और उनसे इस क़ुरान के हुक्म के मुताबिक बड़ी शुद्दो मुद्द से लड़ो (५२) और बही तो है जिसने दो दरियाओं को मिला दिया, एक का पानी शीरीं है, प्यास बुझाने बाला, और दूसरे

का खारी, छाती जलाने वाला, और दोनों के दर्मियान एक आड़ और मज़बूत ओट बना दी (५३) और वही तो है जिसने पानी से आदमी पैदा किया, फिर उसको साहिबे नसब और साहिबे क़राबते दामादी बना दिया, और तुम्हारा पर्वरदिगार (हर तरह की) क़ुदरत रखता है (५४) और यह लोग खुदा को छोड़ कर ऐसी चीज़ की परस्तिश करते हैं कि जो न उनको फ़ायदा पहुंचा सके और न ज़रर और काफ़िर अपने पर्वरदिगार की मुखालिफ़त में बड़ा ज़ोर मारता है (५५) और हमने (ऐ मोहम्मद) तुमको सिर्फ़ खुशी और अज़ाब की खबर सुनाने को भेजा है (५६) कह दो कि मैं तुम से इस (काम) की उजरत नहीं माँगता, हाँ जो शख्स चाहे अपने पर्वरदिगार की तरफ़ (जाने का) रस्ता अख्तियार करे (५७) और उस (खुदाये) ज़िन्दा पर भरोसा रखो जो (कभी) नहीं मरेगा, और उसकी तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहो और वह अपने बन्दों के गुनाहों से खबर रखने को काफ़ी है (५८) जिसने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के दर्मियान में है, छै दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर जा ठेहरा, वह (जिसका नाम) रहमान (यानी बड़ा मेहरबान) है तो उसका हाल किसी बा खबर से दरयाफ़्त कर लो (५९) और जब इन (कफ़्फ़ार) से कहा जाता है कि रहमान को सजदा करो, तो कहते हैं कि रहमान क्या ? क्या जिसके लिये तुम हम से कहते हो, हम उसके आगे सजदा करें और उससे और बिदकते हैं (६०)— रुकू ५

और (ख़ुदा) बड़ी बरकत वाला है, जिसने आस्मानों में बुर्ज बनाये और उनमें (आफ़ताब का निहायत रोशन) चिराग़ और चमकता हुआ चान्द भी बनाया (६१) और वही तो है जिसने रात और दिन को एक दूसरे के पीछे आने जाने वाला बनाया (यह बातें उस शख़्स के लिये) जो ग़ौर करना चाहे, या शुक्र-गुज़ारी का इरादा करे (सोचने और समझने की हैं) (६२) और ख़ुदा के बन्दे तो वह हैं जो ज़मीन पर आहिस्तगी से चलते हैं और जब जाहिल लोग उनसे (जाहिलाना) गुफ़्तगू करते हैं तो सलाम कहते हैं (६३) और वह जो अपने पर्वरदिगार के आगे सजदा करके और (इज़्ज़ो अदब से) खड़े रह कर रातें बसर करते हैं (६४) और वह जो दुआ माँगते हैं कि ऐ पर्वरदिगार दोज़ख़ के अज़ाब को हम से दूर रखियो कि उसका अज़ाब बड़ी तकलीफ़ की चीज़ है (६५) और दोज़ख़ ठहरने और रहने की बहुत बुरी जगह है (६६) और जब वह ख़र्च करते हैं तो न बेजा उड़ाते हैं और न तंगी को काम में लाते हैं, बल्कि ऐतदाल के साथ न ज़रूरत से ज़्यादा न कम (६७) और वह जो ख़ुदा के साथ किसी और माबूद को नहीं पुकारते, और जिन जान्दार का मार डालना ख़ुदा ने हराम किया है, उसको क़त्ल नहीं करते, मगर जायज़ तरीक़ पर (यानी हुक्मे शरीयत के मुताबिक) और बदकारी नहीं करते, और जो यह काम करेगा सख़्त गुनाह में मुब्तिला होगा (६८) क़यामत के दिन उसको दूना अज़ाब होगा और ज़िल्लत व ख़्वारी से उसमें हमेशा रहेगा (६९) मगर जिस

ने तौबा की और ईमान लाया और अच्छे काम किये तो ऐसे लोगों के गुनाहों को ख़ुदा नेकियों से बदल देगा और ख़ुदा तो बख़्शने वाला मेहरबान है (७०) और जो तौबा करता है और नेक अमल करता है, तो बेशक वह ख़ुदा की तरफ़ रजू करता है (७१) और वह जो झूठी गवाही नहीं देते और जब उनको बेहूदा चीज़ों के पास से गुज़रने का इत्तिफ़ाक़ हो, तो बुज़ुर्गाना अन्दाज़ से गुज़रते हैं (७२) और वह कि जब उनको पर्वरदिगार कीबातें समझाई जाती हैं तो उन पर अन्धे और बहरे होकर नहीं गिरते बल्कि ग़ौर से सुनते हैं (७३) और वह जो (ख़ुदा से) दुआ माँगते हैं कि ऐ पर्वरदिगार, हमको हमारी बीवियों की तरफ़ से (दिल का चैन) और औलाद की तरफ़ से आँख की ठन्डक अता फ़रमा और हमें परहेज़गारों का इमाम बना (७४) इन (सिफ़ात के) लोगों को उनके सब्र के बदले ऊंचे महल दिये जायेंगे, और वहाँ फ़रिश्ते उनसे दुआ व सालम के साथ मुलाक़ात करेंगे (७५) उस में वह हमेशा रहेंगे, और वह ठैहरने और रहने की बहुत ही उमदा जगह है (७६) कह दो कि अगर तुम (खुदा को) नहीं पुकारते, तो मेरा पर्वरदिगार भी तुम्हारी कुछ पर्वाह नहीं करता तुमने तकज़ीब की है, सो उसकी सज़ा (तुम्हारे लिये) लाज़िम होगी (७७)—रुकू ६

—०—

२६–सूर–हे–अलशुअरा (पारा वक़ालल्लज़ीन)

यह सूरत मक्के में उतरी, और इसमें २२७ आयतें और ११ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

त–स–म (१) यह किताबे रोशन की आयतें हैं (२) (ऐ पैग़म्बर) शायद तुम इस (रन्ज) से कि यह लोग ईमान नहीं लाते अपने तईं हलाक कर दोगे (३) अगर हम चाहें तो उन पर आस्मान से निशानी उतार दें, फिर उनकी गरदनें उसके आगे झुक जायें (४) और उनके पास (खुदाय) रहमान की तरफ़ से कोई नसीहत नहीं आती, मगर यह उससे मूंह फेर लेते हैं (५) सो यह तो झुटला चुके, अब उनको उस चीज़ की हक़ीक़त मालूम होगी जिस की हंसी उड़ाते हैं (६) क्या इन्होंने ज़मीन की तरफ़ नहीं देखा कि हमने उसमें हर क़िस्म की कितनी नफ़ीस चीज़ें उगाई हैं (७) कुछ शक नहीं कि उसमें (क़ुदरते ख़ुदा की) निशानी है, मगर यह अक्सर ईमान लाने वाले नहीं हैं (८) और तुम्हारा पर्वरदिगार ग़ालिब (और) मेहरबान है (९)—रुकू १

और जब तुम्हारे पर्वरदिगार ने मूसा को पुकारा कि ज़ालिम लोगों के पास जाओ (१०) (यानी) क़ौमे फ़िरऔन के पास क्या यह डरते नहीं (११) उन्होंने कहा कि मेरे पर्वरदिगार मैं डरता हूं कि यह मुझे झूठा समझें (१२) और मेरा दिल तंग होता है

और मेरी ज़बान रुकती है, तू हारुन को हुक्म भेज कि मेरे साथ चलें (१३) और उन लोगों का मुझ पर एक गुनाह (यानी क़बती के खून का दावा) भी है, सो मुझे वह ख़ौफ़ है कि मुझ को मार ही न डालें (१४) फ़रमाया, हर्गिज नहीं, तुम दोनों हमारी निशानियाँ लेकर जाओ हम तुम्हारे साथ सुनने वाले हैं (१५) तो दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और कहो कि हम तमाम जहान के मालिक के भेजे हुए हैं (१६) और इसलिये आये हैं, कि आप बनी इसराईल को हमारे साथ जाने की इजाज़त दें (१७) फ़िरऔन ने मूसासे कहा कि क्या हमने तुमको कि अभी बच्चे थे, परवरिश नहीं किया, और तुमने बरसों हमारे हाँ उम्र बसर नहीं की (१८) और तुमने वह काम किया था जो किया, और तुम ना शुक्रे मालूम होते हो (१९) (मूसा ने) कहा कि (हाँ) वह हरकत मुझ से नागहाँ सरज़द हुई थी और मैं खताकारों में था (२०) तो जब मुझे तुम से डर लगा, तो तुममें से भाग गया, फिर ख़ुदा ने मुझे नबव्वत व इल्म बख़्शा और मुझे पैग़म्बरों में से किया (२१) और (क्या) यही एहसान है जो आप मुझ पर रखते हैं, कि आपने बनी इसराईल को गुलाम बना रखा है (२२) फ़िरऔन ने कहा कि तमाम जहान का मालिक क्या ? (२३) कहा कि आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ इन दोनों के दर्मियान है सबका मालिक है, वशर्ते कि तुम लोगों को यक़ीन हो (२४) फ़िरऔन ने अपने अहाली मवाली से कहा कि क्या तुम सुनते नहीं (२५) (मूसा नें) कहा कि तुम्हारा और तुम्हारे बाप दादा का मालिक (२६) (फ़िरऔन ने) कहा कि (यह) पैग़म्बर

जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है बावला है (२७) मूसा ने कहा कि मशरिक़ और मग़रिब जो कुछ उन दोनों में है, सबका मालिक बशर्ते कि तुम को समझ हो (२८) (फ़िरऔन ने) कहा कि अगर तुमने मेरे सिवा किसी और को माबूद बनाया तो मैं तुम्हें क़ैद कर दूंगा (२९) (मूसा ने) कहा, ख़्वाह मैं आपके पास रोशन चीज़ लाऊं (यानी मौजूदा) (३०) फ़िरऔन ने कहा, कि अगर सच्चे हो तो उसे लाओ (दिखाओ) (३१) पस उन्होंने अपनी लाठी डाली, तो वह उसी वक्त सरीह अजदहा बन गई (३२) और अपना हाथ निकाला तो उसी दम देखने वालों को सफ़ैद (बुर्राक़ नज़र आने लगा) (३३)—रुकू २

फ़िरऔन ने अपने गिर्द के सरदारों से कहा, कि यह कामिले फ़न जादूगर है (३४) चाहता है कि तुम को अपने जादू (के ज़ोर से) तुम्हारे मुल्क से निकाल दे, तो तुम्हारी क्या राय है (३५) उन्होंने कहा कि इसके और इसके भाई (के बारे)में कुछ तवक्कुफ़ कीजिये और शहरों में हरकारे भेज दीजिये (३६) कि सब माहिर जादूगरों को (जमा करके) आप के पास ले आयें (३७) तो जादूगर एक मुक़र्रर दिन की मीयाद पर जमा हो गये (३८) और लोगों से कह दिया गया कि तुम (सब) को इकट्ठे हो कर जाना चाहिये (३९) ताकि अगर जादूगर ग़ालिब रहें तो हम उन के पैरो हो जायें (४०) जब जादूगर आ गये तो फ़िरऔन से कहने लगे, कि अगर हम ग़ालिब रहे, तो हमें सिला भी अता होगा ? (४१) फ़िरऔन ने कहा, हां, और तुम मुक़रिबों में

दाख़िल कर लिये जाओगे (४२) मूसा ने कहा कि जो चीज़ डालनी चाहते हो डालो (४३) तो उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डालीं और कहने लगे कि फ़िरऔन के इक़बाल की क़सम हम ज़रूर ग़ालिब रहेंगे (४४) फिर मूसा ने अपनी लाठी डाली तो वह उन चीज़ों को जो जादूगर ने बनाई थीं, यकायक निगलने लगी (४५) जब जादूगर सजदे में गिर पड़े (४६) (और) कहगे लगे कि हम तमाम जहान के मालिक पर ईमान लाये (४७) जो मूसा और हारुन का मालिक है (४८) फ़िरऔन ने कहा क्या इस से पहले कि मैं तुम को इजाज़त दूं, तुम इस पर ईमान ले आये, बेशक यह तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम को जादू सिखाया है, सो अन्क़रीब तुम इस का (अन्जाम) मालूम कर लोगे कि मैं तुम्हारे हाथ और पांव अतराफ़े मुख़ालिफ़ से कटवा दूंगा और तुम को सूली चढा दूंगा (४९) उन्होंने कहा कुछ नुक़सान (की बात) नहीं, हम अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं (५०) हमें उमीद है कि हमारा पर्वरदिगार हमारे गुनाह बख़्श देगा इस लिये हम अव्वल ईमान लाने वालों में हैं (५१)—रुकू—३

और हम ने मूसा की तरफ़ वही भेजी कि हमारे बन्दों को रात को ले निकलो कि (फ़िरऔनियों की तरफ़ से) तुम्हारा तआक़ुब किया जायेगा (५२) तो फ़िरऔन ने शहरों में नक़ीब रवाना किये (५३) (और कहा) कि यह लोग थोड़ी सी जमायत हैं (५४) और यह हमें गुस्सा दिला रहे हैं (५५) और हम सब

बा साज़ो सामान हैं (५६) तो हम ने उन को बाग़ों और चश्मों से निकाल दिया (५७) और ख़जानों और नफ़ीस मकानात से (उन के साथ हम ने) (५८) इस तरह (किया) और उन चीज़ों का वारिस बनी इसराईल को कर दिया (५८) तो उन्होंने सूरज निकलते (यानी सुब्ह को) उन का तआक़ुब किया (६०) जब दोनों जमायतें आमने सामने हुईं, तो मूसा के साथी कहने लगे कि हम तो पकड़ लिये गये (६१) मूसा ने कहा हर्गिज़ नहीं, मेरा पर्वरदिगार मेरे साथ है, वह मुझे रस्ता बतायेगा (६२) उस वक्त हम ने मूसा की तरफ़ वही भेजी, कि अपनी लाठी दरिया पर मारो, तो दरिया फट गया और हर एक टुकड़ा (यूं) हो गया (कि) गोया बड़ा पहाड़ (है) (६३) और दूसरों को वहाँ हमने क़रीब कर दिया (६४) और मूसा औरउनके साथ वालों को तो बचा लिया (६५) फिर दूसरों को डूबो दिया (६६) बेशक, इस (क़िस्से) में निशानी है, लेकिन यह अक्सर ईमान लाने वाले नहीं (६७) और तुम्हारा पर्वरदिगार तो ग़ालिब (और) मेहरबान है (६८)—रुकू—४

और उन को इब्राहीम का हाल पढ़ कर सुनाओ (६९) जब उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि तुम किस चीज़ को पूजते हो (७०) वह कहने लगे कि हम बुतों को पूजते हैं और उन की पूजा पर क़ायम हैं (७१) इब्राहीम ने कहा कि जब तुम उन को पुकारते हो, तो क्या वह तुम्हारी आवाज़ को सुनते हैं (७२) या तुम्हें कुछ फ़ायदे दे सकते हैं,

या नुक़सान पहुंचा सकते हैं (७३) उन्होंने कहा (नहीं) बल्कि हम ने अपने बाप दादा को इसी तरह करते देखा है (७४) (इब्राहीम ने) कहा कि तुम ने देखा कि जिन को तुम पूजते रहे हो (७५) तुम भी और तुम्हारे (अगले) बाप दादा भी (७६) वह मेरे दुश्मन हैं लेकिन खुदाये रब्बुल आलमीन मेरा दोस्त है) (७७) जिस ने मुझे पैदा किया और वही मुझे रस्ता दिखाता है (७८) और वह मुझे खिलाता है और पिलाता है (७९) और जब मैं बीमार पड़ता हूं तो मुझे शिफ़ा बख़शता है (८०) और वह जो मुझे मारेगा और फिर ज़िन्दा करेगा (८१) और वह जिस से मैं उमीद रखता हूँ कि क़यामम के दिन मेरे गुनाह बख्शेगा (८२) ऐ पर्वरदिगर मुझे इल्मो दानिश अता फ़रमा और नेकू-कारों में शामिल कर (८३) और पिछले लोगों में मेरा ज़िक्रे नेक (जारी) कर (८४) और मुझे नैयमत की बहिश्त के वारिसों में कर (८५) और मेरे बाप को बख़्श दे कि वह गुमराहों में से हैं (८६) और जिस दिन लोग उठा खड़े किये जायेंगे, मुझे रुसवा न कीजिये (८७) जिस दिन न माल ही कुछ काम दे सकेगा न बेटे (८८) हाँ ज़ो शख्स ख़ुदा के पास पाक दिल ले कर आया (वह बच जायेगा) (८९) और बहिश्त परहेज़गारों के क़रीब कर दी जायेगी (९०) और दोज़ख गुमराहों के सामने लाई जायेगी (९१) और उन से कहा जायेगा कि जिन को तुम पुजते थे, वह कहाँ है (९२) यानी जिन को ख़ुदा के सिवा (पूजते थे) क्या वह तुम्हारी मदद कर सकते हैं या खुद बदला ले सकते

हैं (९३) तो वह और गुमराह (यानी बुत और बुत परस्त) औन्धे मूंह दोज़ख़ में डाल दिये जायेंगे (९४) और शैतान के लश्कर, सब के सब (दाखिले जहन्नुम होंगे) (९५) (वहाँ वह आपस में झगड़ेंगे, और कहेंगे (९६) कि ख़ुदा की क़सम हम तो सरीह गुमराही में थे (९७) जबकि तुम्हीं (खुदाये) रब्बुल आलमीन के बराबर ठैहराते थे (९८) और हम को इन गुन्हेगारों ने ही गुमराह किया था (९९) तो (आज) न कोई हमारा सिफ़ारिश करने वाला है (१००) और न गर्म जोश दोस्त (१०१) काश हमें (दुनियाँ में) फिर जाना हो तो हम मोमिनों में हो जायें (१०२) बेशक, इस में निशानी है, और इन में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं (१०३) और तुम्हारा पर्वरदिगार तो ग़ालिब और मेहरबान है (१०४)—रुकू—५

क़ौमे नूह ने भी पैग़ाम्बरों को झुठलाया (१०५) जब उन से उन के भाई नूह ने कहा, कि तुम डरते क्यों नहीं (१०६) मैं तो तुम्हारा अमानतदार हूँ (१०७) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मनो (१०८) और मैं इस काम का तुम से कुछ सिला नहीं माँगता, मेरा सिला तो ख़ुदाये रब्बुल आलमीन पर ही है (१०९) तो ख़ुदा से डरो और मेरे कहने पर चलो (११०) वह बोले कि क्या हम तुम को मान लें और तुम्हारे पैरो तो रज़ील लोग होते हैं (१११) नूह ने कहा कि मुझे क्या मालूम कि वह क्या करते हैं (११२) उन का हिसाब (आमाल) मेरे पर्वरदिगार के ज़िम्मे है, काश तुम समझो (११३) और मैं मोमिनों को

निकाल देने वाला नहीं हूँ (११४) मैं तो सिर्फ़ खोल खोल कर नसीहत करने वाला हूं (११५) उन्होंने कहा कि नूह, अगर तुम बाज़ न आओगे, तो संगसार कर दिये जाओगे (११६) नूह ने कहा पर्वरदिगार, मेरी क़ौम ने तो मुझे झुठला दिया (११७) सो तू मेरे और उन के दर्मियान एक खुला फ़ैसला कर दे, और मुझे और जो मेरे साथ हैं, उन को बचा ले (११८) पस हम ने उन को और जो उन के साथ कश्ती में सवार थे, उन को, बचा लिया (११९) फिर उस के बाद बाकी लोगों को डूबो दिया (१२०) बेशक इस में निशानी है, और उन में अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे (१२१) और तुम्हारा पर्वरदिगार तो ग़ालिब और मेहरबान है (१२२)—रुकू – ६

आद ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया (१२३) जब उनसे उनके भाई हूद ने कहा क्या तुम डरते नहीं (१२४) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ (१२५) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो (१२६) और मैं इसका तुम से कुछ बदला नहीं मांगता, मेरा बदला ख़ुदाये रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है (१२७) भला तुम जो हर ऊंची जगह पर निशान तामीर करते हो (१२८) और महल बनाते हो, शायद तुम हमेशा रहोगे (१२९) और जब किसी को पकड़ते हो ज़ालिमाना पकड़ते हो (१३०) तो ख़ुदा से डरो और मेरी इतायत करो (१३१) और उस को जिस ने तुमको इन चीज़ों से मदद दी, जिनको तुम जानते हो, डरो (१३२) उसने तुम्हें चारपायों और बेटों से मदद दी (१३३) और

बाग़ों और चश्मों से (१३४) मुझ को तुम्हारे बारे में बड़े (सख़्त) दिन के अज़ाब का ख़ौफ़ है (१३५) वह कहने लगे, हमें ख़्वाह नसीहत करो या न करो हमारे लिये यकसाँ है (१३६) यह तो अगलों ही के तरीक़ हैं (१३७) और हम पर कोई अज़ाब नहीं आयेगा (१३८) तो उन्होंने हूद को झुठलाया, तो हमने उनको हलाक कर डाला, बेशक इसमें निशानी है और उनमें अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे (१३९) और तुम्हारा पर्वरदिगार तो ग़ालिब और मेहरबान है (१४०) रुकू—७

और क़ौमे समूद ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया (१४१) जब उनको उनके भाई सालेह ने कहा, तुम डरते क्यों नहीं (१४२) मैं तो तुम्हारा अमानतदार हूं (१४३) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो (१४४) और मैं इसका तुमसे कुछ बदला नहीं माँगता मेरा बदला (ख़ुदाये) रब्बुलआलमीन के जिम्मे है (१४५) क्या जो चीज़ें (तुम्हें यहां मैयस्सर) हैं, उनमें तुम बे ख़ौफ़ छोड़ दिये जाओगे (१४६) (यानी) बाग़ और चश्मे (१४७) और खेतियाँ और खजूरें जिनके ख़ोशे लतीफ़ य नाजुक होते हैं (१४८) और तकल्लुफ़ से पहाड़ों में तराश कर घर बनाते हो (१४९) सो ख़ुदा से डरो, और मेरे कहने पर चलो (१५०) और हद से तजावुज़ करने वालों की बात न मानो (१५१) जो मुल्क में फ़िसाद करते हैं और इस्लाह नहीं करते (१५२) वह कहने लगे कि तुम तो जादू ज़दा हो (१५३) तुम और कुछ नहीं हमारी ही तरह के आदमी हो, अगर सच्चे हो तो कोई निशानी पेश करो

(१५४) सालैह ने कहा (देखो) यह ऊन्टनी है (एक दिन) इसके पानी पीने की बारी है और एक मौईय्यन रोज़ तुम्हारी बारी (१५५) और इसको कोई तकलीफ़ न देना (नहीं तो) तुमको सख्त अज़ाब आ पकड़ेगा (१५६) तो उन्होंने उसकी कौन्चें काट डालीं, फिर नादिम हुए (१५७) सो उनको अज़ाब ने आन पकड़ा. बेशक, इसमें निशानी है, और उनमें अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे (१५८) और तुम्हारा पर्वरदिगार तो ग़ालिब (और) मेहरबान है (१५९)—रुकू ८

और क़ौमे लूत ने भी पैग़म्बरों को झुठलाया (१६०) जब उन से उनके भाई लूत ने कहा कि तुम क्यों नहीं डरते (१६१) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं (१६२) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो (१६३) और मैं तुम से इस (काम) का बदला नहीं माँगता, मेरा बदला (ख़ुदाये) रब्बुलआलमीन के ज़िम्मे है (१६४) क्या तुम अहले आलम में से लड़कों पर माइल होते हो (१६५) और तुम्हारे पर्वरदिगार ने जो तुम्हारे लिये तुम्हारी बीवियाँ पैदा की हैं उनको छोड़ देते हो, हक़ीक़त यह है कि तुम हद से निकल जाने वाले हो (१६६) वह कहने लगे कि लूत, अगर तुम बाज़ न आओगे तो शहर बदर कर दिये जाओगे (१६७) लूत ने कहा कि मैं तुम्हारे काम का सख्त दुश्मन हूं (१६८) ऐ पर्वरदिगार, मुझ को और मेरे घर वालों को इनके कामों (के वबाल से) नजात दे (१६९) सो हमने उनको और उनके सब घर वालों को नजात दी (१७०) मगर एक बुढ़िया

कि पीछे रह गई (१७१) फिर हमने औरों को हलाक कर दिया (१७२) और उन पर मैंह बरसाया, सो जो मैंह उन (लोगों) पर (बरसा) जो डराये गये, बुरा था (१७३) बेशक इसमें निशानी है, और उनमें अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे (१७४) और तुम्हारा पर्वरदिगार तो ग़ालिब (और) मेहरबान है (१७५)—रुकू ६

और बन के रहने वालों ने भी पैग़म्बर को झुठलाया (१७६) जब उनसे शुएब ने कहा कि तुम डरते नहीं (१७७) मैं तो तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं (१७८) तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो (१७६) और मैं इस काम का तुम से कुछ बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो ख़ुदाये रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है (१८०) (देखो) पैमाना पूरा भरा करो और नुक़सान न किया करो (१८१) और तराज़ू सीधी रख कर तोला करो (१८२) और लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो, और मुल्क में फ़िसाद न कराते फिरो (१८३) और उससे डरो जिसने तुमको और तुम से पहली खलक़त को पैदा किया है (१८४) वह कहने लगे कि तुम तो जादू ज़दा हो (१८५) और तुम और कुछ नहीं, हमारे जैसे आदमी हो, और हमारा ख्याल है कि तुम झूठे हो (१८६) अगर सच्चे हो तो हम पर आस्मान से एक टुकड़ा लाकर गिराओ (१८७) शुऐब ने कहा, कि जो काम तुम करते हो, मेरा पर्वर-दिगार उससे खूब वाकिफ़ है (१८८) तो उन लोगों ने उनको झुठलाया, पस सायबान के अज़ाब ने उनको आ पकड़ा, बेशक

वह बड़े (सख्त) दिन का अज़ाब था (१८९) इसमें यक़ीनन निशानी है, और उनमें अक्सर ईमान लाने वाले नहीं थे (१९०) और तुम्हारा पर्वरदिगार तो ग़ालिब (और) मेहरबान है (१९१)—रुकू १०

और यह (क़ुरान ख़ुदाये) पर्वरदिगारे आलम का उतारा हुआ है (१९२) इसको अमानतदार फ़रिश्ता लेकर उतरा है (१९३) (यानी इसने) तुम्हारे दिल पर (इल्क़ा) किया है, ताकि (लोगों को) नसीहत करते रहो (१९४) (और अल्क़ा भी) फसीह अरबी ज़बान में (किया है) (१९५) इसकी ख़बर पहले पैग़म्बरों की किताबों में (लिखी हुई) है (१९६) क्या उनके लिये यह सनद नहीं है, कि उलमाये बनी इसराईल इस (बात) को जानते हैं (१९७) और अगर हम इसको किसी ग़ैर अहले जबान पर उतारते (१९८) और वह इसे (उन) लोगों को पढ़ कर सुनाता तो यह उसे (कभी) न मानते (१९९) इसी तरह हमने इन्कार को गुन्हेगारों के दिलों में दाखिल कर दिया (२००) वह जब तक दर्द देने वाला अज़ाब न देख लेंगे, इसको नहीं मानेंगे (२०१) वह उन पर नागहाँ आ वाक़ैय होगा और उन्हें ख़बर भी न होगी (२०२) उस वक्त कहेंगे, क्या हमें मोहलत मिलेगी (२०३) तो क्या यह हमारे अज़ाब को जल्दी तलब कर रहे हैं (२०४) भला देखो तो अगर हम इनको बरसों फ़ायदा देते रहे (२०५) फिर इन पर वह (अजाब आ) वाक़ैय हो, जिस का तुमसे वायदा किया जाता है (२०६) तो जो फ़ायदे यह उठा

रहे हैं, इनके किसी काम आयेंगे (२०७) और हमने कोई बस्ती हलाक नहीं की, मगर उसके लिये नसीहत करने वाले (पहले भेज देते) थे (२०८) ताकि नसीहत कर दें, और हम ज़ालिम नहीं हैं (२०९) और इस (क़ुरान) को शैतान लेकर नाज़िल नहीं हुए (२१०) यह काम न तो उनको सज़ावार है और न वह इस की ताक़त रखते हैं (२११) वह (आस्मानी बातों के) सुनने (के मक़ामात) से अलग कर दिये गये हैं (२१२) तो ख़ुदा के सिवा किसी और माबूद को मत पुकारना, वर्ना तुमको अज़ाब दिया जायेगा (२१३) और अपने क़रीब के रिश्तेदारों को डर सुना दो (२१४) और जो मोमिन तुम्हारे पैरो हो गये हैं उनसे मुतवाज़ो पेश आओ (२१५) फिर अगर लोग तुम्हारी ना फ़रमानी करें तो कह दो कि मैं तुम्हारे आमाल से बे ताल्लुक़ हूं (२१६) और ख़ुदाये ग़ालिब और मेहरबान पर भरोसा रखो (२१७) जो तुम को जब तुम (तहज्जुद) के वक्त उठते हो, देखता है (२१८) और नमाज़ियों में तुम्हारे को भी (२१९) वह बेशक सुनने वाला और जानने वाला है (२२०) (अच्छा) मैं तुम्हें बताऊं कि शैतान किस पर उतरते हैं (२२१) हर झूठे गुन्हेगार पर उतरते हैं (२२२) जो सुनी हुई बात (उसके कान में) ला डालते हैं, और वह अक्सर झूठे हैं (२२३) और शायरों की पैरवी गुमराह लोग किया करते हैं (२२४ क्या तुमने नहीं देखा कि हर वादी में सर मारते फिरते हैं (२२५) और कहते वह हैं जो करते नहीं (२२६) मगर जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये, और ख़ुदा को

बहुत याद करते रहे और अपने ऊपर ज़ुल्म होने के बाद इन्तक़ाम लिया, और ज़ालिम अन्क़रीब जान लेंगे कि कौन सी जगह लौट कर जाते हैं (२२७)—रुकू ११

—०—

२७—सूर-हे-अलनम्ल (पारा वक़ालल्लज़ी)

सूर-हे नम्ल मक्के में उतरी, इसमें ९३ आयतें और ७ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

त-स, यह क़ुरान और रोशन किताब की आयतें हैं (१) मोमिनो के लिये हिदायत और बशारत (२) वह जो नमाज़ पढ़ते और जकात देते और वह जो आख़िरत का यक़ीन रखते हैं (३) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते हैं हमने उनके आमाल उनके लिये आरास्ता कर दिये हैं, तो वह सर गर्दां हो रहे हैं (४) यही लोग हैं जिनके लिये बड़ा अज़ाब है, और आख़िरत में भी वह बड़ा नुक़सान उठाने वाले हैं (५) और तुम को क़ुरान (ख़ुदाये) हकीमों आलीम की तरफ़ से अता किया जाता है (६) जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा कि मैंने आग देखी है, मैं वहाँ से रस्ते का पता लाता हूं, या सुलगता हुआ अङ्गारा तुम्हारे पास लाता हूं ताकि तुम तापो (७) जब मूसा

उनके पास आये तो निदा आई, कि वह जो आग में (बिजली दिखाता) है, बा बरकत है और वह जो आग के इर्द गिर्द हैं और ख़ुदा जो तमाम आलम का पर्वरदिगार है, (८) ऐ मूसा मैं ही ख़ुदाये ग़ालिबों दाना हूं (६) और अपनी लाठी डाल दो, जब उसे देखा तो (इस तरह) हिल रही थीं गोया साँप है, तो पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड़ कर न देखा (हुक्म हुआ कि) मूसा डरो मत, हमारे पास पैग़म्बर डरा नहीं करते (१०) हाँ, जिसने ज़ुल्म किया, फिर बुराई के बाद उसे नेकी से बदल दिया, तो मैं बख़्शने वाला मेहरबान हूं (११) और अपना हाथ अपने गरीबान में डालो, सफ़ैद निकलेगा (इन दो मौजज़ों के साथ जो) नौ मौजज़ों में (दाखिल हैं) फ़िरऔन और उसकी क़ौम के पास जाओ कि वह बे हुक्म लोग है (१२) जब उनके पास हमारी रोशन निशानियाँ पहुंचीं कहने लगे, यह सरीह जादू है (१३) और बेइन्साफ़ी और ग़रूर से उनसे इन्कार किया, कि उनके दिल उनको मान चुके थे, सो देखलो, कि फ़िसाद करने वालों का अन्जाम कैसा हुआ (१४)—रुकू १

और हम ने दाऊद और सुलैमान को हुक्म बख़्शा, और उन्होंने कहा कि ख़ुदा का शुक्र है, जिस ने हमें बहुत से मोमिन बन्दों पर फ़ज़ीलत दी (१५) और सुलैमान दाऊद के क़ायम मुक़ाम हुए और कहने लगे कि लोगो ! हमें (ख़ुदा की तरफ़ से) जानवरों की बोली सिखाई गई है, और हर चीज़ फ़रमाई गई, हैं बेशक, यह (उस का) सरीह फ़ज़ल है (१६) और सुलैमान के

लिये जिन्नों, और इन्सानों और परिन्दों के लशकर जमा किये गये, और क़िसमवार किये जाते थे (१७) यहाँ तक कि जब च्यून्टियों के मैदान में पहुंचे तो एक च्यून्टी ने कहा कि ऐ च्यून्टियो अपने अपने बिलों में दाखिल हो जाओ, ऐसा न हो कि सुलैमान और उस के लशकर, तुम्हें कुचल डालें और उन को ख़बर भी न हो (१८) तो वह उस की बात सुन कर हँस पड़े, और कहने लगे कि ऐ पर्वरदिगार ! मुझे तौफ़ीक़ अता फ़रमा कि जो एहसान तूने मुझ पर और मेरे माँ बाप पर किये हैं, उन का शुक्र करुं, और ऐसे नेक काम करूं कि तू उन से ख़ुश हो जाये और मुझे अपनी रहमत अपने नेक बन्दों में दाखिल फ़रमा (१९) उन्होंने जानवरों का जायज़ा लिया तो कहने लगे क्या सबब है कि हुद हुद नजर नहीं आता क्या क़हीं ग़ायब हो गया है (२०) मैं उसे सख्त सज़ा दूंगा, या उसे ज़ब्हा कर डालूंगा या मेरे सामने (अपनी बेक़सूरी की) दलीले सरीह पेश करे (२१) अभी थोड़ी देर ही हुई थी कि हुद हुद आ मौजूद हुआ और कहने लगा कि मुझे एक ऐसी चीज़ मालूम हुई है, जिस की आप को ख़बर नहीं, और मैं आप के पास (शहर) सबा से एक सच्ची ख़बर लेकर आया हूं (२२) मैंने एक औरत देखी है कि उन लोगों पर बादशाहत करती है और हर चीज़ उसे मैयस्सर है, और उस का एक बड़ा तख़्त है (२३) मैंने देखा कि वह और उसकी क़ौम, ख़ुदा को छोड़ कर आफ़ताब को सजदा करते हैं, और शैतान ने उन के आमाल उन्हें आरास्ता कर

दिखाये हैं और उन को रस्ते से रोक रक्खा है, पस वह रस्ते पर नहीं आये (और नहीं समझते) (२४) कि ख़ुदा को जो आस्मानों और ज़मीन में छुपी चीज़ों को ज़ाहिर कर देता और तुम्हारे पोशीदा और ज़ाहिर आमाल को जानता है, क्यों सजदा न करें (२५) ख़ुदा के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वही अर्श अज़ीम का मालिक है (२६) सुलैमान ने कहा (अच्छा) हम देखेंगे, तूने सच कहा है या तू झूठा है (२७) यह मेरा ख़त ले जा और इसे उन की तरफ़ डाल दे, फिर उन के पास से फिर आ, और देख कि वह क्या जवाब देते हैं (२८)* मलिका ने कहा, दर्बार वालो ! मेरी तरफ़ एक नाम-ऐ गरामी डाला है (२९) वह सुलैमान की तरफ़ से है और मज़मून यह है, शुरू ख़ुदा का नाम लेकर, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है (३०) (बाद इस के यह) कि मुझ से सरकशी न करो और मुती व मिन्क़ाद हो कर मेरे पास चले आओ (३१)—रुकू २

*आयत २८ ३१:—सलाह मशबरे के बाद बिल्क़ीस ने कहा कि मैं इस ख़त के जवाब में सुलैमान के पास कुछ तोहफ़े भेजती हूँ, अगर उन्होंने कबूल कर लिया तो जान लेना कि दुनिया के बादशाहों में से वह भी एक बादशाह है, उस सूरत में उन का मुक़ाबिला कुछ बड़ा बात नहीं है और अगर उन्होंने यह तोहफ़ा न लिया तो जान लेना कि वह अल्लाह के नबी हैं, उस सूरत में उन से मुक़ाबिला मुमकिन नहीं है, जब सुलैमान के पास तोहफ़े पहुँचे तो लेने से इन्कार किया और एक पैग़ाम बिल्क़ीस के नाम दिया कि हम को तोहफ़ों और माल की जरुरत नही है जब बिल्क़ीस को यह मालूम हुआ तो क़सम खाई कि यह दुनिया परस्त बादशाह नहीं है बल्कि नबी है, इस का मुक़ाबिला वबाल है—

(ख़त सुना कर) कहने लगी, कि ऐ अहले दर्बार, मेरे इस मामले में मुझे मशवरा दो, जब तक तुम हाज़िर न हो (और इस्लाह न दो) मैं किसी काम का फ़ैसला करने वाली नहीं (३२) वह बोले कि हम बड़े ज़ोर आवर और सख़्त जंगजू हैं और हुक्म आप के अख़्तियार में है, तो जो हुक्म दीजियेगा (उस के मआल पर) नज़र कर लीजियेगा (३३) उस ने कहा कि बादशाह जब किसी शहर में दाख़िल होते हैं, तो उस को तबाह कर देते हैं, और वहाँ के इज़्ज़त वालों को ज़लील कर दिया करते हैं, और इसी तरह यह भी करेंगे (३४) और मैं उन की तरफ़ कुछ तौहफ़े भेजती हूं और देखती हूँ कि क़ासिद क्या जवाब लाते हैं (३५) जब (क़ासिद) सुलैमान के पास पहुंचा, तो सुलैमान ने कहा, क्या तुम मुझे माल से मदद देना चाहते हो, जो कुछ मुझे ख़ुदा ने अता फ़रमाया है वह उस से बेहतर है जो तुम्हें दिया है, हक़ीक़त यह है कि तुम ही अपने तौहफ़े से ख़ुश होते होगे (३६) उस के पास वापिस जाओ हम उन पर ऐसे लशकर से हमला करेंगे, जिस के मुक़ाबले की उन को ताक़त न होगी और उन को वहाँ से बे इज़्ज़त कर के निकाल देंगे और वह ज़लील होंगे (३७) सुलैमान ने कहा कि ऐ दर्बार वालो ! कोई तुम में ऐसा है कि क़ब्ल इस के कि वह लोग फ़रमाँबरदार हो कर हमारे पास आये, मलिका का तख़्त ले आये (३८) जिन्नात में से एक क़वी हैकल जिन्न ने कहा कि क़ब्ल इस के कि आप अपनी जगह से उठें मैं उस को आप के पास ला हाज़िर

करता हूं और मैं उस के (उठाने को) ताक़त रखता हूं और अमानतदार हूं (३९) एक शख़्स जिस को किताबे इलाही का इल्म था, कहने लगा, कि मैं आप की आँख के झपकने से पहले पहले' उसे आप के पास हाज़िर किये देता हूं, जब सुलैमान ने तख़्त को अपने पास रखा हुआ देखा तो कहा कि यह मेरे पर्वरदिगार का फ़ज़ल है, ताकि मुझे आज़माये, कि मैं शुक्र करता हूँ या कुफ़ाने नैयमत करता हूँ, और जो शुक्र करता है तो अपने ही फ़ायदे के लिये शुक्र करता है, और जो ना शुक्र गुज़ारी करता है तो मेरा पर्वरदिगार बेपर्वाह और कर्म करने वाला है (४०)*

सुलेमान ने कहा कि मलिका के (इम्तिहाने अक़्ल के) लिये उस के तख़्त की सूरत बदल दो, देखें कि वह सूझ रखती है या उन लोगों में है जो सूझ नहीं रखते (४१) जब वह आ पहुंची तो पूछा गया कि क्या आप का तख़्त भी इसी तरह का है, उस ने कहा कि यह तो गोया हू बहू वही है और हम को इस से पहले ही (सुलैमान की अज़मत वशान का) इल्म हो गया था और हम फ़रमाँबरदार हैं (४२) और जो ख़ुदा के सिवा (और) की परस्तिश करती थी, सुलैमान ने उस को उस से मना किया (इस से पहले तो) वह काफ़िरों में से थी (४३) (फिर) उस से कहा

*आयत ४०: —वह तख़्त आसफ़ बिन बख़िया हज़रत सुलैमान के वज़ीर की दुआ से दो महीने के रास्ते से आँख झपकाने में इस तरह आया कि बिल्क़ीस के सातों क़ुफ़्ल कायम रहे और जमीन फट कर ज़मीन के अन्दर ही सुलैमान के तख़्त के पास की ज़मीन फट कर वह तख़्त नमूदार हुआ।

गया कि महल में चलिये जब उस ने उस (के फ़र्श) को देखा तो पानी का हौज़ समझा और (कपड़ा उठा कर) अपनी पिन्ड-लियाँ खोल दीं, सुलैमान ने कहा, यह ऐसा महल है जिस में नीचे भी शीशे जड़े हुए हैं, वह बोल उठी कि पर्वरदिगार मैं अपने आप पर ज़ुल्म करती रही थी और (अब) मैं सुलैमान के हाथ पर ख़ुदाये रब्बुल आल्मीन पर ईमान लाती हूं (४४)※—

रुकू—३

और हम ने समूद की तरफ़ उस के भाई सालैह को भेजा कि ख़ुदा की इबादत करो, तो वह फ़रीक़ हो कर आपस में झगड़ने लगे (४५) सालैह ने कहा कि भाईयो ! कि तुम भलाई से पहले बुराई के लिये क्यों जल्दी करते हो (और) ख़ुदा से बख़्शिश क्यों नहीं माँगते, ताकि तुम पर रहम किया जाये (४६) वह कहने लगे कि तुम और तुम्हारे साथी हमारे लिये शुगूने बद हो, सालैह ने कहा कि तुम्हारी बद शगुनी ख़ुदा की तरफ़ से

---

*आयत ४४:—दीवान खाने में बैठे थे हज़रत सुलैमान, उस में पत्थरों की जबह शीशे का फ़र्श था, दूर से लगता पानी गहरा उन से पिन्डलियाँ खोली पानी में बैठने को, हज़रत सुलैमान ने पुकारा यह शीशों का फ़र्श है पानी नही, उस को अपनी अक़्ल का क़सूर और उन क़ी अक़्ल का कमाल मालूम हुआ, समझी कि दीन में भी जो यह समझे सो ही सही है, हज़रत सुलैमान ने सुना था कि उस की पिन्डलियों पर बाल हैं बकरी की तरह, इस तरह मालूम कर लिया कि सच्चे थे, उसकी दवा तजवीज़ की तो वह कहते हैं कि बह परी के पेट से पैदा हुई थी, यह असर उस का था—

बल्कि तुम ऐसे लोग हो जिन की आज़माईश की जाती है (४७) और शहर में नौ शख्स थे, जो मुल्क में फ़िसाद किया करते थे, और इस्लाह से काम नहीं लेते थे (४८) कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम खाओ कि हम रात को उस पर और उसके घर वालों पर शबख़ून मारेंगे फिर उस के वारिस से कह देंगे कि हम सालेह के घर वालों के मौक़-ऐ हलाकत पर गये ही नहीं और हम सच कहते हैं (४९) और वह एक चाल चले और उन को कुछ ख़बर न हुई (५०) तो देख लो कि उन की चाल का अन्जाम कैसा हुआ, हम ने उन को और उन की क़ौम, सब को हलाक कर डाला (५१) अब यह उन के घर उन के ज़ुल्म के सबब ख़ाली पड़े हैं, जो लोग दानिश रखते हैं, उन के लिये इस में निशानी है (५२) और जो लोग ईमान लाये और डरते थे, उन को हम ने नजात दी (५३) और लूत को याद करो, जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम बे हयाई (के काम) क्यों करते हो और तुम देखते हो (५४) क्या तुम औरतों को छोड़ कर लज़्ज़त (हासिल करने के लिये) मर्दों की तरफ़ माईल होते हो, हक़ीक़त यह है कि तुम एहमक़ लोग हो (५५) तो उन की क़ौम के लोग बोले तो यह बोले, और इस के सिवा उन का कुछ जवाब न था कि लूत के घर वालों को अपने शहर से निकाल दो, यह लोग पाक रहना चाहते हैं (५६) तो हम ने उन को और उन के घर वालों को नजात दी, मगर उन की बीबी कि उस की निस्बत हम ने मुक़र्रर कर रखा है कि वह पीछे रहने वालों में

होगी (५७) और हमने उन पर मेंह बरसाया, सो (जो) मेंह उन लोगों पर बरसा जिन को मुतनब्बा कर दिया गया था (५८)

रुकू—४

कह दो कि सब तारीफ़ ख़ुदा ही को सज़ावार है और उस के बन्दों पर सलाम है; जिन को उस ने मुन्तख़िब फ़रमाया, भला ख़ुदा बेहतर है या वह जिन को यह उस का शरीक ठैहराते हैं (५९)
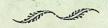
बीसवाँ पारा—अम्मन ख़लक़

भला किस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया और (किस ने) तुम्हारे लिये आस्मान से पानी बरसाया (हम ने) फिर हम ही ने उस से सर सब्ज़ बाग़ उगाये, तुम्हारा काम तो न था कि तुम उन के दरख़्तों को उगाते, तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है (हर्गिज़ नहीं) बल्कि यह लोग रस्ते से अलग हो रहे हैं (६०) भला किस ने ज़मीन को क़रार गाह बनाया और उस के बीच नहरें बनाईं और उस के लिये पहाड़ बनाये और किस ने दो दरियाओं के बीच ओट बनाई (यह सब कुछ ख़ुदा ने बनाया) तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है ? (हर्गिज़ नहीं) बल्कि उन में अक्सर दानिश नहीं रखते (६१) भला कौन बेक़रार की इल्तिजा क़बूल करता है,

जब वह उस से दुआ करता है और (कौन उस की) तकलीफ़ को दूर करता है, और कौन तुम को ज़मीन में (अगलों का) जानशीन बनाता है (यह सब कुछ ख़ुदा करता है) तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है? (हर्गिज़ नहीं मगर) तुम बहुत कम ग़ौर करते हो (६२) भला कौन तुम को जंगल और दरिया के अन्धेरों में रस्ता बताता है और (कौन) हवाओं को अपनी रहमत के आगे ख़ुशख़बरी बना कर भेजता है (यह सब कुछ ख़ुदा करता है) तो क्या ख़ुदा के सिवा कोई और माबूद भी है? (हर्गिज़ नहीं) यह लोग जो शिर्क करते हैं (ख़ुदा की शान) उस से बलन्द है (६३) भला कौन खलक़त को पहली बार पैदा करता, फिर उस को बार बार पैदा करता रहता है और (कौन) तुम को आस्मान और ज़मीन से रिज़्क देता है (यह सब कुछ ख़ुदा करता है) तो क्या ख़ुदा के साथ कोई और माबूद भी है? (हर्गिज़ नहीं) कह दो कि (मुश्रिको) अगर तुम सच्चे हो तो दलील पेश करो (६४) कह दो कि जो लोग आस्मानों और ज़मीन में हैं, ख़ुदा के सिवा ग़ैब की बातें नहीं जानते, और न यह जानते हैं कि कब (ज़िन्दा करके) उठाये जायेंगे (६५) बल्कि आख़िरत (के बारे) में उन का इल्म मुन्तही हो चुका है बल्कि वह इस से शक में हैं, बल्कि इससे अन्धे हो रहे हैं (६६)—रुकू—५

और जो लोग काफ़िर हैं कहते हैं कि जब हम और हमारे बाप दादा मिट्टी हो जायेंगे तो क्या हम फिर (क़ब्रों से) निकाले

जायेंगे (६७) यह वायदा हम से हमारे बाप दादा से होता चला आया है (कहाँ का उठना और कैसी क़यामत) यह तो सिर्फ़ पहले लोगों की कहानियाँ हैं (६८) कह दो कि मुल्क में चलो फिरो, फिर देखो कि गुन्हेगारों का अन्जाम क्या हुआ है (६९) और उन (के हाल) पर ग़म न करना, और न उन चालों से, जो यह कर रहे हैं, तंग दिल होना (७०) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह वायदा कब पूरा होगा (७१) कह दो कि जिस (अज़ाब) के लिये तुम जल्दी कर रहे हो, शायद उस में से कुछ तुम्हारे नज़दीक आ पहुंचा हो (७२) और तुम्हारा पर्वरदिगार तो लोगों पर फ़ज़ल करने वाला है, लेकिन उन में से अक्सर शुक्र नहीं करते (७३) और जो बातें उन के सीनों में पोशीदा होती हैं और जो काम वह ज़ाहिर करते हैं, तुम्हारा पर्वरदिगार उन (सब) को जानता है (७४) और आस्मानों और ज़मीन में कोई पोशीदा चीज़ नहीं है मगर (वह) किताबे रोशन में (लिखी हुई) है (७५) बेशक यह क़ुरान बनी इसराईल के सामने, अक्सर बातें जिन में वह इख़्तिलाफ़ करते थे, बयान कर देता है (७६) और बेशक, यह मोमिनों के लिये हिदायत और रहमत है (७७) तुम्हारा पर्वरदिगार (क़यामत के रोज़) उन में अपने हुक्म से फ़ैसला कर देगा, और वह ग़ालिब (और) इल्म वाला है (७८) तो ख़ुदा पर भरोसा रखो, तुम तो सरीह हक़ पर हो (७९) कुछ शक नही कि तुम मुर्दों को (बात) नहीं सुना सकते और न बहरों को जब कि वह पीठ फेर कर फिर

जायें, आवाज़ सुना सकते हो (८०) और न अन्धों को गुमराही से (निकाल कर) रस्ता दिखा सकते हो, तुम तो उन्हीं को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, और वह फ़रमांबर्दार हो जाते हैं (८१) और जब उन के बारे में (अज़ाब का) वायदा पूरा होगा, तो हम उन के लिये ज़मीन में से एक जानवर निकालेंगे, जो उन से बयान कर देगा इस लिये कि लोग हमारी आयतों पर ईमान नहीं लाते थे (८२)—रुकू—६

और जिस रोज़ हम हर उम्मत में से उस गिरोह को जमा करेंगे जो हमारी आयतों की तकज़ीब करते थे, तो उन की जमायत बन्दी की जायेगी (८३) यहाँ तक कि जब (सब) आ जायेंगे तो (ख़ुदा) फ़रमायेगा कि तुम ने मेरी आयतों को झुठलाया था और तुम ने (अपने) इल्म से उन पर अहाता किया ही न था, भला तुम क्या करते थे (८४) और उन के सबब उन के हक़ में वायदा (अज़ाब) पूरा होकर रहेगा तो वह बोल भी न सकेंगे (८५) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम ने रात को (इस लिये) बनाया है कि उस में आराम करें और दिन को रोशन (बनाया है कि उस में काम करें) बेशक इस में मोमिन लोगों के लिये निशानियाँ हैं (८६) और जिस रोज़ सूर फूंका

*आयत ८३ ८५:—क़यामत से पहले सफ़ा पहाड़ मक्के का फटेगा उस में से एक जानवर निकलेगा, लोगों से बातें करेगा कि अब क़यामत नज़दीक है और सच्चे ईमान वालों को और छुपे मुन्किरों को जुदा जुदा कर देगा, निशान दे कर—

जायेगा तो जो लोग आस्मानों में और जो ज़मीन में हैं, सब घबरा उठेंगे, मगर वह जिसे ख़ुदा चाहे, और सब उस के पास आजिज़ होकर चले आयेंगे (८७) और तुम पहाड़ों को देखते हो तो ख्याल करते हो (कि अपनी जगह पर) खड़े हैं मगर वह (उस रोज़) इस तरह उड़े फिरेंगे जैसे बादल (यह) ख़ुदा की कारीगरी है, जिस ने हर चीज़ को मज़बूत बनाया, बेशक वह तुम्हारे सब अफ़ाल से बा ख़बर है (८८) जो शख्स नेकी लेकर आयेगा तो उस के लिये, उस से बेहतर (बदला) तैयार है और

सूर के अक़साम, दुनिया का ख़ात्मा:—हदीस से मालूम होता है कि सूर दो दफ़ा फूंका जावेगा, जब हज़रत ईसा दज्जाल को हलाक़ कर चुकेंगे और इस्लाम का ख़ालिस जमाना गुज़र चुकेगा और शाम के मुल्क की तरफ़ से एक ठन्डी हवा चलेगी जिन के दिल में ज़र्रा बराबर भी ईमान है वह इस हवा के असर से मर चुकेंगे और शैतान के बहकाने से दुनिया में फिर बुत परस्ती का ज़ोर हो जावेगा, उस वक्त पहला सूर फूंका जायेगा, शुरू शुरू इस सूर की आवाज़ से ज़मीन को हरकत होकर एक ज़लज़ला भी आवेगा फिर सूर की आवाज़ बढ़ते बढ़ते यहाँ तक बढ़ेगी कि ज़मीन आस्मान सब दुनिया फ़ना हो जावेगी और जुमे के दिन फूंका जायेगा, सूर की दो हालतें होंगी उस की शुरू आवाज़ से लोग घबड़ायेंगे और बेहोश हो जावेंगे और फिर रफ़्ता रफ़्ता उस की आवाज़ ऐसी सख्त हो जावेगी कि सब दुनिया फ़ना हो जायेगी पहाड़ ज़मीन आस्मान पहली हालत का नाम नफ्ख़ा फ़ज़ैय और दूसरी का नाम नफ़्ख़ा सआला है और दूसरा सूर वह है जिस से तमाम दुनिया फिर जी ऊठेगी उस का नाम नफ़्ख़ा क़याम है जिन मुफ़स्सिरों ने तीन सूर फूंके जाये अपनी तफ़सीरों में लिखे हैं उन का मतलब उस से यही है कि पहले सूर की दो हालतें दो सूर के क़ायम मक़ाम हैं—

ऐसे लोग (उस रोज़) घबराहट से बे खौफ़ होंगे (८९) और जो बुराई लेकर आयेगा तो ऐसे लोग औन्धे मूंह दोज़क़ में डाल दिये जायेंगे, तुम को तो उन्हीं आमाल का बदला मिलेगा, जो तुम करते रहे हो (९०) (कह दो) कि मुझ को यही इर्शाद हुआ हैं कि इस शहर (मक्के) के मालिक की इबादत करूं जिस ने उस को मौहतरम (और मक़ामे अदब) बनाया है, और सब चीज़ें उसी की है और यह भी हुक्म हुआ है कि उसका हुक्म बर्दार हूँ (९१) और यह भी कि क़ुरान पढ़ा क़रूं, तो जो शख़्स राहे रास्त अख़्तियार करता है तो अपने ही फ़ायदे के लिये अख़्तियार करता है और जो गुमराह रहता है तो कह दो कि मैं तो सिर्फ़ नसीहत करने वाला हूं (९२) और कहो कि ख़ुदा का शुक्र है, वह अन्क़रीब तुम को अपनी निशानियाँ दिखायेगा तो तुम उन को पहचान लोगे और जो काम तुम करते हो, तुम्हारा पर्वरदिगार उन से बे ख़बर नहीं है (९३)—रुकू—७

—०—

२८—सूर–हे–अल क़सस (पारा अम्मन ख़लक़)

सूर हे क़सस मक्के में उतरी, और इसमें ८८ आयतें और ९ रुकू हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

त, स, म (१) यह किताबे रोशन की आयतें हैं (२) (ऐ

मोहम्मद) हम तुम्हें मूसा और फ़िरऔन के कुछ हालात मोमिन लोगों के सुनाने के लिये सही सही सुनाते हैं (३) कि फ़िरऔन ने मुल्क में सर उठा रखा था, और वहाँ के बाशिन्दों को गिरोह गिरोह बना रखा था, उनमें से एक गिरोह को (यहाँ तक) कमज़ोर कर दिया था कि उनके बेटों को जब्हा कर डालता और उनकी लड़कियों को ज़िन्दा रहने देता, बेशक वह मुफ़िसदों में था (४) और हम चाहते थे कि जो लोग मुल्क में कमज़ोर कर दिये गये हैं, उन पर एहसान करें, और उनको पेशवा बनायें और उन्हें (मुल्क का) वारिस करें (५) और मुल्क में उनको क़ुदरत दें और फ़िरऔन और हामाँ और उनके लशकर को वह चीज़ दिखायें जिससे वह डरते थे (६) और हम तो मूसा की माँ कीतरफ़ वही भेजी कि उसको दूध पिलाओ,जब तुमको उसके बारे में कुछ ख़ौफ़ पैदा हो तो उसे दरिया में डाल देना और न तो ख़ौफ़ करना और न रन्ज करना हम : सको तुम्हारे पास वापिस पहुंचा देंगे और (फिर) उसे पैग़म्बर बना देंगे (७ तो फ़िरऔन के लोगों ने उसको उठा लिया, इसलिये कि (नतीजा यह होना था कि) वह उनका दुश्मन और (उनके लिये मूज़िबे) ग़म हो, बेशक़, फ़िरऔन और हामाँ और उनके लशकर चूक गये (८) और फ़िरऔन की बीवी ने कहा कि (यह) मेरी और तुम्हारी (दोनों) की आंखों की ठन्डक है इसको क़त्ल न करना, शायद यह हमें फ़ायदा पहुँचाये, या हम इसे बेटा बना लें और वह (अन्जाम से) बे ख़बर थे (९) और मूसा की माँ का दिल बे सब्र हो गया, अगर हम उनके दिल को मज़बूत न कर देते तो क़रीब

था कि वह इस (क़िस्से) को ज़ाहिर कर दें, ग़रज़ यह थी कि वह मोमिनों में रहें (१०) और उसकी बहन से कहा कि इसके पीछे पीछे चली जा, तो वह उसे दूर से देखती रही और उन (लोगों) को कुछ ख़बर न थी (११) और हमने पहले ही से उस पर (दाईयों) के दूध हराम कर दिये थे, तो मूसा की बहन ने कहा कि मैं तुम्हें ऐसे घर वाली बताऊं कि तुम्हारे लिये इस (बच्चे) को पाले और इसकी ख़ैर ख़्वाही (से पर्वरिश) करे (१२) तो हमने (इस तरीक़ से) उनको उनकी माँ के पास वापिस पहुँचा दिया ताकि उनकी आंखें ठन्डी हों और वह ग़म न खायें और मालूम करें कि ख़ुदा का वायदा सच्चा है, लेकिन यह अक्सर नहीं जानते (१३)—रुकू १

और जब मूसा जवानी को पहुँचे और भरपूर (जवान) हो गये तो हमने उनको हिकमत और इल्म इनायत किया, और हम नेकूकारों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं (१४) और वह ऐसे वक़्त शहर में दाख़िल हुए कि वहाँ के बाशिन्दे बे ख़बर हो रहे थे, तो देखा कि वहाँ दो शख़्स लड़ रहे हैं, एक तो मूसा की क़ौम का है और दूसरा उनके दुश्मनों में से, तो जो शख़्स उनकी क़ौम में से था, उसने दूसरे शख़्स के मुक़ाबले में जो मूसा के दुश्मनों में से था, मूसा से मदद तलब की, तो उन्होंने उसको मुक्का मारा और उसका काम तमाम कर दिया, कहने लगे कि यह काम तो (अग़वाये) शैतान से हुआ, बेशक वह इन्सान का दुश्मन और सरीह बहकाने वाला है (१५) बोले, कि ऐ पर्वरदिगार !

मैंने अपने आप पर ज़ुल्म किया, तू मुझे बख़्श दे, तो ख़ुदा ने उनको बख़्श दिया, बेशक, वह बख़्शने वाला मेहरबान है (१६) कहने लगे, ऐ पर्वरदिगार ! तूने जो मुझ पर मेहरबानी फ़रमाई है मैं (आईन्दा) कभी गुन्हेगारों का मददगार ना बनूंगा (१७) अलग़रज़ सुब्ह के वक्त डरते डरते शहर में दाख़िल हुए कि देखें (क्या होता है) तो नागहाँ वही शख़्स जिसने कल उनसे मदद मांगी थी, फिर उनको पुकार रहा है, मूसा ने उससे कहा कि तू तो सरीह गुमराह है (१८) जब मूसा ने इरादा किया कि उस शख़्स को जो उन दोनों का दुश्मन था, पकड़लें तो वह (यानी मूसा की क़ौम का आदमी) बोल उठा, कि जिस तरह कल तुम ने एक शख़्स को मार डाला था (उसी तरह) चाहते हो कि मुझे भी मार डालो, तुम तो यही चाहते हो, कि मुल्क में ज़ुल्मोसितम करते फिरो, और यह नहीं चाहते कि नेकूकारों में होओ (१६) और एक शख़्स शहर की परली तरफ़ से दौड़ता हुआ आया (और) बोला कि मूसा, (शहर के) रईस तुम्हारे बारे में सलाहें करते हैं कि तुमको मार डालें, सो तुम यहाँ से निकल जाओ, मैं तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह हूं (२०) मूसा वहाँ से डरते डरते निकल खड़े हुए कि देखें (क्या होता है) (और) दुआ करने लगे कि ऐ पर्वरदिगार ! मुझे ज़ालिम लोगों से नजात दे (२१)—रुकू २

और जब मदीन की तरफ़ रुख किया, तो कहने लगे, उमीद है कि मेरा पर्वरदिगार मुझे सीधा रस्ता बताये (२२) और जब मदीन के पानी (के मक़ाम) पर पहुंचे तो देखा, कि वहाँ लोग

जमा हो रहे हैं (और अपने चारपायों को) पानी पिला रहे हैं, और उनके एक तरफ़ दो औरतें (अपनी बकरियों को) रोके खड़ी हैं, मूसा ने (उनसे) कहा, तुम्हारा क्या काम है, वह बोलीं कि जब तक चरवाहे (अपने चारपायों को) ले न जायें, हम पानी नहीं पिला सकते, और हमारे वालिद बड़ी उम्र के बूढ़े हैं (२३) तो मूसा ने उनके लिये (बकरियों को) पानी पिला दिया, फिर साये को तरफ़ चले गये और कहने लगे, कि पर्वरदिगार ! मैं इसका मोहताज हूं कि तू मुझ पर अपनी नैयमत नाज़िल फ़रमाये (२४) (थोड़ी देर के बाद) उनमें से एक औरत जो शर्माती और लजाती चली आती थी, मूसा के पास आई (और) कहने लगी, कि तुमको मेरे वालिद बुलाते हैं, कि तुमने जो हमारे लिये पानी पिलाया था, उसकी तुमको उजरत दें, जब वह उनके पास गये और उनसे अपना माजरा बयान किया, तो उन्होंने कहा कि कुछ ख़ौफ़ न करो, तुम ज़ालिम लोगों से बच आये हो (२५) एक लड़की बोली कि अब्बा इनको नौकर रख लीजिये, क्यों कि बेहतर नौकर जो आप रखें वह है (जो) तवाना और अमानतदार हो (२६) उन्होंने मूसा से कहा, कि मैं चाहता हूं कि अपनी इन दो बेटियों में से एक को तुम से ब्याह दूं, इस (अहद) पर, कि तुम आठ बरस तक मेरी ख़िदमत करो, और अगर दस साल पूरे कर दो तो वह तुम्हारी तरफ़ से (एहसान) है, और मैं तुम पर तकलीफ़ डालनी नहीं चाहता, तुम मुझे इन्शा अल्लाह नेक लोगों में पाओगे (२७) मूसा ने कहा, कि मुझ में और आप में

यह (अहद पुख़्ता हुआ) कि मैं जौन-सी मुद्दत चाहूं पूरी कर दू, फिर मुझ पर कोई ज्यादती न हो और हम जो मुआहिदा करते हैं, ख़ुदा उसका गवाह है (२८)—रुकू ३

जब मूसा ने मुद्दत पूरी कर दी और अपने घर वालों को ले कर चले, तो तूर की तरफ़ से आग दिखाई दी, तो अपने घर वालों से कहने लगे कि तुम (यहां) ठेहरो, मुझे आग नजर आती है शायद मैं वहाँ से (रस्ते) का कुछ पता लाऊं या आग का अङ्गारा ले आऊं ताकि तुम तापो (२६) जब उसके पास पहुंचे, तो मैदान के दाँये किनारे से एक मुबारक जगह में एक दरख़्त में से आवाज़ आई कि मूसा मैं तो ख़ुदाये रब्बुल आलमीन हूं (३०) और यह कि अपनी लाठी डाल दो, जब देखा कि वह हरकत कर रही है गोया कि वह साँप है तो पीठ फेर कर चल दिये और फिर पीछे फिर कर भी न देखा ! (हमने कहा) कि मूसा आगे आओ और डरो मत, तुम अमन पाने वालों में हो (३१) अपना हाथ गरीबान में डालो, तो बग़ैर किसी ऐब के सफ़ैद निकल आयेगा और ख़ौफ़ दूर होने (की वज्हे) से अपने बाज़ू को अपनी तरफ़ सुकेड़ लो, यह दो दलील तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से हैं (इनके साथ) फ़िरऔन और उस के दरबारियों के पास (जाओ) कि वह ना फ़रमान लोग हैं (३२) मूसा ने कहा, ऐ पर्वरदिगार ! उनमें का एक शख़्स मेरे हाथ से क़त्ल हो चुका है, सो मुझे ख़ौफ़ है कि वह (कहीं) मुझको मार न डालें (३३) और हारुन (जो) मेरा भाई है (है) उसकी ज़बान

मुझ से ज़्यादा फ़सीह है, तू उसको मेरे साथ मददगार बना कर भेज कि मेरी तस्दीक़ करे, मुझे खौफ़ है कि वह लोग मेरी तकज़ीब करेंगे (३४) (ख़ुदा ने) फ़रमाया, हम तुम्हारे भाई से तुम्हारे बाज़ू को मज़बूत करेंगे और तुम दोनों को ग़लबा देंगे, तो हमारी निशानियों के सबब वह तुम तक पहुंच न सकेंगे (और) तुम और जिन्होंने तुम्हारी पैरवी की ग़ालिब रहोगे (३५) और जब मूसा उनके पास हमारी खुली निशानियां लेकर आये तो वह कहने लगे कि यह तो जादू है जो इसने बना खड़ा किया है, और यह (बातें) हमने अपने अगले बाप दादा में तो (कभी) सुनी नहीं (३६) और मूसा ने कहा कि मेरा पर्वरदिगार उस शख़्स को ख़ूब जानता है जो उसकी तरफ़ से हक़ लेकर आया है और जिसके लिये आक़बत का घर (यानी बहिश्त) है बेशक ज़ालिम नजात नहीं पायेंगे (३७) और फ़िरऔन ने कहा कि ऐ अहले दर्बार मैं तुम्हारा अपने सिवा किसी को ख़ुदा नहीं जानता तो हामाँ मेरे लिये गारे को आग लगवा कर (ईन्टें पकवा) दो, फिर एक (ऊंचा) महल बनवा दो, ताकि मैं मूसा के ख़ुदा की तरफ़ चढ़ जाऊं, और मैं तो उसे झूठा समझता हूं (३८) और वह और उसके लशकर मुल्क में नाहक़ मग़रूर हो रहे थे और ख्याल करते थे कि वह हमारी तरफ़ लौटकर नहीं आयेंगे (३९) तो हमने उनको और उनके लशकरों को पकड़ लिया और दरिया में डाल दिया, सो देख लो कि ज़ालिमों का कैसा अंजाम हुआ (४०) और हमने उनको पेशवा बनाया था वह (लोगों को) दोज़ख की तरफ़ बुलाते थे, और क़यामत के दिन उनकी मदद

नहीं की जायेगी (४१) और इस दुनियाँ में हमने उनके पीछे लानत लगा दी, और वह क़यामत के रोज़ भी बदहालों में होंगे (४२)—रुकू ४

और हमने पहली उम्मतों के हलाक करने के बाद मूसा को किताब दी जो लोगों के लिये बसीरत और हिदायत और रहमत है, ताकि वह नसीहत पकड़े (४३) और जब हमने मूस की तरफ़ हुक्म भेजा तो तुम (तूर की) ग़रब की तरफ़ नहीं थे और न उस वाक़ैय के देखने वालों में थे (४४) लेकिन हमने (मूसा के बाद) कई उम्मतों को पैदा किया, फिर उन पर मुद्दत तवील गुज़र गई, और न तुम मदीन वालों में रहने वाले थे कि उनको हमारी आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाते, हाँ, हम ही तो पैग़म्बर भेजने वाले थे (४५) और न तुम उस वक्त जबकि हमने (मूसा को) आवाज़ दी, तूर के किनारे थे बल्कि (तुम्हारा भेजा जाना) तुम्हारे पर्वरदिगार की रहमत है, ताकि तुम उन लोगों को जिन के पास तुम से पहले कोई हिदायत करने वाला नहीं आया, हिदायत करो ताकि वह नसीहत पकड़े (४६) और (ऐ पैग़म्बर) हमने तुमको इसलिये भेजा है कि ऐसा न हो कि अगर उन (आमाल) के सबब जो उनके हाथ आगे भेज चुके हैं उन पर कोई मुसीबत वाक़ैय हो तो यह कहने लगें कि ऐ पर्वरदिगार, तूने हमारी तरफ़ कोई पैग़म्बर क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों की पैरवी करने और ईमान लाने वालों में होते (४७) फिर जब उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ आ पहुँचा तो कहने लगे कि जैसी

(निशानियाँ) मूसा को मिली थीं उसको क्यों नहीं मिलीं, क्या जो (निशानियाँ) पहले मूसा को दी गई थीं, उन्होंने उनसे कुफ़्र नहीं किया ? कहने लगे कि दोनों जादूगर हैं, एक दूसरे के (मुवाफ़िक़) और बोले कि हम सबसे मुन्किर हैं (४८) कह दो कि अगर सच्चे हो तो तुम ख़ुदा के पास से कोई किताब ले आओ जो इन दोनों (किताबों से) बढ़ कर हिदायत करने वाली हो ताकि मैं भी उसकी पैरवी करूं (४९) फिर अगर यह तुम्हारी बात क़बूल न करें तो जान लो कि यह सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करते हैं और उससे ज़्यादा कौन गुमराह होगा जो ख़ुदा की हिदायत को छोड़ कर अपनी ख़्वाहिश के पीछे चले, बेशक, ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता (५०)—रुकू ५

और हम पै दर पै उन लोगों के पास (हिदायत की) बातें भेजते रहे हैं ताकि नसीहत पकड़े (५१) जिन लोगों को हमने इस से पहले किताब दी थी वह उस पर ईमान ले आते हैं (५२) और जब (क़ुरान) उनको पढ़ कर सुनाया जाता है तो कहते हैं कि हम पर ईमान ले आये, बेशक वह हमारे पर्वरदिगार की तरफ़ से बरहक़ है (और) हम तो इससे पहले के हुक्म वर्दार हैं (५३) उन लोगों को दुगना बदला दिया जायेगा, क्यों कि सब्र करते रहे हैं, और भलाई के साथ बुराई को दूर करते हैं, और जो (माल) हमने उनको दिया है उस में से खर्च करते हैं (५४) और जब बेहूदा बात सुनते हैं तो उनसे मूंह फेर लेते हैं और कहते हैं कि हमको हमारे आमाल और तुम को तुम्हारे आमाल तुम को

सलाम, हम जाहिलों के ख़्वास्तगार नहीं हैं (५५) (ऐ मोहम्मद) तुम जिसको दोस्त रखते हो, उसे हिदायत नहीं कर सकते बल्कि ख़ुदा ही जिसको चाहता है हिदायत करता है, और वह हिदायत पाने वालों को ख़ूब जानता है (५६) और कहते हैं कि अगर हम तुम्हारे साथ हिदायत की पैरवी करें तो अपने मुल्क से उचक लिये जायें, क्या हमने उनको हरम में, जो अम्न का मक़ाम है, जगह नहीं दी, जहाँ हर क़िसम के मेवे पहुंचाये जाते हैं (और यह) रिज़्क़ हमारी तरफ़ से है, लेकिन उनमें से अक्सर नहीं जानते (५७) और हमने बहुत सी बस्तियों को हलाक कर डाला जो अपनी (फ़राखी-ऐ) मआशियत में इतरा रहे थे, सो यह उन के मकानात हैं जो उनके बाद आबाद ही नहीं हुए मगर बहुत कम, और उनके पीछे हम ही उनके वारिस हुए (५८) और तुम्हारा पर्वरदिगार बस्तियों को हलाक नहीं किया करता, जब तक उनके बड़े शहर में पैग़म्बर न भेज ले, जो उनको हमारी आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाये, और हम बस्तियों को हलाक नहीं किया करते बगर उस हालत में कि वहाँ के बाशिन्दे ज़ालिम हों (५९) और जो चीज़ तुमको दी गई है, वह दुनियाँ की ज़िन्दगी का फ़ायदा और उसकी ज़ीनत है, और जो ख़ुदा के पास है वह बेहतर और बाक़ी रहने वाली है, क्या तुम समझते नहीं (६०)—रुकू ६

भला जिस शख़्स से हम ने एक वायदा किया, और उस ने उसे हासिल कर लिया, तो क्या वह उस शख़्स का सा है, जिस

को हम ने दुनिया की ज़िन्दगी के फ़ायदे से बेहरामन्द किया, फिर वह क़यामत के रोज़ उन लोगों में हो जो (हमारे रुबरु) हाज़िर किये जायेंगे (६१) और जिस रोज़ ख़ुदा उन को पुकारेगा और कहेगा कि मेरे वह शरीक कहाँ हैं ? जिन का तुम्हें दावा था (६२) (तो) जिन लोगों पर (अज़ाब का) हुक्म साबित हो चुका होगा वह कहेंगे कि हमारे पर्वरदिगार, यह वह लोग हैं जिन को हम ने गुमराह किया था और जिस तरह हम ख़ुद गुम-राह हुए थे, उसी तरह इन को गुमराह किया था (अब) हम तेरी तरफ़ (मुत्तवज्जोह होकर) उन से बेज़ार होते हैं, यह हमें नहीं पूजते थे, (६३) और कहा जायेगा कि अपने शरीकों को बुलाओ, तो वह उन को पुकारेंगे और वह उन को जवाब न दे सकेंगे और (जब) अज़ाब को देख लेंगे (तो तमन्ना करेंगे) कि काश वह हिदायतयाब होते (६४) और जिस रोज़ ख़ुदा उन को पुकारेगा और कहेगा कि तुम ने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया (६५) तो वह उस रोज़ ख़बरों से अन्धे हो जायेंगे और आपस में कुछ भी न पूछ सकेंगे (६६) लेकिन जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अमल नेक किये, तो उमीद है कि वह नजात पाने वालों में हों (६७) और तुम्हारा पर्वरदिगार जो चाहता है पैदा करता है और (जिसे चाहता है) बरगज़ीदा कर देता है उन को उस का अख़्तियार नहीं है, यह जो शिर्क करते हैं ख़ुदा उस से पाक व बालातर है (६८) और उन के सीने जो कुछ मख़्फ़ी करते और जो यह ज़ाहिर करते हैं, तुम्हारा पर्वर-

दिगार उस को जानता है (६९) और वही ख़ुदा है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, दुनिया और आखिरत में उसी की तारीफ़ है और उसी का हुक्म, और उसी की तरफ़ तुम लौटाये जाओगे (७०) कहो भला देखो तो अगर ख़ुदा तुम पर हमेशा क़यामत के दिन तक रात (की तारीकी) किये रहे तो ख़ुदा के सिवा कौन माबूद है जो तुम को रोशनी ला दे (तो क्या) तुम सुनते नहीं (७१) कहो तो भला, देखो तो, अगर ख़ुदा तुम पर हमेशा क़यामत तक दिन किये रहे, तो ख़ुदा के सिवा कौन माबूद है कि तुम को रात ला दे, जिस में तुम आराम करो, तो क्या तुम देखते नहीं ? (७२) और उस ने अपनी रहमत से रात को और दिन को बनाया ताकि तुम उस में आराम करो (उस में) उस का फ़ज़ल तलाश करो और ताकि शुक्र करो (७३) और जिस दिन वह उन को पुकारेगा और कहेगा, कि मेरे वह शरीक जिन का तुम्हें दावा था, कहाँ गये ? (७४) और हम हर एक उम्मत में से गवाह निकालेंगे, फिर कहेंगे कि अपनी दलील पेश करो तो वह ख़ुद जान लेंगे कि सच बात ख़ुदा की है, और जो वह इफ़्तिरा किया करते थे उन से जाता रहेगा (७५)-रुकू-७

क़ारुन मूसा की कौम में से था, और उन पर तआद्दी करता था, और हम ने उस को इतने खज़ाने दिये थे, कि उन की कुञ्जियाँ एक ताक़तवर जमायत को उठानी मुश्किल होतीं, जब उस से उस की क़ौम ने कहा कि इतराईये मत कि ख़ुदा इतराने

वालों को पसन्द नहीं करता (७६) और जो (माल) तुम को

ख़ुदा ने अता फ़रमाया है उस से आखिरत (की भलाई) तलब कीजिये और दुनिया से अपना क़िस्सा न भुलाईये और जैसी ख़ुदा ने तुम से भलाई की है (वैसी) तुम भी (लोगों से) भलाई करो, और मुल्क में तालिबे फ़िसाद न हो, क्योंकि ख़ुदा फ़िसाद करने वालों को दोस्त नहीं रखता (७७) बोला, कि यह (माल) मुझे मेरी दानिश (के ज़ोर) से मिला है, क्या उस को मालूम नहीं कि ख़ुदा ने उस से (पहले बहुत सी) उम्मतें जो उस से क़ुव्वत में बढ़ कर और जमैयत में बेशतर थीं, हलाक कर डाली हैं, और गुन्हेगारों से उन के गुनाहों के बारे में पूछा नहीं जायेगा (७८) तो (एक रोज़) क़ारुन बड़ी आराईश (और ठाठ) से अपनी क़ौम के सामने निकला, जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी के तालिब थे, कहने लगे कि जैसा (मालो मत्ता) क़ारुन को मिला है काश (ऐसा ही) हमें भी मिले, वह तो बड़ा ही साहिबे नसीब है (७९) और जिन लोगों को इल्म दिया गया था कहने लगे कि तुम पर अफ़सोस, मोमिनों और नेकूकारों के लिये (जो) सवाब ख़ुदा (के हाँ तैयार है) वह कहीं बेहतर है, और वह सिर्फ़ सब्र करने वालों ही को मिलेगा (८०) पस हम ने क़ारुन को और उस के घर को ज़मीन में धंसा दिया, तो ख़ुदा के सिवा कोई जमायत उस की मददगार न हो सकी, और न वह बदला ले सका (८१) और वह लोग, जो कल उस के रुतबे की तमन्ना करते थे, सुब्ह को कहने लगे, हाय शामत, ख़ुदा ही तो अपने बन्दों में से जिस के लिये चाहता है, रिज़्क़ फ़राख कर देता है, और (जिस के लिये चाहता है) तंग कर देता है, मगर ख़ुदा हम पर एहसान

नहीं करता, तो हमें भी धंसा देता, हाय ख़राबी, काफ़िर नजात नहीं पा सकते (८२)— रुकू—८

बह (जो) आख़िरत का घर (है) हम ने उसे उन लोगों के लिये (तैयार) कर रखा है जो मुल्क में ज़ुल्म और फ़िसाद का इरादा नहीं करते और अन्जामे (नेक) तो परहेज़गारों ही का है (८३) जो शख़्स नेकी लेकर आयेगा, उस के लिये इस से बेह-तर सिला (मौजूद) है और जो बुराई लायेगा, तो जिन लोगों ने बुरे काम किये, उन को बदला भी उसी तरह का मिलेगा, जिस तरह के वह काम करते थे (८४) (ऐ पैग़म्बर) जिस (ख़ुदा ने) तुम पर क़ुरान (के एहकाम) को फ़र्ज़ किया है, वह तुम्हें बाज़गश्त की जगह लौटा देगा, कह दो कि मेरा पर्वरदिगार उस शख़्स को भी ख़ूब जानता है जो हिदायत लेकर आया और (उस को भी) जो सरीह गुमराही में है (८५) और तुम्हें उमीद न थी कि तुम पर यह किताब नाज़िल की जायेगी मगर तुम्हारे पर्वरदिगार की मेहरबानी से (नाज़िल हुई) तो हर्गिज काफ़िरों के मददगार न होना (८६) और वह तुम्हें ख़ुदा की आयतों की (तब्लीग़) से बाद इस के कि वह तुम पर नाज़िल हो चुकी हैं रोक न दें, और अपने पर्वरदिगार को पुकारते रहो और मुश्रिकों में हर्गिज़ न हो (८७) और ख़ुदा के साथ किसी और को माबूद (समझ कर) न पुकारना, उस के सिवा कोई माबूद नहीं उस की ज़ाते (पाक) के सिवा हर चीज़ फ़ना होने वाली है, उसी का हुक्म है, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे (८७)—रुकू—९

२९—सूर-हे-अन्कबूत (पारा आम्मनल्लज़क्र)

यह सूरत अन्कबूत मक्के में उतरी और इसमें ६९ आयतें और ७ रुकू हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है

अ, ल-म (१) क्या यह लोग ख्याल किये हुए हैं कि (सिर्फ़) यह कहने से कि हम ईमान ले आये छोड़ दिये जायेंगे और उन को आज़माईश नहीं की जायेगी (२) और जो लोग इन से पहले हो चुके हैं, हम ने उन को भी आज़माया था (और इन को भी आज़मायेंगे) सो ख़ुदा उन को ज़रुर मालूम करेगा जो (अपने ईमान में) सच्चे हैं और उन को जो झूठे हैं (३) क्या वह लोग जो बुरे काम करते हैं, यह समझे हुए हैं, कि हमारे क़ाबू से निकल जायेंगे, जो यह ख्याल करते हैं बुरा है (४) जो शख़्स ख़ुदा की मुलाक़ात की उमीद रखता हो तो ख़ुदा का (मुक़र्रर किया हुआ) वक्त ज़रुर आने वाला है और वह सुनने वाला और जानने वाला है (५) और जो शख्स मेहनत करता है अपने फ़ायदे के लिये मेहनत करता है और खुदा तो सारे जहान से बे पर्वाह है (६) और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे, हम उन के गुनाहों को उन से दूर कर देंगे और उन के आमाल का बहुत अच्छा बदला देंगे (७) और हम ने इन्सान को अपने माँ बाप के साथ नेक सलूक करने का हुक्म दिया है (ऐ मुख़ातिब) अगर तेरे माँ बाप तेरे दर पै हों कि तू मेरे साथ

किसी को शरीक बनाये, जिस की हक़ीक़त से तुझे वाक़फ़ियत नहीं, तो उन का कहना न मानियो, तुम (सब) को मेरी तरफ़ लौट कर आना है, फिर जो कुछ तुम करते थे, मैं तुम को जिताऊंगा (८) और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे उन को हम नेक लोगों में दाखिल करेंगे (९) और बाज़ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि हम ख़ुदा पर ईमान लाये, जब उन को ख़ुदा (के रस्ते) में कोई ऐजा पहुंचती है तो लोगों की ऐजा को (यूं) समझते हैं जैसे ख़ुदा का अज़ाब और अगर तुम्हारे पर्वर-दिगार की तरफ़ से मदद पहुंचे तो कहते हैं कि हम तो तुम्हारे साथ थे, क्या जो अहले आलम के सीनों में है ख़ुदा उससे वाक़िफ़ नहीं ? (१०) और ख़ुदा उन को ज़रुर मालूम करेगा जो (सच्चे) मोमिन हैं, और मुनाफ़िक़ों को भी मालूम करके रहेगा (११) और जो काफ़िर हैं, वह मोमिनों से कहते हैं कि हमारे तरीक़ की पैरवी करो, हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे, हालाँकि वह उनके गुनाहों का कुछ भी बोझ उठाने वाले नहीं, कुछ शक नहीं कि यह झूठे हैं (१२) और यह अपने बोझ भी उठायेंगे और अपने बोझों के साथ और (लोगों के, बोझ भी, और जो बोहतान बान्धते रहे, क़यामत के दिन उनकी उनसे ज़रुर पुर्सिश होगी (१३)—रुकू–१

और हमने नूह को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा तो वह उन में पचास बरस कम हज़ार बरस रहे, फिर उन को तूफान (के अज़ाब) ने आ पकड़ा और वह ज़ालिम थे (१४) फिर हम ने नूह को और कश्ती वालों को नजात दी और कश्ती को अहले

आलम के लिये निशानी बना दिया (१५) और इब्राहीम को (याद करो) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि ख़ुदा की इबादत करो और उस से डरो, अगर तुम समझ रखते हो, तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है (१६) तुम तो ख़ुदा को छोड़ कर बुतों को पूजते और तूफ़ान बान्धते हो तो जिन लोगों को तुम ख़ुदा के सिवा पूजते हो, वह तुम को रिज़्क़ देने का अख़्तियार नहीं रखते, पस ख़ुदा ही के हाँ से रिज़्क़ तलब करो और उसी की इबादत करो, और उसी का शुक्र करो, उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे (१७) और अगर तुम (मेरी) तकज़ीब करो, तो तुम से पहले भी उम्मतें (अपने पैग़म्बरों की) तकज़ीब कर चुकी हैं, और पैग़म्बर के ज़िम्मे खोल कर सुना देने के सिवा और कुछ नहीं (१८) क्या उन्होंने नहीं देखा, कि ख़ुदा किस तरह खलक़त को पहली बार पैदा करता, फिर (किस तरह) उस को बार बार पैदा करता रहता है, यह ख़ुदा को आसान है (१९) कह दो कि मुल्क में चलो फिरो और देखो कि उस ने किस तरह खलक़त को पहली दफ़ा पैदा किया है, फिर ख़ुदा ही पिछली पैदाईश पैदा करेगा, बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (२०) वह जिसे चाहे अज़ाब दे और जिस पर चाहे रहम करे, और उसी की तरफ़ तुम लौटाये जाओगे (२१) और तुम (उस को) ज़मीन में आजिज़ कर सकते हो और न आसमान में, और न ख़ुदा के सिवा तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार (२२)—

रुकू—२

और जिन लोगों ने ख़ुदा की आयतों से और उस के मिलने से इन्कार किया वह मेरी रहमत से ना उमीद हो गये हैं, और उन को दर्द देने वाला अज़ाब होगा (२३) तो उन की क़ौम के लोग जवाब में बोले तो यह बोले कि इसे मार डालो या जला दो मगर ख़ुदा ने उन को आग (की सोज़िश) से बचा लिया, जो लोग ईमान रखते हैं उन के लिये इस में निशानियाँ हैं (२४) और इब्राहीम ने कहा कि तुम जो ख़ुदा को छोड़ कर बुतों को ले बैठे हो तो दुनिया की ज़िन्दगी में बाहम दोस्ती के लिये (मगर) फिर क़यामत के दिन तुम एक दूसरे (की दोस्ती) से इन्कार कर दोगे और एक दूसरे पर लानत भेजोगे, और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ होगा और कोई तुम्हारा मददगार न होगा (२५) पस उन पर (एक) लूत ईमान लाये और इब्राहीम कहने लगे कि मैं अपने पर्वरदिगार की तरफ़ हिजरत करने वाला हूं, बेशक वह ग़ालिब हिकमत वाला है (२६) और हम ने उन को इसहाक़ और याक़ूब बख़्शे और उन की औलाद में पैग़म्बरी और किताब (मुक़र्रर) कर दी और उन को दुनिया में भी उन का सिला इनायत किया और वह आख़िरत में भी नेक लोगों में होंगे (२७) और लूत को (याद करो) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम (अजब) बे हयाई के मुरतकिब होते हो, पुम से पहले अहले आलम में से किसी ने ऐसा काम नहीं किया (२८) तुम क्यों (लज़्ज़त के इरादे से) लौन्डों की तरफ़ माईल होते और (मुसाफ़िरों की) रहज़नी करते हो, और अपनी

मजलिसों में ना पसन्दीदा काम करते हो, तो उन की क़ौम के लोग जवाब में बोले तो यह बोले, कि अगर तुम सच्चे हो तो हम पर ख़ुदा का अज़ाब ले आओ (२६) लूत ने कहा, कि ऐ मेरे पर्वरदिगार, इन मुफ़्सिदों के मुक़ाबले में मुझे नुसरत इनायत फ़रमा (३०)—रुकू—३

और जब हमारे फ़रिश्ते, इब्राहीम के पास ख़ुशी की खबर ले कर आये तो कहने लगे कि हम इस बस्ती के लोगों को हलाक कर देने वाले हैं कि यहाँ के रहने वाले ना फ़रमान हैं, (३१) इब्राहीम ने कहा कि इस में तो लूत भी हैं, वह कहने लगे, कि जो लोग यहाँ (रहते) हैं हमें सब मालूम हैं, हम उन को और उन के घर वालों को बचा लेंगे वजुज़ उन की बीबी के, कि वह पीछे रहने वालों में होगी (३२) और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास आये तो वह उन (की वज्ह) से नाखुश और तंग दिल हुए, फ़रिश्तों ने कहा, कुछ खौफ़ न कीजिये और न रन्ज कीजिये, हम आप को और आप के घर वालों को बचा लेंगे, मगर आप की बीवी, कि पीछे रहने वालों में होगी (३३) हम इस बस्ती के रहने वालों पर, इस सबब से कि यह बद किर्दारी करते रहे हैं; आस्मान से अज़ाब नाज़िल करने वाले हैं (३४) और हम ने समझने वालों के लिये इस बस्ती से एक खुली निशानी छोड़ दी (३५) और मदीन की तरफ़ उन के भाई शुऐब को (भेजा) तो उन्होंने कहा, ख़ुदा की इबादत करो और पिछले दिन (के आने) की उमीद रखो और मुल्क में फ़िसाद न मचाओ (३६) मगर उन्हों ने उन को झूठा समझा सो उन को ज़लज़ले (के अज़ाब) ने आ पकड़ा और वह अपने घरों में

औन्धे पड़े रह गये (३७) और आद और समूद को भी (हम ने हलाक कर दिया) चुनाँचे उन के (वीरान घर) तुम्हारी आँखों के सामने हैं, और शैतान ने उन के आमाल उन को आरास्ता कर दिखाये और उन को (सीधे) रस्ते से रोक दिया, हालाँकि वह देखने वाले (लोग) थे (३८) और क़ारुन और फ़िरऔन और हामाँ को भी (हलाक कर दिया) और उन के पास मूसा खुली निशानियां ले कर आये तो वह मुल्क में मग़रुर हो गये और वह (हमारे) क़ाबू से निकल जाने वाले न थे (३९) तो हमने सब को उन के गुनाहों के सबब पकड़ लिया, उन में कुछ तो ऐसे थे, जिन पर हम ने पत्थरों का मैंह बरसाया और कुछ ऐसे थे, जिन को चिन्घाड़ ने आ पकड़ा, और कुछ ऐसे थे जिन को हम ने ज़मीन में धंसा दिया, और कुछ ऐसे थे जिन को ग़र्क़ कर दिया, और ख़ुदा ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता, लेकिन वही अपने आप पर ज़ुल्म करते थे (४०) जिन लोगों ने ख़ुदा के सिवा (औरों को) कारसाज़ बना रक्खा है, उन की मिसाल मकड़ी की सी है, कि वह भी एक (तरह) घर बनाती है, और कुछ शक नहीं कि तमाम घरों से कमज़ोर मकड़ी का घर है, काश यह (इस बात को) जानते (४१) यह जिस चीज़ को ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं (ख्वाह) वह कुछ ही हो, ख़ुदा उसे जानता है और वह ग़ालिब और हिकमत वाला है (४२) और यह मिसालें हम लोगों के (समझाने के) लिये बयान करते हैं और इसे तो अहले दानिश ही समझते हैं (४३) ख़ुदा ने आस्मानों और ज़मीन को हिकमत के साथ पैदा किया है, कुछ

शक नहीं कि ईमान वालों के लिये इस में निशानी है (४४)—रुकू—४

—:०:—

इक्कीसवाँ पारा—अत्लु माऊहिया

(ऐ मोहम्मद ! यह) किताब जो तुम्हारी तरफ़ वही की गई है, इसको पढ़ा करो और नमाज़ के पाबन्द रहो, कुछ शक नहीं कि नमाज़ बेहयाई और बुरी बातों से रोकती है, और ख़ुदा का ज़िक्र बड़ा (अच्छा काम) है और जो कुछ तुम करते हो, ख़ुदा उसे जानता है (४५) और अहले किताब से झगड़ा न करो, मगर ऐसे तरीक़ से कि निहायत अच्छा हो, हाँ उनमें से जो बे इन्साफ़ी करें (उनके साथ उसी तरह मुजादिला करो) और कह दो कि जो (किताब) हम पर उतरी और जो (किताबें) तुम पर उतरीं हम सब पर ईमान रखते हैं, और हमारा और तुम्हारा माबूद एक ही है और हम उसी के फ़रमाँबर्दार हैं (८६) और इसी तरह हमने तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी है तो जिन लोगों को हमने किताबें दी थीं, वह उन पर ईमान ले आते हैं और बाज़ उन (मुश्रिक) लोगों में से भी इस पर ईमान ले आते हैं और हमारी आयतों से वही इन्कार करते हैं जो काफ़िर (अज़ली) हैं (४७) और तुम इससे पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिख ही सकते थे, ऐसा होता तो अहले बातिल ज़रूर शक करते (४८) बल्कि यह रोशन आयतें हैं जिन लोगों को इल्म दिया है उनके सीनों में (मेहफ़ूज़) और हमारी आयतों से वही लोग इन्कार करते हैं, जो बे इन्साफ़ हैं (४९)

और (काफ़िर) कहते हैं कि उस पर उसके पर्वरदिगार की तरफ़ से निशानियाँ क्यों नाज़िल नहीं हुईं, कह दो कि निशानियां तो ख़ुदा ही के पास हैं, और मैं तो खुल्लम-खुल्ला हिदायत करने वाला हूं (५०) क्या उन लोगों के लिये यह काफ़ी नहीं कि हमने तुम पर किताब नाज़िल की, जो उनको पढ़कर सुनाई जाती है, कुछ शक नहीं कि मोमिन लोगों के लिये इसमें रेहमत और नसीहत है (५१)—रुकू ५

कह दो कि मेरे और तुम्हारे दर्मियान ख़ुदा ही गवाह काफ़ी है, जो चीज आस्मानों और ज़मीन में है, वह सबको जानता है, और जिन लोगों ने बातिल को माना और ख़ुदा से इन्कार किया वही नुक़सान उठाने वाले हैं (५२ और यह लोग तुम से अज़ाब के लिये जल्दी कर रहे हैं, अगर एक वक्त मुक़र्रर न (हो चुका) होता तो उन पर अजाब आ भी गया होता, और वह किसी वक्त में उन पर ज़रूर नागहाँ आ कर रहेगा, और उन को मालूम भी न होगा (५३) यह तुम से अज़ाब के लिये जल्दी कर रहे हैं और दोज़ख़ तो काफ़िरों को घर लेने वाली है (५४) जिस दिन अज़ाब उनको उनके ऊपर से और नीचे से ढाँक लेगा और (ख़ुदा) फ़रमायेगा कि जो काम तुम किया करते थे (अब) उन का मज़ा चखो (५५) ऐ मेरे बन्दो ! जो ईमान लाये हो, मेरी ज़मीन फ़राख़ है, तो मेरी ही इबादत करो (५६) हर मुतन-फ़्फ़िस मौत का मज़ा चखने वाला है, फिर तुम हमारी ही तरफ़ लौट कर आओगे (५७) और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे, उनको हम बहिश्त के ऊंचे ऊंचे महलों में जगह देंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, हमेशा उनमें रहेंगे (नेक)

अमल करने वालों का (यह) खूब बदला है (५८) जो सब्र करते और अपने पर्वरदिगार पर भरोसा रखते हैं (५६) और बहुत से जानवर हैं जो अपना रिज़्क़ उठाये नहीं फिरते, ख़ुदा ही उन को रिज़्क देता है और तुमको भी और वह सुनने वाला और जानने वाला है (६०) और अगर उनसे पूछो कि आस्मानों और ज़मीन को किसने पैदा किया और सूरज और चान्द को किसने (तुम्हारे) ज़ेरे फ़रमान किया तो कह देंगे, ख़ुदा ने, तो फिर कहाँ उलटे जा रहे हैं (६१) ख़ुदा ही अपने बन्दों में से जिसके लिये चाहता है रोज़ी फ़राख़ कर देता है, और जिसके लिये चाहता है तंग कर देता है, बेशक ख़ुदा हर चीज़ से वाक़िफ़ है (६२) और अगर तुम उनसे पूछो कि आस्मान से पानी किस ने नाज़िल फ़रमाया फिर उससे ज़मीन को उसके मरने के बाद (किस ने) ज़िन्दा किया, तो कह देंगे ख़ुदा ने, कह दो कि ख़ुदा का शुक्र है लेकिन उनमें अक्सर नहीं समझते (६३)—रुकू ६

और यह दुनिया की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ खेल और तमाशा है और (हमेशा की) ज़िन्दगी (का मक़ाम) तो आख़िरत का घर है, काश यह (लोग) समझते (६४) फिर जब यह कश्ती में सवार होते हैं तो ख़ुदा को पुकारते (और) ख़ास उसी की इबादत करते हैं, लेकिन जब वह उनको नजात देकर खुश्की पर पहुंचा देता है, तो झट शिर्क करने लग जाते हैं (६५) ताकि जो हमने उनको बख़्शा है उसकी ना शुक्री करें और फ़ायदा उठायें (सो ख़ैर) अन्क़रीब उनको मालूम हो जायेगा (६६) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने हरम को मक़ामे अम्न बनाया है और लोग उसके गिर्दो नवाह से उचक लिये जाते हैं, क्या यह लोग बातिल

पर ऐतक़ाद रखते हैं और ख़ुदा की नैयमतों की ना शुक्री करते हैं (६७) और उससे ज़ालिम कौन जो ख़ुदा पर बोहतान बान्धे या जब हक़बात उसके पास आवे तो उसकी तकज़ीब करे, क्या काफ़िरों का ठिकाना जहन्नुम में नहीं है (६८) और जिन लोगों ने हमारे लिये कोशिश की, हम उनको ज़रूर अपने रस्ते दिखा देंगे, और ख़ुदा तो नेक्कारों के साथ है (६९)—रुकू ७

—०—

३०—सूर-हे-रुम

यह सूरते रुम मक्के में उतरी और इसमें ६० आयतें और ६ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

आ–ल–म (१) अहले रुम मग़लूब हो गये (२) नज़दीक के मुल्क में और वह मग़लूब होने के बाद अन्क़रीब ग़ालिब हो जायेंगे (३) चन्द ही साल में पहले भी और पीछे भी ख़ुदा ही का हुक्म है और उस रोज़ मोमिन खुश हो जायेंगे ४) (यानी) ख़ुदा की मदद से, वह जिसे चाहता है मदद देता है, और वह ग़ालिब (और) मेहरबान है (५) (यह) ख़ुदा का बायदा (है) ख़ुदा अपने वायदे के खिलाफ़ नहीं करता, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते (६) यह तो दुनिया की ज़ाहिरी ज़िन्दगी ही को जानते हैं, और आख़िरत की तरफ़ से ग़ाफ़िल हैं (७) क्या उन्होंने

अपने दिल में ग़ौर नहीं किया कि खुदा ने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों के दर्मियान है, उनको हिकमत से और एक वक़्ते मुक़र्रर तक के लिये पैदा किया है, और बहुत से लोग अपने पर्वरदिगार से मिलने के क़ायल ही नहीं (८) क्या उन लोगों ने मुल्क में सैर नहीं की (सैर करते) तो देख लेते कि जो लोग उनसे पहले थे, उनका अन्जाम कैसा हुआ, और वह इन से ज़ोरो क़ुव्वत में कहीं ज़्यादा थे और उन्होंने ज़मीन को जोता और उसको उससे ज़्यादा आबाद किया था जो इन्होंने आबाद किया, और उनके पास उनके पैग़म्बर निशानियाँ लेकर आते रहे तो खुदा ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता, बल्कि वही अपने आप पर ज़ुल्म करते थे (९) फिर जिन लोगों ने बुराई की उनका अन्जाम भी बुरा हुआ, इसलिये कि खुदा की आयतों को झुठलाते और उनकी हंसी उड़ाते रहे थे (१०)—रुकू १

खुदा ही खलक़त को पहली बार पैदा करता है, वही उसको फिर पैदा करेगा फिर तुम उसी की तरफ़ लौटकर जाओगे (११) और जिस दिन क़यामत वर्पा होगी गुन्हेगार ना उमीद हो जायेंगे (१२) और उनके (बनाये हुए) शरीकों में से कोई उनका सिफ़ारिशी न होगा, और वह अपने शरीकों से ना मौअतक़द हो जायेंगे (१३) और जिस दिन क़यामत वर्पा होगी, उस रोज़ वह अलग अलग फ़िर्क़े हो जायेंगे (१४) तो जो लोग ईमान लाये और अमल नेक करते रहे वह (बहिश्त के) बाग़ में खुशहाल होंगे (१५) और जिन्होंने कुफ्र किया और हमारी आयतों और आखिरत के आने को झुठलाया, वह अज़ाब में डाले जायेंगे (१६) तो जिस वक़्त तुमको शाम हो, और जिस वक़्त सुब्ह हो, खुदा की तस्बीह

करो (यानी नमाज़ पढ़ो) (१७) और आस्मानों और ज़मीन में उसी की तारीफ़ है और तीसरे पहर भी और जब दोपहर हो (उस वक्त भी नमाज़ पढ़ा करो) (१८) वही जिन्दे को मुर्दे से निकालता है और (वही) मुर्दे को ज़िन्दे से निकालता है और (वही) ज़मीन को उसके मरने के बाद ज़िन्दा करता है और इसी तरह तुम (दोबारा ज़मीन में से) निकाले जाओगे (१९)— रुकू—२—

और उसी के निशानात (और तसर्रुफ़ात) में से है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर अब तुम इन्सान होकर जा बजा फैल रहे हो (२०) और उसी के निशानात (और तसर्रुफ़ात) में से है कि उसने तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स की औरतें पैदा कीं, ताकि उनकी तरफ़ (माईल होकर) आराम हासिल करो और तुम में मोहब्बत और मेहरबानी पैदा कर दी, जो लोग ग़ौर करते हैं, उनके लिये इन बातों में (बहुत सी) निशानियाँ हैं (२१) और उसी के निशानात (और तसर्रुफ़ात) में से है, आस्मानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़बानों और रंगों का जुदा जुदा होना अहले दानिश के लिये इन बातों में बहुत सी निशानियाँ हैं (२२) और उसी के निशानात (और तसर्रुफ़ात) में से है, रात में और दिन में सोना और उसके फ़ज़ल का तलश करना, जो लोग सुनते हैं, उनके लिये इन बातों में बहुत सी निशानियाँ हैं (२३) और उसी के निशानात (और तसर्रुफ़ात) में से है, कि तुमको ख़ौफ़ और उमीद दिलाने के लिये बिजली दिखाता है और आस्मान से मैंह बरसाता है, फिर ज़मीन को उसके मर जाने के बाद ज़िन्दा व शादाब कर देता है

अक़्ल वालों के लिये इन बातों में (बहुत सी) निशानियाँ हैं (२४) और उसी के निशानात (और तसर्रुफ़ात) में से है कि आस्मान और ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम हैं, फिर जब वह तुमको ज़मीन में से (निकालने के लिये) आवाज़ देगा तो तुम झट निकल पड़ोगे (२५) और आस्मानों और ज़मीन में (जितने फ़रिश्ते) और इन्सान वग़ैरा हैं उसी के (ममलूक) हैं (और) तमाम उसके फ़रमांबर्दार हैं (२६) और वही तो है जो ख़ल्क़त को पहली बार पैदा करता है, फिर उसे दोबारा पैदा करेगा और यह उसे बहुत आसान है और आस्मानों और ज़मीन में उसकी शान बहुत बलन्द है, और वह ग़ालिब हिकमत वाला है (२७)—रुकू ३

वह तुम्हारे लिये तुम्हारे ही हाल की एक मिसाल बयान फ़रमाता है कि भला जिन (लौन्डी ग़ुलामों) के तुम मालिक हो वह उस (माल) में जो हमने तुमको अता फ़रमाया है तुम्हारे शरीक हैं ? और क्या तुम उसमें (उनको अपने) बराबर (मालिक समझते) हो (और क्या) तुम उनसे इस तरह डरते हो जिस तरह अपनों से डरते हो, इसी तरह हम अक़्ल वालों के लिये, अपनी आयतें खोल खोल कर बयान करते हैं (२८) मगर जो ज़ालिम हैं, वे समझे अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चलते हैं, तो जिसे ख़ुदा गुमराह करे, उसे कौन हिदायत दे सकता है और उनका कोई मददगार नहीं (२९) तो तुम एक तरफ़ के होकर दीने (ख़ुदा के रस्ते) पर सीधा मूंह किये चले जाओ (और) ख़ुदा की फ़ितरत को जिन पर उसने लोगों को पैदा किया है अख़्तियार (किये रहो) ख़ुदा की बनाई हुई (फ़ितरत) में तग़य्युर व तबद्दल नहीं हो सकता, यही सीधा दीन है, लेकिन अक्सर लोग नहीं

जानते (३०) (मोमिनो) उसी (ख़ुदा) की तरफ़ रुजू किये रहो और उससे डरते रहो और नमाज़ पढ़ते रहो, और मुश्रिकों में न होना (३१) (और न) उन लोगों में होना, जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर दिया और (ख़ुद) फ़िर्के फ़िर्के हो गये, सब फ़िर्के उसी से खुश हैं जो उनके पास है (३२) और जब लोगों को तकलीफ़ पहुंचती हैं तो अपने पर्वरदिगार को पुकारते और उसी की तरफ़ रजू होते हैं फिर जब वह उनको अपनी रहमत का मज़ा चखाता है तो एक फ़िर्क़ा उनमें से अपने पर्वर-दिगार से शिर्क करने लगता है (३३) ताकि जो हमने उनको बख़्शा है उसकी नाशुक्री करें, सो (ख़ैर) फ़ायदे उठा लो, अन्क़रीब तुमको (इसका अन्जाम) मालूम हो जायेगा (३४) क्या हमने उन पर कोई ऐसी दलील नाज़िल की है कि उनको ख़ुदा के साथ शिर्क करना बताती है (३५) और जब हम लोगों को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं तो उससे खुश हो जाते है और लोग अगर उनके अमलों के सबब जो उनके हाथों ने आगे भेजे हैं कोई ग़ज़न्द पहुंचे तो ना उमीद होकर रह जाते हैं (३६) (क्या) उन्होंने नहीं देखा कि ख़ुदा ही जिसके लिये चाहता है रिज़्क़ फ़राख़ करता है और जिसके लिये चाहता है तंग कर देता है, बेशक इसमें ईमान लाने वालों के लिये निशानियाँ हैं (३७) तो अहले क़राबत और मोहताजों और मुसाफ़िरों को उन का हक़ देते रहो, जो लोग रज़ाये ख़ुदा के तालिब हैं, यह उनके हक़ में बेहतर है और यही लोग नजात हासिल करने वाले हैं (३८) और जो तुम सूद देते हो कि लोगों के माल में अफ़ज़ाईश हो, तो ख़ुदा के नज़दीक उसमें अफ़ज़ाईश नहीं होती, और जो

तुम ज़कात देते हैं और उससे ख़ुदा की रज़ामन्दी तलब करते हो तो (वह मूजिबे बरकत हो और) और ऐसे ही लोग (अपने माल को) दुचन्द करने वाले हैं (३९) ख़ुदा ही तो है जिसने तुमको पैदा किया, फिर तुमको रिज़्क़ दिया फिर तुम्हें मारेगा, फिर ज़िन्दा करेगा, भला तुम्हारे(बनाये हुए) शरीकों में भी कोई ऐसा है जो इन कामों में से कुछ कर सके, वह पाक है और उस (की शान) उनके शिर्क से बलन्द है (४०)—रुकू ४

खुश्की और तरी में लोगों के आमाल के सबब फ़िसाद फैल गया है, ताकि ख़ुदा उनको उनके बाज़ अमलों का मज़ा चखाये अजब नहीं कि वह बाज़ आ जायें (४१) कह दो कि मुल्क में चलो फिरो और देखो कि जो लोग (तुम से) पहले हुए हैं उनका अन्जाम कैसा हुआ है, उनमें ज़्यादातर मुश्रिक ही थे (४२) तो उस रोज़ से पहले जो ख़ुदा की तरफ़ से आकर रहेगा और रुक नहीं सकेगा दीन (के रस्ते) पर सीधा मूंह किये चले चलो उस रोज़ (सब) लोग मुन्तशिर हो जायेंगे (४३) जिस शख़्स ने कुफ़्र किया तो उसके कुफ़्र का ज़रर उसी को है, और जिसने नेक अमल किये, तो ऐसे लोग अपने लिये आरामगाह दुरुस्त करते हैं (४४) जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे उनको ख़ुदा अपने फ़ज़ल से बदला देगा, बेशक वह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता (४५) और उसी की निशानियों में से है कि हवाओं को भेजता है कि खुशख़बरी देती हैं ताकि तुमको अपनी रहमत के मज़े चखाये और ताकि उसके हुक्म से कश्तियाँ चलें और ताकि तुम उसके फ़ज़ल से (रोज़ी) तलब करो, और अजब नहीं कि तुम शुक्र करो (४६) और हमने तुमसे पहले भी पैग़म्बर

उनकी क़ौम की तरफ़ भेजे, तो वह उनके पास निशानियाँ लेकर आये, सो जो लोग ना फ़रमानी करते थे, हमने उनसे बदला ले कर छोड़ा, और मोमिनों की मदद हम पर लाज़िम थी (४७) खुदा ही तो है जो हवाओं को चलाता है तो वह बादल को उभारती है, फिर खुदा उसको जिस तरह चाहता है आस्मान में फैला देता है और तैह ब तैह कर देता है, फिर तुम देखते हो कि उस के बीच में से मैंह निकलने लगता है, फिर जब वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है उसे बरसा देता है तो वह खुश हो जाते हैं (४८) और पेशतर तो वह मैंह के उतरने से पहले ना उमीद हो रहे थे (४९) (तो ऐ देखने वाले) खुदा की रहमत की निशानियों को तरफ़ देख कि वह किस तरह ज़मीन को उसके मरने के बाद जिन्दा करता है, बेशक, वह मुर्दों को जिन्दा करने वाला है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है (५०) और अगर हम ऐसी हवा भेजें कि वह (उसके सबब) खेती को देखें (कि) ज़र्द (हो गई है) तो उसके बाद वह ना शुक्री करने लग जायें (५१) तो तुम मुर्दों को (बात) नहीं सुना सकते और न बहरों को जब कि वह पीठ फेर कर फिर जायें, आवाज़ सुना सकते हो (५२) और न अन्धों को उनकी गुमराही से (निकाल कर) राहे रास्ते पर ला सकते हो, तुम तो उन्हीं लोगों को सुना सकते हो, जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, सो वही फ़रमाँबर्दार हैं (५३)—रुकू ५

खुदा ही तो है जिसने तुमको (इब्तिदा में) कमज़ोर हालत में पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद ताक़त इनायत की फिर ताक़त के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया, वह जो चाहता है

पैदा करता है और वह साहिबे दानिश और साहिबे क़ुदरत है (५४) और जिस रोज़ क़यामत वर्पा होगी, गुन्हेगार क़समें खायेंगे कि वह (दुनिया में) एक घड़ी से ज़्यादा नहीं रहे थे, इसी तरह वह (रस्ते से) उलटे जाते थे (५५) और जिन लोगों को इल्म और ईमान दिया गया था वह कहेंगे कि खुदा की किताब के मुताबिक़ तुम क़यामत तक रहे हो और यह क़यामत ही का दिन है लेकिन तुमको इसका यक़ीन ही नहीं था (५६) तो उस रोज़ ज़ालिम लोगों को उनका उज्र कुछ फ़ायदा न देगा और न उनसे तौबा क़बूल की जायेगी (५७) और हमने लोगों के (समझाने) के लिये इस क़ुरान में हर तरह की मिसाल बयान कर दी है, और अगर तुम उनके सामने कोई निशानी पेश करो, तो काफ़िर कह देंगे कि तुम तो झूठे हो (५८) इसी तरह खुदा उन लोगों के दिलों पर जो समझ नहीं रखते, मोहर लगा देता है (५९) पस तुम सब्र करो, बेशक खुदा का वायदा सच्चा है और (देखो) जो लोग यक़ीन नहीं रखते वह तुम्हें ओछा न बना दें (६०)—रुकू ६

—०—

३१—सूर-हे-लुक़मान

यह सूरत मक्के में उतरी, और इसमें ३४ आयतें और ४ रुकू हैं

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अ, ल, म, (१) यह हिकमत की (भरी हुई) किताब की आयतें हैं (२) नेकूकारों के लिये हिदायत और रहमत (३) जो नमाज़ की पाबन्दी करते और ज़कात देते और आखिरत का यक़ीन रखते हैं (४) वही अपने पर्वरदिगार (की तरफ़) से हिदायत पर हैं और वही नजात पाने वाले हैं (५) और लोगों में बाज़ ऐसा है जो बेहूदा हिकायतें ख़रीदता है ताकि (लोगों को) बे समझे ख़ुदा के रस्ते गुमराह करे और उस से इस्तैहज़ा करे, यही लोग हैं जिन को ज़लील करने वाला अज़ाब होगा (६) और जब उस को हमारी आयतें सुनाई जाती हैं, तो अकड़ कर मूंह फेर लेता है, गोया उन को सुना ही नहीं जैसे उस के कानों में सक़ल है, तो उस को दर्द देने वाले अज़ाब की खुश-खबरी सुना दो (७) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन के लिये नैयमत के बाग़ हैं (८) हमेशा उन में रहेंगे, ख़ुदा का वायदा सच्चा है और वह गालिब हिकमत वाला है (९) उसी ने आस्मानों को सितूनों के बग़ैर पैदा किया, जैसा कि तुम देखते हो, और ज़मीन पर पहाड़ (बना कर) रख दिये, ताकि तुम को हिला न दे, और उस में हर तरह के जानवर फैला दिये, और हम ही ने आस्मान से पानी नाज़िल किया फिर (उस से) इस में हर क़िसम की नफ़ीस चीज़ें उगाईं (१०) यह तो ख़ुदा की पैदाईश है तो मुझे दिखाओ कि ख़ुदा के सिवा जो लोग हैं, उन्होंने क्या पैदा किया है, हक़ीक़त यह है कि यह ज़ालिम सरीह गुमराही में हैं (११)—रुकू—१

और हम ने लुक़मान को दानाई बख़्शी कि ख़ुदा का शुक्र करो और जो शख़्स शुक्र करता है तो अपने ही फ़ायदे के लिये

शुक्र करता है और जो ना शुक्री करता है तो ख़ुदा भी बे पर्वाह और सज़ावारे हम्दो (सना) है (१२) और (उस वक्त को याद करो) जब लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि बेटा ख़ुदा के साथ शिर्क न करना, शिर्क तो बड़ा (भारी) ज़ुल्म है (१३) और हम ने इन्सान को, जिसे उस की माँ तक-लीफ़ पर तकलीफ़ सह कर पेट में उठाये रखती है (फिर उस को दूध पिलाती है) और (आख़िरकार) दो बरस में उस का दूध छुड़ाना होता है (अपने नीज़) उस के माँ बाप के बारे में ताकीद की है कि मेरा भी शुक्र करना और अपने माँ बाप का भी (कि तुम को) मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है (१४) और अगर वह तेरे दर पैय हों तू मेरे साथ किसी ऐसी चीज़ को शरीक करे जिस का तुझे कुछ भी इल्म नहीं, तो उन का कहा न मानना, हाँ दुनिया (के कामों) में उन का अच्छी तरह साथ देना, और जो शख़्स मेरी तरफ़ रजू लाये, उस के रस्ते पर चलना, फिर तुम को मेरी तरफ़ लौट कर आना है, तो जो काम तुम करते रहे हो, मैं सब से तुम को आगाह करूंगा (१५) (लुक़मान ने यह भी कहा कि) बेटा अगर कोई अमल (बिल-फ़र्ज़) राई के दाने के बराबर भी (छोटा हो, और हो भी किसी पत्थर के (अन्दर) आस्मानों में (मख़्फ़ी) हो, या ज़मीन में, ख़ुदा उस को क़यामत के दिन ला मौजूद करेगा, कुछ शक नहीं कि ख़ुदा बारीक बीन (और) ख़बरदार है (१६) बेटा नमाज़ की पाबन्दी रखना और लोगों को) अच्छे कामों के करने का अमर और बुरी बातों से मना करते रहना, और जो मुसीबत तुम पर वाक़ैय हो, उस पर सब्र करना. बेशक वह बड़ी हिम्मत के काम हैं (१७) और (अज़ राहे ग़रूर) लोगोंसे गाल न फुलाना

और ज़मीन में अकड़ कर न चलना, कि खुदा इतराने वाले खुद पसन्द को पसन्द नहीं करता (१८) और अपनी चाल में ऐतदाल किये रहना और (बोलते वक्त) आवाज़ नीची रखना, क्योंकि ऊंची आवाज़ गधों की है (और कुछ शक नहीं कि) सब आवाज़ों से बुरी आवाज़ गधों की है (१९) - रुकू—२

क्या तुम ने नहीं देखा कि जो कुछ ज़मीन में है, सब को खुदा ने तुम्हारे काबू में कर दिया है और तुमपर अपनी ज़ाहिरी और बातिनी नैयमतें पूरी कर दी हैं, और बाज़ लोग ऐसे हैं कि खुदा के बारे में झगड़ते हैं, न इल्म रखते हैं और न हिदायत और न किताबे रोशन (२०) और जब उन से कहा जाता है कि जो (किताब) ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमाई है उसकी पैरवी करो तो कहते हैं कि हम तो उसी की पैरवी करेंगे, जिस पर अपने बाप दादा को पाया, भला अगर चे शैतान उन को दोज़ख के अज़ाब की तरफ़ बुलाता है, (तब भी ?) (२१) और जो शख्स अपने बैईं ख़ुदा का फ़रमाँबर्दार कर दे, और नेकूकार भी हो तो उस ने मज़बूत दस्तावेज़ हाथ में ले ली और (सब) कामों का अन्जाम ख़ुदा ही की तरफ़ है (२२) और जो कुफ्र करे तो उस का कुफ्र तुम्हें ग़मनाक न कर दे, उन को हमारी तरफ़ लौट कर आना है फिर जो काम वह किया करते थे, हम उन को जितायेंगे, बेशक ख़ुदा दिलों की बातों से वाक़िफ़ है (२३) हम उन को थोड़ा सा फ़ायदा पहुंचायेंगे फिर अज़ाबे शहीद की तरज़ मजबूर कर के ले जायेंगे (२४) और अगर तुम उन से पूछो कि आस्मानों और ज़मीन को किसने पैदा किया है तो बोल उठेंगे कि ख़ुदा ने, कह दो कि ख़ुदा का शुक्र है, लेकिन उन

में अक्सर समझ नहीं रखते (२५) जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है (सब) ख़ुदा ही का है, बेशक ख़ुदा बे पर्वाह और सज़ावारे हम्द (व सना) है (२६) और अगर यूं हो कि ज़मीन में जितने दरख़्त हैं (सब के सब) क़लम हों और समुन्दर (का तमाम प.नो) सियाही हो (और) उस के बाद सात समन्दर और (सियाही) हो जाये तो ख़ुदा की बातें (यानी उस की सिफ़तें) ख़त्म न हों, बेशक ख़ुदा ग़ालिब हिकमत वाला है (२७) (ख़ुदा को) तुम्हारा पैदा करना और जिला उठाना एक शख़्स (के पैदा करने और जिला उठाने) को तरह है, बेशक ख़ुदा सुनने वाला देखने वाला है (२८) क्या तुम ने नहीं देखा कि ख़ुदा ही रात को दिन में दाख़िल करता है, और (वही) दिन को रात में दाख़िल करता है, और उसी ने सूरज और चान्द को (तुम्हारे) ज़ेरे फ़रमान कर रखा है, हर एक, एक वक़्ते मुक़र्रर तक चल रहा है; और यह कि ख़ुदा तुम्हारे सब आमाल से ख़बरदार है (२६) यह इस लिये कि ख़ुदा की ज़ात बर हक़ है, और जिन को यह लोग ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं, वह लग़्व हैं, और यह कि ख़ुदा ही आली रुत्बा और गरामी क़दर है (३०)—रुकू—३

क्या तुमने नहीं देखा कि ख़ुदा ही की मेहरबानी से कश्तियाँ दरिया में चलती हैं, ताकि वह तुम को अपनी कुछ निशानियाँ दिखाये, बेशक इस में हर सब्र करने वाले (और) शुक्र करने वाले के लिये निशानियाँ हैं (३१) और जब उन पर (दरिया की) लहरें सायबानों की तरह छा जाती हैं तो ख़ुदा को पुकारने (और) ख़ालिस उस की इबादत करने लगते हैं, फिर जब वह उन को नजात देकर ख़ुशकी पर पहुंचा देता है तो बाज़ ही

इन्साफ़ पर क़ायम रहते हैं, और हमारी निशानियों से वही इन्कार करते हैं जो अहद शिकन और ना शुक्र हैं (३२) लोगो! अपने पर्वरदिगार से डरो और उस दिन का खौफ़ करो, कि न तो बाप अपने बेटे के कुछ काम आये और न बेटा अपने बाप के कुछ काम आ सके, बेशक, खुदा का वायदा सच्चा है, पस दुनिया की जिन्दगी तुम को धोखे में न डाल दे, और न फ़रेब देने वाला (शैतान) तुम्हें खुदा के बारे में किसी तरह का फ़रेब दे (३३) खुदा ही को क़यामत का इल्म है और वही मेंह बरसाता है और यही (हामिला) के पेट की चीज़ों को जानता है (कि नर है या मादा) और कोई शख्स नहीं जानता कि वह कल को क्या काम करेगा, और कोई मुतनफ़्फ़स नहीं जानता कि किस सर ज़मीन में उसे मौत आयेगी, बेशक, खुदा ही जानने वाला (और) खबरदार है (३४)—रुकू—४

—०—

३२—सूर-हे-सज्दह

यह सूरत सज्दह मक्के में उतरी, और इसमें ३० आयतें और ३ रुकू हैं

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

आ, ल, म, (१) इस में कुछ शक नहीं कि इस किताब का नाज़िल किया जाना तमाम जहान के पर्वरदिगार की तरफ़ से

है (२) क्या यह लोग यह कहते हैं कि पैग़म्बर ने इस को अज़-खुद बना लिया है (नहीं) बल्कि वह तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से बरहक़ है ताकि तुम उन लोगों को हिदायत करो, जिन के पास तुम से पहले कोई हिदायत करने वाला नहीं आया ताकि यह रस्ते पर चलें (३) खुदा ही तो है जिस ने आस्मानों और ज़मीन को और जो चीज़ें इन दोनों में हैं सब को, छै दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर जा ठैहरा, उस के सिवा तुम्हारा न कोई दोस्त है और न सिफ़ारिश करने वाला, क्या तुम नसीहत नहीं पकड़ते (४) वही आस्मान से ज़मीन तक (के) हर काम का इन्तज़ाम करता है, फिर वह एक रोज़ जिस का मिक़दार तुम्हारे शुमार के मुताबिक हज़ार बरस होगा, उस की तरफ़ सैऊद (और रजू) करेगा (५) वही तो पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला (और) ग़ालिब (और) रहम वाला (खुदा) है (६) जिसने हर चीज को बहुत अच्छी तरह बनाया (यानी) उस को पैदा किया और इन्सान की पैदाईश को मिट्टी से शुरू किया (७) फिर उसकी नस्ल खुलासे से (यानी) हक़ीर पानी से पैदा की (८) फिर उसको दुरुस्त किया, फिर उसमें अपनी (तरफ़ से) रूह फूंकी और तुम्हारे कान और आँखें और दिल बनाये मगर तुम बहुत कम शुक्र करते हो (९) और कहने लगे जब हम ज़मीन में मलियामेट हो जायेंगे तो क्या अज़ सरे नौ पैदा होंगे, हक़ीक़त यह है कि यह लोग अपने पर्वरदिगार के सामने जाने ही के क़ाईल नहीं (१०) कह दो कि मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है तुम्हारी रुहें क़ब्ज़ा कर लेता है, फिर तुम अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौटाये जाओगे (११) — रुकू — १

और (तुम ताज्जुब करो) जब देखो कि गुन्हेगार अपने पर्वरदिगार के सामने सर झुकाये होंगे (और) कहेंगे कि ऐ हमारे पर्वरदिगार हम ने देख लिया और सुन लिया, तू हम को दुनिया में वापिस भेज दे कि नेक अमल करें, बेशक हम यक़ीन करने वाले हैं (१२) और अगर हम चाहते तो हर शख्स को हिदायत दे देते लेकिन मेरी तरफ़ से यह बात क़रार पा चुकी है कि मैं दोज़ख को जिन्नों और इन्सानों सब से भर दूंगा (१३) सो (अब आग के) मज़े चखो, इस लिये कि तुम ने इस दिन के आने को भुला रखा था, आज हम भी तुम्हें भुला देंगे, और जो काम तुम करते थे उस की सज़ा में हमेशा के अज़ाब के मज़े चखते रहो (१४) हमारी आयतों पर तो वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उन को इस से नसीहत की जाती है तो सज्दे में गिर पड़ते हैं और अपने पर्वरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते हैं और ग़रुर नहीं करते (१५) उन के पहलू बिछौनों से अलग रहते हैं (और) वह अपने पर्वरदिगार को खौफ़ और उमीद से पुकारते हैं, और जो (माल) हम ने उन को दिया है उस में से खर्च करते हैं (१६) कोई मुतनफ़्फ़िस नहीं जानता कि उन के लिये कैसी आँखों की ठन्डक छुपा कर रखी गई है, यह उन आमाल का सिला है जो वह करते थे (१७) भला जो मोमिन हों, वह उस शख्स की तरह हो सकता है जो ना फ़रमान हो ? दोनों बराबर नहीं हो सकते (१८) जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे उन के (रहने के) लिये बाग़ हैं, यह मेहरबानी उन कामों की जज़ा है जो वह करते थे (१९) और जिन्होंने नाफ़रमानी की, उन के रहने के लिये दोज़ख

है, जब चाहेंगे कि उस में से निकल जायें तो उस में लौटा दिये जायेंगे और उन से कहा जायेगा कि जिस दोज़ख के अज़ाब को तुम झूठ समझते थे. उस के मज़े चखो (२०) और हम उन को (क़यामत के) बड़े अज़ाब के सिवा, अज़ाबे दुनिया का भी मज़ा चखायेंगे, शायद (हमारी तरफ़) लौट आयें (२१) और उस शख्स से बढ़ कर ज़ालिम कौन है जिस को उस के पर्वरदिगार की आयतों से नसीहत की जाये तो वह उन से मूंह फेर ले, हम गुन्हेगारों से ज़रुर बदला लेने वाले हैं (२२)—रुकू--२

और हम ने मूसा को किताब दी तो तुम उस के मिलने से शक में न होना, और हम ने उस (किताब) को (या मूसा को) बनी इसराईल के लिये (ज़रिया) हिदायत बनाया (२३) और उन में से हम ने पेशवा बनाये थे जो हमारे हुक्म से हिदायत किया करते थे, जब वह सब्र किया करते थे और वह हमारी आयतों पर यक़ीन रखते थे (२४) बिला शुबा तुम्हारा पर्वरदिगार, उन में, जिन बातों में वह इख्तिलाफ़ करते थे, कयामत के रोज़ फ़ैसला कर देगा (२५) क्या उन को इस (अम्र) से हिदायत न हुई कि हम ने उन से पहले, बहुत सी उम्मतों को, जिन के मक़ामाते सकूनत में यह चलते फिरते हैं हलाक कर दिया, बेशक इस में निशानियाँ हैं, तो वह सुनते क्यों नहीं (२६) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम बन्जर ज़मीन की तरफ़ पानी रवाँ करते हैं, फिर उस से खेती पैदा करते हैं जिन में से उन के चौपाये भी खाते हैं और वह खुद भी खाते हैं, तो यह देखते क्यों नहीं (२७) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह

फ़ैसला कब होगा (२८) कह दो कि फ़ैसले के दिन काफ़िरों को उन का ईमान लाना कुछ भी फ़ायदा न देगा, और न उन को मोहलत दी जायेगी (२९) तो उन से मूंह फेर लो और इन्तज़ार करो, वह भी इन्तजार कर रहे हैं (३०)—रुकू—३

—०—

३३—सूर-हे-अल अहज़ाब

सूरत अल अहज़ाब मदीने में उतरी और इसमें ७३ आयतें और ९ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है।

ऐ पैग़म्बर ख़ुदा से डरते रहना और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का कहना न मानना, बेशक ख़ुदा जानने वाला (और) हिकमत वाला है (१) और जो (किताब) तुमको तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से वही की जाती है उसकी पैरवी किये जाना, बेशक ख़ुदा तुम्हारे सब अमलों से ख़बरदार है (२) और ख़ुदा पर भरोसा रखना और ख़ुदा ही कारसाज़ काफ़ी है (३) ख़ुदा ने किसी आदमी के पहलू में दो दिल नहीं बनाये और न तुम्हारी औरतों को जिनको तुम मां कह बैठते हो, तुम्हारी माँ बनाया और न तुम्हारे ले पालकों को तुम्हारे बेटे बनाया, यह सब तुम्हारे मूंह की बातें हैं और ख़ुदा तो सच्ची बात फ़रमाता है और वही सीधा रस्ता दिखाता है

(४) मोमिनो ! ले पालकों को उनके (असली) बापों के नाम से पुकारा करो कि खुदा के नज़दीक यही दुरुस्त बात है अगर तुम को उनके बापों के नाम मालूम न हों तो दीन में तुम्हारे भाई और दोस्त हैं और जो बात तुमसे ग़लतीसे हो गईहो उसमें तुम पर कुछ गुनाह नहीं, लेकिन जो क़सदे दिली से करो (उस पर मवाख़िज़ा है) और खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (५) पैग़म्बर मोमिनों पर उनकी जानों से भी ज़्यादा हक़ रखते हैं और पैग़म्बर की बीवियाँ उनकी मायें हैं और रिश्तेदार आपस में किताब अल्लाह की रूसे मुस्लमानों और महाजिरों से एक दूसरे (के तर्के) के ज़्यादा हक़दार हैं, मगर यह तुम अपने दोस्तों से एहसान करना चाहो (तो और बात है) यह हुक्म किताब (यानी क़ुरान) में लिख दिया गया है (६) और जब हमने पैग़म्बरों से एहद लिया और तुम से और नूह से और इब्राहीम से और मूसा से और मरियम के बेटे ईसा से और एहद भी उनसे पक्का लिया (७) ताकि सच कहने वालों से उनकी सच्चाई के बारे में दर-याफ़्त करे, और उसने काफ़िरों के लिये दुख देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है (८) -रुकू १

मोमिनो ! खुदा की उस मेहरबानी को याद करो जो (उस ने) तुम पर (उस वक्त की) जब फ़ौजें तुम पर (हमला करने को) आईं तो हमने उन पर हवा भेजी और ऐसे लश्कर (नाज़िल किये) जिनको तुम देख नहीं सकते थे और जो काम तुम करते हो खुदा उनको देख रहा है (९) जब वह तुम्हारे ऊपर और नीचे की तरफ़ से तुम पर चढ़ आये और जब आँखें फिर गईं और दिल (मारे दहशत के) गलों तक पहुंच गये और तुम खुदा

की निस्बत तरह तरह के गुमान करने लगे (१०) वहाँ मोमिन आज़माये गये और सख़्त तौर पर बुलाये गये (११) और जब मुनाफ़िक़ और वह लोग जिनके दिलों में बीमारी है कहने लगे कि ख़ुदा और उसके रसूल ने तो हम से महज़ धोखे का वायदा किया था (१२) और जब उनमें से एक जमायत कहती थी कि अहले मदीना (यहाँ) तुम्हारे लिये (ठैहरने का) मक़ाम नहीं, तो लौट चलो, और एक गिरोह उनमें से पैग़म्बर से इजाज़त मांगने और कहने लगा कि हमारे घर खुले पड़े हैं, हालाँकि वह खुले नहीं थे, वह तो सिर्फ़ भागना चाहते थे (१३) और अगर (फ़ौजें) अतराफ़े मदीना से आ दाख़िल हों, फिर उनसे ख़ाना जंगी के लिये कहा जाये तो (फ़ौरन) कहने लगें और इसके लिये बहुत ही कम तवक़्कुफ़ करें (१४) हालाँकि पहले ख़ुदा से इक़रार कर चुके थे कि पीठ नहीं फेरेंगे और ख़ुदा से (जो) इक़रार (किया जाता है उस) की ज़रूर पुरशिस होगी (१५) कह दो कि अगर तुम मरने या मारे जाने से भागते हो तो भागना तुमको फ़ायदा नहीं देगा और उस वक़्त तुम बहुत ही कम फ़ायदा उठाओगे (१६) कह दो कि अगर ख़ुदा तुम्हारे साथ बुराई का इरादा करे तो कौन तुमको उससे बचा सकता है, या अगर तुम पर मेहरबानी करनी चाहे (तो कौन उसको हटा सकता है) और यह लोग ख़ुदा के सिवा किसी को न अपना दोस्त पायेंगे न मददगार (१७) ख़ुदा तुम में से उन लोगों को भी जानता है जो (लोगों को) मना करते हैं और अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारे पास चले आओ और लड़ाई में नहीं आते, मगर कम (१८) (यह इस लिये कि) तुम्हारे बारे में बुख़्ल करते हैं, फिर डर (का वक़्त)

आये तो तुम उनको देखो कि तुम्हारी तरफ़ देख रहे हैं (और) उनकी आँखें (इस तरह) फिर रही हैं जैसे किसी को मौत से ग़शी आ रही हो, फिर जब खौफ़ जाता रहे तो तेज़ ज़बानों के साथ तुम्हारे बारे में ज़बान दराज़ी करें और माल में बुख्ल करें यह लोग (हक़ीक़त में) ईमान लाये ही न थे, तो ख़ुदा ने उनके आमाल वर्बाद कर दिये और यह ख़ुदा को आसान था (१६) (ख़ौफ़ के सबब) ख़्याल करते हैं कि फ़ौजें नहीं गईं और अगर लश्कर आ जायें तो तमन्ना करें कि (काश) गँवारों में जा रहें (और) तुम्हारी खबरें पूछा करें और अगर तुम्हारे दर्मियान हो तो लड़ाई न करें, मगर कम (२०)—रुकू २

तुम को पैग़म्बरे ख़ुदा की पैरवी (करनी) बेहतर है (यानी) उस शख़्स को जिसे ख़ुदा (से मिलने) और (रोज़े क़यामत के आने) की उमीद हो, और वह ख़ुदा का कसरत से ज़िक्र करता हो (२१) और जब मोमिनों ने (काफ़िरों के) लशकर को देखा तो कहने लगे, यह वही है जिसका ख़ुदा और उसके पैग़म्बर ने हमसे वायदा किया था और ख़ुदा और उसके पैग़म्बर ने सच कहा था और इससे उनका ईमान और ताक़त ज़्यादा हो गई (२२) मोमिनों में कितने ही ऐसे शख़्स हैं कि जो इक़रार उन्होंने ख़ुदा से किया था उसका सच कर दिखाया, तो उनमें से बाज़ ऐसे हैं जो अपनी नज्र से फ़ारिग़ हो गये, और बाज़ ऐसे हैं कि इन्तज़ार कर रहे हैं और उन्होने अपने (क़ौल) को ज़रा भी न बदला (२३) ताकि ख़ुदा सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे और मुनाफ़िक़ों को चाहे तो अज़ाब दे या (चाहे) तो उन पर मेहरबानी करे, बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (२४)

और जो काफ़िर थे उनको ख़ुदा ने फेर दिया वह अपने ग़ुस्से में (भरे हुए थे) कुछ भलाई हासिल न कर सके, और ख़ुदा मोमिनों को लड़ाई के बारे में काफ़ी हुआ और ख़ुदा ताक़तवर (और) ज़बरदस्त है (२५) और अहले किताब में से जिन्होंने उनकी मदद की थी, उनको उनके क़िलों से उतार दिया और उनके दिलों में देहशत डाल दी, तो कितनों को तुम क़त्ल कर देते थे और कितनों को क़ैद कर लेते थे (२६) और उनकी ज़मीन और उनके घरों और उनके माल का और उस ज़मीन का जिसमें तुमने पाँव भी न रखा था तुमको वारिस बना दिया, और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है (२७) – रुकू ३

ऐ पैग़म्बर ! अपनी बीवियों से कह दो कि अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी ज़ीनत व आराईश की ख्वास्त-गार हो, तो और मैं तुम्हें कुछ माल दूं, और अच्छी तरह से रुख़सत कर दूं (२८) और अगर तुम ख़ुदा और उसके पैग़म्बर और आक़बत के घर (यानी बहिश्त) की तलबगार हो, तो तुम में जो नेकूकारी करने वाली हैं, उनके लिये ख़ुदा ने अजरे अज़ीम तैयार कर रखा है (२९) ऐ पैग़म्बर की बीवियो ! तुम में से जो कोई सरीह ना शाईस्ता (अलफ़ाज़ कह कर रसूल अल्लाह को ऐज़ा देने की) हरकत करेगी, उसको दूनी सज़ा दी जायेगी, और यह (बात) ख़ुदा को आसान है (३०)—

बाईसवाँ पारा—वमैयंक्नुत

और जो तुम में से ख़ुदा और उसके रसूल की फ़रमाँबर्दार रहेगी और अमल नेक करेगी उसको हम दूना सवाब देंगे और उसके लिये हमने इज़्ज़त की रोज़ी तैयार कर रखी है (३१) ऐ पैग़म्बर की बीवियो ! तुम और औरतों की तरह नहीं हो, अगर तुम परहेज़गार रहना चाहती हो तो (किसी अजनबी शख़्स से) नरम नरम बातें न करो, ताकि वह शख़्स जिसके दिल में किसी तरह का मरज़ है कोई उमीद (न) पैदा करे और दस्तूर के मुताबिक बात किया करो (३२) और अपने घरों में ठहरी रहो, और जिस तरह (पहले) जाहिलियत (के दिनों) में इज़हारे तजम्मुल करती थीं, उस तरह ज़ीनत न दिखाओ और नमाज़ पढ़ती रहो, और ज़कात देती रहो, और ख़ुदा और उसके रसूल की फ़रमाँबर्दारी करती रहो, ऐ (पैग़म्बर के) अहले बैत, ख़ुदा चाहता है कि तुम से ना पाकी (का मैल कुचैल) दूर कर दे और तुम्हें पाक साफ़ कर दे (३३) और तुम्हारे घरों में जो ख़ुदा की आयतें पढ़ी जाती हैं और हिकमत (की बातें सुनाई जाती हैं) उनको याद रखो, बेशक ख़ुदा बारीक बीन और बा ख़बर है (३४)—रुकू ४

(जो लोग ख़ुदा के आगे सरे इताअत ख़म करने वाले हैं, यानी) मुस्लमान मर्द और मुस्लमान औरतें और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें और फ़रमाँबर्दार औरतें और रास्तबाज़ मर्द और रास्तबाज़ औरतें और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें और फ़िरोतनी करने वाले मर्द और फ़िरो-

तनी करने वाली औरतें और खैरात करने वाले मर्द और खैरात करने वाली औरतें, और रोज़े रखने वाले मर्द और रोज़े रखने वाली औरतें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाली औरतें और खुदाको कसरत से याद करने वाले मर्द और कसरत से याद करने वाली औरतें, कुछ शक नहीं कि उनके लिये खुदाने बख्शिश और अजरे अज़ीम तैयार कर रखा है (३५) और किसी मोमिन औरतको हक़ नहीं है कि जब खुदा और उसका रसूल कोई अम्र मुक़र्रर कर दें तो उस काम में अपना भी कुछ अख्तियार समझें और जो कोई खुदा और उसके रसूल की ना फ़रमानी करे वह सरीह गुमराह हो गया (३६) और जब तुम उस शख्ससे जिस पर खुदा ने एहसान किया और तुमने भी एहसान किया (यह) कहते थे कि अपनी बीवी को अपने पास रहने दे और खुदा से डर और तुम अपने दिल में वह बात पोशीदा करते थे जिस को खुदा ज़ाहिर करने वाला था और तुम लोगों से डरते थे, हालाँकि खुदा इसका ज़्यादा मुस्तहक़ है कि उससे डरो, फिर ज़ैद ने उस से (कोई) हाजत (मुताल्लिक़) न रखी (यानी उसको तलाक़ दे दी) तो हमने तुमसे उसका निकाह कर दिया ताकि मोमिनो के लिये उनके मूंह बोले बेटों की बीवियों (के साथ निकाह करने के बारे) में जब वह उनसे (अपनी) हाजत (मुताल्लिक़) न रखें (यानी तलाक़ दे दें) कुछ तगी न रहे, और खुदा का हुक्म वाक़ा होकर होने वाला था (३७) पैग़म्बर पर इस काम में कुछ तंगी नहीं जो खुदा ने उनके लिये मुक़र्रर कर दिया और जो लोग पहले गुज़र चुके हैं उनमें भी खुदा का यही दस्तूर रहा है और

खुदा का हुक्म ठैहर चुका है (३८) और जो खुदा के पैग़ाम (जूं के तूं) पहुँचाते और उससे डरते हैं और खुदा के सिवा किसी से नहीं डरते, और खुदा ही हिसाब करने को काफ़ी है (३९) मोहम्मद तुम्हारे मर्दों ने किसी के वालिद नहीं हैं बल्कि खुदा के पैग़म्बर और नबियों (की नबव्वत) की मोहर (यानी उसको ख़त्म कर देने वाले) हैं, और खुदा हर चीज़ से वाक़िफ़ है (४०)—रुकू ५

ऐ अहले ईमान ! खुदा का बहुत ज़िक्र किया करो (४१) और सुब्ह और शाम उसकी पाकी बयान करते रहो (४२) वही तो है जो तुम पर रहमत भेजता है और उसके फ़रिश्ते भी ताकि तुमको अन्धेरों से निकाल कर रोशनी की तरफ़ ले जाये, और खुदा मोमिनों पर मेहरबान है (४३) जिस रोज़ वह उससे मिलेंगे उनका तोहफ़ा (खुदा की तरफ़ से) सलाम होगा और उसने उन के लिये बड़ा सवाब तैयार कर रखा है (४४) ऐ पैग़म्बर, हमने तुमको गवाही देने वाला और खुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है (४५) और खुदा की तरफ़ बुलाने वाला और चिराग़े रोशन (४६) और मोमिनो को खुशख़बरी सुना दो कि उनके लिये खुदा की तरफ़ से बड़ा फ़ज़ल होगा (४७) और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का कहना न मानना और न उनके तकलीफ़ देने पर नज़र करना और खुदा पर भरोसा रखना और खुदा ही कारसाज़ काफ़ी है (४८) मोमिनो ! जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करके उनको हाथ लगाने (यानी उनके पास जाने) से पहले तलाक़ दे दो; तो तुमको कुछ अख्तियार नहीं कि उनसे इद्दत पूरी कराओ, उनको कुछ फ़ायदा (यानी

खर्च) देकर अच्छी तरह से रुखसत कर दो (४६) ऐ पैग़म्बर हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारी बीवियाँ जिनको तुमने उनके मेहर दे दिये हैं, हलाल कर दी हैं और तुम्हारी लौन्डियां जो खुदा ने तुमको (कफ़्फ़ार से बतौर माले ग़नीमत) दिलवाई हैं और तुम्हारे चचा की बेटियां और तुम्हारी फूफियों की बेटियाँ और तम्हारे मामुओं की बेटियाँ और तुम्हारी खालाओं की बेटियाँ जो तुम्हारे साथ वतन छोड़ कर आई हैं (सब हलाल हैं) और कोई मोमिन औरत अगर अपने तईं पैग़म्बर को बख़्शदे (यानी मेहर लेने के बग़ैर निकाह में आना चाहे) बशर्ते कि पैग़म्बर भी उनसे निकाह करना चाहें वह भो हलाल है लेकिन) यह इजाज़त (ऐ मोहम्मद) ख़ास तुम ही को है, सब मुस्लमानों को नहीं, हमने उनकी बीवियों और लौन्डियों के बारे में जो (मेहर वाजिबुल अदा) मुक़र्रर क़र दिया है हमको मालूम है (यह) इसलिये (किया गया है) कि तुम पर किसी तरह की तंगी न रहे, और खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (५०) और तुम को यह भी अख्तियार है कि) जिस बीवी को चाहो अल्हैदा रखो और जिसे चाहो अपने पास रखो, और जिसको तुमने अल्हैदा कर दिया हो, अगर उसको फिर अपने पास तलब कर लो तो तुम पर कुछ गुनाह नहीं, यह (इजाज़त) इसलिये है कि उनकी आँखें ठन्डी रहें और वह ग़मनाक न हों और जो कुछ तुम उनको दो, उसे लेकर सब खुश रहें, और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, खुदा उसे जानता है, और खुदा जानने वाला (और) बुर्दबार है (५१) (ऐ पैग़म्बर)इनके सिवा और औरतें तुमको जायज़ नहीं और न यहकि इन बीवियों को छोड़कर और बीवियाँ करो, ख्वाह उनका

हुस्न तुमको (कैसा ही) अच्छा लगे, मगर वह जो तुम्हारे हाथ का माल है (यानी लौन्डियों के बारे में तुमको अख़्तियार है) और खुदा हर चीज़ पर निगाह रखता है (५२)—रुकू ६

मोमिनो ! पैग़म्बर के घरों में न जाया करो, मगर उस सूरत में कि तुमको खाने के लिये इजाज़त दी जाये और उस के पकने का इन्तज़ार भी न करना पड़े, लेकिन जब तुम्हारी दावत की जाये तो जाओ और जब खाना खा चुको तो चल दो और बातों में जी लगा कर न बैठ रहो, यह बात पैग़म्बर को ऐज़ा देती है और वह तुम से शर्म करते हैं (और कहते नहीं हैं) लेकिन ख़ुदा सच्ची बात के कहने से शर्म नहीं करता, और जब पैग़म्बर की बीबियों से कोई सामान माँगो तो पर्दे के बाहर से माँगो, यह तुम्हारे और उन के दोनो के दिलों के लिये बहुत पाकीज़गी की बात है और तुम को यह शायाँ नहीं कि पैग़म्बरे ख़ुदा को तकलीफ़ दो और न यह कि उन की बीवियों से कभी उन के बाद निकाह करो, बेशक यह ख़ुदा के नजदीक बड़ा (गुनाह का) काम है (५३) अगर तुम किसी चीज़ को ज़ाहिर करो या उस को मख़्फ़ी रखो तो (याद रखो कि) ख़ुदा हर चीज़ से बा-ख़बर है (५४) औरतों पर अपने बापों से (पर्दा न करने में) कुछ गुनाह नहीं और न अपने बेटों से और न अपने भाईयों से और न अपने भतीजों से और न अपने भान्जों से, न अपनी (क़िसम की) औरतों से और न लौन्डियों से, और (ऐ औरतो) ख़ुदा से डरती रहो, बेशक खुदा हर चीज से वाक़िफ़ है (५५) ख़ुदा और उसके फ़रिश्ते, पैग़म्बर पर दरुद भेजते हैं, मोमिनो ! तुम भी उन पर दरुद और सलाम भेजा करो (५६) जो लोग

ख़ुदा और उस के पैग़म्बर को रन्ज पहुंचाते हैं उन पर ख़ुदा दुनिया और आख़िरत में लानत करता है और उन के लिये उसने ज़लील करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है (५७) और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ऐसे काम (की तोहमत) से जो उन्होंने न किया हो ऐज़ा दें, तो उन्होंने बोहतान और सरीह गुनाह का बोझ अपने सर पर रखा (५८)—रुकू-७

ऐ पैग़म्बर अपनी बीवियों और बेटियों और मुसलमानों की औरतों से कह दो कि (बाहर निकला करें तो) अपने (मूंहों) पर चादर लटका कर (घून्घट निकाल) लिया करें यह अमर उन के लिये मूजिबे शिनाख़्त (व इम्तियाज़) होगा तो कोई उन को ऐज़ा न देगा और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (५६) अगर मुनाफ़िक़ और वह लोग जिन के दिलों में मरज़ है और जो मदीने (के शहर में) बुरी बुरी ख़बरें उड़ाया करते हैं (अपने किर्दार) से बाज़ न आयेंगे तो हम तुम को उन के पीछे लगा देंगे, फिर वहाँ तुम्हारे पड़ोस में न रह सकेंगे, मगर थोड़े दिन (६०) (वह भी) फटकारे हुए जहाँ पाये गये, पकड़े गये और जान से मार डाले गये (६१) जो लोग पहले गुज़र चुके हैं, उन के बारे में भी ख़ुदा की यही आदत रही है, और तुम ख़ुदा की आदत में तग़ैय्युर व तबद्दुल न पाओगे (६२) लोग तुम से क़यामत के बारे में दरयाफ़्त करते हैं (कि कब आयेगी) कह दो कि इस का इल्म ख़ुदा ही को है और तुम्हें क्या मालूम है शायद क़यामत क़रीब ही आ गई हो (६३) बेशक ख़ुदा ने काफ़िरों पर लानत की है और उनके लिये (जहन्नुम की) आग तैयार कर रखी है (६४) उस में अबद-उल-आबाद रहेंगे न किसी को दोस्त

पायेंगे और न मददगार (६५) जिस दिन उन के मूंह आग में उलटाये जायेंगे, कहेंगे, ऐ काश हम खुदा की फ़रमाँबर्दारी करते और रसूले (खुदा) का हुक्म मानते (६६) और कहेंगे ऐ हमारे पर्वरदिगार! हम ने अपने सरदारों और बड़े लोगों का कहा माना तो उन्होंने हम को रस्ते से गुमराह कर दिया (६७) ऐ हमारे पर्वरदिगार, इन को दुगना अज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत कर (६८)—रुकू—८

मोमिनो! तुम उन लोगों जैसे न होना जिन्होंने मूसा को (ऐब लगा कर) रन्ज पहुंचाया, तो खुदा ने उन को बे ऐब साबित किया' और वह खुदा के नज़दीक आबरु वाले थे (६९)* मोमिनो, खुदा से डरा करो और बात सीधी कहा करो (७०) वह तुम्हारे आमाल दुरुस्त कर देगा और तुम्हारे गुनाह बख्श देगा और जो शख्स खुदा और उस के रसूल की फ़रमाँबर्दारी

---

*आयत ६९:—बाज़े मुफ्सिद हज़रत मूसा अल्हे अस्सलाम को तोहमत लगाने लगे कि हज़रत हारुन को जंगल ले जा कर मार आये, तो शरीके रियासत न रहें, फिर उनका जनाज़ा आस्मान से नज़र आया और उन की अवाज़ आई कि मैं अपनी मौत से मरा हूँ और कितनों ने कहा, यह जो छुपा कर नहाते हैं, इन के बदन में कुछ ऐब है, बदन की सफेदी या खुसिया फूला, एक रोज़ हज़रत मूसा अकेले नहाने लगे, कपड़े रखे एक पत्थर पर, वह पत्थर कपड़े ले कर भागा, हज़रत मूसा असा लेकर उस के पीछे पीछे दौड़े, यहाँ सब लोग देखते थे, खड़ा हो गया, सब ने नंगे देख लिया, बे ऐब, फिर उस पत्थर को कई असा मारे, उस में नक़्श पड़ गया।

करेगा, तो बेशक बड़ी मुराद पायेगा (७१) हम ने (बारे) अमानत आस्मानों और ज़मीन पर पेश किया, तो उन्होंने उस के उठाने से इन्कार किया और उस से डर गये और इन्सान ने उन को उठा लिया, बेशक वह ज़ालिम और जाहिल था (७२) ताकि खुदा मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को अज़ाब दे और खुदा मोमिन मर्दों और औरतों पर मेहरबानी करे, और खुदा तो बख़्शने वाला मेहरबान है (७३)—रुकू—९

३४—सूरत-सबा

यह सूरत मक्के में उतरी, इसमें ५४ आयतें और ६ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ़ ख़ुदा ही को (सज़ावार) है (जो सब चीज़ों का मालिक है, यानी) वह कि जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसीका है और आख़िरत में भी उसी की तारीफ़ है और वह हिकमत वाला (और) ख़बरदार है (१) जो कुछ ज़मीन में दाख़िल होता है, और जो उस में से निकलता है और जो आस्मान से उतरता है और जो उस पर चढ़ता है,

सब उस को मालूम है, और वह मेहरबान (और) बख़्शने वाला है (२) और काफ़िर कहते हैं कि (क़यामत की) घड़ी हम पर नहीं आयेगी, कह दो, क्यों नहीं (आयेगी) मेरे पर्वरदिगार की क़सम वह तुम पर ज़रुर आ कर रहेगी, (वह पर्वरदिगार) ग़ैब का जानने वाला (है) ज़र्रा भर चीज़ भी उस से पोशीदा नहीं (न) आस्मानों में, और (न) ज़मीन में, और कोई चीज़ ज़र्रे से छोटी या बड़ी ऐसी नहीं, मगर किताबे रोशन में (लिखी हुई) है (३) इस लिये कि जो लोग ईमान लाये और अमल नेक करते रहे, उन को बदला दे, यही हैं जिन के लिये बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है (४) और जिन्होंने हमारी आयतों में कोशिश की कि हमें हरा दें उन के लिये सख़्त दर्द देने वाले अज़ाब की सज़ा है (५) और जिन लोगों को इल्म दिया गया हैं वह जानते हैं कि जो (क़ुरान) तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुआ है, हक़ है और (ख़ुदाये) ग़ालिब और सज़ावारे तारीफ़ का रस्ता बताता है (६) और काफ़िर कहते हैं कि भला हम तुम्हें ऐसा आदमी बतायें जो हमें ख़बर देता है कि जब तुम (मर कर) बिल्कुल पारा पारा हो जाओगे तो नये सिरे से पैदा होंगे (७)—रुकू—१

या तो उस ने ख़ुदा पर झूठ बान्ध लिया है या उसे जनून है, बात यह है कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वह आफ़त और परले दर्जे की गुमराही में मुब्तिला हैं (८) क्या उन्होंने उस को नहीं देखा जो उन के आगे और पीछे है (यानी) आस्मान और ज़मीन, अगर हम चाहें तो उन को ज़मीन में धँसा दें या उन पर आस्मान के टुकड़े गिरा दें, इस

में हर बन्दे के लिये जो (रजू) करने वाला है, एक निशानी है (९) और हम ने दाऊद को अपनी तरफ़ से बरतरी बख़्शी थी, ऐ पहाड़ो! उन के साथ तस्बीह करो, और परिन्दों को उन का मुसख़्ख़र (कर दिया) और उनके लिये हम ने लोहे को नरम कर दिया (१०)* कि कुशादा ज़िरहें बनाओ और कड़ियों को अन्दाज़े से जोड़ो और नेक अमल करो, जो अमल तुम करते हो मैं उन को देखने वाला हूं (११) और हवा को (हम ने) सुलैमान का ताबैय कर दिया था, उस की सुब्ह की मन्जिल एक महीने को राह होती, और शाम की मन्जिल भी महीने भर की होती, और उन के लिये हम ने ताँबे का चश्मा बहा दिया था, और जिन्नों में से ऐसे थे जो उन के पर्वरदिगार के हुक्म से, उन के आगे काम करते थे, और जो कोई उन में से हमारे हुक्म से फिरेगा, उस को हम (जहन्नुम की) आग का मजा चखायेंगे (१२) वह जो चाहते हैं, यह उन के लिये बनाते (यानी) किले

*आयत १०: — कहते हैं कि हज़रत दाऊद जब यादे इलाही करते और ज़बूर पढ़ते तो पहाड़ और जानवर भी उन के साथ ज़िक्र करते थे हज़रत सुलैमान का तख़्त हवा ले के चलती थी शाम से यमन और यमन से शाम आधे दिनमें और पिघलते ताँबेका चश्मा अल्लाह ताला ने निकाल दिया, यमन की तरफ़, उस को सान्चों में ढाल कर जिन्न बासन बनाते जब अल्लाह ताला ने चाहा कि अज़ाब भेजे तो घूंस पैदा हुई उस पानी के बन्द में उस की जड़ कुरेद डाली, एक बार पानी ने ज़ोर किया और बन्द को तोड़ दिया, वह पानी अज़ाब का था, सुर्ख रंग, जिस ज़मीन पर फिर गया काम से जाता रही वह क़ौम वीरान हो कर जुदा जुदा हो गई और कुल जो रहे इन बाग़ों के एवज़ यह चीज़ पाने लगे —

और मुजस्सिमे और (बड़े बड़े) लगन जैसे तालाब और देंगे जो एक ही जगह रखी रहें, ऐ दाऊद की औलाद ! (मेरा) शुक्र करो, और मेरे बन्दों में शुक्र गुज़ार थोड़े हैं (१३) फिर जब हम ने उन के लिये मौत का हुक्म सादिर किया तो किसी चीज़ से उन का मरना मालूम न हुआ, मगर घुन के कीड़े से जो उन के आज़ा को खाता रहा, जब आज़ा गिर पड़ा तब जिन्नों को मालूम हुआ (और कहने लगे) कि अगर वह ग़ैब जानते होते तो जिल्लत की तकलीफ़ में न रहते (१४) अहले) सबा के लिये उन के मक़ामे बूदो बाश में एक निशानी थी (यानी) दो बाग़ (एक) दाहिनी तरफ़ और (एक) बायें तरफ़, अपने पर्वर- दिगार का रिज़्क़ खाओ और उन का शुक्र करो (यहाँ तुम्हारे रहने को यह) पाकीज़ा शहर है और (वहां बख़्शने को) ख़ुदाये ग़फ़्फ़ार (१५) तो उन्होंने (शुक्र गुज़ारी से) मूंह फेर लिया, पस हमने उन पर ज़ोर का सैलाब छोड़ दिया और उन्हें उन के बाग़ों के बदले ऐसे बाग़ दिये जिन के मेवे बद मज़ा थे और जिन में कुछ तो झाऊ था और थोड़ी सी बेरियाँ (१६) यह हम ने उन की ना शुक्री की उन को सज़ा दी और हम सज़ा ना शुक्रे ही को दिया करते हैं (१७) और हम ने उनकी और (शाम की) उन बस्तियों के दरमियान जिनमें हमने बरकत दी थो (एक दूसरे के मुत्तस्सिल) देहात बनाये थे जो सामने नज़र आते थे और उन में आमदो रफ़्त का अन्दाज़ा मुक़र्रर कर दिया था, कि रात दिन बे ख़ौफ़ ख़तर चलते रहो (१८) तो उन्होंने दुआ की कि ऐ पर्वर- दिगार ! हमारी मसाफ़तों में बौद (और तूल पैदा) कर दे, और उससे) उन्होंने अपने हक़ में ज़ुल्म किया, तो हमने (उन्हें नाबूद

कर के) उन के अफ़साने बना दिये, और उन्हें बिल्कुल मुन्तशिर कर दिया, इस में हर साबिर व शाकिर के लिये निशानियाँ हैं (१६) और शैतान ने उन के बारे में अपना ख़्याल सच कर दिखाया कि मोमिनों की एक जमायत के सिवा, वह उस के पीछे चल पड़े (२०) और उस का उन पर कुछ ज़ोर न था, मगर (हमारा) मक़सूद यह था कि जो लोग आख़िरत में शक रखते हैं, उन से उन लोगों को जो उस पर ईमान रखते थे मुतयैईयज़्ज़ कर दें, और तुम्हारा पर्वरदिगार हर चीज़ पर निगेहबान है (२१)—रुकू—२

कह दो कि जिन को तुम ख़ुदा के सिवा (माबूद) ख़्याल करते हो उन को बुलाओ, वह आस्मानों और ज़मीन में ज़र्रा भर चीज़ के भी मालिक नहीं और न उन में उन की शर्कत है, और न उन में से कोई ख़ुदा का मददगार है (२२) और ख़ुदा के हाँ (किसी के लिये) सिफ़ारिश फ़ायदा न देगी, मगर उस के लिये जिस के बारे में वह इजाज़त बख़्शे, यहाँ तक कि जब उन के दिलों से इज़्तिराब दूर कर दिया जायेगा तो कहेंगे कि तुम्हारे पर्वरदिगार ने क्या फ़रमाया है (फ़रिश्ते) कहेंगे कि हक़ (फ़रमाया है) और वह आली रुतबा और गरामी क़दर है (२३) पूछो कि तुम को आस्मानों और ज़मीन से कौन रिज़्क़ देता है, कहो कि ख़ुदा, और हम या तुम (या तो) सीधे रस्ते पर हैं या सरीह गुमराही में (२४) कह दो कि न हमारे गुनाहों की तुम से पुर्सिश होगी और न तुम्हारे आमाल की हम से पुर्सिश होगी (२५) कह दो कि हमारा पर्वरदिगार हम को

जमा करेगा, फिर हमारे दर्मियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर

देगा, वह ख़ूब फ़ैसला करने वाला और साहिबे इल्म है (२६) रुकू — ३

कहो कि मुझे वह लोग तो दिखाओ, जिन को तुम ने शरीके (खुदा) बना कर उस के साथ मिला रखा है, कोई नहीं बल्कि वही (अकेला) खुदा ग़ालिब (और) हिकमत वाला है (२६) और (ऐ मोहम्मद) हम ने तुम को तमाम लोगो के लिये ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते (२८) और कहते हैं कि अगर तुम सच कहते हो तो यह (क़यामत का) वायदा कब वक्त में आयेगा (२९) कह दो कि तुम से एक दिन का वायदा है जिस से न एक घड़ी पीछे रहोगे न आगे बढ़ोगे (३०) रुकू-३

और जो काफ़िर यह कहते हैं कि हम न तो इस क़ुरान को मानेगे और न उन (किताबों) को जो इससे पहले की हैं और काश (उन) ज़ालिमों को तुम उस वक्त (देखो) जब्र वह अपने पर्वरदिगार के सामने खड़े होंगे, और एक दुसरे से रद्दो कद कर रहे होंगे, जो लोग कमज़ोर समझे जाते थे, वह बड़े लोगों से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम ज़रूर मोमिन हो जाते (३१) बड़े लोग कम-ज़ोरों से कहेंगे कि भला हम ने तुम को हिदायत से जब वह तुम्हारे पास आ चुकी थी रोका था ? (नहीं) बल्कि तुम ही गुन्हेगार थे (३२) और कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे (नहीं) बल्कि (तुम्हारी रात दिन को चालों ने हमें रोक रक्खा था) जब तुम हम से कहते थे कि हम खुदा से कुफ्र करें और उस का शरीक

बनायें, और जब वह अज़ाब को देखेंगे तो दिल में पशेमान, होंगे,

और हम काफ़िरों की गर्दन में तौक़ डाल देंगे, बस जो अमल वह करते थे उन ही का उन को बदला मिलेगा (३३) और हम ने किसी बस्ती में कोई डराने वाला नहीं भेजा, मगर वहाँ के खुशहाल लोगों ने कहा कि जो चीज तुम देकर भेजे गये हो, हम उस के क़ायल नहीं (३४) और (यह भी) कहने लगे कि हम बहुत सामान और औलाद रखते हैं और हम को अज़ाब नहीं होगा (३५) कह दो कि मेरा रब्ब जिस के लिये चाहता है रोज़ी फ़राख़ कर देता है और जिस के लिये चाहता है, तंग कर देता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते (३६) रुकू—४

और तुम्हारा माल और औलाद ऐसी चीज नहीं कि तुमको हमारा मुक़रिब बना दें, हाँ(हमारा मुक़रिब वह है)जो ईमान लाया और अमले नेक करता रहा, ऐसे ही लोगों को उन के आमाल के सबब बदला मिलेगा और वह ख़ातिर जमा से बाला ख़ानों में बैठे होंगे (३७)

और जो लोग हमारी अयतों में कोशिश करते हैं किहमें हरा दें, वह अज़ाब में हाजिर किये जायेंगे (३८) कह दो कि मेरा पर्वरदिगार अपने बन्दों में से जिसके लिये चाहता है, रोज़ी फ़राख़ कर देता है और जिस के लिये चाहता है, तंग कर देता है और तुम जो चीज ख़र्च करोगे, वह उस का तुम्हें ऐवज़ देगा और वह सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला है (३९) और जिस दिन वह उन सब को जमा करेगा, फिर फ़रिश्तों से फ़रमायेगा क्या यह लोग तुम को पूजा करते थे, (४०) वह कहेंगे, तू पाक है, तू ही हमारा दोस्त है,:यह बल्कि जिन्नात की पूजा करते थे, और अक्सर उन्हीं को मानते थे (४१) तो आज तुम में से कोई

किसी को नफा नुक़सान पहुंचाने का अख़्तियार नहीं रखता और हम ज़ालिमों से कहेंगे कि दोज़ख के अज़ाब का, जिसको तुम झूठ समझते थे, मज़ा चखो (४२) और जब उन को हमारी रोशन आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो कहते हैं, यह एक (ऐसा) शख्स है जो चाहता है कि जिन चीजो की तुम्हारे बाप दादा परस्तिश किया करते थे, उन से तुम को रोक दे, और (यह भी) कहते हैं कि यह (क़ुरान) मेहज़ झूठ है, जो (अपनी तरफ़ से) बना लिया गया है, और काफिरों के पास जब हक़ आया तो उस के बारे में कहने लगे कि यह तो सरीह जादू है (४३) और हमने न तो उन(मुश्रिकों)को किताबें दीं जिन को यह पढ़ते हैं और न तुम से पहले उन की तरफ़ कोई ड़राने वाला भेजा, मगर उन्हों ने तकज़ीब की (४४) और जो लोग उन से पहले थे, उन्हों ने तकज़ीब की थी, और जो कुछ हम ने उन को दिया था यह उस के दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे, तो उन्हों ने मेरे पैग़म्बरों को झुटलाया (सो यह) ग़ज़ब कैसा हुआ (४५)

—रुकू-५

कह दो कि मैं तुम्हें सिर्फ़ एक बात की नसीहत करता हूं कि तुम ख़ुदा के लिये दो दो और अकेले २ खड़े हो जाओ, फिर ग़ौर करो, तुम्हारे रफ़ीक़ को सौदा नहीं, वह तुम को अज़ाबे सख्त (के आने से) पहले सिर्फ़ डराने वाले हैं (४६) कह दो कि मैंने तुमसे कुछ सिला मांगा हो तो वह तुम ही को (मुबारक रहे)मेरा फ़ैसला ख़ुदा ही के ज़िम्मे हैं, और वह हर चीज से खबर दार है (४७)कहदो कि मेरा पर्वरदिगार ऊपरसे हक़ उतरता है(और वह) गैब की बातों को जानने वाला है(४८)कह दो कि हक़ भी आचुका

और (माबूद) बातिल न तो पहली बार पैदा कर सकता है और न वह दोबारा पैदा करेगा (४९) कह दो कि अगर मैं गुमराह होऊं तो मेरी गुमराही का ज़रर मुझी को है, और अगर हिदायत पर हूं तो यह उसका तुफ़ैल है जो मेरा पर्वरदिगार मेरी तरफ़ वही भेजता है, बेशक वह सुनने वाला (और) नज-दीक है (५०) और काश तुम देखो, जब यह घबड़ाजायेंगे तो (अज़ाब से) बच नहीं सकेंगे और नजदीक ही से पकड़े जायेंगे (५१)और कहेंगे कि हम इस पर ईमान ले आये और(अब)इतनी दूर से, उन का हाथ इमान के लेने को क्यों कर पहुंच सकता है(५२) और पहले तो उससे इन्कार करते रहे और बिन देखे डर ही से जिन्न के तोर चलाते रहे (५३)उनमें और उनकी ख्वाहिश की चीज़ों में पर्दा हाईल कर दिया गया, जैसा कि पहले उनके हमजिन्सों से किया गया वह भी उलझन में डालने वाले के शक में पड़े हुए थे (४७)—रुकू ६.

—०—

(३५) सूरते—फातिर

यह सूरत मक्के में उतरी और इसमें ४५ आयतें और ५ रुकू हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ़ ख़ुदा ही को (सज़ावार है) जो आस्मानों और

जमीन का पैदा करने वाला (और) फ़रिश्तों को क़ासिद बनाने वाला है जिनके दो दो और तीन तीन और चार चार पर हैं वह, (अपनी) मख़्लूक़ात में जो चाहता है बढ़ाता है, बेशक ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (१) ख़ुदा जो अपनी रहमत (का दरवाजा) खोल दे तो कोई उसको बन्द करने वाला नहीं, और जो बन्द कर दे तो उसके बाद कोई उसको खोलने वाला नहीं और वह ग़ालिब हिकमत वाला है (२) लोगो ! ख़ुदा के जो तुम पर ए - सानात हैं उनको याद करो, क्या ख़ुदा के सिवा कोई और खालिक़ (और राज़िक़) है जो तुमको आस्मान और ज़मीन से रिज़्क़ दे, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, पस तुम कहाँ बहके फिरते हो (३) और (ऐ पैग़म्बर) अगर यह लोग तुमको भुठ-लायें, तो तुम से पहले भी पैग़म्बर भुठलाये गये हैं और (सब) काम ख़ुदा ही की तरफ़ लौटाये जायेंगे (४) लोगो ! ख़ुदा का वायदा सच्चा है, तो तुमको दुनिया की ज़िन्दगी धोखे में न डाल दे और न (शैतान) फ़रेब देने वाला तुम्हें फ़रेब दे (५) शैतान तुम्हारा दुश्मन है तुम भी उसे दुश्मन ही समझो, वह अपने पैरुओं के गिरोह को बुलाता है ताकि दोज़ख वालों में हों (६) उन्हों ने कुफ़्र किया, उन के लिये सख्त अज़ाब है और जो ईमान लाये और अमल नेक करते रहे, उनके लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है (७)—रुकू १

भला जिस शख्स को उसके आमाल आरास्ता करके दिखाये जायें और वह उनको उमदा समझने लगे तो (क्या वह नेकूकार आदमी जैसा हो सकता है) बेशक ख़ुदा जिसको चाहता है

गुमराह करता है और जिसको चाहता है हिदायत देता है, तो

उन लोगों पर अफ़सोस कर के तुम्हारा दम न निकल जाये, यह जो कुछ करते हैं ख़ुदा उससे वाक़िफ़ है (८) और ख़ुदा ही तो है जो हवायें चलाता है और वह बादल को उभारती हैं, फिर हम उनको एक बेजान शहर की तरफ़ चलाते हैं फिर उससे ज़मीन को उसके मरने के बाद ज़िन्दा कर देते हैं इसी तरह मुर्दों को जी उठना होगा (९) जो शख़्श इज़्ज़त का तलबगार है तो इज़्ज़त तो सब ख़ुदा ही की है, उसी की तरफ़ पाकीज़ा कलमात चढ़ते हैं और नेक अमल उसको बलन्द करते हैं जो लोग बुरे बुरे मकर करते हैं उनके लिये सख़्त अज़ाब है और उनका मकर नाबूद हो जायेगा (१०) और ख़ुदा ही ने तुमको मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर तुमको जोड़ा जोड़ा बना दिया, और कोई औरत न हामिला होती है न जानती है, मगर उसके इल्म से, और न किसी बड़ी उम्र वाले को उम्र ज़्यादा दी जाती है और न उसकी उम्र कम की जाती है मगर (सब कुछ) किताब में (लिखा हुआ) है, बेशक यह ख़ुदा को आसान है (११) और दोनों दरिया (मिल कर) यकसाँ नहीं हो जाते, यह तो मीठा है प्यास बुझाने वाला जिसका पानी ख़ुशगवार है और यह खारी है, कड़वा, और सबसे तुम ताज़ा गोश्त खाते हो और ज़ेवर निकालते हो जिसे पहनते हो और तुम दरिया में कश्तियों को देखते हो कि (पानी को) फाड़ती चली आती हैं, ताकि तुम उस के फ़ज़ल से (मआश) तलाश करो और ताकि शुक्र करो (१२) वही रात को दिन में दाख़िल करता है और वही दिन को रात में दाख़िल करता है और उसी ने सूरज और चान्द को काम में लगा दिया है, हर एक एक वक़्ते मुक़र्रर तक चल रहा है यही

खुदा तुम्हारा पर्वरदिगार है, इसी की बादशाही है और जिन लोगों को तुम खुदा के सिवा पुकारते हो वह खजूर की गुठली के छिलके के बराबर भी तो (किसी चीज़ के) मालिक नहीं(१३) हाँ अगर तुम उनको पुकारो, तो वह तुम्हारी पुकार न सुनें और अगर सुन भी लें तो वह तुम्हारी बात को क़बूल न कर सकें और क़यामत के रोज़ तुम्हारे शिर्क से इन्कार कर देंगे और (खुदायें) बा खबर की तरह तुमको कोई खबर नहीं देगा (१४)—रुकू २

लोगो ! तुम (सब) खुदा के मोहताज हो, और खुदा बेपर्वाह सज़ावारे (हम्दो सना) है (१५) अगर चाहे तो तुमको नाबूद कर दे, और नई मखलूक़ात आबाद कर दे (१६) और यह खुदा को कुछ मुश्किल नहीं (१७) और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ उठायेगा, और कोई बोझ में दबा हुआ अपना बोझ उठाने को किसी को बुलाये तो कोई उसमें से कुछ न उठायेगा, अगरचे क़राबतदारी हो, (ऐ पैग़म्बर) तुम उन्हीं लोगों को नसीहत कर सकते हो जो बिन देखे अपने पर्वरदिगार से डरते और नमाज़ बिलइल्तिज़ाम पढ़ते हैं और जो शख्स पाक होता है और (सब को) खुदा ही की तरफ़ लौटकर जाना है (१८) और अन्धा और आँख वाला बराबर नहीं (१९ और अन्धेरा और रोशनी (२०) और न साया और धूप (२१) और न ज़िन्दे और मुर्दे बराबर हो सकते हैं खुदा ही जिसको चाहता है सुना देता है और तुम उनको जो क़ब्रों में मदफ़ून हैं नहीं सुना सकते (२२) तुम तो सिर्फ़ हिदायत करने वाले हो (२३) हमने तुमको हक़ के साथ खुश-खबरी सुनाने वाला और डराने वाला भेजा है, और कोई उम्मत

नहीं, मगर उसमें हिदायत करने वाला गुज़र चुका है (२४) और अगर यह तुम्हारी तकज़ीब करें तो जो उनसे पहले थे, वह भी तकज़ीब कर चुके हैं उनके पास उनके पैग़म्बर निशानियाँ और सहीफे और रोशन किताबें ले लेकर आते रहे (२५) फिर उसने काफ़िरों को पकड़ लिया सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब कैसा हुआ (२६)—रुकू ३

क्या तुमने नहीं देखा कि ख़ुदा ने आस्मान से मेंह बरसाया तो हमने उससे तरह तरह के रंगों के मेवे पैदा किये और पहाड़ों में सफेद और सुर्ख रंगों के क़तैयात हैं (और बाज़) काले सियाह हैं (२७) इन्सानों और जानवरों और चौपायों के भी कई तरह के रंग हैं, ख़ुदा से तो उसके बन्दों में से वही डरते हैं जो साहिबे इल्म है, बेशक ख़ुदा ग़ालिब (और) बख़्शने वाला है (२८) जो लोग ख़ुदा की किताब पढ़ते और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और जो कुछ हम ने उन को दिया है उस में से पोशीदा और ज़ाहिर ख़र्च करते हैं, वह उस तिजारत के (फ़ायदे) के उमीद-वार हैं जो कभी तबाह नहीं होगी (२९) क्योंकि ख़ुदा उन को पूरा पूरा बदला देगा और अपने फ़ज़्ल से कुछ ज़्यादा भी देगा वह तो बख़्शने वाला (और) क़द्रदान है (३०) और यह किताब जो हम ने तुम्हारी तरफ़ भेजी है बरहक़ है और (उन) किताबों की तस्दीक करती है जो इस से पहले की हैं, बेशक ख़ुदा अपने बन्दों से ख़बरदार (और उन को) देखने वाला है (३१) फिर हम ने उन लोगों को किताब का वारिस ठैहराया जिन को अपने बन्दों से बरग़ज़ीदा किया तो कुछ तो उन में से अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं और कुछ मियाना रौ हैं और कुछ

ख़ुदा के हुक्म से नेकियों में आगे निकल जाने वाले हैं, यही बड़ा फ़ज़ल है (३२) (उन लोगों के लिये) बहिश्ते जाविदानी हैं जिन में वह दाखिल होंगे, वहां उन को सोने के कङ्गन और मोती पहनाये जायेंगे और उन की पोशाक रेशमी होगी (३३) वह कहेंगे कि ख़ुदा का शुक्र है कि जिस ने हम से ग़म दूर किया बेशक हमारा पर्वरदिगार बख्शने वाला (और) क़द्रदान है (३४) जिस ने हम को अपने फ़ज़ल से हमेशा के रहने के घर में उतारा यहाँ न तो हम को रन्ज पहुंचेगा और न हमें तकान ही होगी (३५) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिये दोज़ख़ की आग है, न उन्हें मौत आयेगी कि मर जायें, और न उन का अज़ाब ही उन से हल्का किया जायेगा, हम हर एक ना शुक्रे को ऐसा ही बदला दिया करते हैं (३६) वह उस में चिल्लायेंगे, कि ऐ हमारे पर्वरदिगार, हम को निकाल लें (अब) हम नेक अमल किया करेंगे, न वह जो (पहले) करते थे क्या हम ने तुम को इतनी उम्र नहीं दी थी कि उस में जो सोचना चाहता सोच लेता और तुम्हारे पास डराने वाला भी आया, तो अब मजे चखो, ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं (३७)—रुकू –४

बेशक ख़ुदा ही आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातों का जानने वाला है, वह तो दिल के भेदों तक से वाक़िफ़ है (३८) वही तो है जिस ने तुम को ज़मीन में (पहलों) का जा नशीन बनाया, तो जिस ने कुफ़्र किया, उस के कुफ़्र का ज़रर उसी को है और काफ़िरों के हक़ में उन के कुफ़्र से पर्वरदिगार के हाँ ना खुशी ही बढ़ती है, और काफ़िरों को उन का कुफ़्र नुक़सान ही

ज़्यादा करता है (३९) भला तुम ने अपने शरीकों को देखा जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, मुझे दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन से कौन सी चीज़ पैदा की है, या (बताओ कि) आस्मानों में उन की शर्कत है या हम ने उन को किताब दी है तो वह उस की सनद रखते हैं (उन में से कोई बात भी नहीं) बल्कि ज़ालिम जो एक दूसरे को वायदा देते हैं, महज़ फ़रेब है (४०) ख़ुदा ही आस्मानों और ज़मीन को थामे रखता है कि टल न जायें, अगर वह टल जायें तो ख़ुदा के सिवा कोई ऐसा नहीं जो इन को थाम सके, बेशक वह बुर्दबार (और) बख़्शने वाला है (४१) और यह ख़ुदा की सख़्त सख़्त क़स्में खाते हैं कि अगर उन के पास कोई हिदायत करने वाला आये तो यह हर एक उम्मत से बढ़ कर हिदायत पर हों मगर अब इन के पास हिदायत करने वाला आया तो उस से इन को नफ़रत ही बढ़ी (४२ (यानी इन्होंने) मुल्क में ग़रुर करना और बुरी चाल चलना (अख़्तियार किया) और बुरी चाल का वबाल उस के चलने वाले पर ही पड़ता है, यह अगले लोगों की रविश के सिवा और किसी चीज़ के मुन्तज़िर नहीं, तो तुम ख़ुदा की आदत में हर्गिज तबद्दुल न पाओगे और (ख़ुदा के) तरीक़ में कभी तग़ैय्युर न देखोगे (४३) क्या इन्होंने ज़मीन में सैर नहीं की ताकि देखते कि जो लोग इन से पहले थे, उन का अन्जाम क्या हुआ, हालाँकि वह इन से क़ुव्वत में बहुत ज़्यादा थे, और ख़ुदा ऐसा नहीं कि आस्मामों और ज़मीन में कोई चीज़ उस को आजिज़ कर सके, वह इल्म वाला (और) क़ुदरत

वाला है (४४) और अगर ख़ुदा लोगों को उन के आमाल के सबब पकड़ने लगता तो रुऐ ज़मीन पर एक चलने फिरने वाले को न छोड़ता लेकिन वह इन को एक वक्ते मुक़र्रर तक मोहलत दिये जाता है, सो जब उन का वक्त आ जायेगा तो (उन के आमाल का बदला देगा) ख़ुदा तो अपने बन्दों को देख रहा है (४५)—रुकू—५

—०—

३६—सूरते यासीन

यह सूरत मक्के में उतरी और इसमें ८३ आयतें और ५ रुकू हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

य, आ, सो, न (१) क़सम है क़ुरान की जो हिकमत से भरा हुआ है (२) (ऐ मोहम्मद) बेशक तुम पैग़म्बरों में से हो (३) सीधे रस्ते पर (४) (यह ख़ुदाये) ग़ालिब (और) मेहरबान ने नाजिल किया है (५) ताकि उन लोगों को जिन के बाप दादा को मुतनब्बा नहीं किया गया था, मुतनब्बा कर दो, वह ग़फ़-लत में पड़े हुए हैं (६) उन में से अक्सर पर (ख़ुदा की) बात पूरी हो चुकी है, सो वह ईमान नहीं लायेंगे (७) हम ने उन की गर्दनों में तौक़ डाल रखे हैं और वह ठोड़ियों तक (फ़ंसे हुए हैं) तो उन के सर उछल रहे हैं (८) और हम ने आगे भी दीवार बना दी और उस के पीछे भी, फिर उन पर पर्दा डाल दिया तो यह देख नहीं सकते (९) और तुम उन को नसीहत करो

या न करो उन के लिये बराबर है, वह ईमान नहीं लाने के (१०) तुम तो सिर्फ़ उस शख़्स को नसीहत कर सकते हो जो नसीहत की पैरवी करे और ख़ुदा से ग़ायबाना डरे, सो उस को मग़फ़रत और बड़े सवाब की बशारत सुनाओ (११) बेशक हम मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे और जो कुछ वह आगे भेज चुके और (जो) उन के निशान पीछे रह गये, हम उन को क़लमबन्द कर लेते हैं और हर चीज़ को हम ने किताबे रोशन (यानी लौहे मेहफ़ूज़) में लिख रखा है (१२)—रुकू—१

और उन से गांव वालों का क़िस्सा बयान करो, जब उन के पास पैग़म्बर आये (१३) यानी जब हम ने उन की तरफ़ दो (पैग़म्बर) भेजे तो उन्होंने उन को झुठलाया, फिर हम ने तीसरे से तक़वीयत दी, तो उन्होंने कहा कि हम तुम्हारी तरफ़ पैग़म्बर हो कर आये हैं (१४) वह बोले कि तुम और (कुछ) नहीं, मगर हमारी तरह के आदमी हो और ख़ुदा ने कोई चीज़ नाज़िल नहीं की, तुम मेहज़ झूठ बोलते हो (१५) उन्होंने कहा कि हमारा पर्वरदिगार जानता है कि हम तुम्हारी तरफ़ (पैग़ाम देकर) भेजे गये हैं (१६) और हमारे ज़िम्मे तो साफ़ साफ़ पहुंचा देना है और (बस) (१७) वह बोले कि हम तुम को ना मुबारिक समझते हैं, अगर तुम बाज़ न आओगे तो हम तुम्हें संगसार कर देंगे और तुम को हम से दुख देने वाला अज़ाब पहुंचेगा (१८) उन्होंने कहा कि तुम्हारी नसीहत तुम्हारे साथ है क्या इस लिये कि तुम को नसीहत की गई- बल्कि तुम ऐसे लोग हो जो हद से तजावुज़ कर गये हो (१९) और शहर के परले किनारे एक आदमी दौड़ता हुआ आया, कहने लगा कि ऐ मेरी क़ौम पैग़म्बरों के पीछे चलो (२०) ऐसों के जो तुम से सिला नहीं माँगते और सीधे रस्ते पर हैं (२१)

—:०:—

तेईसवाँ पारा---वम्मालिय

और मुझे क्या है कि मैं उसकी परस्तिश न करूं जिसने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है(२२) क्या मैं उन को छोड़ कर औरों को माबूद बनाऊं, अगर खुदा मेरे हक़ में नुक़सान करना चाहे तो उन की सिफ़ारिश मुझे कुछ भी फ़ायदा न दे सके और न वह मुझ को छुड़ा ही सकें (२३) तब तो मैं सरीह गुमराही में मुब्तिला हो गया (२४) मैं तुम्हारे पर्वरदिगार पर ईमान लाया हूं, सो मेरी बात सुन रखो (२५) हुक्म हुआ कि बहिश्त में दाखिल होजा, बोला काश मेरी क़ौम को ख़बर हो (२६) कि खुदाने मुझे बख्श दिया और इज़्ज़त वालों में किया (२७) और हम ने इस के बाद उसकी क़ौम पर कोई लशकर नहीं उतारा, और न हम उतारने वाले थे ही (२८) वह तो सिर्फ़ एक चिन्धाड़ थी (आतशीं) सो वह उस से नागहां बुझ कर रह गये (२९) बन्दों पर अफ़सोस है कि उन के पास कोई पैग़म्बर नहीं आता, मगर उस से तमस्खुर करते हैं (३०) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम ने उन से पहले बहुत से लोगों को हलाक कर दिया था, अब वह उन की तरफ़ लौट कर नहीं आयेंगे (३१) और सब के सब हमारे रुबरु हाज़िर किये, जायेंगे (३२)—रुकू-२

और एक निशानी उन के लिये ज़मीने मुर्दा है कि हम ने उस को ज़िन्दा किया और उस में से अनाज उगाया, फिर यह उस में से खाते हैं (३३) और उस में खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किये और उस में चश्मे जारी कर दिये (३४) ताकि यह उन के फल खायें, और उन के हाथों ने तो उन को नहीं बनाया फिर यह शुक्र क्यों नहीं करते(३५)वह खुदा पाक है जिसने ज़मीन

की नबातात के और खुद उन के और जिन चीज़ों की उन को

खबर नहीं सब के जोड़े बनाये (३६) और एक निशानी उन के लिये रात है कि उस में से हम दिन को खींच निकालते हैं तो उस वक्त इन पर अंधेरा छा जाता है (३७) और सूरज अपने मुक़र्रर रस्तेपर चलता रहता हैं यह खुदाये) ग़ालिब और दाना का (मुक़र्रर किया हुआ) अन्दाज़ा है (३८) और चान्द की भी हमने मन्ज़िलें मुक़र्रर कर दीं यहां तक कि (घटते घटते) खजूर की पुरानी शाख की तरह हो जाता है (३९) न तो सूरज ही से हो सकता है कि चान्द को जा पकड़े और न रात ही दिन से पहले आ सकतो है, सब अपने अपने दायरे में तैर रहे हैं (४०) और एक निशानी उन के लिये यह है कि हम ने उन की औलाद को भरी हुई कश्ती में सवार किया (४१) और उन के लिये वैसी ही और चोज़ें पैदा कीं जिन पर वह सवार होते हैं (४२) और अगर हम चाहें तो उन को ग़र्क कर दें, फिर न तो उन का कोई फ़रियाद रस हो और न उन को रिहाई मिले (४.) मगर यह हमारी रेहमत, और एक मुद्दत तक के फ़ायदे हैं (४४) और जब उन से कहा जाता है कि जा तुम्हारे आगे और जो तुम्हारे पीछे है उस से डरो ताकि तुम पर रहम किया जाये (४५) और उन के पास उन के पर्वरदिगार की तरफ़ से कोई निशानी नहीं आती, मगर उस से मूंह फेर लेते है ४६) और जब उन से कहा जाता है कि जो रिज़्क़ खुदा ने तुम को दिया है, उस में से खर्च करो, तो मोमिनों से काफ़िर कहते हैं कि भला हम इन लोगों को खाना खिलाय, जिन को अगर खुदा चाहता तो खुद खिला देता, तुम तो सरीह ग़लती में हो (४७) और कहते हैं अगर तुम सच कहते हो तो यह वायदा (कब पूरा) होगा (४८) यह तो एक चिन्घाड़ के मुन्तज़िर हैं जो उन को इस हाल में कि बाहम झगड़ते होंगे, आ पकड़ेगो (४) फिर न तो वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर वालों में वापिस जा सकेंगे (५०)—रुकू-३-

और जिस वक्त सूर फूंका जायेगा, यह क़ब्रों से (निकल कर) अपने पर्वरदिगार की तरफ दौड़ पड़ेंगे (५१) कहेंगे, ऐ हे, हमें हमारी ख्वाब गाहों से किसने (जगा) उठाया, यह वही तो है जिस खुदा ने वायदा किया था और पैग़म्बरों ने सच कहा था (५२) सिर्फ एक जोर की आवाज़ का होना होगा कि सब के सब हमारे रुबरु आ हाज़िर होंगे (५३) उस रोज़ किसी शख्स पर कुछ भी जुल्म नहीं किया जायेगा और तुम को बदला वैसा ही मिलेगा जैसे तुम काम करते थे (५४ अहले जन्नत उस रोज़ ऐशो निशात के मशगले में होंगे (५५) वह भी और उन की बीवियाँ भी, सायों में तख्तों पर तकिये लगाये बैठे होंगे (५६) वहां उनके लिये मेवे और जो चाहेंगे (मौजूद होगा) (५७) पर्वरदिगार मेहरबान की तरफ़ से सलाम (कहाजाये) (५८) और गुन्हेगारो, आज अलग हो जाओ (५९) ऐ आदम की औलाद ! हम ने तुम से कह नहीं दिया था कि शैतान को न पूजना, वह तुम्हारा खुला दुश्मन हैं (६०) और यह कि मेरी ही इबादत करना, यही सीधा रस्ता है (६१) और उस ने तुम में से बहुत सी खलक़त को गुमराह कर दिया था, तो क्या तुम समझते नहीं थे (६२) यही वह जहन्नुम है जिस की तुम्हें ख़बर दी जाती है (६३) (सो) जो तुम कुफ्र करते रहे हो उस के बदले आज इस में दाखिल हो जाओ (६४) आज हम उन के मूंहों पर मोहर लगा देंगे और जो कुछ यह करते रहे थे, उन के हाथ हम से बयान कर देंगे, और उनके पाँव (उसकी) गवाही देंगे (६५) और अगर हम चाहें तो उन की आंखों को मिटा कर (अन्धा कर दें) फिर यह रस्ते को दौड़ें तो कहां देख सकेंगे (६६) और अगर हम चाहें तो उनकी जगह पर उन की सूरतें बदल दें, फिर वहाँ से न आगे जा सकें और न (पीछे) लौट सकें (६७)—रुकू-४

और जिस को हम बड़ी उम्र देते हैं, उसे ख़लक़त में औन्धा

कर देते हैं, तो क्या यह समझते नहीं (६८) और हमने इन (पैग़म्बर) को शेर गोई नहीं सिखाई और न वह इन को शायाँ है, यह तो महज़ नसीहत और साफ़ साफ़ क़ुरान (पुर अज़ हिकमत) है (६९) ताकि उस शख़्स को जो ज़िन्दा हो, हिदायत का रस्ता दिखाये और काफ़िरों पर बात पूरी हो जाये (७०) क्या इन्होंने नहीं देखा कि जो चीज़ें हम ने अपने हाथों से बनाईं उन में से हम ने उन के लिये चारपाये पैदा कर दिये और यह उन के मालिक हैं (७१) और उन को इन के क़ाबू में कर दिया तो कोई तो इन में से उन की सवारी है और किसी को यह खाते हैं (७२) और उन में इन के (और) फ़ायदे और पीने की चीज़ें हैं तो यह शुक्र क्यों नहीं करते (७३) और इन्होंने ख़ुदा के सिवा (और) माबूद बना लिये हैं कि शायद (उन से) उन को मदद पहुंचे (७४) (मगर) वह उन की मदद की हर्गिज़ ताक़त नहीं रखते और वह उनकी फ़ौज होकर हाज़िर किये जायेंगे (७५) तो उनकी बातें तुम्हें ग़मनाक न कर दें, यह जो कुछ छुपाते और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं, हमें सब मालूम है (७६) क्या इन्सान ने नहीं देखा कि हम ने उस को नुत्फ़े से पैदा किया, फिर वह तड़ाक़ पड़ाक़ झगड़ने लगा (७७) और हमारे बारे में मिसालें बयान करने लगा और अपनी पैदाईश को भूल गया, कहने लगा कि (जब) हड्डियाँ बोसीदा हो जायेंगी तो उन को कौन ज़िन्दा करेगा (७८) कह दो कि उन को वह ज़िन्दा करेगा जिस ने उन को पहले पैदा किया था और वह सब क़िसम का पैदा करना जानता है (७९) (वही) जिस ने तुम्हारे लिये सब्ज़ दरख़्त से आग पैदा की, फिर तुम उस (की टेहनियों को रगड़ कर उन) से आग निकालते हो (८०) भला जिस ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा किया, क्या वह इस बात पर क़ादिर नहीं कि (उन को फिर) वैसे ही पैदा कर दे, क्यों नहीं, और

वह तो बड़ा पैदा करने वाला (और) इल्म वाला है (८१) उस की शान यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो उसे फ़रमा देता है कि हो जा, तो वह हो जाती है (८२) वह (जात) पाक है जिस के हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है और उसी की तरफ़ तुम को लौट कर जाना है (८३)—रुकू—५

—o—

३७—सूर-हे-साफ़्फ़ात

यह सूरत मक्के में उतरी, और इसमें १८२ आयतें
और ५ रुकू हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत
रहम वाला है।

क़सम है सफ़ बान्धने वालों की परा जमा कर (१) फिर डान्टने वालों को झिड़क कर (२) फिर ज़िक्र (यानी क़ुरान) पढ़ने वालोंकी (ग़ौर कर कर) (३) कि तुम्हारा माबूद एक है(४) जो आस्मानों और ज़मीन और जो चीज़ें उन में हैं सब का मालिक है और सूरज के तुलू होने के मक़ामात का भी मालिक है (५) बेशक हम ही ने आस्मान बना, दुनिया को सितारों की ज़ीनत से मुज़ैय्यन किया (६) और हर शैताने सरकश से उसकी हिफ़ाज़त की (७) कि ऊपर की मजलिस की तरफ़ कान न लगा सकें और हर तरफ़ से (उन पर अंगारे) फैंके जाते हैं (८) (यानी वहाँ से) निकाल देने को, और उन के लिये दायमी अज़ाब है (९) हाँ जो कोई (फ़रिशतों की किसी बात को) चोरी से झपट लेना चाहता है, तो जलता हुआ अंगारा उन के पीछे

लगता है (१०) तो उन से पूछो कि उन का बनाना मुश्किल है, या जितनी खलक़त हम ने बनाई है? उन्हें हम ने चिपकते गारे से बनाया है (११) हाँ तुम तो ताज्जुब करते हो और यह तमस्खुर करते हैं (१२) और जब उन को नसीहत दी जाती है, तो नसीहत क़बूल नहीं करते (१३) और जब कोई निशानी देखते हैं तो ठठ्ठे करते (१४) और कहते हैं कि यह तो सरीह जादू है (१५) भला जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियाँ हो गये तो क्या फिर उठाये जायेंगे (१६) और क्या हमारे बाप दादा भी (जो) पहले हो गुज़रे हैं (१७) कह दो कि हाँ, और तुम ज़लील होगे (१८) वह तो ज़ोर की आवाज होगी और यह उस वक्त देखने लगेंगे (१९) और कहेंगे, हाय शामत! यही जज़ा का दिन है (२०) (कहा जायेगा कि हाँ) फ़ैसले का दिन जिस को तुम झूठ समझते थे यही है (२१)—रुकू—१

जो लोग ज़ुल्म करते थे उन को और उन के हमजिन्सों को और जिन को वह पूजा करते थे (सब को) जमा कर लो (२२) (यानी जिन को) ख़ुदा के सिवा (पूजा करते थे) फिर उन को जहन्नुम के रस्ते पर चलाओ (२३) और उन को ठैहराये रखो कि उन से (कुछ) पूछना है (२४) तुम को क्या हुआ कि एक दूसरे की मदद नहीं करते (२५) बल्कि आज तो वह फ़रमां-बरदार हैं (२६) और एक दूसरे की तरफ़ रुख़ कर के सवाल (व जवाब) करेंगे (२७) कहेंगे क्या तुम्हीं हमारे पास दायें (और बायें) से आये थे (२८) वह कहेंगे बल्कि तुम ही ईमान लाने वाले न थे (२९) और हमारा तुम पर कुछ जोर न था बल्कि सरकश लोग थे (३०) सो हमारे बारे में हमारे पर्वर-दिगार की बात पूरी हो गई अब हम मज़े चखेंगे (३१) हम ने तुम को भी गुमराह किया (और) खुद भी गुमराह थे (३२)

पस वह उस रोज़ अज़ाब में एक दूसरे के शरीक होंगे (३३) हम गुन्हेगारों के साथ ऐसा ही सलूक किया करते हैं (३४) उन का यह हाल था कि जब उन से कहा जाता था कि ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं तो ग़रुर करते थे (३५) और कहते थे भला हम एक दीवाने शाईर के कहने से कहीं अपने माबूदों को छोड़ देने वाले हैं (३६) (नहीं) बल्कि वह हक़ ले कर आये हैं और (पहले) पैग़म्बरों को सच्चा कहते हैं (३७) बेशक तुम तकलीफ़ देने वाले अज़ाब का मज़ा चखने वाले हो (३८) और तुम को बदला वैसा ही मिलेगा जैसे तुम काम करते थे (३९) मगर जो ख़ुदा के बन्दगाने ख़ास हैं (४०) यही लोग हैं जिन के लिये रोज़ी मुक़र्रर है (४१) (यानी) मेवे और उन का ऐज़ाज़ किया जायेगा (४२) नैयमत के बाग़ों में (४३) एक दूसरे के सामने तख़्तों पर बैठे होंगे (४४) शराबे लतीफ़ के जाम का उन में दौर चल रहा होगा (४५) जो रंग की मुफ़ीद और पीने वालों के लिये (सरासर) लज़्ज़त होगी (४६) न उस से दर्दे सर हो और न वह उस से मतवाले होंगे (४७) और उन के पास औरतें होंगी जो निगाहें नीची रखती होंगी और आँखें बड़ी बड़ी (४८) गोया वह मेहफ़ूज़ अन्डे हैं (४९) फिर वह एक दूसरे की तरफ़ रुख कर के सवाल (व जवाब) करेंगे (५०) एक कहने वाला उन में से कहेगा कि मेरा एक हम नशीन था (५१) (जो) कहता था कि भला तुम भी ऐसी बातों के बावर करने वालों में हो (५२) भला जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियाँ हो गये तो क्या हम को बदला मिलेगा ? (५३) (फिर) कहेगा कि भला तुम (उसे) झांक कर देखना चाहते हो (५४) (इतने में) वह (ख़ुद) झाँकेगा और उस को वस्त दोज़ख़ में देखेगा (५५) कहेगा ख़ुदा की क़सम तू तो मुझे हलाक ही कर चुका था (५६) और अगर मेरे परवरदिगार की मेहरबानी नहीं होती तो मैं भी

उन में होता जो (अज़ाब में) हाज़िर किये गये हैं (५७) क्या (यह नहीं कि) हम (आयन्दा कभी) मरने के नहीं (५८) हाँ (जो) पहली बार मरना था (सो मर चुके) और हमें अज़ाब भी नहीं होने का (५९) बेशक यह बड़ी कामयाबी है (६०) ऐसी ही (नैयमतों) के लिये अमल करने वालों को अमल करने चाहियें (६१) भला यह मेहरबानी अच्छी है या थोहर का दरख़्त (६२) हम ने उस को ज़ालिमों के लिये अज़ाब बना रखा है (६३) वह एक दरख़्त है कि जहन्नुम के अस्फ़ल में उगेगा (६४) उस के ख़ोशे ऐसे होंगे जैसे शैतानों के सर (६५) सो वह उसीमें से खायेंगे और उसी से पेट भरेंगे (६६) फिर उस (खाने) के साथ उन को गर्म पानी मिला कर दिया जायेगा (६७) फिर उन को दोज़ख़ की तरफ़ लौटाया जायेगा (६८) उन्होंने अपने बाप दादा को गुमराह ही पाया (६९) सो वह उन ही के पीछे दौड़े चले जाते हैं (७०) और उन से पेशतर बहुत से पहले लोग भी गुमराह हो गये थे (७१) और हम ने उनमें मुतनब्बा करने वाले भेजे (७२) सो देख लो कि जिनको मुतनब्बा किया गया था, उन का अन्जाम कैसा हुआ (७३) हाँ ख़ुदा के बन्दगाने ख़ास (का अन्जाम बहुत अच्छा हुआ) (७४)–रुकू–२

और हम को नूह ने पुकारा सो (देख लो कि) हम (दुआ को कैसे) अच्छे क़बूल करने वाले हैं (७५) और हम ने उन को और उनके घर वालों को बड़ी मुसीबत से नजात दी (७६) और उन की औलाद को ऐसा किया कि वही बाकी रह गये (७७) और पीछे आने वालों में उन का ज़िक्र (जमील बाक़ी) छोड़ दिया (७८) (यानी) तमाम जहान में (कि) नूह पर सलाम (७९) नेकूकारों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं (८०) बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे (८१) फिर हम ने दूसरों

को डबो दिया (८२) और उन ही के पैरुओं में इब्राहीम थे (८३) जब वह अपने पर्वरदिगार के पास (ऐब से) पाक दिल ले कर आये (८४) जब इन्होंने अपने बाप से और अपनी क़ौम से कहा कि तुम किन चीज़ों को पूजते हो (८५) क्यों झूठ बढ़ा कर ख़ुदा के सिवा और माबूदों के तालिब हो (८६) भला पर्वरदिगारे आलम के बारे में तुम्हरा क्या ख्याल है (८७) तब उन्होंने सितारों की तरफ़ एक नज़र की (८८) और कहा मैं तो बीमार हूं (८९) तब वह उनसे पीठ फेर कर लौट गये (९०) फिर इब्राहीम के माबूदों की तरफ़ मुतवज्जोह हुए और कहने लगे कि तुम खाते क्यों नहीं (९१) तुम्हें क्या हुआ है तुम बोलते नहीं (९२) फिर उन को दाहिने हाथ से मारना (और तोड़ना) शुरू किया (९३) तो वह लोग उनके पास दौड़े हुए आये (९४) उन्होंने कहा कि तुम ऐसी चीज़ों को क्यों पूजते हो जिन को ख़ुद तराश्ते हो (९५) हालाँकि तुमको और जो तुम बनाते हो, उसको ख़ुदा ही ने पैदा किया है (९६) वह कहने लगे कि इसके लिये एक इमारत बनाओ फिर उसको आग के ढेर में डाल दो (९७) ग़रज़ उन्होंने उसके साथ एक चाल चलनी चाही और हमने उन हो को ज़ेर कर दिया (९८) और इब्राहीम बोले कि मैं अपने पवर्रदिगार की तरफ़ जाने वाला हूं, वह मुझे रस्ता दिखायेगा (९९) ऐ पवर्रदिगार मुझे (औलाद) अता फ़रमा (जो) सआदत मन्दों में से (हो) (१००) हमने उनको एक नर्म दिल लड़के की खुश-ख़बरी दी (१०१) जब वह उनके साथ दौड़ने (की उम्र) को पहुंचा तो इब्राहीम ने कहा कि बेटा मैं ख्वाब में देखता हूं कि (गोया) तुमको ज़ब्हा कर रहा हूं तो तुम सोचो कि तुम्हारा क्या ख्याल है ? उन्होंने कहा कि अब्बा जो आपको हुक्म हुआ वही कीजिये, ख़ुदा ने चाहा तो आप मुझे साबिरों में पाईयेगा (१०२) जब दोनों ने हुक्म मान लिया और बाप ने बेटे को माथे के बल

लिटा दिया (१०३) तो हमने उनको पुकारा कि ऐ इब्राहीम (१०४) तुमने ख्वाब को सच्चा कर दिखाया, हम नेकू कारों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं (१०५) बिला शुब्हा यह सरीह आज़माईश थी (१०६) और हमने एक बड़ी कुर्बानी को इसका फ़िदिया दिया (१०७) और पीछे आने वालों में इब्राहीम का (ज़िक्रे ख़ैर बाकी) छोड़ दिया (१०८) कि इब्राहीम पर सलाम हो (१०९) नेकूकारों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं (११०) वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे (१११) और हमने उन को इसहाक़ की बशारत दी थी (कि वह) नबी (और) नेकूकारों में से (होंगे) (११२) और हमने उन पर और इसहाक़ पर बर-कतें नाज़िल की थीं, और इन दोनों की औलाद में से नेकूकार भी हैं और अपने आप पर सरीह ज़ुल्म करने वाले (यानी गुन्हेगार) भी हैं (११३)—रुकू ३

और हमने मूसा और हारुन पर भी एहसान किये (११४) और उनको और उनकी क़ौम को मुसीबते अज़ीमा से नजात बख्शी (११५) और उनकी मदद की तो वह ग़ालिब हो गये (११६) और उन दोनों को किताबे वाज़ेह (उल मतालिब) इनायत की (११७) और उनको सीधा रस्ता दिखाया (११८) और पीछे आने वालों में उनका ज़िक्र (ख़ैर बाक़ी) छोड़ दिया (११९) कि मूसा और हारुन पर सलाम (१२०) बेशक हम नेकू कारों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं (१२१) वह दोनों हमारे मोमिन बन्दों में से थे (१२२) और इल्यास भी पैग़म्बरों में से थे (१२३) जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम डरते क्यों नहीं (१२४) क्या तुम बौयल* को पुकारते और उसको पूजते हो और सब से बेहतर पैदा करने वाले को छोड़ देते हो (१२५)

*आयत १२५:—बौयल एक बुत था, बीस गज़ क़द उसका और चार मूंह रखता था।

(यानी) ख़ुदा को जो तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादा का पवर्रदिगार है (१२६) तो उन लोगों ने उनको झुठला दिया सो (वह दोज़ख़ में) हाज़िर किये जायेंगे (१२७) हाँ ख़ुदा के बन्दगाने ख़ास (मुब्तिलाये अज़ाब नहीं होंगे (१२८) और उनका ज़िक्रे (ख़ैर) पिछलों में (बाक़ी) छोड़ दिया (१२६) कि इल्यासीन पर सलाम (१३०) हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं (१३१) बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे (१३२) और लूत भी पैग़म्बरों में से थे (१३३) जब हमने उनको और उनके घर वालों को सब को (अज़ाब से) नजात दी (१३४) मगर एक बुढ़िया कि पीछे रह जाने वालों में थी (१३५ फिर हमने औरों को हलाक कर दिया (१३६) और तुम दिन को अभी उन (की बस्तियों) के पास से गुज़रते रहते हो (१३७) और रात को भी तो क्या तुम अक़्ल नहीं रखते (१३८) रुकू ४

और यूनिस भी पैग़म्बरों में से थे (१३९) जब भाग कर भरी हुई कश्ती में पहुंचे (१४०) उस वक्त कुरआ डाला तो उन्होंने ज़क उठाई (१४१) फिर मछली ने उनको निगल लिया और वह (क़ाबिले) मलामत (काम) करने वाले थे (१४२) फिर अगर वह (ख़ुदा की) पाकी बयान न करते (१४३) तो उस रोज़ तक कि लोग दोबारा ज़िन्दा किये जायेंगे, उसी के पेट में रहते (१४४) फिर हमने उनको जब कि वह बीमार थे फ़राख़ मैदान में डाल दिया (१४५)॥ और उन पर कद्दू का दरख़्त उगाया (१४६) और उनको लाख या उससे ज़्यादा (लोगों) की तरफ़ (पैग़म्बर बना कर) भेजा (१४७) तो वह ईमान ले आये, सो हम भी उनको (दुनिया में) एक वक्ते (मुक़र्रर) तक फ़ायदे देते रहे (१४८) उनसे पूछो तो, कि भला तुम्हारे पवर्रदिगार के लिये तो बेटियां और उनके लिये बेटे (१४९) या हमने फ़रिश्तों

को औरतें बनाया और वह (उस वक्त) मौजूद थे (१५०) देखो यह अपनी झूठ बनाई हुई (बात) कहते हैं (१५१) कि ख़ुदा की औलाद है, कुछ शक नहीं कि यह झूठे हैं (१५२) क्या उस ने बेटों की निस्बत बेटियों को पसन्द किया है (१५३) तुम कैसे लोग हो किस तरह का फ़ैसला करते हो (१५४) भला तुम ग़ौर क्यों नहीं करते (१५५) या तुम्हारे पास कोई सरीह दलील है (१५६) अगर तुम सच्चे हो तो अपनी किताब पेश करो (१५७) और उन्होंने ख़ुदा और जिन्नों में रिश्ता मुक़र्रर किया हालाँकि जिन्नात जानते हैं कि वह ख़ुदा (के सामने) हाज़िर किये जायेंगे (१५८) यह जो कुछ बयान करते हैं ख़ुदा उससे पाक है (१५९) मगर ख़ुदा के बन्दगाने ख़ालिस (मुब्तिलाये अज़ाब नहीं होंगे) (१६०) सो तुम और जिनको तुम पूजते हो (१६१) ख़ुदा के ख़िलाफ़ बहका नहीं सकते (१६२) मगर उसको जो जहन्नुम में जाने वाला है (१६३) और फ़रिश्ते कहते हैं कि हम में से हर एक का मक़ाम मुक़र्रर है (१६४ और हम सफ़ बान्धे रहते हैं (१६५) और (ख़ुदाये) पाक (ज़ात) का ज़िक्र करते रहते हैं (१६६) और यह लोग कहा करते थे (१६७) कि अगर हमारे पास अमलों की कोई नसीहत (की किताब) होती (१६८) तो हम ख़ुदा के ख़ालिस बन्दे होते (१६९) लेकिन (अब) उस से कुफ़्र करते हैं, सो अन्क़रीब उनको (इसका नतीजा) मालूम होजायेगा (१७०) और अपने पैग़ाम पहुंचाने वाले बन्दों से हमारा वायदा हो चुका है (१७१) कि वही (मुज़फ़्फ़र) व मन्सूर हैं (१७२) और हमारा लश्कर ग़ालिब रहेगा (१७३) तो एक वक्त तक इन से ऐराज़ किये रहो (१७४) और इन्हें देखते रहो, यह भी अन्क़रीब (कुफ़्र का अन्जाम) देख लेंगे (१७५) क्या यह हमारे अज़ाब के लिये जल्दी कर रहे हैं (१७६) मगर जब वह इनके मैदान में आ उतरेगा तो जिनको डर सुना दिया गया था, उनके

लिये बुरा दिन होगा (१७७) और एक वक्त तक उनसे मूंह फेरे रहो (१७८) और देखते रहो, यह भी अन्क़रीब (नतीजा) देख लेंगे (१७९) यह जो कुछ बयान करते हैं, तुम्हारा पवर्रदिगार जो साहिबे इज़्ज़त है, उससे (पाक है) (१८०) और पेग़म्बरों पर सलाम (१८१) और सब तरह की तारीफ़ ख़ुदाये रब्बुल आलमीन को (सज़ावार) है (१८२)—रुकू ५

—०—

३८—सूर-हे-साद

सूरते साद मक्के में उतरी, और इसमें ८८ आयतें और ५ रुकू हैं ।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है ।

सुवाद, अलिफ़, दाल क़सम है उस क़ुरान की जो नसीहत देने वाला है(कि तुम हक़ पर हो) (१) मगर जो लोग काफ़िर हैं वह ग़रूर और मुखालिफ़त में हैं (२) हमने इससे पहले बहुत सी उम्मतोंको हलाककर दिया तो वह(अज़ाब के वक्त)लगे फ़रियाद करने और वह रिहाई का वक्त नहीं था (३) और उन्होंनें ताज्जुब किया कि उनके पास उन्हीं में से हिदायत करने वाला (आया) और काफ़िर कहने लगे यह तो जादूगर है झूठा (४) क्या उसने इतने माबूदों की जगह एक ही माबूद बना दिया,

*आयत १४५:— खासियत कद्दू के पत्तों की यह है कि मक्खी पास न आवे, अल्लाह ताला ने उनको सास दरख़्त बाज़ के यानी कद्दू के से ढाँका ताकि ख़लल मक्खियों के से और गर्मी धूप की से बे ख़तर हों।

यह तो बड़ी अजीब बात है (५) तो उनमें जो मौअज़िज़ज़ थे वह चल खड़े हुए (और बोले) कि चलो और अपने माबूदों (की पूजा) पर क़ायम रहो, बेशक यह ऐसी बात है जिससे (तुम पर) शरफ़ (व फ़ज़ीलत) मक़सूद है (६) यह पिछले मज़हब में हमने कभी सुनी ही नहीं, यह बिल्कुल बनाई हुई बात है (७) क्या हम सबमें से उसी पर नसीहत (की किताब) उतरी है ? (नहीं) बल्कि यह मेरी नसीहत की किताब से शक में है (८) बल्कि उन्होंने अभी मेरे अज़ाब का मज़ा नहीं चखा, क्या उनके पास तुम्हारे ही रहमत के ख़ज़ाने हैं, जो ग़ालिब और बहुत अता करने वाला है (९) या आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ उन में है उन (सब) पर उन ही की हकूमत है तो चाहिये कि रस्सियां तान कर (आस्मानों पर) चढ़ जायें (१०) यहां शिकस्त खाये हुए गिरोह में से यह भी एक लशकर है (११) इनसे पहले नूह की क़ौम और आद और मेख़ों वाला फ़िराऊन (और उस की क़ौम के लोग) भी झुठला चुके हैं (१२) और समूद और लूत की क़ौम और बन के रहने वाले भी यही वह गिरोह है (१३) (इन) सब ने पैग़म्बर को झुठलाया, तो मेरा (अज़ाब) उन पर आ वाक़ैय हुआ (१४) – रुकू १

और यह लोग तो सिर्फ़ एक ज़ोर की आवाज़ का जिसमें (शुरू हुए पीछे) कुछ वक़्फ़ा नहीं होगा, इन्तज़ार करते हैं (१५) और कहते हैं कि ऐ हमारे पवर्रदिगार, हमारा हिस्सा हिसाब के दिन से पहले ही दे दे (१६) (ऐ पैग़म्बर) यह जो कुछ कहते हैं उस पर सब्र करो और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो, जो साहिबे क़ुव्वत थे (और) बेशक वह रजू करने वाले थे (१७) हमने पहाड़ों को उनके ज़ेरे फ़रमान कर दिया था व सुब्ह व शाम उनके साथ (खुदाये) पाक (का) ज़िक्र करते थे (१८) और परिन्दों को भी कि जमा रहते थे, सब उनके फ़रमाँवर्दार

थे (१९) और हमने उन की बादशाही को मुस्तैहकम किया और उनको हिकमत अता की और (ख़ुसूमत की) बात का फ़ैसला (सिखाया) (२०) भला तुम्हारे पास उन झगड़े करने वालों की भी ख़बर आती है जब वह दीवार फान्द कर इबादत खाने में दाखिल हुए (२१)* जिस वक्त वह दाऊद के पास आये तो वह उनसे घबरा गये, उन्होंने कहा कि ख़ौफ़ न कीजिये, हम दोनों का एक मुक़दमा है कि हम में से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है तो आप हम में इन्साफ़ का फ़ैसला कर दीजिये और बे इन्साफ़ी न कीजियेगा और हमको सीधा रस्ता दिखा दीजिये (२२) (कैफ़ियत यह है कि) यह मेरा भाई है कि इसके (हाँ) निन्नानवे) दुंबियाँ हैं और मेरे (पास) एक दुंबी है, यह कहता है कि यह भी मेरे हवाले कर दे, और गुफ़्तगू में मुझ पर ज़बरदस्ती करता है (२३) उन्होंने कहा यह जो तेरी दुंबी माँगता है कि अपनी दुम्बियों में मिला ले, बेशक तुझ पर ज़ुल्म करता है और अक्सर शरीक एक दूसरे पर ज़्यादती ही किया करते हैं, हाँ जो ईमान लायें और नेक अमल करते रहें और ऐसे लोग बहुत कम हैं, और दाऊद ने ख़्याल किया कि (इस वाक़ैय से) हमने इनको आज़माया है तो उन्होंने अपने पवर्रदिगार से मग़फ़रत माँगी और झुक कर गिर पड़े और (ख़ुदा की तरफ़) रजू किया (२४) तो हमने उनको बख़्श दिया और बेशक उनके लिये हमारे हाँ क़ुर्ब और उमदा मक़ाम है (२५) ऐ दाऊद, हमने तुमको ज़मीन में बादशाह बनाया है, तो लोगों में इन्साफ़ के फ़ैसले किया करो और ख़्वाहिश की

*आयत २१:—हज़रत दाऊद ने बारी रखी थी तीन दिन की, एक दिन दर्बार का एक अपनी औरतों के पास एक दिन इबादत का जिस दिन ख़िल्वत में रहते थे, दर्बान किसी को न आने देते थे, कई शख़्स दीवार कूद कर उनके पास आये।

पैरवी न करना कि वह तुम्हें ख़ुदा के रस्ते से भटका देंगी, जो लोग ख़ुदा के रस्ते से भटकते हैं, उन के लिये सख्त अज़ाब (तैयार) है, कि उन्होंने हिसाब के दिन को भुला दिया (२६)*
—रुकू—२

और हमने आस्मान और ज़मीन को और जो क़ायनात इन में है उसको ख़ाली अज़ मसलहत पैदा नहीं किया, यह उनका गुमान है जो काफ़िरों के लिये दोज़ख़ का अज़ाब है (२७) जो लोग ईमान लाये और अमल नेक करते रहे क्या उनको हम उन की तरह कर देंगे जो मुल्क में फ़िसाद करते हैं या परहेज़गारों को बदकारों की तरह कर देंगे (२८) (यह) किताब जो हमने तुम पर नाज़िल की है बा बरकत है ताकि लोग उसकी आयतों में ग़ौर करें और ताकि अहले अक़्ल नसीहत पकड़ें (२९) और हमने दाऊद को सुलैमान अता किये, बहुत ख़ूब बन्दे (थे और) वह (ख़ुदा की तरफ़) रजू करने वाले थे (३०) जब उनके सामने शाम को ख़ासे के घोड़े पेश किये गये (३१) तो कहने लगे कि मैंने अपने पर्वरदिगार की याद से (ग़ाफ़िल होकर) माल की मोहब्बत अख्तियार की, यहाँ तक कि (आफ़ताब) पर्दे में छुप गया (३२) (बोले कि) उनको मेरे पास वापिस ले आओ,

*आयत २६:—वह झगड़ने वाले फ़रिश्ते थे, पर्दे में उनको सुना गये उन्हीं का माजरा—उनके घर में ९९ औरतें थीं, एक हमसाये की औरत पर नज़र पड़ गई, चाहा कि उसको भी घर में रखें, उसका ख़ाविन्द मौजूद था, उनके लशकर में उसको ताय्युन किया, ताबूते सकीना से आगे जहाँ बड़े मर्दाना लोग लड़ाई में बढ़ते थे, वह शहीद हुआ, पीछे उसकी औरत से निकाह किया, इसमें किसी का ख़ून नहीं किया वे नामूसी नहीं की, मगर किसी की चीज़ ले ली तदबीर से, पैग़म्बरों की बड़ाई को इतना भी दाग़ ऐब था, इस पर जाँच हुई ।

फिर उनकी टागों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगे (३३)* और हमने सुलैमान की आज़माईश को और उनके तख्त पर एक धड़ डाल दिया, फिर उन्होंने (ख़ुदा की तरफ़) रजू किया (३४)* (और) दुआ की कि ऐ पर्वरदिगार मुझे मग़फ़रत कर और मुझ को ऐसी बादशाही अता कर कि मेरे बाद किसी को शायाँ न हो, बेशक तू बड़ा अता फ़रमान वाला है (३५) फिर हमने हवा को उनके ज़ेरे फ़रमाने कर दिया कि जहाँ वह पहुंचना चाहते, उनके हुक्म से नरम नरम चलने लगती (३६) और देवों को भी उनके ज़ेरे फ़रमान किया, वह सब इमारतें बनाने वाले और

*आयत ३३:—हज़रत सुलैमान ने सुना कि समुन्दर के किनारे पर दरियाई घोड़े निकलते हैं, ख़ासी घोड़ियां वहाँ पर बान्ध रखी, वह उनसे जुफ़्त हुईं, बच्चे हुए, तोहफ़ा उनका क़दम जैसे पीरज़ादे तैयार होकर आये देखने में यह बे खबर हो गये, वज़ीफ़े का वक्त जाता रहा असर का सूरज ओट में आ गया, फिर गुस्सा हुए उन घोड़ों को मंगा कर काट डाला, यह अल्लाह की मोहब्बत का जोश था।

*आयत ३४:—हज़रत सुलैमान इस्तन्जे को जाते तो अन्गुश्तरी एक ख़ादिमा को सिपुर्द कर जाते, इसमें लिखा था इस्मेआज़म एक जिन्न था सख़र नाम, उस ख़ादिमा को बहका कर अंगुश्तरी ले गया, अपनी सूरत बनाई सुलैमान की सी, तख़्त पर बैठ कर लगा हुक्म करने, हज़रत सुलैमान यह मालूम करके निकल गये कि मुझको मरवा न डाले एक गाँव में छुप कर रहे, छै महीने के बाद सख़र था शराब की मस्ती में, अंगुश्तरी दरिया में गिर गई, एक मछली निगल गई वह शिकार हुई सुलैमान के हाथ, पेट में से अंगुश्तरी निकली, लेकर फिर आये अपने तख़्ते सलतनत पर, जान्च हुई कि जिन्नों में अपने जादू से उस औरत के ख़ाविन्द की तस्वीर बना दी थी जिसे यह पूजने लगी थी उन्होंने ख़बर न ली या ख़बर पाकर तग़ाफ़ल किया इस पर उनके तख़्ते पर धड़ आ कर गिरा।

ग़ोता मारने वाले थे (३७) और औरों को भी जो ज़न्जीरों में जकड़े हुए थे (३८) (हमने) कहा, यह हमारी बख़्शिश है (चाहो) तो एहसान करो या (चाहो तो) रख छोड़ो (तुम से) कुछ हिसाब नहीं है (३९) और बेशक उनके लिये हमारे हाँ क़ुर्ब और उमदा मक़ाम है (४०)—रुकू ३

और हमारे बन्दे अय्यूब को याद करो जब उन्होंने अपने रब्ब को पुकारा कि (बारे इलाहा) शैतान ने मुझको ऐज़ा और तकलीफ़ दे रखी है (४१)* हमने कहा कि ज़मीन पर लात मारो (देखो) यह (चश्मा निकल आया, नहाने को ठन्डा और पीने को शीरीं ४२) और हमने उनको अहल (व अयाल) और उनके साथ उनके बराबर और बख़्शे (यह) हमारी तरफ़ से रहमत और अक़्ल वालों के लिये नसीहत थी (४३) और अपने हाथ में झाड़ू लो और उससे मारो और अपनी क़सम न तोड़ो बेशक हम ने उनको साबित क़दम पाया, बहुत ख़ूब बन्दे थे, बेशक वह रजू करने वाले थे (४४) और हमारे बन्दों इब्राहीम और इसहाक़ और याक़ूब को याद करो, जो हाथों वाले और आँखों वाले थे (४५) हमने उनको एक (सिफ़त) ख़ास (आख़िरत के) घर की

---

*आयत ४१:—हज़रत अय्यूब की बीमारी के ज़माने में शैतान एक हकीम का भेस बदल कर, एक सन्दूक़ दवाओं का लेकर सरे राह बैठा, हज़रत अय्यूब की बीवी ने एक रोज़ उस फ़रेबी हकीम को देख कर हज़रत अय्यूब का हाल कहा शैतान ने जवाब दिया कि इस शर्त से मैं बीमार का इलाज करता हूं कि अगर मेरे इलाज से सेहत हो गई तो यह जानना कि इस सेहत में कुछ ख़ुदा की कुदरत का दख़ल न था ख़ास मेरे ही इलाज ने अच्छा किया हज़रत अय्यूब की बीवी ने जब इस हकीम का ज़िक्र हज़रत अय्यूब से किया तो उन्होंने इस पर ग़ुस्सा हो कर क़सम खाई।

याद से मुमताज़ किया था (४६) और वह हमारे नज़दीक मुन्तखिब और नेक लोगों में से थे (४७) और इस्माईल और अलयसा और ज़ुलक़फ़ल को याद करो, वह सब नेक लोगों में से थे (४८) यह नसीहत है और परहेज़गारों के लिये तो उमदा मक़ाम है (४९) हमेशा रहने के बाग़ जिनके दरवाज़े उनके लिये खुले होंगे (५०) उसमें तकिये लगाये बैठे होंगे और खाने पीने के लिये बहुत से मेवे और शराब मंगवाते रहेंगे (५१) और उनके पास नीची निगाह रखने वाली (और) हम उम्र (औरतें) होंगी (५२) यह वह चीज़ें हैं जिनका हिसाब के दिन के लिये तुम से वायदा किया गया था (५३) यह हमारा रिज़्क है जो कभी खत्म न होगा (५४) वह (नेयमतें सो फ़रमाँबर्दार के लिये हैं) और सरकशों के लिये बुरा ठिकाना है (५५) (यानी) दोज़ख जिसमें वह दाखिल होंगे और वह बुरी आरामगाह है (५६) यह खौलता हुआ गर्म पानी और (पीप है) अब इसके मज़े चखें (५७) और इसी तरह के और बहुत से (अज़ाब होंगे) (५८) यह एक फ़ौज है जो तुम्हारे साथ दाखिल होगी, उनको ख़ुशी न हो, यह दोज़ख में जाने वाले हैं (५९) कहेंगे, बल्कि तुम्हीं को खुशी न हो, तुम ही तो यह (बला) हमारे सामने लाये हो (यह) बुरा ठिकाना है (६०) वह कहेंगे ऐ हमारे पर्वरदिगार, जो इसको हमारे सामने लाया है इसको दोज़ख में दूना अज़ाब दे (६१) और कहेंगे, क्या सबब है कि (यहाँ) हम उन शख्सों को नहीं देखते, जिनको बुरों में शुमार करते थे (६२) क्या हमने उनसे ठट्ठा किया है या (हमारी) आंखें उन (की तरफ़) से फिर गई हैं (६३) बेशक यह अहले दोज़ख का झगड़ा नाहक़ है (६४)—रुकू ४

कह दो कि मैं तो सिर्फ़ हिदायत करने वाला हूं और खुदाये यकता और ग़ालिबके सिवा कोई माबूद नहीं(६५) जो आस्मानों

और ज़मीन और जो मख़लूक़ इनमें है सबका मालिक है, और ग़ालिब (और) बख्शाने वाला (६६) कह दो कि यह एक बड़ी (हौलनाक चीज़ की) खबर है (६७) जिसको तुम ध्यान में नहीं लाते (६८) मुझे ऊपर की मजलिस (वालों) का जब वह झगड़ते थे, कुछ भी इल्म न था (६९) मेरी (तरफ़ तो) यही वही की जाती है कि मैं खुल्लम खुल्ला हिदायत करने वाला हूं (७०) जब तुम्हारे पर्वरदिगार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से इन्सान बनाने वाला हूं (७१) जब उस को दुरुस्त कर लूं और उसमें अपनी रूह फूंक दूं तो उसके आगे सज्दे में गिर पड़ना (७२) तो तमाम फ़रिश्तों ने सज्दा किया (७३) मगर शैतान अकड़ बैठा और काफ़िरों में हो गया (७४) (खुदा ने) फ़रमाया कि ऐ इब्लीस जिस शख्स को मैंने अपने हाथों से बनाया उसके आगे सज्दा करने से तुझे किस चीज़ ने मना किया, क्या तू ग़रूर में आ गया या ऊँचे दर्जे वालों में था (७५) बोला कि मैं इससे बेहतर हूं (कि) तूने मुझको आग से पैदा किया और इसे मिट्टी से बनाया (७६) फ़रमाया, यहाँ से निकल जा, तू मरदूद है (७७) और तुझ पर क़यामत के दिन तक मेरी लानत पड़ती रहेगी (७८) कहने लगा, कि मेरे पर्वरदिगार मुझे उस रोज़ तक कि लोग उठाये जायें, मोहलत दे (७९) फ़रमाया तुमको मोहलत दी जाती है (८०) उस रोज तक जिसका वक्त मुक़र्रर है (८१) कहने लगा, मुझे तेरी इज़्ज़त की क़सम, मैं इन सबको बहकाता रहूंगा (८२) सिवा उनके जो तेरे खास बन्दे हैं (८३) फ़रमाया सच (है) और मैं भी सच कहता हूँ (८४) कि मैं तुझ से और जो इन में से तेरी पैरवी करेंगे, सब से जहन्नुम को भर दूंगा (८५) ऐ पैग़म्बर, कह दो कि मैं तुम से इसका सिला नहीं माँगता, और न मैं बनावट करने वालों में हूं (८६) यह कुरान तो अहले

आलम के लिये नसीहत है (८७) और तुमको इसका हाल एक वक्त के बाद मालूम हो जायेगा (८८)—रुकू ५

—०—

३९—सूर-हे-अलज़ुमर

सूरते ज़ुमर मक्के में उतरी, और इसमें ७५ आयतें और ८ रुकू हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

इस किताब का उतारा जाना ख़ुदाये ग़ालिब (और) हिकमत वाले की तरफ़ से है (१) (ऐ पैग़म्बर) हमने यह किताब तुम्हारी तरफ़ सच्चाई के साथ नाज़िल की है, तो ख़ुदा की इबादत करो (यानी) उसकी इबादत को (शिर्क से) ख़ालिस कर के (२) देखो ख़ालिस इबादत ख़ुदा ही के लिये (ज़ेबा है) और जिन लोगों ने उसके सिवा और दोस्त बनाये हैं (वह कहते हैं कि) हम उनको इसलिये पूजते हैं कि हमको ख़ुदा का मुक़र्रब बना दें, तो जिन बातों में यह इख़्तिलाफ़ करते हैं, ख़ुदा उनमें उनका फ़ैसला कर देगा, बेशक ख़ुदा उस शख़्स को जो झूठा है ना शुक्रा है हिदायत नहीं देता (३) अगर ख़ुदा किसी को अपना बेटा बनाना चाहता, तो अपनी मख़लूक़ में से जिसको चाहता इन्तख़ाब करलेता, वह पाक है, वही तो ख़ुदा यकता (और) ग़ालिब है (४) उसी ने आस्मानों और ज़मीन को तदबीर के साथ पैदा किया है (और) वही रात को दिन पर लपेटता है

और उसी ने सूरज और चान्द को बस में कर रखा है सब एक वक्ते मुक़र्रर तक चलते रहेंगे, देखो वही ग़ालिब (और) बख़्शने वाला है (५) उसी ने तुमको एक शख्स से पैदा किया फिर उस से उसका जोड़ा बनाया और उसी ने तुम्हारे लिये चारपायों में से आठ जोड़े बनाये वही तुमको तुम्हारी माओं के पेट में (पहले) एक तरह फिर दूसरी तरह तीन अन्धेरों में बनाता है, यही ख़ुदा तुम्हारा पर्वरदिगार है, उसी की बादशाही है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो (६) अगर ना शुक्री करोगे, तो ख़ुदा तुम से बे पर्वाह है, और वह अपने बन्दों केलिये नाशुक्री पसन्द नहीं करता, और अगर शुक्र करोगे तो वह इस को तुम्हारे लिये पसन्द करेगा, और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा, फिर तुमको अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौटना है, फिर जो कुछ तुम न करते रहे, वह तुमको बतायेगा, वह तो दिलों की पोशीदा बातों तक से आगाह है (७) और जब इन्सान को तकलीफ़ पहुंचती है तो वह अपने पर्वरदिगार को पुकारता (और) उसकी तरफ़ दिल से रजू करता है, फिर जब वह उसको अपनी तरफ़ से कोई नैयमत देता है, तो जिस काम के लिये पहले उसको पुकारता था, उसे भूल जाता है, और ख़ुदा को शरीक बनाने लगता है, ताकि (लोगों को) उसके रस्ते से गुमराह करे, कह दो कि (ऐ काफ़िरे नैयमत) अपनी नाशुक्री से थोड़ा सा फ़ायदा उठाले फिर तो तू दोज़ख़ियों में होगा (८) भला मुशरिक (अच्छा है) या वह जो रात के वक्तों में ज़मीन पर पेशानी रख कर और खड़े हो कर इबादत करता और आख़िरत से डरता और अपने पर्वरदिगार की रहमत की उमीद रखता है, कहो भला जो लोग इल्म रखते हैं और जो नहीं रखते दोनों बराबर हो सकते हैं (और) नसीहत तो वही पकड़ते हैं जो अक़्लमन्द हैं (९)—रुकू १

कह दो कि ऐ मेरे बन्दो, जो ईमान लाये हो अपने पर्वरदिगार से डरो, जिन्होंने इस दुनिया में नेकी की उनके लिये भलाई है और ख़ुदा की ज़मीन कुशादा है, जो सब्र करने वाले हैं उनको बे शुमार सवाब मिलेगा (१०) कह दो कि मुझ से इर्शाद हुआ है कि ख़ुदा की इबादत को खालिस करके उसकी बन्दगी करूं (११) और यह भी इर्शाद हुआ है कि मैं सब से अव्वल मुस्लमान बनूं (१२) कह दो कि अगर मैं अपने पर्वरदिगार का हुक्म न मानू तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब से डर लगता है (१३) कह दो कि मैं अपने दीन को (शिर्क से) खालिस कर के ख़ुदा की इबादत करता हूं (१४) तो तुम उसके सिवा जिस की चाहो परस्तिश करो, कह दो कि नुक़सान उठाने वाले वही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको और अपने घर वालों को नुक़सान में डाला, देखो यही सरीह नुक़सान है (१५) उनके ऊपर तो आग के सायबान होंगे और नीचे (उसके) फ़र्श होंगे यह वह (अज़ाब) है जिससे ख़ुदा अपने बन्दों को डराता है, तो ऐ मेरे बन्दो, मुझ से डरते रहो (१६) और जिन्होंने इससे इज्तिनाव किया कि बुतों को पूजें, और ख़ुदा की तरफ़ रजू किया तो उनके लिये बशारत है, तो मेरे बन्दों को बशारत सुना दो (१७) जो बात को सुनते और अच्छी बातों की पैरवी करते हैं, यही वह लोग हैं, जिनको ख़ुदा ने हिदायत दी और यही अक्ल वाले हैं (१८) भला जिस शख़्स पर अज़ाब का हुक्म सादिर हो चुका तो क्या तुम ऐसे दोज़खी को मुख़्लिसी दे सकोगे (१९) लेकिन जो लोग अपने पर्वरदिगार से डरते हैं उनके लिये ऊँचे ऊँचे महल हैं, जिनके ऊपर बाला खाने बने हुए हैं (और) उनके नीचे नहरें बह रही हैं (यह) ख़ुदा का वायदा है, यह ख़ुदा वायदे के खिलाफ़ नहीं करता (२०) क्या तुमने नहीं देखा कि ख़ुदा आस्मान से पानी नाज़िल करता, फिर उसको ज़मीन में चश्मे बनाकर जारी

करता, फिर उससे खेती उगाता है, जिसके तरह तरह के रंग होते हैं, फिर वह खुश्क हो जाती है तो तुम उसको देखते हो कि (ज़र्द हो गई है) फिर उसे चूरा चूरा कर देता है, बेशक इसमें अक़्ल वालों के लिये नसीहत है (२१)—रुकू २

भला जिस शख़्स का सीना ख़ुदा ने इस्लाम के लिये खोल दिया हो, और वह अपने पर्वरदिगार की तरफ़ से रोशनी पर हो (तो क्या वह सख्त दिल काफ़िर की तरह हो सकता है) पस उन पर अफ़सोस है जिनके दिल ख़ुदा की याद से सख़्त हो रहे हैं, यही लोग सरीह गुमराही में हैं (२२) ख़ुदा ने निहायत अच्छी बातें नाज़िल फ़रमाई हैं (यानी) किताब (जिसकी आयतें बाहम) मिलती जुलती (हैं) और दोहराई जाती (हैं) जो लोग अपने पर्वरदिगार से डरते हैं उनके बदन के (इस से) रौंगटे खड़े हो जाते हैं फिर उनके बदन और दिल नरम (होकर) ख़ुदा की याद की तरफ़ (मुतवज्जोह) हो जाते हैं, यही ख़ुदा की हिदायत है, वह उससे जिसको चाहता है हिदायत देता है और जिसको ख़ुदा गुमराह करे उसको कोई हिदायत देने वाला नहीं (२३) भला जो शख़्स क़यामत के दिन अपने मूंह से बुरे अज़ाब को रोकता हो (क्या वह वैसा हो सकता है जो चैन में हो) और ज़ालिमों से कहा जायेगा कि जो कुछ तुम कर रहे थे, उसके मज़े चखो (२४) जो लोग उनसे पहले थे उन्होंने भी तकज़ीब की थी, तो उन पर अज़ाब ऐसी जगह से आ गया कि उनको ख़बर ही न थी (२५) फिर उनको ख़ुदा ने दुनिया की जिन्दगी में रुसवाई का मज़ा चखा दिया और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत बड़ा है, काश यह समझ रखते (२६) और हमने लोगों के (समझाने के) लिये इस क़ुरान में हर तरह की मिसालें बयान फ़रमाई हैं ताकि वह नसीहत पकड़ें (२७) (यह) क़ुरान अरबी (है) जिसमें कोई ऐब (और इख़्तिलाफ़) नहीं ताकि वह डर मानें (२८)

ख़ुदा एक मिसाल बयान फ़रमाता है कि एक शख़्स है जिस में कई (आदमी) शरीक हैं (मुख़्तलिफ़ उल मिज़ाज और) बदख़ू एक आदमी ख़ास एक शख़्स का (ग़ुलाम) है भला दोनों की हालत बराबर है (नहीं) अलहम्द लिल्लाह, बल्कि अक्सर लोग नहीं जानते (२६) (ऐ पैग़म्बर) तुम भी मर जाओगे और यह भी मर जायेंगे (३०) फिर तुम क़यामत के दिन अपने पर्वरदिगार (के सामने) झगड़ोगे और झगड़ा फ़ैसला कर दिया जायेगा (३१)—रुकू ३

चौबीसवाँ पारा—फ़मन अज़लम—

(सूरत अल ज़ुमर)

तो उससे बढ़कर ज़ालिम कौन ? जो ख़ुदा पर झूठ बोले और सच्ची बात जब उसके पास पहुंच जाये तो उसे झुटलाये, क्या जहन्नुम में काफ़िरों का ठिकाना नहीं (३२) और जो शख़्स सच्ची बात लेकर आया और जिसने उसकी तस्दीक की वही लोग मुत्तक्की हैं (३३) वह जो चाहेंगे उनके लिये उनके पर्वरदिगार के पास (मौजूद) है, नेकू कारों का यही बदला है (३४) ताकि ख़ुदा उनसे बुराईयों को जो उन्होंने कीं, दूर कर दे और नेक कामों का जो वह करते रहे बदला दे (३५) क्या ख़ुदा अपने बन्दों को काफ़ी नहीं, और यह तुमको उन लोगों से जो उसके सिवा हैं (यानी ग़ैर ख़ुदा से) डराते हैं और ख़ुदा जिसको गुमराह करे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं (३६) और जिस को ख़ुदा हिदायत दे, उसको कोई गुमराह करने वाला नहीं,

क्या ख़ुदा ग़ालिब (और) बदला लेने वाला नहीं है (३७) और अगर तुम उनसे पूछो कि आस्मानों और ज़मीन को किसने पैदा किया तो कह दें कि ख़ुदा ने, कहो कि भला देखो तो जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो, अगर ख़ुदा मुझ को कोई तकलीफ़ पहुंचानी चाहे तो क्या वह उस तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं या अगर मुझ पर मेहरबानी करना चाहे तो वह उस की मेहरबानी को रोक सकते हैं ? कह दो कि मुझे ख़ुदा ही काफ़ी है, भरोसा रखने वाले उसी पर भरोसा रखते हैं (३८) कह दो कि ऐ क़ौम तुम अपनी जगह पर अमल किये जाओ मैं (अपनी जगह) अमल किये जाता हूं, अन्क़रीब तुम को मालूम हो जायेगा (३९) कि किस पर अज़ाब आता है, जो उसे रुसवा करेगा और किस पर हमेशा का अज़ाब नाज़िल होता है (४०) हमने तुम पर किताब लोगों की (हिदायत) के लिये सच्चाई के साथ नाज़िल की है, तो जो शख़्स हिदायत पाता है तो अपने (भले के) लिये और जो गुमराह होता है, अपना ही नुक़सान करता है और (ऐ पैग़म्बर !) तुम उनके ज़िम्मेदार नहीं हो (४१)—रुकू ४

ख़ुदा लोगों के मरने के वक्त उनकी रुहें क़ब्ज कर लेता है और जो मरे नहीं, उनकी (रुहें) सोते में (क़ब्ज़ कर लेता है) फिर जिन पर मौत का हुक्म कर चुकता है उनको रोक रखता है और बाकी रुहों को एक वक्ते मुक़र्रंरा के लिये छोड़ देता है, जो लोग फ़िक्र करते हैं उनके लिये इसमें निशानियाँ हैं (४२) क्या उन्होंने ख़ुदा के सिवा और सिफ़ारिशी बना लिये हैं, कहो कि ख्वाह वह किसी चीज़ का भी अख़्तियार न रखते हों और न (कुछ) समझते हो हों (४३) कह दो कि सिफ़ारिश तो सब ख़ुदा ही के अख़्तियार में है उसी के लिये आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत है, फिर तुम उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे (४४) और जब तन्हा ख़ुदा का ज़िक्र किया जाता है तो जो

लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुन्क़बिज़ हो जाते हैं और जब उनके सिवा औरों का ज़िक्र किया जाता है तो ख़ुश हो जाते हैं (४५) कहो कि ऐ ख़ुदा (ऐ) आस्मानों और ज़मीन के पैदा करने वाले (और) पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले तू ही अपने बन्दों में इन बातों का जिन में वह इख़्तिलाफ़ करते रहे फ़ैसला करेगा (४६) और अगर ज़ालिमों के पास वह सब (मालो मत्ता) हो जो ज़मीन में है और उसके साथ उसी क़दर और हो तो क़यामत के रोज़ बुरे अज़ाब (से मुख़्लिसी पाने) के बदले में दे दें, और उन पर ख़ुदा की तरफ़ से वह अम्र ज़ाहिर हो जायेगा, जिसका उनको ख़्याल भी न था (४७) और उनके आमाल की बुराईयाँ उन पर ज़ाहिर हो जायेंगी और जिस अज़ाब की वह हंसी उड़ाते थे वह उनको आ घेरेगा (४८) जब इन्सान को तकलीफ़ पहुंचती है तो हमें पुकारने लगता है, फिर जब हम उसको अपनी तरफ़ से नैयमत बख़्शते हैं तो कहता है कि यह तो मुझे (मेरे) इल्म (व दानिश) के सबब मिली हैं नहीं) बल्कि वह आज़माईश है मगर इनमें से अक्सर नहीं जानते (४९) जो लोग उनसे पहले थे, वह भी यही कहा करते थे तो जो कुछ वह किया करते थे उनके कुछ भी काम न आया (५०) उन पर उनके आमाल के वबाल पड़ गये और जो लोग उनमें से ज़ुल्म करते हैं उन पर उनके अमलों के वबाल अन्क़रीब पड़ेंगे और वह (ख़ुदा को) आजिज़ नहीं कर सकते (५१) क्या उनको मालूम नहीं कि ख़ुदा ही जिसके लिये चाहता है रिज़्क़ को फ़राख़ कर देता है और (जिसके लिये चाहता है) तंग कर देता है, जो लोग ईमान लाते हैं उनके लिये इसमें (बहुत सी) निशानियाँ हैं (५२)—रुकू ५

(ऐ पैग़म्बर) मेरी तरफ़ से लोगों से कह दो कि ऐ मेरे

बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है, ख़ुदा की रहमत से ना उमीद न होना, ख़ुदा तो सब गुनाहों को बख़्श देता है (और) वह तो बख़्शने वाला मेहरबान है (५३) और इससे पहले कि तुम पर अज़ाब आ वाक़ैय हो अपने पर्वरदिगार की तरफ़ रजू करो और उसके फ़रमाँबर्दार हो जाओ, फिर तुमको मदद नहीं मिलेगी(५४)और इससे पहले कि तुम पर नागहाँ अज़ाब आ जाये और तुमको ख़बर भी न हो, इस निहायत अच्छी (किताब) की जो तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुई है, पैरवी करो (५५)कि (मुबादा उस वक्त) कोई भुतनफ़्फ़िस कहने लगे कि (हाय हाय) इस तक़सीर का अफ़सोस है जो मैंने ख़ुदा के हक़ में की, और मैं तो हंसी ही करता रहा (५६) या यह कहने लगे कि अगर ख़ुदा मुझको हिदायत देता, तो मैं भो परहेज़गारों में होता (५७) या जब अज़ाब देख ले तो कहने लगे कि अगर मुझे फिर एक बार दुनिया में जाना हो तो मैं नेकूकारों में हो जाऊं (५८) (ख़ुदा फ़रमायेगा) क्यों नहीं, मेरी आयतें तेरे पास पहुँच गई थीं, मगर तूने उनको झुठलाया और शेखी में आ लिया और तू काफ़िर बन गया (५९) और जिन लोगों ने ख़ुदा पर झूठ बोला तुम क़यामत के दिन देखोगे कि उनके मूंह काले हो रहे होंगे, क्या ग़रूर करने वालों का ठिकाना दोज़ख़ में नहीं है (६०) और जो परहेज़ार हैं उनकी (सआदत और) कामयाबी के सबब ख़ुदा उनको नजात देगा, न तो उनको कोई सख्ती पहुँचेगी और न वह ग़मनाक होंगे (६१) ख़ुदा ही हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वह ही हर चीज़ का निगरान है (६२) उसी के पास आस्मानों और ज़मीन की कुञ्जियाँ हैं और जिन्हों ने ख़ुदा की आयतों से कुफ़्र किया वही नुक़सान उठाने वाले हैं (६३)—रुकू ६

कह दो कि ऐ नादानो तुम मुझ से यह कहते हो कि मैं ग़ैर

ख़ुदा की परस्तिश करने लगूं (६४) और (ऐ मोहम्मद) तुम्हारी तरफ़ और उन (पैग़म्बरों) की तरफ़ जो तुम से पहले हो चुके हैं, यही वही भेजी गई हैं कि अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारे अमल बर्बाद हो जायेंगे, और तुम जियाँ कारों में हो जाओगे (६५) बल्कि ख़ुदा ही की इबादत करो और शुक्र गुज़ारों में रहो (६६) और इन्होंने ख़ुदा की क़दर शिनासी जैसी करनी चाहिये थी नहीं की और क़यामत के दिन तमाम ज़मीन उस की मुट्ठी में होगी और आस्मान उसके दाहिने हाथ में लिपटे होंगे और वह उन लोगों के शिर्क पाक और आलीशान है (६७) और जब सूर फूंका जायेगा तो जो लोग आस्मान में हैं और जो ज़मीन में हैं सब बे होश हो कर गिर पड़ेंगे, मगर जिसको ख़ुदा चाहे, फिर दूसरी दफ़ा फूंका जायेगा (तो) फ़ौरन सब खड़े हो कर देखने लगेंगे (६८) और ज़मीन अपने पर्वरदिगार के नूर से जग मगा उठेगी और आमाल की किताब (खोल कर) रख दी जायेगी और पैग़म्बर (और) और गवाह हाज़िर किये जायेंगे और उनमें इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया जायेगा और बेइन्साफ़ी नहीं की जायेगी (६९) और जिस शख़्स ने जो अमल किया होगा उसको उसका पूरा पूरा बदला मिल जायेगा और जो कुछ यह करते हैं, उसको सबकी ख़बर है (७०)—रुकू ७

और काफ़िरों को गिरोह गिरोह बना कर जहन्नुम की तरफ़ ले जायेंगे, यहाँ तक कि जब वह उसके पास पहुँच जायेंगे तो उसके दरवाज़े खोल दिये जायेंगे, तो उसके दारोग़ा उनसे कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम ही में से पैग़म्बर नहीं आये थे, जो तुमको तुम्हारे पर्वरदिगार की आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाते और उस दिन के पेश आने से डराते कहेंगे क्यों नहीं, लेकिन काफ़िरों के हक़ में अज़ाब का हुक्म मुस्तहक़ हो चुका था (७१)

कहा जायेगा कि दोज़ख के दरवाजों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उसमें रहोगे, तकब्बुर करने वालों का बुरा ठिकाना है (७२) और जो लोग अपने पर्वरदिगार से डरते हैं उनको गिरोह २ बनाकर बहिश्त की तरफ़ ले जायेंगे, यहाँ तक कि जब उसके पास पहुँच जायेंगे और उसके दरवाज़े खोल दिये जायेंगे तो उन के दारोग़ा उनसे कहेंगे कि तुम पर सलाम तुम बहुत अच्छे रहे, अब इसमें हमेशा के लिये दाख़िल हो जाओ (७३) वह कहेंगे कि ख़ुदा का शुक्र है जिसने अपने वायदे को हमसे सच्चा कर दिया और हमको उस ज़मीन का वारिस बना दिया हम बहिश्त में जिस मकान में चाहें रहें (तो अच्छे) अमल करने वालों का बदला भी कैसा खूब है (७४) और तुम फ़रिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्द घेरा बान्धे हुए हैं (और) अपने पर्वरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह कर रहे हैं और उनमें इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया जायेगा और कहा जायेगा कि हर तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही को सज़ावार हो वोही सारे जहानका मालिक है (७५)*--रुकू ८

४०—सूर–हे–अल मोमिन

यह सूरते मोमिन मक्के में उतरी और इसमें ८२ आयतें और ९ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

---

*आयत ७५: फ़रिश्तों में फ़ैसला है यह कि हर एक अपने क़ायदे पर एक तदबीर बोलता है फिर अल्लाह एक की बात जारी करता है, वही होती है हिकमत के मुवाफ़िक, यह माजरा अब भी है और क़यामत में भी।

हा-मी-न (१)※ इस किताब का उतारा जाना ख़ुदाये ग़ालिब व दाना की तरफ़ से है (२) जो गुनाह बख़्शने वाला और तौबा क़बूल करने वाला है और सख़्त अज़ाब देने वाला और साहिबे करम है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ फिर कर जाना है (३) ख़ुदा की आयतों में वही लोग झगड़ते हैं जो काफ़िर हैं तो उन लोगों का शहरों में चलना फिरना तुम्हें धोखेमें न डालदे (४) उनसे पहले नूह की क़ौम और उनके बाद और उम्मतों ने भी (पैग़म्बरों की) तकज़ीब की और हर उम्मत ने अपने पैग़म्बर के बारे में यही क़सद किया कि उसको पकड़ लें और बेहूदा (शुबहात से) झगड़ते रहे कि उससे हक़ को ज़ाईल कर दें, तो मैंने उनको पकड़ लिया (सो देख लो, मेरा अज़ाब कैसा हुआ (५) और इसी तरह काफ़िरों के बारे में भी तुम्हारे पर्वरदिगार की बात पूरी हो चुकी है कि वह अहले दोज़ख हैं (६) जो लोग अर्श को उठाये हुए और जो उसके गिर्दा गिर्द (हलक़ा बान्धे हुए) हैं, (यानी फ़रिश्ते) वह अपने पर्वरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहते हैं और मोमिनों के लिये बख्शिश माँगते रहते हैं कि ऐ हमारे पर्वरदिगार तेरी रहमत और तेरा इल्म हर चीज़ पर अहाता किये हुए है, तो जिन लोगों ने तौबा की और तेरे रस्ते पर चले उनको बख़्श दे और दोज़ख के अज़ाब से बचा ले (७) ऐ हमारे पर्वरदिगार ! उनको हमेशा रहने के बहिश्तों में दाख़िल कर जिनका तूने उनसे वायदा किया है और जो उनके बाप दादा और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से नेक हों उनको भी, बेशक तू ग़ालिब हिकमत वाला है (८) और उनको अज़ाबों से बचाये रख और जिसको तू उस रोज़

※आयत १:—यह हर्फ़ जुदा जुदा भेद हैं ख़ुदा ताला के और हज़रत सलम के दर्मियान

अज़ाबों से बचा लेगा तो बेशक उस पर मेहरबानी फ़रमाई और यही बड़ी कामयाबी है (९) — रुकू १

जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उनसे पुकार कर कह दिया जायेगा कि जब तुम (दुनिया में) ईमान की तरफ़ बुलाये जाते थे और मानते नहीं थे तो ख़ुदा उससे कहीं ज़्यादा बेज़ार होता था जिस क़दर तुम अपने आप से बेज़ार हो रहे हो (१०) वह कहेंगे कि ऐ हमारे पर्वरदिगार तूने हमको दो दफ़ा बेजान किया और दो दफ़ा जान बख़्शी हमको अपने गुनाहों का इक़रार है तो क्या निकलने की कोई सबील है (११) यह इसलिये कि जब तन्हा ख़ुदा को पुकारा जाता था तो तुम इन्कार कर देते थे और अगर उसके साथ शरीक मुक़र्रर किया जाता था तो तस्लीम कर लेते थे, तो हुक्म तो ख़ुदा ही का है जो (सब से) ऊपर और (सब से) बड़ा है (१२) वही तो है जो तुमको अपनी निशानियाँ दिखाता है और तुम पर आस्मान से रिज़्क़ उतारता है और नसीहत तो वही पकड़ता है जो (उस की तरफ़) रजू करता है (१३) तो ख़ुदा की इबादत को ख़ालिस कर कर उसी को पुकारो अगरचे काफ़िर बुरा ही जानें (१४) (वह) मालिके दर्जाते आली और साहिबे अर्श है अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपने हुक्म से वही भेजता है ताकि मुलाक़ात के दिन से डरावे (१५) जिस रोज़ वह निकल पड़ेंगे, उनकी कोई चीज़ ख़ुदा से मख़्फ़ी न रहेगी, आज किस की बादशाहत है ? ख़ुदा की जो अकेला (और) ग़ालिब है (१६) आज के दिन हर शख़्स को उसके आमाल का बदला दिया जायेगा आज (किसी के हाथ में) ना इन्साफ़ी नहीं होगी, बेशक ख़ुदा जल्द हिसाब लेने बाला है (१७) और उनको क़रीब आने वाले दिन से डराओ जबकि दिल ग़म से भर कर गलों तक आ रहे होंगे और ज़ालिमों का कोई दोस्त

नहीं होगा और न कोई सिफ़ारिशी जिसकी बात क़बूल की जाये (१८) वह आँखो की ख़यानत को जानता है और जो (बातें) सीनों में पोशीदा हैं, (उनको भी) (१९) और ख़ुदा सच्चाई के साथ हुक्म फ़रमाता है और जिनको यह लोग पुकारते हैं वह कुछ भी हुक्म नहीं दे सकते, बेशक ख़ुदा सुनने वाला (और) देखने वाला है (२०)—रुकू २

क्या उन्होंने ज़मीन में सैर नहीं की ताकि देख लेते कि जो लोग उनसे पहले थे उनका अन्जाम कैसा हुआ, वह इन से ज़ोर और ज़मीन में निशानात (बनाने) के लिहाज़ से कहीं बढ़कर थे तो ख़ुदा ने उनको उनके गुनाहों के सबब पकड़ लिया और उन को ख़ुदा (के अज़ाब) से कोई भी बचाने वाला न था (२१) यह इसलिये कि उनके पास पैग़म्बर खुली दलीलें लाते थे तो यह कुफ़्र करते थे, सो ख़ुदा ने उनको पकड़ लिया, बेशक वह साहिबे कुव्वत और सख़्त अज़ाब देने वाला है (२२) और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ और दलीले रोशन देकर भेजा (२३) (यानी) फ़िरऔन और हामां और क़ारुन की तरफ़, तो उन्होंने कहा कि यह तो जादूगर है झूठा (२४) ग़रज़ जब वह उनके पास हमारी तरफ़ से हक़ लेकर पहुंचे तो कहने लगे कि जो इस के साथ (ख़ुदा पर) ईमान लाये हैं उनके बेटों को क़त्ल कर दो और बेटियों को ज़िन्दा रहने दो और काफ़िरों की तदबीरें बे ठिकाने होती हैं (२५) और फ़िरऔन बोला कि मुझे छोड़ो कि मूसा को क़त्ल कर दूं, और वह अपने पर्वरदिगार को बुलाये, मुझे डर है कि वह (कहीं) तुम्हारे दीन को (न) बदल दे या मुल्क में फ़िसाद (न) पैदा कर दे (२६) मूसा ने कहा कि मैं हर मुतकब्बिर से जो हिसाब के दिन (यानी क़यामत) पर ईमान नहीं लाता, अपने और तुम्हारे पर्वरदिगार की पनाह ले चुका हूं (२७)—रकू ३

और फ़िरऔन के लोगों में से एक मोमिन शख्स जो अपने ईमान को पोशीदा रखता था कहने लगा, क्या तुम ऐसे शख्स को क़त्ल करना चाहते हो जो कहता है कि मेरा पर्वरदिगार खुदा है और तुम्हारे पास तुम्हारे पर्वरदिगार (की तरफ़) से निशानियाँ भी लेकर आया है, और अगर वह झूठा होगा तो उसके झूठ का ज़रर उसी को होगा और अगर सच्चा होगा तो कोई सा अज़ाब, जिसका वह तुम से वायदा करता है, तुम पर वाक़ैय होकर रहेगा बेशक ख़ुदा उस शख्स को हिदायत नहीं देता जो बे लिहाज़ झूठा हो (२८) ऐ क़ौम आज तुम्हारी ही बादशाहत है और तुम ही मुल्क में ग़ालिब हो (लेकिन) अगर हम पर ख़ुदा का अज़ाब आ गया तो (उसके दूर करने के लिये) हमारी मदद कौन करेगा, फ़िरऔन ने कहा कि मैं तुम्हें वही बात समझाता हूं जो मुझे सूझी है और वही राह बताता हूं जिसमें भलाई है (२९) तो जो मोमिन था कहने लगा कि ऐ क़ौम मुझे तुम्हारी निस्बत ख़ौफ़ है कि (मुबादा) तुम पर और उम्मतों की तरह के दिन का अज़ाब आ जाये (३०) (यानी) नूह की क़ौम और आद और समूद और जो लोग उनके पीछे हुए हैं, उनके हाल की तरह तुम्हारा (हाल न हो जाये) और ख़ुदा तो बन्दों पर ज़ुल्म करना नहीं चाहता (३१) और ऐ क़ौम ! मुझे तुम्हारी निस्बत पुकार के दिन (यानी क़यामत) का खौफ़ है (३२) जिस दिन तुम पीठ फेर कर (क़यामत के दिन से) भागोगे (उस दिन) तुमको कोई (अज़ाब) ख़ुदा से बचाने वाला न होगा और जिस शख्स को ख़ुदा गुमराह करे उसको कोई हिदायत देने वाला नहीं (३३) और पहले यूसुफ़ भी तुम्हारे पास निशानियाँ लेकर आये थे तो जो वह लाये थे उस से तुम हमेशा शक ही में रहे यहाँ तक कि जब वह फ़ौत हो गये तो तुम कहने लगे कि ख़ुदा इसके बाद कभी कोई पैग़म्बर नहीं भेजेगा, इसी तरह ख़ुदा

उस शख्स को गुमराह कर देता है जो हद से निकल जाने वाला और शक करने वाला हो (३४) जो लोग बग़ैर इसके कि उनके पास कोई दलील आई हो खुदा की आयतों में झगड़ते हैं, खुदा के नज़दीक और मोमिनों के नज़दीक यह झगड़ा सख्त ना पसन्द है, इसी तरह खुदा हर मुतकब्बिर सरकश के दिल पर मोहर लगा देता है (३५) और फ़िरऔन ने कहा कि हामां! मेरे लिये एक महल बनवा दो ताकि मैं (उस पर चढ़ कर) रस्तों पर पहुंच जाऊं (३६) (यानी) आस्मानों के रास्तों पर, फिर मूसा के खुदा को देख लूं और मैं तो उसे झूठा समझता हूं और इसी तरह फ़िरऔन को उसके आमाले बद अच्छे मालूम होते थे और वह रस्ते से रोक दिया गया था और फ़िरऔन की तदबीर तो बेकार थी (३७)--रुकू ४

और वह शख्स जो मोमिन था उसने कहा कि भाईयो! मेरे पीछे चलो मैं तुम्हें भलाई का रास्ता दिखाऊं (३८) भाईयो! यह दुनिया की ज़िन्दगी (चन्द रोज़) फ़ायदा उठाने की चीज़ है और जो आखिरत है वही हमेशा रहने का घर है (३९) जो बुरे काम करेगा उसको बदला भी वैसा ही मिलेगा और जो नेक काम करेगा, मर्द हो या औरत और वह साहिबे ईमान भी होगा तो ऐसे लोग बहिश्त में दाख़िल होंगे वहाँ उनको बेशुमार रिज़्क़ मिलेगा (४०) और ऐ क़ौम! मेरा क्या (हाल) है कि मैं तो तुमको नजात की तरफ़ बुलाता हूं और तुम मुझे (दोज़ख की) आग की तरफ़ बुलाते हो (४१) तुम मुझे इसलिये बुलाते हो कि खुदा के साथ कुफ्र करूं और उस चीज को उसका शरीक मुक़र्रर करूं जिसका मुझे कुछ भी इल्म नहीं और मैं तुमको (खुदाये) ग़ालिब (और) बख्शने वाले की तरफ़ बुलाता हूं (४२) सच तो यह है कि जिस चीज की तरफ़ तुम मुझे बुलाते हो उसको दुनिया

और आखिरत में बुलाने (यानी दुआ क़बूल करने) का मक़दूर नहीं और हम को ख़ुदा की तरफ़ लौटना है और हद से निकल जाने वाले दोज़खी हैं (४३) जो बात मैं तुम से कहता हूं तुम उसे आगे जाकर याद करोगे और मैं अपना काम ख़ुदा के सिपुर्द करता हूं, बेशक ख़ुदा बन्दों को देखने वाला है (४४) ग़रज ख़ुदा ने मूसा को उन लोगों की तदबीरों की बुराईयों से मेहफूज़ रखा और फ़िरऔन वालों को बुरे अज़ाब ने आ घेरा (४५) (यानी) आतिशे (जहन्नुम) कि सुब्ह व शाम उसके सामने पेश किये जाते हैं और जिस रोज़ क़यामत बर्पा होगी (हुक्म होगा कि) फ़िरऔन वालों को निहायत सख्त अज़ाब में दाखिल करो (४६) और जब दोज़ख में झगड़ेंगे तो अदना दर्जे के लोग बड़े आदमियों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे ताबैय थे तो क्या तुम दोज़ख (के अज़ाब) का कुछ हिस्सा हम से दूर कर सकते हो (४७) बड़े आदमी कहेंगे कि तुम भी और हम भी सब दोज़ख में (रहेंगे) ख़ुदा बन्दों का फ़ैसला कर चुका है (४८) और जो लोग आग में (जल रहे) होंगे वह दोज़ख के दारोग़ों से कहेंगे कि अपने पर्वरदिगार से दुआ करो कि एक रोज़ तो हम से अज़ाब हलका कर दे (४९) वह कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर निशानियां लेकर नहीं आये थे, वह कहेंगे क्यों नहीं, तो वह कहेंगे कि तुम ही दुआ करो और काफ़िरों की दुआ (उस रोज़) बेकार होगी (५०)—रुकू ५

हम अपने पैग़म्बरों की और जो लोग ईमान लाये हैं, उन की, दुनिया की ज़िन्दगी में भी मदद करते हैं और जिस दिन गवाह खड़े होंगे (यानी क़यामत को भी) (५१) जिस दिन ज़ालिमों को उनकी म्अाज़रत कुछ फ़ायदा न देगी और उन के लिये लानत और बुरा घर है (५२) और हमने मूसा को हिदायत (की किताब) दी और बनी इसराईल को उस किताब का वारिस

बनाया (५३) अक़्ल वालों के लिये इसमें हिदायत और नसीहत है (५४) तो सब्र करो बेशक ख़ुदा का वायदा सच्चा है और अपने गुनाहों की मआफ़ी माँगो और सुब्ह व शाम अपने पर्वरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहो (५५) जो लोग बग़ैर किसी दलील के जो उनके पास आई हो, ख़ुदा की आयतों में झगड़ते हैं उनके दिलों में और कुछ नहीं इरादऐ अज़मत है और वह उसको पहुंचने वाले नहीं, तो ख़ुदा की पनाह मांगो बेशक वह सुनने वाला और देखने वाला है (५६) आस्मानों और ज़मीन का पैदा करना लोगों के पैदा करने से बड़ा (काम) है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते (५७) और अन्धा और आँख वाला बराबर नहीं और न ईमान लाने वाले नेकूकार, और न बदकार (बराबर हैं) हक़ीक़त यह है कि तुम बहुत कम ग़ौर करते हो (५८) क़यामत आने वाली है इसमें कुछ शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं रखते (५९) और तुम्हारे पर्वरदिगार ने ईर्शाद फ़रमाया है कि तुम मुझसे दुआ करो, मैं तुम्हारी दुआ क़बूल करूँगा, जो लोग मेरी इबादत से अज़राहे तकब्बुर कतियाते हैं, अन्क़रीब जहन्नुम में ज़लील होकर दाख़िल होंगे (६०)—रुकू —६—

ख़ुदा ही तो है जिसने तुम्हारे लिये रात बनाई ताकि उसमें आराम करो, और दिन को रोशन बनाया (कि उसमें काम करो) बेशक ख़ुदा लोगों पर फ़ज़ल करने वाला है लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते (६१) यही ख़ुदा तुम्हारा पर्वरदिगार है जो हर चीज़ का पैदा करने वाला है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहां भटक रहे हो (६२) इसी तरह वह लोग भटक रहे थे जो ख़ुदा की आयतों से इन्कार करते थे (६३) ख़ुदा ही वोह है जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिये ठहरने की जगह और आस्मान

को छत बनाया और तुम्हारी सूरतें बनाई और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ें खाने को दीं, यही ख़ुदा तुम्हारा पर्वरदिगार है, पस ख़ुदाये पर्वरदिगारे आलम बहुत ही बाबरकत है (६४) वह ज़िन्दा है (जिसे मौत नहीं) उस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं तो उसकी इबादत को ख़ालिस कर कर उसी को पुकारो, हर तरह की तारीफ़ ख़ुदा ही को (सज़ावार) है, जो तमाम जहान का पर्वरदिगार है (६५) (ऐ मोहम्मद) इन से कह दो कि मुझे इस बात की मुमानियत की गई है कि जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो उनकी परस्तिश करूं (और मैं उन की क्यों कर परस्तिश करूं) जब कि मेरे पास मेरे पर्वरदिगार की तरफ़ से खुली दलीलें आ चुकी हैं और मुझको हुक्म यह हुआ है कि पर्वरदिगारे आलम ही का ताबैय फ़रमान हूं (६६) वोही तो है जिस ने तुमको (पहले) मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़ा बना कर, फिर लोथड़ा बना कर, फिर तुम को निकालता है (कि तुम) बच्चे (होते हो) फिर तुम अपनी जवानी को पहुंचते हो, फिर बूढ़े होजाते हो और कोई तो तुममें से पहले हीमर जाता है और तुम (मौत के वक़्ते मुक़र्रर तक पहुँच जाते हो और ताकि तुम समझो (६७) वही तो है जो जिलाता है और मारता है और फिर जब कोई काम करना (और किसी को पैदा करना) चाहता है तो उससे कह देता है कि हो जा तो वह हो जाता है (६८)—

रुकू —७—

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो ख़ुदा की आयतों में झगड़ते हैं यह कहाँ भटक रहे हैं (६९) जिन लोगों ने किताबे (ख़ुदा) को और जो कुछ हमने पैगम्बरों को दे कर भेजा, उसको झुटलाया, वह अन्क़रीब मालूम कर लेंगे (७०) जब कि उनकी गर्दनों में तौक़ और ज़न्जीरें होंगी (और) घसीटे जायेंगे (७१) (यानी खौलते हुए पानी में, फिर आग में झोंक दिये जायेंगे (७२)

फिर उनसे कहा जायेगा कि वह कहां हैं जिनको तुम (ख़ुदा के) शरीक बनाते थे (७३) (यानी ग़ैर ख़ुदा) कहेंगे वह तो हम से जाते रहे, बल्कि हम तो पहले किसी चीज़ को पुकारते ही नहीं थे इसी तरह ख़ुदा काफ़िरों को गुमराह करता है (७४) यह उसका बदला है कि तुम ज़मीन में हक के बग़ैर यानी उसके खिलाफ़) खुश हुआ करते थे और इस की (सज़ा है) कि तुम इतराया करते थे (७५) (अब) जहन्नुम के दरवाज़ों में दाखिल हो जाओ हमेशा उसी में रहोगे, मुतकाब्बिरों का क्या बुरा ठिकाना है (७६) तो (ए पैगम्बरो) सब्र करो, ख़ुदा का बायदा सच्चा है, अगर हम तुम को कुछ उस में से दिखा दें जिसका हम तुम से बायदा करते हैं (यानी काफ़िरों पर अज़ाब नाज़िल करें) या तुम्हारी मुद्दते हयात पूरी कर दें, तो उनको हमारी ही तरफ़ लौटकर आना है (७७) और हमने तुम से पहले (बहुत से) पैग़म्बर भेजे उनमें से कुछ तो ऐसे हैं जिनके हालात तुमसे बयान कर दिये हैं और कुछ ऐसे हैं जिनके हालात बयान नहीं किये, और किसी पैग़म्बर का मक़दूर न था, कि ख़ुदा के हुक्म के सिवा कोई निशानी लाये, फिर जब ख़ुदा का हुक्म आ पहुँचा तो इन्साफ़ के हाथ फ़ैसला कर दिया गया और अहले बातिल नुक़सान में पड़ गये (७८)—रुकू ८

ख़ुदा ही तो है जिसने तुम्हारे लिये चारपाये बनाये कि उनमें से बाज़ों पर सवार होते हो और बाज़ को तुम खाते हो (७९) और तुम्हारे लिये इनमें और भी फ़ायदे हैं और इस लिये भी कि (कहीं जाने की) तुम्हारे दिलों में जो हाजत हो इन पर (चढ़ कर) वहाँ पहुंच जाओ और इन पर और कश्तियों पर तुम सवार होते हो (८०) और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखा रहा है तो तुम ख़ुदा की किन किन निशानियों को न मानोगे

(८१) क्या इन लोगों ने जमीन में सैर नहीं की ताकि देखते कि जो लोग इनसे (पहले) थे उनका अन्जाम कैसा हुआ हालांकि वह इन से कहीं ज़्यादा ताक़तवर और ज़मीन में निशानात (बनाने) के ऐतबार से बहुत बढ़ चढ़ कर थे, तो जो कुछ वह करते थे वह उनके कुछ काम न आया ८२) और जब उनके पैग़म्बर उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आये तो जो इल्म अपने ख्याल में उनके पास था उस पर इतराने लगे और जिस चीज़ से तमस्खुर किया करते थे, उसने आ घेरा (८३) फिर जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया तो कहने लगे हम ख़ुदाये वाहिद पर ईमान लाये और जिस चीज़ को उसके साथ शरीक बनाते थे उस से ना मौतक़िद हो गये (८४) लेकिन जब वह हमारा अज़ाब देख चुके (उस वक्त) उनके ईमान ने उनको कुछ भी फ़ायदा न दिया (यह) ख़ुदा की आदत (है) जो उसके बन्दों (के बारे में) चली आती है और वहाँ काफ़िर घाटे में पड़ गये (८५)—रुकू ९

—०—

४१—सूर-हे-हामीम सज्दह

यह सूरत मक्के में उतरी, और इसमें ५४ आयतें और ६ रुकू हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

है, अलिफ़, मीम (१) (यह किताब ख़ुदाये) रहमान व रहीम (की तरफ़) से उतरी है(२) (ऐसी) किताब जिसकी आयतें वाज़ेह

(उलमग्रानी) हैं यानी) क़ुराने अरबी, उन लोगों के लिये जो समझ रखते हैं (३) जो बशारत भी सुनता है और खौफ भी दिलाता है, लेकिन इनमें से अक्सरों ने मूंह फेर लिया और वह सुनते ही नहीं (४) और कहते हैं कि जिस चीज़ की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, उससे हमारे दिल पर्दों में हैं और हमारे कानों में बोझ (यानी बेहरापन) है, और हमारे तुम्हारे दर्मियान पर्दा है तो तुम (अपना) काम करो, हम (अपना) काम करते हैं (५) कह दो कि मैं भी आदमी हूं, जैसे तुम (हाँ) मुझ पर यह वही आती है कि तुम्हारा मा़बूद ख़ुदाये वाहिद है तो सीधे उसी की तरफ़ (मुत्तवज्जोह) रहो और उसी से मग़फ़िरत मांगो, और मुश्रिकों पर अफ़सोस है (६) जो ज़कात नहीं देते और आख़िरत के भी क़ायल नहीं (७) जो लोग ईमान लाये और अमल नेक करते रहे, उनके लिये (ऐसा) सवाब है जो ख़त्म ही न हो (८) कहो क्या तुम इस से इन्कार करते हो, जिसने ज़मीन को दो दिन में पैदा किया और (बुतों को) उसका मद्दे मुक़ाबिल बनाते हो, वही तो सारे जहान का मालिक है (९)—रुकू १

और उसी ने ज़मीन में उसके ऊपर पहाड़ बनाये और ज़मीन में बरकत रखी, और उस में सब सामाने मआशियत मुक़र्रर किया (सब) चार दिन में (और तमाम) तलबगारों के लिये यकसाँ (१०) फिर आस्मान की तरफ़ मुत्तवज्जोह हुआ और वह धुआं था तो उसने उससे और ज़मीन से फ़रमाया कि दोनों आओ (ख़्वाह) ख़ुशी से, ख़्वाह ना ख़ुशी से, उन्होंने कहा कि हम ख़ुशी से आते हैं (११) फिर दो दिन में सात आस्मान बनाये और हर आस्मान में उस (के काम) का हुक्म भेजा और हमने आस्माने दुनिया को चिराग़ों (यानी) (सितारों से) मुज़ैय्यन किया और (शैतानों से) महफ़ूज़ रखा, यह ज़बरदस्त

(और) ख़बरदार के (मुक़र्रर किये हुए) अन्दाजे हैं (१२) फिर अगर यह मूंह फेर लें तो कह दो कि मैं तुम को ऐसे चिन्घाड़ (के अज़ाब) से आगाह करता हूं जैसे आद और समूद पर चिन्घाड़ का (अज़ाब आया था) (१३) जब उनके पास पैग़म्बर उनके आगे पीछे से आये कि ख़ुदा के सिवा (किसी की) इबादत न करो कहने लगे कि अगर हमारा पर्वरदिगार चाहता तो फ़रिश्ते उतार देता, सो जो तुम देकर भेजे गये हो, हम इसको नहीं मानते (१४) जो आद थे वह नाहक़ मुल्क में ग़रूर करने लगे और कहने लगे कि हम से बढ़ कर क़ुव्वत में कौन है ? क्या उन्होंने नहीं देखा कि ख़ुदा जिस ने उन को पैदा किया, वह उनसे कुव्वत में बहुत बढ़कर है, और वह हमारी आयतों से इन्कार करते रहे, तो हमने भी उन पर नहूसत के दिनों में ज़ोर की हवा चलाई, ताकि उनको दुनिया की ज़िन्दगी में ज़िल्लत के अज़ाब का मज़ा चखा दें और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत ही ज़लील करने वाला है और (उस रोज़) उनको मदद भो न मिलेगी (१६) और जो समूद थे, उनको हम ने सोधा रस्ता दिखा दिया था, मगर उन्होंने हिदायत के मुक़ाबिले में अन्धा धुन्द रहना पसन्द किया, तो उनके आमाल की सज़ा में कड़क ने उनको आ पकड़ा और वह ज़िल्लत का अज़ाब था (१७) और जो ईमान लाये और परहेज़गारी करते रहे, उन को हमने बचा लिया (१८)—रुकू २

और जिस दिन ख़ुदा के दुश्मन दोज़ख़ की तरफ़ चलाये जायेंगे तो तर्तीबवार कर लिये जायेंगे (१९) यहां तक कि जब उसके पास पहुंच जायेंगे तो उनके कान और आँखें और चमड़े (यानी दूसरे आज़ा) उनके ख़िलाफ़ उनके आमाल की शाहदत देंगे (२०) और वह अपने चमड़ों (यानी आज़ा) से कहेंगे कि तुमने हमारे ख़िलाफ़ क्यों शहादत दी ? वह कहेंगे कि जिस

ख़ुदा ने सब चीज़ों को नुत्क़ बख़्शा उसी ने हमको भी गोयाई दी और उसी ने तुमको पहली बार पैदा किया था और उसी की तरफ़ तुमको लौट कर जाना है (२१) और तुम इस (बात के खौफ़) से तो पर्दा नहीं करते थे कि "तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और चमड़े तुम्हारे खिलाफ़ शाहदत देंगे बल्कि तुम यह ख्याल करते थे कि ख़ुदा को तुम्हारे बहुत से अमलों की ख़बर ही नहीं (२२) और इसी ख्याल ने जो तुम अपने पर्वरदिगार के बारे में रखते थे तुम को हलाक कर दिया और तुम खसारा पाने वालों में हो गये (२३) अब अगर यह सब्र करेंगे तो इनका ठिकाना दोज़ख है और अगर तौबा करेंगे तो इनकी तौबा क़बूल नहीं की जायेगी (२४) और हमने (शैतानों को) इनका हम-नशीन मुक़र्रर कर दिया था, तो उन्होंने उनके अगले और पिछले आमाल उनको उमदा कर दिखाये थे और जिन्नात और इन्सानों की जमायतें जो उनसे पहले गुज़र चुकीं, उन पर भी ख़ुदा (के अज़ाब) का वायदा पूरा हो गया, बेशक यह नुक़सान उठाने वाले हैं (२५)--रुकू ३

और काफ़िर कहने लगे कि इस क़ुरान को सुना ही न करो और (जब पढ़ने लगें तो) शोर मचा दिया करो ताकि तुम ग़ालिब रहो (२६) सो हम भी काफ़िरों को सख़्त अज़ाब के मज़े चखायेंगे और उनके बुरे अमलों की जो वह करते थे सज़ा देंगे २७) यह ख़ुदा के दुश्मनों का बदला है (यानी) दोज़ख उनके लिये, उसी में हमेशा का घर है, यह इस की सज़ा है कि हमारी आयतों से इन्कार करते थे (२८) और काफ़िर कहेंगे कि ऐ हमारे पर्वरदिगार जिन्नो और इन्सानों में से जिन लोगों ने हमको गुमराह किया था उनको हमें दिखा ताकि हम उनको अपने पाँव तले (रौंद) डालें ताकि वह निहायत ज़लील हों

(२९) जिन लोगों ने कहा कि हमारा पर्वरदिगार ख़ुदा है फिर वह (उस पर) क़ायम रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरेंगे (और कहेंगे) कि न ख़ौफ़ करो और न ग़मनाक हो और बहिश्त की, जिसका तुम से वायदा किया जाता था ख़ुशी मनाओ (३०) हम दुनिया की ज़िन्दगी में भी तुम्हारे दोस्त थे और आख़िरत में भी (तुम्हारे रफ़ीक़ हैं) और वहाँ जिस (नैयमत) को तुम्हारा जी चाहेगा तुम को (मिलेगी) और जो चीज़ तलब करोगे, तुम्हारे लिये (मौजूद होगी) (३१) (यह) बख़्शने वाले मेहरबान की तरफ़ से मेहमानी है (३२) और उस शख़्स से बात का अच्छा कौन हो सकता है जो ख़ुदा की तरफ़ बुलाये और अमल नेक करे और कहे कि मैं मुस्लम न हूं (३३) और भलाई और बुराई बराबर नहीं हो सकती तो (सख़्त कलामी का) ऐसे तरीक़ से जवाब दो जो बहुत अच्छा हो (ऐसा करने से तुम देखोगे) कि जिसमें और तुम में दुश्मनी थी गोया वह तुम्हारा गर्म जोश दोस्त है (३४) और यह बात उन ही लोगों को हासिल होती है जो बर्दाश्त करने वाले हैं, और उन ही को नसीब होती है जो बड़े साहिबे नसीब हैं (३५)—रुकू ४

और अगर तुम्हें शैतान की जानिब से कोई वसवसा पैदा हो तो ख़ुदा की पनाह मांग लिया करो, बेशक वह सुनना जानता है (३६) और रात और दिन और सूरज और चान्द उस की निशानियों से हैं, तुम लोग न तो सूरज को सज्दह करो और न चान्द को, बल्कि ख़ुदा ही को सज्दह करो जिसने इन चीज़ों को पैदा किया है अगर तुमको उसकी इबादत मन्ज़ूर है (३७) अगर यह लोग सरकशी करें तो (ख़ुदा को भी इन की पर्वाह नहीं) जो (फ़रिश्ते) तुम्हारे पर्वरदिगार के पास हैं, वह रात दिन उस की तस्बीह करते रहते हैं और (कभी) थकते ही नहीं (३८) और (ऐ बन्दे यह) उसी की क़ुदरत के नमूने हैं कि तू ज़मीन को

दबी हुई (यानी) खुश्क देखता है, जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं तो शादाब हो जाती और फूलने लगती है, तो जिसने ज़मीन को ज़िन्दा किया वही मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है (३६) जो लोग हमारी आयतों में कजराही करते हैं, वह हम से पोशीदः नहीं हैं भला जो शख्स दोज़ख में डाला जाये वह बेहतर है या वह जो क़यामत के दिन अम्नो अमान से आये (तो खैर) जो चाहो सो कर लो, जो कुछ तुम करते हो वह उसको देख रहा है (४०) जिन लोगों ने नसीहत को न माना जब वह उनके पास आई, और यह तो एक आली रुतबा किताब है (४१) इस पर झूठ का दखल न आगे से हो सकता है न पीछे से (और) दाना (और) खूबियों वाले (खुदा) की उतारी हुई है (४२) तुम से वही बातें कहीं जाती हैं जो तुम से पहले और पैग़म्बरों से कही गई थीं बेशक तुम्हारा पर्वरदिगार बख्श देने बाला भी है और अज़ाबे अलीम देने वाला भी है (४३) और अगर हम इस क़ुरान को ग़ैर ज़बाने अरब में नाज़िल करते तो यह लोग कहते कि इस की आयतें (हमारी ज़बान में) क्यों खोल कर बयान नहीं की गईं क्या (खूब कि क़ुरान तो) अजमी और (मुखातिब) अरबी, कह दो कि जो ईमान लाते हैं उनके लिये (यह) हिदायत और शिफ़ा है और जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में गरानी (यानी बेहरापन) है और यह उनके हक़ में (मूजिबे) ना बीनाई है, गरानी के सबब उनको (गोया) दो जगह से आवाज़ दी जाती है (४४)—रुकू ५

और हमने मूसा को किताब दी तो उसमें इख्तिलाफ़ किया गया और अगर तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से एक बात पहले न ठैहर चुकी होती तो उन में फ़ैसला कर दिया जाता, और यह इस (क़ुरान) से शक में उलझ रहे हैं (४५) जो नेक काम करेगा

तो अपने लिये और जो बुरे काम करेगा तो उन का ज़रर उसी को होगा और तुम्हारा पर्वरदिगार बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं

पच्चीसवाँ पारा—इलैहे युरद्दु—

(४६) क़यामत के इल्म का हवाला उसी को तरफ़ दिया जाता है (यानी क़यामत का इल्म उसी को है) और न तो फल गाभों से निकलते हैं और न कोई और माद्दा हामिला होती और न जनती है मगर उसके इल्म से और जिस दिन वह उनको पुकारेगा (और कहेगा) कि मेरे शरीक कहाँ है तो वह कहेंगे कि हम तुझ से अर्ज़ करते हैं कि हम में से किसी को (उनकी) खबर ही नहीं (४७) और जिन को पहले वह (ख़ुदा के सिवा) पुकारा करते थे (सब) उनसे ग़ायब हो जायेंगे और वह यक़ीन कर लेंगे कि उनके लिये मुख्लिसी नहीं(४८)इन्सान भलाई की दुआयें करता करता तो थकता नहीं और अगर तकलीफ़ पहुंच जाती है तो ना उमीद हो जाता और आस तोड़ बैठता है (४९) और अगर तकलीफ़ पहुंचने के बाद हम उसको अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं तो कहता है यह तो मेरा हक़ था और मैं नहीं ख्याल करता कि क़यामत बर्पा हो और अगर (क़यामत सच भी हो और) मैं अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौटाया भी जाऊँ तो मेरे लिये उसके पास भी खुशहाली है, पस काफ़िर जो अमल किया करते हैं वह हम उनको ज़रूर जितायेंगे, और उनको सख्त अज़ाब का मज़ा चखायेंगे (५०) और जब हम इन्सान पर करम करते हैं तो मूंह मोड़ लेता है और पहलू फेर कर चल देता है और जब उसको तकलीफ़ पहुंचती है तो लम्बी लम्बी दुआयें

करने लगता है (५१) कहो कि भला देखो तो अगर यह(क़ुरान) ख़ुदा की तरफ़ से हो, फिर तुम इससे इन्कार करो, तो इससे बढ़कर कौन गुमराह है जो हक़ की परले दर्जे की मुख़ालिफ़त में हो (५२) हम अन्क़रीब उनको अतराफ़े (आलम) में भी और ख़ुद उनकी ज़ात में भी निशानियाँ दिखायेंगे, यहाँ तक कि उन पर ज़ाहिर हो जायेगा कि(क़ुरान)हक़ है, क्या तुमको यह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा पर्वरदिगार हर चीज़ से ख़बरदार है (५३) देखो यह अपने पर्वरदिगार के रुबरु हाज़िर होने से शक में हैं सुन रखो कि वह हर चीज़ पर अहाता किये हुए है (५४)–रुकू ६

—०—

४२—सूर–हे–अल शूरा

सूरते शूरा मक्के में उतरी, और इसमें ५३ आयतें और ५ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हा–म (१) ऐन-सीन–क़ाफ़ (२) ख़ुदाये ग़ालिब व दाना इसी तरह तुम्हारी तरफ़ मज़ामीन (और) (बुराहीन) भेजता है जिस तरह तुम से पहले लोगों की तरफ़ वही भेजता रहा है (३) जो कुछ आस्मानों और जो कुछ ज़मीन में है, सब उसी का है और वह आली रुतबा और गरामो क़दर (४) क़रीब है कि आस्मान ऊपर से फट पड़े और फ़रिश्ते अपने पर्वरदिगार की तारीफ़के साथ उसकी तस्बीह करते रहते हैं और जो लोग ज़मीन में हैं उनके लिये माफ़ी मांगते रहते हैं सुन रखो कि ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (५) और जिन लोगों ने उसके सिवा कार-

साज़ बना रखे हैं वह ख़ुदा को याद हैं और तुम उन पर दारोग़ा नहीं हो (६) और इसी तरह तुम्हारे पास क़ुरान अरबी भेजा है ताकि तुम बड़े गाँव (यानी मक्के) के रहने वालों को और जो लोग उसके इर्द गिर्द रहते हैं उनको रस्ता दिखाओ और उन्हें क़यामत के दिन का भी, जिसमें कुछ शक नहीं है, खौफ़ दिलाओ, उस रोज़ एक फ़रीक़ बहिश्त में होगा और एक फ़रीक़ दोज़ख में (७) और अगर ख़ुदा चाहता तो उन को एक ही जमायत कर देता लेकिन वह जिसको चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है और ज़ालिमों का न कोई यार है और न मददगार (८) क्या उन्होंने उसके सिवा कारसाज़ बनाये हैं, कारसाज़ तो ख़ुदा ही है और वही मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है (९)—रुकू १

और तुम जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते हो उस का फ़ैसला ख़ुदा की तरफ़ (से होगा) यही ख़ुदा मेरा पर्वरदिगार है, मैं उसी पर भरोसा रखता हूं और उसी की तरफ़ रजू करता हूं (१०) आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला (वही है) उसी ने तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स के जोड़े बनाये और चार पायों के भी जोड़े (बनाये और) उसी तरीक़ पर तुम को फैलाता रहता है, उस जैसी कोई चीज़ नहीं और वह देखता सुनता है (११) आस्मानों और जमीन की कुञ्जियां उसी के हाथ में हैं, वह जिसके लिये चाहता है रिज़्क़ फ़राख कर देता है और (जिस के लिये चाहता है) तंग कर देता है, बेशक वह हर चीज़ से वाक़िफ़ है (१२, उसने तुम्हारे लिये दीन का वही रस्ता मुक़र्रर किया जिस (के अख़्तियार करने का) नूह को हुक्म दिया था और जिस की (ऐ मोहम्मद) हमने तुम्हारी तरफ़ वही भेजी है और जिसका इब्राहीम और मूसा और ईसा को हुक्म दिया था

(वह) के दीन को क़ायम रखना और उसमें फूट न डालना, जिस चीज़ की तरफ़ तुम मुश्रिकों को बुलाते हो वह उन को दुश्वार गुज़रती है, अल्लाह जिसको चाहता है अपनी बारगाह का बरगज़ीदा कर लेता है और जो उसकी तरफ़ रजू करे उसे अपनी तरफ़ रस्ता दिखा देता है (१३) और यह लोग जो अलग अलग हुए हैं तो इल्म (हक़) आ चुकने के बाद आपस की ज़िद (से हुए हैं) और अगर तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से एक वक़्ते मुक़र्रर तक के लिये बात न ठहर चुकी होती तो उनमें फ़ैसला कर दिया जाता और जो लोग उनके बाद (ख़ुदा की) किताब के वारिस हुए वह उस (की तरफ़) से शुब्हे की उलझन में (फंसे हुए) हैं (१४) तो (ऐ मोहम्मद) उसी (दीन की) तरफ़ (लोगों को) बुलाते रहना और जैसा तुम को हुक्म हुआ है (उसी पर) क़ायम रहना और उनकी ख़्वाहिशों की पैरवी न करना और कह दो कि जो किताब ख़ुदा ने नाज़िल फ़रमाई है, मैं उस पर ईमान रखता हूं और मुझे हुक्म हुआ है कि तुम में इन्साफ़ करूं और ख़ुदा ही हमारा और तुम्हारा पर्वरदिगार है, हमको हमारे आमाल (का बदला मिलेगा) और तुमको तुम्हारे आमाल का, हम में और तुम में कुछ बहसो तकरार नहीं, ख़ुदा हम (सब) को इकट्ठा करेगा और उसी की तरफ़ लौटकर जाना है (१५) और जो लोग ख़ुदा (के बारे) में बाद इसके कि उसे (मोमिनों ने) मान लिया हो, झगड़ते हैं, उनके पर्वरदिगार के नज़दीक उनका झगड़ा लग्व है और उन पर (ख़ुदा का) ग़ज़ब और उनके लिये सख़्त अज़ाब हैं (१६) ख़ुदा ही तो है जिसने सच्चाई के साथ किताब नाज़िल फ़रमाई और (अदलो इन्साफ़ की) तराज़ू और तुमको क्या मालूम, शायद क़यामत क़रीब ही आ पहुंची हो (१७) जो लोग उस पर ईमान नहीं रखते वह उस के लिये जल्दी कर रहे हैं और जो मोमिन हैं वह उस से डरते हैं

और जानते हैं कि वह बरहक़ है, देखो जो लोग क़यामत में झगड़ते हैं वह परले दर्जे की गुमराही में हैं (१८) ख़ुदा अपने बन्दों पर मेहरबान है वह जिसको चाहता है रिज़्क़ देता है वह ज़ोर वाला (और) ज़बरदस्त है (१९)—रुकू २

जो शख़्स आख़िरत की खेती का ख्वास्तगार हो हम उसको उसमें से दे देंगे और जो दुनिया की खेती का ख्वास्तगार हो उस को हम उस में से दे देंगे और उसका आख़िरत में कुछ हिस्सा न होगा (२०) क्या वह उनके शरीक हैं जिन्होंने उनके लिये ऐसा दीन मुक़र्रर किया है जिसका ख़ुदा ने हुक्म नहीं दिया और अगर फ़ैसले के (दिन) का वायदा न होता तो उनमें फ़ैसला कर दिया जाता और जो ज़ालिम हैं उनके लिये दर्द देने वाला अज़ाब है (२१) तुम देखोगे कि ज़ालिम अपने आमाल (के वबाल) से डर रहे होंगे और वह उन पर पड़ कर रहेगा और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे वह बहिश्त के बागों में होंगे वह जो कुछ चाहेंगे उनके लिये उनके पर्वरदिगार के पास (मौजूद) होगा, यही बड़ा फ़ज़ल है (२२) यही वह इनाम है) जिस की ख़ुदा अपने बन्दों को जो ईमान लाते और नेक अमल करते हैं, बशारत देता है, कह दो कि मैं इसका तुम से सिला नहीं माँगता मगर (तुम को) क़राबत की मोहब्बत (तो चाहिये) और जो कोई नेकी करेगा हम उसके लिये उसमें सवाब बढ़ायेंगे, बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला क़दरदान है (२३) क्या यह लोग कहते हैं कि पैग़म्बर ने ख़ुदा पर झूठ बान्ध लिया, अगर ख़ुदा चाहे तो (ऐ मोहम्मद) तुम्हारे दिल पर मोहर लगा दे और ख़ुदा झूठ को नाबूद करता और अपनी बातों से हक़ को साबित करता है, बेशक वह सीने तक की बातों से वाक़िफ़ है (२४) और यही तो है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता और (उनके)

क़सूर माफ़ फ़रमाता है और जो तुम करते हो (सब) जानता है (२५) और जो ईमान लाये और अमल नेक किये, उनकी (दुआ) क़बूल फ़रमाता है और उनको अपने फ़ज़ल से बढ़ाता है, और जो काफ़िर हैं उनके लिये सख़्त अज़ाब है (२६) और अगर ख़ुदा अपने बन्दों के लिये रिज़क़ में फ़राख़ी कर देता तो ज़मीन में फिसाद करने लगते लेकिन वह जो चीज़ चाहता है, अन्दाज़ा के साथ नाज़िल करता है, बेशक वह अपने बन्दों को जानता और देखता है (२७) और वही तो है जो लोगों के ना उमीद हो जाने के बाद मैंह बरसाता है और अपनी रहमत (यानी) बारिश की बरकत को फ़ैला देता है और वह कारसाज़ और सज़ावारे तारीफ़ है (२८) और उसी की निशानियों में से है आस्मानों और ज़मीन का पैदा करना और उन जानवरों का जो उसने इन में फैला रखे हैं और वह जब चाहे उनके जमा कर लेने पर क़ादिर है (२९)—रुकू ३

और जो मुसीबत तुम पर वाक़ेय होती है, सो तुम्हारे अपने फ़ेलों से, और वह बहुत से गुनाह तो माफ़ ही कर देता है (३०) और तुम ज़मीन में (ख़ुदा को) आजिज़ नहीं कर सकते और ख़ुदा के सिवा न कोई तुम्हारा दोस्त है और न मददगार (३१) और उसी की निशानियों में से समन्दर के जहाज़ हैं (जो) गोया पहाड़ हैं (३२) और अगर ख़ुदा चाहे तो हवा को ठैहरा दे और जहाज़ उस की सतैह पर खड़े रह जायें, तमाम सब्र और शुक्र करने वालों के लिये इन (बातों) में क़ुदरते ख़ुदा के नमूने हैं (३३) या उनके आमाल के सबब उनको तबाह कर दे और बहुत से क़सूर माफ़ कर दे (३४) और (इन्तक़ाम इसलिये लिया जावे कि) जो लोग हमारी आयतों में झगड़ते हैं वह जान लें कि उनके लिये ख़लासी नहीं (३५) (लोगो) जो माल (व मता)

तुम को दिया गया है वह दुनिया की ज़िन्दगी का (नापायदार) क़ायदा है और जो कुछ ख़ुदा के हाँ है, वह बेहतर और क़ायम रहने वाला है (यानी) उन लोगों के लिये जो ईमान लायें और अपने पर्वरदिगार पर भरोसा रखते हैं (३६) और जो बड़े बड़े गुनाहों और बे हयाई की बातों से परहेज़ करते हैं और जब गुस्सा आता है तो माफ़ कर देते हैं (३७) और जो अपने पर्वरदिगार का फ़रमान क़बूल करते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं और अपने काम आपस के मशवरे से करते हैं और जो माल हमने उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं (३८) और जो ऐसे हैं कि जब उन पर ज़ुल्मोतआद्दी हो तो (मुनासिब तरीक़े से) बदला लेते हैं (३९) और बुराई का बदला तो उसी तरह की बुराई है मगर जो दरगुज़र करे और (मामले को) दुरुस्त कर दे, तो उसका बदला ख़ुदा के ज़िम्मे है, इसमें शक नहीं कि वह ज़ुल्म करने वालों को पसन्द नहीं करता (४०) और जिस पर ज़ुल्म हुआ हो अगर वह उसके बाद इन्तक़ाम ले तो ऐसे लोगों पर कुछ इल्ज़ाम नहीं (४१) इल्ज़ाम तो उन लोगों पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और मुल्क में नाहक़ फ़िसाद फैलाते हैं, यही लोग हैं जिन को तकलीफ़ देने वाला अज़ाब होगा (४२) और जो सब्र करे और क़सूर माफ़ करदे तो यह हिम्मत के काम हैं (४३)—रुकू ४

और जिस शख्स को ख़ुदा गुमराह करे तो उसके बाद उस का कोई दोस्त नहीं और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वह (दोज़ख का) अज़ाब देखेंगे तो कहेंगे क्या (दुनिया में) वापिस जाने की भी कोई सबील है ? (४४) और तुम उनको देखोगे कि दोज़ख के सामने लाये जायेंगे, ज़िल्लत से आजज़ी करते हुए छुपी (और नीची) निगाह से देख रहे होंगे, और मोमिन लोग

कहेंगे कि ख़सारा उठाने वाले तो वह हैं जिन्होंने क़यामत के दिन अपने आप को और अपने घर वालों को खसारे में डाला देखो कि बे इन्साफ़ लोग हमेशा के दुख में (पड़े) रहेंगे (४५) और ख़ुदा के सिवा उनके कोई दोस्त न होंगे कि ख़ुदा के सिवा उनको मदद दे सकें, और जिसको ख़ुदा गुमराह करे उसके लिये (हिदायत) का कोई रस्ता नहीं (४६) (उन से कह दो) क़ब्ल इसके कि वह दिन जो टलेगा नहीं, ख़ुदा की तरफ़ से आ मौजूद हो, अपने पर्वरदिगार का हुक्म क़बूल करो, उस दिन तुम्हारे लिये न कोई जायेपनाह होगी और न तुम से गुनाहों का इन्कार ही बन पड़ेगा (४७) फिर अगर यह मूंह फेर लें तो हमने तुमको उन पर निगेहबान बना कर नहीं भेजा, तुम्हारा काम तो सिर्फ़ (एहकाम का) पहुँचा देना है और जब हम इन्सान को अपनी रहमत कामज़ा चखाते हैं तो वहउससे खुशहो जाता है और अगर उनको उनके आमालके सबब कोई सख्ती पहुंचती है तो(सब एहसानों को भूल जाते हैं) बेशक इन्सान बड़ा ना शुक्रा है (४८) (तमाम) बादशाहत ख़ुदा ही को है, आस्मानों की भी और ज़मीन की भी, वह जो चाहता है पैदा करता है, जिसे चाहता है बेटियाँ अता करता है और जिसे चाहता है बेटे बख्शता है (४९) या उनको बेटे और बेटियाँ दोनों इनायत फ़रमाता है और जिसको चाहता है बे औलाद रखता है, वह तो जानने वाला और कुदरत वाला है (५०) और किसी आदमी के लिये मुमकिन नहीं कि ख़ुदा उस से बात करे मगर इल्हाम (के ज़रिये) से या पर्दे के पीछे से या कोई फ़रिश्ता भेज दे तो वह ख़ुदा के हुक्म से जो ख़ुदा चाहे अल्क़ा करे, बेशक वह आली रुतबा (और) हिकमत वाला है (५१) और इसी तरह हमने हुक्म से तुम्हारी तरफ़ रुह उल कुदस के ज़रिये (क़ुरान) भेजा है, तुम न तो किताब को जानते थे और न ईमान को, लेकिन हमने इसको नूर बनाया है

कि इस में हम अपने बन्दों में से जिसको चाहते हैं हिदायत करते हैं, और बेशक (ऐ मोहम्मद) तुम सीधा रस्ता दिखाते हो (५२) (यानी) ख़ुदा का रस्ता जो आस्मानों और ज़मीन की सब चीज़ों का मालिक है, देखो सब काम ख़ुदा की तरफ़ रजू होंगे (और वही उनमें फ़ैसला करेगा) (५३)—रुकू ५

—०—

४३—सूर–हे–अल ज़ुख़रुफ़

सूरते ज़ुख़रुफ़ मक्के में उतरी और इसमें ८९ आयतें और ७ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

हा, मीम (१) किताबे रोशन की क़सम (२) कि हम ने इस को क़ुरान अरबी बनाया है ताकि तुम समझो (३) और यह बड़ी किताब (यानी लौहे मेहफ़ूज़) में हमारे पास (लिखी हुई और) बड़ी फ़ज़ीलत और हिकमत वाली है (४) क्या इसलिये कि तुम हद से निकले हुए लोग हो, हम तुम को नसीहत करने से बाज़ रहेंगे (५) और हमने पहले लोगों में से पैग़म्बर भेजे थे (६) और कोई पैग़म्बर उनके पास नहीं आता था, मगर वह उस से तमस्खुर करते थे (७) तो उनमें सख़्त ज़ोर वाले थे उन को हमने हलाक कर दिया और अगले लोगों की हालत गुज़र गई (८) और अगर तुम उनसे पूछो कि आस्मानों और ज़मीन को किसने पैदा किया तो वह कहेंगे कि उनको ग़ालिब और इल्म वाले (ख़ुदा) ने पैदा किया है (९) जिसने तुम्हारे लिये

ज़मीन को बिछौना बनाया और उसमें तुम्हारे लिये रस्ते बनाये ताकि तुम राह मालूम करो (१०) और जिसने एक अन्दाज़े के साथ आस्मान से पानी नाज़िल किया, फिर हमने उस से शहरे मुर्दा को ज़िन्दा कर दिया, इसी तरह तुम (ज़मीन से) निकाले जाओगे (११) और जिसने तमाम क़िसम के हैवानात पैदा किये और तुम्हारे लिये कश्तियाँ और चारपाये बनाये जिन पर तुम सवार होते हो (१२) ताकि तुम उनकी पीठ पर चढ़ बैठो और जब उस पर बैठ जाओ, फिर अपने पर्वरदिगार के एहसान को याद करो और कहो कि वह (ज़ाते) पाक है, जिस जिसने इस को हमारे ज़ेरे फ़रमान कर दिया, और हम में ताक़त न थी कि इसको बस में कर लेते (१३) और हम अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं (१४) और उन्होंने उसके बन्दों में से उसके लिये औलाद मुकर्रर की, बेशक इन्सान सरीह ना शुक्रा है (१५)—रुकू १

क्या उसने अपनी मख़लूक़ात में से ख़ुद तो बेटियाँ लीं और तुम को चुन वर बेटे दिये (१६) हालांकि जब उनमें से किसी को इस चीज़ की ख़ुशख़बरी दी जाती है जो उन्होंने ख़ुदा के लिये बयान की है तो उसका मूंह सियाह हो जाता और वह ग़म से भर जाता है (१७) क्या वह जो ज़ेवर में परवरिश पाये और झगड़े के वक्त बात न कर सके (ख़ुदा की) बेटी हो सकती है ? (१८) और उन्होंने फ़रिश्तों को कि वह भी ख़ुदा के बन्दे हैं (ख़ुदा की) बेटियाँ मुक़र्रर किया, क्या यह उन की पैदाइश के वक्त हाज़िर थे ? अन्क़रीब उनकी शहादत लिख ली जायेगी और उनसे वाज़-पुर्स की जायेगी (१९) और कहते हैं कि अगर ख़ुदा चाहता तो हम उनको न पूजते, उनको इसका कुछ इल्म नहीं यह तो सिर्फ़ अटकलें दौड़ा रहे हैं (२०) या हमने उनको

इससे पहले कोई किताब दी थी तो यह उससे सनद पकड़ते हैं (२१) बल्कि कहने लगे कि हमने अपने बाप दादा को एक रस्ते पर पाया है और हम उन्हीं के क़दम ब क़दम चल रहे हैं (२२) और इसी तरह हमने तुम से पहले किसी बस्ती में कोई हिदायत करने वाला नहीं भेजा मगर वहाँ के खुशहाल लोगों ने कहा कि हमने अपने बाप दादा को एक राह पर पाया है और हम क़दम ब क़दम उन ही के पीछे चलते हैं (२३) पैग़म्बर ने कहा अगरचे मैं तुम्हारे पास ऐसा (दीन) लाऊँ कि जिस रस्ते पर तुमने अपने बाप दादा को पाया वह इस से कहीं सीधा रस्ता दिखाता है, कहने लगे कि जो (दीन) तुम देकर भेजे गये हो उसको हम नहीं मानते (२४) तो हमने उनसे इन्तक़ाम लिया सो देख लो कि झुठलाने वालों का अन्जाम कैसा हुआ (२५) — रुकू — २

और जब इब्राहीम ने अपने बाप और क़ौम के लोगों से कहा कि जिन चीज़ों को तुम पूजते हो, मैं उन से बेज़ार हूं (२६) हाँ जिसने मुझ को पैदा किया वही मुझे सीधा रस्ता दिखायेगा (२७) और यही बात अपनी औलाद में पीछे छोड़ गये ताकि वह (ख़ुदा की तरफ़) रजू करें (२८) बात यह है कि मैं उन कफ़्फ़ार को और उनके बाप दादा को मतमैय करता रहा, यहाँ तक कि उन के पास हक़ और साफ़ साफ़ बयान करने वाला पैग़म्बर आ पहुंचा (२९) और जब उनके पास हक़ (यानी क़ुरान) आया तो कहने लगे कि यह तो जादू है और हम इसको नहीं मानते (३०) और (यह भी) कहने लगे कि यह क़ुरान इन दोनों बस्तियों (यानी मक्के और ताईफ़) में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नाज़िल नहीं किया गया (३१) क्या यह लोग तुम्हारे पर्वरदिगार की रहमत को बाँटते हैं हमने उनकी माशियत को दुनिया की

ज़िन्दगी में तक़सीम कर दिया और एक दूसरे पर दर्जे बलन्द किये ताकि एक दूसरे से ख़िदमत ले और जो कुछ जमा करते हैं, तुम्हारे पर्वरदिगार की रहमत उससे कहीं बेहतर है (३२) और अगर यह ख़्याल न हो ताकि सब लोग एक ही जमायत हो जायेंगे, तो जो लोग ख़ुदा से इन्कार करते हैं, हम उनके घरों को छतें चान्दी की बना देते और सीढ़ियाँ भी, जिन पर वह चढ़ते हैं (३३) और उनके घरों के दरवाज़े भी और तख़्त भी, जिन पर तकिया लगाते हैं (३४) और (ख़ूब) तजम्मुल व आराईश (कर देते) हैं और यह सब दुनियां की ज़िन्दगी का थोड़ा सा सामान है और आख़िरत तुम्हारे पर्वरदिगार के हाँ परहेज़गारों के लिये है (३५)—रुकू ३

और जो कोई ख़ुदा की याद से आँखें बन्द कर ले (यानी तग़ाफ़ुल करें) हम उस पर एक शैतान मुक़र्रर कर देते हैं, तो वह उस का साथी हो जाता है (३६) और यह (शैतान) उनको रस्ते से रोकते रहते हैं और वह समझते हैं कि सीधे रस्ते पर हैं (३७) यहाँ तक कि जब हमारे पास आयेगा तो कहेगा कि ऐ काश मुझमें और तुझमें मशरिक़ व मग़रिब का फ़ासला होता, तू बुरा साथी है(३८)और जब तुम ज़ुल्म करते रहेतो आज तुम्हें यह बात फ़ायदा नहींदे सकती कि तुम(सब)अज़ाबमें शरीक हो(३९) क्या तुम बहरे को सुना सकते हो या अन्धे को रस्ता दिखा सकते हो, और जो सरीह गुमराही में हो उसे (राह पर ला सकते हो) (४०) अगर हम तुमको वफ़ात देकर उठा लें तो इन लोगों से हम इन्तक़ाम ले कर रहेंगे (४१) या (तुम्हारी ज़िन्दगी ही में) तुम्हें वह (अज़ाब) दिखा देंगे जिनका हम ने उससे वायदा किया है, हम उन पर क़ाबू रखते हैं (४२) पस तुम्हारी तरफ़ जो वही की गई है उसको मज़बूत पकड़े रहो, बेशक तुम

सीधे रस्ते पर हो (४३) और यह (क़ुरान) तुम्हारे लिये और तुम्हारी क़ौम के लिये नसीहत है और (लोगो) तुम से अन्क़रीब पुर्सिश होगी (४४) और (ऐ मोहम्मद) जो अपने पैग़म्बर हमने तुम से पहले भेजे हैं उन से दर्याफ़्त कर लो, क्या हमने (ख़ुदाये) रहेमान के सिवा और माबूद बनाये थे, कि उनकी इबादत की जाये (४५ —रुकू ४

और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ देकर फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजा तो उन्होंने कहा कि मैं पर्वरदिगारे आलम का भेजा हुआ हूँ (४६) जब वह उन के पास हमारी निशानियां ले कर आये तो वह निशानियों से हंसी करने लगे (४७) और जो निशानियाँ हम उनको दिखाते थे, वह दूसरी से बड़ी होती थीं, और हमने उनको अज़ाब में पकड़ लिया ताकि बाज़ आयें (४८) और कहने लगे कि ऐ जादूगर उस अहद के मुताबिक़ जो तेरे पर्वरदिगार ने तुझ से कर रखा है उससे दुआ कर बेशक हम हिदायत याब हो जायेंगे (४९) सो जब हम ने उन से अज़ाब को दूर कर दिया तो वह अहद-शिकनी करने लगे (५०) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को पुकार कर कहा कि ऐ क़ौम ! क्या मिश्र की हकूमत मेरे हाथ में नहीं है और यह नहरें जो मेरे (महलों के) नीचे बह रही हैं (मेरी नहीं हैं) क्या तुम देखते नहीं (५१) बेशक मैं उस शख्स से जो कुछ इज़्ज़त नहीं रखता और साफ़ गुफ़्तगू भी नहीं कर सकता, कहीं बेहतर हूं (५२) तो उस पर सोने के कङ्गन क्यों न उतारे गये, या (यह होता कि) फ़रिश्ते जमा होकर उसके साथ आते (५३) ग़रज़ उसने अपनी क़ौम की अक़्ल मार दी और उन्होंने उसकी बात मान ली, बेशक (वह) ना फ़रमान लोग थे (५४) जब उन्होंने हमको ख़फ़ा किया तो हमने उनसे इन्तक़ाम लेकर और उन सब

को डबो कर छोड़ा (५५) और उनको गये गुज़रे कर दिया और पिछलों के लिये इब्रत बना दिया (५६)—रुकू ५

और जब मरियम के बेटे (ईसा) का हाल बयान किया गया तो तुम्हारी क़ौम के लोग इससे चिल्ला उठे (५७) और कहने लगे कि भला हमारे माबूद अच्छे हैं या ईसा, उन्होंने ईसा की जो मिसाल बयान की है तो सिर्फ़ झगड़ने को हक़ीक़त यह है, यह लोग हैं ही झगड़ालू (५८) वह तो हमारे ऐसे बन्दे थे जिन पर हमने फ़ज़ल किया और बनी इसराईल के लिये उनको अपनी क़ुदरत का नमूना बना दिया (५९) और अगर हम चाहते तो तुम में से फ़रिश्ते बना देते, जो तुम्हारी जगह ज़मीन में रहते (६०) और वह क़यामत की निशानी हैं, तो कह दो कि (लोगो) इसमें शक न करो और मेरे पीछे चलो, यही सीधा रस्ता है (६१) और कहीं शैतान तुमको (उस से) रोक न दे, वह तो तुम्हारा ऐलानिया दुश्मन है (६२) और जब ईसा निशानियाँ ले कर आये तो कहने लगे कि मैं तुम्हारे पास दानाई की किताब लेकर आया हूं, नीज़ इसलिये कि बाज़ बातें जिन में तुम इख्ति-लाफ़ कर रहे हो, तुम को समझा दूं, तो ख़ुदा से डरो और मेरा कहा मानो (६३) कुछ शक नहीं कि ख़ुदा ही मेरा और तुम्हारा पर्वरदिगार है, पस उसी की इबादत करो, यही सीधा रस्ता है (६४) फिर कितने फ़िर्क़े उन में से फट गये, सो जो लोग ज़ालिम हैं, उनकी दर्द देने वाले दिन के अज़ाब से खराबी है (६५) यह सिर्फ़ इस बात के मुन्तजिर हैं कि क़यामत उन पर नागहां आ मौजूद हो और उनको खबर तक न हो (६६) (जो आपस में) दोस्त (हैं) उस रोज़ एक दूसरे के दुश्मन होंगे मगर परहेज़गार (कि बाहम) दोस्त ही रहेंगे (६७)—रुकू ६

तो मेरे बन्दो, आज तुम्हें न कुछ खौफ़ है और न तुम ग़म-

नाक होगे (६८) जो लोग हमारी आयतों पर ईमान लाये और फ़रमाँबर्दार हो गये (६९) (उन से कहा जायेगा) कि तुम और तुम्हारी बीबियाँ इज़्ज़त (व ऐहतराम) के साथ बहिश्त में दाखिल हो जाओ (७०) उन पर सोने की पिरचों और प्यालियों का दौर चलेगा और वहां जो जी चाहे और जो आँखों को अच्छा लगे (मौजूद होगा) और (ऐ अहले जन्नत) तुम उसमें हमेशा रहोगे (७१) और यह जन्नत जिसके तुम मालिक कर दिये गये हो, तुम्हारे आमाल का सिला है (७२) वहां तुम्हारे लिये बहुत से मेवे हैं, जिनको तुम खाओगे (७३) (और कफ़्फ़ार) गुन्हेगार हमेशा दोज़ख के अज़ाब में रहेंगे (७४) जो उन से हलका न किया जायेगा और वह उसमें ना उमीद हो कर पड़े रहेंगे (७५) और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वही (अपने आप पर) ज़ुल्म करते थे (७६) और पुकारेंगे कि ऐ मालिक, तुम्हारा पर्वरदिगार हमें मौत दे दे, वह कहेगा कि तुम हमेशा इसी हालत में रहोगे (७७) हम तुम्हारे पास हक़ लेकर आये हैं, लेकिन तुम अक्सर हक़ से नाखुश होते रहे (७८) क्या उन्होंने कोई बात ठहरा रखी है तो हम भी कुछ ठहराने वाले हैं (७९) क्या यह लोग ख्याल करते हैं कि हम उन की पोशीदा बातों और सर-गोशियों को सुनते नहीं हाँ हाँ (सब) सुनते हैं और हमारे फ़रिश्ते उनके पास (उनकी सब बातें) लिख लेते हैं (८०) कह दो कि अगर खुदा के औलाद हो, तो मैं (सब से) पहले (उस की) इबादत करने वाला हूं (८१) यह जो कुछ बयान करते हैं आस्मानों और ज़मीन का मालिक (और) अर्श का मालिक उस से पाक है (८२) तो उनको बक बक करने और खेलने दो यहाँ तक कि जिस दिन का उनसे वायदा किया जाता है, उस को देख लें (८३) और वही (एक) आस्मानों में माबूद है, और वही ज़मीन में माबूद है और वह दाना (और) इल्म वाला है (८४)

और वह बहुत बाबरकत है, जिसके लिये आस्मानों और ज़मीन की और जो कुछ इन दोनों में है, सबकी बादशाहत है और उसी को क़यामत का इल्म है, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे (८५) और जिनको यह लोग ख़ुदा के सिवा पुकारते हैं वह सिफ़ारिश का कुछ अख़्तियार नहीं रखते, हां जो इल्म व यकीन के साथ हक़ की गवाही दें (वह सिफ़ारिश कर सकते हैं) (८६) और अगर तुम उनसे पूछो कि उनको किसने पैदा किया है तो कह देंगे कि ख़ुदा ने, तो फिर यह कहाँ बहके फिरते हैं (८७) और (बसा औक़ात) पैग़म्बर कहा करते हैं कि ऐ पर्वरदिगार यह ऐसे लोग हैं कि ईमान नहीं लाते (८८) तो उनसे मुंह फेर लो और सलाम कर दो, उनको अन्क़रीब (अन्जाम) मालूम हो जायेगा (८९)—रुकू—७—

—०—

४४—सूर-हे-अलदुख़ान—

सूरत दुख़ान मक्के में उतरी और इसमें ५९ आयतें और ३ रुकू हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है

हा-मीम (१) इस किताबे रोशन की क़सम (२) कि हमने इसको मुबारिक रात में नाज़िल फ़रमाया, हम तो रस्ता दिखाने वाले हैं (३) उसी रात में तमाम हिकमत के काम फ़ैसल किये जाते हैं (४) (यानी) हमारे हां से हुक्म होकर, बेशक हम ही (पैग़म्बर को) भेजते हैं (५) (यह) तुम्हारे पर्वरदिगार की रहमत

है, वह तो सुनने वाला जानने वाला है (६) आस्मानों और जमीन का, और जो कुछ इन दोनों में है सबका मालिक, बशर्ते कि तुम लोग यक़ीन करने वाले हो (७) उसके सिवा कोई माबूद नहीं (वही) जिलाता और (वही) मारता है, वही तुम्हारा और तुम्हारे पहले बाप दादा का पर्वरदिगार है (८) लेकिन यह लोग शक में खेल रहे हैं (९) तो उस दिन का इन्तज़ार करो कि आस्मान से सरीह धुँआ निकलेगा (१०) जो लोगों पर छा जायेगा, यह दर्द देने वाला अज़ाब है (११) ऐ पर्वरदिगार हम से इस अज़ाब को दूर कर हम ईमान लाते हैं (१२) (उस वक्त) उन को नसीहत कहाँ मुफ़ीद होगी जब कि उनके पास पैग़म्बर आ चुके जो खोल खोल कर बयान कर देते हैं (१३) फिर उन्होंने उस से मुंह फेर लिया और कहने लगे (यह तो) पढ़ाया हुआ (और) दीवाना है (१४) हम तो थोड़े दिनों अज़ाब टाल देते हैं (मगर) तुम फिर कुफ्र करने लगते हो (१५) जिस दिन हम बड़ी सख्त पकड़ पकड़ेंगे तो बेशक इन्तक़ाम लेकर छोड़ेंगे (१६) और उनसे पहले हमने क़ौमे फ़िरऔन की आज़माइश की और उनके पास एक आली क़दर पैग़म्बर आये (१७) (जिन्होंने)यह (कहा) कि ख़ुदा के बन्दों (यानी बनी इसराईल) को मेरे हवाले कर दो, मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं (१८) और ख़ुदा के सामने सरकशी न करो, मैं तुम्हारे पास खुली दलील लेकर आया हूं (१) और (इस बात) से कि तुम मुझे संगसार करो, अपने और तुम्हारे पर्वरदिगार की पनाह मांगता हूं (२०) और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझसे अलग हो जाओ (२१) तब मूसा ने अपने पर्वरदिगार से दुआ की कि यह नाफ़रमान लोग हैं (२२) (ख़ुदा ने फ़रमाया कि) मेरे बन्दों को रातों रात लेकर चले जाओ (और) फिरऔनी जरूर तुम्हारा ताक़्कुब करेंगे (२३) और दरिया से (कि) खुश्क (हो रहा होगा) पार

हो जाओ, (तुम्हारे बाद) उनका तमाम लश्कर डबो दिया जायेगा (२४) वह लोग बहुत से बाग़ और चश्मे छोड़ गये (२५) और खेतियाँ और नफ़ीस मकान (२६) और आराम की चीज़ें जिनमें ऐश किया करते थे (२७) इसी तरह (हुआ) और हमने दूसरे लोगों को इन चीज़ों का मालिक बना दिया (२८) फिर उन पर न तो आस्मान को और न ज़मीन को रोना आया और न उनको मोहलत ही दी गई (२९)—रुकू—१—

और हमने बनी इसराईल को ज़िल्लत के अज़ाब से नजात दी (३०) (यानी) फ़िरऔन से, बेशक वह सरकश और हद से निकला हुआ था (३१) और हमने बनी इसराईल को अहले आलम से दानिस्ता मुन्तखिब किया था (३२) और उनको ऐसी निशानियाँ दी थीं, जिनमें सरीह आज़माइश थी (३३) यह लोग कहते (३४) कि हमें सिर्फ़ पहली दफ़ा (यानी एक बार) मरना है और (फिर) उठना नहीं (३५) पस अगर तुम सच्चे हो, तो हमारे बाप दादा को (ज़िन्दा कर) लाओ (३६) भला यह अच्छे हैं या तबआ की कौम और वह लोग जो तुम से पहले हो चुके हैं, हमने उन (सब) को हलाक कर दिया, बेशक वह गुन्हेगार थे (३७)* और हमने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ उनमें है, उनको खेलते हुए नहीं बनाया (३८) उनको हमने तदबीर से पैदा किया है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते (३९) कुछ शक नहीं कि फ़ैसले का दिन उन सब (के उठने) का वक्त है (४०) जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ काम न आयेगा

*आयत ३७:—तबआ यमन का बादशाह था, कहते हैं कि वह तो साहिबे ईमान था और उसकी क़ौम बुत परस्त थी जो हलाक कर दी गई।

और न उनको मदद मिलेगी (४१) जिस पर ख़ुदा मेहरबानी करे, वह तो ग़ालिब और मेहरबान है (४२)—रुकू २

बिला शुब्हा थोहर का दरख़्त (४३) गुन्हेगार का खाना है (४४) जैसे पिघला हुआ ताँबा पेटों में (इस तरह) खौलेगा (४५) जिस तरह गर्म पानी खौलता है (४६) (हुक्म दिया जायेगा) कि इस को पकड़ लो और खींचते हुए दोज़ख़ के बीचों बीच ले जाओ (४७) फिर उसके बाद सर पर खौलता हुआ पानी उन्डेल दो (कि अज़ाब पर) अज़ाब (हो) (४८) (अब) मज़ा चख, तू बड़ी इज़्ज़त वाला और सरदार है (४९) यह वही (दोज़ख़) है जिसमें तुम लोग शक किया करते थे (५०) बेशक परहेज़गार लोग अमन के मक़ाम में होंगे (५१) (यानी) बाग़ों और चश्मों में (५२) हरीर का बारीक और दबीज़ लिबास पहन कर एक दूसरे के सामने बैठे होंगे (५३) (वहाँ) इस तरह (का हाल होगा) और हम बड़ी बड़ी आँखों वाली सफ़ेद रंग की औरतों से उन के जोड़े लगायेंगे (५४) वहाँ ख़ातिर जमा से हर क़िसम के मेवे मंगवायेंगे (और खायेंगे) (५५) (और) पहली दफ़ा के मरने के सिवा (कि मर चुके थे) मौत का मज़ा नहीं चखेंगे और ख़ुदा उनको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लेगा (५६) यह तुम्हारे पर्वरदिगार का फ़ज़ल है यही तो बड़ी कामयाबी है (५७) हमने इस (क़ुरान) को तुम्हारी ज़बान में आसान कर दिया है ताकि यह लोग नसीहत पकड़ें (५८) पस तुम भी इन्तज़ार करो यह भी इन्तज़ार कर रहे हैं (५९)—रुकू ३

—०—

४५—सूर-हे-जासियह—

सूरत जासियह मक्के में उतरी, और इसमें ३७ आयतें और ४ रुकू हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हा, मीम (१) इस किताब का उतारा जाना खुदाये ग़ालिब (और) दाना की तरफ़ से है (२) बेशक आस्मानों और ज़मीन और ज़मीन में ईमान वालों के लिये (खुदा की क़ुदरत की) निशानियाँ हैं (३) और तुम्हारी पैदाईश में भी, और जानवरों में भी जिसको वह फैलाता है, यक़ीन करने वालों के लिये निशानियाँ हैं (४) और रात दिन के आगे पीछे आने जाने में, और वह जो खुदा ने आस्मान से (ज़रिय-ऐ) रिज़्क़ नाज़िल फ़रमाया, फिर उससे ज़मीन को उसके मर जाने के बाद ज़िन्दा किया, उसमें और रिज़्क़ के बदलने में अक़्ल वालों के लिये निशानियाँ हैं (५) यह खुदा की आयतें हैं जो हम तुम को सच्चाई के साथ पढ़ कर सुनाते हैं, तो यह खुदा और उसकी आयतों के बाद किस बात पर ईमान लायेंगे (६) हर झूठे गुनहेगार पर अफ़सोस है (७) (कि) खुदा की आयतें उसको पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तो उन को सुन तो लेता है (मगर) फिर ग़रूर से ज़िद करता है कि गोया उनको सुना ही नहीं, तो ऐसे शख्स को दुख देने वाले अज़ाब की खुशख़बरी सुना दो (८) और जब हमारी कुछ आयतें मालूम होती हैं तो उनकी हंसी उड़ाता है, ऐसे लोगों के लिये ज़लील करने वाला अज़ाब है (९) उनके सामने दोज़ख है और जो काम वह करते रहे कुछ भी उनके काम न आयेंगे, और न वही (काम आयेंगे) जिनको उन्होंने खुदा के सिवा माबूद बना

रखा था, और उनके लिये बड़ा अज़ाब है (१०) यह हिदायत (की किताब) है और जो लोग अपने पर्वरदिगार की आयतों से इन्कार करते है, उनको सख्त क़िसम का दर्द देने वाला अज़ाब होगा (११)—रुकू १

ख़ुदा ही तो है जिसने दरिया को तुम्हारे क़ाबू कर दिया ताकि उसके हुक्म से उस में कश्तियाँ चलें और ताकि तुम उस के फ़ज़ल से (मआश) तलाश करो और ताकि शुक्र करो (१२) और जो कुछ आस्मानों में है और जो ज़मीन में है, सबको अपने हुक्म से तुम्हारे काम में लगा दिया जो लोग ग़ौर करते हैं उनके लिये इसमें (क़ुदरते ख़ुदा की) निशानियाँ हैं (१३) मोमिनों से कह दो कि जो लोग ख़ुदा के दिनों की (जो आमाल के बदले के लिये मुक़र्रर हैं) तवक़्क़ो नहीं रखते, उनसे दर गुज़र करे ताकि वह उन लोगों को उनके आमाल का बदला दें (१४) जो कोई अमल नेक करेगा तो अपने लिये और जो बुरे काम करेगा तो उनका ज़रर उसी को होगा, फिर तुम अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौट कर जाओगे (१५) और हमने बनी इसराईल को किताब (हिदायत) और हुकूमत और नबव्यत बख्शी और पाकीज़ा चीज़ें अता फ़रमाई और अहले आलम पर फ़ज़ीलत दी (१६ और उनको दीन के बारे में दलीलें अता कीं तो उन्होंने इख्तिलाफ़ किया, तो इल्म आ चुकने के बाद आपस की ज़िद्द से किया, बेशक तुम्हारा पर्वरदिगार क़यामत के दिन उनमें उन बातों का, जिनमें वह इख्तिलाफ़ करते थे फ़ैस्ला करेगा (१७) फिर हमने तुमको दीन के खुले रस्ते पर (क़ायम) कर दिया तो उसी (रस्ते) पर चले चलो और नादानों की ख़्वाहिशों के पीछे न चलना (१८) यह ख़ुदा के सामने तुम्हारे किसी काम नहीं आयेंगे, और ज़ालिम लोग एक दूसरे के दोस्त होते हैं और ख़ुदा परहेज़गारों का दोस्त है (१९) यह क़ुरान लोगों के लिये

दानाई की बातें हैं और जो यक़ीन रखते हैं उनके लिये हिदायत और रहमत है (२०) जो लोग बुरे काम करते हैं क्या वह यह ख्याल करते हैं कि हम उनको उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाये और अमल नेक करते रहे और उनकी ज़िन्दगी और मौत यकसाँ होगी, यह जो दावे करते हैं बुरे हैं (२१)—रुकू २

और ख़ुदा ने आस्मानों और ज़मीन को हिकमत से पैदा किया है और ताकि हर शख्श अपने आमाल का बदला पायेगा और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जायेगा (२२) भला तुमने उस शख्स को देखा जिसने अपनी ख्वाहिशों को माबूद बना रखा है और बावजूद जानने बूझने के (गुमराह हो रहा है तो) ख़ुदा ने (भी) उसको गुमराह कर दिया और उसके कानों में और दिल पर मोहर लगा दी और उस की आँखों पर पर्दा डाल दिया, अब ख़ुदा के सिवा उसको कौन राह पर ला सकता है भला तुम नसीहत क्यों नहीं पकड़ते (२३) और कहते हैं कि हमारी ज़िन्दगी तो सिर्फ़ दुनिया ही की है कि (यहीं) मरते और जीते हैं और हमें तो ज़माना मार देता है और उनको इसका कुछ इल्म नहीं, सिर्फ़ जिन से काम लेते हैं (२४) और जब उनके सामने हमारी खुली खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनकी यही हुज्जत होती है कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादा को (ज़िन्दा कर) लाओ (२५) कह दो कि ख़ुदा ही तुमको जान बख़्शता है फिर (वही) तुमको मौत देता है, फिर तुम को क़यामत के रोज़ जिस (के आने) में कुछ शक नहीं, तुम को जमा करेगा, लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते (२६)—रुकू ३

और आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत ख़ुदा ही की है और जिस रोज़ क़यामत बर्पा होगी, उस रोज़ अहले बातिल खसारे में पड़ जायेंगे (२७) और तुम हर एक फ़िर्के को देखोगे

कि घुटनों के बल बैठा होगा और हर एक जमायत अपनी किताब (आमाल) की तरफ़ बुलाई जायेगी, जो कुछ तुम करते रहे हो, आज तुम को उसका बदला दिया जायेगा (२८) यह हमारी किताब तुम्हारे बारे में सच सच बयान कर देगी, जो कुछ तुम किया करते थे हम लिखवाते जाते हैं (२९) तो जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे उनका पर्वरदिगार उन्हें अपनी रहमत (के बाग़) में दाखिल करेगा, यही सरीह कामयाबी है (३०) और जिन्होंने कुफ़्र किया (उनसे कहा जायेगा) कि भला हमारी आयतें तुम को पढ़कर सुनाई नहीं जाती थी ? फिर तुमने तक़ब्बुर किया और तुम ना फ़रमान लोग थे (३१) और जब कहा जाता था कि ख़ुदा का वायदा सच्चा है और क़यामत में कुछ शक नहीं तो तुम कहते थे, हम नहीं जानते कि क़यामत क्या है, हम उसको मेहज़ ज़िनी ख्याल करते हैं और हमें यक़ीन नहीं आता (३२) और उनके आमाल की बुराईयाँ उन पर ज़ाहिर हो जायेंगी और जिस (अज़ाब) की वह हंसी उड़ाते थे वह उनको आ घेरेगा (३३) और कहा जायेगा कि जिस तरह तुम ने उस दिन के आने को भुला रखा था, उसी तरह आज हम तुम्हें भुला देंगे और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख है, और कोई तुम्हारा मददगार नहीं (३४) यह इस लिये कि तुमने ख़ुदा की आयतों को मख़ौल बना रखा था और दुनिया की ज़िन्दगी ने तुम को धोखे में डाल रक्खा था, सो आज यह लोग न दोज़ख से निकाले जायेंगे, और न उन की तौबा क़बूल की जायेगी (३५) पस ख़ुदा ही को हर तरह की तारीफ़ (सज़ावार) है और जो आस्मानों का मालिक और ज़मीन का मालिक और तमाम जहान का पर्वरदिगार है (३६) और आस्मानों और ज़मीन में उसी के लिये बड़ाई है और वह ग़ालिब और दाना है (३७)—रुकू ४

छब्बीसवाँ पारा—हामीम

४६—सूर-हे-अहक़ाफ़

सूरते अहक़ाफ़ मक्के में उतरी और इसमें ३५ आयतें और ४ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

हा–मीम (१) यह किताब ख़ुदाये ग़ालिब (और) हिकमत वाले की तरफ़ से नाज़िल हुई है (२) हमने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ इन दोनों में है, मबनी बर हिकमत और एक वक्त मुक़र्रर तक के लिये पैदा किया है, और काफ़िरों को जिस चीज़ की नसीहत की जाती है उस से मूंह फेर लेते हैं (३) कहो कि भला तुम ने उन चीज़ों को देखा है जिन को तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो (ज़रा) मुझे भी तो दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन में कौन सी चीज़ पैदा की है, या आस्मानों में उनकी शर्कत है ? अगर सच्चे हो तो इससे पहले की कोई किताब मेरे पास लाओ या (इल्मे अन्बिया में से) कुछ (मनक़ूल) चला आता हो तो उसे पेश करो (४) और उस शख़्स से बढ़कर कौन गुम-राह हो सकता है जो ऐसे को पुकारे जो क़यामत तक उसे जवाब न दे सके, और उनको उनके पुकारने ही की ख़बर न हो (५) और जब लोग जमा किये जायेंगे तो वह उनके दुश्मन होंगे और उनकी परस्तिश से इन्कार करेंगे (६) और जब उनके सामने हमारी खुली हुई आयतें पढ़ी जाती हैं तो काफ़िर हक़ के बारे में जब उनके पास आ चुका कहते हैं कि यह तो सरीह जादू है (७) क्या यह कहते हैं कि इसने इस को अज़ख़ुद बना लिया है ? कह दो कि अगर मैंने इस को अपनी तरफ़ से बनाया हो तो तुम

ख़ुदा के सामने मेरे (बचाव) के लिये कुछ अख़्तियार नहीं रखते वह इस गुफ़्तगू को ख़ूब जानता है जो तुम उसके बारे में करते हो वही मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाह काफ़ी है और वह बख़्शने वाला मेहरबान है (८) कह दो कि मैं कोई नया पैग़म्बर नहीं आया और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या सलूक किया जायेगा और तुम्हारे साथ क्या (किया जायेगा) मैं तो उसी की पैरवी करता हूं जो मेरे पास वही आती है और मेरा काम तो ऐलानिया हिदायत करना है (९) कहो कि भला देखो तो अगर यह (क़ुरान) ख़ुदा की तरफ़ से हो, और तुमने इससे इन्कार किया और बनी इसराईल में से एक गवाह इसी तरह की एक (किताब) की गवाही दे चुका और ईमान ले आया और तुमने सरकशी की (तो तुम्हारे ज़ालिम होने में क्या शक है ?) बेशक ख़ुदा ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता (१०)—रुकू १

और काफ़िर मोमिनों से कहते हैं कि अगर यह दीन कुछ बेहतर होता तो यह लोग उसकी तरफ़ हम से पहले न दौड़ पड़ते और जब वह इस से हिदायतयाब न हुए तो अब कहेंगे यह पुराना झूठ है (११) और इस से पहले मूसा की किताब थी (लोगों के लिये) रेहनुमा और रहमत, और यह किताब अरबी ज़बान में है, इस की तस्दीक़ करने वाली कि ज़ालिमों को डराये और नेकूकारों को खुशखबरी सुनाये (१२) जिन लोगों ने कहा कि हमारा पर्वरदिगार है फिर वह उस पर क़ायम रहे तो उन को न कुछ ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मनाक होंगे (१३) यही अहले जन्नत हैं कि हमेशा उसमें रहेंगे (यह) उसका बदला है जो वह किया करते थे (१४) और हमने इन्सान को अपने वालिदैन के साथ भलाई करने का हुक्म दिया, उसकी मां ने उस को तकलीफ़ से पेट में रखा और तकलीफ़ ही से जना और उस

का पेट में रहना और दूध छोड़ना ढाई बरस में होता है, यहाँ तक कि जब खूब जवान होता है और चालीस बरस को पहुंच जाता है तो कहता है कि ऐ मेरे पर्वरदिगार मुझे तौफ़ीक़ दे कि तू ने जो एहसान मुझ पर और मेरे माँ बाप पर किये हैं उनका शुक्र गुज़ार रहूं और यह कि नेक अमल करूं जिनको तू पसन्द करे और मेरी औलाद में सलाह (व तक़्वा) दे, मैं तेरी तरफ़ रजू करता हूं और मैं फ़रमांबर्दारों में हूं (१५) यही लोग हैं जिन के आमाल नेक हम क़बूल करेंगे और उनके गुनाहों से दर गुज़र फ़रमायेंगे, और (यही) एहलेजन्नत में (होंगे) (यह) सच्चा वायदा (है) जो उनसे किया जाता है (१६) और जिस शख़्स ने अपने माँ बाप से कहा कि उफ़ ! तुम मुझे यह बताते हो कि मैं (ज़मीन से) निकाला जाऊंगा हालांकि बहुत से लोग मुझ से पहले गुज़र चुके हैं, और वह दोनों ख़ुदा की जनाब में फ़रियाद करते (हुए कहते) थे, कि कमबख़्त ईमान ला, ख़ुदा का वायदा तो सच्चा है, तो कहने लगा, यह तो पहले लोगों की कहानियां हैं (१७) यही वह लोग हैं जिनके बारे में जिन्नों और इन्सानों की (दूसरी) उम्मतों में से जो इनसे पहले गुज़र चुकीं अज़ाब का वायदा मुतहक़्क़िक़ हो गया, बेशक वह नुकसान उठाने वाले थे (१८) और लोगों ने जैसे काम किये होंगे, उनके मुताबिक सब के दर्जे होंगे (ग़रज़ यह है) कि उनके आमाल का पूरा बदला दे और उनका नुक़सान न किया जाये (१९)और जिस दिन काफ़िर दोज़ख़ के सामने किये जायेंगे (तो कहा जायेगा कि) तुम अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में लज़्ज़तें हासिल कर चुके और उन से मुतमत्तौ हो चुके सो आज तुमको ज़िल्लत का अज़ाब है (यह) उसकी सज़ा (है) कि तुम ज़मीन में नाहक ग़रूर किया करते थे और इसकी कि बद किर्दारी किया करते थे (२०) —रुकू २

और (क़ौमे) आद के भाई (हूद) को याद करो कि जब

उन्होंने अपनी क़ौम को सरज़मीने अहक़ाफ़ में हिदायत की और उनसे पहले और पीछे भी हिदायत करने वाले गुज़र चुके थे कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करो, मुझे तुम्हारे बारे में बड़े दिन के अज़ाब का डर लगता है (२१) कहने लगे क्या तुम हमारे पास इसलिये आये हो कि हमको हमारे माबूदों से फेर दो ? अगर सच्चे हो तो जिस चीज़ से हमें डराते हो उसे हम पर ले आओ (२२) (उन्हों ने) कहा कि (इस का) इल्म तो ख़ुदा ही को है और मैं तो जो (एहक़ाम) दे कर भेजा गया हूँ वह तुम्हें पहुंचा रहा हूं, लेकिन मैं देखता हूं कि तुम लोग नादानी में फंस रहे हो (२३) फिर जब उन्होंने उस (अज़ाब को) देखा कि बादल (की सूरत में) उनके मैदानों की तरफ़ आ रहा है तो कहने लगे यह तो बादल है जो हम पर बरस कर रहेगा (नहीं) बल्कि (यह) वह चीज़ है जिसके लिये तुम जल्दी करते थे यानी आन्धी जिसमें दर्द देने वाला अज़ाब भरा हुआ है (२४) हर चीज़ को अपने पर्वरदिगार के हुक्म से तबाह किये देती है, तो वह ऐसे हो गये, कि उनके घरों के सिवा कुछ नज़र नहीं आता था, गुनहेगारों को हम इसी तरह सज़ा दिया करते हैं (२५) और हमने उनको ऐसे मक़दूर दिये थे जो तुम लोगों को नहीं दिये और उन्हें कान और आँखें और दिल दिये थे, तो जब कि वह ख़ुदा की आयतों से इन्कार करते थे तो न तो उन के कान ही उनके कुछ काम आ सके और न आँखें और न दिल, और जिस चीज़ से इस्तेहज़ा किया करते थे उस ने उन को आ घेरा (२६)—रुकू ३

और तुम्हारे इर्द गिर्द की बस्तियों को हमने हलाक कर दिया और बार बार (अपनी) निशानियाँ ज़ाहिर कर दीं ताकि वह रजू करें (२७) तो जिनको उन लोगों ने तकर्रुब (ख़ुदा)

के सिवा माबूद बनाया था, उन्होंने उनकी क्यों मदद न की, बल्कि वह उन (के सामने) से गुम हो गये, और यह उनका झूठ था और यही वह इफ़्तिरा किये करते थे (२८) और जब हमने जिन्नों में से कई शख़्स तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जोह किये कि क़ुरान सुनें, तो जब वह उसके पास आये तो (आपस में) कहने लगे कि ख़ामोश रहो जब (पढ़ना) तमाम हुआ तो अपनी बिरादरी के लोगों में वापिस गये कि (उन को) नसीहत करें (२९) कहने लगे कि ऐ हमारी क़ौम ! हमने एक किताब सुनी है जो मूसा के बाद नाज़िल हुई है, जो (किताबें) इससे पहले (नाज़िल हुई) हैं, उनकी तस्दीक करती है (और) सच्चा (दीन) और सीधा रस्ता बताती है (३०) ऐ क़ौम ! ख़ुदा की तरफ़ बुलाने वाले की बात क़बूल करो और उसी पर ईमान लाओ, ख़ुदा तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें दुख देने वाले अज़ाब से पनाह में रखेगा (३१) और जो शख़्स ख़ुदा की तरफ़ बुलाने वाले की बात क़बूल न करेगा तो वह ज़मीन में (ख़ुदा को) आजिज़ नहीं कर सकेगा और न उसके सिवा उसके हिमायती होंगे, यह लोग सरीह गुमराही में हैं (३२) क्या उन्होंने नहीं समझा कि जिस ख़ुदा ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया और उनके पैदा करने से थका नहीं, वह इस बात पर भी क़ादिर है कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे, हाँ हाँ वह हर चीज़ पर क़ादिर है (३३) और जिस रोज़ आग के सामने किये जायेंगे (और कहा जायेगा) क्या यह हक़ नहीं है ? तो कहेंगे क्यों नहीं, हमारे पर्वरदिगार की क़सम (हक़ है) हुक्म होगा कि तुम जो (दुनिया में) इन्कार किया करते थे (अब) अज़ाब के मज़े चखो (३४) पस (ऐ मोहम्मद) जिस तरह और आली हिम्मत पैग़म्बर सब्र करते रहे हैं, इसी तरह तुम भी सब्र करो और उनके लिये (अज़ाब) जल्दी न माँगो, जिस दिन यह उस चीज़ को देखेंगे जिसका इनसे वायदा

किया जाता है तो (ख्याल करेंगे कि) गोया (दुनिया में) रहे ही न थे, मगर घड़ी भर दिन (यह क़ुरान) पैग़ाम है सो (अब) वही हलाक होंगे जो ना फ़रमान थे (३५)—रुकू ४

४७—सूर-हे-अल मोहम्मद

यह सूरते मोहम्मद मदीने में उतरी, और इसमें ३८ आयतें और ४ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

जिन लोगों ने कुफ्र किया और (औरों को) ख़ुदा के रस्ते से रोका, ख़ुदा ने उनके आमाल बर्बाद कर दिए (१) और जो ईमान लाये और नेक अमल करते रहे और जो (किताब) मोहम्मद पर नाज़िल हुई उसे मानते रहे और वह उनके पर्वरदिगार की तरफ़ से बरहक़ है, उनसे उनके गुनाह दूर कर दिये और उनकी हालत सँवार दी (२) यह हब्ते आमाल और इस्लाहे हाल इस लिये है कि जिन लोगों ने कुफ्र किया उन्होंने भूठी बात की पैरवी की और जो ईमान लाये वह अपने पर्वरदिगार की से (दीने) हक़ के पीछे चले, इसी तरह ख़ुदा लोगों से उनके हालात बयान फ़रमाता है (३) जब तुम काफ़िरों से भिड़ जाओ तो उनकी गर्दनें उड़ा दो, यहाँ तक कि जब उनको ख़ूब क़त्ल कर चुको तो (जो ज़िन्दा पकड़े जायें उनको) मज़बूती से कैद कर लो, फिर उसके बाद या तो एहसान रख कर छोड़ देना चाहिये या कुछ माल लेकर, यहाँ तक कि (फ़रीके मुक़ाबिल

लड़ाई के) हथियार (हाथ से) रख दे, यह (हुक्म याद रखो) और ख़ुदा चाहता तो (और तरह) उनसे इन्तक़ाम ले लेता लेकिन उसने चाहा कि तुम्हारी आज़माईश एक (को) दूसरे से (लड़वा कर) करे और जो लोग ख़ुदा को राह में मारे गये, उन के अमलों को हर्गिज़ जाया न करेगा (४) (बल्कि) उन को सीधे रस्ते पर चलायेगा और उन की हालत दुरुस्त कर देगा (५) और उन को बहिश्त में जिस से उन्हें शिनासा कर रखा है, दाख़िल करेगा (६) ऐ अहले ईमान, अगर तुम ख़ुदा की मदद करोगे तो वह भी तुम्हारी मदद करेगा और तुम को साबित क़दम रखेगा (७) और जो काफ़िर हैं उन के लिये हलाकत है, और वह उन के आमाल को बर्बाद कर देगा (८) यह इस लिये कि ख़ुदा ने जो चीज़ नाज़िल फ़रमाई उन्होंने उस को ना पसन्द किया तो ख़ुदा ने भी उन के आमाल अकारत कर दिये (९) क्या उन्होंने मुल्क में सैर नहीं की, ताकि देखते कि जो लोग उन से पहले थे उन का अन्जाम कैसा हुआ ख़ुदा ने उन पर तबाही डाल दी, और इसी तरह का अज़ाब इन काफ़िरों को होगा (१०) यह इस लिये कि जो मोमिन हैं उन का ख़ुदा कारसाज़ है और काफ़िरों का कोई कारसाज़ नहीं (११)—रुकू १

जो लोग ईमान लाये और अमल नेक करते रहे उन को ख़ुदा बहिश्तों में जिन के नीचे नहरें बह रही हैं दाख़िल फ़रमायेगा और जो काफ़िर हैं वह फ़ायदे उठाते हैं और (इस तरह) खाते हैं जैसे हैवान खाते हैं और उसका ठिकाना दोज़ख़ है (१२) और बहुत सी बस्तियाँ तुम्हारी बस्ती से जिस (के बाशिन्दों ने तुम्हें वहाँ) से निकाल दिया ज़ोरो क़ुव्वत में कहीं बढ़ कर थीं, हमने उन का सत्यानाश कर दिया और उन का कोई मददगार न हुआ (१३) भला जो शख़्स अपने पर्वरदिगार

(की मेहरबानी) से खुले रस्ते पर (चल रहा) हो वह उन की तरह (हो सकता) है जिनके आमाल बद उन्हें अच्छे करके दिखाये जायें और जो अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करें ? (१४) जन्नत जिस का परहेज़गारों से वायदा किया जाता है, उस की सिफ़त यह है कि उस में पानी की नहरें हैं जो बू नहीं करेगा और दूध की नहरें हैं जिस का मज़ा नहीं बदलेगा और शराब की नहरें जो पीने वालों के लिये (सरासर) लज़्ज़त हैं और शहदे मुसफ़्फ़ा की नहरें हैं (जो हलावत ही हलावत है) और वहाँ उन के लिये हर किसम के मेवे हैं और उन के पर्वरदिगार की तरफ़ से मग़फ़रत है (क्या यह परहेज़गार) उन की तरह (हो सकते हैं) जो हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे और जिन को खौलता हुआ पानी पिलाया जायेगा तो उनकी अन्तड़ियों को काट डालेगा (१५) और इन में बाज़ ऐसे भी हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाये रहते हैं यहां तक कि (सब कुछ सुनते हैं, लेकिन) जब तुम्हारे पास से निकल कर चले जाते हैं तो जिन लोगों को इल्म (दीन) दिया गया है उनसे कहते हैं कि (भला) उन्होंने अभी क्या कहा था ? यही लोग हैं जिन के दिलों पर ख़ुदा ने मोहर लगा रखी है और वह अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चल रहे हैं (१६) और जो लोग हिदायत याफ़्ता हैं उन को वह हिदायते मज़ीद बख़्शता है और परहेज़गारी इनायत करता है (१७) अब तो यह लोग कयामत ही को देख रहे हैं कि नागहाँ इन पर आ वाक़ैय हो, सो उसकी निशानियाँ (वक़्) में आ चुकी हैं, फिर जब वह इन पर आ नाज़िल होंगी, उस वक्त उन्हें नसीहत कहां (मुफ़ीद हो सकेगी) (१८) पस जान रखो कि ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं और अपने गुनाहों की माफ़ी माँगो, और (और) मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिये भी, और ख़ुदा तुम लोगों के चलने फिरने और ठहरने से वाक़िफ़ है (१९)—रुकू २

और मोमिन लोग कहते हैं कि (जहाद की) कोई सूरत क्यों नाज़िल नहीं होती, लेकिन जब कोई साफ़मायनों की सूरत नाज़िल हो और उसमें जहाद का बयान हो तो जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़) का मरज़ है, तुम उन को देखो कि तुम्हारी तरफ़ इस तरह देखने लगें, जिस तरह किसी पर मौत की बेहोशी (तारी) हो रही हो, सो उनके लिये ख़राबी है (२०) (ख़ूब काम तो) फ़रमाँबर्दारी और पसन्दीदा बात कहना (है) फिर जब (जहाद की) बात पुख़्ता हो गई, तो अगर यह लोग ख़ुदा से सच्चे रहना चाहते तो इनके लिये बहुत अच्छा होता (२१) ऐ (मुनाफ़िक़ो) तुम से अजब नहीं कि अगर तुम हाकिम हो जाओ तो मुल्क में ख़राबी करने लगो और अपने रिश्ते को तोड़ डालो (२२) यही लोग हैं जिन पर ख़ुदा ने लानत की है और उन (के कानों) को बेहरा, और (उनकी) आँखों को अन्धा कर दिया है (२३) भला यह लोग क़ुरान में गौर नहीं करते, या (उनके) दिलों पर कुफ़्ल लग रहे हैं (२४) जो लोग राहे हिदायत जाहिर होने के बाद पीठ देकर फिर गये, शैतान ने (यह काम) उनको मुज़ैय्यन कर दिखाया और उन्हें तूलें (उम्र का वायदा) दिया (२५) यह इसलिये कि जो लोग ख़ुदा की उतारी हुई (किताब से बेज़ार हैं, यह उनसे कहते हैं कि बाज़ कामोंमें हम तुम्हारी बात भी मानेंगे और ख़ुदा उनके पोशीदा मशवरा से वाकिफ़ है (२६) तो उस वक्त (उनका) कैसा (हाल) होगा जब फ़रिश्ते उनकी जान निकालेंगे और उनके मूंहों और पीठों पर मारते जायेंगे (२७) यह इस लिये कि जिस चीज़ से ख़ुदा नाख़ुश है यह उसके पीछे चले और उसकी ख़ुशनूदी को अच्छा न समझे, तो उसने भी उनके अमलों को बर्बाद कर दिया (२८)—रुकू—३—

क्या वह लोग जिनके दिलों में बीमारी है, यह ख्याल किये हुए हैं कि ख़ुदा उनके कीनों को जाहिर नहीं करेगा (२९) और

अगर हम चाहते तो वह लोग तुमको दिखा भी देते और तुम उनको उनके चेहरों ही से पहचान लेते और तुम उन्हें (उनके) अन्दाज़े गुफ़्तगू ही से पहचान लोगे और ख़ुदा तुम्हारे आमाल से वाक़िफ़ है (३०) और हम तुम लोगो को आज़मायेंगे ताकि जो तुम में लड़ाई करने वाले और साबित क़दम रहने वाले हैं उनको मालूम करें और तुम्हारे हालात जाँच लें (३१) जिन लोगों को सीधा रस्ता मालूम हो गया (और) फिर भी उन्होंने कुफ्र किया और (लोगों को) ख़ुदा की राह से रोका और पैग़म्बर की मुख़ालिफ़त की वह ख़ुदा का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेंगे और ख़ुदा उनका सब किया कराया अकारत कर देगा (३२) मोमिनो ! ख़ुदा का इर्शाद मानो और पैग़म्बर को फ़रमांबर्दारी करो और अपने अमलों को ज़ाया न होने दो (३३) जो लोग काफ़िर हुए और ख़ुदा के रस्ते से रोकते रहे, फिर काफ़िर ही मर गये, ख़ुदा उनको हरगिज़ नहीं बख़्शेगा (३४) तो तुम हिम्मत न हारो और (दुश्मनों को) सुल्ह की तरफ़ न बुलाओ और तुम तो ग़ालिब हो और ख़ुदा तुम्हारे साथ है वह हरगिज़ तुम्हारे आमाल को कम (और गुम) नहीं करेगा (३५) दुनिया की ज़िन्दगी तो मेहज़ खेल और तमाशा है और अगर तुम ईमान लाओगे और परहेज़गारी करोगे तो वह तुमको तुम्हारा अजरदेगा और तुमसे तुम्हारा माल तलब नहीं करेगा (३६) अगर वह तुमसे माल तलब करे और तुम्हें तंग करे, तो बुख़्ल करने लगो और वह (बुख़्ल) तुम्हारी बदनीयती ज़ाहिर करके रहे (३७) देखो तुम वह लोग हो कि ख़ुदा की राह में खर्च करने के लिये बुलाये जाते हो, तो तुम में ऐसे शख़्स भी हैं जो बुख़्ल करने लगते हैं, और जो बुख़्ल करता है अपने आप से बुख़्ल करता है और ख़ुदा बेन्याज़ है और तुम मोहताज, और अगर तुम मुंह फेरोगे तो वह तुम्हारी जगह और लोगों को ले जायेगा और वह तुम्हारी तरह के नहीं होंगे (३८)—रुकू—४—

४८—सूर-हे—अल-फ़तह

यह सूरते फ़तह मदीने में उतरी, और इसमें २६ आयतें और चार रुकू हैं

शुरु खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

(ऐ मोहम्मद) हमने तुमको फ़तह दी, फ़तह भी सरीह और साफ़ (१) ताकि खुदा तुम्हारे अगले और पिछले गुनाह बख्श दे और तुम पर अपनी नैयमत पूरी कर दे और तुम्हें सीधे रस्ते पर चलाये (२) और खुदा तुम्हारी जबरदस्त मदद करे (३) वही तो है जिसने मोमिनों के दिलों पर तसल्ली नाज़िल फ़रमाई ताकि उन के ईमान के साथ और ईमान बढ़े और आस्मानों और ज़मीन के लश्कर (सब) खुदा ही के हैं, और खुदा जानने वाला (और) हिकमत वाला है (४) (यह) इस लिये कि वह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को बहिश्तों में जिन के नीचे नहरें बह रही हैं दाखिल करे वह उस में हमेशा रहेंगे और उन से उन के गुनाहों को दूर कर दे, और यह खुदा के नज़दीक बड़ी कामयाबी है (५) और (इस लिये कि) मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतोंको जो खुदा के हक़ में बुरे बुरे ख्याल रखते हैं अज़ाब दे, उन्हीं पर बुरे हादसे वाक़ैय हों और खुदा उन पर ग़ुस्से हो और उसने उन पर लानत की उनके लिये दोज़ख तैयार की, और वह बुरी जगह है (६) और आस्मानों और ज़मीन के लश्कर खुदा ही के हैं और खुदा गालिब (और) हिकमत वाले हैं (७) और हमने (ऐ मोहम्मद) तुम को हक़ ज़ाहिर करने वाला और खुशखबरी सुनाने वाला और खौफ़ दिलाने वाला (बना कर) भेजा है (८) ताकि

(मुस्लमानो) तुम लोग ख़ुदा पर और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसको बुज़ुर्ग समझो, और सुबह शाम उसकी तस्बीह करते रहो (९) जो लोग तुम से बैयत करते हैं ख़ुदा का हाथ उनके हाथों पर है, फिर जो एहद को तोड़े तो एहद तोड़ने का नुकसान उन्हीं को है, और जो इस बात को जिसका उसने ख़ुदा से एहद किया है, पूरा करे, वह उसे अन्क़रीब अजरे अज़ीम देगा (१०)–रुकू–१–

जो गँवार पीछे रह गये, वह तुम से कहेंगे कि हमको हमारे माल और अहलो अयाल ने रोक रखा आप हमारे लिये (ख़ुदा से) बख़्शिश मांगें, यह लोग अपनी जबानों से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है, कह दो कि अगर खुदा तुम लोगों को नुक़सान पहुंचाना चहे या फ़ायदा पहुँचाने का इरादा फ़रमाये तो कौन है जो उसके सामने तुम्हारे लिये किसी बात का कुछ अख़्तियार रखे (कोई नहीं) बल्कि जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे वाक़िफ़ है (११) बात यह है कि तुम लोग यह समझ बैठे थे कि पैग़म्बर और मोमिन अपने अहलो अयाल में कभी लौटकर आने के ही नहीं, और यह बात तुम्हारे दिलों को अच्छी मालूम हुई और (इसी वज्हे से) तुमने बुरे बुरे ख़्याल किये और (आख़िरकार तुम हलाकत में पड़ गये (१२) और जो शख़्स ख़ुदा पर और उसके पैग़म्बर पर ईमान न लाये, तो हमने (ऐसे) काफ़िरों के लिये आग तैयार कर रखी है (१३) और आस्मानों और ज़मीन की बादशाही खुदा ही की है, वह जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे सजा दे, और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (१४) जब तुम लोग ग़नीमतें लेने चलोगे तो जो लोग पीछे रह गये थे कहेंगे, हमें भी इजाज़त दीजिये कि आपके साथ चलें, यह चाहते हैं कि ख़ुदा के क़ौल को बदल दें, कह दो कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते, इसी तरह खुदा

ने पहले से फ़रमा दिया है, फिर कहेंगे (नहीं) तुम तो हमसे हसद करते हो, बात यह है कि यह लोग समझते ही नहीं मगर बहुत कम (१५) जो गँवार पीछे रह गये थे उनसे वह दो कि तुम एक सख्त जंग जू क़ौम के (साथ लड़ाई के) लिये बुलाये जाओगे, उनसे तुम (या तो) जंग करते रहोगे या वह इस्लाम ले आयेंगे, और अगर तुम हुक्म मानोगे तो खुदा तुमको अच्छा बदला देगा और अगर मुंह फेर लोगे जैसे पहली दफ़ा फेरा था, तो वह तुमको बुरी तकलीफ़ की सज़ा देगा (१६) न तो अन्धे पर गुनाह है (कि सफ़रे जंग से पीछे रह जाये) और न लंगड़े पर गुनाह है और न बीमार पर गुनाह है, और जो शख्स खुदा और उसके पैग़म्बर के फ़रमान पर चलेगा, खुदा उसका बहिश्तों में दाखिल करेगा, जिनके तले नहरें बह रही हैं और जो रूगर्दानी करेगा, उसे बुरे दुख की सज़ा देगा (१७)—रुकू—२

(ऐ पैग़म्बर) जब मोमन तुमसे दरख्त के नीचे बैयत कर रहे थे तो खुदा उनसे खुश हुआ और जो (सिदक़ों खुलूस) उनके दिलों में था वह उसने मालूम कर लिया तो उन पर तसल्ली नाज़िल फ़रमाई और उन्हें जुदा फ़तह इनायत की (१८) और बहुत सी ग़नीमतें जो उन्होंने हासिल कीं और खुदा ग़ालिब हिकमत वाला है (१९) खुदा ने तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वायदा फ़रमाया कि तुम उनको हासिल करोगे, सो उसने ग़नीमत को तुम्हारे लिये जल्दी फ़रमाई और लोगों के हाथ तुम से रोक लिये, ग़रज़ यह थी कि यह मोमिनों के लिये खुदा की) कुदरत का नमूना हो और वह तुम को सीधे रस्ते पर चलाये (२०) और (ग़नीमतें) दीं जिन पर तुम कुदरत नहीं रखते थे (और) वह खुदा ही की कुदरत में थीं, और खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (२१) और अगर तुमसे काफ़िर लड़ते तो पीठ फेरकर भाग जाते, फिर किसी को न दोस्त पाते और न मददगार (२२)

(यही) खुदा की आदत है जो पहले से चली आती है, और तुम खुदा की आदत कभी बदलते न देखोगे (२३) और वही तो है जिसने तुमको उन (काफ़िरों) पर फतहयाब करने के बाद सरहदे मक्का में उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिये और जो कुछ तुम करते हो खुदा उसको देख रहा है (२४) यह वही लोग हैं जिन्होंने कुफ्र किया और तुमको मसजिदे हराम से रोक दिया, और कुर्बानियों को भी कि अपनी जगह पहुंचने से रुकी रहें और अगर ऐसे मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें न होतीं जिनको तुम जानते न थे कि अगर तुम उनको पामाल कर देते तो तुम को उनकी तरफ़ से बेखबरी में नुक़सान पहुंच जाता (तो अभी तुम्हारे हाथ से फ़तह हो जाती मगर ताख़ीर) इस लिये (हुई) कि खुदा अपनी रहमत में जिसको चाहे दाखिल करले और अगर दोनों फ़रीक़ (अलग अलग) हो जाते, तो जो उनमें काफ़िर थे, उनको हम दुख देने वाला अज़ाब देते (२५) जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िदकी और ज़िद भी जाहिलियत की तो खुदा ने अपने पैग़म्बर और मोमिनों पर अपनी तरफ़ से तस्कीन फ़रमाई और उनको परहेज़गारी की बात पर क़ायम रखा औरवह उसके मुस्तहिक़ और अहल थे और खुदा हर चीज से खबरदार है (२६)—रुकू—३—

बेशक खुदा ने अपने पैग़म्बर को सच्चा (और) सही ख्वाब दिखाया कि तुम, खुदा ने चाहा तो मसजिदे हराम में अपने सर मुण्डवा कर और अपने बाल कतरवा कर अम्नो अमान से दाखिल होगे और किसी तरह का खौफ़ न करोगे, जो बात तुम नहीं जानते थे उसको मालूम थी सो उसने इससे पहले ही जल्द फ़तह करा दी (२७) वही तो है जिसने अपने पैग़म्बर को हिदायत (की किताब) और दीने हक़ देकर भेजा, ताकि उसको

तमाम दिलों पर ग़ालिब करे और (हक़ ज़ाहिर करने के लिये) ख़ुदा ही गवाह काफ़ी है (२८) मोहम्मद ख़ुदा के पैग़म्बर हैं और जो लोग उनके साथ हैं वह काफ़िरों के हक़ में तो सख्त हैं और आपस में रहमदिल (ऐ देखने वाले) तू उनको देखता है कि (ख़ुदा के आगे) झुके हुए हैं सर ब सजूद हैं (और) ख़ुदा का फ़ज़ल और उसकी खुशनूदी तलब कर रहे हैं (कसरते) सजूद के असर से उनकी पेशानियों पर निशान पड़े हुए हैं उनके यही औसाफ़ तौरात में (मरक़ूम) हैं और यही औसाफ़ अन्जील में हैं, (वह) गोया एक खेती हैं जिसने (पहले ज़मीन से) अपनी सुई निकाली, फिर उसको मज़बूत किया, फिर मोटी हुई और फिर अपनी नाल पर सीधी खड़ी हो गई और लगी खेती वालों को खुश करने ताकि काफ़िरों का जी जलाये, जो लोग उनमें से ईमान लाये और नेक अमल करते रहे, उनसे ख़ुदा ने गुनाहों की बख़्शिश और अजरे अजीम का वायदा किया (२९)—रुकू ४

—०—

४९—सूर–हे–हुजरात

सूरत अल-हुजरात मदाने में उतरी और इसमें १८ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

मोमिनो! (किसी बात के जवाब में) ख़ुदा और उस के रसूल से पहले न बोल उठा करो, और ख़ुदा से डरते रहो, बेशक ख़ुदा सुनता जानता है (१) ऐ अहले ईमान! अपनी आवाज़ें

पैग़म्बर की आवाज़ से ऊँची न करो, और जिस तरह आपस में एक दूसरे से ज़ोर से बोलते हो (उसी तरह) उन के रूबरू ज़ोर से न बोला करो, (ऐसा न हो) कि तुम्हारे आमाल जाया हो जायें और तुम को ख़बर भी न हो (२) जो लोग पैग़म्बरे ख़ुदा के सामने दबी आवाज से बोलते हैं, ख़ुदा ने उन के दिल तक़वा के लिये आज़मा लिये हैं, उन के लिये बख़्शिश और अजरे अज़ीम है (३) जो लोग तुमको हुजरों के बाहर से आवाज देते हैं, उन में अक्सर बे अक़्ल हैं (४) और अगर वह सब्र किये रहते यहां तक कि तुम ख़ुद निकल कर उनके पास आते, तो यह उन के लिये बेहतर था, और ख़ुदा तो बख़्शने वाला मेहरबान है (५) मोमिनो ! अगर कोई बदकार तुम्हारे पास कोई ख़बर ले कर आये तो ख़ूब तहक़ीक़ कर लिया करो (मुबादा) कि किसी क़ौम को नादानी से नुक़सान पहुंचा दो, फिर तुम को अपने किये पर नादिम होना पड़े (६) और जान रखो कि तुम में ख़ुदा के पैग़म्बर हैं अगर बहुत सी बातों में वह तुम्हारा कहा मान लिया करे तो तुम मुश्किल में पड़ जाओ, लेकिन ख़ुदा ने तुमको ईमान अज़ीज़ बना दिया और उस को तुम्हारे दिलों में सजा दिया और कुफ़्र और गुनाह और ना फ़रमानी से तुम को बेज़ार कर दिया, यही लोग राहे हिदायत पर हैं (७) (यानी) ख़ुदा के फ़ज़ल और एहसान से, और ख़ुदा जानने वाला (और) हिकमत वाला है (८) और अगर मोमिनों में से कोई दो फ़रीक़ आपस में लड़ पड़ें तो उनमें सुल्हा करा दो और अगर एक फ़रीक़ दूसरे पर ज्यादती करे तो ज्यादती करने वाले से लड़ो यहाँ तक कि वह ख़ुदा के हुक्म की तरफ़ रजू लाये, तो दोनों फ़रीक़ में मसावात के साथ सुल्हा करा दो और इन्साफ़ से काम लो कि ख़ुदा इन्साफ़ करने वालों को पसन्द करता है (९) मोमिन तो आपस में भाई भाई हैं तो अपने दो भाईयों में सुल्हा करा दिया

करो, और खुदा से डरते रहो ताकि तुम पर रहमत की जाये (१०)—रुकू १

मोमिनो ! कोई क़ौम किसी क़ौम से तमस्ख़ुर न करे, मुमकिन है कि वह लोग उन से बेहतर हों, और न औरतें औरतों से (तमस्ख़ुर करें) मुमकिन है कि वह उन से अच्छी हों, और अपने (मोमिन भाई) को ऐब न लगाओ और न एक दूसरे का बुरा नाम रखो, ईमान लाने के बाद बुरा नाम (रखना) गुनाह है और जो तौबा न करें वह ज़ालिम हैं (११) ऐ अहले ईमान बहुत गुमान करने से एहतराज़ करो कि बाज़ गुमान गुनाह हैं और एक दूसरे के हाल का तजस्सुस न किया करो और न कोई किसी की ग़ैबत करे, क्या तुम में से कोई इस बात को पसन्द करेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाये ? उस से तो तुम ज़रूर नफ़रत करोगे (तो ग़ैबत न करो) और खुदा का डर रखो, बेशक खुदा तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है (१२) लोगो ! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी क़ौमें और क़बीले बनाये ताकि एक दूसरे को शिनाख़्त करो, और खुदा के नज़दीक तुम में ज़्यादा इज्ज़त वाला वह है जो ज्यादा परहेज़गार है बेशक खुदा सब कुछ जानने वाला और सब से ख़बरदार है (१३) देहाती कहते हैं कि हम ईमान ले आये कह दो कि तुम ईमान नहीं लाये (बल्कि यूं) कहो कि हम इस्लाम लाये हैं और ईमान तो हनूज़ तुम्हारे दिलों में दाखिल ही नहीं हुआ और अगर तुम खुदा और उसके रसूल की फ़रमाँबर्दारी करोगे, तो खुदा तुम्हारे आमाल में से कुछ कम नहीं करेगा, बेशक खुदा बख़्शने वाला मेहरबान हैं (१४) मोमिन तो वह हैं जो खुदा और उस के रसूल पर ईमान लाये फिर शक में न पड़े और खुदा की राह में माल और जान

से लड़े, यही लोग (ईमान के) सच्चे हैं (१५) उन से कहो कि क्या तुम खुदा को अपनी दीनदारी जितलाते हो, और खुदा तो आस्मानों और ज़मीन की सब चीज़ों से वाक़िफ़ है और खुदा हर शैय को जानता है (१६) यह लोग तुम पर एहसान रखते हैं कि मुस्लमान हो गये हैं, कह दो कि अपने मुस्लमान होने का मुझ पर एहसान न रखो बल्कि खुदा तुम पर एहसान रखता है कि उसने तुम्हें ईमान का रस्ता दिखाया बशर्ते कि तुम सच्चे (मुस्लमान) हो (१७) बेशक खुदा आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातों को जानता है, और जो कुछ तुम करते हो उसे देखता है (१८)—रुकू २

—०—

५०—सूर—हे—क़ाफ़

यह सूरते क़ाफ़ मक्के में उतरी और इसमें ४५ आयतें और ३ रुकू हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

क़ाफ़, क़ुरान मजीद की क़सम (कि मोहम्मद पैग़म्बरे खुदा है) (१) लेकिन इन लोगों ने ताज्जुब किया कि इन्हीं में से एक हिदायत करने वाला उनके पास आया तो काफ़िर कहने लगे कि यह बात तो (बड़ी) अजीब है (२) भला जब हम मर गये और मिट्टी हो गये (तो फिर ज़िन्दा होंगे ?) यह ज़िन्दा होना (अक़्ल से) बईद है (३) उनके जिस्मों को ज़मीन जितना (खा खा कर) कम करती जाती है, हमें मालूम है और हमारे पास

तहरीरी याददाश्त भी है (४) बल्कि (अजीब बात यह है कि) जब इन के पास (दीन) हक़ आ पहुंचा तो इन्होंने इस को झूठ समझा, सो यह एक उलझी हुई बात में (पड़ रहे हैं) (५) क्या उन्होंने अपने ऊपर आसमान की तरफ़ निगाह नहीं की कि हम ने उसको क्यों कर बनाया और (क्यों कर) सजाया और उस में शिगाफ़ तक नहीं (६) और ज़मीन को (देखो उसे) हमने फैलाया और उसमें पहाड़ रख दिये और उसमें हर तरह की खुशनुमा चीज़ें उगाईं (७) ताकि रजू लाने वाले बन्दे हिदायत और नसीहत हासिल करें (८) और आस्मान से बरकत वाला पानी उतारा और उस से बाग़ो बुस्तान उगाये और खेती का अनाज (९) और लम्बी लम्बी खजूरें जिनका गाभा तह ब तह होता है (१०) (यह सब कुछ) बन्दों को रोज़ी देने के लिये (किया है) और उस (पानी) से हमने शहरे मुर्दा (यानी ज़मीने उफ़्तादा) को ज़िन्दा किया (बस) इसी तरह (क़यामत के रोज़) निकल पड़ना है (११) इन से पहले नूह की क़ौम और कुएँ वाले और समूद झुटला चुके हैं (१२) और आद और फ़िरऔन और लूत के भाई (१३) और बन के रहने वाले और तुब्बा की क़ौम (ग़रज) उन सब ने पैग़म्बरों को झुटलाया तो हमारा वईद (अज़ाब) भी पूरा होकर रहा (१४) —रुकू १

क्या हम पहली बार पैदा करके थक गये हैं ? (नहीं) बल्कि यह अज़ सरे नौ पैदा करने में शक में (पड़े हुए) हैं (१५) और हम ही ने इन्सान को पैदा किया है और जो ख्यालात उसके दिल में गुज़रते हैं हम उन को जानते हैं, और हम उसकी रगे-जान से भी उस से ज़्यादा क़रीब है (१६) जब (वह कोई काम करता है तो) दो लिखने वाले जो दायें बायें बैठते हैं, लिख लेते हैं (१७) कोई बात उस की जबान पर नहीं आती, मगर एक निगैहबान उसके पास तैयार रहता है (१८) और मौत की

बेहोशी हक़ीक़त खोलने को तारी हो गई (ऐ इन्सान) यही (वह हालत) है जिससे तू भागता था (१९) और सूर फूंका जायेगा यही अज़ाब) वईद का दिन है (२०) और हर शख़्स (हमारे सामने) आयेगा एक (फ़रिश्ता) उस के साथ चलाने वाला होगा और एक (उस के अमलों की) गवाही देने वाला (२१) (यह वह दिन है कि) इस से तू ग़ाफ़िल हो रहा था, अब हमने तुझ पर से पर्दा उठा दिया, तो आज तेरी निगाह तेज़ है (२२) और उसका हमनशीन फ़रिश्ता कहेगा यह (आमाल नामा) मेरे पास हाज़िर है (२३) (हुक्म होगा कि) हर सरकश ना शुक्रे को दोज़ख में डाल दो (२४) जो माल में बुख़्ल करने वाला, हद से बढ़ने वाला, शुब्हे निकालने वाला था (२५) जिस ने ख़ुदा के साथ और माबूद मुक़र्रर कर रखे थे तो उसको सख़्त अज़ाब में डाल दो (२६) उस का साथी (शैतान) कहेगा कि ऐ हमारे पर्वरदिगार मैंने उस को गुमराह नहीं किया था बल्कि यह आप ही रस्ते से भटका हुआ था (२७) (ख़ुदा) फ़रमायेगा कि हमारे हज़ूर में रद्दो कद्द न करो हम तुम्हारे पास पहले ही (अज़ाब की वईद भेज चुके हैं (२८)—रुकू २

मेरे हाँ बात बदला नहीं करती, और मैं बन्दों पर ज़ुल्म नहीं किया करता (२९) उस दिन हम दोज़ख से पूछेंगे कि क्या तू भर गई ? वह कहेगी कि कुछ और भी है (३०) और बहिश्त परहेज़गारों के करीब कर दी जायेगी (कि मुतलक़) दूर न होगी (३१) यही वह चीज है जिसका तुम से वायदा किया जाता था (यानी) हर रजू लाने वाले हिफ़ाज़त करने वाले से (३२) जो ख़ुदा से बिन देखे डरता है और रजू लाने वाला दिल लेकर आया (३३) उसमें सलामती के साथ दाखिल हो जाओ यह हमेशा रहने का दिन है (३४) वहां जो चाहेंगे उन के लिये

हाज़िर है और हमारे हाँ और भी (बहुत कुछ) है (३५) और हमने उन से पहले कई उम्मतें हलाक कर डालीं, वह उन से क़ुव्वत में कहीं बढ़ कर थे वह शहरों में गश्त करने लगे कि कहीं भागने की जगह है (३६) जो शख़्स दिले (आगाह) रखता है या दिल से मुतवज्जोह होकर सुनता है उसके लिये इसमें नसीहत है (३७) और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो मखलूकात इन में है सब को छै दिन में बना दिया और हम को ज़रा भी तकान नहीं हुआ (३८) तो जो कुछ यह (कफ़्फ़ार) बकते हैं उस पर सब्र करो और आफ़ताब के तुलू होने से पहले अपने पर्वरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते रहो (३९) और रात के बाज़ औक़ात में भी, और नमाज़ के बाद भी उस (के नाम) की ताज़्ज़िया किया करो (४०) और सुनो जिस दिन पुकारने वाला नज़दीक की जगह से पुकारेगा (४१) जिस दिन लोग चीख़ यक़ीनन सुन लेंगे वही निकल पड़ने का दिन है (४२) हम ही तो ज़िन्दा करते हैं और हम ही मारते हैं और हमारे ही पास लौट कर आना है (४३) उस दिन ज़मीन उन पर से फट जायेगी और वह झट पट निकल खड़े होंगे, यह जमा करना हमें आसान है (४४) हमें खूब मालूम है और तुम उन पर ज़बरदस्ती करने वाले नहीं हो, पस जो हमारे (अज़ाब की) वईद से डरे उस को क़ुरान से नसीहत करते रहो (४५)—रुकू ३

५१—सूर-हे-ज़ारियात

सूरते ज़ारियात मक्के में उतरी और इसमें ६० आयतें और ३ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

बखेरने वालियों की क़सम जो उड़ा कर बखेर देती हैं (१)

फिर (पानी का बोझ उठाती हैं (२) फिर आहिस्ता आहिस्ता चलती हैं (३) फिर चीज़ें तक़सीम करती हैं (४) कि जिस चीज़ का तुम से वायदा किया जाता है वह सच्चा है (५) और इन्साफ़ (का दिन) ज़रूर वाक़ैय होगा (६) और आसमान की क़सम जिस में रस्ते हैं (७) कि (ऐ एहले मक्का) तुम एक मुतनाक़िस बात में (पड़े हुए) हो (८) इससे वही फिरता है जो (खुदा की तरफ़ से) फेरा जाये ( ) अटकल दौड़ाने वाले हलाक हों (१०) जो बेखबरी में भूले हुए हैं (११) पूछते हैं कि जज़ा का दिन कब होगा (१२) उस दिन (होगा) जब उनको आग में अज़ाब दिया जायेगा (१३) अब अपनी शरारत का मज़ा चखो, यह वही है जिसके लिये तुम जल्दी मचाया करते थे (१४) बेशक परहेज़गार बहिश्तों और चश्मों में (ऐश कर रहे) होंगे (१५) (और) जो जो नैयमतें उनका पर्वरदिगार उन्हें देता होगा उनको ले रहे होंगे बेशक इससे पहले वह नेकियाँ करते थे (१६) रात के थोड़े से हिस्से में सोते थे (१७) और औक़ाते सहर में बख्शिश मांगा करते थे (१८) और उनके माल में मांगने वाले और न मांगने वाले दोनों का हक़ होता था (१९) और यक़ीन करने वालों के लिये ज़मीन में (बहुत सी) निशानियाँ हैं (२०) और खुद तुम्हारे नफ़ूस में, तो क्या तुम देखते नहीं (२१) और तुम्हारा रिज़्क़ और जिस चीज़ का तुम से वायदा किया जाता है, आस्मान में है, (२२) आस्मानों और ज़मीन के मालिक की क़सम ! यह (उसी तरह) क़ाबिले यक़ीन है जिस तरह तुम बात करते हो (२३)—रुकू १

भला तुम्हारे पास इब्राहीम के मौअज़्ज़िज़ मेहमानों की खबर पहुंची है (२४) जब वह उनके पास आये तो पहले सलाम कहा, उन्होंने भी (जवाब में) सलाम कहा (देखा तो) ऐसे लोग कि न जान न पहचान (२५) तो अपने घर जाकर एक (भुना

हुआ) मोटा बछड़ा लाये (२६) (और खाने के लिये) उनके आगे रख दिया कहने लगे कि आप तनावुल क्यों नहीं करते (२७) और दिल में उनसे ख़ौफ़ मालूम किया (उन्होंने) कहा कि ख़ौफ़ न कीजिये, और उनको एक दानिशमन्द लड़के की बशारत भी सुनाई (२८) तो इब्राहीम की बीवी चिल्लाती आई, और अपना मूंह पीट कर कहने लगी कि (ऐ हे, एक तो) बुढ़िया और (दूसरे) बान्झ (२९) (उन्होंने) कहा (हां) तुम्हारे पर्वरदिगार ने यूं ही फ़रमाया है, वह बेशक साहिब हिक्मत और ख़बरदार है (३०)—

—०—

सत्ताईसवां पारा—क़ाल फ़म खुत्बुकुम

इब्राहीम ने कहा कि फ़रिश्तो ! तुम्हारा मुद्दआ क्या है (३१) उन्होंने कहा कि हम गुन्हेगार लोगों की तरफ़ भेजे गये हैं (३२) ताकि उन पर कन्घर बरसायें (३३) जिन पर हद से बढ़ जाने वालों के लियं तुम्हारे पर्वरदिगार के हाँ से निशान कर दिये गये हैं (३४) तो वहाँ जितने मोमिन थे उनको हमने निकाल लिया (३५) और उसमें एक घर के सिवा मुस्लमानों का कोई घर न पाया (३६) और जो लोग अज़ाबे अलीम से डरते हैं, उन के लिये वहाँ निशानी छोड़ दी (३७) और मूसा (के हाल) में (भी निशानी है) जब हमने उनको फ़िरऔन की तरफ़ खुला हुआ मौजज़ा देकर भेजा (३८) तो उसने अपनी जमायत के (घमन्ड) पर मूंह मोड़ लिया, और कहने लगा, यह तो जादूगर है या दीवाना (३९) तो हमने उसको और उसके लशकरों को पकड़ लिया और उनको दरिया में फेंक दिया, और वह काम ही

क़ाबिले मलामत करता था (४०) और आद (की क़ौम के) हाल में भी (निशानी है) जब हमने उन पर ना मुबारिक हवा चलाई (४१) वह जिस चीज़ पर चलती उसको रेज़ा रेज़ा किये बग़ैर न छोड़ती (४२) और (क़ौम) समूद (के हाल) में भी (निशानी है) जब उनसे कहा गया कि एक वक्त तक फ़ायदा उठा लो (४३) तो उन्होंने अपने पर्वरदिगार के हुक्म से सरकशी की, सो उनको कड़क ने आ पकड़ा और वह देख रहे थे (४४) फिर न तो वह उठने की ताकत रखते थे और न मुक़ाबिला ही कर सकते थे (४५) और इससे पहले (हम) नूह की क़ौम को (हलाक कर चुके थे) बेशक वह नाफ़रमान लोग थे (४६ —रुकू २

और आस्मानों को हम ही ने हाथों से बनाया और हमको सब मक़दूर है (४७) और ज़मीन को हम ही ने बिछाया, तो (देखो) हम क्या ख़ूब बिछाने वाले हैं (४८) और हर चीज़ की हमने दो किस्में बनाईं ताकि तुम नसीहत पकड़ो (४९) तो तुम लोग ख़ुदा की तरफ़ भाग चलो, मैं उसकी तरफ़ से तुमको सरीह रस्ता बताने वाला हूँ (५०) और ख़ुदा के साथ किसी और को माबूद न बनाओ, मैं उसकी तरफ़ से तुमको सरीह रस्ता बताने वाला हूँ (५१) और इसी तरह उनसे पहले उन लोगों के पास जो पैग़म्बर आता वह उसको जादूगर या दीवाना कहते (५२) क्या यह एक दूसरे को इस बात की वसीयत करते आये हैं, बल्कि यह शरीर लोग हैं (५३) तो इनसे ऐराज़ करो, तुमको (हमारी तरफ़ से) मलामत न होगी (५४) और नसीहत करते रहो कि नसीहत मोमिनों को नफ़ा देती है (५५) और मैंने जिन्नों और इन्सानों को इस लिये पैदा किया है कि मेरी इबादत करें (५६) मैं उन से तालिबे रिज़्क नहीं और न चाहता हूं कि मुझे

(खाना) खिलायें (५७) ख़ुदा ही तो रिज़्क़ देने वाला ज़ोर आवर और मज़बूत है (५८) कुछ शक नहीं कि इन ज़ालिमों के लिये भी (अज़ाब की) नौबत मुक़र्रर है, उनके साथियों की नौबत थी तो उनको मुझसे (अज़ाब) जल्दी नहीं तलब करना चाहिये (५९) जिस दिन का इन काफ़िरों से वायदा किया जाता है, उससे उनके लिये ख़राबी है (६०)—रुकू ३

५२–सूर–हे–तूर

यह सूरत तूर मक्के में उतरी, और इसमें ४९ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(कोहे) तूर की क़सम (१) और किताब की जो लिखी हुई है (२) कुशादा औराक़ में (३) और आबाद घर की (४) और ऊन्ची छत की (५) और उबलते हुए दरिया को (६) कि तुम्हारे पर्वरदिगार का अज़ाब वाक़ैय होकर रहेगा (७) और उसको कोई रोक नहीं सकेगा (८) जिस निन आसमान लरज़ने लगे कपकपा कर (९) और पहाड़ उड़ने लगें ऊन होकर (१०) उस दिन झुठलाने वालों के लिये ख़राबी है (११) जो हौज़े बातिल में पड़े खेल रहे हैं (१२) जिस दिन उनको आतिशे जहन्नुम की तरफ़ धकेल धकेल कर ले जायेंगे (१३) यही वह जहन्नुम है जिस को तुम झूठ समझते थे (१४) तो क्या यह जादू है या तुमको नज़र ही नहीं आता (१५) इसमें दाखिल हो जाओ और सब्र

करो या न करो, तुम्हारे लिये यकसाँ है, जो काम तुम किया करते थे (यह) उन्हीं का तुमको बदला मिल रहा है (१६) जो परहेजगार हैं वह बाग़ों और नैयमतों में होंगे (१७) जो कुछ उनके पर्वरदिगार ने उनको बख़्शा, उस (की वजह) से खुशहाल, और उनके पर्वरदिगार ने उनको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया (१८) अपने आमाल के सिले में मज़े से खाओ और पियो (१९) तख़्तों पर जो बराबर बराबर बिछे हुए हैं तकिया लगाये हुए, और बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरों से हम उनका अक़्द कर देंगे (२०) और जो लोग ईमान लाये और उनकी औलाद भी (राहे) ईमान में उनके पीछे चली, हम उनकी औलाद को भी उन (के दर्जे) तक पहुंचा देंगे और उनके आमाल में से कुछ कम न करेंगे, हर शख़्स अपने आमाल में कसा हुआ है (२१) और जिस तरह के मेवे और गोश्त को उनका जी चाहेगा, हम उनको अता करेंगे (२२) वहाँ वह एक दूसरे से जामे शराब झपट लिया करेंगे जिस (के पीने से) न हज़ियान सराई होगी, न कोई गुनाह की बात (२३) और नौजवान ख़िदमतगार (जो ऐसे होंगे) जैसे छुपाये हुए मोती, उनके आस पास फिरेंगे (२४) और एक दूसरे की तरफ़ रुख़ करके आपस में गुफ़्तगू करेंगे (२५) कहेंगे कि इस से पहले हम अपने घर में (ख़ुदा से) डरते थे (२६) तो ख़ुदा ने हम पर एहसान फ़रमाया और हमें लू के अज़ाब से बचा लिया (२७) इससे पहले हम उससे दुआयें किया करते थे बेशक वह एहसान करने वाला मेहरबान है (२८)—रुकू १

तो (ऐ पैग़म्बर) तुम नसीहत करते रहो, तुम अपने पर्वरदिगार के फ़ज़्ल से न तो काहिन हो और न दीवाने (२९) क्या काफ़िर कहते हैं कि यह शायर है ? और हम इसके हक में जमाने के हवादस का इन्तज़ार कर रहे हैं (३०) कह दो कि इन्तज़ार किये जाओ, मैं भी तुम्हारे साथ इन्तज़ार करता हूं

(३१) क्या उनकी अक़्लें उनको यही सिखाती हैं, बल्कि यह लोग हैं ही शरीर (३२) क्या (कफ़्फ़ार) कहते हैं कि इस (पैग़म्बर) ने क़ुरान अज़ख़ुद बना लिया है ? बात यह है कि यह (ख़ुदा पर) ईमान नहीं रखते (३३) अगर यह सच्चे हैं तो ऐसा कलाम बना तो लायें (३४) क्या यह किसी के पैदा किये बग़ैर ही पैदा हो गये हैं या यह ख़ुद (अपने तईं) पैदा करने वाले हैं (३५) या उन्होंने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया है (नहीं बल्कि यह यक़ीन ही नहीं रखते (३६) क्या इनके पास तुम्हारे पर्वरदिगार के ख़ज़ाने हैं या यह (कहीं के) दारोग़ा हैं (३७) या इनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर (चढ़ कर आस्मान से बातें) सुन आते हैं तो जो सुनकर आता है वह सरीह सनद दिखाये (३८) तो क्या ख़ुदा की तो बेटियाँ और तुम्हारे बेटे (३९) (ऐ पैग़म्बर) क्या तुम इनसे सिला मांगते हो कि इन पर तावान का बोझ पड़ रहा है (४०) या इनके पास ग़ैब (का इल्म) है कि वह उसे लिख लेते हैं (४१) क्या यह कोई दाँव करना चाहते हैं ? तो काफ़िर तो ख़ुद दाँव में आने वाले हैं (४२) क्या ख़ुदा के सिवा इनका कोई और माबूद है ? ख़ुदा इनके शरीक बनाने से पाक है (४३) और अगर यह आस्मान से (अज़ाब) का कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो कहें कि यह गाढ़ा बादल है (४४) पस इनको छोड़ दो यहाँ तक कि वह रोज जिसमें वह बेहोश कर दिये जायेंगे सामने आ जाये (४५) जिस दिन इनका कोई दाँव कुछ भी काम न आये और न इनको कहीं से मदद ही मिले (४६) और ज़ालिमों के लिये इसके सिवा और अज़ाब भी है लेकिन इनमें के अक्सर नहीं जानते (४७) और तुम अपने पर्वरदिगार के हुक्म के इन्तज़ार में सब्र किये रहो, तुम तो हमारी आँखों के सामने हो, और जब उठा करो तो

अपने पर्वरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह किया करो (४८) और रात के बाज़ औक़ात में भी, और सितारों के ग़रूब होने के बाद भी उसकी तज़विया किया करो (४९)—रुकू २

—:०:—

५३—सूर—हे—अल नज़्म

यह सूरते नज़म मक्के में उतरी, और इसमें ६२ आयतें और ३ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

तारे की क़सम जब गायब होने लगें (१) कि तुम्हारे रफ़ीक़ (मोम्मद) न रस्ता भूले हैं न भटके हैं (२) और न ख़्वाहिशें नफ़्स से मूंह से बात निकालते हैं (३) यह (क़ुरान) तो हुक्मे ख़ुदा है, जो (इनकी तरफ़) भेजा जाता है (४) इनको निहायत क़ुव्वत वाले ने सिखाया (५) (यानी जिब्राईल) ताक़तवर ने, फिर वह पूरे नज़र आये (६) और वह (आस्मान के) ऊँचे किनारे में थे (७) फिर क़रीब हुए और आगे बढ़े (८) तो दो कमान के फ़ासले पर या इससे भी कम (९) फिर ख़ुदा ने अपने बन्दे की तरफ़ जो भेजा सो भेजा (१०) जो कुछ उन्होंने देखा उनके दिल ने उसको झूठ न जाना (११) क्या जो कुछ वह देखते हैं तुम उसमें उनसे झगड़ते हो (१२) और उन्होंने उसको एक और बार भी देखा है (१३) परली हद की बेरी के पास (१४) उसी के पास रहने की जन्नत है (१५) जब कि उस बेरी पर छा रहा था जो छा रहा था (१६) उनकी आँख न तो और

तरफ़ माईल हुई और न (हद से) आगे बढ़ी (१७) उन्होंने अपने पर्वरदिगार (की क़ुदरत) की कितनी ही बड़ी बड़ी निशानियाँ देखीं (१८) भला तुम लोगों ने लात व इज़ा को देखा (१९) और तीसरे मनात को कि यह बुत कहीं ख़ुदा के हो सकते हैं (२०) (मुश्रिको) क्या तुम्हारे लिये तो बेटे और ख़ुदा के लिये बेटियाँ (२१) यह तक़सीम तो बहुत बेइन्साफ़ी की है (२२) वह तो सिर्फ़ नाम ही नाम है जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने गढ़ लिये हैं, ख़ुदा ने तो उनकी कोई सनद नाज़िल नहीं की यह लोग मेहज़ ज़िन (फ़ासिद) और ख्वाहिशते नफ़्स के पीछे चल रहे हैं हालाँकि उनके पर्वरदिगार की तरफ़ से उनके पास हिदायत आ चुकी है (२३) क्या जिस चीज़ की इन्सान आरज़ू करता है वह उसे ज़रूर मिलती है (२४) आख़िरत और दुनिया तो अल्लाह ही के हाथ में है (२५)—रुकू १

और आस्मानों में बहुत से फ़रिश्ते हैं जिनकी सिफ़ारिश कुछ भी फ़ायदा नहीं देती, मगर उस वक्त कि ख़ुदा जिसके लिये चाहे इजाज़त बख्शे और (सिफ़ारिश) पसन्द करे (२६) जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते वह फ़रिश्तों को (ख़ुदा की) लड़कियों के नाम से मौसूम करते हैं (२७) हालाँकि उनको इसकी कुछ ख़बर नहीं, वह सिर्फ़ हुस्ने ज़िन्न पर चलते हैं और ज़िन्न यक़ीन के मुकाबिले में कुछ काम नहीं आता (२८) तो जो हमारी याद से रुगर्दानी करे और सिर्फ़ दुनिया ही की ज़िन्दगी का ख्वाहाँ हो, उससे तुम भी मुँह फेर लो (२९) उनके इल्म की यही इन्तिहा है तुम्हारा पर्वरदिगार उसको भी ख़ूब जानता है जो उसके रस्ते से भटक गया और उससे भी ख़ूब वाक़िफ़ है जो रस्ते पर चला (३०) और जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब ख़ुदा ही का है (और उसने खलक़त को)

इस लये (पैदा किया है) कि जिन लोगों ने बुरे काम किये, उनको उनके आमाल का (बुरा) बदला दे, और जिन्होंने नेकियाँ कीं उनको नेक बदला दे (३१) जो सग़ीरा गुनाहों के सिवा बड़े बड़े गुनाहों और बेहयाई की बातों से इज्तिनाब करते हैं, बेशक तुम्हारा पर्वरदिगार बड़ी बख्शिश वाला है, वह तुमको ख़ूब जानता है, जब उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया और जब तुम अपनी माओं के पेटों में बच्चे थे, तो अपने आपको पाक साफ़ जिताओ, जो परहेज़गार है वह इससे ख़ूब वाक़िफ़ है (३२)—रुकू २

भला तुमने उस शख्स को देखा जिसने मूंह फेर लिया (३३) और थोड़ा सा दिया (फिर) हाथ रोक लिया ? (३४) क्या उसके पास ग़ैब का इल्म है कि यह उसको देख रहा है (३५) क्या जो बातें मूसा के सहीफ़ों में हैं उनकी उसको ख़बर नहीं पहुंची ? (३६) और इब्राहीम की जिन्होंने (हक़ ताअत और रसालत) पूरा किया (३७) यह कि कोई शख्स दूसरे (के गुनाह) का बोझ नहीं उठायेगा (३८) और यह कि इन्सान को वही मिलता है जिसकी वह कोशिश करता है (३९) और यह कि उसकी कोशिश देखी जायेगी (४०) फिर उसका पूरा पूरा बदला दिया जायेगा (४१) और यह कि तुम्हारे पर्वरदिगार ही के पास पहुंचना है (४२) और यह कि वह हंसाता और रुलाता है (४३) और यह कि वही मारता और जिलाता है (४४) और यह कि वही नर और मादा क़िसम के (हैवान) पैदा करता है (४५) (यानो) नुत्फ़े से जो (रहम में) डाला जाता है (४६) और यह कि (क़यामत को) उसी पर दोबारा उठाना लाज़िम है (४७) और यह कि वही दौलतमन्द बनाता और मुफ़लिस करता है (४८) और यह कि वही शेयरा (एक सितारा जिसको अरब वाले परस्तिश करते थे) का मालिक है

(४९) और यह कि उसी ने आदे अव्वल को हलाक कर डाला (५०) और समूद को भी, ग़रज़ (किसी को) बाक़ी न छोड़ा (५१) और उनसे पहले क़ौमे नूह को भी, कुछ शक नहीं कि वह लोग बड़ेही ज़ालिम और बड़े ही सरकश थे ५२) उसी ने उल्टी हुई बस्तियों को दे पटका (५३) फिर उन पर छाया जो छाया (५४) तो (ऐ इन्सान) तू अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत पर झगड़ेगा (५५) यह (मोहम्मद) भी अगले डर सुनाने वालों में से एक डर सुनाने वाले हैं (५६) आने वाली (यानी क़यामत) क़रीब आ पहुंची (५७) उस (दिन की तकलीफ़ों) को ख़ुदा के सिवा, कोई दूर नहीं करसकेगा (५८) (ऐ मुन्किरीने ख़ुदा) क्या तुम इस कलाम से ताज्जुब करते हो (५९) और हंसते हो और रोते नहीं (६०) और तुम ग़फ़लत में पड़े हो (६१) तो ख़ुदा के आगे सज्दा करो, और (उसी की) इबादत करो (६२)—रुकू ३

—०—

५४—सूर-हे-अल-क़मर

यह सूरते क़मर मक्के में उतरी और इसमें ५५ आयतें और ३ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क़यामत क़रीब आ पहुंची और चान्द शक़ हो गया (१) और अगर काफ़िर कोई निशानी देखते हैं तो मूंह फेर लेते हैं और कहते हैं कि यह एक हमेशा का जादू है (२) और उन्होंने झुटलाया और अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी की और हर काम का

वक्त मुक़र्रर है (३) और उन को ऐसे हालात (साबिक़ीन) पहुँच चुके हैं, जिन में इब्रत है (४) और कामिल दानाई (की किताब भी) लेकिन डराना उन को कुछ फ़ायदा नहीं देता (५) तो तुम भी उन की कुछ पर्वाह न करो, जिस दिन बुलाने वाला उन को एक नाखुश चीज़ की तरफ़ बुलायेगा (६) तो आंखें नीची किये हुए क़ब्रों से निकल पड़ेंगे गोया बिखरी हुई टिड्डियां हैं (७) उस बुलाने वाले की तरफ़ दौड़ते जाते होंगे, काफ़िर कहेंगे, यह दिन बड़ा सख्त है (८) उन से पहले नूह की क़ौम ने भी तकज़ीब की थी, तो उन्होंने हमारे बन्दे को झुटलाया और कहा कि दीवाना है और उन्हें डाण्टा भी (९) तो उन्होंने अपने पर्वरदिगार से दुआ की कि (बारे इल्हा) मैं (इन के मुक़ाबिले में) कमज़ोर हूं तू (इन से) बदला ले (१०) पस हमने ज़ोर के मैंह से आस्मान के दहाने खोल दिये (११) और ज़मीन में चश्मे जारी कर दिये तो पानी एक काम के लिये जो मुक़द्दर हो चुका था जमा होगया (१२) और हमने नूह को एक कश्ती पर जो तख्तों से तैयार की गई थी, सवार कर लिया (१३) वह हमारी आंखों के सामने चलती थी (यह सब कुछ) उस शख्स के इन्तक़ाम के लिये (किया गया) था जिस को काफ़िर मानते न थे (१४) और हमने इस को एक इब्रत बना छोड़ा तो कोई है कि सोचे समझे (१५) सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ (१६) और हमने क़ुरान को समझने के लिये आसान कर दिया है, तो कोई है कि सोचे समझे (१७) आद ने भी तकज़ीब की थी सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ (१८) हमने उन पर सख्त मन्हूस दिन में आन्धी चलाई (१९) वह लोगों को (इस तरह) उखेड़े डालती थी, गोया उखड़ी हुई खजूरों के तने हैं (२०) सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ

(२१) और हमने क़ुरान को समझने के लिये आसान कर दिया है तो कोई है कि सोचे समझे ? (२२)—रुकू १

समूद ने भी हिदायत करने वालों को झुटलाया (२३) और कहा कि भला एक आदमी जो हम ही में से है, हम उसकी पैरवी करें ? यूं हो तो हम गुमराही और दीवान्गी में पड़ गये (२४) हम सब में से उसी पर वही नाज़िल हुई है ? (नहीं) बल्कि यह झूठा ख़ुद पसन्द है (२५) उन को कल ही मालूम हो जायेगा कि कौन झूठा ख़ुद पसन्द है (२६) ऐ सालेह) हम इन की आज़-माईश के लिये ऊण्टनी भेजने वाले हैं तो तुम इन को देखते रहो और सब्र करो (२७) और इन को आगाह कर दो कि इन में पानी की बारी मुक़र्रर कर दी गई है (हर बारी वाले कोअपनी) बारी पर आना चाहिये (२८) तो उन लोगों ने अपने रफ़ीक़ को बुलाया, तो उस ने (ऊण्टनी को) पकड़ कर उसकी कौञ्चें काट डालीं (२९) सो (देख लो कि) मेरा अज़ाब और डराना कैसा है (३०) हमने उन पर (अज़ाब के लिये) एक चीख़ भेजी तो वह ऐसे हो गये जैसे बाढ़ वाले की सूखी और टूटी हुई बाढ़ (३१) और हमने क़ुरान को समझने के लिये आसान कर दिया है तो कोई है कि सोचे समझे ? (३२) लूत की क़ौम ने भी डर सुनाने वालों को झुटलाया था (३३) तो हमने उन पर कन्कर भरी हवा चलाई, मगर लूत के घर वाले कि हमने उन को पिछली रात ही से बचा लिया (३४) अपने फ़ज़ल से, शुक्र करने वाले को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं (३५) और (लूत ने) उन को हमारी पकड़ से डराया था, मगर उन्होंने डराने में शक किया (३६) और उन से उन के मेहमानों को ले लेना चाहा तो हमने उन की आँखें मिटा दीं सो (अब) मेरे अज़ाब और डराने के मज़े चखो (३७) और उन पर सुब्ह सवेरे ही अटल अज़ाब आ

नाज़िल हुआ (३८) तो अब मेरे अज़ाब और डराने के मज़े चखो (३९) और हमने क़ुरान को समझने के लिये आसान कर दिया है, तो कोई है कि सोचे समझे (४०)—रुकू २

और क़ौमे फ़िरऔन के पास भी डर सुनाने वाले आये (४१) उन्होंने हमारी तमाम निशानियों को झुटलाया, तो हमने उन को इस तरह पकड़ लिया जिस तरह एक क़वी और ग़ालिब शख़्स पकड़ लेता है (४२) (ऐ अहले अरब) क्या तुम्हारे काफ़िर उन लोगों से बेहतर हैं या तुम्हारे लिये (पहली) किताबों में कोई फ़ारिग़ ख़ती लिख दी गई है ? (४३) क्या यह लोग कहते हैं कि हमारी जमायत बड़ी मज़बूत है ?(४४) अन्क़रीब यह जमायत शिकस्त खायेगी, और यह लोग पीठ फेर कर भाग जायेंगे (४५) उनके वायदे का वक्त तो क़यामत है,और क़यामत बड़ी सख़्त और बहुत तल्ख़ है (४६) बेशक गुन्हेगार लोग गुमराही और दीवान्गी में (मुब्तिला) हैं (४७) उस रोज़ मूंह के बल दोज़ख़ में घसीटे जायेंगे, अब आग का मज़ा चखो (४८) हमने हर चीज़ अन्दाज़ ऐ-मुक़र्रर के साथ पैदा की है (४९) और हमारा हुक्म तो आँख झपकने की तरह एक बात होती है (५०) और हम तुम्हारे हम मज़हबों को हलाक कर चुके हैं तो कोई है कि सोचे समझे ? (५१) और जो कुछ उन्होंने किया (उन के) आमाल नामों में (मुन्दरिज) है (५२) (यानी) हर छोटा और बड़ा काम लिख दिया गया है (५३) जो परहेज़गार हैं, वह बाग़ों और नहरों में होंगे (५४) (यानी) पाक मक़ाम में, हर तरह की क़ुदरत रखने वाले बादशाह की बारगाह में (५५)—रुकू ३

—०—

५५—सूर-हे-अल-रेहमान

यह सूरते रेहमान मक्के में उतरी और इसमें ७८ आयतें और ३ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ख़ुदा जो) निहायत मेहरबान (१) उसी ने क़ुरान की तालीम फ़रमाई (२) उसी ने इन्सान को पैदा किया (३) उसी ने उस को बोलना सिखाया (४) सूरज और चान्द एक हिसाबे मुक़र्रर से चल रहे हैं (५) और बूटियां और दरख़्त सज्दा कर रहे हैं (६) और उसी ने आस्मान को बलन्द किया और तराज़ू क़ायम की (७) कि तराज़ू से (तोलने) में हद से तजावुज़ न करो (८) और इन्साफ़ के साथ ठीक तोलो और तोल कम मत करो (९) और उसी ने ख़लक़त के लिये ज़मीन बिछाई (१०) उस में मेवे और खजूर के दरख़्त हैं, जिन के खोशों पर ग़िलाफ़ होते हैं (११) और अनाज जिस के साथ भुस होता है और ख़ुशबूदार फूल (१२) तो (ऐ गिरोहे जिन्नो इन्स) तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे ? (१३) उसी ने इन्सान को ठीकरे की तरह खन्खनाती मिट्टी से बनाया (१४) और जिन्नात को आग के शोले से पैदा किया (१५) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (१८) उसी ने दो दरिया रवाँ किये, जो आपस में मिलते हैं (१९) दोनों में एक आड़ है कि (उस से) तजावुज़ नहीं कर सकते (२०) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (२१) दोनों दरियाओं से मोती और मूंगे निकलते हैं (२२) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को

झुटलाओगे (२३) और जहाज़ भी उसी के हैं जो दरिया में पहाड़ों की तरह ऊंचे खड़े होते हैं (२४) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (२५)—रुकू १

जो (मखलूक़) ज़मीन पर है सब को फ़ना होना है (२६) और तुम्हारे पर्वरदिगार ही की ज़ाते (बा बरकत) जो साहिबे जलालो अज़मत है बाकी रहेगी (२७) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (२८) आस्मान और ज़मीन में जितने लोग हैं सब उसी से माँगते हैं, वह हर रोज़ काम में मसरुफ़ रहता है (२९) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (३०) ऐ दोनो जमाअतो ! हम अन्क़रीब तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जोह होते हैं (३१) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयतम को झुटलाओगे (३२) ऐ गिरोहे जिन्नो इन्स, अगर तुम्हें क़ुदरत हो कि आस्मान और ज़मीन के किनारों से निकल जाओ, तो निकल जाओ और ज़ोर के सिवा तो तुम निकल सकने ही के नहीं (३३) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (३४) तुम पर आग के शोले और धुआँ छोड़ दिया जायेगा तो फिर तुम मुक़ाबिला न कर सकोगे (३५) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (३६) फिर जब आस्मान फट कर तेल की तलछट की तरह गुलाबी हो जायेगा (तो) वह कैसा हौलनाक दिन होगा (३७) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (३८) उस रोज न तो किसी इन्सान से उस के गुनाहों के बारे में पुरसिश की जायेगी और न किसी जिन्न से (३९) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (४०) गुन्हेगार अपने चेहरे ही से पहचान लिये जायेंगे तो पेशानी के बालों और

पाँव से पकड लिये जायेंगे (४१) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (४२) यही वह जहन्नुम है जिसे गुन्हेगार लोग झुटलाते थे (४३) वह दोज़ख और खौलते हुए गर्म पानी के दर्मियान घूमते फिरेंगे (४४) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (४५)

—रुकू - २—

और जो शख्स अपने पर्वरदिगार के सामने खड़े होने से डरा, उस के लिये दो बाग़ हैं (४६) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे ? (४७। इन दोनों में बहुत सी शाखें (यानी क़िस्म क़िस्म के मेवों के दरख्त हैं) (४८) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटला-ओगे ? (४९) ्न में दो चश्मे बह रहे हैं (५०) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (५१) उन में सब मेवे दो दो क़िस्म के हैं (५२) तो तुम अपने पर्वर-दिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (५३) (एहले जन्नत) ऐसे बिछौनों पर जिन के असतर अतलस के हैं वह तकिया लगाये हुए होंगे और दोनों बाग़ों के मेवे क़रीब (झुक रहे) हैं (५४) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (५५) उन में नीची निगाह वाली औरतें हैं जिनको अहले जन्नत से पहले न किसी इन्सान ने हाथ लगाया न जिन्न ने (५६) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे ? (५७) गोया वह याक़ूत और मिरजान हैं (५८) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (५९) नेकी का बदला नेकी के सिवा कुछ नहीं है (६०) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (६१) और इन दो बाग़ों के अलावा दो बाग़ और हैं (६२) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को

झुटलाओगे (६३) दोनों खूब गहरे सब्ज़ (६४) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (६५) उन में दो चश्मे उबल रहे हैं (६६) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (६७) उन में मेवे खजूरें और अनार हैं (६८) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (६९) उन में नेक सीरत (और) खूब-सूरत औरतें हैं (७०) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (७१) (वह) हूरें हैं) जो खैमों में मस्तूर (हैं) (७२) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (७३) उन को अहले जन्नत से पहले न किसी इन्सान ने हाथ लगाया और न किसी जिन्न ने (७४) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (७५) सब्ज़ क़ालीनों और नफ़ीस मसनदो पर तकिया लगाये बैठे होंगे (७६) तो तुम अपने पर्वरदिगार की कौन कौन सी नैयमत को झुटलाओगे (७७) (ऐ मोहम्मद) तुम्हारा पर्वरदिगार जो साहिबे जलालो अज़मत है उसका नाम बड़ा बाबरकत है (७८)—रुकू ३

५६—सूर-हे-अल वाक़िया

यह सूरत वाक़िया मक्के में उतरी, और इसमें ९६ आयतें और ३ रुकू हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

ⓞ जब वाक़ा होने वाली वाक़ा हो जाये (१) उसके वाक़ा होने

में कुछ झूठ नहीं (२) किसी को पस्त करे किसी को बलन्द (३) जब ज़मीन भौंचाल से लरज़ने लगे (४) और पहाड़ टूट कर रेज़ा रेज़ा हो जायें (५) फिर गुबारा हो कर उठने लगे (६) और तुम लोग तीन क़िसम हो जाओ (७) तो दाहिने हाथ वाले (सुब्हान अल्लाह) दाहिने हाथ वाले क्या (ही चैन में) हैं (८) और बायें हाथ वाले अफ़सोस, बायें हाथ वाले क्या (गिरफ़्तारे अज़ाब) हैं (९) और जो आगे बढ़ने वाले हैं (उनका क्या कहना) वह आगे ही बढ़ने वाले हैं (१०) वही (ख़ुदा के) मुक़र्रब हैं(११) नैयमत के बहिश्तों में (१२) वह बहुत से तो अगले लोगों में से होंगे (१३) और थोड़े से पिछलों में से (१४) (लालो याक़ूत वग़ैरा) जड़े हुए तख़्तों पर (१५) आमने सामने तकिया लगाये हुए (१६) नौजवान ख़िदमत गुज़ार जो हमेशा (एक ही हालत में) रहेंगे, उनके आस पास फिरेंगे (१७) यानी आबख़ोरे और आफ़ताबे और साफ़ शराब के गिलास ले लेकर (१८) उस से न तो सर में दर्द होगा और न उन की अक़्लें ज़ाईल होंगी (१९) और मेवे जिस तरह के उन को पसन्द हों (२०) और परिन्दों का गोश्त जिस क़िसम का उन का जी चाहे (२१) और बड़ी आँखों वाली हूरें (२२) जैसे (हिफ़ाज़त से) तेह किये हुए आब-दार मोती (२३) यह उन आमाल का बदला है जो वह करते थे (२४) वहाँ न बेहूदा बात सुनेंगे और न गाली ग्लौच (२५) हाँ उन का कलाम सलाम सलाम (होगा) (२६) और दाहिने हाथ वाले (सुब्हान अल्लाह) दाहिने हाथ वाले क्या (ही ऐश में) हैं (२७) (यानी) बेख़ार की बेरियों (२८) और तेह ब तह गेलों (२९) और लम्बे लम्बे सायों (३०) और पानी के झरनों (३१) और मेवा हाय कसीरा के बाग़ों में (३२) जो न कभी ख़त्म हों और न उन से कोई रोके (३३) और ऊँचे ऊँचे फर्शों में (३४) हमने इन (हूरों) को पैदा किया (३५) तो उन को कंवारियाँ

बनाया (३६) (और शौहरों की) प्यारियाँ और हम उम्र (३७) (यानी) दाहिने हाथ वालों के लिये (३८)—रुकू १

(यह) बहुत से तो अगले लोगों में से हैं (३९) और बहुत से पिछलों में से (४०) और बायें हाथ वाले (अफ़सोस) बायें हाथ वाले क्या (ही अज़ाब में) हैं (४१) (यानी दोज़ख़ की) लपट और खौलते हुए पानी में (४२) और सियाह धुऐं के साये में (४३) (जो) न ठण्डा (है) न ख़ुशनुमा (४४) यह लोग इस से पहले ऐशे नईम में पड़े हुए थे (४५) और गुनाहे अज़ीम पर अड़े हुए थे (४६) और कहा करते थे कि भला जब हम मर गये और मिट्टी हो गये और हड्डियाँ (ही हड्डियाँ रह गये) तो क्या हमें फिर उठना होगा (४७) और क्या हमारे बाप दादा को भी (४८) कह दो कि बेशक पहले और पिछले (४९) (सब) एक रोज़ मुक़र्रर वक्त पर जमा किये जायेंगे (५०) फिर तुम ऐ झुटलाने वाले गुमराहो ! (५१) थोहर के दरख़्त खाओगे (५२) और उसी से पेट भरोगे (५३) और उस पर खौलता हुआ पानी पिओगे (५४) और पियोगे भी तो इस तरह, जैसे प्यासे ऊण्ट पीते हैं (५५) जज़ा के दिन यह उन की ज़ियाफ़त होगी (५६) हम ने तुम को (पहली बार भी तो) पैदा किया है, तो तुम (दोबारा उठने को) क्यों सच नहीं समझते (५७) देखो तो कि जिस (नुत्फ़े) को तुम (औरतों के रहम में) डालते हो (५८) क्या तुम उस से (इन्सान) को बनाते हो या हम बनाते हैं (५९) हम ने तुम में मरना ठहरा दिया है और हम इस बात से आजिज़ नहीं (६०) कि तुम्हारी तरह के और लोग तुम्हारी जगह ले आयें और तुम को ऐसे जहान में जिस को तुम नहीं जानते पैदा कर दें (६१) और तुम ने पहली पैदाईश तो जान ही ली है, फिर तुम सोचते क्यों नहीं (६२) भला देखो तो कि जो कुछ तुम बोते हो (६३) तो क्या तुम उसे उगाते हो या हम उगाते हैं

(६४) और अगर हम चाहें तो उसे चूरा चूरा करदें और तुम बातें बनाते रह जाओ (६५) (कि हाय) हम तो मुफ़्त तावान में फंस गये (६६) बल्कि हम हैं ही बदनसीब (६७) भला देखो तो कि जो पानी तुम पीते हो (६८) क्या तुमने उसको बादल से नाज़िल किया है, या हम नाज़िल करते हैं (६९) अगर हम चाहें तो हम उसे खारी करदें, फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते (७०) भला देखो तो जो आग तुम दरख़्त से निकालते हो (७१) क्या तुमने उसके दरख़्त को पैदा किया है, यह हम पैदा करते हैं (७२) हमने उसे याद दिलाने और मुसाफिरों के बरतने को को बनाया है (७३) तो तुम अपने पर्वरदिगारे बुजुर्ग के नाम की तस्वीह करो (७४)—रुकू २

हमें तारों की मन्ज़िलों की क़सम (७५) और अगर तुम समझो तो यह बड़ी क़सम है (७६) कि यह बड़े रुत्बे का क़ुरान है (७७) (जो) किताबे मेहफ़ूज़ में (लिखा हुआ) है (७८) इसको वही हाथ लगाते हैं जो पाक हैं (७९) पर्वरदिगारे आलम की तरफ़ से उतारा गया है (८०) क्या तुम इस कलाम से इन्कार करते हो (८१) और अपना वज़ीफ़ा यह बनाते होकि इसे झुटलाते हो (८२) भला जब (रुह) गले में आ पहुंचती है (८३) और तुम उस वक्त की (हालत को) देखा करते हो (८४) और हम उस (मरने वाले) से तुम से भी ज़्यादा नज़दीक होते हैं, लेकिन तुम

को नज़र नहीं आते (८५) पस अगर तुम किसी के बस में नहीं हो (८६) तो अगर सच्चे हो तो रुह को फेर क्यों नहीं लेते (८७) और फिर अगर वह (ख़ुदा के) मुन्करिबों में से है (८८) तो (उसके लिये) आराम और खुशबूदार फूल और नैयमत के बाग हैं (८९) और अगर वह दायें हाथ वालों में से है (९०) तो (कहा जायेगा) तुझ पर दाहिने हाथ वालों की तरफ़ से सलाम

(९१) अगर वह झुटलाने वाले गुमराहों में से है (९२) तो (उसके लिये) खौलते पानी की ज़ियाफ़त है (९३) और जहन्नुम में दाख़िल किया जाना (९४) यह (दाखिल किया जाना) यक़ीनन सही (यानी) हक़्क़ुल यक़ीन हैं (९५) तो तुम अपने पर्वरदिगारे बुज़ुर्ग के नाम की तस्बीह करते रहो (९६)—रुकू ३

—०—

५७—सूर—हे--अलहदीद—

यह सूरते हदीद मदीने में उतरी, और इसमें २९ आयतें और ४ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जो मख़लूक़ आस्मानों और ज़मीन में है ख़ुदा की तस्बीह करती हैं और वह ग़ालिब (और) हिकमत वाला है (१) आस्मानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है (वही) ज़िन्दा करता और मारता है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है (२) वह (सब से) पहला और (सब से) पिछला और (अपनी क़ुदरतों से सब पर) ज़ाहिर और (अपनी ज़ात से) पोशीदा है और वह तमाम चीज़ों को जानता है (३) वही है जिसने आस्मानों और ज़मीन को छै दिन में पैदा किया, फिर अर्श पर जा ठैहरा, जो चीज़ ज़मीन में दाख़िल होती है और उससे निकलती है और जो आस्मान से उतरती और जो उसकी तरफ़ चढ़ती है, सब उसको मालूम है और तुम जहाँ कहीं हो वह तुम्हारे साथ है और जो कुछ तुम करते हो ख़ुदा उसको देख रहा है (४) आस्मानों और

ज़मीन की बादशाही उसी की है और सब उमूर उसी की तरफ़ रजू होते हैं (५) वही रात को दिन में दाखिल करता और दिन को रात में दाखिल करता है और वह दिलों के भेदों तक से वाक़िफ़ है (६) (तो ख़ुदा पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और जिस (माल) में उसने तुमको (अपना) नाईब बनाया है, उसमें से खर्च करो जो लोग तुम में से ईमान लाये और (माल) खर्च करते रहे उनके लिये बड़ा सवाब है (७) और तुम कैसे लोग हो कि ख़ुदा पर ईमान नहीं लाते ? हालाँकि उसके पैग़म्बर तुम्हें बुला रहे हैं कि अपने पर्वरदिगार पर ईमान लाओ, और अगर तुमको बावर हो तो वह तुमसे (इसका) एहद भी ले चुका है (८)वही तो है जो अपने वायदे पर वाज़ैह(उल मतालिब) आयतें नाज़िल करता है ताकि तुमको अन्धेरों से निकाल कर रोशनी में लाये, और बेशक ख़ुदा तुम पर निहायत शफ़क़त करने वाला मेहरबान है (९) और तुमको क्या हुआ है कि ख़ुदा के रस्ते में खर्च नहीं करते हालाँकि आस्मानों और ज़मीन की विरासत ख़ुदा ही की है. जिस शख्स ने तुम में से फ़तह (मक्का) से पहले खर्च किया और लड़ाई की वह (और जिसने यह काम पीछे किये वह) बराबर नहीं, इन लोगों का दर्जा उन लोगों से कहीं बढ़कर है जिन्होंने बाद में खर्च (अमवाल) और (क़फ़्फ़ार से) जहाद व क़त्ताल किया, और ख़ुदा ने सब से (सवाब) नेक (का) वायदा तो किया है और जो काम तुम करते हो ख़ुदा उनसे वाक़िफ़ है (१०)—रुकू १

कौन है जो ख़ुदा को (नीयते) नेक और (ख़ुलूस से) क़र्ज़ दे तो वह उसको उससे दस गुना अदा करे और उसके लिये इज़्ज़त का सिला (यानी जन्नत) है (११) जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उन (के ईमान) का नूर उनके आगे आगे और दाहिनी तरफ़ चल रहा है (तो उनसे

कहा जायेगा कि) तुमको बशारत हो (कि आज तुम्हारे लिये) बाग़ हैं जिनके तले नहरें बह रही हैं, उनमें हमेशा रहोगे, यही बड़ी कामयाबी है (१२) उस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें, मोमिनों से कहेंगे कि हमारी तरफ़ नज़रे (शफ़क़त) कीजिये कि हम भी तुम्हारे नूर से रोशनी हासिल करें, तो उन से कहा जायेगा कि पीछे को लौट जाओ और (वहाँ नूर तलाश करो) फिर उनके बीच में एक दीवार खड़ी करदी जायेगी जिस में एक दरवाज़ा होगा जो उसकी जानिब अन्दरूनी है उसमें तो रेहमत है और जो जानिबे बैरूनी है उस तरफ़ अज़ाब (व अज़ीयत) (१३) (तो मुनाफ़िक़ लोग मोमिनों से) कहेंगे कि क्या हम दुनिया में तुम्हारे साथ न थे ? वह कहेंगे कि, क्यों नहीं थे ? लेकिन तुमने खुद अपने तईं बला में डाला और (हमारे हक़ में हवादिस के) मुन्तज़िर रहे और (इस्लाम में) शक किया और (लातायल) आरज़ुओं ने तुमको धोखा दिया, यहाँ तक कि ख़ुदा का हुक्म आ पहुंचा, और ख़ुदा के बारे में तुमको (शैतान) दग़ाबाज़ दग़ा देता रहा (१४) आज तुम से मुआविज़ा नहीं लिया जायेगा और न (वह) काफ़िरों ही से (क़बूल किया जायेगा) तुम सब का ठिकाना दोज़ख़ है (कि) वही तुम्हारे लायक़ है और वह बुरी जगह है (१५) क्या अभी तक मोमिनों के लिये इस का वक्त नहीं आया कि ख़ुदा की याद करने के वक्त और (क़ुरान) जो (ख़ुदाये) बरहक़ (की तरफ़) से नाज़िल हुआ है, उस के सुनने के वक्त उन के दिल नरम हो जायें, जिन को (उन से) पहले किताबें दी गईं थीं, फिर उन पर ज़मानये तवील गुज़र गया तो उन के दिल सख़्त हो गये और इन में से अक्सर नाफ़रमान हैं (१६) जान रखो कि ख़ुदा ही ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है, हम ने अपनी निशानियाँ तुम से खोल खोल कर बयान करदी हैं ताकि तुम समझो (१७)

जो लोग खैरात करने वाले हैं मर्द भी और औरतें भी और खुदा को (नीयते) नेक (और खुलूस) से क़रज़ देते हैं उनको दो चन्द अदा किया जायेगा और उन के लिये इज़्ज़त का सिला है (१८) और जो लोग ख़ुदा और उस के पैग़म्बरों पर ईमान लाये यही अपने पर्वरदिगार के नज़दीक सद्दीक़ और शहीद है, उन के लिये उन (के आमाल का सिला होगा और उन के ईमान की रोशनी और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही अहले दोज़ख हैं (१९)—रुकू २

जान रखो कि दुनिया की ज़िन्दगी मेहज़ खेल और तमाशा और ज़ीनत (व आराईश) और तुम्हारे आपस में फ़ख्र (व सिताईश) और माल व औलाद की एक दूसरे से ज़्यादा तलब (व ख्वाहिश) है (उस की मिसाल ऐसी है) जैसे बारिश कि (उस से खेती उगती है और) किसानों को खेती भली लगती है, फिर वह खूब ज़ोर पर आती है फिर (उसे देखने वाले) तू उस को देखता है कि (पक कर) जर्द पड़ जाती है फिर चूरा चूरा हो जाती है, और आख़िरत में (काफ़िरों के लिये) अज़ाबे शदीद और मोमिनों के लिये) खुदा की तरफ़ से बख्शिश और खुशनूदी है और दुनिया की ज़िन्दगी तो मताये फ़रेब है (२०) (बन्दो) अपने पर्वरदिगार की बख्शिश को तरफ़ और जन्नत (की तरफ़) जिस का अर्ज़ अस्मान और ज़मीन के अर्ज़ का सा है और जो उन लोगों के लिये तयार की गई है जो ख़ुदा पर और उस के पैग़म्बरों पर ईमान लाये हैं, लपको, यह ख़ुदा का फ़ज़ल है जिसे चाहे अता फ़रमाये, और ख़ुदा बड़े फ़ज़लका मालिक है(२१) कोईमुसीबत मुल्क पर और खुद तुमपर नहीं पड़ती मगर पेशतर इस के कि हम उसको पैदा करें, एक किताब में (लिखी हुई) है (और) यह (काम) ख़ुदा को आसान है (२२) ताकि जो (मतलब) तुम से फ़ौत हो गया है, उस का ग़म न खाया करो

और जो तुम को उस ने दिया हो उस पर इतराया न करो, और ख़ुदा किसी इतराने और शेख़ी बघारने वाले को दोस्त नहीं रखता (२३) जो ख़ुद भी बुख़्ल करें और लोगों को भी बुख़्ल दिखायें, और जो शख़्स रुगर्दानी करे तो ख़ुदा भी बे पर्वाह (और) सज़ावारे हम्दो (सना) है (२४)—रुकू ३

हमने अपने पैग़म्बरों को खुली निशानियाँ देकर भेजा और उन पर किताबें नाज़िल कीं और तराज़ू (यानी क़वायदे अदल) ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम रहें और लोहा पैदा किया ताकि उसमें (अस्लेह जंग के लिहाज़ से) ख़तरा भी शदीद है और लोगों के लिये फ़ायदे भी हैं और इस लिये जो लोग बिन देखे ख़ुदा और उस के पैग़म्बरों को मदद करते हैं, ख़ुदा उनको मालूम करले, बेशक ख़ुदा क़वी (और) ग़ालिब है (२५) और हम ने नूह और इब्राहीम को (पैग़म्बर बना कर) भेजा और उन की औलाद में पैग़म्बरी और किताब के (सिलसिले) को (वक़्तन फ़वक़्तन जारी रखा, तो बाज़ तो उन में से हिदायत पर हैं और अक्सर उन में से ख़ारिज अज इतायत हैं (२६) फिर उनके पीछे उन्हीं के क़दमों पर (और) पैग़म्बर भेजे, उन के पीछे मरियम के बेटे ईसा को भेजा और उनको अञ्जील इनायत की, और जिन लोगों ने उन की पैरवी की उन के दिलों में शफ़्क़त और मेहरबानी डालदी और लज़्ज़त से कनाराकशी की तो उन्हों ने खुद एक नई बात निकाल ली थी हम ने उन को इस का हुक्म नहीं दिया था मगर (उन्हों ने अपने ख़याल में) ख़ुदा की खुशनूदी हासिल करने के लिये आप हो ऐसा कर लिया था, फिर जैसा उस को निब्राहना चाहता था निब्राह भी नहीं सके पस जो लोग उन में से ईमान लाये, उन को हम ने उनका अजर दिया और उन में से बहुत से नाफ़रमान हैं (२७) मोमिनो! ख़ुदा से डरो और उस के पैग़म्बर पर ईमान लाओ, वह तुम्हें

अपनी रेहमत से दुगुना अजर अता फ़रमायेगा और तुम्हारे लिये रोशनी कर देगा, जिस में चलोगे और तुम को बख्श देगा, और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (२८) (यह बातें) इस लिये (बयान की गई हैं) कि अहले किताब जान लें कि वह ख़ुदा के फ़ज़ल पर कुछ क़ुदरत नहीं रखते और यह कि फ़ज़ल ख़ुदा ही के हाथ है जिस को चाहता है देता है, और ख़ुदा बड़े फ़ज़ल का मालिक है (२९)—रुकू ४

—०—

अट्ठाईसवां पारा—क़द समि उल्लाह

५८—सूर–हे–अल मुजादिल—

यह सूरते मुजादिल मदीने में उतरी, इसमें २२ आयतें और ३ रुकू हैं।

शुरु ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर) जो औरत तुम से अपने शौहर के बारे में बहस व जदाल करती और ख़ुदा से शिकायते (रन्जो मलाल) करती है, ख़ुदा ने उस की इल्तिजा सुन ली, और ख़ुदा तुम दोनों की गुफ़्तगू सुन रहा था कुछ शक नहीं कि ख़ुदा देखता सुनता है (१) जो लोग तुममें से औरतों को माँ कह देते हैं वह उन की मायें नहीं (हो जातीं) और उन की मायें तो वही हैं जिन के बत्न से वह पैदा हुए, बेशक वह नामाक़ूल और झूठी बात कहते हैं, और ख़ुदा बड़ा माफ़ करने वाला (और) बख़्शने वाला है (२) और जो लोग अपनी बीवियों को माँ कह बैठें, फिर

अपने क़ौल से रजू कर लें तो (उन को) हमबिस्तर होने से पहले एक गुलाम आज़ाद करना (ज़रूर) है (मोमिनो !) इस (हुक्म) से तुम को नसीहत की जाती है और जो कुछ तुम करते हो, खुदा उस से ख़बरदार है (३) जिस को गुलाम न मिले वह मजमैयत से पहले मुतवातिर दो महीने के रोज़े (रखे) जिस को इस का भी मक़दूर न हो (उसे) साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना (चाहिये) यह (हुक्म) इस लिये (है) कि तुम खुदा और उस के रसूल के फ़रमाँबर्दार हो जाओ और यह खुदा की हदें हैं, और न मानने के लिये दर्द देने वाला अज़ाब है (४)*
जो लोग खुदा और उस के रसूल की मुख़ालिफ़त करते हैं वह (इसी तरह) ज़लील किये जायेंगे जिस तरह इन से पहले लोग ज़लील किये गये थे, और हम ने साफ़ और सरीह आयतें नाज़िल करदी हैं और जो नहीं मानते उन को ज़िल्लत का अज़ाब होगा (५) जिस दिन खुदा उन सब को जिला उठायेगा तो जो काम वह करते हैं उन को जितायेगा, खुदा को वह सब (काम) याद है और यह उन को भूल गये हैं, और खुदा हर चीज़ से वाक़िफ़ है (६)—रुकू १

---

*आयत ४:—यह आयत ख़ोला बिन्ते सोला के हक़ में नाज़िल हुई है, उस का शौहर गुस्से की हालत में उस से ज़हार कर बैठा और यूं भी अरब में इज़हार का रिवाज था, जहार उस को कहते हैं कि मियाँ अपनी बीवी से इस तरह के अलफ़ाज़ कह दे कि तू मेरी माँ की जगह है या तेरी पीठ मेरी माँ की पीठ की जगह है इस तरह कह देना जाहिलियत में तलाक़ समझा जाता था तो ख़ोला इसबाब में हुक्म दर्याफ़्त करने के लिये हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुई, आप ने फ़रमाया कि तू अपने शौहर पर हराम हो गई, उसने कहा कि उसने तलाक़ तो नहीं दी, ग़रज़ आप तो यह फ़रमाते थे कि तू उस

क्या तुम को मालूम नहीं कि जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है ख़ुदा को सब मालूम है (किसी जगह) तीन (शख़्सों) का मजमा (और) कानों में सलाह व मशवरा नहीं होता मगर वह उन में चौथा होता है और न कहीं पाँच का, मगर वह उन में छटा होता है, और न उस से कम या ज़्यादा, मगर वह उन के साथ होता है, ख़्वाह वह कहीं हों, फिर जो काम यह करते हैं क़यामत के दिन वह (एक एक) उन को बतायेगा, बेशक ख़ुदा हर चीज़ से वाक़िफ़ है (७) क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन को सरगोशियां करने से मना किया गया था फिर जिस (काम) से मना किया गया था वही फिर करने लगे और यह तो गुनाह और ज़ुल्म और रसूले(ख़ुदा) की नाफ़रमानी सरगोशियाँ करते हैं और जब तुम्हारें पास आते हैं तो जिस (कलमे) से ख़ुदा ने तुम को दुआ नहीं दी, उस से तुम्हें दुआ देते हैं और अपने दिल में कहते हैं कि अगर यह वाक़ई पैग़म्बर हैं तो जो कुछ हम कहते हैं ख़ुदा हमें उस की सज़ा क्यों नहीं देता (ऐ पैग़म्बर) उन को दोज़ख ही की (सज़ा) क़ाफ़ी है, यह उसी में दाख़िल होंगे और वह बुरी जगह है (८)

पर हराम हो चुकी और वह यह कहती थी कि उसने तलाक़ का नाम नहीं लिया इसी गुफ़्तगू को ख़ुदा ने मुजादिले से ताबीर फ़रमाया है, फिर वह ख़ुदा से कहती (रब्बुल आलमीन) मेरी बेकसी का हाल तुझको मालूम है मेरे नन्हे बच्चे हैं अगर मैं उन को अपने शौहर के हवाले कर दूं तो अच्छी तरह परवरिश न होने के सबब ज़ाया हो जायेंगे और अगर अपने पास रखूं तो भूखों मरेंगे और आस्मान की तरफ़ मूंह उठा कर कहती है कि बारे इलाहा मेरी शिकायत तुझी से है, ख़ुदा ने उसकी इज्ज़ोज़ारी को क़बूल फ़रमाया और ज़हार को तलाक़ नहीं बल्कि एक नामाकूल बात क़रार दे कर उसका कफ़्फ़ारा मुक़र्रर फ़रमा दिया।

मोमिनो ! जब तुम आपस में सरगोशियाँ करने लगो तो गुनाह और ज़्यादती और पैग़म्बर की नाफ़रमानी की बातें न करना और खुदा से जिस के सामने जमा किये जाओगे डरते रहना (९) (काफ़िरों की) सरगोशियाँ तो शैतान (की हरकात) से हैं (जो) इस लिये (की जाती) हैं कि मोमिन (उन से) ग़मनाक हों, मगर ख़ुदा के हुक्म के सिवा, उन से उन्हें कुछ नुक़सान नहीं पहुंच सकता, तो मोमिनों को चाहिये कि ख़ुदा ही पर भरोसा रखें (१०) मोमिनो ! जब तुम से कहा जाये कि मजलिस में खुल कर बैठो, तो खुल बैठा करो, ख़ुदा तुम को कुशादगी बख़्शेगा, और जब कहा जाये कि उठ खड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो, जो लोग तुम में से ईमान लाये हैं, और जिन को इल्म अता किया गया है, ख़ुदा उन के दर्जे बलन्द करेगा, ख़ुदा तुम्हारे सब कामों से वाक़िफ़ है (११) मोमिनो ! जब तुम पैग़म्बर के कान में कोई बात कहो तो बात से पहले (मसाकीन को) कुछ ख़ैरात दे दिया करो, यह तुम्हारे लिये बहुत बेहतर और पाकीज़गी की बात है, और अगर ख़ैरात तुम को मैयस्सर न हो, तो ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (१२) क्या तुम इस से कि पैग़म्बर के कान में कोई बात कहने से पहले ख़ैरात दिया करो, डर गये ? फिर जब तुमने (ऐसा) न किया और ख़ुदा ने तुम्हें माफ़ कर दिया तो नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहो और ख़ुदा और उस के पैग़म्बर की फ़रमाँबर्दारी करते रहो, और जो कुछ तुम करते हो ख़ुदा उस से ख़बरदार है (१३)—रुकू २

भला तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसों से दोस्ती करते हैं जिन पर ख़ुदा का ग़ज़ब हो, वह न तुम में हैं न उन में और जान बूझ कर झूठी बातों पर क़समें खाते हैं (१४) ख़ुदा ने

उन के लिये सख्त अज़ाब तैयार कर रखा है, यह जो कुछ करते हैं यक़ीनन बुरा है (१५) उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है और (लोगों को) खुदा के रस्ते से रोक दिया है, सो उन के लिये ज़िल्लत का अज़ाब है (१६) ख़ुदा के (अज़ाब) के सामने न तो उन का माल ही कुछ काम आयेगा और न औलाद ही (कुछ फ़ायदा देगी)यह लोग अहले दोज़खहैं और उसीमें हमेशा जलते रहेंगे (१७) जिस दिन ख़ुदा उन सबको जिला उठायेगा तो जिस तरह तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं (उसी तरह) ख़ुदा के सामने क़समें खायेंगे और ख्याल करेंगे कि (ऐसा करने से) काम ले निकले हैं, देखो यह झूठे (और बर सर ग़लत) हैं (१८) शैतान ने उन को क़ाबू में कर लिया है और ख़ुदा की याद उन को भुला दी है यह (जमायत) शैतान का लशकर है और सुन रखो कि शैतान का लशकर नुक़सान उठाने वाला है (१९) जो लोग ख़ुदा और उस के रसूल की मुखालिफ़त करते हैं वह निहायत ज़लील होंगे (२०) ख़ुदा का हुक्म नातिक़ है कि मैं और मेरे पैग़म्बर ज़रूर ग़ालिब रहेंगे, बेशक ख़ुदा ज़ोर आवर(और) ज़बरदस्त है (२१) जो लोग ख़ुदा पर और रोज़े क़यामत पर ईमान रखते हैं, तुम उन को ख़ुदा और उस के रसूल के दुश्मनों से दोस्ती करते हुए न देखोगे, ख्वाह वह उन के बाप या बेटे या भाई या खानदान ही के लोग हों, यह वह लोग हैं जिन के दिलों में ख़ुदा ने ईमान (पत्थर पर लकीर की तरह) तहरीर कर दिया है, और फ़ैज़े ग़ैबी से उन की मदद की है और वह उनको बहिश्तों में जिन के तले नहरें बह रही हैं दाखिल करेगा, हमेशा उन में रहेंगे, ख़ुदा उन से ख़ुश, और वह ख़ुदा से ख़ुश रहेंगे, यही गिरोह ख़ुदा का लशकर है (और) सुन रखो कि ख़ुदा ही लशकरे मुराद हासिल करने वाला है (२२)—रुकू ३

५६—सूर-हे-अल हश्र

यह सूरते हश्र मदीने में उतरी और इसमें २४ आयतें और ३ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ें आस्मानों में हैं और जो चीज़ें ज़मीन में हैं (सब) ख़ुदा की तस्बीह करती हैं और वह ग़ालिब हिकमत वाला है (१) वही तो है जिसने कफ़्फ़ार अहले किताब को हश्रे अव्वल के वक्त उन के घरों से निकाल दिया तुम्हारे ख़्याल में भी न था कि वह निकल जायेंगे और वह लोग यह समझे हुए थे कि उन के क़िले उन को ख़ुदा (के अज़ाब) से बचा लेंगे, मगर ख़ुदा ने उन को वहां से आ लिया जहाँ से उन को गुमान भी न था और उन के दिलों में देहशत डाल दी, कि अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों और मोमिनों के हाथों से उजाड़ने लगे, तो ऐ (बसीरत की) आँख़ें रखने वालो, इब्रत पकड़ो (२) और अगर ख़ुदा ने उन के बारे में जला वतन करना न लिख रखा होता तो उनको दुनिया में भी अज़ाब दे देता और आख़िरत में तो उन के लिये आग का अज़ाब (तैयार) है (३) यह इस लिये कि उन्होंने खुदा और उस के रसूल की मुख़ालिफ़त की और जो शख़्स खुदा की मुख़ालिफ़त करे तो खुदा सख़्त अज़ाब देने वाला है (४) (मोमिनो) खजूर के जो दरख़्त तुम ने काट डाले या उन को अपनी जड़ों पर खड़ा रहने दिया सो ख़ुदा के हुक्म से था और मक़सूद यह था कि वह नाफ़रमानों को रुसवा करे (५) और जो (माल) खुदा ने अपने पैग़म्बरों को उन लोगों से बग़ैर लड़ाई भिड़ाई के दिलवाया है, उसमें तुम्हारा कुछ हक़ नहीं क्यों कि

उस के लिये तुम ने घोड़े दौडाये न ऊन्ट लेकिन खुदा अपने पैग़म्बरों को जिन पर चाहता है मुस्सलत कर देता है और खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (६) जो माल खुदा ने अपने पैग़म्बर को देहात वालों से दिलवाया है वह खुदा के और पैग़म्बर के और (पैग़म्बर के) क़राबत वालों को और यतीमों के और हाजत-मन्दों के और मुसाफ़िरों के लिये है ताकि जो लोग तुम में दौलत मन्द हैं उन्हीं के हाथों में न फिरता रहे सो जो चीज़ तुम को पैग़म्बर दें वह ले लो और जिस से मना करे (उस से) बाज़ रहो और खुदा से डरते रहो, बेशक खुदा सख़्त अज़ाब देने वाला है (७) और उन मुफ़लिसाने तारकुल वतन के लिये भी जो अपने घरों और मालों से ख़ारिज (और जुदा) कर दिये गये हैं (और) खुदा के फ़ज़ल और उस की ख़ुशनूदी के तलबगार और खुदा और उस के पैग़म्बर के मददगार हैं, यही लोग सच्चे (ईमानदार) हैं (८) और (उन लोगों के लिये भी) जो महाजरीन से पहले (हिजरत के) घर (यानी मदीने) में मुक़ीम और ईमान में (मुस्तक़िल) रहे (और) जो लोग हिजरत कर के उन के पास आते हैं, उन से मोहब्बत करते हैं और जो कुछ उन को मिला, उस से अपने दिल में कुछ ख़्वाहिश (और ख़लिश) नहीं पाते और उन को अपनी जानों से मुक़द्दम रखते हैं ख़्वाह उन को खुद एहतियाज ही हो और जो शख़्स हिर्से नफ़्स से बचा लिया गया तो ऐसे ही लोग मुराद पाने वाले हैं (९) और (उन के लिये भी) जो इन (महाजरीन) के बाद आये (और) दुआ करते हैं कि ऐ पर्वरदिगार हमारे और हमारे भाइयों के जो हम से पहले ईमान लाये हैं गुनाह माफ़ फ़रमा और मोमिनों की तरफ़ से हमारे दिलों में कीना (व हसद) न पैदा होने दे, ऐ हमारे पर्वरदिगार तू बड़ा शफ़क़त करने वाला मेहरबान है (१०)—रुकू १

क्या तुम ने उन मुनाफ़िकों को नहीं देखा जो अपने काफ़िर

भाइयों से जो अहले किताब हैं कहा करते हैं कि अगर तुम जला वतन किये गये तो हम भी तुम्हारे साथ निकल चलेंगे और तुम्हारे बारे में कभी किसी का कहा न मानेंगे और अगर तुम से जंग हुई तो तुम्हारी मदद करेंगे, मगर खुदा ज़ाहिर किये देता है कि यह लोग झूठे हैं (११) अगर वह निकाले गये तो यह उन के साथ नहीं निकलेंगे और उन से जंग हुई तो उन की मदद नहीं करेंगे और अगर मदद करेंगे तो पीठ फेर कर भाग जायेंगे फिर उन को कहीं से भी मदद न मिलेगी (१२) मुसलमानो तुम्हारी हैबत इन लोगों के दिलों में खुदा से भी बढ़ कर है यह इस लिये कि यह समझ नहीं रखते (१३) यह सब जमा हो कर भी तुम से (बिलमवाजोह) नहीं लड़ सकेंगे मगर बस्तियों के क़िलों में (पनाह लेकर) या दीवारों की ओट में (मस्तूर होकर) उन का आपस में बड़ा रोब है, तुम शायद ख्याल करते हो कि यह इकट्ठे (और एक जान) हैं, मगर उन के दिल फटे हुए हैं यह इस लिये कि यह बे अक़्ल लोग हैं (१४) उन का हाल उन लोगों का सा है, जो उन से कुछ ही पेशतर अपने कामों की सज़ा का मज़ा चख चुके हैं और (अभी) उन के लिये दुख देने वाला अज़ाब (तैयार) है (१५) (मुनाफ़िकों की) मिसाल शैतान की सी हैकि इन्सान सेकहता रहा कि काफ़िर हो जा,जब वह काफ़िर हो गया तो कहने लगा कि मुझे तुझ से कुछ सरोकार नहीं, मुझ को तो खुदाये रब्बुल आलमीन से डर लगता है (१६) तो दोनों का अन्जाम यह हुआ कि दोनों दोज़ख़ में दाखिल हुए) हमेशा उस में रहेंगे और बे इन्साफ़ों की यही सज़ा है (१७)—रुकू २

ऐ ईमान वालो ! खुदा से डरते रहो और हर शख्स को देखना चाहिये कि उस ने कल (यानी फ़रदाये क़यामत) के लिये

क्या (सामान) भेजा है और हम फिर कहते हैं कि खुदा ने उन्हें ऐसा कर दिया कि खुद अपने तईं भूल गये, यह बद किरदार लोग हैं (१९) अहले दोज़ख और अहले बहिश्त बराबर नहीं, अहले बहिश्त तो कामयाबी हासिल करने वाले हैं (२०) अगर हम यह क़ुरान किसी पहाड़ पर नाज़िल करते तो तुम देखते कि खुदा के खौफ़ से दबा और फटा जाता है, और यह बातें हम लोगों के लिये बयान करते हैं ताकि फ़िक्र करें (२१) वही खुदा है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला वह बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है (२२) वही खुदा है जिस के सिवा कोई लायक़े इबादत नहीं, बादशाहे (हक़ीकी) पाक ज़ात (हर ऐब) से सालिम, अम्न देने वाला निगेहबान ग़ालिब है ज़बरदस्त बड़ाई वाला, खुदा इन लोगों से शरीक मुकर्रर करने से पाक है (२३) वहीं खुदा (तमाम मख़लूकात का) खालिक़ ईजादो इख्तिरा करने वाला, सूरतें बनाने वाला, उसके सब अच्छे से अच्छे नाम हैं, जितनी चीज़ें आस्मानों और ज़मीन में हैं सब उस को तस्बीह करतो हैं और वह ग़ालिब हिकमत वाला है (२४) --रुकू ३

—०—

६०—सूर—हे—मुम्तहना

यह सूरते मुम्तहना मक्के में उतरी, इसमें १३ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

मोमिनो! अगर तुम मेरी राह में लड़ने और मेरी खुशनूदी

तलब करने के लिये (मक्के से) निकले हो तो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त मत बनाओ, तुम तो उन को दोस्ती का पैग़ाम भेजते हो और वह (दीने) हक़ से जो तुम्हारे पास आया है मुन्किर है और इस बाइस से कि तुम अपने पर्वरदिगार खुदाये ताला पर ईमान लाये हो पैग़म्बर को और तुम को जलावतन करते हैं, तुम उन की तरफ़ पोशीदा पोशीदा दोस्ती के पैग़ाम भेजते हो, जो कुछ तुम मख्फ़ी तौर पर और जो इल-ऐलान करते हो, वह मुझे मालूम है, और जो कोई तुम में से ऐसा करेगा, वह सीधे रस्ते से भटक गया (१) अगर यह काफ़िर तुम पर कुदरत पालें, तो तुम्हारे दुश्मन हो जायें और ऐजा के लिये तुम पर हाथ (भी) चलायें और ज़बानें (भी) और चाहते हैं कि तुम किसी तरह काफ़िर हो जाओ (२) क़यामत के दिन न तुम्हारे रिश्ते नाते काम आयेंगे और न औलाद, उस रोज़ वही तुम में फ़ैस्ला करेगा, और जो कुछ तुम करते हो खुदा उस को देखता है (३) तुम्हें इब्राहीम और उन के रुफ़क़ा की नेक चाल (चलनी ज़रूर) है जब उन्होंने अपनी क़ौम के लोगो से कहा कि हम तुम से और इन (बुतों) से जिन को तुम खुदा के सिवा पूजते हो, बे ताल्लुक हैं (और) तुम्हारे (माबूदों के कभी) क़ाइल नहीं (हो सकते) और जब तक तुम खुदाय वाहिद पर ईमान न लाओ हम में तुम में हमेशा खुल्लम खुल्ला अदावत और दुश्मनी रहेगी हाँ इब्राहीम ने अपने बाप से यह (ज़रूर) कहा कि मैं आप के लिये मग़फ़रत मागूंगा और मैं खुदा के सामने आप के बारे में किसी चीज़ का कुछ अख़्तियार नहीं रखता, ऐ हमारे पर्वरदिगार तुझ ही पर हमारा भरोसा है और तेरी ही तरफ़ हम रजू करते हैं और तेरे ही हज़ूर में (हमें) लौट कर जाना है (४) ऐ हमारे पर्वरदिगार हम को काफ़िरों के हाथ से अज़ाब न दिलाना और ऐ पर्वरदिगार हमारे गुनाह हमें माफ़ फरमा, बेशक तू ग़ालिब

हिकमत वाला है (५) तुम (मुस्लमानों) को यानी जो कोई ख़ुदा (के सामने जाने) और रोज़े आख़िरत (के आने) की उम्मीद रखता हो उसे उन लोगों की नेक चाल चलनी (ज़रूर। है, और जो रुगर्दानी करे, तो ख़ुदा भी बेपर्वाह और सज़ावारे हम्द (व सना) है (६)—रुकू १

अजब नहीं क़ि ख़ुदा तुम में और उन लोगों में, जिन से तुम दुश्मनी रखते हो, दोस्ती पैदा कर दे और ख़ुदा क़ादिर है और ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (७) जिन लोगों ने तुमसे दीन के बारे में जंग नहीं की और न तुम को तुम्हारे घरों से निकाला, उन के साथ भलाई और इन्साफ़ का सलूक करने से ख़ुदा तुम को मना नहीं करता, ख़ुदा तो इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है (८) ख़ुदा उन्हीं लोगों के साथ तुम को दोस्ती करने से मना करता है, जिन्होंने तुम से दीन के बारे में लड़ाई की और तुम को तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में औरों की मदद की तो जो लोग ऐसों से दोस्ती करेंगे वही ज़ालिम हैं (९ मोमिनो ! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें वतन छोड़ कर आयें तो उनकी आज़माइश कर लो (और) ख़ुदा तो उन के ईमान को ख़ूब जानता है, सो अगर तुम को मालूम हो कि मोमिन हैं तो उन को कफ़्फ़ार के पास वापिस न भेजो, कि न यह उनको हलाल हैं और न वह इनको जायज़, और जो कुछ उन्होंने (इन पर) ख़र्च किया है वह उन को दे दो, और तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि उन औरतों को मेहर दे कर उन से निकाह कर लो और काफ़िर औरतों की नामूस को क़ब्ज़े में न रखो (यानी कफ़्फ़ार को वापिस दे दो) और जो कुछ तुम ने उन पर ख़र्च किया हो तुम उन से तलब कर लो और जो कुछ उन्होंने (अपनी औरतों पर) ख़र्च किया हो वह तुम से तलब कर लें यह ख़ुदा का हुक्म है जो तुम में फ़ैसला किये देता है और ख़ुदा जानने

वाला हिकमत वाला है (१०) और अगर तुम्हारी औरतों में से कोई औरत तुम्हारे हाथ से निकल कर काफ़िरों के पास चली जाये (और उस का मेहर वसूल न हुआ हो) फिर तुम उन से जंग करो (और उन से तुम को ग़नीमत हाथ लगे) तो जिन की औरतें चली गई हैं उन को (उस माल में से) इतना दे दो जितना उन्होंने ख़र्च किया था और ख़ुदा से जिस पर तुम ईमान लाते हो डरो (११) ऐ पैग़म्बर ! जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें इस बात पर बैयत करने को आयें कि ख़ुदा के साथ न तो शिर्क करेंगी, न बदकारी करेंगी न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी, न अपने हाथ पाँव में बोहतान बाँध लायेंगी और न नेक कामों में तुम्हारी नाफ़रमानी करेंगी तो उन से बैयत ले लो और उन के लिये ख़ुदा से बख़्शिश माँगो, बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (१२) मोमिन लोगों से जिन पर ख़ुदा ग़ुस्से है दोस्ती न करो (क्यों कि) जिस तरह काफ़िरों को मुर्दों (के जी उठने की उमीद नहीं उसी तरह उन लोगों को भी आख़िरत (के आने की) उमीद नहीं (१३)—रुकू २

—०—

६१—सूर—हे—अल-सफ़

यह सूरते सफ़्फ़ मदीने में उतरी इसमें १४ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ आस्मानों में है और जो ज़मीन में है, सब ख़ुदा की तस्बीह करती है, और वह ग़ालिब हिकमत वाला है (१)

मोमिनो तुम ऐसी बातें क्यों कहा करते हो जो किया नहीं करते (२) ख़ुदा इस बात से सख़्त बेज़ार है कि ऐसी बात कहो जो करो नहीं (३) जो लोग खुदा की राह में (ऐसे तौर पर) परे जमा कर लड़ते हैं कि गोया सीसा पिलाई हुई दीवार हैं, वह बेशक मेहबूबे किर्दगार हैं (४) और वह वक्त याद करने के लायक़ है, जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, कि ऐ क़ौम तुम मुझे क्यों ऐज़ा देते हो, हालाँकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे पास खुदा का भेजा हुआ आया हूँ, तो जब उन लोगों ने कजरवी की, खुदा ने भी उन के दिल टेढ़े कर दिये, और खुदा नाफ़रमानों को हिदायत नहीं देता (५) और (वह वक्त भी याद करो) जब मरियम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ बनी इसराईल मैं तुम्हारे पास खुदा का भेजा हुआ आया हूँ (और) जो (किताब) मुझ से पहले आ चुकी है (यानी तौरात) उस की तस्दीक करता हूं, और एक पैग़म्बर जो मेरे बाद आयेंगे जिन का नाम एहमद होगा, उन की बशारत सुनाता हूं (फिर) जब वह उन लोगों के पास खुली निशानियाँ ले कर आये तो कहने लगे कि यह तो सरीह जादू है (६) और उस से ज़ालिम कौन है कि बुलाया तो जाये इस्लाम की तरफ़ और वह खुदा पर झूठ बोहतान बान्धे, और खुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं दिया करता (७) यह चाहते हैं कि खुदा के (चिराग़) की रोशनी को मूंह से (फूंक मार कर) बुझा दें, हालांकि खुदा अपनी रोशनी को पूरा कर के रहेगा, ख़्वाह काफ़िर नाखुश हो हों (८)—रुकू १

वही तो है जिसने अपने पैग़म्बर को हिदायत और दीने हक़ दे कर भेजा ताकि उसे और सब दीनों पर ग़ालिब करे, ख़्वाह मुश्रिकों को बुरा ही लगे (९) मोमिनो ! मैं तुम को ऐसी तिजारत बताऊँ जो तुम्हें अज़ाबे अलीम से मुख़्लिसी दे (१०) (वह यह) कि खुदा पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ और

ख़ुदा की राह में अपने माल और जान से जहाद करो, अगर समझो तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है (११) वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम को बाग़हाय जन्नत में जिन में नहरें बह रही हैं और पाकीज़ा मकानात में जो बहिश्तहाय जाविदानी में (तैयार हैं) दाख़िल करेगा, यह बड़ी कामयाबी है (१२) और एक और चीज़ जिस को तुम बहुत चाहते हो (यानी तुम्हें) ख़ुदा की तरफ़ से मदद नसीब होगी) और फ़तह (अन) क़रीब होगी और मोमिनों को इस की ख़ुशख़बरी सुना दो (१३) मोमिनो! ख़ुदा के मददगार बन जाओ जैसे ईसा बिन मरियम ने हवारियों से कहा कि (भला) कौन है जो ख़ुदा की तरफ़ (बुलाने में) मेरे मददगार हों, हवारियों ने कहा कि हम ख़ुदा के मददगार हैं, तो बनी इसराईल में से एक गिरोह तो ईमान ले आया और एक गिरोह काफ़िर रहा, आख़िरुल अमर हमने ईमान लाने वालों को उन के दुश्मनों के मुक़ाबिले में मदद दी और वह ग़ालिब हो गये (१४)—रुकू २

—०—

६२—सूर-हे-अलजुमा

यह सूरते जुमा मदीने में उतरी इसमें ११ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ आस्मानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है सब ख़ुदा की तस्बीह करती है, जो बादशाहे हक़ीक़ी पाक ज़ात, ज़बरदस्त हिकमत वाला है (१) वही तो है जिस ने अन-पढ़ों में

उन्हीं में से एक (मोहम्मद) को पैगम्बर बना कर भेजा जो उन के सामने उनकी आयतें पढ़ते और उन को पाक करते और (ख़ुदा की) किताब और दानाई सिखाते हैं, और उस से पहले तो यह लोग सरीह गुमराही में थे (२) और उन में से और लोगों की तरफ़ भी (उन को भेजा है) जो अभी उन (मुस्लमानों से) नहीं मिले और वह ग़ालिब हिकमत वाला है (३) यह ख़ुदा का फ़ज़्ल है जिसे चाहता है अता करता है, और ख़ुदा बड़े फ़ज़्ल का मालिक है (४) जिन लोगों (के सर) पर तौरात लदवाई गई, फिर उन्होंने उस (के बारे तामील) को न उठाया, उन की मिसाल गधे की सी है, जिस पर बड़ी बड़ी किताबें लदी हों, जो लोग ख़ुदा की आयतों की तकज़ीब करते हैं उन की मिसाल बुरी है और ख़ुदा ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता (५) कह दो कि ऐ यहूद ! अगर तुम को यह दावा हो कि तुम ही ख़ुदा के दोस्त हो और और लोग नहीं तो अगर तुम सच्चे हो तो (ज़रा) मौत की आरज़ू तो करो (६) और यह उन (आमाल) के सबब जो कर चुके हैं हर्गिज़ उस की आरज़ू नहीं करेंगे, और ख़ुदा जालिमों से ख़ूब वाक़िफ़ है (७) कह दो कि मौत, जिस से तुम गुरेज़ करते हो, वह तो तुम्हारे सामने आकर रहेगी, फिर तुम पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले (ख़ुदा) की तरफ़ लौटाये जाओगे, फिर जो जो कुछ तुम करते रहे हो वह सब तुम्हें बतायेगा (८)—रुकू १

मोमिनो ! जब जुमे के दिन नमाज़ के लिये अज़ान दी जाये तो ख़ुदा की याद (यानी नमाज़) के लिये जल्दी करो और (ख़रीदो) फ़रोख़्त तर्क कर दो, अगर समझो तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर हैं (९) फिर जब नमाज़ हो चुके, तो अपनी अपनी राह लो और ख़ुदा का फ़ज़्ल तलाश करो और ख़ुदा को बहुत बहुत याद करते रहो, ताकि नजात पाओ (१०) और जब यह

लोग सौदा बिकता या तमाशा होता देखते हैं तो उधर भाग जाते हैं और तुम्हें (खड़े का) खड़ा छोड़ जाते हैं, कह दो कि जो चीज़ खुदा के हाँ है वह तमाशे और सौदे से कहीं बेहतर है (११)—रुकू २

—०—

६३—सूर—हे—अल-मुनाफ़िक्कून

यह सूरते मुनाफ़िक्कून मदीने में उतरी, इसमें ११ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ मोहम्मद) जब मुनाफ़िक़ लोग तुम्हारे पास आते हैं तो (अज़ राहे निफ़ाक़) कहते हैं कि हम इक़रार करते हैं कि आप बेशक खुदा के पैग़म्बर हैं और खुदा जानता है कि दरहक़ीक़त तुम उस के पैग़म्बर हो, मगर खुदा ज़ाहिर किये देता है कि मुनाफ़िक़ (दिल से ऐतक़ाद न रखने के लिहाज़ से) झूठे हैं (१) उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है और उन के ज़रिये से (लोगों को) राहे खुदा से रोक रहे हैं, कुछ शक नहीं कि जो काम यह करते हैं बुरे हैं (२) यह इसलिये कि (पहले तो) ईमान लाये फिर काफ़िर हो गये तो उनके दिलों पर मोहर लगा दी गई, सो अब यह समझते ही नहीं (३) और जब तुम उन (के तनासुबे आज़ा) को देखते हो तो उन के जिस्म तुम्हें (क्या ही) अच्छे मालूम होते हैं और जब वह गुफ़्तगू करते हैं तो तुम उन की तक़रीर को तवज्जोह से सुनते हो (मगर फ़हम व इद्राक से खाली) गोया लकड़ियाँ हैं जो दीवार से लगाई गई हैं (बुज़दिल

ऐसे) कि हर ज़ोर की आवाज़ को समझें (कि) उन पर (बला आई) यह (तुम्हारे) दुश्मन हैं उन से बे ख़ौफ़ न रहना, खुदा उन को हलाक करे यह कहाँ बहके फिरते हैं (४) और जब उन से कहा जाये कि आओ रसूले खुदा से तुम्हारे लिये मग़फ़रत माँगें तो सर हिला देते हैं और तुम उन को देखो कि तकब्बुर करते हुए मूंह फेर लेते हैं (५) तुम उन के लिये मग़फ़रत माँगों या न माँगों उन के हक़ में बराबर है, खुदा उन को हर्गिज़ न बख्शेगा, बेशक खुदा नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं दिया करता (६) यही तो हैं जो कहते हैं कि जोलोग रसूले खुदाके पास (रहते) उन पर (कुछ) ख़र्च न करो, यहाँ तक कि यह (खुद ब खुद) भाग जायें हालाँकि आसमानों और ज़मीन के ख़ज़ाने खुदा के हैं, लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं समझते (७) कहते हैं कि अगर हम लौट कर मदीने पहुंचे तो इज़्ज़त वाले ज़लील लोगों को वहाँ से निकाल बाहर करेंगे, हालांकि इज़्ज़त खुदा की है और उस के रसूल की और मोमिनों की लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं जानते (८)—रुकू १

मोमिन ! तुम्हारा माल और औलाद तुम को खुदा की याद से ग़ाफ़िल न कर दे, और जो ऐसा करेगा तो वह लोग ख़सारा उठाने वाले हैं (९) और जो (माल) हमने तुम को दिया है उस में से उस (वक्त) से पेशतर ख़र्च कर लो कि तुम में से किसी की मौत आ जाये तो (उस वक्त) कहने लगे कि ऐ मेरे पर्वरदिगार तू ने मुझे थोड़ी सी और मोहलत क्यों न दी ? ताकि मैं खैरात कर लेता और नेक लोगों में दाख़िल हो जाता (१०) और जब किसी की मौत आ जाती है, तो खुदा उस को हर्गिज़ मोहलत नहीं देता और जो कुछ तुम करते हो खुदा उस से ख़बरदार है (११)—रुकू २

—०—

६४—सूर-हे-अल-तग़ाबुन

यह सूरते तग़ाबुन मदीने में उतरी, इस में १८ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

जो चीज़ आस्मानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है (सब) खुदा की तस्बीह करती है, उसी की सच्ची बादशाही है और उसी की तारीफ़ (ना मुतनाही) है. और वह हर चीज़ पर क़ादिर है (१) वही तो है जिसने तुम को पैदा किया, फिर कोई तुम में काफ़िर हैं कोई मोमिन और जो कुछ तुम करते हो खुदा उस को देखता है (२) उसी ने आस्मानों और ज़मीन को मबनी-बर हिकमत पैदा किया, और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनाईं और सूरतें भी पाकीज़ा बनाईं और उसी की तरफ़ (तुम्हें लौट कर) जाना है (३) जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, वह सब जानता है और जो कुछ तुम छुपा कर करते हो और जो खुल्लम खुल्ला करते हो, उस से भी आगाह है, और ख़ुदा दिल के भेदों से वाक़िफ़ है (४) क्या तुम को उन लोगों के हाल की खबर नहीं पहुंची जो पहले काफ़िर हुए थे तो उन्होंने अपने कामों की सज़ा का मज़ा चख लिया और (अभी) दुख देने वाला अज़ाब (और) होना है (५) यह इस लिये कि उनके पास पैग़म्बर खुली हुई निशानियाँ ले कर आते तो यह कहते कि क्या आदमी हमारे हादी बनते हैं ? तो उन्होंने (उन को) न माना और मूंह फेर लिया, और ख़ुदा ने भी बे पर्वाही की और खुदा बे पर्वाह और सज़ावारे हम्द (व सना) है (६) जो लोग काफ़िर हैं उन का ऐतक़ाद है कि वह (दोबारा) हर्गिज़ नहीं उठाये जायेंगे, कह

दो कि हाँ हाँ मेरे पर्वरदिगार की क़सम तुम ज़रूर उठाये जाओगे, फिर जो काम तुम करते रहे हो वह तुम्हें बताये जायेंगे और यह (बात) खुदा को आसान है (७) तो खुदा पर और उस के रसूल पर और नूर (क़ुरान) पर जो हमने नाज़िल फ़रमाया है ईमान लाओ और खुदा तुम्हारे सब आमाल से ख़बरदार है (८) जिस दिन वह तुम को इकट्ठा होने (यानी क़यामत) के दिन कहा करेगा वह नुक़सान उठाने का दिन है और जो शख़्स खुदा पर ईमान लाये और नेक अमल करे वह उस से उसकी बुराईयाँ दूर कर देगा और बाग़हाय बहिश्त में जिन के नीचे नहरें बह रही हैं दाख़िल करेगा, हमेशा उन में रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है (९) और जिन्होंने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुट-लाया वही अहले दोज़ख हैं, हमेशा उस में रहेंगे, और वह बुरी जगह है (१०)—रुकू १

कोई मुसीबत नाज़िल नहीं होती मगर खुदा के हुक्म से, और जो शख़्स खुदा पर ईमान लाता है वह उस के दिल को हिदायत देता है और खुदा हर चीज़ से बा ख़बर है (११) और खुदा की इतायत करो, और उसके रसूल की इतायत करो, अगर तुम मूंह फेर लोगे तो हमारे पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़ पैग़ाम का खोल खोल कर पहुंचा देना है (१२) खुदा (जो माबूदे बरहक़ हैं, उस) के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं तो मोमिनो को चाहिये कि खुदा ही पर भरोसा रखें (१३) मोमिनो ! तुम्हारी औरतों और औलाद में से बाज़ तुम्हारे दुश्मन (भी) हैं, सो उन से बचते रहो और अगर माफ़ कर दो और दर गुज़र करो और बख़्श दो तो खुदा भी बख़्शने वाला मेहरबान है (१४) तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद तो आज़माइश है, और खुदा के हाँ बड़ा अज्र है (१५) सो जहाँ तक हो सके खुदा से डरो और (उस के एहकाम को) सुनो, और (उस के) फ़रमाँबर्दार रहो

और उसकी राह में ख़र्च करो (यह) तुम्हारे हक़ में बेहतर है, और जो शख़्स तबीयत के बुख़्ल से बचाया गया तो ऐसे ही लोग मुराद पाने वाले हैं (१६) अगर तुम ख़ुदा को (इख़्लास और नीयते) नेक (से)क़रज़ दोगे तो वह तुम को उसका दोचन्द देगा, और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ कर देगा और ख़ुदा क़द्र शिनास और बुर्दबार है (१७) पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला ग़ालिब (और) हिकमत वाला है (१८)—रुकू २

—०—

६५—सूर–हे–अल-तलाक़

यह सूरते तलाक़ मदीने में उतरी इसमें, १२ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर ! मुस्लमानों से कह दो कि) जब तुम औरतों को तलाक़ देने लगो तो उनकी इद्दत के शुरू में तलाक़ और इद्दत का शुमार रखो और ख़ुदा से जो तुम्हारा पर्वरदिगार है डरो (न तो तुम ही) उन को (अय्यामे इद्दत में) उन के घरों से निकालो और न वह (ख़ुद ही निकलें) हाँ अगर वह सरीह बे हयाई करें (तो निकाल देना चाहिये) और यह ख़ुदा की हदें हैं, जो ख़ुदा की हदों से तजावुज़ करेगा, वह अपने आप पर ज़ुल्म करेगा (ऐ तलाक़ देने वाले) तुझे क्या मालूम शायद ख़ुदा उस के बाद कोई (रजयत की) सबील पैदा कर दे (१) फिर जब वह अपनी मीयाद (यानी इन्क़ज़ाये इद्दत) के क़रीब पहुंच जायें तो या तो उन को अच्छी तरह से (जौज़ियत में) रहने दो या अच्छी तरह से अलहैदा कर दो और अपने में से दो मुन्सिफ़ मर्दों को

गवाह कर लो और (गवाह होना) खुदा के लिये दुरुस्त गवाही देना इन बातों से उस शख्स को नसीहत की जाती है, जो खुदा पर और रोज़े आख़िरत पर ईमान रखता है और जो कोई खुदा से डरेगा यह उ. के लिये (रन्जो मेहन से) मुख्लिसी (की सूरत) पैदा कर देगा (२) और उस को ऐसी जगह से रिज़्क़ देगा जहां से (वहम व) गुमान भी न हो और जो ख़ुदा पर भरोसा रखेगा तो वह उन को किफ़ायत करेगा ख़ुदा अपने काम को (जो वह करना चाहता है) पूरा कर देता है, ख़ुदा ने हर चीज़का अन्दाजा मुक़र्रर कर रखा है (३) और तुम्हारी (मुत्तल्लक़ा) औरतें जो हैज़ से ना उम्मीद हो चुकी हों, अगर तुम को (उन की इद्दत के बारे में) शुब्हा हो तो उन की इद्दत तीन महीने है, और जिनको अभी हैज़ नहीं आने लगा (उन की इद्दत भी यही है) और हमल वाली औरतों की इद्दत वजा हमल (यानी बच्चा जनने) तक है और जो ख़ुदा से डरेगा ख़ुदा उस के काम में सहूलियत पैदा करेगा (४) यह ख़ुदा के हुक्म हैं जो तुम पर नाज़िल किये हैं और जो ख़ुदा से डरेगा वह उस से उस के गुनाह दूर कर देगा और उसे अजरे अज़ीम बख्शेगा (५) (मुत्तल्लक़ा) औरतों को (अय्यामे इद्दत में) अपने मक़दूर के मुताबिक़ वहीं रखो जहाँ ख़ुद रहते हो और उन को तंग करने के लिये तकलीफ़ न दो, और अगर हमल से हों तो बच्चा जनने तक उन को ख़र्च देते रहो, फिर अगर वह बच्चे को तुम्हारे कहने से दूध पिलायें तो उन को उन की उजरत दो और (बच्चे के बारे में) पसन्दीदा तरीक़ से मुवाफ़िक़त रखो और अगर बाहम ज़िद और ना इत्तिफ़ाक़ी करोगे तो (बच्चे को) उस के (बाप के) कहने से कोई और औरत दूध पिलायेगी (६) साहिबे वुसअत को अपनी वुसअत के मुताबिक़ ख़र्च करना चाहिये और जिस के रिज़्क़ में तंगी

हो, वह जितना ख़ुदा ने उस को दिया है उसके मुवाफ़िक़ ख़र्च करे ख़ुदा किसी को तकलीफ़ नहीं देता मगर उसी के मुताबिक जो उस को दिया है, और ख़ुदा अन्करीब तंगी के बाद कुशाईश बख़्शेगा (७)—रुकू १

और बहुत सी बस्तियों (के रहने वालों) ने अपने पर्वरदिगार और उस के पैग़म्बरों के एहकाम की सरकशी की तो हमने उन को सख़्त हिसाब में पकड़ लिया और उन पर (ऐसा) अज़ाब नाज़िल किया जो न देखा था न सुना (८) सो उन्होंने अपने कामों की सजा का मज़ा चख लिया और उन का अन्जाम नुक़-सान ही तो था (९) ख़ुदा ने उनके लिये सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है तो ऐ अर्बाबे दानिश जो ईमान लाये हो ख़ुदा से डरो, ख़ुदा ने तुम्हारे पास नसीहत (की किताब) भेजी है (१०) और (अपने पैग़म्बर भी भेजे हैं) जो तुम्हारे सामने ख़ुदा की वाज़्हे उल मतालिब आयतें पढ़ते हैं ताकि जो लोग ईमान लाये और अमल नेक करते रहे हैं उन को अन्धेरे से निकाल कर रोशनी में ले आये और जो शख़्स ईमान लायेगा और अमल नेक करेगा वह उन को बाग़हाय बहिश्त में दाखिल करेगा, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, अबदुल आबाद उन में रहेंगे, ख़ुदा ने उन को ख़ूब रिज़्क़ दिया है (११) ख़ुदा ही तो है जिस ने सात आस्मान पैदा किये और वैसी ही ज़मीनें, उन में (ख़ुदा के) हुक्म उतरते रहते हैं ताकि तुम लोग जान लो कि ख़ुदा हर चीज़ पर क़ादिर है और यह कि ख़ुदा अपने इल्म से हर चीज़ पर एहाता किये हुए है (१२)—रुकू २

६६—सूर–हे–तहरीम

यह सूरते तहरीम मदीने में उतरी, इसमें १२ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

ऐ पैग़म्बर जो चीज़ खुदा ने तुम्हारे लिये जायज़ की है तुम उस से कनाराकशी क्यों करते हो (क्या इस से) अपनी बीबियों की खुशनूदी चाहते हो ? और खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (१) खुदा ने तुम लोगों के लिये तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा मुक़र्रर कर दिया है, और खुदा ही तुम्हारा कारसाज है और वह दाना (और) हिकमत बाला है (२) और (याद करो) जब पैग़म्बर ने अपनी बीवी से एक भेद की बात कही तो (उस ने दूसरी को बता दी) जब उसने उस को अफ़शा किया और खुदा ने इस (हाल) से पैग़म्बर को आगाह कर दिया तो पैग़म्बर ने (उन बीवी को बात) कुछ तो बताई और कुछ न बताई तो जब वह उन को बताई तो पूछने लगीं कि आप को यह किस ने बताया ? उन्होंने कहा कि मुझे उसने बताया है जोजानने वाला ख़बरदार है (३) अगर तुम दोनों खुदा के आगे तौबा करो (तो बेहतर है क्यों कि) तुम्हारे दिल कज हो गये हैं, और अगर पैग़म्बर (की ऐज़ा) पर बाहम अयानत करोगी तो खुदा और जब्रईल और नेक किर्दार मुस्लमान उन के हामो (और दोस्तदार) हैं और उन के अलावा (और) फ़रिश्ते भी मददगार हैं (४) अगर पैग़म्बर तुम को तलाक़ दे दें तो अजब नहीं उन का पर्वरदिगार तुम्हारे बदले उन को तुम से बेहतर बीबियाँ दे दे, मुस्लमान, साहिबे ईमान फ़रमाँबर्दार, तौबा करने वालियाँ, इबादत गुज़ार, रोज़ा रखने वालियाँ बिन शौहर और कँवारियां

(५) मोमिनो अपने आप को और अपने अहलो अयाल को आतिशे (जहन्नुम) से बचाओ, जिस का ईन्धन आदमी और पत्थर हैं और जिस पर तुन्द खू और सख़्त मिज़ाज फ़रिश्ते (मुक़र्रर) हैं जो इर्शाद, खुदा उन को फ़रमाता है, उस की ना फ़रमानी नहीं करते और जो हुक्म उन को मिलता है उसे बजा लाते हैं (६) काफ़िरो ! आज बहाने मत बनाओ, जो अमल तुम किया करते थे उन्हीं का तुम को बदला दिया जायेगा (७)—रुकू १

मोमिनो ! खुदा के आगे साफ़ दिल करके तौबा करो, उमीद है कि वह तुम्हारे गुनाह तुम से दूर कर देगा और तुम को बाग़-हाय बहिश्त में जिन के तले नहरें बह रही हैं दाख़िल करेगा, उस दिन खुदा पैग़म्बरों को और उन लोगों को जो उनके साथ ईमान लाये हैं रुसवा नहीं करेगा (बल्कि) उन का नूरे ईमान उन के आगे और दाहिनी तरफ़ (रोशनी करता हुआ) चल रहा होगा और वह खुदा से इल्तिजा करेंगे कि ऐ हमारे पर्वरदिगार हमारा नूर हमारे लिये पूरा कर, और हमें माफ़ फ़रमा ! बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है (८) ऐ पैग़म्बर ! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से लड़ो और उन पर सख़्ती करो, उन का ठिकाना दोज़ख है, और बह वहुत बुरी जगह है (९) खुदा ने काफ़िरों के लिये नूह की बीबी और लूत की बीबी की मिसाल बयान फ़रमाई है, दोनों हमारे दो नेक बन्दों के घरों में थीं और दोनों ने उन की खयानत की, तो वह खुदा के मुकाबिले में उन औरतों के कुछ भी काम न आये और उन को हुक्म दिया गया कि दर बग़ल होने वालों के साथ तुम भी दोज़ख में दाख़िल हो जाओ (१०) और मोमिनो,के लिये (एक) मिसाल (तो) फ़िरऔन की बीवी की बयान फ़रमाई कि उसने खुदासे इल्तिजा की, कि ऐ मेरे पर्वरदिगार मेरे लिये बहिश्त में अपने पास एक घर बना, और

मुझे फ़रऔन और उस के आमाल (ज़िश्तमआल) से नजात बख्श और ज़ालिम लोगों के हाथ से मुझ को मुख्लसी अता फ़रमा (११) और (दूसरी) उमरान की बेटी मरियम की जिन्हों ने अपनी शर्मगाह को मेहफ़ूज़ रखा तो हम ने उस में अपनी रुह फूंक दी और वह अपने पर्वरदिगार के कलाम और उस की किताबों को बरहक़ समझती थीं और फ़रमाँबर्दारों में से थीं (१२)—रुकू २

—०—

उन्नत्तीसवां पारा—तबारकल्लज़ी

६७—सूर-हे—अल मुल्क

यह सूरते मुल्क मक्के में उतरी, इसमें ३० आयतें और २ रुकू हैं

शुरु ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

वह (ख़ुदा) जिसके हाथ में बादशाही है, बड़ी बरकत वाला है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है (१) उसी ने मौत और जिन्दगी को पैदा किया ताकि तुम्हारी आज़माईश करे कि तुम में कौन अच्छे अमल करता है और वह ज़बरदस्त (और) बख्शने वाला है (२) उस ने सात आस्मान ऊपर तले बनाये (ऐ देखने वाले) क्या तू (ख़ुदा) रेहमान की आफ़रीनिश में कुछ नुक़्स देखता है ? ज़रा आँखें उठा कर देख, भला तुम को (आस्मान में) कोई शिगाफ़ नज़र आता है ? (३) फिर दोबारा (सेह बारा) नज़र कर तो नज़र (हर बार) तेरे पास ना काम और थक कर लौट

आयेगी (४) और हमने क़रीब के आस्मान को (तारों के) चिरागों से ज़ीनत दी, और उन को शैतान के मारने का आला बनाया, और उन के लिये दहकती आग का अज़ाब तैयार कर रखा है (५) और जिन लोगों ने अपने पर्वरदिगार से इन्कार किया, उन के लिये जहन्नुम का अज़ाब है और वह बुरा ठिकाना है (६) जब वह उस में डाले जायेंगे तो उस का चीखना चिल्लाना सुनेंगे और वह जोश मार रही होगी (७) गोया मारे जोश के फट पड़ेगी, उस में उन की कोई जमायत डाली जायेगी तो दोज़ख के दारोगा उन से पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई हिदायत करने वाला नहीं आया था (८) वह कहेंगे, क्यों नहीं, ज़रूर हमारे पास हिदायत करने वाला आया था, लेकिन हम ने उस को झुठला दिया और कहा कि ख़ुदा ने तो कोई चीज़ नाज़िल ही नहीं की, तुम तो बड़ी ग़लती में (पड़े हुए) हो (९) और कहेंगे अगर हम सुनते या समझते होते तो दोज़खियों में न होते (१०) पस वह अपने गुनाह का इक़रार कर लेंगे, सो दोज़खियों के लिये (रेहमते ख़ुदा से) दूरी है (११) (और) जो लोग बिन देखे अपने पर्वरदिगार से डरते हैं, उन के लिये बख्शिश और अजरे अज़ीम है (१२) और तुम (लोग) बात पोशीदा कहो या ज़ाहिर वह दिल के भेदों तक से वाक़िफ़ है (१३) भला जिसने पैदा किया वह बेख़बर है ? वह पोशीदा बातों का जानने वाला और (हर चीज़ से) आगाह है (१४)—रुकू १

वही तो है जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को नरम किया, तो उसकी राहों में चलो फिरो, और ख़ुदा का (दिया हुआ) रिज़्क़ खाओ और (तुम को) उसी के पास (क़ब्रों से) निकल कर जाना है (१५) तुम उस से जो आस्मानों में है बेख़ौफ़ हो कि तुम को ज़मीन में धंसा दे और वह उस वक़्त हरकत करने लगे (१६)

क्या तुम उस से जो आस्मान में है निडर हो, कि तुम पर कंकर भरी हवा छोड़ दे, सो तुम अन्क़रीब जान लोगे कि मेरा डराना कैसा है ? (१७) और जो लोग उन से पहले थे, उन्होंने भी झुठलाया था सो (देखलो कि) मेरा कैसा अज़ाब है (१८) क्या उन्होंने अपने सरों पर उड़ते जानवरों को नहीं देखा जो परों को फैलाते रहते हैं और उन को सुकेड़ भी लेते हैं ? ख़ुदा के सिवा, उन्हें कोई थाम नहीं सकता, बेशक वह हर चीज़ को देख रहा है (१९) भला ऐसा कौन है जो तुम्हारी फ़ौज लेकर ख़ुदा के सिवा तुम्हारी मदद कर सके ? काफ़िर तो धोखे में हैं (२०) भला अगर वह अपना रिज़्क बन्द कर ले तो कौन है जो तुमको रिज़्क दे ? लेकिन यह सरकशी और नफ़रत में फंसे हुये हैं (२१) भला जो शख्स चलता हुआ मूंह के बल गिर पड़ता हो, वह सीधे रस्ते पर है ? या वह जो सीधे रस्ते पर बराबर चल रहा हो (२२) कहो वह ख़ुदा ही तो है जिसने तुम को ज़मीन में फैलाया और उसी के रुबरु तुम जमा किये जाओगे (२४) और (काफ़िर) कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह वईद कब (पूरा) होगा (२५) कह दो कि इस का इल्म ख़ुदा ही को है और मैं तो खोल खोल कर डर सुनाने वाला हूं (२६) सो जब वह देख लेंगे कि वह (वायदा) क़रीब आ गया तो काफ़िरों के मूंह बुरे हो जायेंगे और (उन से) कहा जायेगा कि यह वही है जिसके तुम ख्वास्त-गार थे (२७) कहो कि भला देखो तो, अगर ख़ुदा मुझ को और मेरे साथियों को हलाक कर दे, या हम पर मेहरबानी करे तो कौन है जो काफ़िरों को दुख देने वाले अज़ाब से पनाह दे ? (२८) कह दो कि वह (जो ख़ुदाय) रेहमान (है) हम उसी पर ईमान लाये और उसी पर भरोसा रखते हैं, तुम को जल्द मालूम हो जायेगा कि सरीह गुमराही में कौन पड़ रहा था (२९) कहो

कि भला देखो तो अगर तुम्हारा पानी (जो तुम पीते हो और बरतते हो) खुश्क हो आये तो (ख़ुदा के सिवा) कौन है जो तुम्हारे लिये शीरीं पानी का चश्मा बहा लाये (३०)—रुकू २

—०—

६८--सूर--हे--अल क़लम

यह सूरते क़लम मक्के में उतरी, इसमें ५२ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरु ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

नून-आ क़लम की और जो (अहले क़लम) लिखते हैं, उसकी क़लम (१) कि (ऐ मोहम्मद) तुम अपने पर्वरदिगार के फ़ज़ल से दीवाने नहीं हो (२) और तुम्हारे लिये बे इन्तिहा अजर है (३) और इख़लाक़ तुम्हारे बहुत (आली) हैं (४) सो अन्क़रीब तुम भी देखलोगे, और यह (काफ़िर) भी देख लेंगे (५) कि तुममें से कौन दीवाना है (६) तुम्हारा पर्वरदिगार उसको भी ख़ूब जानता है जो सीधे रस्ते पर चल रहे हैं (७) तो तुम झुठलाने वालों का कहा न मानना (८) यह चाहते हैं कि तुम नरमी अख़्तियार करो, तो यह भी नरम हो जायेंगे (९) और किसी ऐसे शख़्स के कहे में न आ जाना जो बहुत क़समें खाने वाला ज़लील औक़ात है (१०) तान आमेज़ इशारतें करने वाला, चुग़लियाँ लिये फिरने वाला (११) माल में बुख़्ल करने वाला, हद से बढ़ा हुआ बदकार (१२) सख़्त ख़ू और इस के अलावा बदज़ात है (१३) इस लिये कि माल और बेटे रखता है (१४) जब उस को हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो कहता है कि यह अगले लोगों

के अफ़साने हैं (१५) हम अन्क़रीब उस की नाक पर दाग़ लगायेंगे (१६) हम ने उन लोगों की इसी तरह आज़माईश की है, जिस तरह बाग़ वालों की आज़माईश की थी, जब उन्हों नें क़समें खा खा कर कहा कि सुब्हा होते होते हम इस का मेवा तोड़ लेंगे (१७) और इन्शा अल्लाह न कहा (१८) सो वह अभी सो ही रहे थे कि तुम्हारे पर्वरदिगार की तरफ़ से (रातों रात) उस पर एक आफ़त फिर गई (१९) तो वह ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती (२०) जब सुबह हुई तो वह लोग एक दूसरे को पुकारने लगे (२१) कि अगर तुम को काटना है तो अपनी खेती पर सवेरे ही जा पहुंचो (२२) तो वह चल पड़े और आपसमें चुपके चुपके कहते जाते थे (२३) कि आज यहाँ तुम्हारे पास कोई फ़कीर न आने पाये (२४) और कोशिश के साथ सवेरे ही जा पहुंचे (गोया खेती पर) क़ादिर (हैं) (२५) जब बाग़ को देखा तो (वीरान) कहने लगे कि हम रस्ता भूल गये हैं (२६) नहीं, बल्कि हम (बरगश्ता बख़्त) बेनसीब हैं (२७) एक जो उन में फ़रजाना था बोला क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि तुम तस्बीह क्यों नहीं करते (२८) तब वह कहने लगे कि हमारा पर्वरदिगार पाक है, बेशक हम ही क़सूर वार थे (२९) फिर लगे एक दूसरे को दर दर रु मलामत करते (३०) कहने लगे हाय शामत हम ही हद से बढ़ गये थे (३१) उमीद है कि इस के बदले हमारा पवर्रदिगार हमें इससे बेहतर बाग़ इनायत करे हम अपने पवर्रदिगार की तरफ़ रजू लाते हैं (३२) (देखो) अज़ाब यूं होता है और आखिरत का अज़ाब इससे कहीं बढ़कर है, काश यह लोग जानते होते (३३)—रुकू १

परहेज़गारों के लिये उन में पर्वरदिगार के हाँ नैयमत के बाग़ हैं (३४) क्या हम फ़रमाँबर्दारों को नाफ़रमाँनों की तरह (नैयमतों से) महरुम कर देंगे? (३५) तुम्हें क्या हो गया है

कैसी तजवीज़ें करते हो ? (३६) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिस में (यह) पढ़ते हो ? (३७) कि जो चीज़ तुम पसन्द करोगे वह तुम को जरूर मिलेगी ? (३८) या तुमने हम से क़समें ले रखी हैं जो क़यामत के दिन चली जायेंगी कि जिस चीज़ का तुम हुक्म करोगे, वह तुम्हारे लिये हाज़िर होगी (३९) उन से पूछो कि उन में से इस का कौन ज़िम्मा लेता है ? (४०) क्या इस क़ौल में उन के और भी शरीक हैं ? अगर यह सच्चे हैं तो अपने शरीको को ला सामने करें (४१) जिस दिन पिन्डली से कपड़ा उठा दिया जायेगा और कफ़्फ़ार सज्दे के लिये बुलाये जायेंगे तो सज्दा न कर सकेंगे (४२) उनकी आँखें झुकी हुई होंगी और उन पर ज़िल्लत छा रही होगी हालाँकि पहले (उस वक्त) सज्दे के लिये बुलाये जाते थे, जबकि सही व सालिम थे (४३) तो मुझको इस कलाम के झुटलाने वालों से समझ लेने दो, हम उन को आहिस्ता आहिस्ता ऐसे तरीक़ से पकड़ेंगे कि उन को खबर भी न होगी (४४) मैं उन को मोहलत दिये जाता हूं, मेरी तदबीर क़वी है (४५) क्या तुम उन से कुछ सिला मांगते हो कि उन पर तावान का बोझ पड़ रहा है (४६) या उन के पास ग़ैब की ख़बर है कि (उसे)लिखते जाते हैं (४७) तो अपने पर्वरदिगार के हुक्म के इन्तज़ार में सब्र किये रहो और मछली (का लुक़मा होने) वाले (यूनूस) की तरह न होना, कि उन्होंने (ख़ुदा को) पुकारा और वह (ग़म व) ग़ुस्से में भरे हुए थे (४८) अगर तुम्हारे पर्वरदिगार की मेहरबानी उन की यावरी न करती तो वह चुटियल मैदान में डाल दिये जाते और उन का हाल अबतर हो जाता (४९) फिर पर्वरदिगार ने उन को बर-गज़ीदा कर के नेकू कारों में कर लिया (५०) और काफ़िर जब (यह) नसीहत (की किताब) सुनते हैं तो यूं लगते हैं कि तुम को अपनी निगाहों से फुसला देंगे, और कहते हैं कि यह तो

दीवाना है (५१) और लोगो यह (क़ुरान) अहले आलम के लिये नसीहत है (५२)—रुकू २

६९—सूर–हे–अल-हाक़्क़ा

यह सूरते हाक्क़ा मक्के में उतरी, इसमें ५२ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

सचमुच होने वाली (१) वह सचमुच होने वाली क्या है ? (२) और तुम को क्या मालूम है, कि वह सचमुच होने वाली क्या है ? (३) (वही) खड़खड़ाने वाली (जिस) को समूद और आद (दोनों) ने झुटलाया (४) सी समूद तो कड़क से हलाक कर दिये गये (५) रहे आद, तो उन का निहायत तेज़ आन्धी ने सत्यानास कर दिया गया (६) ख़ुदा ने उस को सात रात और आठ दिन लगातार उन पर चलाये रखा (तो ऐ मुख़ातिब) तू लोगों को उस में (इस तरह) ढैये और (मरे) पड़े देखे जैसे खजूरों के खोखले तने (७) भला तू उन में से किसी को भी बाक़ी देखता है ? (८) और फ़िरऔन और जो लोग उस से पहले थे और वह जो उलटी बस्तियों में रहते थे सब गुनाह का काम करते थे (९) उन्होंने अपने पर्वरदिगार के पैग़म्बर की नाफ़र-मानी की, तो ख़ुदा ने भी उन को बड़ा सख़्त पकड़ा (१०) जब पानी तुग़ियानी पर आया तो हम ने तुम (लोगों) को कश्ती में सवार कर लिया (११) ताकि उस को तुम्हारे लिये यादगार

बनायें और याद रखने वाले कान उसे याद रखें (१२) तो जब सूर में एक बार फूंक मार दी जायेगी (१३) और ज़मीन और पहाड़ दोनों उठा लिये जायेंगे, फिर एक बारगी तोड़ फोड़ कर बराबर कर दिये जायेंगे (१४) तो उस रोज़ हू पड़ने वाली (क़यामत) हो पड़ेगी (१५) और आस्मान फट जायेगा तो वह उस दिन कमज़ोर होगा (१६) और फ़रिश्ते उस के किनारों पर (उतर आयेंगे) और तुम्हारे पर्वरदिगार के अर्श को उस रोज़ आठ फ़रिश्ते अपने सरों पर उठाये होंगे (१७) उस रोज़ तुम सब (लोगों के सामने) पेश किये जाओगे और तुम्हारी कोई पोशीदा बात छुपी न रहेगी (१८) तो जिस का (आमाल) नामा उस के दाहिने हाथ में दिया जायेगा वह (दूसरों से) कहेगा कि लीजिये मेरा नाम-ऐ (आमाल) पढ़िये (१९) मुझे यकीन था कि मुझ को मेरा हिसाब (किताब) ज़रूर मिलेगा (२०) पस वह शख़्स मन माने ऐश में होगा (२१) (यानी ऊँचे ऊँचे महलों में) बाग़ में (२२) जिन के मेवे झुके हुए होंगे (२३) जो (अमल) तुम अय्यामे गुज़श्ता में आगे भेज चुके हो, उस के सिले में मज़े से खाओ और पियो (२४) और जिसका नाम-ऐ (आमाल) उस के बांयें हाथ में दिया जायेगा, वह कहेगा, ऐ काश मुझ को मेरा (आमाल) नामा न दिया जाता (२५) और मुझे मालूम न होता कि मेरा हिसाब क्या है (२६) ऐ काश मौत (अबदउल आबाद के लिये मेरा काम) तमाम कर चुकी होती (२७) (आज) मेरा माल मेरे कुछ भी काम न आया (२८) (हाय) मेरी सलतनत खाक में मिल गई (२९) (हुक्म होगा कि) इसे पकड़ लो और तौक़ पहना दो (३०) फिर दोज़ख़ की आग में झोंक दो (३१) फिर जन्जीर से जिसकी नाप सत्तर गज़ है जकड़ दो (३२) यह न तो ख़ुदाये जल शानहु पर ईमान लाता था (३३) और न फ़क़ीर के खाना खिलाने पर आमादा होता था (३४) सो आज इसका भी यहाँ

कोई दोस्तदार नहीं (३५) और न पीप के सिवा (इस के लिये) खाना है (३६) जिसको गुन्हेगारों के सिवा कोई न खायेगा (३७)—रुकू १

तो हम को उन चीज़ों की क़सम जो तुम को नज़र आती हैं (३८) और उन की जो नज़र नहीं आतीं (३९) कि यह (क़ुरान) फ़रिश्त-ऐ आली मक़ाम की ज़बान का पैग़ाम है (४०) और यह किसी शायर का कलाम नहीं, लेकिन तुम लोग, बहुत ही कम ईमान लाते हो (४१) और न किसी काहिन के मज़खुरफ़ात हैं, लेकिन तुम लोग बहुत कम फ़िक्र करते हो (४२) (यह तो) पर्वरदिगारे आलम का उतारा (हुआ) हैं (४३) अगर यह (पैग़म्बर) हमारी निस्बत कोई बात झूठ बना लाते (४४) तो हम इन का दाहिना हाथ पकड़ लेते (४५) फिर इनकी रगे गर्दन काट डालते (४६) फिर तुम में से कोई (हमें) इससे रोकने वाला न होता (४७) और यह(किताब) तो पर हेज़गारों के लिये नसीहत है (४८) और हम जानते हैं कि तुम में से बाज़ इस को झुटलाते हैं (४९) नीज़ यह काफ़िरों के लिये (मूजिबे) हसरत है (५०) और कुछ शक नहीं कि यह बर हक़ क़ाबिले यक़ीन है (५१) सो तुम अपने पर्वरदिगारे इज़्ज़ो जल के नाम की तन्ज़िया करते रहो (५२)—रुकू २

—०—

७०—सूर—हे--अल-मआरिज़

यह सूरते मआरिज़ मक्के में उतरी, इसमें ४४ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

एक तलब करने वाले ने अज़ाब तलब किया जो नाज़िल होकर रहेगा (१) (यानी) काफ़िरों पर (और) कोई उस को टाल न सकेगा (२) (और वह) खुदाये साहिबे दर्जात की तरफ़ से (नाज़िल होगा) (३) जिसकी तरफ़ रूह (अल अमीन) और फ़रिश्ते चढ़ते हैं (और) उस रोज़ (नाज़िल होगा) जिसका अन्दाज़ा पचासहज़ार बरसका होगा (४)(तो तुम काफ़िरोंकी बातों को) क़ुव्वत के साथ बर्दाश्त करते रहो (५) वह इन लोगों की निगाह में दूर है (६) और हमारी नज़र में नज़दीक (७) जिस दिन आस्मान ऐसा हो जायेगा जैसे पिघला हुआ ताँबा (८) और पहाड़ (ऐसे) जैसे (धुनकी हुई) रंगीन ऊन (९) और कोई दोस्त किसी दोस्त का पुरसाँ न होगा (१०)(हालाँकि) एक दूसरे को सामने देख रहे होंगे (उस रोज़) गुन्हेगार ख़्वाहिश करेगा कि किसी तरह उस दिन के अज़ाब के बदले में (सब कुछ) दे दे (यानी) अपने बेटे (११) और अपनी बीवी और अपने भाई (१२) और अपना ख़ानदान जिस में वह रहता था (१३) और जितने आदमी ज़मीन में हैं (ग़रज़) सब (कुछ दे दे) और अपने तईं अज़ाब से छुड़ा ले (१४) (लेकिन) ऐसा हर्गिज़ न होगा, और वह भड़कती हुई आग है (१५) खाल उधेड़ डालने वाली (१६) उन लोगों को अपनी तरफ़ बुलायेगी जिन्होंने (दीने हक़ से) एराज़ किया (१७) और (माल) जमा किया और बन्द कर रखा (१८) कुछ शक नहीं कि इन्सान कम हौसला पैदा हुआ है (१९) जब उसे तकलीफ़ पहुंचती है तो घबड़ा उठता है (२०) और जब आसाईश होती है तो बख़ील बन जाता है (२१) मगर नमाज़ गुज़ार (२२) जो नमाज़ का इन्तिज़ाम रखते (और बिला नाग़ा पढ़ते) हैं(२३) और जिनके माल में हिस्सा मुक़र्रर है(२४) (यानी) मांगने वाले का और न मांगने वाले का (२५) और जो

रोज़े जज़ा को सच समझते हैं (२६) और जो अपने पर्वरदिगार के अज़ाब से खौफ़ रखते हैं (२७) बेशक उनके पर्वरदिगार का अज़ाब है ही ऐसा कि उससे वे खौफ़ न हुआ जाये (२८) और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं (२९) मगर अपनी बीवियों या लौन्डियों से कि (उनके पास जाने पर) उन्हें कुछ मलामत नहीं (३०) और जोलोग उनके सिवा और के ख्वास्तगार हों, वह हद से निकल जाने वाले हैं (३१) और जो अपनी अमानतों और इक़रारों का पास करते हैं (३२) और जो अपनी शहादतों पर क़ायम रहते हैं (३३) और जो अपनी नमाज़ की खबर रखते हैं (३४) यही लोग बाग़हाय बहिश्त में इज़्ज़तो इकराम से होंगे (३५ —रुकू १

तो उन काफ़िरों को क्या हुआ है कि तुम्हारी तरफ़ दौड़े चले आते हैं (३६) (और) दायें बायें से गिरोह गिरोह होकर (जमा होते) जाते हैं (३७) क्या इनमें से हर शख्स यह तवक़्क़ो रखता है, कि नैयमत के बाग़ में दाखिल किया जायेगा (३८) हर्गिज़ नहीं हमने उनको उस चीज़ से पैदा किया है जिसे वह जानते हैं (३९) हमें मशरिक़ों और मग़रिबों के मालिक की क़सम कि हम ताक़त रखते हैं (४०) (यानी) इस बात पर हैं (क़ादिर हैं) कि उन से बेहतर लोग बदल लायें और हम आजिज़ नहीं हैं (४१) तो (ऐ पैग़म्बर) उन को बातिल में पड़े रहने और खेल लेने दो, यहाँ तक कि जिस दिन का उन से वायदा किया जाता है, वह उन के सामने आ मौजूद हो (४२) उस दिन यह क़ब्र से निकल कर (इस तरह) दौड़ेंगे जैसे (शिकारी) शिकार के जाल की तरफ़ दौड़ते हैं (४३) उन की आँखें झुक रही होंगी और ज़िल्लत उन पर छा रही होगी, यही वह दिन है जिसका उनसे वायदा किया जाता है (४४)—रुकू २

७१-सूर-हे-अल-नूह

यह सूरते नूह मक्के में उतरी, इसमें २८ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हमने नूह को उन की क़ौम की तरफ़ भेजा कि पेश्तर इस के कि उस पर दर्द देने वाला अज़ाब वाक़ा हो, अपनी क़ौम को हिदायत कर दो (१) उन्होंने कहा कि ऐ क़ौम ! मैं तुम को खुले तौर पर नसीहत करता हूं (२) कि ख़ुदा कि इबादत करो, और उस से डरो, और मेरा कहा मानो (३) वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और (मौत के) वक्ते मुक़र्रर तक तुम को मोहलत अता करेगा, जब खुदा का मुक़र्रर किया हुआ वक्त आ जाता है तो ताख़ीर नहीं होती, काश तुम जानते होते (४) जब लोगों ने न माना तो (नूह ने) ख़ुदा से अर्ज़ की कि पर्वरदिगार मैं अपनी क़ौम को रात दिन बुलाता रहा (५) लेकिन मेरे बुलाने से वह और ज़्यादा गुरेज़ करते रहे (६) जब जब मैंने उन को बुलाया कि (तौबा करें और) तू उन को माफ़ फ़रमाये तो उन्होंने अपने कानों में उंगलियाँ दें लीं और कपड़े ओढ़ लिये और अड़ गये और अकड़ बैठे (७) फिर मैं उन को खुले तौर पर भी बुलाता रहा (८) और ज़ाहिर और पोशीदा हर तरह समझाता रहा (९) और कहा कि अपने पर्वरदिगार से माफ़ी माँगो कि वह बड़ा माफ़ करने वाला है (१०) वह तुम पर आस्मान से लगातार मेंह बरसायेगा (११) और माल और बेटों से तुम्हारी मदद फ़रमायेगा और तुम्हें बाग़ अता करेगा और (उन में) तुम्हारे लिये नहरें बहा देगा (१२) तुम को क्या हुआ है कि तुम खुदा

की अज़मत का ऐतक़ाद नहीं रखते (१३) हालाँकि उस ने तुम को तरह तरह (की हालतों) में पैदा किया है (१४) क्या तुमने नहीं देखा कि ख़ुदा ने सात आस्मान कैसे ऊपर तले बनाये हैं (१५) और चान्द को उन में (ज़मीन का) नूर बनाया है और सूरज को चिराग़ ठैहराया है (१६। और ख़ुदा ही ने तुम को ज़मीन से पैदा किया है (१७) फिर उसी में तुम्हें लौटा देगा और (उसी में) तुम को निकाल खड़ा करेगा (१८) और खुदा ही ने ज़मीन को तुम्हारे लिये फ़र्श बनाया (१९) ताकि उस के बड़े बड़े कुशादा रस्तों में चलो फिरो (२०)—रुकू १

(उस के बाद) नूह ने अर्ज़ की कि मेरे पर्वरदिगार ! यह लोग मेरे कहने पर नहीं चले और ऐसों के ताबेय हुए हैं जिनको उन के माल और औलाद ने नुक़सान के सिवा कुछ फ़ायदा नहीं दिया (२१) और वह बड़ी बड़ी चालें चले (२२) और कहने लगे कि अपने माबूदों को हर्गिज़ न छोड़ना और वद, और सुआ और यग़ूस और यँअक़ और नसर को कभी तर्क न करना (२३) पर्वरदिगार ! उन्होंने बहुत लोगों को गुमराह कर दिया है, तो तू उनको और गुमराह कर दे (२४) (आख़िर) वह अपने गुनाहों के सबब से ही ग़रक़ाब कर दिये गये,फिर आगमें डाल दिये गये तो उन्होंने ख़ुदा के सिवा किसी को अपना मददगार न पाया (२५) (और फिर) नूह ने यह (दुआ) की कि मेरे पवर्रदिगार किसी काफ़िर को रुए ज़मीन पर बसा न रहने दे (२६) अगर तू उनको रहने देगा तो तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और उनसे जो औलाद होगी वह भी बदकार और ना शुक्र गुज़ार होगी (२७) ऐ मेरे पवर्रदिगार ! मुझको और मेरे माँ बाप को और जो ईमान ला कर मेरे घर में आये उसको और ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को माफ़ करना और ज़ालिम लोगों के लिये और ज़्यादा तबाही बढ़ा (२८)—रुकू २

७२—सूर—हे—अल-जिन्न

यह सूरते जिन्न मक्के में उतरी, इसमें २८ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर लोगों से कहदो) कि मेरे पास वही आई है कि जिन्नो की एक जमायत ने (इस किताब को) सुना तो कहने लगे कि हमने एक अजीब क़ुरान सुना (१) जो भलाई का रस्ता बताता है सो हम उस पर ईमान ले आये और हम अपने पवर्रदिगार के साथ किसी को शरीक नहीं बनायेंगे (२) और यह कि हमारे पवर्रदिगार की अज़मत (शान) बहुत बड़ी है, वह न बीवी रखता है न औलाद (३) और यह कि हम में से बाज़ बेवक़ूफ ख़ुदा के बारे में झूट इफ़्तिरा करता है (४) और हमारा (यह) ख्याल था कि इन्सान और जिन्न ख़ुदा की निस्बत झूठ नहीं बोलते (५) और यह कि बाज़ बनी आदम जिन्नात की पनाह पकड़ा करते थे (इससे) उनकी सरकशी और बढ़ गई थी (६) और यह कि उनका भी यही ऐतक़ाद था, जिस तरह तुम्हारा था कि ख़ुदा किसी को नहीं जिलायेगा (७) और यह कि हमने आस्मान को टटोला और उस को मजबूत चौकीदारों और अङ्गारों से भरा हुआ पाया (८) और यह कि पहले हम वहां से बहुत से मक़ामात में (खबरें) सुनने के लिये बैठा करते थे, अब कोई सुनना चाहे तो अपने लिये अङ्गार तैयार पाये (९) और यह कि हमें मालूम नहीं कि इससे अहले ज़मीन के हक़ में बुराई मक़सूद है या उनके पवर्रदिगार ने उनकी भलाई का इरादा फ़रमाया है (१०) और यह कि हम में कोई नेक है और

कोई और तरह के, हमारे कई तरह के मज़हब हैं (११) और यह कि हम ने यक़ीन कर लिया है कि हम ज़मीन में (ख़्वाह कहीं हों) ख़ुदा को हरा नहीं सकते और न भाग कर उस को थका सकते हैं (१२) और जब हमने हिदायत (की किताब) सुनी, उस पर ईमान ले आये, तो जो शख़्स अपने पर्वरदिगार पर ईमान लाता है उस को न नुक़सान का ख़ौफ़ है न ज़ुल्म का (१३) और यह कि हम में बाज़ फ़रमाँबरदार हैं और बाज़ (नाफ़रमान) गुन्हेगार हैं, तो जो फ़रमाँबर्दार हुए वह सीधे रस्ते पर चले (१४) और जो गुन्हेगार हुए वह दोज़ख़ का ईन्धन बने (१५) और (ऐ पैग़म्बर) यह (भी उन से कह दो) कि अगर यह लोग सीधे रस्ते पर रहते तो हम उन के पीने को बहुत सा पानी देते (१६) ताकि उन से उन की आज़माईश करें और जो शख़्स अपने पर्वरदिगार की याद से मूंह फेरेगा, वह उसको सख़्त अज़ाब में दाखिल करेगा (१७) और यह कि मसजिदें (ख़ास) ख़ुदा की हैं, तो ख़ुदा के साथ किसी और की इबादत न करो (१८) और जब ख़ुदा के बन्दे (मोहम्मद) उस की इबादत को खड़े हुए तो काफ़िर उन के गिर्द हजूम कर लेने को थे (१९)—रुकू १

कह दो कि मैं तो अपने पर्वरदिगार ही की इबादत करता हूं और किसी को उस का शरीक नहीं बनाता (२०) (यह भी) कह दो कि मैं तुम्हारे हक़ में नुक़सान और नफ़े का कुछ अख़्तियार नहीं रखता (२१) (यह भी) कह दो कि ख़ुदा (के अज़ाब) से मुझे कोई पनाह नहीं दे सकता और मैं उस के सिवा कहीं जाये पनाह नहीं देखता (२२) हाँ ख़ुदा की तरफ़ से एहकाम का और उस के पैग़ामों का पहुंचा देना (ही) मेरे जिम्मे है और जो शख़्स ख़ुदा और उस के पैग़म्बरों की नाफ़रमानी करेगा तो ऐसों के लिये जहन्नुम की आग है, हमेशा उस में रहेंगे

(२३) यहाँ तक कि जब यह लोग वह (दिन) देख लेंगे जिस का इन से वायदा किया जाता है, तब उन को मालूम हो जायेगा कि मददगार किस के कमज़ोर हैं और शुमार किन का थोड़ा है (२४) कह दो कि (जिस दिन) का तुम से वायदा किया जाता है, मैं नहीं जानता कि वह (अन) क़रीब (आने वाला है) या मेरे पर्वरदिगार ने उस की मुद्दत दराज़ कर दी है (२५) (वही) ग़ैब (की बात) जानने वाला है और किसी पर अपने ग़ैब को ज़ाहिर नहीं करता (२६) हाँ जिस पैग़म्बर को पसन्द फ़रमाये तो उस को ग़ैब की बातें बता देता है और उस) के आगे और पीछे निगहबान मुक़र्रर कर देता है (२७) ताकि मालूम फ़रमाये कि उन्होंने अपने पर्वरदिगार के पैग़ाम पहुंचा दिये हैं ? और (यूं तो) उस ने उन की सब चीज़ों को हर तरफ़ से क़ाबू कर रखा है और एक एक चीज गिन रखी है (२८)—रुकू २

—०—

७३—सूर—हे--अल-मुज़म्मिल

यह सूरते मुज़म्मिल मक्के में उतरी, इसमें २० आयतें और २ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

ऐ (मोहम्मद) जो कपड़े में लिपट रहे हैं (१) रात को क़याम किया करो, मगर थोड़ी रात (२) (क़याम) आधी रात (क़िया करो) वा उस से कुछ कम (३) या कुछ ज़्यादा और क़ुरान को ठैहर ठैहर कर पढ़ा करो (४) हम अन्क़रीब तुम पर एक भारी फ़रमान नाज़िल करेंगे (५) कुछ शक नहीं कि रात

का उठना (नफ़्से बहीमी को) सख्त पामाल करता है और उस वक्त ज़िक्र भी ख़ूब दुरुस्त होता है (६) दिन के वक्त तो तुम्हें और बहुतसे शग़ल होते हैं (७) तो अपने पर्वरदिगार के नाम का जिक्र करो और हर तरफ़ से बेताल्लुक़ होकर उसकी तरफ़ मुतवज्जोह हो जाओ (८) (वही) मशरिक और मग़रिब का मालिक (है और) उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तो उसी को अपना कारसाज़ बनाओ (९) और जो जो (दिल आज़ार) बातें वह लोग कहते हैं, उन को सहते रहो और अच्छे तरीक़ से उन से कनारा कश रहो (१०) और मुझे उन झुठलाने वालों से जो दौलतमन्द हैं समझ लेने दो, और उन को थोड़ी सी मोहलत दे दो (११) कुछ शक नहीं कि हमारे पास बेड़ियाँ हैं और भड़-कती आग है (१२) और गुलूगीर खाना है और दर्द देने वाला अज़ाब (भी) है (१३) जिस दिन ज़मीन और पहाड़ काँपने लगें, और पहाड़ ऐसे भुरभुरे (गोया) रेत के टीले हो जायें (१४) (ऐ अहले मक्का) जिस तरह हम ने फ़िरऔन के पास (मूसा को) पैग़म्बर (बना कर) भेजा था (उसी तरह) तुम्हारे पास (मोहम्मद) रसूल भेजे हैं, जो तुम्हारे मुक़ाबिले में गवाह होंगे (१५) सो फ़िरऔन ने (हमारे) पैग़म्बर का कहा न माना, तो हम ने उस को बड़े वबाल में पकड़ लिया (१६) अगर तुम भी (उन पैग़म्बर को) न मानोगे तो उस दिन से क्यों कर बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा (१७) (और) जिस से आस्मान फट जायेगा, यह उस का वायदा (पूरा) होकर रहेगा (१८) यह (क़ुरान) तो नसीहत है, सो जो चाहे अपने पर्वरदिगार तक (पहुंचने का) रास्ता अख्तियार करले (१९)—रुकू १

तुम्हारा पर्वरदिगार ख़ूब जानता है कि तुम और तुम्हारे साथ के लोग (कभी) दो तिहाई रात के क़रीब और (कभी) आधी रात और (कभी) तिहाई रात क़याम किया करते हो

और ख़ुदा तो रात और दिन का अन्दाज़ा रखता है, उस ने मालूम किया कि तुम इस को निबाह न सकोगे तो उस ने तुम पर मेहरबानी की, बस जितना आसानी से हो सके (उतना) क़ुरान पढ़ लिया करो, उस ने जाना कि तुम में बाज़ बीमार भी होते हैं और बाज़ ख़ुदा के फ़ज़ल (यानी मआश) की तलाश में मुल्क में सफ़र करते है और बाज़ ख़ुदा की राह में लड़ते हैं, तो जितना आसानी से हो सके उतना पढ़ लिया करो और नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात अदा करते रहो और ख़ुदा को नेक (और ख़ुलूस नीयत से) क़रज़ देते रहो, और जो नेक अमल तुम अपने लिये आगे भेजोगे उस को ख़ुदा के हाँ बेहतर और सिले में बुज़ुर्ग तर पाओगे और ख़ुदा से बख़्शिश माँगते रहो, बेशक ख़ुदा बख़्शने वाला मेहरबान है (२०)—रुकू २

—०—

७४—सूर-हे-अल-मुद्दस्सिर

यह सूरते मुद्दस्सिर मक्के में उतरी, इसमें ५६ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

ऐ (मोहम्मद) जो कपड़ा लपेटे पड़े हो (१) उठो और हिदायत करो (२) और अपने पर्वरदिगार की बड़ाई करो (३) और अपने कपड़ों को पाक रखो (४) और नापाकी से दूर रहो (५) और (इस नीयत से) एहसान न करो कि उस से ज़्यादा तालिब हो (६) और अपने पर्वरदिगार के लिये सब्र करो (७) जब सूर फूंका जायेगा (८) वह दिन मुश्किल का दिन होगा

(९) (यानी) काफ़िरों पर आसान न होगा (१०) हमें ऐसे शख्स से समझ लेने दो, वह जिस को हम ने अकेला पैदा किया (११) और माल कसीर दिया (१२) और (हर वक्त उस के पास) हाज़िर रहने वाले बेटे दिये (१३) और हर तरह के सामान में वुसअत दी (१४) अभी ख्वाहिश रखता है कि और ज़्यादा दे (१५) ऐसा हर्गिज़ नहीं होगा, यह हमारी आयतों का दुश्मन रहा है (१६) हम उसे सऊद पर चढ़ायेंगे (१७) उस ने फ़िक्र किया और तजवीज़ की (१८) यह मारा जाये उस ने कैसी तजवीज़ की ? (१९) फिर यह मारा जाये, उसने कैसी तजवीज़ की ? (२०) फिर ताम्मुल किया (२१) फिर त्यौरी चढ़ाई और मूंह बिगाड़ लिया (२२) फिर पुश्त फेर कर चला और (क़बूले हक़ से) ग़रूर किया (२३) फिर कहने लगा यह तो जादू है जो (अगलों से) मुन्तक़िल होता आया है (२४) (फिर बोला) यह (ख़ुदा का कलाम नहीं, बल्कि) बशर का कलाम है (२५) हम अन्क़रीब उसको सक़र में दाखिल करेंगे (२६) और तुम क्या समझे कि सक़र क्या है ? (२७) (वह आग है कि) न बाक़ी रखेगी और न छोड़ेगी (२८) और बदन को झुलस कर सियाह कर देगी (२९) उस पर उन्नीस दारोग़ा हैं (३०) और हमने दोज़ख के दारोग़ा फ़रिश्ते बनाये हैं और उन का शुमार काफ़िरों की आज़माईश के लिये मुक़र्रर किया है (और) इस लिये कि अहले किताब यक़ीन करें और मोमिनो का ईमान और ज़्यादा हो और अहले किताब और मोमिन शक न लायें और इस लिये कि जिन लोगों के दिलों में (निफ़ाक़) का मरज है और (जो) काफ़िर (हैं) कहें कि इस मिसाल (के बयान करने) से ख़ुदा का मक़सूद क्या है ? इसी तरह ख़ुदा जिस को चाहता है गुमराह करता है और जिस को चाहता है हिदायत करता है और तुम्हारे

पर्वरदिगार के लशकरों को इस के सिवा कोई नहीं जानता और यह तो बनी आदम के लिये नसीहत है (३१)—रुकू १

हाँ हाँ (हमें) चान्द की क़सम (३२) और रात की जब पीठ फेरने लगे (३३) और सुबह की जब रोशन हो (३४) कि वह (आग) एक बहुत बड़ी (आफ़त) है (३५) (और) बनी आदम के लिये मूजिबे खौफ़ (३६) जो तुम में से आगे बढ़ना चाहे या पीछे रहना चाहे (३७) हर शख्स अपने (आमाल) के बदले गिर्व है (३८) मगर दाहिनी तरफ़ वाले (नेक लोग) (३९) (कि) वह बाग़हाय बहिश्त में (होंगे) और पूछते होंगे (४०) (याना आग में जलने वाले) गुन्हेगारों से (४१) कि तुम दोज़ख में क्यों पड़े ? (४२) वह जवाब देंगे कि हम नमाज़ नहीं पढ़ते थे (४३) और फ़क़ीरों को खाना नहीं खिलाते थे (४४) और अहले बातिल के साथ मिल कर (हक़ से) इन्कार करते थे (४५) और रोज़े जज़ा को झुठ-लाते थे (४६) यहाँ तक कि हमें मौत आ गई (४७) (ता इस हाल में) सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश उन के हक़ में कुछ फ़ायदा न देगी (४८) उन को क्या हुआ है कि नसीहत से रुगर्दां हो रहे हैं (४९) गोया गधे हैं कि बिदक जाते हैं (५०) (यानी) शेर से डर कर भाग जाते हैं (५१) असल यह है कि उन में से हर शख्स यह चाहता है कि उस के पास खुली हुई किताब आये (५२) ऐसा हर्गिज़ नहीं होगा, हक़ीक़त यह है कि उन को आख़िरत का खौफ़ ही नहीं (५३) कुछ शक नहीं कि नसीहत है (५४) तो जो चाहे उसे याद रखे (५५) और याद भी तभी रखेंगे जब ख़ुदा चाहे, वही डरने के लायक़ और ख्वाहिश का मालिक है (५६)—रुकू २

--०--

७५—सूर–हे–अल क़यामत

यह सूरते कयामत मक्के में उतरी इसमें ४० आयतें और २ रुकू हैं।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हम को रोजे क़यामत की क़सम (१) और नफ़से तवामा की (कि सब लोग उठा कर खड़े किये जायेंगे) (२)* क्या इन्सान यह ख्याल करता है कि हम उस की (बिखरी हुई) हड्डियाँ इकट्ठी नहीं करेंगे ? (३) ज़रूर करेंगे (और) हम इस बात पर क़ादिर हैं कि उस की पोर पोर दुरुस्त करें (४) मगर इन्सान चाहता है कि आगे को ख़ुदसरी करता जाये (५) पूछता है कि क़यामत का दिन कब होगा (६) जब आँखें चुन्धिया जायेंगी (७) और चान्द गहना जाये (८) और सूरज और चान्द जमा कर दिये जायें (९) उस दिन इन्सान कहेगा कि (अब) कहाँ भाग जाऊं (१०) बेशक कहीं पनाह नहीं (११) उस रोज तेरे पर्वरदिगार ही के पास ठिकाना है (१२) उस दिन इन्सान को जो (अमल) उसने आगे भेजे और जो पीछे छोड़े होंगे सब बता दिये जायेंगे (१३) बल्कि इन्सान आप अपना गवाह है

*आयत २. नफ़से तवामा:—इन्सान का जी तीन तरह का है एक जो गुनाहों और बुरे कामों की तरफ़ माईल रहे, उसकी नफ़्से अमारा या अम्मारा कहते हैं, दूसरा जो बुराई और क़सूर के सरज़द होने पर मलामत करे कि तू ने यह नीयत क्यों की उसको नफ़्से तवामा कहते हैं तीसरा जो नेकियों की तरफ़ राग़िब और बुराईयों से मुतनफ़्फ़िर हो; ऐसा जी बड़े चैन में रहता है और उसको नफ़्से मुतमैयना कहते हैं, यहाँ ख़ुदा ने नफ़्से तवामा की क़सम खाई है।

(१४) अगरचे उज्र व माज़रत करता रहे (१५) (और ऐ मोहम्मद) वहो के पढ़ने के लिये अपनी ज़बान न चलाया करो कि उस को जल्द याद कर लो (१६) उस का जमा करना और पढ़वाना हमारे ज़िम्मे है (१७) जब हम वही पढ़ा करें तो तुम (उस को सुना करो, और) फिर उसी तरह पढ़ा करो (१८) फिर उस (के मआनी) का बयान भी हमारे ज़िम्मे है (१९) मगर (लोगो !) तुम दुनिया को दोस्त रखते हो (२०) और आख़िरत को तर्क किये देते हो (२१) उस रोज़ बहुत से मूंह रौनक़दार होंगे (२२) और अपने पर्वरदिगार के महवे दीदार होंगे (२३) और बहुत से मूंह उस दिन उदास होंगे (२४) ख़्याल करेंगे कि उन पर मुसीबत वाक़ैय होने को है (२५) देखो जब जान गले तक पहुंच जाये (२६) और लोग कहने लगें (इस वक्त) कौन झाड़ फूंक करने वाला है (२७) और उस (जाँ ब लब) ने समझा कि अब सब से जुदाई है (२८) और पिन्डली से पिन्डली लिपट जाये (२९) उस दिन तुम को अपने पर्वरदिगार की तरफ़ चलना है (३०)—रुकू १

तो उस (ना आक़बत) अन्देश ने तो (कलामे ख़ुदा की) तसदीक़ की, न नमाज़ बढ़ी (३१) बल्कि झुटलाया और मूंह फेर लिया (३२) फिर अपने घर वालों के पास अकड़ता हुआ चल दिया (३३) अफ़सोस है तुझ पर फिर अफ़सोस है (३४) फिर अफ़सोस है तुझ पर फिर अफ़सोस है (३५) क्या इन्सान ख़्याल करता है कि यूंही छोड़ दिया जायेगा ३६) क्या वह मनी जो रहम में डाली है एक क़तरा न था (३७) फिर लोथड़ा हुआ, फिर (ख़ुदा ने) उस को बनाया, फिर उस के आज़ा को दुरुस्त किया (३८) फिर उस की दो क़िसमें बनाईं एक मर्द और (एक) औरत (३९) क्या उस ख़ालिक़ को क़ुदरत नहीं कि मुर्दों को जिला उठाये (४०)—रुकू २

७६—सूर–हे–अल-दहर

यह सूरते दहर मक्के में उतरी, इसमें ३१ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरु खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

बेशक इन्सान पर ज़माने में एक ऐसा वक्त भी आ चुका है कि वह कोई चीज़ क़ाबिले ज़िक्र न थी (१) हम ने इन्सान को नुतफ़-ऐ-मख्लूत से पैदा किया ताकि उसे आज़मायें तो हमने उसको सुनता देखता बनाया (२)(और) उसे रस्ता भी दिखाया (अब) ख्वाह वह शुक्रगुज़ार हो ख्वाह ना शुक्रा (३) हमने काफ़िरों के लिये ज़न्जीरें और तौक़ और दहकती आग तैयार कर रखी है (४) जो नेकूकार हैं, वह ऐसी शराब नोशेजान करेंगे जिस में क़ाफ़ूर की आमेज़िश होगी (५) यह एक चश्मा है जिस में से खुदा के बन्दे पीयेंगे (और) उसमें से (छोटी छोटी) नहरें निकाल लेंगे (६) यह लोग नज़्रें पूरी करते हैं और उस दिन से जिस की सख्ती फैल रही होगी खौफ़ रखते हैं (७) और बावजूदे कि उन को खुद तआम की ख्वाहिश (और हाजत) है फ़क़ीरों, यतीमों और क़ैदियों को खिलाते हैं (८) (और कहते हैं कि) हम तुम को खालिस खुदा के लिये खिलाते हैं, न तुम से एवज़ के ख्वास्तगार हैं न शुक्रगुज़ारी के (तलबगार) (९) हम को अपने पर्वरदिगार से उस दिन का डर लगता है जो (चेहरों को) करीह उल मन्ज़र और (दिलों को) सख्त (मुज़तर कर देने वाला) है (१०) तो खुदा उन को उस दिन की सख्ती से बचा लेगा और ताज़गी और खुशदिली इनायत फ़रमायेगा (११) और उन के सब्र के बदले उनको बहिश्त (के मलबूसात) अता करेगा

(१२) उनमें वह तख़्तों पर तकिया लगाये बैठे होंगे, वहाँ न धूप की (हिद्दत) देखेंगे न सरदी की शिद्दत (१३) उन से (समरदार शाखें और) उन के साये क़रीब होंगे और मेवों के गुच्छे झुके हुए लटक रहे होंगे (१४) (खुद्दाम) चान्दी के बासन लिये हुए उनके इर्द गिर्द फिरेंगे और शीशे के (निहायत शफ़्फ़ाफ़) गिलास (१५) और शीशे भी चान्दी के जो ठीक अन्दाज़े के मुताबिक़ बनाये गये हैं (१६) और वहाँ उन को ऐसी शराब (भी) पिलाई जायेगी जिस में सौन्ठ की आमेज़िश होगी (१८) यह बहिश्त में एक चश्मा है जिस का नाम सलसबील है (१८) और उनके पास लड़के आते जाते होंगे जो हमेशा (एक ही हालत पर) रहेंगे, जब तुम उन पर निगाह डालो तो ख्याल करो कि बिखरे हुए मोती हैं (१९) और बहिश्त में (जहाँ) आँख उठाओगे, कसरत से नेयमत और अज़ीम (उश्शान) सलतनत देखोगे (२०) उन के (बदनों) पर दीबा के सब्ज़ और अतलस के कपड़े होंगे और उन्हें चान्दी के कङ्गन पहनाये जायेंगे और उन का पर्वरदिगार उन को निहायत पाकीज़ा शराब पिलायेगा (२१) यह तुम्हारा सिला है और तुम्हारी कोशिश (खुदा के हाँ) मक़बूल हुई (२२)—रुकू १

(ऐ मोहम्मद) हम ने तुम पर क़ुरान आहिस्ता आहिस्ता नाज़िल किया है (२३) तो अपने पर्वरदिगार के हुक्म के मुताबिक़ सब्र किये रहो, और उन लोगों में से किसी बद अमल और नाशुक्रे का कहा न मानो (२४) और सुब्ह व शाम अपने पर्वरदिगार का नाम लेते रहो (२५) और रात को बड़ी देर रात तक सज्दे करो और उस की पाकी बयान करते रहो (२६) यह लोग दुनिया को दोस्त रखते हैं और (क़यामत के) भारी दिन को पसे पुश्त छोड़ देते हैं (२७) हमने इन को पैदा किया और इन के

नफ़ासिल को मज़बूत बनाया और अगर हम चाहें तो इन के

बदले इन्हीं की तरह और लोग ले आयें (२८) यह तो नसीहत है, सो जो चाहे अपने पर्वरदिगार की तरफ़ पहुंचने का रास्ता अख्तियार करे (२९) और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते, मगर जो खुदा को मन्ज़ूर हो, बेशक खुदा जानने वाला हिकमत वाला है (३०) जिस को चाहता है अपनी रेहमत में दाखिल कर लेता है और ज़ालिमों के लिये उस ने दुख देने वाला अजाब तैयार कर रखा है (३१) - रुकू २

—०—

७७-सूर-हे-मुर्सलात

यह सूरते मुर्सलात मक्के में उतरी, इसमें ५० आयतें और २ रुकू हैं।

शुरु खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हवाओं की क़सम जो नरम नरम चलती हैं (१) फिर ज़ोर पकड़ कर झक्कड़ हो जाती हैं (२) और (बादलों को) फाड़ कर फैला देती हैं (३) फिर उनको फाड़ कर जुदा जुदा कर देती हैं (४) फिर फ़रिश्तों की क़सम, जो वही लाते हैं (५) कि उज्र (रफ़ा) कर दिया जाये या डर सुना दिया जाये (६) कि जिस बात का तुम से वायदा किया जाता है वह हो कर रहेगी (७) जब तारों की चमक जाती रहे (८) और जब आस्मान फट जाये (९) और जब पहाड़ उड़े उड़े फिरें (१०) और जब पैग़म्बर फ़राहम किये जायें (११) भला (इन उमूर में) ताख़ीर किस दिन के लिये की गई ? (१२) फ़ैस्ले के दिन के लिये (१३) और तुम्हें क्या खबर कि फ़ैस्ले का दिन क्या है ? (१४) उस दिन झुटलाने वालों को ख़राबी है (१५) क्या हम ने पहले लोगों को हलाक

नहीं कर डाला (१६) फिर उन पिछलों को भी उन के पीछे भेज देते हैं (१७) हम गुन्हेगारों के साथ ऐसा ही किया करते हैं (१८) उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी है (१९) क्या हमने तुम को हक़ीर पानी से पैदा नहीं किया ? (२०) (पहले) उस को एक मेहफ़ूज़ जगह में रखा (२१) एक मौईनन वक्त तक (२२) फिर अन्दाज़ा मुक़र्रर किया, और हम क्या ही ख़ूब अन्दाज़ा मुक़र्रर करने वाले हैं (२३) उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी है (२४) क्या हम ने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया (२५) (यानी) ज़िन्दों और मुर्दों को (बनाया) (२६) और उस पर ऊँचे ऊँचे पहाड़ रख दिये, और तुम लोगों को मीठा पानी पिलाया (२७) उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी है (२८) जिस चीज़ को तुम झुटलाया करते थे (अब) उस की तरफ़ चलो (२९((यानी) उस साये की तरफ़ चलो जिसकी तीन शाखें हैं (३०) न ठन्डी छाओं और न लपट से बचाओ (३१) उस से (आग की इतनी बड़ी) चिगारियाँ उड़ती हैं जैसे महल (३२) गोया ज़रद रंग के ऊण्ट हैं (३३) उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी है (३४) यह वह दिन है कि (लोग) लब तक न हिला सकेंगे (३५) और न उन को इजाज़त दी जायेगी कि उज्र कर सकें (३६) उस दिन झुटलाने वालों की खगबी है (३७) यही फ़ैस्ले का दिन है (जि. में) हमने तुम को और पहले लोगों को जमा किया है (३८) अगर तुमको कोई दाँव आता हो तो मुझ से कर लो (३९) उस दिन झुटलाने वालों की ख़राबी है (४०)—रुकू १

बेशक परहेज़गार सायों और चश्मों में होंगे (४१) और मेवों में जो उन को मरग़ूब हों (४२) जो अमल तुम करते रहे थे, उन के बदले में मज़े से खाओ और पीओ (४३) हम नेकू

कारों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं (४४) उस दिन झुटलाने वालों की खराबी है (४५) (ऐ झुटलाने वालो !) तुम किसी क़दर खालो और फ़ायदे उठालो, तुम बेशक गुन्हेगार हो (४६) उस दिन झुटलाने वालों की खराबी है (४७) और जब उन से कहा जाता है कि (ख़ुदा के आगे) झुको तो झुकते हैं (४८) उस दिन झुटलाने वालों की खराबी है (४९) अब उस के बाद यह कौन सी बात पर ईमान लायेंगे (५०)—रुकू २

—०—

तीसवां पारा—(अम)

७८--सूर--हे--अल नबा

यह सूरते नबा मक्के में उतरी, इसमें ४० आयतें और २ रुकू हैं।

शुरु ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(यह) लोग किस चीज़ की निस्बत पूछते हैं (१) (क्या) बड़ी ख़बर की निस्बत ? (२) जिस में यह इख्तिलाफ़ कर रहे हैं (३) देखो यह अन्क़रीब जान लेंगे (४) फिर देखो, यह अन्क़रीब जान लेंगे (५) क्या हमने ज़मीन को बिछौना नहीं बनाया ? (६) और पहाड़ों को (उस को) मेखें (नहीं ठैहराया) ? (७) (बेशक बनाया) और तुम को जोड़ा भी पैदा किया (८) और नीन्द को तुम्हारे लिये (मूजिबे) आराम बनाया (९) और रात को पर्दा मुक़र्रर किया (१०) और दिन को मआश (का वक्त) क़रार दिया (११) और तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आस्मान बनाये (१२) और (आफ़ताब को) रोशन चिराग़ बनाया (१३)

और निचुड़ते बादलों से मूसलाधार मेंह बरसाया (१४) ताकि उस से अनाज और सब्ज़ा पैदा करें (१५) और घने घने बाग़ (१६) बेशक फ़ैस्ले का दिन मुक़र्रर है (१७) जिस दिन सूर फूंका जायेगा तो तुम लोग ग़ट के ग़ट आ मौजूद होगे (१८) और आस्मान खोला जायेगा तो (उस में) दरवाज़ें हो जायेंगे (१९) और पहाड़ चलाये जायेंगे तो वह रेत होकर रह जायेंगे (२०) बेशक दोज़ख़ घात में है (२१) (यानी) सरकशों का वही ठिकाना है (२२) उस में वह मुद्दतों पड़े रहेंगे (२३) वहाँ न ठन्डक का मज़ा चखेंगे न (कुछ) पीना (नसीब होगा) (२४) मगर गर्म पानी और वह ही पीप (२५) (यह) बदला है पूरा पूरा (२६) यह लोग हिसाबे (आख़िरत) की उमीद ही नहीं रखते (२७) और हमारी आयतों को भूठ समझकर झुटलाते रहते थे (२८) और हमने हर चीज़को लिखकर ज़ब्त कर रखा है (२९) सो (अब) मज़ा चखो, हम तुम पर अज़ाब ही बढ़ाते जायेंगे (३०)—रुकू १

बेशक परहेज़गारों के लिये कामयाबी है (३१) (यानी) बाग़ और अंगूर (३२) और हम उम्र नौजवान औरतें (३३) और शराब के छलकते हुये गिलास (३४) वहाँ न बेहूदा बात सुनेंगे न झूठ (ख़ुराफ़ात) (३५) यह तुम्हारे पवर्रदिगार की तरफ़ से सिला है इनामे कसीर (३६) वह जो आस्मानों और ज़मीन और जो उन दोनों में है सब का मालिक है बड़ा मेहरबान, किसी को उस से बात करने का यारा न होगा (३७) जिस दिन रुह (उल अमीन) और (और) फ़रिश्ते सफ़ बान्ध कर खड़े होंगे, तो कोई बोल न सकेगा, मगर जिस को (ख़ुदाय) रेहमान इजाज़त बख़्शे, और उसने बात भी दुरुस्त कही हो (३८) यह दिन बरहक़ है पस जो शख़्श चाहे अपने पवर्रदिगार के पास ठिकाना

बनाये (३९) हमने तुमको अज़ाब से जो अन्क़रीब आने वाला है, आगाह कर दिया है, जिस दिन हर शख्स उन (आमाल) को जो उसने आगे भेजे होंगे, देख लेगा, और काफ़िर कहेगा ऐ काश मैं मिट्टी होता (४०) रुकू—२

—०—

७९ सूर हे अल नाज़िआत

यह सूरते नाज़िआत मक्के में उतरी, इसमें ४६ आयतें और २ रुकू हैं।

शुरु ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

उन फ़रिश्तों) की क़सम जो डूब कर खींच लेते हैं (१) और उनकी जो आसानी से खोल देते हैं (२) और उनकी जो तैरते फिरते हैं (३) फिर लपक कर आगे बढ़ते हैं (४) फिर (दुनिया के) कामों का इन्तज़ाम करते हैं (५) (कि वह दिन भी आकर रहेगा) जिस दिन ज़मीन को भौञ्चाल आयेगा (६) फिर उसके पीछे और (भौंचाल) आयेगा (७) उस दिन (लोगों) के दिल खाईफ़ हो रहे होंगे (८) और आंखें झुकी हुई (९) काफ़िर कहते हैं क्या हम उलटे पाँव फिर लौटेंगे (१०) भला जब हम खोखली हड्डियाँ हो जायेंगे (तो फिर जिन्दा किये जायेंगे) (११) कहते हैं कि यह लौटना तो (मूजिबे) ज़ियाँ है (१२) वह तो सिर्फ़ एक डान्ट होगी (१३) उस वक्त वह (सब) मैदान (हश्र) में भी जमा होंगे (१४) भला तुमको मूसा की हिकायत पहुँची है ? (१५) जब उनके पवर्रदिगार ने उनको पाक मैदान (यानी तूवा) में पुकारा (१६) (और हुक्म दिया) कि फ़िरऔन

के पास जाओ यह सरकश हो रहा है (१७) और (उससे) कहो क्या तू चाहता है कि पाक हो जाये (१८) और मैं तुझे तेरे पर्वरदिगार का रस्ता बताऊंगा, ता कि तुम को ख़ौफ़ (पैदा) हो (१९) गरज़ उन्होंने उसको बड़ी निशानी दिखाई (२०) उसने झुटलाया और न माना (२१) फिर लौट गया और तदबीरें करने लगा (२२) और (लोगों को) इकट्ठा किया और पुकारा (२३) कहने लगा कि तुम्हारा सबसे बड़ा मालिक मैं हूं (२४) तो ख़ुदा ने उसको दुनिया और आख़िरत (दोनों) के अज़ाब में पकड़ लिया (२५) जो शख़्स (ख़ुदा से) डर रखता है, उसके लिये इस (क़िस्से) में इब्रत है (२६)—रुकू १

भला तुम्हारा बनाना आसान है या आस्मान का ? उसी ने उस को बनाया (२७) उस की छत को ऊन्चा किया फिर उसे बराबर कर दिया (२८) और उसी ने रात को तारीक बनाया (और दिन को) धूप निकाली (२९) और उसी के बाद ज़मीन को फैला दिया (३०) उसी ने उस में उस का पानी निकाला और चारा उगाया (३१) और उस पर पहाड़ों का बोझ रख दिया (३२) यह सब कुछ तुम्हारे और तुम्हारे चारपाय लिये (किया) (३३) तो जब बड़ी आफ़त आयेगी (३४) उसदिन इन्सान अपने कामों को याद करेगा (३५) और दोज़ख़ देखने वाले के सामने निकाल कर रख दी जायेगी (३६) तो जिसने सरकशी की (३७) और दुनिया की ज़िन्दगी को मुक़द्दम समझा (३८) उस का ठिकाना दोज़ख़ है (३९) और जो अपने पर्वरदिगार के सामने खड़े होने से डरता और जी कोई ख्वाहिशों से रोकता रहा (४०) उस का ठिकाना बहिश्त है (४१) (ऐ पैग़म्बर) लोग तुम क़यामत के बारे में पूछते हैं कि उस का वक्त कब होगा (४२) सो तुम उस के ज़िक्र से किस फ़िक्र में हो ? (४३) उस का मुन-तहा (यानी वाक़ा होने का वक्त) तुम्हारे पर्वरदिगार ही को

मालूम है (४४) जो शख्स उस से डर रखता है तुम तो उसी को डर सुनाने वाले हो (४५) जब वह उस को देखेंगे (तो ऐसा ख्याल करेंगे) कि गोया (दुनिया में सिर्फ़) एक शाम या सुब्हा रहे थे (४६)—रुकू २

—०—

८०—सूर--हे-अल-अबस

यह सूरते अबस मक्के में उतरी, इस में ४२ आयतें और १ रुकू है।

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(मोहम्मद मुस्तफ़ा) तुर्शरु हुए और मूंह फेर बैठे (१) कि उन के पास एक नाबीना आया (२) और तुम को क्या खबर, शायद वह पाकीज़गी हासिल करता (३) या सोचता तो समझता, उसे फ़ायदे देता (४) जो पर्वाह नहीं करता (५) उस की तरफ़ तो तुम तवज्जोह करते हो (६) हालाँकि अगर वह न संवरे तो तुम पर कुछ (इल्ज़ाम) नहीं (७) और जो तुम्हारे पास दौड़ता हुआ आया (८) और (खुदा से) डरता है (९) उस से तुम बेरुखी करते हो (१०) देखो यह (क़ुरान) नसीहत है (११) पस जो चाहे इसे याद रखे (१२) क़ाबिले अदब वर्क़ों में (लिखा हुआ) (१३) जो बुलन्द मक़ाम पर रखे हुए और पाक हैं (१४) (ऐसे) लिखने वाले के हाथों में (१५) जो सरदार और नेकूकार हैं (१६) इन्सान हलाक हो जाये कैसा नाशुक्रा है (१७) उसे खुदा ने किस चीज़ से बनाया ? (१८) नुतफ़े से बनाया, फिर उस का अन्दाज़ा मुक़र्रर किया (१९) फिर उस के लिये रस्ता आसान कर दिया (२०) फिर उस को मौत दी, फिर क़ब्र में

दफ़्न कराया (२१) फिर जब चाहेगा उसे उठा खड़ा करेगा (२२) कुछ शक नहीं कि ख़ुदा ने उसे जो हुक्म दिया, उस पर अमल न किया (२३) तो इन्सान को चाहिये कि अपने खाने की तरफ़ नज़र करे (२४) बेशक हम ही ने पानी बरसाया (२५) फिर हम ही ने ज़मीन को चीरा फ़ाड़ा (२६) फिर हम ही ने उस में अनाज उगाया (२७) और अंगूर और तरकारी (२८) और ज़ैतून और खजूरें (२९) और घने घने बाग़ (३०) और मेवे और चारा (३१) (यह सब कुछ) तुम्हारे और तुम्हारे चारपायों के लिये बुलाया (३२) तो जब (क़यामत का) गुल मचेगा (३३) उसी दिन भाई अपने भाई से दूर भागेगा (३४) और अपनी माँ और अपने बाप से (३५) और अपनी बीवी और अपने बेटों से (३६) हर शख़्स उस रोज़ एक फ़िक्र में होगा जो उसे (मसरुफ़ियत के लिये बस करेगा (३७) और कितने मूंह उस रोज़ चमक रहे होंगे (३८) खन्दाँ व शादाँ (यह मोमिनाने नेकूकार हैं) (३९) और कितने मूंह होंगे जिन पर गर्द पड़ रही होगी (४०) (और) सियाही चढ़ रही होगी (४१) यह कफ़्फ़ारे बदकिर्दार हैं (४२)—रुकू १

—०—

८१—सूर-हे-अल-तकबीर

यह सूरते तकबीर मक्के में उतरी इसमें २९ आयतें और १ रुकू है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब सूरज लपेट लिया जायगा (१) और तारे बेनूर हो

जायेंगे (२) और जब पहाड़ चलाये जायेंगे (३) और जब ब्याहने वाली ऊन्टनियाँ बेकार हो जायेंगी (४) और जब वहशी जानवर इकट्ठे हो जायेंगे (५) और जब दरिया आग हो जायेंगे (६) और जब रुहें (बदनों से) मिला दी जायेंगी (७) और जब उस लड़की से जो ज़िन्दा दफ़ना दी गई हो, पूछा जायेगा (८) कि वह किस गुनाह पर मारी गई (९) और जब (अमलों के) दफ़्तर खोले जायेंगे (१०) और जब आस्मान की खाल खींच ली जायेगी (११) और जब दोज़ख (की आग) भड़काई जायेगी (१२) और जब बहिश्त क़रीब लाई जायेगी (१३) तब हर शख़्स मालूम करेगा कि वह क्या लेकर आया है (१४) हम को उन सितारों की क़सम जो पीछे हट जाते हैं (१५) (और) जो सैर करते और ग़ायब हो जाते हैं (१६) और रात की क़सम जब ख़त्म होने लगती है (१७) और सुब्ह की क़सम जब नमूदार होती है (१८) कि बेशक यह (क़ुरान) फ़रिश्तये आली मक़ाम की ज़बान का पैगाम है (१९) जो साहिबे क़ुव्वत मालिके अर्श के हाँ ऊन्चे दर्जे वाला (२०) सरदार (और) अमानतदार है (२१) और (मक्के वालो) तुम्हारे रफ़ीक़ (यानी मोहम्मद) दीवाने नहीं हैं (२२) बेशक उन्होंने उस (फ़रिश्ते) को (आस्मान के खुले) यानी मशरक़ी किनारे पर देखा है (२३) और वह पोशीदा बातों (के ज़ाहिर करने) में बख़ील नहीं (२४) और यह शैताने मरदूद का कलाम नहीं (२५) फिर तुम किधर जा रहे हो (२६) यह तो जहान के लोगों के लिये नसीहत है (२७) (यानी) उस के लिये, जो तुम में से सीधी चाल चलना चाहे (२८) और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते, मगर वही जो ख़ुदाय रब्बुल आलमीन चाहे (२९)—रुकू १

८२—सूर–हे–इन्फ़ितार

यह सूरते इन्फ़ितार मक्के में उतरी, इसमें १९ आयतें और १ रुकू है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

जब आसमान फट जायेगा (१) और तारे झड़ पड़ेंगे (२) और जब दरिया बह (कर एक दूसरे में) मिल जायेंगे (३) और जब क़ब्रें उखेड दी जायेंगी (४) तब हर शख़्स मालूम कर लेगा कि उस ने आगे क्या भेजा था और पीछे क्या छोड़ा था (५) ऐ इन्सान तुझ को अपने पर्वरदिगार करम गस्तर के बाब में किस चीज़ ने धोखा दिया (६) (वही तो है) जिस ने तुझे बनाया और (तेरे आज़ा को) ठीक किया और (तेरे क़ामत को) मौत-दिल रखा (७) और जिस सूरत में चाहा तुझे जोड़ दिया (८) मगर हैईयात तुम लोग जज़ा को झुटलाते हो (९) हालाँकि तुम पर निगैहबान मुक़र्रर हैं (१०) आली क़दर (तुम्हारी बातों के) लिखने वाले (११) जो कुछ तुम करते हो, वह उसे जानते हैं (१२) बेशक नेकूकार नैयमतों (की बहिश्त) मे होंगे (१३) और बदकिर्दार दोज़ख में (१४) (यानी) जज़ा के दिन उसमें दाख़िल होंगे (१५) और उस से छुप नहीं सकेंगे (१६) और तुम्हें क्या मालूम कि जज़ा का दिन कैसा है ? (१७) फिर तुम्हें क्या मालूम कि जज़ा का दिन कैसा है ? (१८) जिस रोज़ कोई किसी का कुछ भला न कर सकेगा और हुक्म उस रोज़ सिर्फ़ ख़ुदा ही का होगा (१९)—रुकू १

—:०:—

८३—सूर—हे—अल ततफ़ीफ़

यह सूरते ततफ़ीफ़ मक्के में उतरी, इसमें ३६ आयतें और १ रुकू है।

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

नाप और तोल में कमी करने वालों के लिये खराबी है (१) जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लें (२) और जब उन को नाप कर या तोल कर दें तो कम दें (३) क्या यह लोग नहीं जानते कि उठाये भी जायेंगे (४) (यानी) एक बड़े (सख्त) दिन में (५) जिस दिन (तमाम) लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे (६) सुन रखो कि बदकारों के आमाल सज्जैन में है (७) और तुम क्या जानते हो कि सज्जैन क्या चीज़ है (८) एक दफ्तर है लिखा हुआ (९) उस दिन झुटलाने वालों की तबाही है (१०) (यानी) जो इन्साफ़ के दिन को झुटलाते हैं (११) और उस को झुटलाता वही है जो हद से निकल जाने वाला गुन्हेगार है (१२) जब उस को हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो कहता है, यह तो अगले लोगों के अफ़स ने हैं (१३) देखो यह जो (आमाले बद) करते हैं, उन का उन के दिलों पर रंग बैठ गया है (१४) बेशक यह लोग उस रोज़ अपने पर्वरदिगार (के दीदार) से ओट में होंगे (१५) फिर दोज़ख में जा दाख़िल होंगे (१६) फिर उन से कहा जायगा कि यह वही चीज़ है जिस को तुम झुटलाते थे (१७) (यह भी) सुन रखो कि नेकूकारों के आमाल इल्लतैन में हैं (१८) और तुम को क्या मालूम कि इल्लतैन क्या चीज़ है (१९) एक दफ्तर है लिखा हुआ (२०) जिसके पास मुक़र्रब फ़रिश्ते हाज़िर रहते हैं (२१) बेशक नेक लोग चैन में होंगे (२२) तख्तों पर बैठे

हुए नज़ारे करेंगे (२३) तुम उन के चेहरों ही से राहत की ताज़गी मालूम कर लोगे (२४) उन को ख़ालिस शराब सर ब मोहर पिलाई जायेगी (२५) जिस की मोहर मुश्क की होगी, तो (नैयमतों के) शायक़ीन को चाहिये कि उसी से रग़बत करें (२६) और उस में तसनीम (के पानी) की आमेजिश होगी (२७) वह एक चश्मा है जिस में से (ख़ुदा) के मुक़र्रबि पियेंगे (२८) जो गुन्हेगार (यानी कफ़्फ़ार) हैं, वह (दुनिया में) मोमिनों से हंसी किया करते थे (२९) और जब उन के पास से गुज़रते तो हिक़ा-रत से इशारे करते (३०) जब अपने घर को लौटते (३१) और जब उन (मोमिनों) को देखते तो कहते कि यह तो गुमराह हैं (३२) हालाँकि वह उन पर निगरान बना कर नहीं भेजे गये थे (३३) तो आज मोमिन काफ़िरों से हंसी करेंगे (३४) (और) तख़्तों पर (बैठे हुए) उन का हाल देख रहे होंगे (३५) तो काफ़िरों को उन के अमलों का (पूरा पूरा) बदला मिल गया (३६)—रुकू १

८४—सूर—हे—अल इन्शिक़ाक़

यह सूरते इन्शिक़ाक़ मक्के में उतरी, इसमें २५ आयतें और १ रुकू है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

जब आस्मान फट जायेगा (१) और अपने पर्वरदिगार का फ़रमान बजा लायेगा और उसे वाजिब भी यही है (२) और जब ज़मीन हमवार कर दी जायेगी (३) और जो कुछ उस में है

उसे निकाल कर बाहर डाल देगी (४) और अपने पर्वरदिगार के इर्शाद की तामील करेगी और उस को लाज़िम भी यही है (तो क़यामत क़ायम हो जायेगी) (५) ऐ इन्सान तू अपने पर्वरदिगार की तरफ़ (पहुंचने में) ख़ूब कोशिश करता है सो उस से जा मिलेगा (६) तो जिस का नाम-ऐ-आमाल उस के दाहिने हाथ में दिया जायेगा (७) उस से हिसाब आसान लिया जायेगा (८) और वह अपने घर वालों में ख़ुश ख़ुश आयेगा (९) और जिस का नाम-ऐ-आमाल उस की पीठ के पीछे से दिया जायेगा (१०) वह मौत को पुकारेगा (११) और दोज़ख में दाख़िल होगा (१२) यह अपने एहलो अयाल में मस्त रहता था (१३) और ख्याल करता था कि (ख़ुदा की तरफ़) फिर कर न जायेगा (१४) हाँ हाँ उस का पर्वरदिगार उसको देख रहा था (१५) हमें शाम की सुर्ख़ी की क़सम (१६) और रात की और जिन चीज़ों को वह इकट्ठा कर लेते हैं उन की (१७) और चान्द की जब कामिल हो जाये (१८) कि तुम दर्जा ब दर्जा (रुतब-ऐ-आला पर) चढ़ोगे (१९) तो उन लोगों को क्या हुआ है कि ईमान नहीं लाते (२०) और जब उन के सामने क़ुरान पढ़ा जाता है तो सजदा नहीं करते (२१) बल्कि काफ़िर झुटलाते हैं (२२) और ख़ुदा उन बातों को जो यह अपने दिलों में छुपाते हैं, ख़ूब जानता है (२३) तो उन को दुख देने वाले अज़ाब की ख़बर सुना दो (२४) हाँ जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे, उन के लिये बे इन्तिहा अजर है (२५)—रुकू १

८५–सूर–हे–अल-बुरुज

यह सूरते बुरुज मक्के में उतरी, इसमें २२ आयतें और १ रुकू है ।

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है ।

आसमान की क़सम जिस में बुर्ज हैं (१) और उस दिन की जिसका वायदा है (२) और हाज़िर होने वाले की और जो उस के पास हाज़िर किया जाये उसकी (३) कि खन्दक़ों के (खोदने) वाले हलाक कर दिये गये (४) (यानी) आग (की खन्दक़ें) जिस में ईन्धन (झौंक रखा) था (५) जब कि वह उन (के किनारों) पर बैठे हुए थे (६) और जो (सख्तियाँ) एहले ईमान पर कर रहे थे, उन को सामने देख रहे थे (७) उन को मोमिनों की यही बात बुरी लगती थी कि वह खुदा पर ईमान लाये हुए थे, जो गालिब (और) क़ाबिले सिताईश है (८) वही जिसकी आसमानों और ज़मीन में बादशाहत है और खुदा हर चीज़ से वाक़िफ़ है (९) जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को तक-लीफ़ें दीं और तौबा न की उन को दोज़ख का (और) अजाब भी होगा, और जलने का अज़ाब भी होगा (१०) (और) जो लोग ईमान लाये और नेक काम करते रहे, उन के लिये बाग़ात हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, यही बड़ी कामयाबी है (११) बेशक तुम्हारे पर्वरदिगार की पकड़ बड़ी सख्त है (१२) वही पहली दफ़ा पैदा करता है और वही दोबारा ज़िन्दा करेगा (१३) और वह बख्शने वाला और हुज्जत करने वाला है (१४) अर्श का मालिक बड़ी शान वाला (१५) जो चाहता है कर देता है (१६) भला तुम को लशकरों का हाल मालूम हुआ है (१७)

(यानी) फ़िरऔन और समूद का (१८) लेकिन काफ़िर (जान बूझ कर) तकज़ीब में (गिरफ़्तार) हैं (१९) और ख़ुदा (भी) उन को गिर्दा गिर्द से घेरे हुए है (२०) यह किताब हज़ल व बुतलान नहीं बल्कि यह क़ुराने अज़ीमुश्शान है (२१) लौहे मेहफ़ूज़ में लिखा हुआ (२२)—रुकू १

—०—

८६—सूर-हे—अल-तारिक़

यह सूरते तारिक़ मक्के में उतरी, इसमें १७ आयतें और १ रुकू है।

शुरु ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

आसमान और रात के वक्त आने वाले की क़सम (१) और तुम को क्या मालूम कि रात के वक्त आने वाला क्या है ? (२) वह तारा है चमकने वाला (३) कि कोई मुतनफ़्फ़िस नहीं जिस पर निगहबान मुक़र्रर नहीं (४) तो इन्सान को देखना चाहिये कि वह काहे से पैदा हुआ है (५) वह उछलते हुए पानी से पैदा हुआ है (६) जो पीठ और सीने के बीच में से निकलता है (७) बेशक ख़ुदा उस के ऐआदे (यानी फिर पैदा करने) पर क़ादिर है (८) जिस दिन दिलों के भेद जाँचे जायेंगे (९) तो इन्सान की कुछ पेश न चल सकेगी और न कोई उस का मददगार होगा (१०) आस्मान की क़सम जो मैंह बरसाता है (११) और ज़मीन की कसम जो फट जाती है (१२) कि यह कलाम (हक़ को बातिल से) जुदा करने वाला है (१३) और बेहूदा बात नहीं (१४) यह लोग तो अपनी तदबीरों में लग रहे हैं (१५) और

हम अपनी तदबीर कर रहे हैं (१६) तो तुम काफ़िरों को मोहलत दो, बस चन्द रोज़ ही मोहलत दो (१७) – रुकू १

—०—

८७—सूर–हे–अल आला

यह सूरते आला मक्के में उतरी, इसमें १९ आयतें और १ रुकू है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ (पैग़म्बर) अपने पर्वरदिगारे जलीलुश्शान के नाम की तस्बीह करो (१) जिस ने (इन्सान को) बनाया फिर (उस के) आज़ा को दुरुस्त किया (२) और जिसने (उस का) अन्दाज़ा ठैहराया (फिर उस को) रस्ता बताया (३) और जिस ने चारा उगाया (४) फिर उस को सियाह रंग का कूड़ा कर दिया (५) हम तुम्हें पढ़ायेंगे कि तुम फ़ारमाश न करोगे (६) मगर जो ख़ुदा चाहे, वह खुली बात को भी जानता है और छुपी को भी (७) हम तुम को आसान तरीके की तौफ़ीक़ देंगे (८) सो जहाँ तक नसीहत (के) नाफ़ैय (होने की उमीद) हो, नसीहत करते रहो (९) जो खौफ़ रखता है, वह तो नसीहत पकड़ेगा (१०) और (बे ख़ौफ़) बद बख़्त पहलूतिही करेगा (११) जो (क़यामत को) बड़ी (तेज़) आग में दाख़िल होगा (१२ फिर वहाँ न मरेगा न जियेगा (१३) बेशक वह मुराद को पहुंच गया जो पाक हुआ (१४) और अपने पर्वरदिगार के नाम का ज़िक्र करता रहा और नमाज पढ़ता रहा (१५) मगर तुम लोग तो दुनिया की ज़िन्दगी को अख़्तियार करते हो (१६) हालांकि आख़िरत बहुत

बेहतर और पायन्दा तर है (१७) यही बात पहले सहीफ़ों में (मरक़ूम) है (१८) (यानी) इब्राहीम और मूसा के सहीफ़ों में (१९)—रुकू १

—०—

८८—सूर–हे–अल ग़ाशियह

यह सूरते ग़ाशियह मक्के में उतरी, इस में २६ आयतें और १ रुकू है।

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

भला तुम को ढाँप लेने वाली (यानी क़यामत का) हाल मालूम हुआ है (१) उस रोज़ बहुत से मूह (वाले) ज़लील होंगे (२) सख़्त मेहनत करने वाले थके मान्दे (३) दहकती आग में दाख़िल होंगे (४) एक खौलते हुए चश्मे का पानी उन को पिलाया जायेगा (५) और ख़ारदार झाड़ के सिवा उन के लिये कोई खाना नहीं (होगा) (६) जो न फ़रबही लाये, न भूख में कुछ काम आये (७) और बहुत से मूंह (वाले) उस रोज़ शादमाँ होंगे (८) अपने आमाल (की जज़ा) से ख़ुश दिल (९) बहिश्ते बरीं में (१०) वहाँ किसी तरह की बकवास नहीं सुनेंगे (११) उस में चश्मे बह रहे होंगे (१२) वहाँ तख़्त होंगे ऊँचे बिछे हुए (१३) और आब ख़ोरे (क़रीने से) रखे हुए (१४) और गाव तकिये क़तार की क़तार लगे हुए (१५) और नफ़ीस मसनदें बिछी हुईं (१६) क्या यह लोग ऊन्टों की तरफ़ नहीं देखते कि कैसे (अजीब) पैदा किये गये हैं (१७) और आस्मान की तरफ़ कि कैसा बलन्द किया गया है (१८) और पहाड़ों की तरफ़ कि किस तरह खड़े किये गये हैं (१९) और ज़मीन की तरफ़ कि

किस तरह बिछाई गई (२०) तो तुम नसीहत करते रहो कि तुम नसीहत करने वाले ही हो (२१) तुम उन पर दारोग़ा नहीं हो (२२) हाँ जिस ने मूंह फेरा और न माना (२३) तो ख़ुदा उन को बड़ा अज़ाब देगा (२४) बेशक उन को हमारे पास लौट कर आना है (२५) फिर हम ही को उन से हिसाब लेना है (२६)-—रुकू १

—०—

८६—सूर—हे—अल फ़जर

यह सूरते फ़जर मक्के में उतरी, इसमें ३० आयतें हैं।

शुरु ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

फ़जर की क़सम (१) और दस रातों की (२) और जुफ़्त और ताक़ की (३) और रात की जब जाने लगे (४ (और) बेशक यह चीज़ें अक़्लमन्दों के नज़दीक़ क़सम खाने के लायक़ हैं (कि काफ़िरों को ज़रूर अज़ाब होगा) (५) क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे पर्वरदिगार ने आद के साथ क्या किया (६) जो इरम (कहलाते थे इतने) दराज़क़द (७) कि तमाम मुल्क में ऐसे पैदा नहीं हुए थे (८) और समूद के साथ (क्या किया) जो वादोऐ करा में पत्थर तराश्ते (और घर बनाते थे (९) और फ़िरऔन के साथ (क्या किया) जो ख़ैमें और मेख़ें रखता था (१०) यह लोग मुल्कों में सरकश हो रहे थे (११) और उनमें बहुत सी ख़राबियाँ करते थे (१२) तो तुम्हारे पर्वरदिगार ने उन पर अज़ाब का कोड़ा नाज़िल किया (१३) बेशक तुम्हारा पर्वरदिगार ताक में है (१४) मगर इन्सान (अजीब मख़लूक़ है कि) जब उस

का पर्वरदिगार उस को आजमाता है कि उसे इज़्ज़त देता और नेयमत बख्शता है कि (आहा) मेरे पर्वरदिगार ने मुझे इज़्ज़त बख्शी (१५) और जब (दूसरी तरह) आज़माता है कि उस पर रोज़ी तंग कर देता है तो कहता है कि (हाय) मेरे पर्वरदिगार ने मुझे ज़लील किया (१६) नहीं बल्कि तुम लोग यतीम की खातिर नहीं करते (१७) और न मिस्कीन को खाना खिलाने की तर्गीब देते हो (१८) और मीरास के माल को समेट कर खा जाते हो (१९) और माल को बहुत ही अज़ीज़ रखते हो (२०) तो जब ज़मीन की बलन्दी कूट कूट कर पस्त कर दी जायेगी (२१) और तुम्हारा पर्वरदिगार (जलवा फ़रमा होगा) और फ़रिश्ते क़तार बान्ध कर आ मौजूद होंगे (२२) और दोज़ख़ उस दिन हाज़िर की जायेगी तो इन्सान उस दिन मुतनव्वा होगा, मगर नुम तंबीह (से) उसे (फ़ायदा) कहाँ (मिल सकेगा) (२३) कहेगा, काश मैंने अपनी ज़िन्दगी (जाविदानी के लिये) कुछ आगे भेजा होता (२४) तो उस दिन न कोई खुदा के अज़ाब को तरह का (किसी को) अज़ाब देगा (२५) और न कोई वैसा जकड़ना जकड़ेगा (२६) ऐ इतमीनान पाने वाली रूह (२७) अपने पर्वरदिगार की तरफ़ लौट चल, तू उस से राज़ी वह तुझ से राज़ी (२८) मेरे (मुमताज़) बन्दों में दाखिल हो जा (२९) और मेरी बहिश्त में दाखिल हो जा (३०)—रुकू २

—०—

९०—सूर–हे–अल बलद

यह सूरते बलद मक्के में उतरी, इसमें २० आयतें हैं।

शुरु खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

मैं, इस शहर (मक्के) की क़सम (१) और तुम इसी शहर में तो रहते हो (२) और बाप (यानी आदम) और उस की औलाद की क़सम (३) कि हम ने इन्सान को तकलीफ़ (की हालत) में (रहने वाला) बनाया है (४) क्या वह ख़्याल रखता है कि उस पर कोई क़ाबू न पायेगा ? (५) कहता है कि मैंने बहुत सा माल बर्बाद किया (६) क्या उसे यह गुमान है कि उस को किसी ने देखा नहीं (७) भला हमने उसको दो आंखें नही दीं ? (८) और ज़बान और दो होन्ट (नहीं दिये) (९) (यह चीज़ें भी दीं) और उसको (ख़ैर व शर के) दोनों रस्ते भी दिखा दिये (१०) मगर वह घाटी पर से होकर न गुज़रा (११) और तुम क्या समझे कि घाटी क्या है ? (१२) किसी (कि) गर्दन का छुड़ाना (१३) या भूख के दिन खाना खिलाना (१४) यतीम रिश्तेदार को (१५) या फ़क़ीर ख़ाकसार को (१६) फिर उन लोगों में भी (दाखिल) हुआ जो ईमान लाये, और सब की नसीहत और (लोगों पर) शफ़क़त करने की वसीयत करते रहे (१७) यही लोग साहिबे सआदत हैं (१८) और जिन्होंने हमारी आयतों को न माना वह बद बख़्त हैं (१९) यह लोग आग में बन्द कर दिये जायेंगे (२०)—

—०—

९१—सूर—हे—अल-शम्स

यह सूरते शम्स मक्के में उतरी, इस में १५ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

सूरज की क़सम और उस की रोशनी की (१) और चान्द की जब उस के पीछे निकले (२) और दिन की जब उसे चमका

दे (३) और रात की जब उसे छुपा ले (४) और आस्मान की और उस ज़ात की जिस ने उसे बनाया (५) और ज़मीन की और उस की जिसने उसे फैलाया (६) और इन्सान की और उस की जिसने उस (के आज़ा) को बराबर किया (७) फिर उस को बदकारी (से बचने) और परहेज़गारी करने की समझ दी (८) कि जिस ने अपने नफ़्स (यानी) रुह को पाक रखा, वह मुराद को पहुंचा (९) और जिस ने उसे ख़ाक में मिलाया वह ख़सारे में रहा (१०) (क़ौमे) समूद ने अपनी सरकशी के सबब (पैग़म्बर) को झुटलाया (११) जब उन में से एक निहायत बद-बख़्त उठा (१२) तो ख़ुदा के पैग़म्बर (सालेह) ने उन से कहा कि ख़ुदा की ऊन्टनी और उस के पानी पीने की बारी से हज़र करो (१३) मगर उन्होंने पैग़म्बर को झुटलाया और ऊन्टनी की कौन्चें काट दीं तो ख़ुदा ने उनके गुनाह के सबब उन पर अज़ाब नाज़िल किया और सब को (हलाक कर के) बराबर कर दिया (१४) और उस को उन के बदला लेने का कुछ भी डर नहीं (१५)—

—o—

९२—सू-रहे-अल-लैल

यह सूरते लैल मक्के में उतरी, इस में २१ आयतें है

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

रात की क़सम जब दिन को छुपा ले (१) और दिन की क़सम जब चमक उठे (२) और उस (ज़ात) की क़सम जिसने नर और मादा पैदा किये (३) कि तुम लोगों की कोशिश तरह तरह की है (४) तो जिसने (ख़ुदा के रस्ते में माल) दिया और

परहेज़गारी की (५) और नेक बात को सच जाना (६) उस को हम आसान तरीक़े की तौफ़ीक़ देंगे (७) और जिस ने बुख़्ल किया और बे पर्वाह बना रहा (८) और नेक बात को झूठ समझा (९) उसे सख़्ती में पहुंचायेंगे (१०) और जब (दोज़ख़ के गढ़े में) गिरेगा तो उस का माल उसके कुछ भी काम न आयेगा (११) हमें तो राह दिखा देना है (१२) और आख़िरत और दुनिया हमारी ही चीजें हैं (१३) सो मैंने तुम को भड़कती आग से मुतनब्बाह कर दिया (१४) उस में वही दाख़िल होगा जो बड़ा बदबख़्त है (१५) जिस ने झुटलाया और मूंह फेरा (१६) और जो बड़ा परहेज़गार है वह (उस से) बचा लिया जायेगा (१७) जो अपना माल देता है ताकि पाक हो (१८) और (इस लिये) नहीं (देता कि) उस पर किसी का एहसान (है) जिसका वह बदला उतारता है (१९) बल्कि अपने ख़ुदावन्दे आला की रज़ामन्दी हासिल करने के लिये देता है (२०) और वह अन्क़रीब ख़ुश हो जायेगा (२१)—

—o—

९३—सूर—हे—अल-ज़ुहा

यह सूरते ज़ुहा मक्के में उतरी, इस में ११ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

आफ़ताब की रोशनी की क़सम (१) और रात की (तारीकी की) जब छा जाये (२) कि ऐ मोहम्मद तुम्हारे पर्वरदिगार ने न तो तुम को छोड़ा और न (तुम से) नाराज़ हुआ (३) और आख़िरत तुम्हारे लिये पहली (हालत यानी दुनिया) से कहीं बेहतर है (४) और तुम्हें पर्वरदिगार अन्क़रीब वह कुछ अता

फ़रमायेगा कि तुम खुश हो जाओगे (५) भला उस ने तुम्हें यतीम पाकर जगह नहीं दी ? (बेशक दी) (६) और रस्ते से ना वाक़िफ़ देखा तो सीधा रस्ता दिखाया (७) और तंग दस्त पाया तो ग़नी कर दिया (८) तो तुम भी यतीम पर सितम न करना (९) और मांगने वाले को झिड़क न देना (१०) और अपने पर्वरदिगार की नैयमतों का बयान करते रहना (११)—

—०—

९४—सूर—हे—अल इन्शिराह

यह सूरते इन्शिराह मक्के में उतरी, इस में ८ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

(ऐ मोहम्मद) क्या हमने तुम्हारा सीना खोल नहीं दिया (बेशक खोल दिया) (१) और तुम पर से बोझ भी उतार दिया (२) जिस ने तुम्हारी पीठ तोड़ रखी थी (३) और तुम्हारा ज़िक्र बलन्द किया (४) हां हां मुश्किल के साथ आसानी भी है (५) (और) बेशक मुश्किल के साथ आसानी भी है (६) तो जब फ़ारिग़ हुआ करो (इबादत में) मेहनत किया करो (७) और अपने पर्वरदिगार की तरफ़ मुतवज्जोह हो जाया करो (८)—

—०—

९५—सूर—हे—अल-तीन

यह सूरते तीन मक्के में उतरी, इस में ८ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अन्जीर की क़सम और ज़ैतून की (१) और तूरे सीनीन की (२) और उस अमन वाले शहर की (३) कि हमने इन्सान को बहुत अच्छी सूरत में पैदा किया है (४) फिर (रफ़्ता रफ़्ता) उस (की हालत) को (बदल कर) पस्त से पस्त कर दिया (५) मगर जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे उनके लिये बे इन्तिहा अजर है (६) तो (ऐ आदम ज़ाद) फिर तू जज़ा के दिन को क्यों झुटलाता है (७) क्या ख़ुदा सब से बड़ा हाकिम नहीं है (८)—

—०—

९६—सूर—हे—अल-अलक़

यह सूरते अलक़ मक्के में उतरी, इसमें १९ आयतें हैं।

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

(ऐ मोहम्मद) अपने पर्वरदिगार का नाम लेकर पढ़ो जिस ने (आलम को) पैदा किया (१) जिस ने इन्सान को ख़ून की फुटकी से बनाया (२) पढ़ो, और तुम्हारा पर्वरदिगार बड़ा करीम है (३) जिस ने क़लम के ज़रिये से इल्म सिखाया (४) और इन्सान को वह बातें सिखाईं जिन का उसे इल्म न था (५) मगर इन्सान सरकश हो जाता है (६) जब कि अपने तईं ग़नी देखता है (७) कुछ शक नहीं कि (उस को) तुम्हारे पर्वर-दिगार ही की तरफ़ लौट कर जाना है (८) भला तुम ने उस शख़्स को देखा जो मना करता है (९) (यानी) एक बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़ने लगता है (१०) भला देखो तो अगर यह राहे रास्त पर हो (११) या परहेज़गारी का हुक्म करे (तो मना करना कैसा) (१२) और देखो तो अगर उसने दीने हक़ को झुट-

लाया और उस से मूंह मोड़ा (तो क्या हुआ) (१३) क्या उस को मालूम नहीं कि ख़ुदा देख रहा है (१४) देखो अगर वह बाज़ न आयेगा तो हम (उस की) पेशानी के बाल पकड़ कर घसीटेंगे (१५) (यानी) उस झूठे ख़ताकार की पेशानी के बाल (१६) तो वह अपने यारों की मजलिस को बुला ले (१७) हम भी अपने मवक्किलाने दोज़ख़ को बुलायेंगे (१८) देखो उस का कहा न मानना, और (क़ुर्बे ख़ुदा) हासिल करते रहना (१९)—

—:o:—

९७—सूर—हे—अल-क़द्र

यह सूरते क़दर मक्के में उतरी, इस में ५ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

हमने इस (क़ुरान) को शबे क़दर में नाज़िल (करना शुरू किया) (१) और तुम्हें क्या मालूम कि शबे क़दर क्या हैं ? (२) शबे क़दर हज़ार महीने से बेहतर है (३) उस में रुह (उल अमीन) और फ़रिश्ते हर काम के (इन्तज़ाम के) लिये अपने पर्वरदिगार के हुक्म से उतरते हैं (४) यह (रात) तुलू-ऐ सुब्ह तक (अमान और) सलामती है (५)—

—:o:—

९८—सूर—हे—अल-बय्यिनह

यह सूरते बय्यिनह मदीने में उतरी, इसमें ८ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

जो लोग काफ़िर हैं (यानी) अहले किताब और मुश्रिक वह (कुफ्र से) बाज़ रहने वाले न थे, जब तक कि उन के पास खुली दलील (न) आती (१) (यानी) ख़ुदा के पैग़म्बर जो पाक औराक़ पढ़ते हैं (२) जिन में मुस्तैहकम (आयतें) लिखी हुई हैं (३) और अहले किताब जो मुतफ़र्रिक़ (व मुख़्तलिफ़) हुए हैं तो दलीले वाज़ेह के आ जाने के बाद (हुए हैं) (४) और उन को हुक्म तो यही हुआ था, कि इख़लास अमल के साथ ख़ुदा की इबादत करें (और) यकसू हो कर नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें, यही सच्चा दीन है (५) जो लोग काफ़िर हैं (यानी) अहले किताब और मुशरिक, वह दोज़ख की आग में पड़ेंगे (और) हमेशा उस में रहेंगे, यह लोग सब मख़लूक़ से बदतर हैं (६) (और) जो लोग ईमान लाये और नेक अमल करते रहे, वह तमाम मख़लूक़ से बेहतर हैं (७) उन का सिला उन के पर्वरदिगार के हाँ, हमेशा रहने के बाग़ हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, अबदुल आबाद उन में रहेंगे, ख़ुदा उन से ख़ुश और वह उस से ख़ुश, यह (सिला) उस के लिये है जो अपने पर्वरदिगार से डरता रहा है (८)—

—:o:—

९९—सूर—हे—अल-ज़िलज़ाल

यह सूरते ज़िलज़ाल मदीने में उतरी, इसमें ८ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब ज़मीन भौंचाल से हिला दी जायेगी (१) और ज़मीन अपने (अन्दर के) बोझ निकाल डालेगी (२) और इन्सान कहेगा

कि इस को क्या हुआ है ? (३) उस रोज़ वह अपने हालात बयान कर देगी (४) क्योंकि तुम्हारे पर्वरदिगार ने उस को हुक्म भेजा (होगा) (५) उस दिन लोग गिरोह होकर आयेंगे ताकि उन को उन के आमाल दिखाये जायें (६) तो जिस ने ज़र्रा भर नेकी की होगी, वह उस को देख लेगा (७) और जिस ने ज़र्रा भर बुराई की होगी, वह उसे देख लेगा (८)—

—:o:—

१००—सूर–हे–अल-आदियात

यह सूरते आदियात मक्के में उतरी, इसमें ११ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

उन सरपट दौड़ने वाले घोड़ों की क़सम जो हाँपते हैं (१) फिर (पत्थरों पर नाल) मार कर आग निकालते हैं (२) फिर सुब्ह को छापा मारते हैं (३) फिर उस में गर्द उठाते हैं (४) फिर उस वक्त दुश्मन की फ़ौज में जा घुसते हैं (५) कि इन्सान अपने पर्वरदिगार का एहसान ना शिनास (और ना शुक्रा) है (६) और वह इस से आगाह भी है (७) वह तो माल की सख्त मोहब्बत करने वाला है (८) क्या वह उस वक्त को नहीं जानता कि जो (मुर्दे) क़ब्रों में हैं वह बाहर निकाल लिये जायेंगे (९) और जो (भेद) दिलों में हैं वह ज़ाहिर कर दिये जायेंगे (१०) बेशक उन का पर्वरदिगार (उस रोज़) उन से ख़ूब वाक़िफ़ होगा (११)—

—:o:—

१०१—सूर–हे–अल-क़ारियह

यह सूरते क़ारियह मक्के में उतरी, इसमें ११ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

खड़खड़ाने वाली (१) खड़खड़ाने वाली क्या है ? (२) और तुम क्या जानो कि खड़खड़ाने वाली क्या है ? (३) वह (क़यामत है) जिस दिन लोग ऐसे होंगे जैसे बिखरे हुए पतङ्ग (४) और पहाड़ ऐसे होंगे जैसे धुनकी हुई रंग बरंग की ऊन (५) तो जिस के (आमाल के) वज़न भारी निकलेंगे (६) वह दिल पसन्द ऐश में होगा (७) जिस के वज़न हलके निकलेंगे (८) उस का मरजा हाविया है (९) और तुम क्या समझे कि हाविया क्या चीज़ है (१०) (वह) दहकती हुई आग है (११)—

—:०:—

१०२—सूर–हे–अल-तकासुर

यह सूरते तकासुर मक्के में उतरी, इसमें ८ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(लोगो) तुम को (माल की) बहुत सी तलब ने ग़ाफ़िल कर दिया (१) यहाँ तक कि तुमने क़ब्रें जा देखीं (२) देखो तुम्हें अन्क़रीब मालूम हो जायेगा (३) फिर देखो तुम्हें अन्क़रीब मालूम हो जायेगा (४) फिर अगर तुम जानते (यानी) इलमुल यक़ीन (रखते तो ग़फ़लत न करते) (५) तुम ज़रूर दोज़ख़ को देखोगे (६) फिर उस को (ऐसा) देखोगे (कि) ऐनुल यक़ीन (आ जायेगा) (७) फिर उस रोज़ तुम से (शुक्र) नैयमत के बारे में पुर्सिश होगी (८)—

—:०:—

१०३--सूर--हे--अल-असर

सूरतें असर मक्की है और इस में ३ आयतें हैं

शुरु खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

असर की क़सम (१) कि इन्सान नुक़सान में है (२) मगर वह लोग जो ईमान लाये और नेक अमल करते रहे, और आपस में हक़ (बात) की तलक़ीन और सब्र की ताकीद करते रहे (३)—

—:o:—

१०४—सूर—हे—अल-हमज़ाह

यह सूरते हमज़ाह मक्की है, और इसमें ६ आयतें हैं

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

हर तान आमेज़ इशारतें करने वाले चुगलखोर की खराबी है (१) जो माल जमा करता और उस को गिन गिन कर रखता है (२) (और) ख्याल करता है कि उस का माल उस की हमेशा की ज़िन्दगी का मूजिब होगा (३) हर्गिज नहीं, वह जरूर हतमे में डाला जायेगा (४) और तुम क्या समझे कि हतमा क्या है ? (५) वह खुदा की भड़काई हुई आग है (६) जो दिलों पर जा लिपटेगी (७) और वह उस में बन्द कर दिये जायेंगे (८) (यानी) आग के लम्बे लम्बे सितूनों में (९)—

१०५—सूर—हे—अल-फ़ील

यह सूरते फ़ील मक्की है और इस में ५ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे पर्वरदिगार ने हाथी वालों [illegible] साथ क्या किया ? (१) क्या उन का दाँव ग़लत नहीं गया ? [illegible]या) (२) और उन पर झल्लड़ के झल्लड़ जानवर भेजे (३) [illegible] उन पर कन्घर की पन्थरियाँ फैंकते थे (४) तो उन को ऐसा [illegible]र दिया जैसे खाया हुआ भुस (५)—

—०—

१०६—सूर—हे—अल-क़ुरैश

यह सूरते क़ुरैश मक्की है और इसमें ४ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

[illegible] क़ुरेश के मानूस करने के सबब (१) (यानी) उन को जाड़े [illegible] गर्मी के सफ़र से मानूस करने के सबब (२) लोगों को [illegible]ये कि (इस नैयमत के शुक्र में) इस घर के मालिक की [illegible]दत करें (३) जिस ने उन को भूख में खाना खिलाया और [illegible] से अमन बख़्शा (४)—

—०—

…ताम।

…-माऊन

…माऊन मक्की है और इस में ७ आयतें हैं

…का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत
रहम वाला है।

… ने उस शख्स को देखा जो (रोज़े) जज़ा को
झुठ… यह वही (बद बख़्त) है जो यतीम को धक्के
देता… फ़कीर को खाना खिलाने के लिये (लोगों को)
तरग़… (३) तो ऐसे नमाज़ियों की खराबी है (४) जो
नमा… ग़ाफ़िल रहते हैं (५) जो रियाकारी करते हैं
(६) …की चीजें आरियतन नहीं देते (७)—

—सूर–हे–अल-कौसर

यह… मक्की है और इसमें ३ आयतें हैं

शु…म लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत
रहम वाला है।

(ऐ… ने तुम को कौसर अता फ़रमाई है (१)
तो अपने… के लिये नमाज़ पढ़ा करो और क़ुर्बानी
किया क… क नहीं कि तुम्हारा दुश्मन ही बे औलाद
रहेगा (…

—०—

१०६—सूर—हे अल-काफ़िरून

यह सूरते काफिरुन मक्की है, इसमें ६ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

(ऐ पैग़म्बर) इन मुन्किराने इस्लाम से कह दो कि ऐ काफ़िरो (१) जिन (बुतों) को तुम पूजते हो, उनको मैं नहीं पूजता (२) और जिस (ख़ुदा) की मैं इबादत करता हूं, उसकी तुम इबादत नहीं करते (३) और (मैं फिर कहता हूं कि) कि जिनकी तुम परस्तिश करते हो, उनकी मैं परस्तिश करने वाला नहीं हूं (४) और न तुम उसकी बन्दगी करने वाले (मालूम होते) हो जिसकी मैं बन्दगी करता हूं (५) तुम अपने दीन पर और मैं अपने दीन पर (६)—

—०—

११०—सूर—हे—अल-नस्र

यह सूरते नस्र मदीने में उतरी, और इसमें ३ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

जब अल्लाह की मदद आ पहुंची, और फ़तह (हासिल हो गई) (१) और तुमने देख लिया कि लोग ग़ोल के ग़ोल, ख़ुदा के दीन में दाखिल हो रहे हैं (२) तो अपने पर्वरदिगार की तारीफ़ के साथ तस्बीह करो और उस से मग़फ़रत मांगो, बेशक वह माफ़ करने वाला है (३)—

—०—

१११—सूर—हे—अल-लहब❀

...हे सूरते लहब मक्के में उतरा, और इसमें ५ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

अबु लहब के हाथ टूटें और वह हलाक हो (१) न तो उसका ...ल ही उसके कुछ काम आया और न वह जो उसने कमाया (२) ...ह जल्द भड़कती हुई आगमें दाखिल होगा (३) और उसकी जोरु ...ी जो ईन्धन सर पर उठाये फिरती है (४) उसके गले में मून्ज ...की रस्सी होगी (५ —

—०—

११२—सूर—हे—अल-इख़लास

यह सूरते इखलास मक्के में उतरी, इसमें ४ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि यह (ज़ाते पाक, जिसका नाम) अल्लाह (है) एक है (१) वह मा...दे बर हक़ जो बे नयाज़ है (२) न किसी का बाप है और न किसी का बेटा (३) और कोई उसका हमसर नहीं (४)—

—०—

❀ अबुलहब हज़रत रसूल अल्लाह का चाचा था, कुफ्र के मारे हज़रत की जिद में पड़ा एक बार हज़रत ने जमा किया कुरेशी को पुकार कर उसने पत्थर फैंका कि दीवाना सब लोगों को नाहक पुकारता है और ऊसकी औरत सख्त दुश्मनी करती, खिस्सत की मारी इन्धन जंगल में आप लातीं और ... राह में डालती के चुभें—

११३—सूर—हे—अल-फ़लक़

यह सूरते फ़लक मदीने में उतरी, इसमें ५ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

कहो कि मैं सुबह के मालिक की पनाह मांगता हूं (१) हर हर चीज़की बुराईसे जो उसने पैदाकी (२) और शबे तारीक की बुराई से जब उसका अन्धेरा छा जाये (३) और गण्डों पर (पढ़ पढ़ कर) फूंकने वालियों की बुराई से (४) और हसद करने वाले की बुराई से जब हसद करने लगे (५)—

—०—

११४—सूर—हे—अलनास

यह सूरते नास मक्के में उतरी, इसमें ६ आयतें हैं

शुरू ख़ुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

कहो कि मैं लोगों के पर्वरदिगार की पनाह माँगता हूं (१) (यानी) लोगों के हक़ीक़ी बादशाह लोगों के माबूदे बर हक़ की (२) (शैतान) वसवसा अन्दाज़की बुराई से जो (ख़ुदा का नाम सुन कर) पीछे हट जाता है (४) जो लोगों के दिलों में वसवसे डालता है (५) (ख्वाह वह) जिन्नात से (हो) या इन्सानों में से (६)*—

---

*आयत ६:—(सूरत नास) जुबैर बिन अल आसम ने (एक शख्स यहूदी ने) जब अपनी बेटियों से आँ हज़रत सलअम पर जादू कराया, उस वक्त अल्लाह ताला ने [illegible] अऊज़ बरब्बुल फ़ल अऊज़ बरब्बु नास

तम्मत बिलखैर

दुआये मासूरा बराये ख़त्मे क़ुरान:—ऐ अल्लाह मुझे क़ब्र की वहशत से मानूस कर, मुझ पर क़ुराने अज़ीम (की बरकत) के सबब से रहम कर और उस को मेरा इनाम और नूर व हिदायत और रेहमत बना, ऐ अल्लाह, इस से मैं जो भूल गया हूं मुझे याद दिला, जो मैं नहीं जानता सिखा, अमन से और तलावत नसीब कर, दिन और रात के वक्तों में और इस को मेरे लिये दलील बना, ऐ पालने वाले जहानों के।

(के० सी० माथुर)

—०—

—दरुदे शरीफ़ करीमी—

शुरू खुदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ अल्लाह दरुद भेज ऊपर हमारे सरदार हमारे मालिक [मु]हम्मद सल्हे अल्लाह अलैहा व सलम के अपनी मखलूक़ की [ब]राबर और अपनी खुशी ,और अर्श की ज़ीनत के बराबर और [ब]राबर अपने कलमात के और दरुद भेज तू अल्लाह ऊपर नबी-

[दो]नों सूरतें नाज़िल फ़रमाईं आँ हज़रत सल्हे अल्लाह अलैहा व आलेहा [स]लम के कुछ बालों पर और कुछ कन्धे के दनदानों पर यह जादू [कि]या गया था और बालों में जादू की ११ गिरहें भी लगाई थीं, यूं तो [ज]ादू का असर आँ हज़रत पर एक साल के क़रीब रहा, लेकिन तीन [दिन त]क इस जादू के असर से बहुत तकलीफ़ रही, ग़रज जब यह ११ [आयतों] की दोनों सूरतें नाज़िल हुईं तो हर एक आयत के पढ़ने के साथ [जादू] की एक एक गिरह खुल गई और इन दोनों सूरतों के खत्म होते [ही] से जादू का असर जाता रहा और आप बिल्कुल तन्दरुस्त हो

ऐ-उम्मी के, और उन की आल पर और सलाम ऊपर
हमारे सरदार अबुबकर सद्दीक़ के जो साहिबे रसूल अल्लाह हैं,
ग़ार हैं और ऊपर हमारे सरदार उमर फ़ारुक़े आज़म बेटे ख़त्ताब
के साहिब मुनीर और मेहरबान के और ऊपर हमारे सरदार
उस्मान ग़नी ज़ुल नूरीन के जो साहिबे हया और ईमान हैं और
ऊपर हमारे सरदार अली मुर्तज़ा के जो शेरे ख़ुदा हैं, ग़ालिब हैं,
और ऊपर हमारी सरदार के जो जन्नत की औरतों की सरदार
फ़ातिमा ज़ोहरा हैं, और ऊपर हमारी सरदार ख़दीजतुल किबरा
के और ऊपर हमारी सरदार आयशा सद्दीक़ा के जो बलन्द मर्तबे
वाली हैं और ऊपर हमारे सरदार हसन के जो राज़ी व रज़ा हैं
और ऊपर हमारे सरदार हुसैन के जो शहीदे मुजतबा हैं, और
ऊपर हमारे जमीय उन सरदारों के जो कर्बला में शहीद हुए
और ऊपर हमारे सरदार सआद के, और ऊपर हमारे सरदार
सईद के, और ऊपर हमारे सरदार तलहा के, और ऊपर हमारे
सरदार ज़ुबैर के, और ऊपर हमारे सरदार अबदुर्रेहमान बिन
औफ़ के, और ऊपर हमारे सरदार अबि उबैदा बिन जराह के
और ऊपर हमारे सरदार अब्दुल करीम के, जो साहिबे तरीक़
हैं, रसूले करीम सल्हे अल्लाह अलैहा व सलम के राज़ी हैं (१)
अल्लाह तआला इन सब से और दरुद भेज ऐ अल्लाह तआला की
ऊपर उन के जो तेरी मख़लूक़ से अफ़ज़ल हैं और तेरे अर्श / नाम
नूर हैं, हमारे सरदार हमारे आक़ा मोहम्मद सल्हे अल्ल सबसे
अलैहा व सलम और आले पाक पर, और तमाम सहाबा करों में
पर और उन की इज़दवाज़ पर और उन को ज़र्रियात पर
उन के अहले सुन्नत पर और उन के एहबाब पर और उ शख़्स
उम्मत के ऊपर, ऊपर सब पर अपनी रेहमते कामिला कराया,
तमाम रहम करने वालों से ज़्यादा— ख़ु नाम

॥ समाप्त ॥ (के० सी० मा